डा० ओमप्रकाश सक्सैना 'निडर' (एम.ए., जी.ए.एम.एस.)
युवा वैद्य आयुर्वेदाचार्य.
आयुर्वेद के अतिरिक्त एलोपैथी तथा होम्योपैथी में भी पूर्ण दक्षता.
रुग्ण मानवता को पूर्ण स्वस्थ बनाने हेतु प्रत्येक दृष्टि से योग्यता सम्पन्न प्रतिभा.
'प्रकाश क्लीनिक' नाम के चिकित्सा केन्द्र का सफल संचालन.
साप्ताहिक पत्र का कुशल सम्पादन, कवि सम्मेलनों में अपनी व्यंग्य रचना पाठ से धूम मचाने वाले मंचीय कवि.
अनेक साहित्यिक रचनाओं--कहानी, उपन्यास, काव्य, गीत आदि का विपुल सृजन.
विशद आयुर्वेद ग्रन्थों का प्रणयन, होम्योपैथी एवं एलोपैथी में विशालकाय ग्रंथ-लेखन में सक्रिय.
इसके अतिरिक्त पीलीभीत नगरी के प्रत्येक साहित्य-समारोह सामाजिक गति-विधि एवं क्रियाकलापों से पूर्णतः संश्लिष्ट.
अपने भरे-पूरे परिवार के दायित्व-निर्वाह के साथ इतना कुछ कर लेना इनके अकल्पनीय श्रम, लगन एवं निष्ठा का ही सु-फल है जन्मतिथि 20 जुलाई 1958 ई०.

सम्पर्क सूत्र :

डा० ओमप्रकाश सक्सैना
प्रकाश क्लीनिक
बरहा, पीलीभीत (उ.प्र.)
262001

डा. ओमप्रकाश सक्सैना
116. प्रकाश निकेतन
गौहनिया, चिड़ियादह
पीलीभीत (उ.प्र.) 262001

अनुपम आयुर्वेदिक ग्रन्थ

आयुर्वेद चिकित्सा प्रकाश

अर्जुनारिष्ट

AYURVEDA CHIKITSA PRAKASH

प्रकाशक :
भाषा भवन
हालनगंज, मथुरा 281001

■
लेखक
डा० ओमप्रकाश सक्सेना 'निडर'

■
संस्करण :
सन् 2001 ई०

■
मूल्य : रु. 165/-

■
मुद्रक :
प्रमोद प्रिण्टर्स, मथुरा.

आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रकाश

विषय सूची

(प्रथम खण्ड)

विषय सूची

विषय सूची

विषय सूची

विषय सूची

द्वितीय खण्ड

सर्वसुलभ मसालों के संक्षिप्त गुण–धर्म ।

विषय सूची

विषय सूची

अत्यावश्यक निवेदन

यद्यपि इस ग्रन्थ में वर्णित सभी योग प्रामाणिक और शास्त्रीय चिकित्सा ग्रंथों से लिए गये हैं, अनेक मेरे स्वानुभूत भी हैं । कुछ योग जो अधिकारी चिकित्साविदों द्वारा अथवा सिद्ध सन्तों द्वारा मुझे बताये गये हैं, वे भी मेरे परीक्षण पर सफल सिद्ध हुए हैं ।

फिर भी पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन यह है कि वे कठिन एवं भयंकर रोगों की चिकित्सा स्वयं न करें। रोग एवं रोगी की स्थिति का ज्ञान किसी अनुभवी चिकित्सक को जितना हो सकता है वह पुस्तक पढ़कर प्राप्त नहीं हो सकता।

यों सामान्य रोगों का उपचार इस ग्रंथ की सहायता से बे-खटके किया जा सकता है ।

—लेखक

लेखकीय निवेदन

यों मैं एलोपैथी, होम्योपैथी से भी चिकित्सा करता हूँ किन्तु मेरी सर्वाधिक आस्था आयुर्वेद के प्रति है। किसी भी पद्धति का आश्रय लेकर रोगी को रोगमुक्त कर देना ही मेरा सदुद्देश्य रहता है। पत्रकारिता के साथ ही मैं विगत 30 वर्ष से चिकित्सा कार्य में भी रत हूँ।

इस साधना-अवधि में अनेक ग्रन्थों के पठन का अवसर मिला। अनेक वैद्यों, मनीषियों, चिकित्साविदों के सम्पर्क में आया, अनेक साधुसंतों की चरण सेवा का सुअवसर मिला। यह मेरा सौभाग्य!

किसी ने उपयोगी सुझाव दिये, किसी ने अपने अनुभूत योग बताये तो—उन सभी को मेरा विनम्र आभार-प्रदर्शन एवं सश्रद्धा प्रणाम।

श्री कन्हैयालाल गोयल (संचालक : भाषा भवन, मथुरा) ने मेरे यत्रतत्र फैले हुए (अव्यवस्थित) लेखन को व्यवस्थित करके प्रकाशित किया है। इसके लिए उनका हृदय से आभारी हूँ।

यों अपनी कृति सभी को प्यारी लगती है; संत तुलसीदास जी ने भी लिखा है 'निज कवित्त केहि लाग न नीका' किन्तु सही मूल्यांकन तो सुधी पाठकगण ही करेंगे। अपनी प्रतिक्रिया-सम्मति से कृपया मेरे प्रकाशक को अथवा मुझे मेरे पते पर लिखें।

निर्धनवर्ग के रोगियों के प्रति मेरी विशेष सहानुभूति रही है। मैं उनको यथासाध्य सस्ती से सस्ती चिकित्सा देकर उन्हें रोगमुक्त करने की भरसक चेष्टा एवं प्रयत्न करता हूँ।

मैं निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श देता हूँ। कोई भी सज्जन मुझसे निःसंकोच अपने रोग का विवरण भेजकर परामर्श ले सकते हैं। गुप्त रोगियों का पत्राचार गोपनीय रखा जाता है। हाँ, उत्तर के लिए समुचित टिकट लगा लिफाफा अवश्य साथ में भेजें। बिना लिफाफे के उत्तर दे पाना सम्भव नहीं होगा।

■■■

सम्पर्क सूत्र :

डा० ओमप्रकाश सक्सैना 'निडर'
प्रकाश क्लीनिक
बरहा, पीलीभीत (उ. प्र.) 262001

डा० ओमप्रकाश सक्सैना 'निडर'
116, प्रकाश निकेतन
चिड़िया दह, गौहनिया, पीलीभीत

प्रथम खण्ड

अजीर्ण

रोग परिचय—अजीर्ण रोग प्रायः साधारण सा रोग समझा जाता है, किन्तु याद रखिये कि यदि किसी रोगी को यह रोग अत्यन्त पुराना हो गया हो तो उसे शनैः शनैः मृत्यु पथ पर ढकेलने वाला भी साबित हो सकता है। उसमें कोई दो राय अथवा अतिशयोक्ति नहीं है। साधारण सी बोलचाल में अजीर्ण का सीधा सा अर्थ होता है—पाचन विकार अर्थात खाया पीया हज्म न होना। इसी रोग को **अग्निमांद्य** तथा मन्दाग्नि के नामों से भी जाना जाता है।

घरेलू उपचार

● चित्रक (चीता) के मूल का महीन चूर्ण करके सुरक्षित रख लें। इसे 4-4 रत्ती की मात्रा में नित्य प्रति शहद के साथ चाटने से मात्र 45 दिनों में ही लाभ हो जाता है।

● चित्रक-मूल चूर्ण 2 ग्राम, सौंठ, काला नमक और पोदीना (सभी औषधियाँ 1-1 ग्राम) को 100 ग्राम जल के साथ पीसकर तदुपरान्त छानकर नित्य प्रति पीने से अजीर्ण का पाचन होकर भूख खुलकर लगने लगती है।

● टमाटर को आग से कुछ सेककर सेंधा नमक व काली मिर्च लगाकर खाने से भी अजीर्ण रोग नष्ट हो जाता है। अथवा टमाटर का रस 25 ग्राम लेकर उसमें गरम जल तथा अल्प मात्रा में खाने वाला सोड़ा मिलाकर देने से भी अजीर्ण रोग भाग जाता है।

● दालचीनी, सौठ तथा इलायची सममात्रा में लेकर पीसलें, अर्थात् चूर्ण बनाकर रख लें। इसे भोजन से पूर्व 1 ग्राम जल से लेना अरुचि (मंदाग्नि) में लाभकर रहता है।

● गिलोय, लौंग, दालचीनी का चूर्ण 5-5 ग्राम की मात्रा में लेकर आधा लीटर पानी में पकावें। आधा पानी शेष रहने पर छानकर 25 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार लेने से अग्निमाँद्य में बहुत लाभ होता है।

● नारंगी का रस आवश्यकतानुसार लेकर उसमें थोड़ा सा नमक और सौंठ

का चूर्ण मिलाकर कुछ दिनों तक लगातार सेवन करने से पाचन शक्ति बढ़ जाती है तथा अजीर्ण रोग नष्ट हो जाता है ।

● कूट कड़वी 100 ग्राम, काला नमक 400 ग्राम दोनों का चूर्ण करके 4 रत्ती की मात्रा में सेवन कराने से अजीर्ण नष्ट हो जाता है ।

● अमरूद के कोमल पत्तों के स्वरस 10 ग्राम में थोड़ी सी शक्कर (चीनी) मिलाकर प्रतिदिन (दिन में 1 बार) पिलाने से भूख बढ़ती है तथा अजीर्ण का नाश हो जाता है ।

● छाया-शुष्क अनार के पत्ते 4 भाग तथा सेंधा नमक 1 भाग दोनों को महीन पीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रख लें । इसे 4 ग्राम की मात्रा में प्रातः सायं प्रतिदिन दो बार जल के साथ सेवन करने से अजीर्ण रोग नष्ट हो जाता है ।

● मुनक्का 6 नग, कालीमिर्च 5 नग, भुना जीरा 10 ग्राम, सेंधा नमक 6 ग्राम, टाटरी 4 रत्ती पीसकर चटनी बनाकर खाने से अजीर्ण, अरुचि तथा मलावरोध में लाभ होता है ।

● अदरक का रस 5 ग्राम, नीबू का रस 3 ग्राम, भुना जीरा व सेंधानमक 1 ग्राम, मुनक्का 5 नग, छोटी इलायची 8-10 नग लें और सबकी चटनी बनाकर दिन में 2-3 बार अजीर्ण के रोगी को चटायें । अत्यन्त लाभप्रद योग है ।

● नासपाती के रस में थोड़ा सा पीपल का चूर्ण मिलाकर पिलाने से अजीर्ण विकार दूर हो जाता है ।

● अदरक का रस 10 ग्राम, नीबू का रस 5 ग्राम सौंचर लवण 1 ग्राम सभी को मिलाकर पिलाने से अजीर्ण रोग नष्ट हो जाता है । नित्य भोजन के साथ उसको सेवन करने से कभी अजीर्ण नहीं होता है ।

● अदरक की चार अंगुल लम्बी गाँठ को आग से भूनकर सेंधा नमक लगाकर नित्यप्रति खाली पेट कुतर-कुतर कर थोड़ा-थोड़ा कुचल-कुचलकर दाँतों से खाने से पुराने से पुराना अजीर्ण रोग भी नष्ट हो जाता है ।

● नीबू स्वरस 200 ग्राम में 100 ग्राम शक्कर मिलाकर 1 काँच की मजबूत कार्क (ढक्कन) युक्त शीशी में भरकर 15 दिनों तक धूप में रखें । तत्पश्चात् इसे भोजन के साथ चाटने से पाचनशक्ति बढ़ जाती है तथा अजीर्ण रोग नष्ट हो जाता है ।

● धनिये का चूर्ण 3 ग्राम, सौठ का चूर्ण 3 ग्राम, 10 ग्राम गरम पानी के साथ सेवन कराने से अजीर्ण में लाभ होता है ।

● द्रोणपुष्पी (गूमा) 2 ग्राम तथा काली मिर्च 11 नग लें व पीसकर प्रातःकाल ताजे पानी से या अर्क सौंफ से फाँक लें । मात्र दो-तीन सप्ताह में ही रोगी को खूब भूख लगने लगेगी तथा अजीर्ण रोग नष्ट होकर चमत्कारिक लाभ होगा।

● सेंधा नमक, सौंठ तथा हरीतकी सममात्रा में लेकर महीन चूर्ण कर लें। इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में नित्य प्रातः तथा सायंकाल सेवन करायें । अजीर्ण नाशक है।

● बिल्व के गूदे में शक्कर, सौंठ, कालीमिर्च, इलायची, जीरा और कपूर मिलाकर घोंट छानकर पिलाने से आँव दोष शमन होकर भोजन में रुचि बढ़ती है।

● भुनी हींग, भुना जीरा, सौंठ और सेंधा नमक सभी को सममात्रा में लेकर पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें । इस चूर्ण का कुछ दिनों तक नियमित सेवन करने से अजीर्ण रोग नष्ट हो जाता है ।

● लाल मिर्च को नीबू के रस में 40 दिनों तक खरल करके 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना लें । एक गोली पान में रखकर खाने से अजीर्ण रोग नष्ट होकर भूख लगने लगती है ।

● धनियाँ तथा सौंठ सम मात्रा में लेकर पानी में औटाकर छान लें । इसे थोड़ा-थोड़ा पीने से अजीर्ण, बदहज्मी दूर होकर भूख बढ़ती है ।

● तुलसी के पत्तों का रस 100 ग्राम की मात्रा में कुछ दिनों तक लगातार पीने से अजीर्ण का विकार दूर हो जाता है ।

● सूखे खट्टे अनारदाने में समभाग सफेद जीरा और काला नमक मिलाकर गरम पानी के साथ सेवन करने से अजीर्ण दूर हो जाता है ।

● छोटी पीपल का चूर्ण शहद के साथ कुछ दिनों तक नियमित रूप से चाटने से पाचनशक्ति बढ़ जाती है तथा अजीर्ण नष्ट हो जाता है ।

● छोटी हरड़ को भूनकर काले नमक के साथ फंकी लगाने से अजीर्ण आदि समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● छोटी जामुन का रस 5 लीटर तथा पाँचों प्रकार के नमक 50-50 ग्राम की मात्रा में लें । पहले रस को कपड़े से छानें । तत्पश्चात् पाँचों नमक (पिसे हुए) एक काँच के किसी बर्तन में बन्द करके धूप में एक महीना तक रखने के बाद में पुनः छानकर बोतलों में भरकर सुरक्षित रख लें । इसे 4-5 चम्मच बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त सेवन कराने से अरुचि, अजीर्ण, मंदाग्नि, इत्यादि विकारों में आश्चर्यजनक लाभ होता है ।

● काला नमक तथा खट्टा चूना 40-40 ग्राम तथा अजवायन, लौंग व

काली मिर्च 4-4 ग्राम लेकर सभी को खरल में डालकर 4-4 रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। यह गोलियाँ अरुचि, अजीर्ण तथा वायुनाशक है। दो से चार गोली आवश्यकतानुसार गरम जल से सेवन करायें अथवा मुख में डालकर चूसने को कहें।

● टाटरी काली मिर्च, यवक्षार, सेंधानमक, काला जीरा 40-40 ग्राम हींग व पिपरमेन्ट 3-3 ग्राम सभी का बारीक चूर्ण बनालें। यह अत्यन्त स्वादिष्ट व रुचिकारक अजीर्णनाशक चूर्ण है। इसे 1-2 ग्राम भोजनोपरान्त अथवा किसी भी समय व्यवहार करें।

● हरड़ का बक्कल, काला नमक एवं पीपल प्रत्येक 1-1 भाग तथा हींग तथा सुहागे का फूला चौथाई-चौथाई भाग सभी को लेकर बारीक चूर्ण बनायें। इसे नित्य गरम जल से 3 से 6 ग्राम की मात्रा में सेवन करें। अजीर्ण, अरुचि, भूख न लगना इत्यादि विकारों में अत्यन्त ही लाभकारी है।

● सौठ, कालीमिर्च, पीपल, दालचीनी, अजवायन, अजमोद, लौंग, हींग (घी में भुनी हुई) अकरकरा, सेंधा नमक, सौंचर नमक, मिश्री सभी औषधियाँ 10-10 ग्राम तथा किशमिश, अदरक, छुआरा (गुठली निकालकर) इच्छानुसार लेकर सभी को घोंट पीसकर ऊपर से नीबू का रस निचोड़कर शीशी में भरकर मुख बन्द कर सुरक्षित रख लें। इस चटनी को भोजनोपरान्त थोड़ा-थोड़ा खाने से अजीर्ण नष्ट हो जाता है।

● **शक्तिबर्धक चूर्ण**—अजवायन, इलायची, काली मिर्च, सौंठ सभी को समान मात्रा में लेकर पीसकर सुरक्षित रख लें। आधा चम्मच सुबह-शाम दो बार पानी से सेवन करायें। यह चूर्ण दुर्बलता नाशक है। टॉनिक के तौर पर इस्तेमाल करायें।

● छोटी इलायची के बीज, सौठ, लोंग तथा जीरा, सभी को सममात्रा में लेकर पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 2 ग्राम की मात्रा में भोजनोपरान्त सेवन करने से भोजन शीघ्र पच जाता है।

● दो ग्राम पिसी कालीमिर्च फाँककर ऊपर से नीबू का रस मिश्रित गरम जल से शाम तथा रात्रि के समय पियें। केवल 10-12 दिनों तक लगातार पीने से पेट में गैस बनना बन्द हो जाता है।

● दालचीनी आधा ग्राम तथा इतनी ही मात्रा में सौठ व बड़ी इलायची (कुल डेढ़ ग्राम) को पीसकर भोजन से पूर्व सेवन करने से भूख बढ़ती है, मन्दाग्नि नष्ट होती है तथा कब्ज मिटती है।

● धनिया 50 ग्राम, काली मिर्च तथा नमक 20-20 ग्राम को बारीक पीसकर

चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। खाना खाने के बाद में 3 ग्राम की मात्रा में सेवन करायें। इसके प्रयोग से जिस रोगी के आमाशय में आहार बहुत कम ठहरता है—अर्थात शीघ्र ही मल के रास्ते निकल जाता है। उसके लिए अल्प मूल्य में अमृत समान योग है।

● पेट में किसी भी तरह की गड़बड़ी हो, जैसे—अपचन, अग्निमांद्य, पेटदर्द, अथवा अफरा (पेट फूलना) आदि में प्याज का रस अदरक का व लहसुन का रस प्रत्येक 1-1 चम्मच लेकर तथा 3 चम्मच शहद मिलाकर भोजन से पूर्व सेवन करायें। सिरके के साथ प्याज पीसकर सेवन करना भी लाभप्रद है। इसमें अदरक का रस तथा कुछ काला नमक डाल लिया जाये तो अधिक लाभप्रद योग बन जाता है।

विशेष नोट—यदि किसी रोगी के आमाशय में भोजन सड़ जाये और उसको निकालने की आवश्यकता हो तो 12-13 ग्राम नमक 1 गिलास गुनगुने पानी में मिलाकर पिलाने से कै (वमन) आ जाती है तथा मैदे का खराब भोजन बाहर निकल जाता है। यदि किसी विष का किसी रोगी ने सेवन किया हो या नशा किया हो तो 60 ग्राम नमक पानी में घोलकर पिलायें, इससे उल्टियां होकर विषैला अथवा नशीला पदार्थ बाहर निकल जायेगा।

● यदि किसी रोगी की छाती में जलन (गर्मी का असर) हो तो नमकीन शिकंजबीन पिलायें। यदि अजीर्ण से जलन हो तो 10 ग्राम नमक ताजा पानी में घोलकर (डेढ़ दो गिलास पानी में) पिला दें, ताकि वमन होकर छाती अच्छी हो जाये। पुदीना घोंटकर नमक मिलाकर उसमें नीबू की 5 बूँदें निचोड़कर चटाना भी लाभकारी है।

● यकृत की गड़बड़ी और आँखों के सामने चकाचोंध जान पड़ने पर गरम पानी में नीबू मिलाकर पिलाना चाहिए।

● एक चुटकी पिसी हुई राई सब्जी में डालकर बनाकर खाने से खाना भली प्रकार हज्म हो जाता है तथा भूख खुलकर लगने लगती है। अर्थात मन्दाग्नि, अरुचि नष्ट हो जाती है।

● आमाशय को शक्तिशाली बनाने तथा मुँह के छालों से छुटकारा पाने हेतु केवल सौंफ के चूर्ण का प्रतिदिन सुबह शाम अथवा भोजनोपरान्त 6 ग्राम की मात्रा में सेवन करें। इसके प्रयोग से नेत्रों (आँखों) की ज्योति भी बढ़ जाती है।

● आमाशय में हवा जमा होकर पेट फूलने लगे तब यह लौंग का अर्क प्रयोग करें :—लौंग का चूर्ण डेढ़ ग्राम खौलते आधा लीटर पानी में जब पूरी तरह से भीग जाये तब छानकर प्रयोग में लें। नित्य प्रति इसे दिन में 3 बार 25-25 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करायें।

अजीर्णनाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

डाइजेस्टीन टेबलेट (मार्तन्ड) **मन्दाग्नि टेबलेट** (झन्डू) **झन्डूजाइम टेबलेट** (झन्डू) **मंदाग्नि टेबलेट** (झन्डू) **शुक्तिन टेबलेट** (अलारसिन) **गारलिक पिल्स** (चरक) **ओजस टेबलेट** (चरक) **सर्टिना टेबलेट** (चरक) **पाचक वटी** (वैद्यनाथ) **हाजमोला** (डाबर) **अग्नि बल्लभ क्षार चूर्ण** (धन्वन्तरि) **गैसनोल** (गर्ग) **अग्निदीपक चूर्ण** (भजनाश्रम) **डाइजेस्टीन टेबलेट** (राजवैध शीतल प्रसाद) **गैसेक्स** (हिमालय) आदि में से किसी का भी प्रयोग औषधि के साथ प्राप्त पत्रक तथा आयु के अनुसार मात्रा का निर्धारण कर सेवन करें। **शंखवटी** (धन्वन्तरि फार्मेसी) **अग्निमुख चूर्ण** (धन्वन्तरि फार्मेसी) **लवण भास्कर चूर्ण** (धन्वन्तरि फार्मेसी) तथा **ग्राइप मधु** (धन्वन्तरि फार्मेसी) (बच्चों शिशुओं के लिए) यकृत भोजन पेय खट्टा व मीठा (धन्वन्तरि फार्मेसी) इत्यादि का सेवन अजीर्ण, उदरशूल, इत्यादि समस्त उदर रोगों में सेवन भी अति लाभकारी है।

अरुचि

रोग परिचय—खाना खाने से पूर्व तथा खाना खाते ही विरक्ति भाव का उत्पन्न हो जाना ही अरुचि के नाम से जाना जाता है। यह कोई कठिन या जटिल रोग नहीं है। उचित चिकित्सा में रोगी को इससे शीघ्र ही छुटकारा प्राप्त हो जाता है।

उपचार—अजीर्ण के अन्तर्गत लिखे योगों का उपयोग करें।

● तिक्त रस वाले पदार्थ जैसे करेला अरुचिकर होते हुए भी अरुचि को नष्ट कर देते हैं। करेला अग्नि को दीप्त करने वाला तथा भोजन को पचाने वाला (पाचक) और अरुचि नाशक है। अतः इसकी तरकारी मन्दाग्नि पर तैयार करवायें और अधिक मिर्च मसाला और तेल न डलवायें तथा तलते समय वह अधिक जलकर कोयला न बन जाये। करेले की तरकारी को भोजन के साथ खाते रहने से अरुचि मंदाग्नि, अफरा, कब्ज इत्यादि उदर विकार दूर हो जाते हैं।

● धनिया 60 ग्राम, काली मिर्च 250 ग्राम, नमक 25 ग्राम को मिलाकर सूक्ष्म चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। भोजनोपरान्त इसे 3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से जठराग्नि तेज होती है जिसका पाचन ठीक न होता हो, मैदे में आहार कम ठहरता हो, जल्दी ही शौच-क्रिया द्वारा निकल जाता हो। ऐसे रोगी को यह अमृत तुल्य योग है।

● भोजनोपरान्त 1 ग्राम काला नमक के चूर्ण को जल से सेवन करने से अजीर्ण नहीं होता है।

● अग्निवृद्धि हेतु अर्थात् अग्निमांद्य में प्याज को सिरके के साथ खायें।

● सौंफ 2 तोला को 1 सेर पानी में औटायें जब पानी चौथाई रह जाये तो उसे छान लें उसमें सेंधा नमक और काला नमक 2 माशा मिलाकर कुछ दिनों के सेवन कराने से आध्मान (अफारा) नष्ट हो जाता है।

● सौंफ 9 माशा, सौंठ 3 माशा, मिश्री 1 तोला सभी को बारीक पीसकर 6-6 माशे की मात्रा में सेवन करने से बदहज्मी शान्त हो जाती है।

● प्याज को कच्चा (सलाद के रूप में) खाने से अजीर्ण, अग्निमांद्य व उदर के कृमि दोष इत्यादि दूर हो जाते हैं।

● साफ की हुई अजवायन को 3 दिनों तक छाछ (तक्र या मट्ठा) में भिगोकर छाया में सुखा लें, फिर अजवायन के बराबर घी में सेंकी हुई हरड़ एवं काला नमक डालकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से डकारें आना (वातिक अर्श—रक्तस्राव युक्त न हो), पेट फूलना, पेशाब कम आना तथा टट्टी की कब्जियत में अत्यन्त लाभ होता है।

● नित्यप्रति प्रात:काल 6 ग्राम धनियां को उबालकर थोड़ी शक्कर व दूध मिलाकर चाय की भाँति एक कप में छानकर पिलाने से जठराग्नि प्रदीप्त होकर पाचनशक्ति बढ़ जाती है तथा आमदोष का पाचन होकर शरीर में हल्कापन व स्फूर्ति आ जाती है।

● धनियां 50 ग्राम को कुचलकर (मीगीं निकालकर) एक मिट्टी के पात्र में रखकर लें। तदुपरान्त काली मिर्च तथा नमक 1-1 ग्राम मिलाकर तथा थोड़ा-सा नीबू रस निचोड़ कर मुंख में रखकर धीरे-धीरे चबाने से अरुचि मिट जाती है।

● जीरा 100 ग्राम लेकर भली प्रकार कूड़ा-करकट साफ कर स्वच्छ कर लें। फिर इसमें 50 मि. ली. नीबू का रस 3, ग्राम नमक चूर्ण तथा 6 ग्राम काली मिर्च चूर्ण मिलाकर डाल दें और काँच के बर्तन में ढककर धूप में रख दें। चौबीस घण्टे धूप में रखने के बाद एक चौड़े बर्तन (पात्र) में निकालकर छाया में शुष्क होने के लिए रख दें। शुष्क हो जाने पर सुरक्षित रूप से रख लें। यह औषधि अरुचि नाशक, भूख बढ़ाने वाली स्वादिष्ट तथा मन प्रसादक है। खांना खाने के बाद 1-2 ग्राम की मात्रा में लेकर मुख में रखकर धीरे-धीरे चबायें। आवश्यकता के समय मेहमानों को स्वागत स्वरूप प्लेट में रखी जा सकती हैं।

● जीरा 20 ग्राम लेकर 250 मि. ली. गोदुग्ध में भिगो दें । फिर 2 घंटे के बाद मन्दाग्नि पर खीर की भांति गाढ़ा होने तक पकायें, इसमें 20 ग्राम मिश्री पीसकर मिला दें । यह एक मात्रा है । इसे शीतल होने पर प्रातःकाल खिलायें किन्तु इसके सेवन के पश्चात् 1 घन्टा तक जल पीने को निषेध कर दें। इसके प्रयोग से भूख बढ़ती है, प्रदर नाशक है । प्रदर एवं तज्जन्य हस्त, पाद नेत्रों की एवं वस्तिगत जलन नष्ट हो जाती है ।

● अन्तर्जिह्वा निकाले हुए लहसुन 1 तोला, जीरा 1 माशा, अदरक 1 माशा, काली मिर्च 1 माशा की चटनी नित्य प्रति भोजन के साथ प्रयोग करने से मन्दाग्नि, अम्लपित्त, आध्मान, कृमि, यकृत विकार, आन्त्र विकार इत्यादि नष्ट हो जाते हैं।

● पोदीना के रस में शक्कर मिलाकर पिलाने से तृषा, दाह, अजीर्ण, यकृत-विकार तथा कामला रोग नष्ट हो जाता है ।

● गाय की बछिया का ताजा मूत्र ढाई तोला से 4 तोला तक नित्य प्रति खाली पेट पीने से जलोदर, उदरशूल, कामला, पाण्डु, यकृत वृद्धि, प्लीहा वृद्धि, अण्डवृद्धि, खाज, खुजली, कब्जियत, मन्दाग्नि, अम्लपित्त इत्यादि नष्ट हो जाता है । बच्चों को इसकी मात्रा 1 से 2 तोला तक दें ।

● नीबू का रस 20 तोला में 100 तोला शक्कर मिलाकर एक काँच के बर्तन (पात्र) में भरकर 15 दिनों तक धूप में रखें । जब नीबू रस व शक्कर घुल-मिलकर एकजान हो जायें, तब उसे सुरक्षित रूप से रख लें । इसे 1 तोला की मात्रा में भोजन के साथ लें । इसके प्रयोग से मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण कभी नहीं होता है ।

● नौसादर (खानेवाला) 5 तोला, काला नमक 2 तोला, सफेद जीरा भुना हुआ 1 तोला, भुनी हुई हींग आधा तोला को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखें। इसे 3-3 माशा की मात्रा में जल के साथ प्रयोग करने से उदरशूल, अफारा व अपची में शीघ्र लाभ होता है ।

● 100 पके कागजी नीबू लेकर उनके 4-4 टुकड़े करें । (ध्यान रखें कि टुकड़े बिल्कुल ही अलग-अलग न होकर नीबू में ही लगे रहना चाहिए।) फिर उनको स्टील के बर्तन में पकायें, आग धीमी रखें । जब सभी नीबू उबलकर कुछ-कुछ गल जायें तब उसमें निम्न मसाला भरकर काँच के पात्र में मुँह बन्द करके सुरक्षित रख लें । अजवायन 250 ग्राम, काला नमक, सेंधा नमक, जीरा 50-50 ग्राम, सौंठ 10 ग्राम, काली मिर्च 25 ग्राम, शक्कर 1500 ग्राम डालकर

रख दें । फिर 15 दिनों के बाद प्रयोग करें । वैसे, यह नीबू का मीठा अचार जितना अधिक पुराना होगा, उतना ही अधिक प्रभावी होगा किन्तु इसके बर्तन को प्रतिदिन हिलाते रहना चाहिए । इसके प्रयोग से कब्ज दूर होकर पेट साफ रहता है, वमन दूर होती है । यह दीपन व पाचक तथा अत्यन्त ही स्वादिष्ट है ।

● सौंफ, भुना जीरा, सौंठ 10-10 ग्राम, भुना धनियां, मिश्री 20-20 ग्राम, नीबू का सत (टाटरी) 5 ग्राम, पिपरमेन्ट 2 ग्राम, सैंधा नमक 15 ग्राम—सभी औषधियों को कूट पीसकर चूर्ण बनायें, अन्त में टाटरी और पिपरमेन्ट मिलाकर घोट लें । यह चूर्ण अग्निवर्धक, अग्निदीपक, पाचक एवं स्वादिष्ट है ।

● हरा पोदीना 15 पत्ते, तुलसी की हरी पत्तियां 15 को 400 ग्राम जल में डालकर आग पर उबाल लें । आधा जल रह जाने पर छान कर ठण्डा करके शीशी में भरकर रख लें । अपनी रुचि के अनुसार इसमें नमक मिला लें। इसे 30 मि. ली. की मात्रा में दिन में 2 बार सेवन करने से अरुचि, बदहज्मी, मितली, पेट का भारीपन नष्ट होता है ।

● धनिये का चूर्ण 3 माशा तथा इतना ही सौंठ का चूर्ण को 2 छटांक गरम पानी के साथ सेवन कराने से अजीर्ण में लाभ होता है ।

● गरम पानी के साथ सौंठ का चूर्ण प्रयोग करने से अरुचि दूर होती है। भूख खुलकर लगने लगती है तथा भोजन पचने भी लगता है ।

● सौंठ 5 रत्ती, अजवायन 3 रत्ती, छोटी इलायची 15 रत्ती लें । सभी को मिलाकर भोजनोपरान्त सेवन करने से अफारा, अजीर्ण, अरुचि में लाभ होता है।

● लाल प्याज के रस को थोड़ा सा गरम करें । फिर थोड़ा सा नमक डालकर व नीबू निचोड़कर भोजन के साथ (सॉस) चटनी की भाँति प्रयोग करने से अजीर्ण, कब्ज इत्यादि नष्ट होते हैं ।

● लहसुन की छिली कलियों को पीसकर और उसमें कागजी नीबू का रस और थोड़ा-सा नमक मिलाकर खाने से अजीर्ण व अरुचि नष्ट होती है ।

नोट—स्वास्थ्य रक्षा हेतु निम्न लिखित संयोग विरुद्ध खान-पान पर विशेष ध्यान दें (इन्हें साथ-साथ अथवा शीघ्र ही आगे-पीछे न खायें)

संयोग विरुद्ध पदार्थ—दूध और बेलफल, दूध और तुरई, दूध और टेंटी, दूध और नीबू, छाछ और केला, दूध और तेल, दूध और मांस, दूध और सूखा साग, दूध और मूली, दूध और मछली, दूध और बड़हल, दूध और नमक, दही और बड़हल, चावल और नारियल, दूध और जामुन, शहद और गरम पदार्थ,

शहद और बड़हल, शहद और मूली, शराब और खीर, मछली और गुड़, बड़हल और केला, शहद और मछली, शहद और गरम जल, शहद और बरसात का जल तथा सम मात्रा में शहद और घी इत्यादि।

● सोंठ 3 ग्राम, काली मिर्च 15 ग्राम, सूखा पोदीना 15 ग्राम, अनारदाना 15 ग्राम, काला जीरा, सफेद जीरा, पिप्पली, छोटी इलायची के दाने, चित्रक, सभी 5-5 ग्राम तथा कमल गट्टे की मींगी 10 ग्राम, अमचूर 5 ग्राम, सैंधा नमक 40 ग्राम, नीबू सत 8 ग्राम, पिपरमेन्ट 2 ग्राम, मिश्री 150 ग्राम लें। सभी औषधियों को अलग-अलग कूट पीसकर छानकर मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसे 3 से 5 ग्राम की मात्रा में भोजन के पश्चात् प्रयोग कर लें। अत्यन्त स्वादिष्ट, मृदु चूर्ण है। इसके व्यवहार करने वाले का रोम-रोम पुलकित हो जायेगा। इसके सेवन से अरुचि (भूख न लगना) मन्दाग्नि, अजीर्ण, अफारा, अम्ल पित्त, व हाजमें की कमजोरी, खाना हजम न होना इत्यादि में अचूक लाभ प्राप्त होगा।

● देसी अजवायन 3 तोला तथा सौंठ डेढ़ माशा को रात्रि में सोते समय 3 पाव पानी में भिगो दें। प्रात:काल भली-भाँति मथकर थोड़ा गरम कर लें। चुटकी भर नमक मिलाकर पिलाने से पाचनशक्ति की क्षीणता दूर हो जाती है।

● देसी अजवायन 1 किलो को (साफ करके) 4 किलो पानी में 12 घन्टे के लिए भिगो दें। तत्पश्चात् भभके द्वारा अर्क खींच लें। मात्रा 1-1 छटांक दिन में 2 बार। इसके सेवन से जिगर-तिल्ली से सम्बन्धित समस्त प्रकार के रोगों का कुछ ही दिनों में सफाया हो जाता है। आमाशय शक्तिशाली हो जाता है। इसके निरन्तर प्रयोग से रोगी बलिष्ठ होकर मोटा-ताजा हो जाता है।

नोट—दूध पीने वाले बच्चों को अजीर्ण या अरुचि इत्यादि हो जाये तो सर्वप्रथम उसका पेट साफ करें। इस हेतु कैस्टर आयल का प्रयोग करें। यदि बच्चा कमजोर हो तो उसे रिफाइन्ड कैस्टर आयल दें।

बच्चों के दूध में चीनी की मात्रा कम करें। यदि बच्चों को बगैर चीनी के दूध पीने की आदत डाली जाये तो सर्वोत्तम है। चीनी अजीर्ण में ठीक नहीं होती है। यदि बच्चे को दूध न पच रहा हो तो लाइम वाटर (चूने का पानी) मिलाकर पिलायें। बच्चों को अजीर्ण, अपच या मन्दाग्नि इत्यादि हो तो—हींग, सोंठ, बड़ी इलायची, भारंगी, नमक, अरन्ड की जड़ सभी औषधियाँ सम मात्रा में लेकर गरम जल में पीसकर दें। जौ के पानी में नीबू का रस और नमक डालकर देना भी लाभप्रद है। दलिया में नीबू और नमक मिलाकर देना भी अजीर्ण को नष्ट करता

है। बड़ी हरड़, काला नमक और हींग (1-1 रत्ती) बारीक पीसकर गुनगुने जल से सेवन कराने से बच्चों के अजीर्ण का समूल नाश हो जाता है।

पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

गैसेक्स (हिमालय) **लिव 52** (हिमालय) **सुक्तिन** (एलारसिन), **ओजस** (चरक), **झन्डू झाइम** (झन्डू), **गैसान्तक वटी** (गर्ग), **अग्निबल्लभ क्षार** (धन्वन्तरि कार्यालय), **गैस क्लीन कैप.** (अतुल फार्मा.), **क्षुधाकारी वटी** (वैद्यनाथ), **विमलिव कैप.** (धूत पापेश्वर), **गैसान्तक कैप.** (गर्ग), **गैसोना कैप.** (श्री ज्वाला), **गैसनोल लिक्विड** (गर्ग), **लिव 52 सीरप व ड्राप्स** (हिमालय) **द्राक्षोविन पेय** (धूत पापेश्वर), **लिवरोल सीरप** (वैद्यनाथ), **अंगूरासव** (झन्डू), **रक्तोफास्फो माल्ट सीरप** (झन्डू), **टेफरौली टेबलेट** (टी. टी. के.) इत्यादि का औषधि के साथ प्राप्त पत्रक के निर्देशानुसार आयु व बल का ध्यान रखते हुए मात्रा का निर्धारण कर व्यवहार करायें। **कायम चूर्ण** (सेठ ब्रादर्स भावनगर) (गुजरात) इसके सेवन से कब्ज और इससे उत्पन्न हुई तकलीफें जैसे एसिडिटी, सिर-दर्द, मुँह में छाले, शरीर में चुस्ती इत्यादि नष्ट हो जाती हैं। यह चूर्ण शरीर को शीतलता प्रदान कर मन को प्रफुल्लित रखता है तथा शरीर को बल प्रदान करता है। रात्रि को सोते समय सेवन करें।

अम्लपित्त

रोग परिचय—यह स्वयं में कोई रोग नहीं है, बल्कि शरीर में उत्पन्न हो रहे (पनप रहे) अन्य रोगों का परिणाम है अर्थात् शरीर में जो दूसरे रोग डेरा जमाये बैठे हैं, उनका एक विकार मात्र है उस रोग में—आमाशय में अम्ल- रस अधिक मात्रा में बनने लगता है। जिसके फलस्वरूप खट्टी डकारें आना, अजीर्ण और अरुचि आदि विकार हो जाते हैं।

उपचार—शंख भस्म 1 ग्राम और सौठ का चूर्ण आधा ग्राम लें। दोनों को शहद के साथ मिलाकर चटाने से अम्लपित्त का रोग दूर हो जाता है।

● हरा धनियां, लहसुन, पके टमाटर, अदरक मिलालें। नमक, मिर्च डालकर चटनी बनाकर सेवन करने से उदर के विभिन्न रोग नष्ट होकर क्षुधा बढ़ जाती है। ज्वर रोगी की भूख बढ़ाने हेतु तो यह चटनी अद्वितीय है। यह अत्यन्त स्वादिष्ट भी होती है, अत: भोजन के आनन्द को बढ़ा देती है।

● ताजे धनियां का रस 30 ग्राम की मात्रा में नित्य लेने से मात्र 3 दिन में ही भूख चमक उठती है।

● प्याज 50 ग्राम प्याज को काटकर गाय के ताजे दही में मिलाकर सेवन करने से अम्लपित्त ठीक हो जाता है।

● सौंफ 9 माशा, सौंठ 3 माशा, मिश्री 1 तोला सभी को बारीक पीसकर सुरक्षित रख लें। इसे दिन में 3-4 बार गरम पानी से सेवन करने से प्रत्येक प्रकार की बदहज्मी शान्त हो जाती है।

● सिद्धामृत (र. यो. सा.) फिटकरी का फूला 3 भाग, सोना गेरू 1 भाग दोनों को मिलाकर खरल कर लें। इसे 1-1 ग्राम की मात्रा में गरम किये हुए ठण्डे गो-दुग्ध से प्रात: सायं सेवन करने से शिरो-भ्रम (चक्कर आना) अन्य शिरोरोग, अम्लपित्त तथा पित्त प्रकोपज विकार दूर होते हैं।

● करेले के फूल या पत्तों को घी में भूनकर उनका चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। 1-2 ग्राम की मात्रा में यह चूर्ण दिन में 2-3 बार खाने से अम्लपित्त ठीक हो जाता है।

● सफेद जीरा के साथ धनिये का बराबर (सम) मात्रा में बनाकर शक्कर के साथ खिलाने से अम्लपित्त में लाभ हो जाता है।

● सन्तरे के रस में थोड़ा-सा भुना हुआ जीरा और थोड़ी मात्रा में सेंधा नमक मिलाकर पीने से अम्लपित्त में लाभ होता है।

● बेलगिरी के पत्तों को जल के साथ पीसकर, छानकर उसमें 20 ग्राम मिश्री मिलाकर पीने से अम्लपित्त में लाभ होता है।

● नित्य 1 तोला चूने का निथरा हुआ पानी पीने से अम्लपित्त में लाभप्रद है।

● मुलहठी के चूर्ण को मधु तथा घृत में मिलाकर चटाने से अम्लपित्त में लाभ होता है।

● मुनक्का 50 ग्राम, सौंफ 25 ग्राम दोनों को यवकुट कर 200 ग्राम पानी में रात्रि को भिगो दें। तदुपरान्त प्रात:काल मसलकर छान लें और उसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर पिलाने से अम्लपित्त में लाभ होता है।

● इमली के चीया (बीज रहित) का चूर्ण 100 ग्राम, जीरा 25 ग्राम तथा मिश्री 125 ग्राम लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनाकर शीशी में सुरक्षित रखें। इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम जल के साथ लेने से अम्लपित्त में अवश्य लाभ होता है।

● शोरा 80 ग्राम, नौसादर 10 ग्राम को लेकर चूर्ण बना लें। उसे 4 से 6 रत्ती की मात्रा में दिन में 2 बार (सुबह-शाम) जल में मिलाकर सेवन कराने से आमाशय के पित्त का रूपान्तर होता है। अम्लपित्त, छाती में जलन, खट्टी डकारों में अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● दालचीनी 2 ग्राम, छोटी इलायची 5 ग्राम, अनारदाना 2 ग्राम, पोदीना शुष्क 3 ग्राम, आँवला 3 ग्राम, काला जीरा 1 ग्राम, मुनक्का 5 ग्राम, पानी 90 ग्राम, गुलकन्द 20 ग्राम लें। उपरोक्त सभी औषधियों को पानी में पीसकर तथा गुलकन्द को मल-छानकर पिलाना अम्लपित्त में विशेष लाभकारी है। यह अम्लपित्त नाशक अति उत्तम (पेय) सीरप है।

● बड़ी इलायची 50 ग्राम तथा इमली कोयला, जवा हरड़, सौंठ सभी 50-50 ग्राम तथा शंख भस्म 400 ग्राम, सोड़ा बाई कार्ब 1000 ग्राम लेकर सभी को अलग-अलग चूर्ण लेकर घुटाई करके मथ लें। फिर एक साइज के कैपसूल भरकर सुरक्षित रख लें अथवा ऐसे ही चूर्ण के रूप में सुरक्षित रखें। यह अम्लपित्त की समस्त अवस्थाओं में गुणकारी है। ठण्डे पानी से नाश्ते एवं खाने के बाद दिन में 3 बार सेवन करायें।

● कागजी नीबू के छिलके खूब महीन चबाकर उसका रस चूसने से और फांक फेक देने से अम्लपित्त रोग शान्त हो जाता है।

● अदरक का रस 6 माशे में समभाग अनार का रस मिलाकर पिलाने से अम्लपित्त में लाभ हो जाता है।

प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय कुछ योग

शुक्तिन टेबलेट (अलारसिन)—भोजन के मध्य या भोजन के पश्चात् 2-2 टिकिया दिन में 3 बार। लक्षणों की उग्रता में दिन में 3-4 बार तक 3 से 6 गोलियाँ तक एक साथ दे सकते हैं। बच्चों को आधी से एक टिकिया दिन में 3 बार दें।

यह उदर में किसी भी प्रकार के अम्लाधिक्य को कम करने के लिए अति उपयोगी टिकिया है। अम्लपित्त की समस्त अवस्थाओं में लाभकारी है। आमाशय शोथ, परिणाम शूल, अन्नद्रव शूल, पेप्टिक-अल्सर इत्यादि सभी अवस्थाओं में अत्यन्त निरापद महौषधि है।

टेबलेट के अन्य विशेष लाभ इस प्रकार हैं—मुख से मलद्वार तक अन्न

प्रणाली को विष रहित करती है । आमाशय और आंतों की क्षोभक पदार्थों से रक्षा करती है साथ ही शूल को शान्त करती है ।

आदि (प्रारम्भ) से अन्त तक समग्र अन्न प्रणाली पर क्रिया करती हुई भोजन के शोषित न होने से अवशिष्ट अंशों को मलद्वार से निकालती हुई, अन्न प्रणाली की मलद्वाराभिमुख स्वभाविक गति को व्यवस्थित करती है ।

आमाशय तथा ग्रहणी के क्षतों (जख्मों) के भरने में सहयोग देती है ।

पाचनतन्त्र की स्वाभाविक क्रिया का संचालन करने वाले केन्द्रीय तन्त्र पर उपकारक क्रिया करती है ।

लीवर (जिगर) की क्रिया को स्वथावस्था में रखती है । सगर्भावस्था में हृदय प्रदेश में दाह (जलन) तथा वमन का शमन करती है ।

पाचन क्रिया की विकृतिवश हुए अजीर्ण विकार एवं अम्लाधिक्य-जनित लक्षणों में रात्रि के समय होने वाले शूल के शमनार्थ । सुक्तिन टिकिया के सेवन से शूल के वेगों का अन्तर बढ़ता जाता है तथा कई रोगियों में तो शूल सम्पूर्णतया शान्त हो जाता है ।

मैनोल टेबलेट (चरक) तथा **मेनांल टॉनिक** (चरक) मात्रा—वयस्कों को 2 चम्मच सीरप या 2 टिकिया दिन में 3 बार । बच्चों को वयस्को की आधी मात्रा दें । सामान्य दुर्बलता, एमीमिया, गर्भावस्था में रक्ताल्पता, गुण (जीभ) में छाले, उदर में तकलीफ, अति अम्लता में अतिशय उपयोगी है । छाती की जलन में भी लाभदायक है, कष्टनाशक है ।

अभयासिन टेबलेट (झन्डू)—2 से 4 गोली गरम जल या दूध से दिन में 3 बार । अम्लपित्त में अत्यधिक लाभकारी एवं मलावरोध नाशक है ।

झन्डूझाइम (झन्डू)—मात्रा उपरोक्त । अजीर्ण व अम्लपित्त में अतिशय उपयोगी है ।

डायमैक्स सीरप (प्रताप फार्मा.)—1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार । अम्लपित्त की समस्त अवस्थाओं में अति उत्तम व निरापद है ।

अम्ल पित्तान्तक (वैद्यनाथ)—मात्रा व गुण उपर्युक्त ।

अग्नि बल्लभ क्षांर (धन्वन्तरि कार्यालय)—1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार। अम्लपित्त तथा इसके अन्य उपद्रवों में अत्यन्त लाभप्रद है ।

वोमिटेब सीरप और टिकियां (चरक)—अम्ल नाशक एवं वमन उल्टी रोकने हेतु परम लाभकारी औषधि है । गर्भावस्था के भी दौरान बेझिझक इस्तेमाल

करायी जा सकती है । **मात्रा** 2-2 चम्मच या 2-2 टिकिया प्रत्येक आधा-आधा घंटे पर दें । बच्चों को आधी मात्रा तथा शिशुओं को आधा चम्मच प्रत्येक आधा घंटे पर सेवन करायें ।

गार्लिल टिकिया (आवरणयुक्त व रहित) (चरक)—पाचन किया में परम सहायक, वायुनाशक, रेचक तथा वायु अवरोधक है । गैस से उत्पन्न होने वाली परेशानियों, कष्टों एवं हृदय विकारों को दूर करती है । उदर स्फीति, पेट व आँत में वायु, मन्दाग्नि, भोजन के पश्चात् घबराहट इत्यादि में अतिशय लाभकारी है। यदि रोगी खूनी बबासीर अथवा तीव्र पेट दर्द से पीड़ित हो तो सेवन न करायें । मात्रा—2-3 टिकिया 2-3 बार भोजन के बाद 6 सप्ताह तक दें । बच्चों को उपरोक्त की आधी मात्रा दें ।

लिवोमिन (ड्राप्स, सीरप, टिकिया) (चरक)—यकृत के कार्य को सुचारु रूप से नियन्त्रित करती है । पित्त के स्राव को बढ़ाती है । यह अंग्रेजी ऐन्टीबायोटिक दवाओं से उत्पन्न अनिष्टों से यकृत की रक्षा करती है । इसके अतिरिक्त यकृत की सूजन, जकड़न को दूर करती है । मदिरा से होने वाले दूषण से यकृत की रक्षा करती है । पाचन क्रिया को सुधार कर भूख बढ़ाती है । वजन में वृद्धि करती है, दस्त साफ करती है । यह मन्दाग्नि, यकृत विकार, पीलिया के साथ यकृत में विकार आदतन मदिरापान तथा यकृत पर चर्बी का जम जाना इत्यादि में लाभप्रद है । वयस्कों को 2-3 चम्मच या 2-3 टिकिया दिन में 2-3 बार । शिशुओं को 5 से 10 बूँद दिन में 3-4 बार दें ।

अतिसार, दस्त आना

रोग परिचय—अतिसार प्रायः खान पान की गड़बड़ी के होता है । खाना पच नहीं पाता है, तब पचा-अपचा भोजन पतले दस्तों के रूप में आने लगता है। यह सामान्य और साध्य रोग है । यथोचित चिकित्सा एवं परहेज से शीघ्र ही ठीक हो जाता है ।

उपचार

- पिन्ड खजूर 5-6 की संख्या में खाकर 1 घन्टे के पश्चात् थोड़ा-थोड़ा पानी कई बार पीने से अतिसार में लाभ होता है ।
- कथा या खैरसार 10 ग्राम तथा दाल चीनी 4 ग्राम इन दोनों का मोटा चूर्ण करके 250 ग्राम उबलते पानी में डालकर 1 घन्टे बाद छानकर 25-25

ग्राम की मात्रा में दिन में 2-3 बार सेवन करायें। अथवा उसके चूर्ण के साथ बेलगिरी का चूर्ण मिलाकर सेवन कराने से अतिसार में लाभ होता है।

● जामुन की गुठली का चूर्ण, आम की गुठली (गिरी) का चूर्ण तथा भुनी हुई हरड़ सममात्रा में लेकर खरलकर जल के साथ सेवन कराने से जीर्णातिसार में लाभ होता है।

● नवजात शिशुओं तथा छोटे बच्चों को जायफल सिल पर पीसकर (घिसकर) थोड़ा-थोड़ा बार-बार चटाना अतिसार में अत्यन्त लाभप्रद है।

● कायफल का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन कराने से ग्रीष्म कालीन अतिसार में विशेष लाभ होता है।

● दालचीनी का चूर्ण तथा सफेद कत्था का चूर्ण 6-6 रत्ती की मात्रा में मिलाकर शहद अथवा जल के साथ सेवन कराना अतिसार में लाभप्रद है।

● यदि अतिसार पक्व हो तो नीम के कोमल पत्ते तथा बबूल के पत्ते 6-6 ग्राम एकत्र पीसकर दिन में दो बार शहद के साथ सेवन कराने से त्त्काल लाभ होता है।

नोट :—आमातिसार में इस योग का प्रयोग कदापि न करें।

● बेलगिरी तथा आम की गुठली की गिरी दोनों समभाग लेकर चूर्ण करें। 2 से 4 ग्राम की मात्रा में इस चूर्ण को चावल के मांड़ अथवा जल के साथ सेवन कराने से आमातिसार में अत्यन्त लाभ होता है।

● गोंद का महीन चूर्ण 6 ग्राम को 100 ग्राम गेहूँ के आटे में गूँथकर रोटी पकाकर खिलाने से एक-एक कर दर्द के साथ दस्त आने में अत्यन्त लाभप्रद है।

● यदि रक्त मिश्रित अतिसार हो तो बेलगिरी, अतीस, माजूफल, दूधिया बच तथा पाठा सममात्रा में लेकर चूर्ण करें। आयु व अवस्थानुसार आधा से एक ग्राम तक की मात्रा में 10-20 ग्राम दूध में घोलकर पिलाना लाभप्रद है।

● कच्चे बेल को आग में भूनकर खिलाने से अथवा भुने हुए बेल के गूदे में मिश्री और अर्क गुलाब मिलाकर प्रातःकाल खाली पेट सेवन कराने से सभी प्रकार के अतिसारों में लाभ होता है।

● बेलगिरी सूखी 50 ग्राम तथा सफेद कत्था 20 ग्राम लेकर बारीक पीस लें। तदुपरान्त इसमें 100 ग्राम मिश्री मिला लें। इसे 10 रत्ती की मात्रा में दिन मै दो तीन बार सेवन कराने से अतिसार में लाभ होता है।

● लिसोढ़े की गुठली निकले हुए गूदे के चूर्ण को 1-2 ग्राम की मात्रा में खिलाना अतिसार में लाभप्रद है।

● प्याज को कूटकर उसका रस निकालकर उसमें थोड़ी सी अफीम मिलाकर सेवन कराना अतिसार में लाभप्रद है।

● मोचरस 4 ग्राम पीसकर उसमें मिश्री मिलाकर सेवन कराना पुराने अतिसार में लाभप्रद है।

● अतीस 4 रत्ती माँ के दूध में घिसकर छोटे बच्चों को चटाने से अतिसार में विशेष लाभ होता है।

● यदि बहुत अधिक छोटे बच्चे को अधिक दस्त हो रहे हों तो असली केसर 1-2 चावल की मात्रा के बराबर घी में मिलाकर चटाने से लाभ होता है।

● काकड़ासिंगी का एक से 1 से डेढ़ तक की मात्रा में चूर्ण शहद के साथ प्रयोग करावें।

● जब बढ़े हुए अतिसार में किसी भी तरह से दस्त रुकने में न आ रहे हों तो हल्दी बारीक पीसकर कपड़छन करके अग्नि पर भून लेवें और हल्दी के बराबर काला नमक मिलाकर 3-3 ग्राम की मात्रा में ठन्डे जल से 4-4 घन्टे पर सेवन कराना अत्यन्त लाभप्रद है।

● सूखे आँवले, वंशलोचन, छोटी इलायची तथा धनिया सभी सममात्रा में लेकर तथा इन सभी औषधियों के बजन के बरावर मिश्री मिलाकर 6-6 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार सुबह-शाम सेवन कराना हर प्रकार के अतिसार में लाभप्रद है।

● आम तथा जामुन की अथवा इनमें से किसी भी एक की छाल को दही या मट्ठे में बारीक पीसकर नाभि के आसपास पेट पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से भयंकर से भयंकर अतिसार में लाभ हो जाता है।

● आम की गुठली ठन्डे पानी में घिसकर बालक की नाभि प्रदेश पर लेप करने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

● अनबुझे चूने को बुझाकर उसको खुले बर्तन में डालकर पानी में भिगो दें, जल इतना डालें कि चूने से जल 4 अंगुल ऊपर रहे। जब देखें कि चूना बिल्कुल नीचे बैठ गया है, तब उसे निथार लें। नीचे जमे (बैठे) हुए चूने को फिर पुनः इसी प्रकार पानी में डालकर निथारें, इस प्रकार उपरोक्त विधि से यह प्रक्रिया 100 बार करें तदुपरान्त तदुपरान्त चूने को सुखालें और बोतल में सुरक्षित रख लें। इसे 4 चावल भर की मात्रा से लेकर 4 रत्ती तक सेवन कराने से अतिसार तथा रक्तातिसार में लाभ होता है।

● हींग, केशर तथा अफीम 10-10 ग्राम लेकर जल में खरल करके मूली

के बीज के समान गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। यह 1-1 गोली सुबह-शाम देने से बालकों का कैसा भी अतिसार हो, ठीक हो जाता है।

● अतिसार की अवस्था में चाहे व विशूचिकाजन्य ही क्यों न हो—लाल मरिच का बीज देशी गुड़ में रखकर गोली बनाकर, 1 गोली रोगी को निगलवा देने से अतिसार ठीक हो जाता है।

● केले का पका हुआ ताजा गूदा 250 ग्राम, घी 250 ग्राम, दालचीनी 15 ग्राम, बड़ी इलायची के बीज, लोध पठानी, धाय के फूल सभी 6-6 ग्राम, लें। पहले चारों औषधियों को बारीक पीसकर कपड़छन कर लें। बाद में केले के गूदे को खरल में डालकर तथा गाय का घी और पिसी हुई मिश्री मिलाकर उपरोक्त चूर्ण इसमें मिला दें। इस प्रकार यह स्वादिस्ट अवलेह तैयार हो जायेगा। इसे 20-20 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम जल के साथ सेवन करने से रक्तातिसार नष्ट हो जाता हैं।

● राई, मेथी. गोंद, इलायची बड़ी, जायफल, जावित्री, खसखस 20-20 ग्राम तथा मिश्री 140 ग्राम। राई, मैथी तथा गोंद को गोघृत में भूनकर सभी औषधियों को एक साथ पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 1-2 ग्राम ठण्डे जल से दिन में 3-4 बार सेवन कराने से अतिसार में शर्तिया लाभ होता है।

● रोगी की नाभि में बड़ का दूध भरने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

● सफेद राल 4 ग्राम तथा मिश्री 6 ग्राम दोनों को बारीक पीसकर प्रात:काल 6 ग्राम की मात्रा में दही में मिलाकर खिलाना अतिसार में लाभप्रद है।

● धाय के फूल, सफेद राल, बेलगिरी, (प्रत्येक समभाग) सभी का चूर्ण करें। इसे 4 ग्राम की मात्रा में फाँक कर लोहे से बुझा मठा (तक्र) पिलाने से तत्काल दस्त बन्द हो जाते हैं।

● कपूर 1 रत्ती, कच्चे बेल का चूर्ण 3 माशा सुबह शाम तक्र (मट्ठा) के साथ सेवन कराने से 24 घन्टे में अतिसार थम जाता है।

● एक से डेढ़ तोला की मात्रा में मसूर की कच्ची दाल को 10 तोला ताजे तक्र में पीसकर पिलाने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

● भुनी सौंफ 6 मांशे तथा इतना ही मिश्री-चूर्ण दोनों को मिलाकर सुबह शाम फंकी लगाकर पानी पीने से कुछ ही दिनों में यकृत के सभी विकार दूर हो जाते हैं। अमेबिक डिसेन्ट्री जड़ से नष्ट हो जाती है।

● अतिसार में जीरा को दही के साथ सेवन करना लाभप्रद है।

● सौंठ, सौंफ, घृत, मर्जित हरीतकी 10-10 ग्राम, सिता 30 ग्राम का चूर्ण कर 3 ग्राम की मात्रा में दिन में 4 बार सेवन कराने से अतिसार, रक्तातिसार में अवश्य लाभ होता है।

● कच्ची और भुनी हुई सौंफ बराबर मात्रा में मिलाकर अन्दाज से दिन में 3-4 बार खिलाने से पेचिस ठीक हो जाता है।

● धनियाँ 15 ग्राम को पानी में ठण्डाई की भाँति घोट छानकर तथा उसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्तातिसार में लाभ होता है।

● धनिया बारीक पीसकर मट्ठे या जल के साथ 8-8 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन कराने से दस्त अवश्य बन्द हो जाते हैं।

● जवा (छोटी) हरड़ 5 तोला लेकर घी में भूनलें। उसमें सममात्रा में सौंफ का चूर्ण मिला दें, फिर दोनों के वजन के बराबर खाँड मिलाकर एक से डेढ़ तोले तक की मात्रा में ताजे पानी अथवा चावलों के धोवन (पानी) से दिन में 3 बार सेवन कराने से पहले मल की गाँठें निकलेंगी तत्पश्चात् पेचिश बन्द हो जायेगी।

● सौंठ और बेलगिरी के क्वाथ में जौ का सत्तू मिलाकर पिलाने से गर्भिणी का वमन तथा अतिसार नष्ट हो जाता है।

● जरा सी हींग को दही में लपेटकर प्रयोग करें। पेचिस का जादुई असर वाला उपचार है।

अतिसार नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

● **डियोरक्स टेबलेट** (हिमालय) 1 गोली दिन में 3 बार दें। यह सामान्य अतिसार, ग्रीष्मातिसार, यात्रातिसार तथा जीर्णातिसार में उपयोगी है।

● **दीपन टेबलेट**—(चरक) वयस्कों को 2 गोली 3 बार बच्चों को 1 गोली 3 बार तथा शिशुआ को 1/3 गोली दिन में 3 बार यह ग्रीष्मातिसार तथा बच्चों के हरे पीले दस्त पेचिश में लाभप्रद है।

● **डायरेला टेबलेट** (मार्तण्ड) गर्गवनौषधि) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

● **इन्ट्रोल टेबलेट** (मार्तण्ड) 1-2 गोली 3-3 घन्टे पर, लाभ उपर्युक्त।

● **अतिसार नाशक बटी** (राजवैद्य) मात्रा व लाभ उपरोक्त।

● **अतिसारान्तक कैप्सूल** (ज्वाला) 1-2 कैप दिन में 3 बार हर प्रकार के अतिसार में लाभप्रद है।

● **डियाडिन लिक्विड** (चरक) वयस्कों को 1 चम्मच दिन में 3 बार।

बालकों को आधी मात्रा दें। यह तीव्रातिसार, ग्रीष्मातिसार, आमातिसार, कोलायटिस व अन्य अतिसारों में लाभप्रद है।

● **अर्क पोदीना** (वैद्यनाथ) 5-10 बूँद जल में मिलाकर बच्चों के हरे पीले दस्तों में उपयोगी है।

● **क्लोरोडीन** हरा (डाबर) मात्रा व गुण उपर्युक्त।

● पुदीन हरा (डाबर) मात्रा उपर्युक्त। बच्चों के हरे पीले दस्तों तथा उदरशूल में उपयोगी है।

● **बालशूलार्क** (झन्डू) मात्रा व गुण उपर्युक्त।

● **अर्क कपूर** (वैद्यनाथ) 5 से 10 बूँद जल के साथ। अतिसार तथा हैजे में उपयोगी है।

● **अग्निमुख चूर्ण** (वैद्यनाथ) आवश्यकतानुसार सादे जल से अतिसार में सेवन करायें।

● **शिवाचूर्ण** (झन्डु) अतिसार (पेचिश) में 30 से 120 ग्रेन तक, थोड़े से नमक के साथ ऊपर से जल पिलायें। अतिसार में उपयोगी है।

● **बिमलिव कैपशूल** (धूतपापेश्वर) 1-1 कैपशूल सुबह-शाम दें। अतिसार में लाभप्रद है।

वमन (कै)

रोग परिचय—यह स्वयं में कोई स्वतन्त्र रोग नहीं है, बल्कि शरीर में पनप रहे अन्य रोग तथा रोगों के परिणाम-स्वरूप (फलस्वरूप) होता है।

अतः इसे दूसरे रोगों का लक्षण भी कह सकते हैं। इसे वमन, कै, उल्टी, हल्लास, छर्दि आदि नामों से जाना जाता है।

उपचार

● गेरू 25 ग्राम के टुकड़े को लेकर आग पर गरम करें फिर इसे 250 ग्राम पानी में बुझावें। 2-3 बार यही क्रिया करके पानी पिलायें। ऐसा करने से चाहे किसी भी कारण से उल्टियाँ आ रही हों बन्द हो जायेंगी।

● बड़ी इलायची 2-3 लें। उसके दानों (बीज) को निकाल कर पीसें फिर शहद में मिलाकर चटायें। कै बन्द हो जायेंगी।

● हरे धनिये का पानी थोड़ी-थोड़ी देर के अन्तर से 1-1 घूँट पिलाना चाहिए। किसी भी कारण से कै आ रहीं हो, तुरन्त बन्द हो जायेंगी।

● आधे नीबू का रस, पानी 30 ग्राम, जीरा 1 ग्राम तथा 1 ग्राम छोटी इलायची के दाने पीस व मिलाकर पिलायें। आवश्यकता पड़ने पर पुनः 2 घण्टे बाद पिला सकते है। उल्टी बन्द करने हेतु अति उत्तम योग है।

● किसी भी कारण से जी (दिल) मिचला रहा हो तो 5-6 लौग चबा लें। तुरन्त आराम होगा।

● अदरक के रस में समभाग प्याज का रस मिलाकर सेवन करने से वमन में लाभ होता है।

● नीबू का रस जल के साथ सेवन करना भी वमन में लाभप्रद है।

● सौंफ 6 माशा की पोटली बनाकर आधा सेर दूध में औटावें। इसमें 3 उफान आने पर नीचे उतारलें और थोड़ी-सी मिश्री मिलाकर पिलावें। गर्भवती की वमन में लाभप्रद है।

● सौंठ का चूर्ण घी में पकाकर उसमें बताशा मिलाकर चटाने से बच्चों का दूध डालना बन्द हो जाता है। वयस्कों को भी वमन (कै), उल्टी आना बन्द हो जाता है।

● प्याज का रस 1 तोला, पोदीना का-रस 1 तोला, चीनी 1 तोला को मिलाकर दिन में 3 बार देने से वमन, अतिसार, हैजा ठीक हो जाता है। प्रयोग 3 दिन तक जारी रखें।

● पोदीना का रस 1 तोला शक्कर मिलाकर बार-2 पिलाने से वमन और तृष्णा मिट जाती है।

● एक नीबू के 2 टुकड़े करके उसपर पिसी हुई काली मिर्च छिड़ककर रोगी को एक-एक कर चूसने हेतु निर्देशित करें, वमन बन्द हो जायेंगी। दिन भर में 5-6 बार डेढ़ पाव पानी में एक नीबू का रस मिलाकर प्रत्येक बार ताजा बनाकर प्रयोग करें। पिलाने से इस साधारण प्रयोग से पतले दस्त आसानी से बन्द हो जाते हैं।

● नीबू के रस में भुना हुआ सफेद जीरा, लौग और काली मिर्च पीसकर पिलाना भी मिचली और वमन में लाभप्रद है।

● कमल गट्टा और बड़ी इलायची भूनकर शहद से चटाने से उल्टी रुक जाती है।

● आधी लौंग भूनी हुई, आधी संजीवनी वटी देने से लाभ होता है।

● सत अजवायन, सत पोदीना, सत पिपरमैन्ट और कपूर मिलाकर 1-1 बूँद देने से वमन तत्काल रुकती है।

वमन नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

● **बोमीटेव सीरप** और **बोमीटेव टिकिया** (निर्माता चरक फार्मेसी) हर प्रकार की वमन विशेषकर गर्भावस्था की वमन में लाभकारी है। मात्रा वयस्कों को 2-2 चम्मच या 2-2 टिकिया प्रत्येक आधा घण्टे के अन्तराल से। बच्चों को आधी मात्रा दें। शिशुओं को आधा चम्मच प्रत्येक आधा घण्टे पर दें।

● **डाइजोल टेवलेट** (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार दें। यह औषध भी हर प्रकार की वमन में लाभकारी है।

● **गैसेक्स टेबलेट** (हिमालय) 2-2 टिकिया दिन में 3 बार अथवा आवश्यकतानुसार दें। तीव्रावस्था में 2-2 टिकिया प्रत्येक 2-2 घन्टे के अन्तर से दे सकते है।

● **सूक्ष्मादि टेबलेट** (झन्डू) 1 से 4 टिकिया दिन में 3-4 बार दें। वमन में अतिशय उपयोगी है।

● **गैस नोल** (गर्ग) सर्पेन्भिन (मार्तण्ड) गैसोन (मेडिकल इथिक्स) इत्यादि का प्रयोग भी वमन को रोकने में अति उपयोगी है।

● **कृष्णा मिक्श्चर नं० 14**, अमृतधारा, पुदीनहरा, यूनानी, (हमदर्द) की कुलजम इत्यादि का प्रयोग भी वमन रोकने में अतिशय लाभकारी है।

● **विजयभास्कर चूर्ण** (धन्वन्तरि फार्मेसी) का वमन हेतु (समुद्री, हवाई, पहाड़ी अथवा रेल यात्रा और गर्भवती स्त्रियों के लिए अत्यन्त लाभकारी है। सभी आयु वर्ग के स्त्री पुरुष इस स्वादिष्ट चूर्ण का सेवन कर सकते हैं। वमन नाशक होने के अतिरिक्त उदर के समस्त रोगों में तत्काल लाभप्रद एवं गुणकारी है।

कब्ज

रोग परिचय—कब्ज का सीधा-सादा सा अर्थ है—मल हो जाना, । मल उतरने की क्रिया विकृत हो जाना, यह रोग प्राय: आँतों की गड़बड़ी के कारण हुआ करता है। कोष्ठबद्धता मलावरोध, मलबन्ध, मल न उतरना, आदि सभी कब्ज के ही पर्यायवाची शब्द हैं।

उपचार

● छोटी (काली अथवा जंगी) हरड़ 2-3 प्रतिदिन चूसा करें।

नोट :—इस काली हरड़ को न भूनना है और न कूटना है। केवल पानी से धोकर और

साफ कपड़े से पोंछ लें। लगभग 1 घन्टे में यह घुल जाती है। कब्ज दूर करने के लिए यह रामबाण है। किन्तु यह खुश्की करती है। अत: घी या दूध का सेवन अति आवश्यक है।

● सनाय की पत्ती 50 ग्राम, सौंफ 100 ग्राम, मिश्री 200 ग्राम, तीनों को कूटपीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसको रात्रि में सोते समय 6 ग्राम की मात्रा में गरम पानी के साथ सेवन करने से प्रात:काल खुलकर दस्त होता है।

● बहुत छोटे बच्चे को यदि कब्ज हो तो पान का डंठल यदि धीरे से गुदा में प्रविष्ट कर दिया जाय तो मल आसानी से आ जाता है। डंठल के सिरे पर थोड़ा सा नारियल का तेल लगा लें।

● यदि बच्चा थोड़ा बड़ा हो तो गरम पानी में शहद मिलाकर पिचकारी (एनिमा) दिया जा सकता है। ऐसा करने से एक मिनट के अन्दर ही मल आ जाता है।

नोट—यदि डूश देना हो तो गरम पानी इस्तेमाल करना चाहिए। पानी में नीबू का रस या शहद मिला लेना चाहिए। डूश निर्दोष रहता है। इससे कोई हानि नहीं होती है। कब्ज के रोगी बच्चे को शक्कर (Sugar) के स्थान पर शहद देना चाहिए। शहद पेट साफ रखता है तथा हृदय व यकृत को बल भी प्रदान करता है। कब्ज के रोगी को अधिक से अधिक पानी पिलाना चाहिए। प्राय: बच्चों को पानी पर्याप्त मात्रा में न पिलाने के ही कारण कब्ज हो जाया करती है। प्रात:काल नीबू का रस मिला हुआ पानी पिलाने (बच्चों तथा बड़ों सभी को) से कब्ज की शिकायत धीरे-धीरे दूर हो जाती है। यदि बच्चे की आदत प्रात:काल पानी पीने की डाल दी जाये और वह सदैव निहार-मुँह शौच जाने से पूर्व पानी पीता रहे तो जीवन भर कब्ज की शिकायत ही नहीं होगी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, अन्य रोगों से भी सुरक्षा रहेगी।

● **मल उतारने हेतु**—ग्लीसरीन स्पोजिटरी भी बाजार में उपलब्ध है जो बच्चों और बड़ों के लिए अलग-अलग होती है। इसको गुदा में प्रविष्ट करके 15 मिनट तक दबा कर रखने से (ताकि बत्ती गुदा से बाहर न निकल जाये) तुरन्त मल आ जाता है तथा कोई कठिनाई भी नहीं होती है। नन्हें शिशुओं को प्रारम्भ से ही ''घुट्टी'' पिलाई जाये तो उनको कब्ज की शिकायत नहीं रहती है। भारी वस्तुएें कब्जकारक होती हैं, अत: इनसे परहेज आवश्यक है। तेज किस्म के जुलाब हानिकारक होते हैं। अन्डी का तैल (कैस्टर आयल) का प्रयोग अथवा साबुन की बत्ती का प्रयोग किया जा सकता है। कब्ज सदैव ही पेट की गर्मी से हुआ करता है अत: गुलकन्द (बढ़िया क्वालिटी में ''चरक'' कम्पनी का लें) का सेवन बच्चों से बड़े तक निर्भीकता से कर सकते हैं।

● चिड़िया की थोड़ी सी बीट लेकर नन्हें शिशुओं की गुदा में दबा देने से भी मल आ जाता है । गुदा को किसी तेल से तर कर देने से भी मल आसानी से आ जाता है ।

● अमलताश के गूदे को 3 गुना पानी में भिगोकर रातभर रखने से तथा प्रात:काल छानकर मिश्री मिलाकर उबालकर बच्चों को 1-1 चम्मच अथवा अधिक आयु के अनुसार सेवन कराने से कब्ज दूर हो जाती है ।

● बच्चे के पेट में यदि सुद्दे बन गये हों तो गरम जल में जैतून का तैल 1 से 2 चम्मच और शहद 20 से 30 ग्राम मिलाकर एनिमा देने से सुद्दे निकल जाते हैं । दूध पीने से भी कब्ज हो जाया करती है । सब्जी और फलों का रस कब्ज को तोड़ देता है ।

● छोटे बच्चे को यदि आदतन कब्ज हो तो चोकर सहित आटे की रोटी बनाकर शहद में भिगोकर एक कपड़े में बाँधकर चूसनी की भांति बना लें । उसे बच्चे को चूसने के लिए दे दें । ऐसा करने से कब्ज से छुटकारा मिल जायेगा।

● पके आलूबुखारा को शहद में मिलाकर सेवन कराने से भी कब्ज दूर हो जाती है ।

● आधा चम्मच जैतून का तैल एवं उसमें दुगुना शहद मिलाकर बच्चों को प्रतिदिन सेवन कराने से बच्चों की आदतन होने वाली कब्ज से छुटकारा मिल जाता है । खट्टे, मीठे, चटपटे, गरिष्ठ, तीव्र मिर्च-मसाले युक्त पदार्थों के खान-पान से कब्ज के रोगी को दूर रहना चाहिए क्योंकि यह सब रोग का कारण होते हैं ।

● दालचीनी आधा ग्राम तथा सौठ और इलायची भी आधा-आधा ग्राम लें। तीनों को पीसकर भोजन से पूर्व लें भूख बढ़ती है कब्ज दूर होती है ।

● भोजन से पहले और बाद में तथा प्रात:काल पाखाना के बाद एक नीबू का रस 200 ग्राम पानी में निचोड़कर कुछ दिनों तक लगातार पीने से पुरानी से पुरानी कब्ज समूल नष्ट हो जाती है ।

● काले नमक के चूर्ण 50 ग्राम को शुद्ध घृत 250 ग्राम के साथ खरल में डालकर मर्दन कर लें । इसे शीशी में सुरक्षित रख लें । प्रतिदिन रात्रि में सोते समय 10 की मात्रा में लेकर 50 ग्राम गरम जल से सेवन करायें । कब्ज दूर होगी ।

● सौंफ की गिरी निकालकर (एक हथेली भर) पानी के साथ लगातार लेने से आमाशय सबल बनता है तथा मस्तिष्क बलवान होता है । कब्ज की शिकायत भी दूर हो जाती है ।

● नौसादर, सुहागे का फूला, पंचलवण 2-2 तोला, चित्रकमूल, पीपलामूल, त्रिकुट, भुना जीरा, अजवायन, लौह भस्म प्रत्येक 1-1 तोला और गुड़ 15 तोला को अमृतवान में भर दें । 15 दिन तक धूप में रखें, बाद में छानकर बोतलों में भर दें । मात्रा 6 माशे से सवा तोले तक दिन में 2 बार भोजन के बाद ढाई तोला जल के साथ दें । यह द्रव (औषधि) उदर रोग, प्लीहा, यकृत दोष, पाण्डु, स्त्रियों के गर्भाशय के दोष, मन्दाग्नि, कब्ज और उदरशूल इत्यादि रोगों को थोड़े से ही दिनों में दूर करता है ।

● धनिया और शक्कर को समभाग मिलाकर गरम जल या गरम दूध से रात को सोते समय सेवन करने से पेट की कब्ज दूर होती है । मात्रा—6 माशे से 1 तोला तक दें ।

मलावरोध (कब्ज) नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

हर्षोलेक्स (हिमालय), **रेगुलैक्स** (चरक), **हथिलीवर फोर्ट** (मेडिकल इथिक्स), **अभयासन** (झन्डू), **इच्छाभेदी रस** (डाबर आदि अनेक कम्पनियाँ), **हेप्पीलेक्स** (मेहता रसायनशाला) **जुलाबिन** (डाबर) **विवन्धहारी कैपशूल** (श्री ज्वाला), **अग्नि संदीपन कैपशूल** (जी. ए. मिश्रा), **लिवोमिन सीराप व ड्राप्स** (चरक), **पेडीलेक्स** (चरक), **गैसनोल** (गर्ग), **विरेचनी** (वैद्यनाथ), **लिवरोल** (वैद्यनाथ) इत्यादि में से कोई सी एक औषधि चुनलें । बच्चों व बड़ों की आयु, बलाबल तथा रोगावस्था को देखकर मात्रा निश्चित कर पूर्णत: विवेक के साथ व्यवहार (सेवन) करायें ।

ग्रहणी - संग्रहणी

रोग परिचय—इस रोग को ग्रहणी, संग्रहणी के अतिरिक्त श्वेतातिसार तथा अंग्रेजी में स्प्रू (Spure) भी कहा जाता है । क्योंकि प्रारम्भ में प्रात:काल बिना दर्द के हल्का सफेद और फेनदार खड़िया मिट्टी (रंग का) पानी के समान दस्त आता है । ज्यों-ज्यों रोग बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों सायंकाल और भोजनोपरान्त तुरन्त भी दस्त आने लगता है किन्तु रोगी को कोई कष्ट महसूस नहीं होता है, इसके पश्चात् पेट अफरता है, दुर्गन्धित अपानवायु, बदहज्मी और मन्दाग्नि इत्यादि के लक्षण प्रारम्भ होकर दुर्बलता, नाड़ी क्षीणता, पान्डु, अन्त में मरोड़ से तथा रोगी क्षीण होकर उचित चिकित्सा के अभाव में काल कवलित हो जाता है ।

उपचार

● सफेद राल 10 ग्राम, देशी खान्ड़ 20 ग्राम दोनों को मिलाकर खूब घोट लें। इसे सुबह-शाम 5-5 ग्राम ठण्डे जल से लें। दो दिन में ही आराम मिलेगा।

● पठानी लोध 100 ग्राम लेकर कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार गाय के ताजा मठा (तक्र) के साथ दें।

नोट—मठा प्रति बार उसी समय बनाया जाये और उसमें पानी न मिलाया जाये। मठे में भुना जीरा और सेंधा नमक अन्दाज से मिला लें। अत्यन्त उत्तम योग है।

● आँवले 10 ग्राम को भिगो दें। जब नरम हो जायें तब पीसकर और थोड़ा काला नमक मिलाकर जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लें। सुबह-शाम 1-1 गोली चूसने से अतिसार, पेचिश तथा संग्रहणी आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

● फिटकरी कच्ची 4 ग्राम, संगे जराहत की भस्म 1 ग्राम। फिटकरी को बारीक पीसकर उसमें संगे जराहत की भस्म मिलाकर एकजान कर लें, यह एक मात्रा है। एक पुड़िया मुँह में डालकर ऊपर से दूध पी लें। प्रथम खुराक पेट में पहुँचते ही रोगी आराम बतलायेगा। इसकी 5-6 खुराक खाने से रोगी स्वस्थ हो जायेगा। केवल दूध पीने को दें। अन्य सभी वस्तुओं से परहेज रखें।

● आम की सूखी हुई गिरी का चूर्ण 80 ग्राम, जीरा, काली मिर्च, सौंठ का चूर्ण प्रत्येक 30 ग्राम, आम वृक्ष के गोंद का चूर्ण 25 ग्राम, अफीम चूर्ण 3 ग्राम। सभी को भली प्रकार खरल करके रख लें। इसे 5 से 30 रत्ती की मात्रा में रोग की अवस्थानुसार देने से संग्रहणी में लाभ होता है।

● अरारोट का महीन चूर्ण 1 बड़ी चम्मच भर लें। उसमें 2 चम्मच दूध मिलाकर चम्मच से एक दिल कर लें फिर उसमें आधा किलो गरम जल मिलाकर आग पर रखें। थोड़ा जोश आने पर उसमें 250 ग्राम दूध तथा थोड़ी शक्कर पकावें आधा पानी जल जाने पर नीचे उतारकर उसमें 1 रत्ती जायफल चूर्ण मिलाकर सेवन कराने से संग्रहणी में लाभ हो जाता है।

● मीठे आमों का रस 50 ग्राम में मीठा दही 10-20 ग्राम तथा अदरक का रस 1 चम्मच भर रोगी को पिलायें। इस प्रकार प्रतिदिन 2-3 बार लगातार कुछ दिनों के सेवन कराने से पुराने दस्त तथा संग्रहणी में लाभ हो जाता है।

● इमली के पके हुए बीजों के छिलके का चूर्ण 4 ग्राम, जीरा भुना हुआ तथा मिश्री 6-6 ग्राम सभी का महीन चूर्ण बना लें। इसे 4 ग्राम की मात्रा में 3-

3 घन्टे के अन्तर से ताजे मट्ठा के साथ सेवन कराने से पुराना आमातिसार तथा संग्रहणी में लाभ होता है।

● इमली छाल का चूर्ण 1 से 6 ग्राम तक 20 ग्राम ताजा दही में मिलाकर दोनों समय (सुबह-शाम) बालकों को चटाने से संग्रहणी में लाभ होता है।

● ईसबगोल की भूसी, मस्तंगी एवं छोटी इलायची के दाने सभी समभाग लेकर एकत्र कूट पीसलें। फिर उसमें सबके वजन के बराबर मिश्री मिलाकर 4 मात्रायें बना लें। चावलों के मांड के साथ 3-3 घन्टे पर सेवन कराने से आम, रक्त तथा पीड़ायुक्त संग्रहणी में लाभ होता है।

● ईसबगोल 4 ग्राम को 40 ग्राम गरम जल में भिगो दें। शीतल हो जाने पर उसमें 10 ग्राम नारंगी या अनार का शर्बत (रस) मिलाकर पिलाने से आंतों की भयंकर दाह (जलन) तथा संग्रहणी में लाभ होता है।

● पिप्पली, भाँग तथा सोंठ के समभाग चूर्ण को शहद के साथ सेवन करते रहने से भयंकर संग्रहणी नष्ट हो जाती है।

● बेलगिरी का चूर्ण 10 ग्राम, सौंठ का चूर्ण तथा पुराना गुड़ 6-6 ग्राम एकत्र कर खरल कर 3 ग्राम की मात्रा में दिन में 3-4 बार लेने से संग्रहणी में लाभ हो जाता है।

● बेल के कच्चे फल को आग में सेंककर गूदा निकालकर 10 ग्राम गूदे में थोड़ी सी शक्कर मिलाकर सेवन करते रहने से संग्रहणी नष्ट हो जाती है।

● मीठी सौंफ 60 ग्राम, पिसा हुआ काला नमक 6 ग्राम तबे पर भूनकर सूक्ष्म चूर्ण बनाकर दिन में 3-4 बार 2-2 ग्राम की मात्रा में सेवन कराने से आँव का पाचन होकर ग्रहणी में लाभ हो जाता है। यह योग विशेषकर बालकों को लाभप्रद है।

● बड़ी इलायची के दाने 10 ग्राम, सौंफ 60 ग्राम, नौसादर 20 ग्राम सभी को तबे पर भूनकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखें। इसे 1-1 ग्राम की मात्रा में सेवन करना संग्रहणी नाशक है।

● भाँग 2 ग्राम को भूनकर 3 ग्राम शहद में मिलाकर चटाना संग्रहणी में अत्यन्त लाभप्रद है।

● अफीम तथा केशर शहद में घिसकर 1 चावल भर देने से बच्चों की संग्रहणी में अत्यन्त लाभ होता है।

● खजूर के फल 6 ग्राम, गाय के 20 ग्राम दही के साथ सेवन कराना बच्चों की संग्रहणी में लाभप्रद है।

● रेबन्द चीनी, काला जीरा, कलमी शोरा, काला नमक, निशोथ, सनाय, जवा हरड़, असली वंशलोचन, शीतल चीनी तथा इलायची प्रत्येक सममात्रा में एवं मिश्री सभी औषधियों के वजन का एक चौथाई भाग लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में दूध की लस्सी के साथ सेवन करने से संग्रहणी में आश्चर्यजनक लाभ होता है तथा यह योग वायु अनुलोमक भी है।

संग्रहणीनाशक पेटेन्ट आयुर्वेदिक प्रमुख योग

● **ग्रहणी कपाट वटी** (वैद्यनाथ) 1-2 गोली दिन में 3-4 बार। ग्रहणी तथा जीर्ण अतिसार में उपयोगी है।

● **ईसबगोल (ईसबबेल)** (वैद्यनाथ) 1-2 ग्राम दिन में 2-3 बार दें।

● **लिव 52 गोली, सीरप** तथा **ड्राप्स** (हिमालय) 2-2 टिकिया दिन में 3 बार या 2-2 चम्मच दिन में 2-3 बार बच्चों को आधा चम्मच अथवा आवश्यकता व आयुनुसार सेवन करायें। नन्हें शिशुओं को (ड्राप्स) 5 से 10 बूँद दिन में 3 बार दें।

● **लिवरोल सीरप** (वैद्यनाथ) व्यस्कों को आधा से 1 चम्मच तथा बच्चों को 6 से 10-12 बूँद तक प्रयोग करायें।

● **डायरौल गोली** (गर्ग) 1-2 गोली दिन में 3-4 बार ग्रहणी, अतिसार जन्य समस्त विकारों में लाभप्रद है।

● **गैसक्लीन कैपसूल** (अतुल फार्मेसी विजयगढ़, अलीगढ़) 1-1 कैपसूल दिन में 3 बार पानी से गैस व दर्द में दें।

● **एन्ट्रीडायरी कैपसूल** (निर्माता उपर्युक्त) 1-2 कैपसूल दिन में 3 बार दें। अतिसार, आमातिसार तथा संग्रहणी नाशक उत्तम योग है।

● **अतिसारान्तक कैपसूल** (ज्वाला आयु०) 1-1 कैपसूल दिन में 4 बार लाभ उपर्युक्त।

● **कुटज घनसत्व** (गर्ग वनौषधि) 1-2 गोली दिन में 3-4 बार दें। लाभ उपर्युक्त।

● **डियाडिन लिक्विड** (चरक फार्मेस्युटिकल्स) विविध प्रकार के अतिसारों में लाभप्रद है। मात्रा वयस्कों को 3 से 6 चम्मच (15 से 30 मि. ली.) दिन में 3 बार लगातार दें। प्रकोप लुप्त होने के सात दिनों बाद तक सेवन करायें। बच्चों को उपरोक्त की आधी मात्रा दें।

विषम ज्वर

रोग परिचय—यह एक प्रकार का संक्रामक रोग है, जो मच्छर के काटने से हो जाता है। यह ज्वर 1, 2, 3 अथवा 4 दिन छोड़कर पुनः जाड़ा लगकर आता है। सर्दी की ऋतु में यह ज्वर कम होता है। यह ज्वर प्रायः वहीं होता है जहाँ मच्छर अधिक होते हैं।

उपचार

● ताजा लाल मिर्च का रस निकालकर 3-3 बूँद कानों में डालें। डालते ही चौथैया आदि तमाम ज्वर दूर हो जायेंगे।

● काली मिर्च और तुलसी के पत्ते दोनों को बारीक पीसकर उड़द के बराबर गोलियां बनाकर 2 गोली प्रतिदिन गरम दूध या पानी अथवा अर्क-गावजवां के साथ सेवन करने से ज्वर जादू की भाँति छू-मन्तर हो जाता है।

● नीम की छाल 100 ग्राम को कूटकर मिट्टी के बर्तन में आधा किलो पानी में डालकर इतना औटायें कि पानी एक चौथाई भाग शेष रह जाये। तदुपरान्त इस पानी को छानकर इसमें शहद या मिश्री मिलाकर रोगी को पिला दें तथा चादर ओढ़ाकर लेटने को निर्देशित कर दें। थोड़ी ही देर में पसीना आकर ज्वर उतर जाएगा। यदि आवश्यकता हो तो दूसरे दिन भी यह प्रयोग कर सकते हैं। पसीना लाने में अंग्रेजी दवा **'पैरासिटा मोल'** तथा गुण में **'क्वीनीन'** का भी (यह योग अल्प-मूल्य, छोटा, सरल, सुगम होते हुए भी) बाप है।

● जल 250 ग्राम, दूध 500 ग्राम शीशम का बुरादा 6 ग्राम तीनों को मिलाकर खूब औटायें। जब दूध शेष रह जाये तब उतार कर छान लें। और रोगी को पिलायें। यह योग समस्त प्रकार के ज्वरों में अतीव लाभप्रद है।

● आक के पीले पत्ते आग में जलाकर भस्म कर लें और आधा ग्राम की मात्रा में लेकर शहद के साथ सेवन करायें। इसके सेवन से शीत ज्वर तत्काल भाग जाता है।

● अजवायन 1 तोला सुबह के समय एक कोरी मिट्टी के प्याले में 250 ग्राम पानी में भिगोकर दिन के समय छाया में तथा रात्रि में बाहर ओस में रखें, फिर दूसरे दिन सुबह के समय छानकर रोगी को पिलायें। यह क्रम 10-12 दिनों तक जारी रखें। यदि उतने दिनों में ही लाभ न हो तो अधिक समय तक निसंकोच प्रयोग कर सकते हैं। यह योग पुराना ज्वर है—जिसमें हल्की-हल्की हरारत हर

समय रहती है, तिल्ली और जिगर भी बढ़े हुए हों—में शर्तिया लाभ देता है। इसी प्रयोग से रोगी को भूख भी खुलकर लगती है। वैद्य समाज ने इस योग को 'अजवायन आठ पहरी' नाम दे रखा है।

● नीबू में संक्रामक रोगों को शमन करने का गुण होता है। हैजा, टाइफाइड, प्लेग, संग्रहणी तथा मलेरिया (विषम ज्वर) में नीबू में काली मिर्च, नमक मिलाकर हल्का सा गरम करके चूसना लाभप्रद है।

● यदि प्रतिदिन नियत समय पर जाड़ा देकर ज्वर आये तो ज्वर आने से दो घण्टे पूर्व हाथ पैर के नाखूनों पर लहसुन के रस का लेप करना चाहिए तथा साथ ही 5 ग्राम भर लहसुन के रस को उतने ही तिल के तेल में मिलाकर 1-1 घण्टे पर जब तक ज्वर न आ जाये तब तक चाटना चाहिए। ज्वर आ जाने पर इसे चाटना बन्द कर देना चाहिए। तीन दिन तक यही प्रयोग करें। लाभप्रद योग है।

● अदरक के 6 ग्राम रस के साथ समभाग शहद मिलाकर दिन में 3-4 बार सेवन करना प्रत्येक प्रकार के ज्वर में लाभप्रद है।

● नीबू का रस तेज कॉफी में बिना दूध मिलाये सेवन कराना मलेरिया ज्वर में परम लाभकारी है।

● सौंफ यवकुट कर 1 सेर पानी में औटा लें। छानकर 1 तोला मिश्री मिलाकर सुबह, दोपहर, शाम पिलायें। इस प्रयोग से शीत ज्वर उतर जाता है तथा निरोगावस्था में प्रयोग कराने से ज्वर को रोकेगा तथा प्यास तथा पेटदर्द को भी मिटायेगा।

● फिटकरी का फूला 3 रत्ती तथा इतनी ही खाँड मिलाकर ज्वर आने से 6 घण्टे पूर्व (3-3 माशा) 2-2 घण्टे के अन्तर से सेवन कराने से ज्वर नहीं चढ़ता है। विषम ज्वर का अत्यन्त लाभप्रद घरेलू योग है। बकरी के दूध के झाग से भी मलेरिया ज्वर नष्ट हो जाता है।

विषम ज्वर नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

● **क्युरिल टिकिया** (चरक) मलेरिया, इन्फ्लूएन्जा, सर्दी, जुकाम तथा अन्य अज्ञात किस्म के ज्वरों में अतीव गुणकारी है।

नोट :—आन्त्र ज्वर वाले रोगी को न दें। मात्रा बयस्कों को 2-3 टिकिया लगातार लक्षण लुप्त होने के सात दिनों बाद तक तथा बच्चों को उपरोक्त की आधी मात्रा दें।

● **प्राणदासीख** (वैद्यनाथ) हर प्रकार के विषम ज्वरों में सेवनीय आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें।

● **त्रिशून टिकिया** (झन्डू) 1-2 टिकिया दिन में 3 बार चाय काफी अथवा दूध से प्रयोग करायें।

● **ज्वर संहार कैप्सूल** (मिश्रा) 1-1 कैपसूल सुबह शाम दें। यह हर प्रकार के मलेरिया ज्वर में उपयोगी है।

● **ज्वरीना कैपसूल** (गर्ग बनौषधि) 1-1 कैपसूल दिन 3-4 बार दें। अनेक प्रकार के—वातज्वर, श्लेष्मज ज्वर (फ्लू) में आंत्रिक ज्वर (टाइफाइड), श्वसनक ज्वर (निमोनियाँ), जीर्ण ज्वर तथा तीव्र ज्वर आदि में परम उपयोगी है।

नोट :— पित्तज प्रकृति वाले रोगियों को इसका सेवन सावधानी पूर्वक करायें।

● ज्वरान्तक कैपसूल (ज्वाला आयुर्वेद) मात्रा व गुण उपर्युक्त इसके अतिरिक्त झन्डू का मलेरिया मिक्स्चर तथा बरेली (यू०पी०) का अर्क नं० 4 भी मलेरिया ज्वर में परम उपयोगी है।

पीलिया, पाण्डु, कामला, जान्डिस

रोग परिचय—इस रोग में शरीर की चमड़ी चर्म का रंग पीला नजर आने लगता है। रोगी की आँखों तथा नाखूनों का रंग पीला पड़ जाता है। मूत्र भी पीले रंग का आने लगता है। यह रोग जब अत्यधिक बढ़ जाता है, तब रोगी को सब कुछ पीला ही पीला नजर आने लगता है। यहाँ तक कि रोगी को पसीना तक पीला ही निकलता है। यही रोग पीलिया के नाम से जाना जाता है।

उपचार

● फिटकरी को भूनकर बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित कर रख लें। इसे 1 से 3 ग्राम की मात्रा में 20 ग्राम दही में मिलाकर सेवन करायें। दिन में कई बार केवल दही खिलाते रहें। यदि दही उपलब्ध न हो तो छाछ दें। एक सप्ताह में रोगी ठीक हो जायेगा।

● सफेद चन्दन 5 ग्राम, आँवा हल्दी पिसी हुई 6 ग्राम, दोनों को शहद में मिलाकर सात दिन चटायें, लाभप्रद है।

● कलमी शोरा 10 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम, दोनों को खरल करके बारीक कर लें। इसे 3 से 6 ग्राम तक की मात्रा में दिन में 3 बार जल से सेवन करायें। इसके प्रयोग से पाण्डु रोग, मूत्र में जलन तथा पेशाब का रुक-रुककर आना ठीक हो जाता है।

● मूली के हरे रंग का रस 450 ग्राम में चीनी इतनी मिला लें कि मीठा

हो जाये । तदुपरान्त मल-मलके कपड़े से छानकर रोगी को पिला दें । पीते ही लाभ मिलेगा । मात्र सात दिन में रोग जड़ मूल से नष्ट हो जायेगा ।

● कड़वी तोरई का रस 2-3 बूँद नाक में चढ़ा लें । दवा अन्दर जाते ही पीले रंक का पानी निकलना प्रारंभ हो जायेगा । पानी निकलकर कर रोगी एक ही दिन में ठीक हो जाता है ।

नोट:—यह दवा बहुत अधिक तेज (उग्र) है । कोमल प्रकृति वालों को सेवन कदापि न करायें। यदि नाक में अधिक जलन महसूस हो तो बाद में गौघृत की नस्य लें । यदि ताजा कड़वी तोरई उपलब्ध न हो तो सूखी तोरई का टुकड़ा रातभर पानी में भिगोकर उस पानी का प्रयोग करें ।

● फिटकरी (एलम) कच्ची 20 ग्राम बारीक पीसकर 21 पुड़िया बनाकर प्रतिदिन एक पुड़िया मक्खन के साथ सेवन करायें । पुराने से पुराना पाण्डु रोग नष्ट हो जायेगा ।

● बढ़िया सफेद फिटकरी भूनकर बारीक (सूक्ष्म) पीसकर किसी साफ शीशी में सुरक्षित रख लें । यदि पाण्डु रोग 1 मास से अधिक समय का है तो प्रथम दिन 1 ग्राम, दूसरे दिन 2 ग्राम, तीसरे दिन 3 ग्राम तदुपरान्त 3 ग्राम नित्य दवा फाँककर ऊपर से दही का एक पियाला पिला दिया करें । मात्र 7 दिनों में ही पुराने से पुराना पाण्डु रोग जड़ से नष्ट हो जायेगा ।

● अरण्ड के पत्तों का रस 10 से 20 ग्राम तक गाय के कच्चे दूध में मिलाकर प्रतिदिन सुबह शाम (दिन में 2 बार) पिलायें । इसके सेवन से 3 से 7 दिनों में पीलिया नष्ट हो जाता है ।

नोट:—इस योग के प्रयोग से यदि किसी को दस्त आने लग जायें तब भी चिन्ता न करें। दही और चावल खाने को दें । जिसे दस्त साफ न होता हो उसे दूध अधिक मात्रा में दें । रोटी बिल्कुल ही न दें ।

● गिलोय की लता गले में लपेटने से पाण्डु व कामला दूर हो जाता है

● गिलोय के अर्क 50 ग्राम में 20 ग्राम शहद मिलाकर पिलाना पाण्डु रोग में परम लाभकारी है ।

● नीबू का रस 10 ग्राम, खाँड़ 20 ग्राम, खाने का सोड़ा 4 रत्ती, नौसादर 2 रत्ती का मिश्रण 10 ग्राम पानी में मिलाकर दिन में 2 बार (प्रातः सायं) पिलाने से पाण्डु रोग में लाभ होता है ।

● आक के पत्ते 25 नग (वजन में जितने पत्ते हों उतनी ही मिश्री मिलाकर) खरल में 3 दिनों तक इतना घोंटें कि दोनों बिल्कुल सुर्मे की भाँति हो जायें । इसे 2 ग्राम की मात्रा में जल से दें ।

● टमाटर के 100 ग्राम रस में 3 ग्रांम काला नमक मिलाकर सुबह शाम खिलाने से पाण्डु रोग में लाभ होता जाता है ।

● पाण्डु रोग जो यकृत की पित्त निकालने वाली नली (Bile Duct) के रुकने से होता है । उसके लिए निम्न प्रयोंग जो 'धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक' से लिया है तथा कभी निष्फल नहीं होता है । इस योग को श्री चन्दगी राम जी वर्मा ने एक मुस्लिम फकीर से भी प्राप्त किया था ।

नोट:—अन्य किसी कारण से उत्पन्न पाण्डुता में इस योग से कोई लाभ नहीं होता है तो यह आजमायें । यह योग अत्यन्त साधारण है किन्तु शीघ्र लाभ करता है ।

प्रातःकाल एक घरेलू मक्खी पकड़कर उसे गुड़ में लपेटकर उसे रोगी को निगलवा दें । बस यही योग (दवा) है । पाण्डु रोगी जिसका शरीर पीला पड़ गया हो नेत्र व मूत्रादि पीले हो गये हों, पिण्डलियों में दर्द इत्यादि हो—उसे इस प्रयोग से तत्काल लाभ होता है ।

प्रथम दिन से ही मूत्र सफेद आने लगता है और नेत्रों का पीलापन कम हो जाता है । दूसरे ही दिन रोगी अपने अन्दर उत्साह अनुभव करने लगता है तथा तीसरे दिन रोगी रोग मुक्त हो जाता है । यह प्रयोग प्रतिदिन एक बार केवल प्रातःकाल ही 3 दिन तक करें । लाभप्रद कभी निष्फल नहीं होने वाला योग है । किन्तु रोगी से इस योग को पूर्णतयः छिपाकर सेवन करायें, ताकि इसे घृणा न हो ।

● हल्दी के महीन चूर्ण 6 ग्राम को मट्ठा में मिलाकर सेवन करायें । पथ्य में दही भात (चावल) खिलायें । मात्र 4-5 दिनों में ही पीलिया नष्ट हो जायेगी।

● गाय की बछिया का ताजा मूत्र ढ़ाई तोला से चार तोला तक नित्य खाली पेट पीने से जलोदर, उदरशूल, कामला, पाण्डु, यकृत-वृद्धि, प्लीहा-वृद्धि, अण्डवृद्धि, खाज-खुजली, कब्जियत, मन्दाग्नि, अम्लपित्त इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं । बच्चों को 1 तोला से 2 तोला तक ही सेवन करायें ।

● नौसादर, सुहागे का फूला, पंचलवण 2-2 तोला तथा चित्रक-मूल, पीपलामूल, त्रिकटु, भुना जीरा, अजवायन, लोह भस्म प्रत्येक 1-1 तोला गुड़ एवं 15 तोला को परस्पर कूटकर मिलालें । फिर अमृतवान में भरकर सुरक्षित रख लें । 15 दिनों तक धूप में रखें । तदुपरान्त छानकर बोतलों में भर लें । मात्रा 6 माशे से 1 तोला तक दिन में 2 बार भोजन के बाद ढाई तोला जल के साथ दें । यह द्रव (पेय) उदर रोग, प्लीहा, यकृत दोष, पान्डु, स्त्रियों के गर्भाशय दोष, मन्दाग्नि, कब्ज और उदर शूल इत्यादि रोगों को थोड़े ही दिनों में नष्ट कर देता है।

● एरन्ड के पत्रों का रस 10 ग्राम दूध के साथ मिलाकर नित्य प्रात:काल 5 दिनों तक पिलाने से गर्भवती को होने वाली कामला की प्रारम्भिक अवस्था में लाभ होता है।

पान्डु नाशक कुछ पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

● **लिबोमिन टेबलेट** (चरक) 1-2 गोली दिन में 2-3 बार दें। यकृत विकार जन्य पान्डुरोग में उपयोगी है। बच्चों के लिए इसका सीरप तथा ड्राप्स उपलब्ध नहीं है।

● **लिव 52** टेबलेट व सीरप (हिमालय ड्रग) मात्रा गुण उपर्युक्त है।

● **टेफेरोली** (टी.टी. के.) टेबलेट व सीरप मात्रा गुण उपर्युक्त है।

● **लिबोट्रीट टेबलेट** (झन्डु) मात्रा गुण उपर्युक्त।

5. लिबरबून टेबलेट, सीरप (मार्तन्ड) यकृत विकारजन्य पान्डु में दें।

● **पान्डुहारी कैपसूल** (गर्ग वनौषधि) 1-2 कैपसूल 2-3 बार। पान्डु रोग, रक्तक्षय तथा यकृत-विकारों में निरापद कैपसूल हैं।

● **पान्डुनौल कैपसूल** (ज्वाला आयु.) मात्रा-गुण उपर्युक्त।

● **द्राक्षा लौह कुमारी** (धन्वन्तरि कार्या.) 2-4 चम्मच समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त। पान्डु नाशक अति उत्तम पेय। क्षुधा बढ़ाता है। यकृत, आन्त्र की क्रिया को सामान्य अवस्था में लाता है।

● **एनर्जीप्लेक्स सीरप** (मार्तन्ड) टेबलेट व सूची बेध। पान्डु रोग नाशक एवं शक्ति प्रदाता है।

● **शंखद्रव सीरप** (झन्डू) 2 से 5 बूंद तक 1 औंस जल में मिलाकर दें।

खाँसी

रोग परिचय—खाँसी श्वास प्रणाली के अनेक विकारों का एक लक्षण है केवल श्वास-प्रणाली ही नहीं, बल्कि यकृत की खराबी के कारण से खाँसी का प्रकोप हो जाया करता है।

उपचार

● छिलके सहित अखरोट की भस्म कर 1 ग्राम की मात्रा में 6 ग्राम शहद मिलाकर सेवन कराना खाँसी में लाभप्रद है।

● साफ की हुई अजवायन 1 ग्राम की मात्रा में नित्य रात्रि के समय पान के बीड़े में रखकर खिलाने से खाँसी में लाभप्रद है।

● साधारण खाँसी में अदरक के रस में थोड़ा सा शहद मिलाकर सेवन करना लाभप्रद है। इसमें यदि थोड़ा सा काला नमक भी मिला लिया जाये तो योग और भी विशेष लाभकारी हो जाता है।

● क्षय रोग की खाँसी में रात्रि को सोते समय एक मुनक्का में अफीम एक चौथाई रत्ती भरकर निगलवा देने से रात्रि में रोगी को बार-बार खाँसी नहीं उठती है, और निद्रा शान्तिपूर्वक आती है।

● आक के पुष्पों की लौंग निकालकर उसमें सेंधा नमक तथा पीपल मिलाकर खूब बारीक पीसकर उड़द के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 2 से 4 गोली तक दूध के साथ दें। बच्चों की आधी मात्रा सेवन करायें। खाँसी नाशक योग है।

● आँवला चूर्ण 20 ग्राम, दूध 125 ग्राम तथा जल 400 ग्राम का मिश्रण कर हल्की आग पर पकायें। जब दूध शेष मात्र बचे तभी छानकर उसमें 6 ग्राम गो घृत मिलाकर सुबह-शाम (दिन में 2 बार) इसी प्रकार सेवन कराने से शुष्क खाँसी अथवा वेगपूर्वक चलने वाली खाँसी नष्ट हो जाती है।

● तुलसी के पत्ते 15 नग, काली मिर्च 9 दाने इनकी चाय बनाकर पीने से खाँसी, जुकाम, बुखार, कफ विकार, मन्दाग्नि इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं।

● काली मिर्च कूट-पीसकर कपड़छान कर सुरक्षित रख लें। इसे 2 से 4 ग्रेन तक दिन में 2-3 बार शहद से चटाना खाँसी में अत्यन्त लाभप्रद है।

● वृद्धावस्था की खाँसी में (जिसमें कफ नहीं निकलता है) दो ग्राम काला नमक की डली (टुकड़ा) को मुँह में डाल लें (चूसें नहीं बल्कि जितनी स्वयं घुले, उसे घुलने दें) प्रथम रात्रि से ही लाभ मिलेगा।

● केले के सूखे पत्तों की राख बनाकर कपड़छन कर सुरक्षित रखें। इसे थोड़ी-थोड़ी मात्रा में ग्रीष्म ऋतु में नमक के साथ तथा शीतकाल में शहद के साथ मिलाकर चटाने से सभी प्रकार की खाँसी में शर्तिया लाभ होता है। सहस्त्रों बार का परीक्षित योग है।

● हरड़, बहेड़ा, आँवला, सौंठ, काली मिर्च और पीपल सभी को सम भाग लेकर कूट पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे प्रतिदिन 2-3 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ चटाने से प्रत्येक प्रकार की खाँसी नष्ट हो जाती है।

● फिटकड़ी भुनी हुई 10 ग्राम तथा इतनी ही देसी खाँड़ दोनों को बारीक पीसकर सूखी खाँसी वाले रोगी को दूध के साथ तथा आर्द्र (गीली, कफयुक्त)

खाँसी वाले रोगी को जल के साथ मात्र 14 पुड़िया बनाकर सेवन करायें । इस प्रयोग से पुरानी से पुरानी खाँसी यहाँ तक कि साधारण दमा तक दूर होता है ।

● सरसों का तेल गुदा के भीतरी भाग तथा बाहरी भाग (ऊपर) लगाने से प्रत्येक प्रकार की खाँसी नष्ट हो जाती है ।

● बार-बार शीशा (दर्पण) देखना खाँसी में लाभप्रद है ।

● अतीस का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ चाटना खाँसी में अत्यन्त लाभप्रद है ।

● तुलसी के पत्तों का काढ़ा पीने से सूखी खाँसी नष्ट हो जाती है ।

● तालीस पत्र (3 ग्राम को) गरम पानी में मसलकर पीने से दुर्जन्य प्रकार की खाँसी भी नष्ट होती है ।

● सुहागा फुलाकर तथा बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रख लें । इसे 1 ग्राम की मात्रा में शहद में मिलाकर दिन में 3 बार चटायें । गरम पानी में डालकर भी सेवन कराया जा सकता है । अत्यन्त अद्‌भुत, चमत्कारी योग है । प्रथम दिन के सेवन से ही खाँसी मिट जाती है । कुछ दिनों के प्रयोग से जुकाम भी मिट जाता है ।

● मुलहठी 3 ग्राम, दालचीनी 1 ग्राम, छोटी इलायची सात नग, मिश्री 20 ग्राम लें । प्रथम 3 औषधियों को जौकुट कर 400 ग्राम पानी में औटावें । जब आधा पानी शेष रह जाए तब उतार कर छान लें तथा मिश्री मिलाकर रोगी को सुबह शाम पिलायें । परहेज में गुड़, तैल, खटाई एवं लाल मिर्च का सेवन न करें । मात्र 3 दिन के प्रयोग से नजला ठीक हो जाता है ।

● अदरक 6 ग्राम, काली मिर्च 6 ग्राम तथा पुराना गुड़ 20 ग्राम लें । अदरक के बारीक टुकड़े कर लें एवं काली मिर्चों को कूट लें फिर सभी वस्तुओं को 250 ग्राम जल में औटा लें । पानी चौथाई शेष बचे तब उतारकर छानकर रोगी को पिला दें । मात्र 2-3 दिन के प्रयोग से खाँसी, जुकाम भाग जायेगें ।

● अदरक का रस 6 ग्राम तथा 6 ग्राम शुद्ध मधु दोनों को मिलाकर चाटने से श्वास, खाँसी, सर्दी, जुकाम, कफ तथा अरुचि नष्ट हो जाती है ।

● काकड़ा सिंगी 10 ग्राम को बारीक पीसकर 4-4 ग्रेन की पुड़िया बनाकर रख लें । सुबह-शाम 1-1 पुड़िया पानी से सेवन करायें । यह तुच्छ योग बड़े-बड़े मूल्यवान योगों का कान काटने वाला तथा गुणों से भरपूर है ।

● दूध 250 ग्राम, पानी 125 ग्राम, हल्दी की 1 गाँठ का चूर्ण तथा गुड़

आवश्यकतानुसार सभी को औटा लें और दुग्ध मात्र शेष रह जाने पर उतारकर छानकर थोड़ा गरम-गरम ही रोगी को पिलाने से खाँसी में शर्तिया लाभ हो जाता है । परीक्षित है ।

● दो लौंग तवे पर भूनकर (गरम तवे पर 1 मिनट में ही लौंग फूली हुई नजर आने लगेगी, तभी उतार लें) बारीक पीसकर 1 चम्मच दूध में मिलाकर गुनगुना करके सोते समय रात्रि में बच्चे को पिलायें । यह योग बच्चों की खाँसी के लिए अत्यन्त साधारण किन्तु प्रभावशाली है ।

● खिले चना, मिश्री, दक्खिनी मिर्च (सफेद) तथा पोस्त के दाने सभी 10-10 ग्राम । इन सबको मिलाकर (चूर्ण बनाकर) सुरक्षित रख लें । इस औषधि को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में बच्चों को चटाते रहने से बच्चों की खाँसी में अत्यन्त लाभ होता है ।

● शुष्क कास (सूखी खाँसी) में अमरूद का फल बिना चाकू से काटे ही चबा कर खाना लाभप्रद है । प्रयोग दो-तीन बार करें ।

● छोटे बच्चों को कभी-कभी मुँह के अन्दर तालु के पास वाली छोटी जीभ के बढ़ जाने से भयंकर खाँसी पैदा हो जाती है । ऐसी परिस्थिति में इमली के बीजों को पानी के साथ पत्थर पर घिसकर तालू पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करना लाभप्रद है। इस लेप के सूखते ही अन्दर की जीभ अपने स्थान पर बैठ जाती है और खाँसी आना बन्द हो जाता है ।

● साधारण खाँसी में कचूर का टुकड़ा मुख में रखकर चूसना लाभप्रद है।

● काली मिर्च का 2-3 ग्राम चूर्ण शक्कर या मिश्री तथा शहद और घी (विषम मात्रा में) एकत्र कर चाटने से कफ निकल कर खाँसी में लाभ होता है ।

● पान के रस को शहद के साथ चटाना बच्चों की खाँसी में लाभप्रद है।

● लाख का चूर्ण 2-2 रत्ती की मात्रा में 3 ग्राम मक्खन में मिलाकर दिन में 3 बार प्रयोग कराने से कुकुरकास (काली खाँसी) नष्ट हो जाती है ।

● गैस का जला हुआ मैन्टल पीसकर इसमें दुगुना यव (जौ) क्षार का चूर्ण मिलाकर 1-1 रत्ती की मात्रा में मधु के साथ दिन में 3 बार (सुबह, दोपहर, शाम) चटाना कुकुरकास में लाभकारी है ।

● कुकुरकास के कारण जब बच्चा खाँसते-खाँसते अत्यधिक परेशान हो तो उसकी जीभ पर थोड़ी-सी वैसलीन लगा दें । तुरन्त ही खाँसी का वेग थम जाता है।

● पुराने जूते के चमड़े को पानी से भली प्रकार धो एवं सुखाकर फिर इसे

जलाकर महीन चूर्ण कर सुरक्षित रख लें। इसे 1 रत्ती की मात्रा में 1 चम्मच दूध या मधु से सुबह, दोपहर, शाम दिन में 3 बार चटाना अत्यन्त लाभकारी है।

खाँसी नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

● **डीकोफ्सिन टेबलेट** (अलारसिन)—प्रथम सप्ताह 2 टिकिया दिन में 3 बार तत्पश्चात् 2-2 टिकिया दिन में 2 बार 3-4 सप्ताह तक दें। यह औषधि प्रत्येक प्रकार की खाँसी में निरापद तथा प्रभावशाली है।

● **कोफोल टेबलेट** (चरक)—दिन भर में 5-6 बार चूसने को निर्देशित करें। कफ को पतलाकर निकालती है तथा खाँसी को कम करती है।

● **सर्टिना टेबलेट** (चरक)—2-2 गोली दिन में 3 बार बच्चों को 1-1 गोली दिन में 3 बार दें। सभी प्रकार की खाँसी, विशेषत: क्षयज कास (टी. बी.) में विशेष उपयोगी है।

● **कासना टेबलेट** (राजवैद्य शीतल प्रसाद)—दिन में 5-6 बार चूसें। कफ को पतलाकर निकालती है तथा खाँसी को नष्ट करती है।

● **कासहर वटी** (धन्वन्तरि कार्या.)—मात्रा सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त

● **केफ टेबलेट** (वैद्यनाथ)—मात्रा सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त

● **कासनाश टेबलेट** (ज्वाला आयु.) मात्रा सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त

● **कास वटी** (वैद्यनाथ)—मात्रा सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त।

● **मुलहठी धनसत्व टेबलेट** (गर्ग बनौ.) मात्रा सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त

● **झेप्स टेबलेट** (झन्डू) मात्रा सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त।

● **कासारि शर्बत** (धन्वन्तरि कार्या.)—गरम जल में 1-2 चम्मच दें।

● **ड्रिकोनिल लिक्विड** (चरक)—आधी से डेढ़ चम्मच दें।

● **कासनाशी** (ज्वाला आयु.)—1-2 चम्मच 3-4 बार दिन में।

● **कफ सीरप** (डाबर)—1-2 चम्मच 3-4 बार दिन में।

● **कासामृत सीरप** (वैद्यनाथ)—1-2 चम्मच 3-4 बार दिन में।

● **कैम्फोकोडी वसाका** (झन्डू)—1-2 चम्मच 3-4 बार दिन में।

● **एलरीना सीरप** (झन्डू)—1-2 चम्मच 3-4 बार दिन में।

● **जुकामहारी** (गर्ग वनौ.)—गरम जल में 2-3 चम्मच डालकर दें। जुकाम युक्त कास में परम उपयोगी है।

● **जुकाम रिपु सीरप** (अतुल फार्मेसी)—सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त।

● **कासहर सीरप** (भजनाश्रम)—1-2 चम्मच दिन में 3-4 बार प्रत्येक प्रकार की खाँसी में लाभप्रद है।

● **कफोल सीरप** (देशरक्षक)—मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

● **सोमा सीरप** (मार्तन्ड)—मात्रा व लाभ उपर्युक्त। टेबलेट तथा सूची वेध भी उपलब्ध है।

● **अपामार्गादि घनसत्व टेबलेट व कैपसूल** (गर्ग बनौ.)—1-2 कैपसूल दिन में 3 बार श्वासयुक्त कास में विशेष उपयोगी है।

● **श्वास कासारि कैपसूल** (जी. ए. मिश्रा)—मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

● **यष्टीमधु चूर्ण** (झन्डू)—1-2 ग्राम दिन में 2-3 बार चटायें। यह कफज कास में विशेष उपयोगी है।

● **कूका कफ सीरप**—प्रत्येक प्रकार की खाँसी, नजला, जुकाम में गुणकारी है। छाती में जमे कफ को बाहर निकालता है तथा नया बलगम बनने से रोकता है। हानि रहित आयुर्वेदिक परिवार के लिए उपयोगी कफ सीरप है। इसके निर्माता मुल्तानी फार्मास्युटिकल्स लि. 36 एच. कनाट प्लेस नई दिल्ली 110001 है।

● **खाँसी मुक्ता (पेय)** (धन्वन्तिरि फार्मेसी)—का सेवन प्रत्येक प्रकार की खाँसी, जुकाम, नजला, काली खाँसी, श्वास वाली खाँसी इत्यादि में अत्यन्त लाभप्रद है।

उच्च रक्त-चाप

रोग परिचय—रक्तदाब मापी यन्त्र से रक्त भार मापने पर जब 150 से 300 तक रक्तचाप बढ़ जाता है तब अनेक विकार शरीर में उत्पन्न हो जाते हैं जो रक्तदाब सामान्य होते ही स्वयं ही सामान्य हो जाते हैं। रक्तचाप का बढ़ना कोई स्वयं में स्वतन्त्र रोग नहीं है, बल्कि यह शरीर में पनप रहे अन्य अनेक घातक रोगों का एक परिणाम है। जो रोगी को भोगना पड़ता है।

उपचार

● मयूर पंख को जलाकर इसकी राख 1 से 2 रत्ती तक मधु से चटाने से हृद्-पीड़ा और दमे में आराम होता है, वमन का वेग भी रुक जाता है तथा उच्च रक्तचाप में भी अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● नौसादर 4 रत्ती, प्रवालपिष्टी 2 रत्ती, स्वर्णमाक्षिक भस्म 2 रत्ती, मक्खन मिश्री के साथ, पेठा के साथ मधु के साथ प्रयोग करने से हृदय सम्बन्धी जलन, दर्द,

धड़कन तथा कमजोरी दूर हो जाती है । सुबह-शाम दिन में 2 बार प्रयोग करायें।

● हृदय रोग में दिन में 3-4 बार 2-3 चम्मच मधु का सेवन करना अत्यन्त लाभप्रद है । इस प्रयोग से हार्टफिल का भय भी दूर हो जाता है ।

● लहसुन के निरन्तर प्रयोग से हाईब्लड प्रैशर, रक्त-वाहिनियों की कठोरता तथा तंग हो जाना बिल्कुल ठीक हो जाता है ।

● ब्लड प्रैशर हाई हो अथवा लो इसमें दुग्धपान से शत प्रतिशत सफलता मिलती है । रोगी दुग्धपान अधिक मात्रा में करे ।

● अदरक को घी में तलकर खाने से दिल की बढ़ी हुई धड़कन में लाभ होता है ।

● गिलोय और काली मिर्च दोनों को समभाग लेकर कूट पीसकर छानकर प्रतिदिन 3-3 ग्राम जल के साथ सेवन करना हृदय की दुर्बलता में लाभप्रद है।

● सूखा आँवला तथा मिश्री 50-50 ग्राम बारीक कूट पीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रखें । इसे 6 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ कुछ दिनों तक लगातार सेवन करने से हृदय सम्बन्धी सभी रोग दूर हो जाते हैं ।

● रेहां के बीज 10 ग्राम रात्रि में मिट्टी के बर्तन में आधा किलो पानी में भिगो दें । रातभर बाहर हवा में पड़ा रहने दें । प्रातःकाल मल एवं छानकर थोड़ी-सी मिश्री मिलाकर सेवन करने से मात्र एक सप्ताह में ही हृदय की दुर्बलता तथा हृदय सम्बन्धी अन्य सभी रोग दूर हो जाते हैं ।

● अगर का चूर्ण शहद के साथ चाटने से हृदय की शक्ति बढ़ती है ।

● अर्जुन वृक्ष की छाल 10 ग्राम, गुड़ 10 ग्राम, दूध 500 ग्राम । अर्जुन की छाल का चूर्ण बनालें । फिर इस चूर्ण को दूध में डालकर पकायें । पीने योग्य होने पर छानकर तथा गुड़ मिलाकर रोगी को पिलाने से हृदय की सूजन एवं शिथिलता दूर हो जाती है ।

● पीपलामूल 1 ग्रेन का चूर्ण शहद के साथ चटाने से बालकों का हृदय रोग ठीक हो जाता है ।

● मेथी के काढ़े 6 ग्राम में शहद मिलाकर पीने से पुराना हृदय रोग ठीक हो जाता है ।

● लहसुन की गिरी की पीठी 10 ग्राम, बकरी का दूध 250 ग्राम तथा शहद 10 ग्राम, रक्तचाप में पीना लाभप्रद है । रक्तचाप का दौरा खत्म होने पर लहसुन की पीठी 6 ग्राम को उतने ही दूध और शहद के मेल से जलपान के रूप में भली-भाँति मिलाकर इस्तेमाल करते रहना चाहिए ।

नोट—जिन लोगों को हाई ब्लड प्रैशर का रोग है वे नमक का प्रयोग बन्द कर दें अथवा उसकी मात्रा कम कर दें, क्योंकि नमक रक्त में रक्त के आयतन को बढ़ाता है । जिससे दिल को अधिक जोर लगाना पड़ता है तथा जिन रोगियों की धमनियां तंग और कठोर हो चुकी हैं वे नमक के अतिरिक्त मांस, घी, दूध, मक्खन, नारियल का तेल, वनस्पति घी तथा पशुओं की चर्बी खाना भी बिल्कुल बन्द कर दें । क्योंकि चिकनाई धमनियों में जमते रहने से अन्दर से कठोर और तंग हो जाती है, इससे धमनियों में कोलेस्टेरोल अधिक जम जाती है अतः हाई ब्लड प्रैशर के रोगियों के लिए चिकनाई एक प्रकार से विष के समान है ।

हाईब्लड प्रैशर (उच्च रक्तचाप) के रोगियों का उपयोगी भोजन

रोटी, डबलरोटी, दालें, क्रीम निकला दूध का पनीर अर्थात् सपरेटा दूध, हरी साग-सब्जियाँ, फल तथा उनका रस इत्यादि हितकर है तथा चाय, शराब, तम्बाकू, सिगरेट, मसालेयुक्त भोजन भी हानिकारक हैं । ठोस भोजन भी अधिक मात्रा में खाना हानिकारक है । प्रोटीनयुक्त खनिज (मिनरल्ज) और विटामिन वाले शीघ्र पाची भोजन खाना ही लाभप्रद है । रोगी स्वयं को मोटा होने से तथा वजन बढ़ने से भी बचाये रखे । ऐसे भोजनों से अपना सर्वथा बचाव रखे, जिससे उदर में गैस बनती हो अथवा मल अधिक मात्रा में बनता हो । ईर्ष्या, द्वेष भाव, क्रोध तथा शक्ति से अधिक मानसिक अथवा शारीरिक श्रम से भी बचे रहना चाहिए। नित्य 24 घंटे में कम से कम 8 घंटे प्रतिदिन गहरी और बे-फिकरी की नींद सोना तथा दोपहर के भोजनोपरान्त कम से कम आधा घन्टा आराम करना अत्यन्त लाभकारी है ।

छोटी चन्दन जिसको चन्द्रभागा कहा जाता है । आयुर्वेद में इसे सर्पगन्धा और यूनानी में असरोल तथा ऐलोपैथी में राउवुल्फिया सर्पेन्टाइना कहते हैं । इस रोग की परम महत्वपूर्ण औषध मानी जाती है ।

हाईब्लड प्रैशर के रोगी को पहले जुलाब देना आवश्यक है, ताकि उसको पतले पाखाने आकर अन्तड़ियां साफ हो जायें । अन्तड़ियों में सड़ाँध, गैस पैदा होने, कब्ज रहने, मांस और भोजन के अंश सड़ते रहने से इनके विषैले प्रभाव रक्त में मिलकर रक्त के दबाव को बढ़ा देते हैं ।

जुलाब देने के बाद रक्त की बढ़ी हुई उत्तेजना और अधिक दबाब कम करने के लिए पिसी हुई छोटी चन्दन 3 रत्ती (36 मि. ग्रा.) दिन में 3 बार ताजे पानी या अर्क गुलाब से सेवन कराना चाहिए ।

● तरबूज की गिरी 4 माशा (4 ग्राम) नीलोफर के फूल 4 माशा, उन्नाव

5 दाना, आलू बुखारा खुश्क 5 दाना तथा गांवजवां 3 माशा प्रात: समय पानी में भिगो दें तथा शाम को दवा को भली प्रकार मलकर और कपड़े से छानकर शरबत नीलोफर 2 तोला (24 ग्राम) मिलाकर पिला दें।

● छोटी चन्दन (सर्पगन्धा) की जड़ (जो बाहर से भूरी और तोड़ने पर अन्दर से पीली होती है एवं अत्यधिक कड़वी होती है) कूटपीस कर कपड़े से छानकर सुरक्षित रख लें। हाईब्लड प्रैशर के रोगी के लिए 2 से 8 रत्ती (24 से 96 मिग्रा.) तक यह पिसी औषधि कैपसूल में डालकर निगलवाकर पानी पिला दें ताकि आमाशय में कैपसूल शीघ्र ही गल कर दवा शरीर में मिल सके या ऐसे ही (बगैर कैपसूल में भरे ही) निगल लें। इसे रोग की कमी या अधिकतानुसार दिन में 3-4 बार तक प्रयोग कर सकते हैं। रात्रि को सोते समय रोगी को यह दवा अधिक मात्रा में दें, ताकि रोगी 7-8 घंटे तक आराम से सोया रहे। लाभ न होने पर धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाते जायें तथा लाभ हो जाने पर मात्रा कम करते जायें। इसका प्रभाव धीरे-धीरे होता है, अत: औषधि सेवन तीन सप्ताह तक तक करना आवश्यक है।

● लहसुन के कन्द को छीलकर 120 ग्राम काटकर सवा सेर (1 लीटर) गोदुग्ध में मिलाकर धीमी आंच पर पकाकर खोया बना लें। इस खोये में बराबर वजन की खांड़ मिलाकर 20 पेड़े बना लें और काँच के बर्तन में सुरक्षित रख लें। मात्रा 1 या 2 पेड़े प्रात:काल दूध के साथ रोगी को उसकी शक्ति के अनुसार सेवन करायें। इस योग के प्रयोग से रक्त वाहिनियों में कोमलता उत्पन्न हो जाती है। जिसके फलस्वरूप ब्लड प्रैशर धीरे-धीरे नॉर्मल होता चला जाता है। इसके अतिरिक्त यह योग वायु रोगों तथा कामोद्दीपन के लिए भी परम लाभकारी है।

● अर्जुन वृक्ष की छाल को कूट पीसकर कपड़े से छानकर रख लें। इसे 10 रत्ती (120 मिग्रा.) की मात्रा में दिन में 3 बार पानी या दूध से सेवन करायें अथवा जीभ पर रख कर स्वयं ही मुँह में घुलने दें। इसका स्वाद भी बुरा नहीं है। यह हृदय को शक्ति देता है, धमनियों की कठोरता कम करता है तथा अधिक मात्रा में मूत्र लाकर शरीर रोगों में पड़ा पानी भी निकाल देता है।

नोट—हाई ब्लड प्रैशर में विटामिन सी का प्रयोग परम लाभप्रद है। इस हेतु विटामिन युक्त औषधियाँ, फल, साग-सब्जियाँ अपनी दिनचर्या में अवश्य सम्मिलित करें। हाई ब्लड प्रैशर में पहाड़ी झरना (Spring) का पानी 300-300 मिली. निरन्तर दिन में 3 बार लम्बे समय तक पीना लाभदायक है क्योंकि इस पानी में मैग्नेशिया सल्फेट होता है जो कोलेस्ट्रोल की मात्रा को कम करता है।

उच्च रक्तचाप नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

सर्पिना टेबलेट (हिमालय)—साधारण अवस्था में आधी से एक टिकिया दिन में 2-3 बार अथवा आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें। गम्भीर अवस्था में 2-2 टिकिया दिन में 3 बार अथवा आवश्यकतानुसार दें।

सेपरा टेबलेट (चरक)—यह साधारण और फोर्ट 2 प्रकार की उपलब्ध है। साधारण टिकिया 1-1 दिन में 3 बार अथवा 2-2 टिकिया दिन में 1-2 बार जल से सेवन करायें। यदि फोर्ट टिकिया का प्रयोग कर रहे हो तो इसकी 1-2 टिकिया 2-3 बार अथवा जरुरत के मुताबिक प्रयोग करायें। इसके बाद मात्रा घटाते जायें।

हिप्नोटेंशन टेबलेट (झन्डू)—2-2 टिकिया दिन में 2-3 बार जल अथवा दूध के साथ दें।

अर्जिन टेबलेट (अलारसिन)—4-6 टिकिया प्रतिदिन विभिन्न मात्राओं में बांटकर अथवा 2-4 टिकिया आवश्यकतानुसार बांटकर प्रयोग करायें।

शान्ता टेबलेट (प्रताप)—1-2 टिकिया प्रात: सायं दूध के साथ सेवन करायें।

अर्श, बबासीर

रोग परिचय—इसमें गुदाद्वार पर मस्से फूल जाते हैं मलद्वार की नसें फूल जाने से वहाँ की त्वचा कठोर (सख्त) सी हो जाती है और अंगूर की भांति एक दूसरे से जुड़े हुए मस्सों के गुच्छे से उभर आते हैं। इनमें रक्त बहता है तब खूनी बवासीर कहलाती है। इसमें अत्यन्त तीव्र जलन व पीड़ा होती है रोगी का उठना-बैठना मुश्किल हो जाता है।

उपचार

● एक गिलास गर्म पानी में आधा नीबू निचोड़कर उसमें शीरा 2 छोटे चम्मच डालकर खूब घोटकर सेवन करना लाभप्रद है।

● नागकेशर तथा खून खराबा दोनों को सम मात्रा में पीसकर तथा कपड़े से छानकर 1-2 माशा की मात्रा में ताजा पानी से दिन में 3-4 बार प्रयोग करायें। बबासीर का रक्त शर्तिया रुक जाता है। यही औषधि यदि हरे धनिये के रस या अनार के मीठे रस से सेवन कराई जाये तो अत्यन्त ही प्रभावशाली हो जाती है।

● रीठे का छिलका जलाया हुआ तथा सफेद कत्था 1-1 तोला को मिलाकर

पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इस योग को 3-3 माशा की मात्रा में सुबह शाम मक्खन या मलाई के साथ सेवन कराना खूनी बबासीर में लाभप्रद है।

● भाँग के पत्ते, बिनौले के बीजों की गिरी, रसौत (प्रत्येक 3 माशा) लेकर गुलाब के अर्क में पीसकर मस्सों पर लगाना अतीव गुणकारी है।

● रीठे का छिलका जलाया हुआ, बकायन के बीजों की गिरी, सफेद कत्था प्रत्येक 1 तोला, लौह भस्म 6 माशा, सभी को मैदा की भांति सूक्ष्म पीसकर 1 माशा की मात्रा में 1 छटांक मक्खन में मिलाकर सुबह शाम सेवन करायें। बबासीर का अत्यन्त सफल योग है। बबासीर का रक्त शीघ्रता से बन्द हो जाता है।

● हरड़ पीसकर और कपड़े से छानकर पानी में लेप बनाकर (एक ग्राम लेप में) 2 रत्ती अफीम तथा चौथाई गुनी वैसलीन मिलाकर मरहम् बना लें। इसको मस्सों व गुदा के अन्दर लगाने से दर्द, जलन, खुजली व रक्त आने को आराम आ जाता है। हरड़ का चूर्ण फाँकना भी लाभप्रद है।

● नीबू का रस निकालकर साफ कपड़े से छानकर बराबर मात्रा में मूंगफली का तेल भली प्रकार फेंट कर ड्रापर या ग्लीसरीन सिरिन्ज से 2-3 छोटे चम्मच भर रात को सोते समय एक सप्ताह निरन्तर गुदा में डालना (प्रवेश कराना) बबासीर में अत्यन्त ही गुणकारी है। इसी प्रकार आलिव आयल (जैतून का तैल) 1 औंस की मात्रा में एनीमा की भाँति गुदा में प्रवेश कराना लाभप्रद है। जैतून का तैल उपलब्ध न होने पर मूंगफली का तेल का भी प्रयोग कर सकते है। इसी प्रकार शार्क लीवर आयल या काडलीवर आयल (मछली का तैल) प्रयोग करना भी गुणकारी है। इसी प्रकार ग्लीसरीन में ठण्डा पानी भरकर (4-5 औंस की मात्रा में) दिन में 2-4 बार प्रयोग कराना लाभकारी है। विटामिन 'ई' ऐलोपैथी दवा ईवियोग या विटियोलीन कैपसूल को ब्लेड से काटकर इसका तेल मस्सों पर मलने से सूजन, जलन कब्ज दूर हो जाते हैं तथा निरन्तर प्रयोग से मस्से सूख जाते हैं।

● बबासीर के मस्से सूज जाने, उनमें दर्द होने तथा खुजली होने पर उबलते पानी में साफ कपड़ा डुबोकर व निचोड़कर मोटी गद्दी लेटने (लेट जाने) से तुरन्त कष्ट कम हो जाते हैं। इसी प्रकार उबलते पानी के बरतन में थोड़ा सा सतासीन का तेल डालकर बेंत वाली कुर्सी पर बैठकर (कपड़े निकालकर नंगा होकर बैठें) तथा कुर्सी के चारों ओर मोटा कपड़ा या कम्बल लपेट कर 'भाप' से मस्सों पर सिंकाई करना अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● किसी बरतन में पानी भरकर उसमें चुम्बक डालकर रात भर पड़ा रहने

दें, दिन को चुम्बक निकाल लें। इसे 1-2 औंस यह ताजे पानी में मिलाकर दिन में 3-4 बार पिलाना भी बबासीर में लाभप्रद है। इसी प्रकार तिलों के तेल में 2-3 दिन तक चुम्बक (मेग्नेट) डुबोकर रख देने से उसमें भी चुम्बक की शक्ति आ जाती है। यह तैल बबासीर के मस्सों, जोड़ों के दर्द व सूजन तथा हर प्रकार के दर्दों में (मालिश करना उपयोगी) है।

● जब भी पेशाब (मूत्र) करने जायें अपना मूत्र अन्जुलि में भरकर बबासीर के मस्सों को धो लिया करें। दो माह के निरन्तर इस प्रयोग से बबासीर की हमेशा के लिए विदाई हो जायेगी।

● कुचला को मिट्टी के तेल में घिसकर मस्सों पर लगाने से मस्से सूख जाते हैं।

● पीली राल 50 ग्राम लेकर बारीक पीस लें। इसे प्रतिदिन 6 ग्राम की मात्रा में 125 ग्राम दही में मिलाकर सेवन करना खूनी बबासीर का अचूक इलाज है। एक सप्ताह सेवन करें। मात्र 2-3 दिन में रक्त आना बंद होता है।

● नाग केशर और मिश्री दोनों सममात्रा में लेकर सूक्ष्म पीसकर चूर्ण बनाकर रखें। इसकी 6 ग्राम की मात्रा को 125 ग्राम दही में मिलाकर सेवन कराने से सभी प्रकार की अर्श (बबासीर) में लाभ होता है।

● अमरबेल का स्वरस 50 ग्राम में काली मिर्च (5 नग) का चूर्ण मिला कर खूब घोटकर नित्य प्रातःकाल सेवन कराने से खूनी बादी दोनों ही प्रकार की बबासीर में 3 दिन में ही लाभ होता है।

● कचूर का महीन चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में नित्य सुबह शाम जल के साथ सेवन कराने से मात्र 14 दिन में ही बवासीर में लाभ होता है।

● नीम के बीज की गिरी का तेल 2 से 5 बूँद शक्कर के साथ खाने या कैपसूल में भरकर निगलने से (थोड़े दिनों में ही) खूनी या बादी दोनों ही प्रकार की बवासीर में लाभ हो जाता है।

● चार-पाँच मूली के कन्द में से ऊपर का सफेद रेशा तथा पत्तों को अलग करके शेष कन्द को कूटकर रस निकाल लें। फिर इस रस को 6 ग्राम की मात्रा में लेकर घी मिलाकर नित्य प्रातःकाल सेवन कराने से रक्तार्श दूर हो जाता है तथा शुष्कार्श में भी लाभ होता है।

● कमल केशर 3 ग्राम, नागकेशर 3 ग्राम, शहद 3 ग्राम तथा मक्खन 6 ग्राम सभी को मिलाकर प्रतिदिन सेवन करना रक्तज बवासीर में लाभप्रद है।

● करेलों का अथवा करेले के पत्तो का रस 20 ग्राम में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रतिदिन सबेरे 7 दिन पीने से रक्तज अर्श ठीक हो जाता है ।

● प्याज के महीन-महीन टुकड़े करके धूप में सुखा लें । सूखे टुकड़ों में से 10 ग्राम प्याज लेकर घी में तलकर बाद में एक ग्राम तेल और 20 ग्राम मिश्री मिलाकर नित्य सवेरे सेवन करना अर्श में लाभप्रद है ।

● ग्वार के पत्तों का अर्क प्रातः सायं 25-25 मि-ली- (गर्मी में मिश्री के अनुपान से, बरसात में काली मिर्च से तथा जाड़ों में फीका) पीने से खूनी बादी दोनों ही प्रकार के बवासीर में लाभ होता है ।

● काले तिल लें । उन्हें धोकर छाया में आधे रूप से सुखालें (फरहरे करें) तदुपरान्त तबे पर घी डालकर (धीमी अग्नि से भूनकर) उतारलें । फिर उन्हें ठण्डे कर समभाग बूरा मिलाकर 3-3 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम सेवन कराने से रक्तार्श में विशेष लाभ होता है ।

बवासीर नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

पाइलैक्स (हिमालय) 2-3 गोली दिन में 3 बार 1 सप्ताह तक तत्पश्चात् 2-2 गोली दिन में 2 बार लगातार 4-6 सप्ताह तक बबासीर में शर्तिया लाभकारी है । इसका मलहम भी आता है—जो अत्यन्त लाभप्रद है ।

अर्शेनिट साधारण तथा फोर्ट टिकिया (चरक) दो गोली दिन में 3 बार जल के जल रक्तस्राव को बन्द करती है तथा जलन शान्त करती है । इसका भी मरहम आता है ।

अभयासिन टेबलेट (झन्डू) 2-4 गोली गरम जल से दिन में 3 बार दें। अर्शनाशक निश्चित प्रभाकारी औषधि है ।

अर्शोहर टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 2-3 गोली दिन में 3 बार दें। खूनी बादी दोनों ही प्रकार की बवासीर में लाभप्रद है ।

अर्शान्तक कैपसूल (गर्ग वनौषधि) 1-2 कैपसूल दिन में 3 बार अर्श की सभी अवस्थाओं में निश्चत स्थाई लाभ होता है । लगातार लें ।

सैनीलाइन सीरप (डाबर) 2-2 चम्मच दिन में 3 बार यह रक्तार्श की उत्तम औषधि है । पीने के अतिरिक्त 60 बँद दवा को 10 ग्राम ठण्डे जल में घोलकर पिचकारी से प्रतिदिन दिन में 2 बार गुदा मार्ग में प्रविष्ट कराना अत्यन्त लाभप्रद है ।

अर्शान्तक बटी (धन्वन्तरि कार्यालय) 1-2 गोली सुबह-शाम जल से दें। अर्श की सभी अवस्थाओं में लाभप्रद है ।

पाइल्स क्योर कैपसूल (अतुल फार्मेसी विजयगढ़, अलीगढ़) 1-1 कैपसूल प्रात:सायं जल से दें । रक्तार्श तथा वातार्श दोनों में लाभप्रद है । इसका मरहम भी आता है ।

रक्तार्शारि टेबलेट (प्रताप फार्मा०) रक्तार्श में लाभप्रद है । 1-1 गोली दिन में 3 बार दें ।

अर्शान्तक कैपसूल (ज्वाला) सभी अवस्थाओं में सेवनीय है । 1-2 कैपसूल 3 बार दें ।

उदर शूल

रोग परिचय—उदर शूल परिचय का मोहताज नहीं है हाँ उदर में शूल कई कारणों से विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं जैसे—आन्त्रशूल, गुर्दे का दर्द, गैस, अफरा का दर्द तथा अन्य किसी कारण से उत्पन्न कई प्रकार के शूल जिसके कारण एंठन, तनाव खिंचाव, मरोड़ तथा आँतों की पेशी तन्तुओं में आक्षेप इत्यादि विकार उत्पन्न हो जाया करते हैं ।

उपचार

● पेट में जहाँ तीव्र दर्द होता हो उस स्थान पर आक के पत्ते पर पुराना घी चुपड़कर गर्म करके रखें तथा ऊपर से गरम किया हुआ फुलालैन (कपड़ा) या नामे (रुई) द्वारा पत्ते के ऊपरी भाग को कसकर व दवाकर कुछ समय तक सेकने से शीघ्र लाभ होता है ।

● आग के फूलों को खूब सुखाकर महीन पीसकर आक के पत्तों के रस में 3 दिन तक खूब खरल करके चने के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें । आवश्यकता के समय 2 गोली गरम जल से निगलवाने से उदर-शूल में लाभ होता है ।

● पके हुए अनार के 10 ग्राम रस में भुनी हुई हींग 1 रत्ती तथा सेंधा नमक और अदरक का रस 2 रत्ती सेवन कराने से उदर शूल तथा गुल्म रोग में लाभ होता है ।

● राई का चूर्ण 1-2 ग्राम की मात्रा में थोड़ी शक्कर के साथ खिलाकर ऊपर से 50-100 ग्राम जल पिलाने से उदर शूल में लाभ होता है ।

● अजवायन का चूर्ण खाकर ऊपर से गरम जल पीने से उदर-शूल में लाभ होता है ।

● वच, कालानमक, हींग, कूठ व इन्द्रजौ, समभाग का चूर्ण कर 8 से 12 रत्ती की मात्रा में उष्ण जल से सेवन करना उदर शूल में लाभप्रद है ।

● पाचन क्रिया ठीक न होने वाले उदरशूल में भोजनोपरान्त कुछ दिनों निरन्तर थोड़ी मात्रा में सोया चबाने से उदर का अफरा, भारीपन तथा पीड़ा दूर होकर दस्त साफ आता है ।

● अपच के कारण उदरशूल हो तो इमली के चीया की राख 3-4 ग्राम, अजवायन 4 रत्ती में थोड़ा-सा शहद मिलाकर चटाने से लाभ होता है ।

● अदरक का रस, नीबू का रस तथा कालीमिर्च का चूर्ण 1 ग्राम मिलाकर पिलाने से उदरशूल में लाभ होता है ।

● नीलगिरी के तेल की 5-6 बूँदों को 1-2 ग्राम शक्कर के साथ मिलाकर खिलाने से उदरशूल में तत्काल लाभ होता है ।

● उत्तम तारपीन का तेल 5 बूँद अर्कसौफ तथा अर्क अजवायन के साथ देने से आन्त्रशूल तथा दूसरे शूलों में विशेष लाभ होता है ।

● कम्बल का एक टुकड़ा लेकर आग में जला दें (इसके दुर्गन्धित धुँयें) से दूर रहें, यह हानिकारक है) जब कम्बल बिल्कुल जल जाये तब बारीक पीसकर रख लें । उदर शूल के रोगी को 6 ग्राम की मात्रा में ताजे पानी में घोलकर पिलाने से तत्काल लाभ मिलेगा ।

● नौसादर 15 ग्राम, टाटरी 10 ग्राम, सोड़ा बाईकार्ब 20 ग्राम, तीनों को पीसकर एक में मिलाकर रख लें । इसे 3 ग्राम की मात्रा में लेकर 150 ग्राम जल में डालें । जब झाग उठने लगें, तब तत्काल ही रोगी को पिला दें । औषधि पिलाते ही उदरशूल में शान्ति मिलेगी ।

● अश्वगन्धा चूर्ण 6 ग्राम को गुनगुने जल के साथ सेवन कराने से उदरशूल शान्त हो जाता है । यह योग विशेषत: गर्भवती स्त्रियों को अधिक लाभ देता है। इसमें यदि एक ग्राम इलायची-बीज चूर्ण तथा 2 रत्ती शंख भस्म भी मिला ली जाये तो कैसा भी दर्द हो 1 घण्टे के अन्दर शान्त हो जाता है । यह योग 6 माह के गर्भ के बाद से प्रसव काल तक होने वाले शंकास्पद उदरशूल में विशेष लाभप्रद है।

● अफीम आधी रत्ती, कपूर आधी रत्ती, खाने का सूखा चूना 4 रत्ती लें और खरल में मिलाकर गोली बना लें या कैपसूल में भर लें । इसकी एक मात्रा

से ही रोगी का शूल शान्त हो जाता है । यदि 1 घण्टे बाद भी पुन: दर्द मालूम हो तो—दूसरी बार पुन: सेवन करवा दें । तत्काल लाभ मिलेगा ।

● नीबू सत्व 3 ग्राम, कलमी शोरा 6 ग्राम, दोनों को बारीक पीस लें और 25 ग्राम मिश्री के शर्वत में मिलाकर पिलायें । मात्र 1-2 खुराक से ही उदर शूल में पूर्ण लाभ हो जाता है ।

उदरशूल नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

गैसेक्स टेबलेट (हिमालय ड्रग) 2-3 गोली भोजनोपरान्त प्रयोग करायें।

शुक्तिन टेबलेट (अलारसिन) 2-2 गोली दिन में 3 बार । परिणाम शूल तथा आमाशयी शूल एवं अम्लपित्त जन्य शूल में उपयोगी है ।

सर्वेन्थिन टेबलेट (मार्तन्ड) 1-2 गोली दिन में 3-4 बार दें । आमाशयिक शूल में लाभकारी है ।

अभयासन टेबलेट (झन्डू) 2-3 टेबलेट दिन में 3-4 बार दें । उदरशूल में लाभप्रद है ।

शूलान्तक कैपसूल (गर्ग बनौषधि) 1-2 कैपसूल 2-3 बार दें ।

गैसान्तक कैपसूल (गर्ग बनौषधि) 1-2 कैपसूल 2-3 बार दें । गैस के कारण उत्पन्न शूल में लाभप्रद ।

गैसोना कैपसूल (ज्वाला आयुर्वेद) 1-2 कैपसूल 2-3 बार दें । गैस के कारण उत्पन्न शूल में लाभप्रद ।

गैसक्लीन कैपसूल (अतुल फार्मेसी) 1-2 कैपसूल 2-3 बार गैस के कारण उत्पन्न शूल में लाभप्रद है ।

शूलान्तक कैपसूल (अतुल फार्मेसी) उदर शूल में गैसक्लीन के साथ दें। इसके अतिरिक्त सिर: शूल, दन्तशूल, सन्धिशूल, मौसम बदलने या पानी में भीगने से होने वाले शरीर दर्द व सिर दर्द में भी उपयोगी है ।

गैसनोल लिक्विड (गर्ग बनौषधि) 2-4 चम्मच गर्म जल में डालकर पिलायें। गैसजन्य उदरशूल में लाभकारी है ।

उदरामृत पेय (ज्वाला आयुर्वेद) गुण व सेवन विधि उपर्युक्त ।

पुदीन हरा (डाबर) 10-20 बूँद जल में मिलाकर सेवन करायें । अपच-जन्य उदरशूल में लाभकारी है ।

अग्नि-बल्लभ क्षार (धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़) 1-2 चम्मच

(चूर्ण) गरम जल से दिन में दो तीन बार सेवन करायें। गैस, अपच, खट्टी डकारें, तथा उदरशूल में तत्काल प्रभावकारी एवं लाभप्रद है।

आन्त्रपुच्छ प्रदाह (एपेन्डीसाइटिस)

रोग परिचय—छोटी अन्तड़ी (Appendix) (आन्त्रपुच्छ) बड़ी आँत के साथ मिली होती है। इसमें संक्रमण के फलस्वरूप तीव्र रूप में परिवर्तन होकर छेद हो सकता है तथा इसका विषैला तरल पेट की झिल्ली (पेरीटोनियम) में पहुँचकर वहाँ सूजन उत्पन्न कर सकता है। पहले नाभि के नीचे और आसपास बहुत सख्त दर्द होता है। यह दर्द अपना स्थान बदलता रहता है। कष्ट के कारण रोगी हिलता-डुलता तक नहीं है। उठने-बैठने तथा टाँग फैलाने और सिकोड़ने में दर्द होता है। दाँयी ओर के पेट और पेट की पेशी ऐंठकर सख्त हो जाती हैं। रोगी को कब्ज और दस्त भी आने लगते हैं। यह रोग युवावस्था तथा मध्य आयु में अधिक होता है। रक्त में (W. B. S) श्वेतकण (ह्वाइट ब्लड सैल्स) बढ़ जाते हैं यह दर्द कई घन्टे तक रह सकता है। इसका भोजन करने या न करने से कोई फर्क नहीं पड़ता है, दर्द हर समय होता रहता है, अलबत्ता परिश्रम करने पर बढ़ जाता है।

उपचार

● रोगी को जुलाब न दें। बल्कि साबुन का एनिमा देकर पेट साफ करें तथा गरम पानी को तल में भरकर दर्द स्थल को सेकें। इस दर्द में अफीम का प्रयोग हानिकारक है। रोगी को तकिया के सहारे बिठाने से दर्द कम होता है।

● सोये के हरे पत्ते का रस निचोड़कर आग पर पकायें। रस फट जाने पर इसको छानकर 100 मिली० में शरबत दीनार 50 मिली० मिलाकर सुबह शाम सेवन करना अतीव गुणकारी है।

● एक ग्राम काला नमक आग पर गरम करके अर्क गुलाब में बुझालें। इसे 30 मि.ग्रा. हींग के साथ पिलायें।

● उड़द का आटा 250 ग्राम, बकरी के दूध में गूँथकर उसमें नमक, सौंठ, हींग, सोये के बीज, 5-5 ग्राम मिलाकर तवे पर इसकी मोटी रोटी एक ओर पकाकर और दूसरी ओर कच्ची रखें। तथा उस ओर अरन्ड का तेल (कैस्टर आयल) चुपड़कर गरम-गरम दर्द के स्थान पर बाँधें।

नोट—रोगी को तीव्र दर्द की अवस्था में उपवास करायें। प्यास लगने पर थोड़ा-थोड़ा पानी पिलायें। दर्द दूर हो जाने पर कुछ दिनों तक सन्तरे का रस, माल्टा का रस, दूध, सोड़ा, ग्लूकोज

इत्यादि तरल पदार्थ ही दें। ठोस पदार्थों से परहेज रखें। यदि रोगी को आराम न आये तो तुरन्त किसी बड़े सरकारी अस्पताल में भेजें, क्योंकि इस रोग में शल्यक्रिया आपरेशन की भी आवश्यकता होती है। आपरेशन न कराने पर शोथ (प्रदाह) दूर हो जाने पर भी दुबारा पुनः हो सकती है या फोड़ा बनकर फट सकता है। जिसके फलस्वरूप सारे पेट में पीव (Pus) फैलकर संक्रमण (इन्फैक्शन) फैल सकता है। और रोग अत्यन्त उग्र रूप धारण कर सकता है।

आँत उतर जाने से दर्द (हार्निया का दर्द)

रोग परिचय—आँत के अण्डकोष या वंक्षणनाल में उतर जाने से कभी-कभी भयंकर दर्द हो जाता है। आँत ऊपर अपने स्थान में जाती ही नहीं है तथा असहनीय तीव्र दर्द होता रहता है।

उपचार—सर्वप्रथम आँत को वंक्षण छिद्र या जिस छिद्र से अपने स्थान से नीचे आई हो उसी मार्ग से ऊपर भेजने की यथा सम्भव कोशिश करें। यदि आँत ऊपर नहीं जा रही हो तो रोगी की आँत शुद्धि हेतु उपवास करायें तथा हल्के दस्त की औषधि दें या एनिमा दें।

● कब्ज दूर करने के लिए पंचसकार चूर्ण या त्रिफला चूर्ण 2 से 4 ग्राम गरम जल से सुबह शाम सेवन करायें।

● आन्त्रवृद्धि हर चूर्ण (ग्रन्थ-रसतन्त्रसार व सि०प्र०स०) 4 से 6 ग्राम चूर्ण मिश्री, छोटी इलायची, दाल चीनी, सौंठ एवं लौंग का चूर्ण मिलाये हुए 400 मिली. गरम दूध के साथ प्रतिदिन 2 बार सेवन करायें। बीड़ी सिगरेट, गरम चाय, मिर्च व खटाई का प्रयोग इस रोग में निषेध कर दें। यदि रोगी को मिचली व बेचैनी हो तो नमक मिला मट्ठा या नीबू का रस शक्कर एवं जल मिलाकर दें।

● रोगी की आँतें अण्डकोष में उतर आने पर अण्डकोष को बरफ से भरी थैली में डाल दें। चन्द मिनटों में आँतें अण्डकोष छोड़कर ऊपर पेट में चली जायेंगी तथा रोगी को दर्द से तत्काल राहत मिलेगी।

आमाशय के घाव का दर्द (गैस्ट्रिक अल्सर, पैप्टिक अल्सर)

रोग परिचय—आमाशय की पिछली दीवार पर ढ़ाई सेमी० से 5 सेमी० या अधिक लम्बे घाव हो जाते हैं। नया घाव छोटा होता है। आमाशय की पुरानी सूजन, पुराना अजीर्ण इस रोग की उत्पत्ति का मुख्य कारण होता है। स्त्रियों को यह रोग पुरुषों की अपेक्षा अधिक होता है। जिन स्त्रियों को प्रदर रोग हो, उनको

विशेष रूप से यह अधिक होता है । चालीस वर्ष से कम आयु के रोगी (जिनको 2 वर्ष से कम के लक्षण हों) को आराम हो जाने की आशा अधिक होती है । यदि 5 वर्ष के घाव हों तो शल्य चिकित्सा के उपरान्त भी आराम की कोई गारन्टी नहीं होती है ।

आमाशय के ऊपरी मुख या कमर में दर्द, बोझ और अकड़न का रोगी अनुभव करता है । आमाशय को दबाने पर रोगी सख्त दर्द अनुभव करता है । अक्सर खाना खाने के एक घन्टे बाद दर्द होने लग जाता है तथा भोजनोपरान्त कै (वमन) आ जाती है । कै में भोजन व रक्त मिला होता है । कई बार रक्त की ही कै आती हैं । भोजन न पचने के कारण रोगी दुबला-पतला और कमजोर होता चला जाता है ।

उपचार

● बेलपत्र और नीम पत्र का समभाग मिलाकर 15 से 30 मिली० तक 'रस' प्रातः व सायं खाली पेट पिलायें ।

● कट करन्ज की भुनी मिंगी, सफेद जीरा, मुल्तानी हींग तथा त्रिफला चूर्ण, हींग के अतिरिक्त सभी औषधियाँ 50-50 ग्राम लेकर कपड़छन कर बाद में 5 ग्राम हींग मिला लें । इसे 500 मिली ग्राम से 2 ग्राम तक भोजन के साथ अथवा दिन में 2 बार प्रयोग करायें ।

● सूतशेखर रस (ग्रन्थ योग रत्नाकर से) 1 से 2 गोलियाँ (120 से 240 मि.ग्रा.) तक अपामार्ग क्षार 60 मि.ग्रा. के साथ दूध मिश्री के अनुपान से दिन में 2-3 बार सेवन कराना लाभप्रद है ।

● ईसबबेल (वैद्यनाथ) 2 से 4 चम्मच दानेदार चूर्ण जल से दिन में 3-4 बार खिलायें । इससे कब्ज दूर होकर आमाशय आन्त्र में स्निग्धता पहुँचती है।

● कामदुधा रस (ग्रन्थ रस योग सागर) 120 से 360 मि.ग्रा. तक जीरा मिश्री के साथ दिन में 2 बार प्रतिदिन सेवन करायें । पित्तज आमाशय आन्त्रव्रण में परम उपयोगी है ।

नोट—मानसिक चिन्ताओं से यह रोग अधिक बढ़ता है अतः इससे बचें अथवा निद्राकारक योगों का व्यवहार करें । रोगी को केवल दूध पिलायें, बाकी समस्त भोजन बन्द कर दें । बाद में तरल तथा नरम भोजन धीरे-धीरे खिलाना प्रारम्भ करें । घी, मसाले युक्त भोजन तथा तम्बाकू इत्यादि का सेवन पूर्णतः बन्द कर दें । पहले प्रत्येक 2-2 घंटे के बाद तथा बाद में प्रत्येक 4-4 घंटे के बाद दुग्धपान करायें ।

आमाशय के घाव की ही भाँति पक्वाशय के घाव, डयूनिनाल अल्सर (Dyodinal Ulcer) का घाव आमाशय की साथ वाली अन्तड़ी में होता है । इस रोग में भोजन खाने के 3 घंटे बाद आमाशय के निचले मुख और आमाशय के दांयी ओर दर्द होता है । दोनों की चिकित्सा सिद्धान्त एक ही जैसा है ।

पैत्तिक शूल (पित्ताशय की शोथ)

रोग परिचय—इसे अंग्रेजी में ऐक्यूट कोलो सिस्टाइटिस (Acute Cholecystitis) तथा बिलियरी कालिक (Biliary colic) आदि के नामों से जाना जाता है । पित्ताशय का तीव्र प्रदाह (इन्फ्लेमेशन) पित्ताशय (Gall Bladder) या पित्त वाहिनी (Bileduct) में रुकावट आ जाने से हो जाता है। जब पथरी पित्ताशय से निकल कर पित्त वाहिनी में पहुँचती है, तब रोगी को दर्द होने लगता है तथा शोथ और पान्डु रोग भी हो जाता है । यह दर्द कई घन्टे से कई दिनों तक रह सकता है । पित्ताशय में पथरी रहने पर रोगी को दर्द नहीं होता है । समीप में अर्बुद या गिल्टी पैदा हो जाने से और उस पर दबाब पड़ने से पित्त वाहिनी में रुकावट उत्पन्न हो जाती है ।

दाँयी छाती की पसलियों के नीचे यकृत स्थान या इसके ऊपर आमाशय के दांई ओर इस रोग में यकायक तड़पा देने वाला तीव्र दर्द प्रारम्भ हो जाता है जिसकी टीसें पीठ और दांये कन्धे तक जाती है । मितली और कै भी आती है। कई बार कम्पन्न और ज्वर भी हो जाता है । पित्ताशय का स्थान दबाकर देखने पर वह उभरा हुआ होता है और वहाँ दर्द होता है । रक्त के श्वेत कण (W.B.C.) बढ़ जाने से पान्डु रोग भी हो जाता है । यह रोग भी पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को (30 से 60 वर्ष की आयु वर्ग में) होता है—विशेषकर मोटी स्त्रियों को ।

उपचार

● दर्द के स्थान पर गरम सेंक (टकोर) करना चाहिए ।

● कब्ज दूर करने के लिए संतरे के रस में 30 मि. ली. कैस्टर आयल (एरन्ड का तैल) और 4 मि. ली. ग्लीसरीन मिलाकर पिलाना लाभप्रद है ।

● पोस्त के डोडों को पानी में उबालकर दर्द के स्थान पर टकोर करना अधिक लाभप्रद है । रोगी को आराम से बिस्तर पर लिटाये रखना चाहिए ।

● दर्द शुरू होते ही 30 मि.ली. आलिव आयल (जैतून का तैल) 1-1 घंटे बाद पिलाते जाये अथवा सुबह के समय 90 से 120 मि.ली. एक ही बार में पिला दें । दर्द दूर होने पर पथरी को तोड़ने और निकालने वाली औषधियाँ दें।

● यहूद भस्म 120 मि.ग्रा., कलमी शोरा 960 मि.ग्रा. तथा यवक्षार 960 मि.ग्रा.। एक-एक मात्रा मुँह में डालकर मूली के हरे पत्तों का निथरा रस 48 मि.ग्रा. पिलायें लाभप्रद है।

● बिच्छू को तैल में जलाकर पित्ताशय पर मलने से भी यह दर्द दूर हो जाता है।

वृक्कशूल, गुर्दा का दर्द (रेनल कालिक)

रोग परिचय—इसे अंग्रेजी में 'रीनल कालिक' (Renal Calic) के नाम से जाना जाता है! इस रोग में जब पथरी वृक्क में होती है तो रोगी की कमर में धीमा-धीमा दर्द प्रतीत होता है किन्तु जब यह पथरी गुर्दे से निकल कर मूत्र प्रणाली (गवीनी) (Ureter) में पहुँचकर फँस जाती है तो रोगी को तड़पा देने वाला दर्द होने लग जाता है। यह दर्द वृक्कों के स्थान से प्रारम्भ होकर पुरुषों में खसियों (वृषणों या अन्डकोषों) तक और स्त्रियों में गुप्तांगों और जाँघों तक पहुँचता है। इस रोग में मूत्र बार-बार आता है तथा मूत्र में रक्त भी आ सकता है तथा यह दर्द तब तक होता रहता है जब तक कि पथरी गवीनी से चलकर मूत्राशय में नहीं पहुँच जाती है। रोगी को मितली और कै भी आती है। यह दर्द कुछ मिनटों से लेकर कई घंटों तक रह सकता है। एक्स-रे लेने पर पथरी का प्रमाण मिल जाता है तथा पथरी खश-खश के दाने से लेकर नारंगी जितने आकार तक की हो सकती है। बड़ी पथरी में शल्य क्रिया आवश्यक है। छोटी पथरी को खाने की औषधियों से निकाला तथा पुनः-पुनः (बार-बार) बनने से रोका जा सकता है।

उपचार

● गुर्दे का दर्द होने पर रोगी को गरम पानी के टब में इतना पानी भरकर बिठायें कि उसका गुप्तांग पानी में डूबा रहे तथा छाती व अन्य शरीर पानी से बाहर रहे। मूत्र आने पर रोगी मूत्र को रोके रखकर थोड़ी देर बार जोर लगाकर (पानी में ही) मूत्र निकालें ताकि कंकड़, रेत या पथरी (जोर लगाकर) मूत्र त्याग के साथ ही निकल जाये। कई बार बिस्तर में लेटे-लेटे ही इधर-उधर करवट बदलने से भी पथरी वृक्क में वापस अथवा मूत्राशय में सरलतापूर्वक (आसानी से) पहुँच जाती है।

● कैस्टर आयल 30 मि.ली. गरम दूध में मिलाकर पिलायें तथा एक लीटर

गरम पानी में 12 ग्राम सनलाइट साबुन या लाइफबाय साबुन घोलकर 30 मि.ली. कैस्टर आयल में मिलाकर एनिमा करें।

● लाल मिर्च पानी में पीसकर पीठ पर गुर्दों के स्थान पर लेप करने तथा मात्र एक ही मिनट के बाद पानी से धोकर घी मल देने से वृक्कशूल में लाभ हो जाता है। यह योग 80% सफल रहता है।

● मुर्गी के अन्डों की जर्दी 6 ग्राम तथा थोड़ी सी पिसी हुई हल्दी और थोड़ा गरम पानी मिलाकर लेप बनाकर गुर्दों के स्थान पर लगाना भी वृक्क शूल में अत्यन्त लाभकारी है।

● गरम पानी की बोतल पीठ व पेट पर वृक्कशूल के समय सेंक (टकोर) करें अथवा उबलते पानी में फलालिन डालकर और निचोड़कर उस पर तारपीन का तैल छिड़ककर गुर्दों के स्थान पर व पेट पर बार-बार गरम-गरम टकोर करने से तथा बाद में उस पर कम्बल ढक देने से भी वृक्क शूल में लाभ होता है।

● दाना-ए-फरंग (रत्न) की अंगूठी पहनना वृक्कशूल में लाभकारी है।

● जवाखार (यवक्षार), लोटा सज्जी, कच्चा सुहागा, कच्चा नौशादर, काली मिर्च, सेंधा नमक, खाने वाला नमक, हीरा हींग, कलंगी, शोरा प्रत्येक औषधि पीस व छानकर (सम मात्रा में मिलाकर) उसमें तेज विलायती सिरका चटनी बनाकर 15-15 मिनट के अन्तराल से 3 ग्राम की मात्रा में 2-3 बार सेवन कराना वृक्कशूल में अत्यन्त लाभप्रद है।

वृक्कशूल नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

ओरुक्लीन टेबलेट (चरक)—2-2 टिकियाँ दिन में 3-4 बार अथवा आवश्यकतानुसार सेवन करायें। बच्चों को आधी मात्रा दें।

कैलक्यूरी टेबलेट (चरक)—2-2 टिकिया दिन में 3 बार तथा तीव्रावस्था में 3-3 टिकिया जल से प्रयोग करायें।

मूत्राशय की पथरी का दर्द

रोग परिचय—पथरी मूत्राशय में होने पर रोगी को वृक्कशूल की ही भाँति तड़पा देने वाला दर्द होता है। यह दर्द मूत्राशय, गुर्दा और वृषणों मध्य के स्थान (सींवन) और पुरुषों में—(लिंग) के अग्रभाग (सुपारी या सुपाड़ा) तक में होता है। यह दर्द मूत्र त्याग के समय अथवा मूत्र त्यागने के पश्चात् अधिक बढ़ जाता

है। रोगी को बार-बार गाढ़े रंग का मूत्र आता है। पथरी मूत्राशय के मुख में फँस जाने पर मूत्र रुक-रुक कर आने लगता है या बिल्कुल ही बन्द हो जाता है। यदि पथरी काफी समय तक मूत्राशय में पड़ी रहे तो मूत्राशय का आकार तथा रचना बिगड़ जाती है। बच्चों को यह रोग होने पर मूत्र त्यागने के बाद कष्ट के कारण रोना-चीखना पड़ जाता है तथा कष्ट के लक्षण चेहरे पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। बच्चा अपने लिंग (सुपारी) को हाथ से मलता है तथा कभी-कभी नींद में बिस्तर पर ही मूत्र कर देता है।

मूत्राशय की पथरी अक्सर बच्चों तथा वयस्कों को तथा दुबले-पतले मनुष्यों को बनतीं है। यह पथरी प्रायः भूरी या सफेद होती है तथा ज्वार के दाने से लेकर मुर्गी के अंडे के आकार तक की हो सकती है।

उपचार—इसकी चिकित्सा पित्ताशय की शोथ (पित्ताश्मरी) व वृक्क का दर्द (पथरी) की ही भाँति होती है। पथरी तोड़ने तथा अधिक मूत्र लाने वाले योगों का ही सेवन करायें।

● दाऊदी के फूल 9 ग्राम पानी में उबालकर पिलाना लाभप्रद है।

● कुल्थी 6 ग्राम, सौंफ 6 ग्राम 1 लीटर जल में इतना उबालें कि आधा भाग पानी उड़ जाये। फिर शीशा नमक ढाई ग्राम तथा गाय का घी 6 ग्राम मिलाकर पिलाना लाभप्रद है।

● कुल्थी 20 ग्राम को 240 ग्राम पानी में औटायें। जब पानी चौथाई रह जाये तब उतार कर छानकर गुनगुना रोगी (सुबह-शाम) पिला दें। पथरी गलकर निकल जायेगी।

● पपीते की जड़ 6 ग्राम सिल पर बारीक पीसलें। फिर इसे 50 ग्राम पानी में घोलकर छानकर रोगी को सुबह-शाम (21 दिन) सेवन कराने से पथरी गलकर निकल जाती है।

नोट—पथरी के रोगी को रोटी के साथ कुल्थी की दाल खाना लाभप्रद है।

● टिन्डे का रस 50 ग्राम, जवाखार 16 ग्रेन लें। दोनों को मिलाकर पीने से पथरी रेत बनकर मूत्र मार्ग से बाहर निकल जाती है।

● मूली का रस 25 ग्राम, यवक्षार 1 ग्राम को मिलाकर रोगी को पिलायें। पथरी गलकर निकल जायेगी।

● कलमी शोरा, यवक्षार और नौशादर (आधा-आधा ग्राम प्रत्येक) गन्ने का रस 20 ग्राम, नीबू रस 6 ग्राम सभी को मिलाकर रोगी को निरन्तर कुछ दिनों

तक सेवन कराने से पथरी गलकर निकल जाती है। यह एक मात्रा लिखी है।)

● नीम की पत्ती की राख 6 ग्राम फाँककर ऊपर से पानी पियें। कुछ दिनों के प्रयोग से पथरी गल जाती है।

● चीड़ की लकड़ी का चूर्ण आधा से 2 ग्राम तक जल से 1 माह तक सेवन करने से पथरी रोग नष्ट हो जाता है।

● शहद के साथ गोखरू चूर्ण 4 ग्राम चाटकर बकरी का ताजा दूध पीना पथरी रोग को जड़मूल से नष्ट कर देता है।

● अजमोद चूर्ण 6 ग्राम मूली के पत्तों के 100 ग्राम रस में पीसकर पिलाने से पथरी गल जाती है।

● पीपल की कोंपलें 7, काली मिर्च 5 दाने लें। दोनों को ठन्डाई की भाँति घोटकर 1 गिलास पानी में मिलाकर पीने से 3 दिन में पथरी गलकर निकल जाती है।

● केले के तने का जल 30 ग्राम, कलमी शोरा 25 ग्राम, दूध 250 ग्राम तीनों को मिलाकर दिन में 2 बार पिलायें। दो सप्ताह सेवन करायें।

● लाल रंग का कूष्मान्ड (सीताफल) खूब पका हुआ लेकर उसका 25 ग्राम रस निकाल तथा 3 ग्राम सेंधा नमक मिलाकर दिन में 2 बार निरन्तर 2 सप्ताह प्रयोग करायें। पथरी को गलाकर मूत्र मार्ग से बाहर करने का उत्तम योग है।

शुक्राशय की पथरी का दर्द

रोग परिचय—यह अंग्रेजी में (Pasidue to Gravel in seminal vericles) कहलाता है। शुक्राशय में पथरी अटक जाने से भयंकर दर्द हुआ करता है। रोगी दर्द से तड़पता है और बेचैन हो जाता है।

इसका उपचार वृक्कशूल (वृक्काश्मरी) पित्ताशय शोथ (पित्ताश्मरी) एवं मूत्राशय की पथरी का दर्द की ही भांति मूत्रल एवं पथरी तोड़ने वाले योगों से ही करें।

नारियल का पानी, वार्ले वाटर तथा कुल्थी का काढ़ा पिलाना लाभप्रद है।

अश्मरी टेबलेट (धन्वन्तरि)—2-2 टिकिया 3 बार जल से देना पथरी रोग का अचूक इलाज है।

यूरीका कैपसूल (इन्डो जर्मन)—1-2 कैपसूल दिन में 2-3 बार भोजन से पूर्व पानी से दें।

पथरीना टेबलेट (बैद्यनाथ)—1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार अथवा आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें।

पथरी नाशक पेटेन्ट आयुर्वेदीय योगों को मूत्र में रक्त आ जाने पर भी बन्द नहीं करना चाहिए । लगातार प्रयोग जारी रखना चाहिए तथा पानी व नारियल का पानी इत्यादि अधिक मात्रा में प्रयोग करना चाहिए ।

प्लीहा एवं यकृत का बढ़ जाना

रोग परिचय—मलेरिया ज्वर इत्यादि के कारण, प्लीहा तथा यकृत वृद्धि हो जाती है ।

उपचार

● कच्चे पपीते का ताजा दूध 5 बूँद तथा एक पका केला लेकर दोनों को फेंटकर भोजनोपरान्त दोनों समय सेवन कराने से प्लीहा व यकृत वृद्धि में लाभ होता है ।

● अनार के छाया शुष्क पत्ते 5 भाग तथा नवसादर 1 भाग दोनों को महीन पीसकर सुरक्षित रख लें । इसे प्रातः सायं 3-3 ग्राम की मात्रा में सेवन कराने से प्लीहा-वृद्धि में लाभ होता है ।

● अपराजिता के बीजों को भूनकर बारीक चूर्ण करलें । उसे 4 रत्ती से 3 ग्राम तक की मात्रा में गरम पानी के साथ सेवन कराने से प्लीहा व यकृत वृद्धि में लाभ होता है ।

● करेला के रस में थोड़ी राई व नमक का चूर्ण मिलाकर सेवन कराने से प्लीहा-वृद्धि में लाभ होता है ।

● पलाश के पत्तों पर तैल चुपड़कर अथवा तम्बाकू के पत्तों को नीबू के रस में पीसकर लेप करने से प्लीहा-वृद्धि में लाभ होता है ।

● नीम की गिरी, अजवायन तथा नौसादर सम मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर 3 ग्राम जल के साथ सेवन करना प्लीहा-वृद्धि में लाभप्रद है ।

● पिप्पली चूर्ण व लौह भस्म समभाग खूब खरल कर सुरक्षित रख लें। 1 से 4 रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम दूध के साथ सेवन कराने से प्लीहा-वृद्धि में लाभ होता है ।

● प्याज को आग में पकाकर उसे रात भर ओस में रखकर प्रातः प्रतिदिन खिलाने से प्लीहा-वृद्धि में शीघ्र लाभ होता है ।

● भाँगरे के रस में थोड़ा अजवायन का चूर्ण मिलाकर पिलाने से यकृत वृद्धि में लाभ हो जाता है ।

● मूली को चीरकर 4 फाँक बनाकर चीनी मिट्टी के बर्तन में रखकर उन पर पिसा हुआ 6 ग्राम नौसादर छिड़क कर रात्रि भर ओस में रखा रहने दें । प्रातःकाल जो इसमें से पानी निकले उसे पीकर ऊपर से मूली की फाँकें खालें । इस योग के मात्र एक सप्ताह के सेवन से प्लीहा-वृद्धि में विशेष लाभ होता है ।

● यकृत तथा प्लीहा की सूजन पर मकोय या पुनर्नवा के स्वरस को गरम करके लेप करने से यकृत व प्लीहा शोथ नष्ट हो जाता है ।

● बकरी की मैंगनी को सिरके में पीसकर लेप बनालें । उसे गरम करके गुनगुना-गुनगुना दिन में प्लीहा यकृत के स्थान पर लेप करें । चाहें कैसी भी प्लीहा-यकृत की वृद्धि हो, थोड़े ही दिन के प्रयोग से ठीक हो जायेगी । इसका प्रयोग कम से कम 15 दिनों तक अवश्य करें ।

● रेह (जिसको धोबी लोग कपड़ा धोने के काम में लेते है) 1 किलो लेकर 3 किलो पानी में भिगोकर 3 दिन तक रखें तथा दिन में कई बार लकड़ी से हिला दिया करें । उसके पश्चात् ऊपर का निथरा हुआ जल उतारकर साफ-स्वच्छ बोतलों में भर लें तथा प्रत्येक बोतल में 4 ग्राम की मात्रा में हीरा कसीस पीसकर मिला दें । इस 60 ग्राम औषधि का प्रातःकाल सेवन कर 5 मिनट बांयी करवट से लेटे रहें । भोजन में हल्की वस्तुऐं लें । प्लीहा नाशक अतीव गुणकारी योग है ।

● सोंठ 20 ग्राम, जवाखार 10 ग्राम, सज्जीखार 1 ग्राम तथा इतना ही कलमी शोरा, नौसादर (उड़ा हुआ), गिलोय सत्व तथा भुना सुहागा । सभी को कूट-पीस छानकर सुरक्षित रख लें । तीन से डेढ़ ग्राम की मात्रा में भोजनोपरान्त दोनों समय गरम पानी से सेवन करायें । यकृत-प्लीहा नाशक अत्यन्त उत्तम चूर्ण है । उदरशूल में भी लाभप्रद है ।

● इन्द्रायण के फल 50 ग्राम, काली जीरी, आमा हल्दी तथा सेंधा नमक 200-200 ग्राम सभी को मिलाकर कूट पीसकर चूर्ण बना लें । इसे 2 से 4 रत्ती की मात्रा में दें अथवा छोटी मात्रा में 2-3 बार दें । इसके प्रयोग से यकृत वृद्धि, प्लीहावृद्धि, कोष्ठबद्धता, व उदरशोथ में अत्यन्त लाभ होता है ।

कुछ प्रमुख यकृत व प्लीहा वृद्धि नाशक पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

लिव 52 टेबलेट, ड्राप्स सीरप (हिमालय), **लिवोमीन टेबलेट**, ड्राप्स, सीरप (चरक), **बिमलिव ड्राप्स** (धूत पापेश्वर), **इथीलीवर फोर्ट** (मैडीकल इथिक्स), **यकृतो टेबलेट** (मोहता रसा.), **लिवरहीन टेबलेट** (गैम्बर्स लेबो.),

लिबर बून टेबलेट (मार्तन्ड), **लीवटोल सीरप** (वैद्यनाथ), **प्लीही सीरप** (देश रक्षक), **पिप्पली मूल चूर्ण** (झन्डू), **लिव 66 टेबलेट** (ग्लोब), **चामलिव कैपसूल** इत्यादि का पत्रक के निर्देशानुसार आयु-बल व आवश्यकतानुसार मात्रा निर्धारण कर सेवन करें।

आध्मान, अफारा, पेट फूल जाना

रोग परिचय—आध्मान अथवा अफारा का अर्थ है पेट में गैस रुक जाना। ऐसा प्राय: अजीर्ण, मन्दाग्नि, अतिसार, अग्निमांद्य आदि पाचन विकारों के कारण होता है। अफारा कोई साधारण रोग नहीं है इसके कारण रोगी के समक्ष जीवन और मृत्यु का प्रश्न आ खड़ा होता है।

उपचार

- अदरक का रस, नीबू का रस और शहद 6-6 ग्राम लेकर (तीनों को मिलाकर) दिन में 3 बार चटायें।
- प्रतिदिन 3 छोटी हरड़ मुख में डालकर चूसें।
- आक के पीले पत्ते 100 ग्राम, नमक 10 ग्राम दोनों को कूटपीस कर व घोटकर चने के आकार की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें। प्रतिदिन 2-3 गोलियाँ चूसें।
- दूषित अन्न की डकारें आती हों तथा उदर में वायु (गैस) भरी हो तो—1 रत्ती हींग घी मिलाकर निगलवायें और चमत्कार देखें।
- छोटी इलायची का चूर्ण 4-6 रत्ती तथा भुनी हींग 1 रत्ती थोड़े नीबू रस के साथ मिलाकर पीने से वायु का अनुलोमन होता है।
- हीरा हींग 2 रत्ती को थोड़े जल में घिसकर कुछ गरम करके फिर रुई का फोहा भिगोकर बच्चे की नाभि पर रखने से अफारा दूर हो जाता है।
- वच, हरड़, चित्रकमूल, जवाखार, पीपल, अतीस, कूट समभाग लें। चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में गुनगुने जल के साथ देने से अफारा दूर हो जाता है।
- लौंग का चूर्ण डेढ़ ग्राम खौलता हुआ पानी आधा किलो लें। जब पूरी तरह लौंग घुल जाये तब छान लें। इसे 25 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन 3 बार सेवन करें।
- प्याज, अदरक व लहसुन का रस प्रत्येक 1-1 चम्मच में 3 चम्मच शहद मिलाकर भोजन से पूर्व चाटना चाहिए।

- सिरके के साथ प्याज पीस कर सेवन करना भी लाभकारी है। इसमें अदरक का रस और कुछ काला नमक डालना और भी अधिक गुणकारी है।
- पिसी हुई काली मिर्च 2 ग्राम फांककर ऊपर से नीबू का रस मिलाये हुए गरम जल को पीयें। शाम और रात्रिकाल में 10-12 दिनों तक इसके निरन्तर प्रयोग से गैस बनना बन्द हो जाता है।

अफारा नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

गैसेक्स टेबलेट (हिमालय), **गारलिल पिल्स** (चरक), **शुक्तिन टेबलेट** (अलारसिन), **डायजेस्टीन टेबलेट** (मार्तन्ड), **डाइजोल टेबलेट** (राजवैद्य शीतल प्रसाद), **अभयासन टेबलेट** (झन्डू), **गैसान्तक वटी** (वैद्यनाथ), **हाजमोला टेबलेट** (डाबर), **गेसोवटी** (भजनाश्रम), **बगेनी सान लिक्विड** (हिमालय), दूध पीते बच्चों के लिए। **अजवायन अर्क** (झन्डू), **अग्निबल्लभ क्षार** (धन्वन्तिरि कार्यालय), **गैसान्तक कैपसूल** (गर्ग बनौ.), **गैसक्लीन कैपसूल** (अतुल फार्मेसी), **गैसोना कैपसूल** (ज्वाला आयु) **बाला गुटि टेबलेट** (झन्डू), **पाचन टिकड़ी** (झन्डू), **ओजस लिक्विड** (चरक) इत्यादि में से किसी एक का उचित खुराक पत्रक में देखकर आयु व बलानुसार सेवन करें।

आँव, पेचिश

रोग परिचय—आँतों और मलाशय में ऐंठन उत्पन्न होती रहती है तथा पीड़ा भी होती है। मल उतरने में कष्ट होता है जोर लगाने पर सफेद आँव निकलती है, रोगी को रक्त भी आता है। आँव में रक्त मिला हुआ भी निकलता है। रोगी बेचैन रहता है।

उपचार

- जरा सी हींग को दही में लपेटकर प्रयोग करें।
- प्याज 60 ग्राम को छीलकर महीन कूट लें और उसे 5-6 बार जल से धोकर 240 ग्राम गाय के ताजा दही के साथ खायें, यह 1 खुराक है। दोपहर और शाम को ऐसी खुराकें लें। 2-3 दिन में रोग जड़मूल से नष्ट हो जाता है।
- राल 20 ग्राम लेंकर बारीक कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। इसकी 3 पुड़ियां बना लें। प्रतिदिन 1 पुड़िया 100 ग्राम दही में चीनी मिलाकर रोगी को सेवन करायें। केवल तीन दिन में पूर्ण आराम हो जायेगा।

● काकड़ा सिंगी 10 ग्राम को कूट-पीसकर शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें । इसे 1 से 2 ग्राम की मात्रा में 4-4 घंटे के अन्तराल से दही में मिलाकर सेवन करने से एक ही दिन में लाभ हो जाता है ।

● राल 25 ग्राम और मिश्री 50 ग्राम दोनों को कूट-पीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रख लें । इसे 1-2 ग्राम की मात्रा में दिन में 3-4 बार 50 ग्राम दही के साथ सेवन करने से रक्त एवं शूल एक ही दिन में बन्द हो जाता है ।

● केले की फली खाँड़ लगाकर खाने से पेचिश में लाभ होता है ।

● छोटी हरड़ 20 ग्राम, सौंफ 20 ग्राम दोनों को कूट पीसकर रख लें फिर इसमें 20 ग्राम मिश्री मिला लें । प्रात: सायं 6-6 ग्राम चूर्ण पानी के साथ सेवन करने से पेचिश शर्तिया नष्ट हो जाती है ।

● फिटकरी का फूला तथा सफेद राल 2-2 तोला, सोना गेरू 1 तोला, अनार के फल का छिलका 1 तोला सभी को पीसकर जल में घोटकर 4-4 रत्ती की गोलियां बनाकर सुखा लें । यह 1-2 गोली जल से दिन में 3-4 बार अवस्थानुसार दें । यह योग प्रत्येक प्रकार के अतिसार, प्रवाहिका में लाभप्रद है । आमातिसार में विशेष लाभ करता है । रक्तातिसार के लिए परम उपयोगी है । गर्भवती स्त्रियों तथा बच्चों को भी नि:संकोच सेवन कराया जा सकता है ।

● धनिया 15 ग्राम पानी ठंडाई की भांति घोट-छानकर मिश्री मिलाकर सेवन कराने से रक्तातिसार (पेचिश) में 1 ही दिन में लाभ हो जाता है ।

● सौंफ 5 तोला तथा इतनी ही छोटी भुनी हरड़ दोनों का चूर्ण कर उसमें 10 तोला खांड़ मिलाकर डेढ़ तोला तक की मात्रा में पानी या चावल के मांड के साथ लेने से पेचिश मिटती है ।

आँव पेचिश नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

डायरेक्स टेबलेट (हिमालय), **दीपन टेबलेट** (चरक), **अतिसारान्तक कैपसूल** (मिश्रा), **डियाडिन लिक्विड** (चरक), **अमृतधारा** (अमृतधारा फार्मेसी, देहरादून), **शिवा चूर्ण** (झन्डू), **इथिडीस टेबलेट सीरप** (मेडिकल इथीक्स), **डिसेन्ट्रोना टेबलेट** (मेहता) पत्रक के विवरणानुसार प्रयोग करें ।

जलोदर, जल (पेट में पानी पड़ जाना)

रोग परिचय—यकृत सम्बन्धी रोग की अन्तिमावस्था ही जलोदर अथवा जलन्धर या पेट में पानी भर जाने के रूप में परिलक्षित होती है । इसमें पेट को

छूने से पानी की लहरें स्पष्ट दिखाई देती हैं । पेट सूजा हुआ दृष्टिगोचर होता है। पेट सूजकर (पानी भरकर) मटके के समान हो जाता है ।

उपचार

● करेले के पत्तों का स्वरस जलोदर के रोगी को उचित मात्रा में कुछ दिनों तक पिलाने से ज़लोदर में लाभ होता है । इससे पेशाब बढ़ जाता है तथा 1-2 बार शौच भी हो जाता है तथा जलीयांश कम होने लगता है ।

● अजवायन को बछड़े के मूत्र में भिगोकर शुष्क कर लें । इसे थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सेवन कराने से जलोदर में लाभ हो जाता है ।

● दूब (घास) के पंचांग का फान्ट या रस पिलाने से पेशाब अधिक होकर पेट हल्का हो जाता है । फान्ट या रस के साथ काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर पिलाने से जलोदर के साथ-साथ सर्वांग-शौथ में भी लाभ होता है ।

● पुनर्नवा की जड़ 10 ग्राम को गोमूत्र 20 ग्राम में पीसकर सुबह-शाम पिलाने से मूत्र खूब खुलकर आने लगता है जिससे जलोदर में लाभ होता है । पथ्य में केवल दूध का सेवन करायें ।

● पुनर्नवा का जौकुट किया हुआ चूर्ण 20 ग्राम को 200 ग्राम जल में पकाकर 50 ग्राम शेष रहने पर इसमें चिरायता तथा सौंठ का चूर्ण 2 ग्राम तथा कलमी शोरा 6 से 8 रत्ती तक मिलाकर पिलाने से जलोदर में लाभ होता है ।

● सत्यानाशी का दूध 10 ग्राम जल तथा गोदुग्ध 60-60 ग्राम मिलाकर प्रात:काल पिलाने से मूत्र तथा मल का सम्यक विरेचन होकर उदर हल्का हो जाता है और जलोदर में भी लाभ होता है ।

● बिना बच्चा पैदा किये हुए (बिना ब्याही) घोड़ी का मूत्र 400 ग्राम में काली मिर्च 6 ग्राम पीसकर मिलाकर सम्पूर्ण मूत्र 1 बार में ही पिला दें । फिर रोगी को दिन भर दूध ही पिलाते रहें । यह प्रयोग 1 दिन बीच में छोड़कर (अन्तराल से) मात्र 3 बार सेवन करायें, जलोदर में लाभप्रद है ।

● स्वमूत्र के उपचार से जलोदर पूर्ण रूप से ठीक हो जाता है । प्रथम 10-15 दिन तक जलोदर रोगी को उपवास करायें । इस उपचार से वमन तथा विरेचन होकर जल निकलना प्रारम्भ हो जाता है । जब पेट का सम्पूर्ण जल निकल कर अपनी असली अवस्था पर आ जाये, तब उपवास छुड़ा दें । उपवास छोड़ते समय मट्ठे का पानी, गेहूँ की रोटी, ऊँटनी या गाय का दूध सेवन कराना चाहिए । इस प्रयोग से रोगी जलोदर से रोगमुक्त हो जाता है ।

● लाल मिर्च के पौधे की पत्तियाँ 20 ग्राम, काली मिर्च 10 दानें लें । दोनों

को ठण्डाई की भांति पीस-छानकर 1-1 ग्राम नौसादर और सेंधा नमक मिलाकर पिलाना जलोदर में अतीव गुणकारी है ।

● एक बड़ा बैंगन लेकर उसमें छेद करके नौशादर भरकर ओस में रख दें । प्रात:काल इसे निचोड़कर रस निकालें । इस रस की 4-5 बूँदें बताशे में डालकर रोगी को निगलवाने से जलोदर रोगी को एक मटका पेशाब होगा । निरन्तर 1 मास तक इसके सेवन से जलोदर और तिल्ली के रोग अवश्य मिट जाते हैं ।

● ताजा अदरक के रस में 5 तोला समभाग मिश्री मिलाकर प्रात:काल पिलावें। फिर दूसरे दिन ढाई तोला रस की मात्रा और समान भाग मिश्री बढ़ाकर प्रयोग करें। इसी प्रकार 25 तोला अदरक रस और 25 तोला मिश्री तक पहुँच जायें फिर इसकी अनुपात (ढाई तोला) से घटाकर प्रयोग 5 तोला पर स्थगित कर दें । इस प्रयोग-काल में रोगी को पथ्य में मात्र दुग्धपान ही करना चाहिए । इस योग से जलोदर में अवश्य लाभ होता है ।

● करेले के ढाई तोला रस में एक चौथाई तोला शहद मिलाकर प्रात:सायं पिलाने से जलोदर नष्ट हो जाता है । यह प्रयोग मलेरिया ज्वर में भी लाभप्रद है।

● करौंदा के पत्तों का स्वरस प्रथम दिन 1 तोला, दूसरे दिन 2 तोला इसी प्रकार 10 वें दिन तक नित्य 1 तोला बढ़ाते हुए 10 तोला तक पिलावें । फिर इसी क्रम से 1-1 तोला घटाते हुए 1 तोला पर आकर पिलाना बन्द कर दें । इतने प्रयोग से ही जलोदर स्वयं मिट जायेगा ।

● कच्चा लहसुन दो कली प्रतिदिन खाने से (भोजन के साथ) जलोदर स्वयं ही धीरे-धीरे ठीक हो जाता है ।

● कच्ची प्याज बार-बार खाने से मूत्र अधिक होता है । यह जलोदर के लिए अच्छी औषधि है ।

जलोदर नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

लिव 52 टेबलेट, सीरप, ड्राप्स (हिमालय ड्रग) रोगी की अवस्था व आयु के अनुसार मात्रा निर्धारित कर प्रयोग करायें । यह यकृत-जन्य जलोदर में लाभप्रद है । यकृत की क्रिया को सामान्य करता है । जलोदर में लाभकारी है ।

अग्नि संदीपन कैपसूल (मिश्रा) 1-2 कैपसूल दिन में 2-3 बार अथवा आवश्यकतानुसार दें ।

अपामार्ग क्षार (झन्डू)—आवश्यकतानुसार सेवन करायें ।

लिक्विड एक्सटेक्ट ऑफ पुनर्नवा (झन्डू)—4 से 8 मि. ली. दिन में 3 बार अथवा आवश्यकतानुसार दें ।

सर्दी, जुकाम, नजला

रोग परिचय—यह रोग हो जाने से नाक से तरल बहता रहता है । नाक की श्लैष्मिक-कला में शोथ हो जाता है । यही तरल धीरे-धीरे गाढ़ा बलगम सा बन जाता है । नाक कभी खुल जाती है, कभी बन्द हो जाती है । इसके कारण सिर-दर्द, बदन दर्द एवं ज्वर भी हो जाता है । भोजन का स्वाद बिगड़ा हुआ रहता है । प्राय: यह ठन्डी हवा (ठंड लगना), मौसम बदलना अथवा यात्रा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर आवो-हवा व पानी बदलना तथा बरसात में भीग जाने इत्यादि से होता है ।

उपचार

● अदरक 3 ग्राम, काली मिर्च 5 नग, मिश्री 6 ग्राम सभी को 150 ग्राम जल में औटाकर चतुर्थांश रहने पर छानकर पिलाने से प्रतिश्याय (जुकाम) में विशेष लाभ होता है ।

● गुड़ 10 ग्राम को 40 ग्राम दही और 3 ग्राम काली मिर्च के चूर्ण के साथ मिलाकर 3 दिन प्रात:काल सेवन करने से खुश्क जुकाम या उपद्रव युक्त (दुर्गन्धित) जुकाम में लाभ हो जाता है ।

● जुकाम की प्रारम्भिक अवस्था में एक स्वच्छ महीन वस्त्र में 10-15 ग्राम की मात्रा में स्वच्छ की हुई अजवायन को बाँधकर (पोटली थोड़ी सी ढीली रखें) हथेली पर मल-मल कर सूँघने से जुकाम का सब पानी बह जाता है ।

● जब छींकें अधिक आ रही हों तथा नाक से जुकाम में पानी भी अधिक बह रहा हो तो कलौंजी का चूर्ण जैतून के तैल में मिलाकर 3-4 बार बूंदें नाक में टपकायें । अथवा कलौंजी को भूनकर चूर्ण बनाकर 1 ग्राम लेकर उसमें 1 ग्राम नौसादर तथा 3 ग्राम सौंठ का चूर्ण एक ही खूब मिलाकर एक स्वच्छ वस्त्र की ढीली पोटली में बाँधकर बार-बार सूंघते रहने से लाभ हो जाता है ।

● दिन भर उपवास रखकर रात्रि को सोते समय भुने हुए चनों की पोटली बनाकर गले को खूब सेंकने के बाद उन्हीं को खाने से जुकाम, नजला में लाभ हो जाता है ।

● दालचीनी, छोटी इलायची के दाने एवं सौंठ सम मात्रा में लेकर महीन चूर्ण कर 1 से डेढ़ ग्राम की मात्रा में चाय के साथ पीने से सर्दी जुकाम में लाभ हो जाता है ।

● आग की भूभल पर पकाये हुए गरम नीबू के रस को पिलाने से जुकाम में विशेष लाभ होता है । नीबू को चीरकर उसे सूँघना भी जुकाम में लाभप्रद है।

● बादाम गिरी 10 से 20 नग तक, गेहूँ का सत्व (निशास्ता) 10-20 ग्राम तथा खस-खस 10 ग्राम तीनों को जल के साथ घोट छानकर धीमी-धीमी अग्नि पर पकाकर अवलेह जैसा बनाकर मिश्री-चूर्ण मिला लें । इसका सेवन करने से खुश्क जुकाम तथा नजला में विशेष लाभ होता है ।

● लौंग का तैल 2 बूंद शक्कर के साथ सेवन करने से या लौंग का तैल रूमाल पर छिड़क कर उसे बार-बार सूँघना जुकाम में विशेष लाभप्रद है ।

● नीलगिरी का तैल रूमाल पर डालकर बार-बार सूँघना भी जुकाम में लाभकारी है ।

● राई का चूर्ण 4-6 रत्ती तथा शक्कर 10 ग्राम को मिलाकर थोड़े जल के साथ सेवन कराने से जुकाम नष्ट हो जाता है ।

● जायफल को जल में घिसकर नाक तथा कपाल पर लेप करने से जुकाम के कारण उत्पन्न सिर-दर्द में लाभ हो जाता है ।

● तुलसी पत्र 11, काली मिर्च 5 तथा अदरक या सौंठ मिलाकर बनाई गई चाय (गुड़ या शक्कर मिलाकर) पिलाना साधारण जुकाम में लाभकारी है ।

● काली मिर्च 3 ग्राम, गाय का दही 50 ग्राम, गुड़ 25 ग्राम लें । काली मिर्च को पीसकर तीनों को मिला लें । इसे सुबह-शाम सेवन करने से बिगड़ा हुआ जुकाम ठीक हो जाता है ।

● त्रिकटु तथा त्रिफला दोनों सम मात्रा में लेकर पीस छानकर इसमें 3 से 6 ग्राम चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से कफ की अधिकता वाला जुकाम ठीक हो जाता है ।

● भाँग की पत्ती डेढ़ ग्राम, गुड़ 3 ग्राम दोनों को मिलाकर गोली बनाकर रोगी को निगलबादें । बाद में जल न पियें तथा तुरन्त सो जायें । एक ही रात्रि में जुकाम ठीक हो जाता है ।

● काली मिर्च का चूर्ण, हल्दी का चूर्ण तथा पिसा हुआ काला-नमक सभी सम मात्रा में लेकर 250 ग्राम पानी में पकाकर (जब पानी आधा रह जाये) मल-छानकर गरम-गरम रोगी को पिलायें । जुकाम में अत्यन्त लाभप्रद है ।

● तुलसी का रस 6 ग्राम, लहसुन का रस 6 ग्राम, सौंठ का चूर्ण 20 ग्राम, काली मिर्च 10 ग्राम, 125 ग्राम गरम दूध के साथ सुबह शाम सेवन करना सर्दी, जुकाम में अत्यन्त लाभकारी है ।

● कपड़े को खूब गरम करके माथे को खूब सेंकना जुकाम में लाभप्रद है।

● यदि छींकें अधिक आ रही हों और रोगी बेचैन हो तो—कुलिंजन की पोटली बाँधकर सूँघने से अधिक छींकें आना बन्द हो जाती हैं ।

● यदि किसी रोगी को छींकें न आती हों और छींक लेना चाहता हो तो जरा सी चूल्हे की राख में 2 बूँद अकोड़ा (आक या अकौआ) का दूध डालकर मिला लें और उसकी नस्य (सुँघा) दें । मात्र 3-4 मिनट में ही छीकै आना प्रारम्भ हो जायेगी । जब छींकें बन्द करनी हो तो एक लोटा भर पानी से नाक और गला साफ करा दें । छींकें आना बन्द हो जायेंगी ।

सर्दी, जुकाम, नजला नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

डीकोफ्सिन टेबलेट (अलारसिन)—प्रतिश्याय, फ्लू, स्वरभंग, ब्रान्को-निमोनिया इत्यादि रोगों में परम उपयोगी ।

सैप्टीलिन टेबलेट (हिमालय), **पाइनेक्स टेबलेट** (चरक), **इथीफ्लू टेबलेट** (मैडीकल इथिक्स), **त्रिशून टेबलेट** (झन्डू), **स्नीजैक्स टेबलेट** (मार्तन्ड), **फ्लूबार टेबलेट** (डाबर), **इन्फ्लूएन्जा टेबलेट** (डाबर), प्रतिश्याय तथा फ्लू में उपयोगी । **सरबाईना टेबलेट** (डाबर) प्रतिश्याय (जुकाम) तथा प्रतिश्याय जन्य शिरःशूल (सिरदर्द) में उपयोगी । **कैफ टेबलेट** (वैद्यनाथ) प्रतिश्याय, गले की खराश में उपयोगी । **फ्लूरोगारि** (वैद्यनाथ) यह टेबलेट भी प्रतिश्याय व फ्लू में उपयोगी है । **जुकामहारी पेय** (गर्ग बनौ.) **जुकामो** (पेय) (वैद्यनाथ) **टर्पोडायल सीरप** (मार्तन्ड), प्रसाद का बाम, डी. कोल्ड बाम, वैद्यनाथ का बाम इत्यादि भी जुकाम व सिर दर्द में उपयोगी है । **ज्वरीना कैपसूल** (गर्ग बनौ.) **जुकाम रिपु** (अतुल फार्मेसी) खाँसी, जुकाम में उपयोगी । इनमें से किसी औषधि का चुनाव कर यथोचित मात्रा में सेवन करें ।

न्यून रक्तचाप, अल्प रक्तदाब, लो ब्लड प्रैशर

रोग परिचय—उच्च रक्तदाब (हाई ब्लड प्रैशर) की भांति ही अल्प रक्तदाब (लो ब्लड प्रैशर) भी भयानक होता है । इसके परिणाम घातक हो सकते हैं । उच्च रक्तदाब में वृद्धि होती है तो निम्न रक्तदाब में कमी हो जाती है । जब किसी मनुष्य का ब्लड प्रैशर 100 एम. एम. माइनस से कम रहने लग जाये तब इसको अल्प रक्तचाप कहते हैं ।

उपचार

● अश्वगन्ध-चूर्ण 50 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम, गाय का घी 100 ग्राम तथा गाय का उबला हुआ दूध 250 मि. ली. । सर्वप्रथम अश्वगन्धा चूर्ण और दूध की भली प्रकार मिलाकर देर तक अग्नि पर पकायें, तदुपरान्त इसे छानकर इसमें मिश्री और घी को खूब गरम करके पिलायें । इसे 10 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गरम-गरम ही पिला दें । लाभप्रद योग है ।

● बिना गुठली का स्वच्छ किया हुआ छुहारा 500 ग्राम, गेहूँ का सत्व 500 ग्राम, भुने हुए चनों का आटा 500 ग्राम, बादाम की गिरी 100 ग्राम, चिलगोजा की मींगी 100 ग्राम, गाय का घी 1 कि. ग्रा., खांड़ (चीनी) 1 कि. ग्रा. तथा गाय का दूध 4 लीटर लें । सर्वप्रथम छुहारों को दूध में निकालकर बारीक पीसलें तथा उपयुर्क्त दूध में पुन: डालकर खूब मिलाकर धीमी अग्नि पर पकायें और खोया (मावा) बना लें । बाद में घी को खूब टासकर इसमें गेहूँ का सत्व भून लें, तत्पश्चात् इसमें चने का आटा डाल दें । फिर उपयुर्क्त खोया भी डालकर खूब मिलाकर सभी को भून लें । जब समस्त द्रव्य भुनकर लाल हो जायें (जलने न पायें) और सुगन्ध छोड़ने लगें तभी खांड़ मिलाकर भली भाँति चलाकर मिलालें। सभी द्रव्य भली प्रकार मिल जाने पर अन्य शेष द्रव्य भी डालकर मिला लें और सुरक्षित रखें ।

इस औषधि को 50 से 65 ग्राम तक गरम दूध के साथ सुबह शाम खिलाते रहें । इसके प्रयोग से सूखा, दुर्बल, रक्तहीन एवं क्षीण शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है तथा अल्प रक्तदाब भी नष्ट हो जाता है । प्रयोग लगातार नित्य कुछ समय तक जारी रखें ।

लो ब्लड प्रैशर नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

नोट—बल्य रसायन औषधियों (टॉनिक Tonic) का प्रयोग करना अतीव गुणकारी एवं निम्न रक्तचाप नाशक होता है । विगोरोल पिल्स (चरक) वयस्कों को 2-2 पिल्स तथा बच्चों को 1-1 पिल्स सुबह शाम दूध के साथ सेवन करायें। विगरोल टेबलेट के अतिरिक्त जैली के रूप में भी उपलब्ध है । इसकी मात्रा 1-1 चम्मच तथा बच्चों को आधा-आधा चम्मच है । यह गैर हार्मोनल टॉनिक है जो शरीर की कोशिकाओं व स्नायु संस्थान को चेतना प्रदान करती है । भूख बढ़ाती

है पाचनक्रिया का सुधार करती है तथा श्वास नली के सामान्य रोगाणुओं का प्रतिकार करती है । **कमल मधु (पेय)** (धन्वन्तरि फार्मेसी, चन्दौसी) हृदय की निर्बलता और दिमाग की कमजोरी व ब्लडप्रैशर में सेवन करना लाभप्रद है ।

ज्वर, पुराना ज्वर (बुखार)

रोग परिचय—सामान्य अवस्था में मनुष्य के शरीर का तापमान 98.5 डिग्री से ऊपर हो जाये तो ज्वर समझना चाहिए । यही ज्वर जब काफी समय तक चले, तब पुराना ज्वर कहलाता है । ज्वर कई प्रकार का होता है । जैसे :—इन्फ्लूएन्ज़ा, टाइफाइड, डेंगु, प्रसूति, ज्वर, लाल ज्वर, काला ज्वर आदि ।

उपचार

● अजमोद का चूर्ण 4 ग्राम की मात्रा में नित्य जल के साथ सेवन करने से जीर्ण-ज्वर में लाभ होता है ।

● ज्वर की अवस्था में जब प्यास अधिक लगे तो अड़ूसा पत्र (वासा) जल कर उबाला हुआ पानी पिलाने से प्यास का वेग शान्त होकर ज्वर का वेग भी कम हो जाता है ।

● वात श्लैष्मिक ज्वर (यह ज्वर प्राय: ऋतु परिवर्तन के समय बरसात में भीगने आदि कारणों से होता है । नाक बहना, शरीर में दर्द तथा ज्वर आदि लक्षण होते हैं) में—6 ग्राम अदरक का रस, समभाग शुद्ध मधु (शहद) मिलाकर दिन में 3-4 बार चटाने से लाभ हो जाता है ।

● अनन्नास के पके फल का रस पिलाने से अथवा इसके 20 ग्राम रस में 3 ग्राम शहद मिलाकर पिलाने से स्वेद (पसीना) आकर ज्वर कम हो जाता है।

● अश्वगन्धा चूर्ण 5 ग्राम तथा गिलोय की छाल का चूर्ण 4 ग्राम एकत्र मिलाकर सुबह शाम प्रतिदिन गरम पानी से सेवन कराने से जीर्ण-वात-ज्वर में लाभ हो जाता है ।

● आँवला, हरड़, पीपल तथा चित्रकमूल और सैन्धव लवण (सेंधा नमक) सम मात्रा में लेकर डेढ़ से से 3 ग्राम की मात्रा में शहद के सात सेवन करने से प्रत्येक प्रकार के ज्वर में लाभ होता है ।

● गिलोय सत्व 1 ग्राम के साथ बराबर मात्रा में पीपल तथा सफेद जीरा का महीन चूर्ण कर इसमें 10 ग्राम शहद मिलाकर दिन में 3-4 बार सेवन कराने

● गिलोय 40 ग्राम को अच्छी तरह कुचलकर मिट्टी के पात्र में रात्रि को भिगो दें। प्रात:काल इसे मल छानकर 20 ग्राम की मात्रा में जीर्ण ज्वर के रोगी को दिन में 2-3 बार पिलाने से लाभ हो जाता है।

● पान का रस थोड़ा गरम करके पिलाने से बच्चों को सर्दी से होने वाले ज्वर में लाभ हो जाता है।

● तुलसी की 11 पत्तियों के साथ लोंग 5 नग, अदरक का रस 3 ग्राम लेकर 50 ग्राम पानी में पीस छानकर गरम करें। फिर 10 ग्राम शहद मिलाकर पिलायें। इस योग के सुबह शाम प्रयोग कराने से कफ प्रधान ज्वर में लाभ हो जाता है।

● तुलसी स्वरस 3 ग्राम में काली मिर्च 3 नग का चूर्ण मिलाकर कुछ दिनों लगातार सेवन कराने से जीर्ण ज्वर में लाभ हो जाता है।

● दुहवी ताजी 30 ग्राम, काली मिर्च तथा छोटी पिपल 10-10 ग्राम तीनों को महीन पीसकर दुद्धी के स्वरस में घोटकर काली मिर्च के आकार की गोलियाँ बनालें। एक-एक गोली प्रात: सायं शहद के साथ सेवन कराने से समस्त प्रकार के ज्वरों में लाभ हो जाता है।

● पिप्पली तथा तुलसी पत्र 50-50 ग्राम, अदरक तथा लौंग 10-10 सभी को जल के साथ खूब महीन पीसकर मटर के आकार की गोलियां बनालें और छाया में सुखाकर सुरक्षित रख लें। ज्वर के रोगी को 2-2 गोलियाँ पीसकर शहद के साथ दिन में 3 बार सेवन कराने से समस्त प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है।

● गिलोय सूखी हुई, अतीस, सौंठ, कालमेघ, नागर मोथा, पीपल, यवक्षार, कसीस, चम्पे की छाल, प्रत्येक समभाग लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 1-2 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार जल के साथ प्रयोग करने से प्रत्येक प्रकार के ज्वरों में शर्तिया लाभ होता है।

● अदरक के 6 ग्राम रस के साथ समभाग शहद मिलाकर दिन में 3-4 बार सेवन करना ज्वरों में लाभकारी है।

● सौंफ 2 तोला को कढ़ाई में कच्ची पक्की भून लें फिर एक तोला खाँड़ मिलाकर चूर्ण बनाकर उसी समय ज्वर रोगी को सेवन करवाकर गरम पानी पिलादें। और कपड़ा उढ़ाकर सुला दें। पसीना आकर ज्वर उतर जायेगा।

● जीरा सफेद 3 ग्राम को 100 मिली० उबलते जल में डालकर रख दें। उसे 15-20 मिनट बाद छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर प्रतिदिन (15-20) दिनों तक प्रात:काल पीने से ज्वरोपरान्त आने वाली कमजोरी व अग्निमांद्य नष्ट होकर भूख खुलकर लगने लगेगी।

● अजवायन 1 ग्राम को 10 ग्राम पानी में पकाकर 3-3 घन्टे के बाद 15-15 ग्राम पिलाते रहने से रोगी की बेचैनी शीघ्र ही दूर हो जाती है और मात्र 24 घन्टे के अन्दर इन्फ्लूएन्जा नष्ट हो जाता है।

ज्वर नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

क्लूरिल टेबलेट (चरक) **शमशायनी पिल्स** (झन्डू) **फीवरवेट टेबलेट** (मोहता रसायन) **ज्वरीना कैपसूल** (गर्ग बनौषधि) **ज्वरारि कैपसूल** (अतुल फार्मेसी) इत्यादि में से किसी 1 का औषधि के साथ मिले पत्रक के दिशा निर्देशानुसार एवं स्वविवेक से मात्रा (आयर्वेद का निर्धारण कर) प्रयोग करायें।

न्यूमोनियाँ

रोग परिचय—फेफड़ों में अत्यधिक सर्दी का प्रभाव हो जाने को न्यूमोनिया कहा जाता है। यह अधिकांशत: कड़ाके की सर्दी में होता है। बच्चे, बूढ़े तथा दुर्बल स्त्री पुरुष इस रोग के शिकार हो जाते हैं। पसलियों में दर्द होता है। बच्चों की पसलियां चलने लगती हैं। न्यूमोनियां में फेफड़ों में प्रदाह हो जाता है। यदि एक फेफड़े में न्यूमोनियाँ हो तो 'सिंगल या एकल' और यदि दोनों फैफड़ों में न्यूमोनियां हो तो 'डबल निमोनियाँ' कहा जाता है।

उपचार

● अलसी के बीजों को पानी में पकाकर हलुवा जैसा बनाकर गरम-गरम फलालैन के कपड़े पर फैलाकर छाती और पीठ पर बाँधने से निमोनियाँजन्य फुफ्फुस-शोथ एवं उर:क्षतजन्य उर:शोथ मिट जाता है।

नोट—इसको यदि व्रणशोथ पर बाँधने से वह 24 घन्टे के अन्दर फूट जाता है। मोटे व्रणशोथ में 2-3 दिन लग जाते हैं। किन्तु पीड़ा लगाते ही कम हो जाती है और व्रणशोथ फटकर बहने लगता है।

● बच्चों की पसली चलने पर गौमूत्र में हल्दी का चूर्ण घोलकर 3 बार छानकर दिन में 3 बार 1-1 छोटी चम्मच भर पिलाना या हल्दी और गोरोचन पान के रस में किंचित घिसकर पिलाना या मिलाकर चटाना लाभप्रद है।

● लहसुन की कलियों की माला पहनाने से बच्चों का श्वांस-कास, पसली चलना, उदरकृमि, बार-बार सर्दी होना एवं भूत-बाधा नष्ट हो जाती है।

● पीपल की दो गाँठों को अंगारों के ऊपर भून लें। फिर उन्हें बारीक पीस लें और एक चम्मच शहद में मिलाकर बच्चे को खिला दें। इसे 2-3 बार खिलाने से न्यूमोनियां रोग पूर्णत: नष्ट हो जायेगा।

● अदरक स्वरस में 1-2 वर्ष पुराना घृत एवं थोड़ा-सा कपूर मिलाकर गरम करके छाती पर लेप करने से निमोनियाँ में शीघ्र लाभ मिलता है।

● दिन भर में 4-5 बार 2-2 तोला नीबू का रस पावभर जल के साथ देने से न्युमोनिया में लाभ होता है।

● किसी मोटे कपड़े की चार तह बनाकर रोगी के सीने पर रखें। तीसरी तहपर गुनगुने पानी में हल्दी घोलकर (कपड़े की तह पर) छींटे देकर हल्का गीला कर लें और रोगी के सीने पर रखकर गरम ईंट या खुरपी तपाकर चौथी तहपर सिकाई करें। इस क्रिया से हल्दी का भपारा सीने पर पहुँचेगा। सर्दी का असर निकलने लगेगा। इसके साथ ही 1 ग्राम काली मिर्च, 5 लौंग और 1 ग्राम मीठा सोडा किसी कटोरी में जल्दी से तपाकर उबाल लें। इसे गरम-गरम घूँट-घूँट करके रोगी को पिला दें। निमोनियां में अत्यन्त लाभप्रद प्रयोग है।

● हीग को पानी में घोलकर हल्का गरम करके, पसलियों, पेट तथा हाथ-पाँव में मलने से न्यूमोनियाँ में लाभ होता है।

● केसर को पानी में घोलकर गरम करके नाक तथा कनपटी पर लगाने से आशातीत लाभ प्राप्त होता है।

● सरसों के तेल में जायफल घिसकर पसलियों पर लेप करना निमोनियां में अत्यन्त लाभप्रद है।

● अमलतास को आग में भूनें। तदुपरान्त बच्चों को इसका गूदा 4 माशा की मात्रा में लें। उसमें जरा सा सेंधा नमक मिलाकर घोल लें। उसे पिलाने से पसलियाँ चलना बन्द हो जाती हैं।

● सरसों के तेल में अफीम मिलाकर पसलियों पर लेप करना भी न्यूमोनियां में अतीव गुणकारी है।

न्यूमोनियाँ नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

कस्तूरी मित्रा टेबलेट (झन्डू) 1-2 पिल्स या आवश्यकतानुसार रोगी को प्रयोग करायें।

ह्वहीपेक्स सीरप (चरक) वयस्कों को 4-6 चम्मच बराबर जल मिलाकर दिन में 3-4 बार तथा बच्चों को आधे से 1 चम्मच दिन में 3-4 बार दें।

क्षय, राजयक्ष्मा (टी० बी०)

रोग परिचय—यह एक छूत का (संक्रामक) रोग है। जो एक से दूसरे में बहुत तेजी से हो जाता है। उचित चिकित्सा के अभाव में यह रोग मारक सिद्ध होता है। यह रोग एक कीटाणु 'वैसीलस ट्यूबर क्यूलेसिस' के द्वारा होता है।

उपचार

● प्रथम दिन 10 ग्राम की मात्रा में गौमूत्र पिलायें, 3 दिन पश्चात् 15 ग्राम कर दें। इसी क्रम से प्रत्येक 3 दिन बाद गौमूत्र की मात्रा 5-5 ग्राम बढ़ाते जायें। इस प्रकार मात्रा बढ़ाते हुए 50 ग्राम तक प्रतिदिन पिलायें। निरन्तर गौमूत्र के सेवन से क्षय (तपैदिक) नष्ट हो जाता है।

● काली मिर्च, गिलोय सत्व, छोटी इलायची के दाने, असली वंशलोचन, शुद्ध भिलावा सभी को बराबर लेकर कूटपीसकर कपड़छन चूर्ण कर लें। दिन में 3 बार 2 ग्रेन (1रत्ती) की मात्रा में यह औषधि मक्खन या मलाई में रखकर रोगी को सेवन करायें। टी० बी० का अमृत तुल्य योग है।

● सुबह-शाम गधी का दूध 100-100 ग्राम की मात्रा में क्षय के रोगी को पिलाना अत्यन्त ही लाभकर है। यह क्षय नाशक तथा पौष्टिक होता है।

नोट—तपैदिक (क्षय) सर्वप्रथम चन्द्रमा नक्षत्रों के राजा को हुआ था। किंवदन्ती है कि 27 नक्षत्र इनकी पत्नियों के रूप में थीं। किन्तु यह मात्र एक पत्नी पर विशेष लगाव रखकर रति क्रिया में लीन रहते थे। जिसके कारण 26 पत्नियों ने अपने पिता से इस हेतु शिकायत की। जिसके फल स्वरूप चन्द्रमा के ससुर (श्वसुर) ने अपने दामाद को शरीर पर फफोले (क्षय) पड़ जाने का श्राप दे दिया था। यह रोग आयुर्वेद के मतानुसार वात, पित्त, एवं कफ तीनों दोषों के कारण हो सकता है। यदि क्षय किसी रोगी को वात प्रधान होगा तो उसकी पसलियों और कन्धों में दर्द होगा और यदि क्षय पित्त प्रधान होगा तो ज्वर रहेगा, खून की उल्टियां और खूनी दस्त होंगे तथा यदि क्षय कफ प्रधान होगा तो खाँसी और बुखार का जोर रहेगा और रोग की अन्तिमावस्था में सब कुछ कफ प्रधान ही हो जाता है। क्षय रोग में बुखार तोड़ने की औषधि सेवन नहीं करना चाहिए। क्योंकि रोग का लक्षण छिपा लेने से रोग नष्ट नहीं होता है, बल्कि कालान्तर में और भी अधिक उग्र रूप धारण कर लेता है।

● सौ ग्राम हल्दी लेकर कूट पीस छानकर रख लें। इसे आक के दस ग्राम दूध में रचा लें। यदि खून की उल्टियाँ (पित्त प्रधान) आ रहीं हों तो बड़ या पीपल का दूध डालें। इसे 2-2 रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम सेवन करायें।

● छिलके रहित लहसुन 250 ग्राम, बकरी का दूध 1 कि.ग्रा. गाय का घी ढाई किलोग्राम तथा जल 10 किलोग्राम, लें। लहसुन को यवकुट करके जल में चतुर्थांश शेष रहने तक पकायें। फिर उसमें घी तथा दूध डालकर घृत सिद्ध होने तक पकायें। इस घृत को धान्य राशि (अनाज के ढेर) में 1 माह तक रखने के बाद 5 से 10 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम सेवन करायें। इस योग के सेवन करने से राजयक्ष्मा शर्तिया ही नष्ट हो जाती है।

यही नहीं, बल्कि इस घृत के प्रभाव से बन्ध्या (बाँझ औरत) नपुंसक एवं वृद्ध पुरुषों तक में अपार ताकत का संचार होकर काम-शक्ति बढ़ जाती है।

● लहसुन छिला हुआ 1 किलो यवकूट कर 500 ग्राम गाय के घी में डालकर किसी घी के ही चिकने पात्र में रखकर धान्य राशि में 1 वर्ष तक पड़ा रहने दें। तदुपरान्त इसका क्षय रोग के रोगी को सेवन कराने से क्षय रोग अवश्य ही नष्ट हो जाता है ।

● लहसुन 5 ग्राम, घृत 10 ग्राम, मधु 5 ग्राम को मिलाकर अवलेह जैसा बनाकर, ऐसी एक-एक मात्रा नित्य सुबह शाम सेवन करने (भोजन में दूध चावल लें) से क्षयरोग नष्ट हो जाता है । रोगी रोग मुक्त होकर दीर्घायु हो जाता है ।

● अस्थि क्षय (Bone T. B.) में लहसुन की चर्बी, शहद या घृत अथवा ताजा निकाले मक्खन की लौनी के साथ लेप करने से आराम आ जाता है । रोग की अवस्थानुसार प्रतिदिन 1 या 2 बार महीना डेढ़ महीना प्रयोग जारी रखें ।

● काली मिर्च 9 नग, निम्बपत्र 9 नग, दोनों को 5 लीटर पानी में उबालें। आधा जल शेष रहने पर छान लें । राजयक्ष्मा से पीड़ित रोगी को यह जल पीना परम गुणकारी है । सुबह का बनाया जल शाम तक तथा शाम का बनाया जल सुबह तक 12 घन्टे में पी लेना चाहिए ।

● चूने का निथरा हुआ पानी और बकरी का दूध मिलाकर पीने से क्षय रोग नष्ट हो जाता है ।

● क्षय रोगी के लिये बकरी का दूध, बकरी का घी, बकरी का माँस तथा बकरा व बकरियों के बीच रहना अर्थात हर प्रकार से छाग (बकरी) का सेवन यक्ष्मा नाशक है ।

यक्ष्मा नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

नोट:—बल्य व रसायन औषधियों का सेवन परम आवश्यक तथा लाभप्रद है ।

डिस्कोनिल लिक्विड (चरक) 1-2 चम्मच दिन में 3-6 बार प्रतिदिन दुगने जल से वयस्कों को दें तथा बच्चों को आधे से डेढ़ चम्मच प्रतिदिन 3 से 6 बार दो गुने जल से सेवन करायें ।

सर्टिना टेबलेट (चरक)—वयस्कों को 2-2 गोली दिन में 2-3 बार, बच्चों को 1-1 गोली दिन में 3-4 बार प्रतिदिन दूध के साथ प्रयोग करायें ।

द्राक्षोविन स्पेशल लिक्विड (धूत पापेश्वर)—1-2 चम्मच दिन 2-3 बार दें।

अंगूरासव लिक्विड (झन्डू)—10 से 30 मि० ली० दिन में 2 बार पानी के साथ भोजनोपरान्त सेवन करायें ।

बकेरी टेबलेट (झन्डू)—क्षय रोग में इसकी 4 गोली जीरा और चीनी के साथ सेवन करायें ।

राजयक्ष्मान्तक नं० 1 सेवन विधि पत्रक के अनुसार (अतुलफार्मेसी)।

कुष्ठ रोग

रोग परिचय—बैसीलसलेपों नामक कीटाणु के कारण कुष्ठ रोग (कोढ़) होता है । यह शरीर के किसी एक अंग अथवा पूरे शरीर पर भी हो सकता है। यह एक प्रबल संक्रामक (छूत) का रोग है । इसका कीटाणु सम्पर्क से एक दूसरे को तथा वंशज रूप से मिलता रहता है ।

उपचार

● काली जीरी के साथ काले तिल समभाग पीसकर 4 ग्राम की मात्रा में सुखोष्ण जल के साथ दीर्घ काल तक सेवन कराने से कुष्ठ रोग में लाभ हो जाता है ।

● आँवला तथा नीम पत्र समभाग लेकर बारीक चूर्ण कर लें । इसे 2 से 6 ग्राम अथवा 10 ग्राम तक नित्य शहद के साथ सेवन कराने से गलित कुष्ठ में लाभ हो जाता है ।

● आक की जड़ 10 ग्राम जौकुट कर 400 ग्राम जल में अष्टमांश क्वाथ कर कुछ दिनों तक निरन्तर पिलाने से गलित कुष्ठ की पूर्णावस्था (जिसमें—हाथ, पैर की अंगुलियाँ जकड़ गयीं हों, नासिका तथा मुख मन्डल सूज गया हो तथा अन्य गलित कुष्ठ के लक्षण हों) में लाभ हो जाता है ।

● आक के जड़ की छाल का चूर्ण 2 रत्ती, सौंठ का चूर्ण 2 रत्ती मिलाकर शहद के साथ प्रतिदिन कुछ दिनों तक सेवन कराने से तथा आक की जड़ की छाल सिरके में पीसकर पतला-पतला लेप करने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

● चम्पा की छाल का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन 3 बार जल के साथ सेवन करने से रक्त वृद्धि होती है तथा कीटाणु नष्ट होकर सभी प्रकार के कुष्ठ तथा अन्य चर्म विकारों में लाभ होता है ।

● कुष्ठ रोगी को प्रथम दिन 1 गिरी, दूसरे दिन 2 गिरी तथा तीसरे दिन 3 गिरी इसी क्रम से प्रतिदिन 1 गिरी बढ़ाते हुए 100 गिरी तक सेवन करायें। तत्पश्चात इसी क्रम से 1-1 गिरी घटाते हुए सेवन बन्द करवा दें तथा इस प्रयोग काल में चने के बेसन की रोटी तथा घृत का सेवन करायें एवं नमक खिलाना बिल्कुल बन्द कर दें । कुष्ठ रोगी रोगमुक्त हो जायेगा ।

● वाकुची के बीज के साथ सफेद मूसली तथा चित्रक समभाग लेकर चूर्ण

बनाकर सुरक्षित रख लें । इस चूर्ण को 3 से 6 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ. सेवन कराने से सभी प्रकार के कुष्ठ नष्ट हो जाते हैं ।

● बावची तथा तिल एकत्र मिलाकर 4-6 ग्राम प्रातकाल शीतल जल के साथ 1वर्ष तक निरन्तर सेवन करने से सभी प्रकार के कुष्ठ रोग नष्ट हो जाते है।

● मेंहदी के 65 ग्राम पत्तों को रातभर पानी में भिगोकर प्रात:काल मल छानकर पीने से 40 दिनों में कुष्ठ रोग में लाभ होता है ।

● काली हरड़ 40 ग्राम, काली मिर्च 20 ग्राम, शुद्ध बच्छनाग 10 ग्राम, सभी को कूट पीसकर गाय के घी में भून लें । फिर दवा के वजन से दुगुना शहद मिलाकर माजून बना लें । इसे 3 से 6 ग्राम की मात्रा में कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन कराने से कुष्ठ में लाभ हो जाता है ।

● चालमौगरा का तेल 5 बूँद, काडलिवर आयल 30 बूँद, गौंद का पानी 4 ग्राम तथा स्वच्छ जल 25 ग्राम (1मात्रा) बनाकर दिन भर में ऐसी 3 मात्रा सेवन कराने से कुछ दिनों में ही कुष्ठ रोग में लाभ हो जाता है ।

● बालकों को होने वाला मन्डल कुष्ठ जिसमें मृदु गाँठें उत्पन्न हो जाती है। ऐसे नये रोगों में कूठ के साथ धनिये को पीसकर दिन में दो तीन बार लेप करते रहने से लाभ होता है ।

● रोज कनेर के पत्तों को उबालकर स्नान करने तथा शक्ति अनुसार इस जल का उपयोग करने (पीने से) 3-4 मास में कुष्ठ में लाभ हो जाता है ।

● करन्ज, नीम तथा खदिर के पत्तों को गौमूत्र में पीसकर लेप करने से तथा पत्तों को जल में उबालकर स्नान कराने से कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है ।

● इलायची, कूट, वायविडंग, शतावर, चीता, दंती तथा रसौत को पीसकर लेप करना कुष्ठ रोग में अतीव लाभकारी है ।

● चाल मौगरा का तेल 4 ग्राम को सादा वैसलीन 25 ग्राम में फेंटकर कुष्ठ के घावों पर लगाने से अत्यन्त लाभ होता है ।

● उपचार प्रारम्भ करते समय प्रारम्भ में 6-7 दिनों तक स्वमूत्र से कुष्ठ रोगी सम्पूर्ण शरीर में मालिश करें । तत्पश्चात् 3-4 दिन उपवास करें । किन्तु उपवास की अवधि में जल के साथ-साथ दिन-रात का स्वमूत्र भी पीता रहे । इस प्रकार एक महीना के बाद पुन: उपवास, मालिश तथा स्वमूत्र-पान क्रमश: प्रयोग में लाने से 5-6 महीनों में रोगी की अवस्थानुसार वर्षों तक प्रयोग करना पड़ सकता है। लाभ 10-15 दिनों में ही दृष्टि गोचर हो जाता है ।

कुष्ठ रोग नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

रक्त शोधक वटी (वैद्यनाथ)—1-2 गोली सुबह शाम जल से सेवन करायें। खाज, खुजली, पामा सभी में लाभदायक है । लम्बे समय तक प्रयोग करायें ।

चर्म रोगान्तक कैप्सूल–(गर्ग बनौषधि)—सेवन विधि उपर्युक्त कुष्ठ तथा अन्य चर्म विकारों में लाभप्रद है ।

चर्म क्लीन कैप्सूल–(अतुल फार्मेसी, धन्वन्तरि कार्यालय विजय गढ़ (अलीगढ़) उ०प्र०—1-1 कैपसूल जल से दें । सभी प्रकार के कुष्ठ खाज खुजली तथा चकत्ते आदि रक्त विकारों में शीघ्र लाभप्रद है ।

रक्त शोधन कैप्सूल (ज्वाला आयुर्वेद)—1-1 कैप्सूल दिन में 3 बार कुष्ठ तथा अन्य चर्म-विकारों में लाभप्रद है ।

कृमि (उदर कृमि)

रोग परिचय—कृमि रोग सभी वर्ग व अवस्था (स्त्री पुरुष, वृद्ध व युवा और बच्चों को) में होता है । यह कीड़े (कृमि) आमतौर पर आँतों में निवास करते हैं । इसलिए इन्हें अन्त्र-कृमि भी कहा जाता है ।

उपचार

● अजवायन चूर्ण 4 रत्ती में समभाग काला नमक मिलाकर रात्रि के समय प्रतिदिन गरम जल से देने से बालकों के कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

● प्रात:काल 5 या 10 ग्राम गुड़ खाकर थोड़े समय बाद खुरासानी अजवायन का चूर्ण 1 से 4 रत्ती की मात्रा में बासी पानी से सेवन करने से आन्त्रगत विभिन्न प्रकार के कृमि शीघ्र बाहर निकल जाते हैं ।

● अजवायन किरमानी के बीजों का चूर्ण लगभग 10 ग्राम तथा सौंठ का चूर्ण 3 ग्राम दोनों को एकत्र कर चाय के साथ खाने और ऊपर से एरन्ड का तेल पिलाने से उदर के कृमि मरकर बाहर निकल जाते हैं ।

● उदर-कृमियों के कारण ज्वर, पाण्डु, खाँसी तथा वमन हो तो अतीस और वायविडंग का समान भाग चूर्ण 1-2 रत्ती की मात्रा में दूध के साथ सेवन करने पर कृमि मरकर बाहर निकल जाते है तथा उनके लक्षण दूर हो जाते हैं।

● कच्चे आम की गुठली का चूर्ण 2-4 रत्ती की मात्रा में दही या जल के के साथ सुबह-शाम सेवन करने से सूत जैसे कृमि निकल जाते हैं ।

● छोटे-छोटे बच्चों को 1-2 रत्ती की मात्रा में कपूर गुड़ में मिलाकर खिलाने से कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● आड़ू के पत्तों का रस 50 ग्राम लें। उसमें थोड़ी सी हींग मिलाकर पिलाने तथा आड़ू के पत्तों को पीसकर लेप करने से उदर कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● कबीला 3 से 6 ग्राम की मात्रा में गुड़ के साथ खिलाने से (बच्चों को 1 से 4 रत्ती की मात्रा में माँ के दूध के साथ दें) कृमि मल के साथ निकल जाते हैं।

● गोरखमुन्डी के चूर्ण को 1 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम सेवन कराने से सभी प्रकार के कृमि नष्ट हो जाते हैं। बाहरी कृमियों के नाशार्थ इसकी धूनी दी जाती है।

● नीम रस 50 ग्राम में 2 रत्ती भुनी हींग मिलाकर सुबह-शाम पिलाने से सूक्ष्म कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● बालकों को उदर में गोल कृमि होने पर पान का रस शक्कर मिलाकर पिलाने से कृमि मरकर बाहर निकल जाते हैं।

● प्याज का रस बालकों को पिलाने से अनेक कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● लहसुन तथा गुड़ को सममात्रा में मिलाकर गोली बनालें। बच्चों को 3 ग्राम व युवाओं को 10 ग्राम की गोली सुबह खाली पेट 3 दिन खिलाने से उदर-कृमि नष्ट होकर निकल जाते हैं।

● पलाश के बीज, सोमराजी बीज, छोटी हरड़, बायविडंग, कुटकी, ब्रह्मदन्डी (प्रत्येक 10-10 ग्राम) कवीला, शुद्ध कुचला 6-6 ग्राम तथा सनाय 20 ग्राम लें। सभी को कूट-पीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रख लें। इसे 1-1 ग्राम की मात्रा में गरम जल के साथ सेवन कराने से सभी प्रकार के उदर-कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● नारंगी के सूखे छिलके और बायविडंग दोनों समभाग लेकर कूटपीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में गरम जल से सेवन करने से उदर कृमि मर जाते हैं।

नोट:—पहले 2-3 दिन उक्त चूर्ण सेवन करायें। तदुपरान्त एरन्ड तेल पिलायें ताकि मरे हुए कीड़े दस्तों द्वारा बाहर निकल जायें।

उदर कृमि नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

वोर्मेनिल कैपसूल (अतुल फार्मेसी)—वयस्को को 2-2 कैपसूल तथा बच्चों को 1-1 कैपसूल जल से दें। सभी प्रकार के कृमि नाशक उत्तम औषधि है।

कृमिघ्न कैपसूल (गर्ग बनौषधि)—वयस्कों को 2-2 कैपसूल तथा बच्चों को 1 से 1½ कैपसूल पानी में घोलकर दें। सभी प्रकार के उदर कृमि नाशक कैपसूल है।

कृमि घातिनी कैपसूल (ज्वाला आयुर्वेद)—मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

कृमिनल सीरप (चरकफार्मेस्यूटिकल्स)—स्वादिस्ट सीरप है जो व्यापक असरकारक तथा कृमिनाशक है। यह आँतों में पाये जाने वाले कृमियों को निकालकर कृमियों से होने वाले रोगों को दूर करता है। ज्वर, वायुविकार, दस्त, ऐंठन, पित्ती एवं दमा आदि में अत्यन्त गुणकारी है। मात्रा 2-3 चम्मच (10-15) मिली० वयस्कों तथा बच्चों को इसकी आधी मात्रा सेवन करायें।

पिपराजीन सीरप (डाबर) कृमिहर सीरप (वैद्यनाथ) कृमिहन टेबलेट (डाबर) उदर कृमि टेबलेट मेहता (सायनसाला) आदि में से किसी एक का पत्रक को देखकर रोगी की आयु व बल के अनुसार औषधि सेवन करायें।

गर्भस्राव एवं गर्भपात

रोग परिचय—नियत समय से पहले यदि गर्भाशय से बच्चा निकल जाये तो इसे गर्भपात कहते हैं। इसको साधारण बोलचाल में हमल गिरजाना, गर्भ गिरना, कच्चा पड़ना कहा जाता है। इसी को गर्भस्राव भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे (Abortion) एबोंशन कहते हैं।

उपचार—महर्षि चरक जिन्हें आयुर्वेद का संस्थापक कहा जाता है। एक योग 'कल्याण घृत' की चरक संहिता में बहुत ही प्रशंसा की है। सर्व प्रथम हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वही योग यहाँ लिख रहे हैं। यह योग विशेषकर उन गर्भवती स्त्रियों के लिए रामबाण साबित हुआ है, जिनको बार-बार गर्भपात हो जाता है। इसके अतिरिक्त यह औषधि रुग्णा के शरीर में नवीन शक्ति उत्पन्न करती है। मष्तिष्क की कमजोरी में भी विशेष लाभकर है। मिर्गी, पागलपन, हिस्टीरिया के कारण आवाज बैठ जाना (Aphonia) शरीर व मष्तिष्क का पोषण कर वृद्धा को जवान बनाती है।

● हरड़, बहेडा, आँवला, इन्द्रवारूणी, रेनुका, शालपर्णी, सारिबा, दारबी, तगर, उत्पला, इलायची, मजीठ, दन्ती, नागकेशर, अनार, तालीसपत्र, बायविडंग, कूठ, पृष्ठपर्णी, चन्दन, पदमाख, सभी औषधियों को समभाग लेकर कूट पीसकर 1 सेर लुग्दी बना लें। शुद्ध घी 4 सेर, पानी 8 सेर, दवाओं को घी तथा पानी

में मिलाकर बहुत ही धीमी आग पर पकायें। जब सिर्फ घी रह जाये तो छानकर सुरक्षित रख लें। इस ''कल्याण घृत'' को 1 छोटे चम्मच से लेकर 4 चम्मच तक दिन में 2 बार दूध के साथ पिलायें। खटाई, लाल मिर्च एवं चटपटे तथा मसालेदार भोजनों एवं पदार्थों से पूर्णत: परहेज रखें।

● यदि स्त्री को गर्भ स्थिति होते ही उसके गिर जाने की व्याधि लग जाये तो इसे हर माह केले के रस में शहद मिलाकर पिलाते रहने से गर्भस्राव नहीं होने पाता है।

● केले के कान्ड के भीतर के श्वेत गूदे का स्वरस 40 से 50 ग्राम में उत्तम शहद 20 ग्राम मिलाकर दिन भर में ऐसी 2-3 मात्रायें रोगिणी को पिलायें तथा उक्त स्वरस में 10 ग्राम फिटकरी महीन पीसकर घोल दें, फिर शीशे या मिट्टी के किसी साफ स्वच्छ पात्र में रख लें। इस घोल में स्वच्छ रुई डुबोकर जिस प्रकार स्त्रियाँ माहवारी के समय कपड़ा लेती हैं, उसी तरह योनि में दिन भर में 2-3 बार रखें। दूध भात का प्रयोग काल में सेवन करायें, तो बार-बार होने वाले गर्भपात का भय नहीं रहता है।

● जब गर्भवती को रक्तस्राव होने लगे तो हरी श्वेत दूब का 5 ग्राम स्वरस में स्वर्णमाक्षिक भस्म तथा मुक्ताशुक्ति भस्म 1-1 रत्ती मिलाकर 2-3 बार देने से गर्भपात नहीं होने पाता है।

● गर्भाधान होने के पश्चात् खरैटी या बबूल के पत्ते 25 ग्राम लेकर उनका क्वाथ (काढा) कर लें और उसमें मिश्री मिलाकर नित्य प्रात:काल सात दिन तक सेवन करनें से गर्भस्राव व गर्भपात का भय नहीं रहता है।

● कुम्हार बरतन बनाता हुआ जो हाथ पोंछता जाता है, उस मिट्टी को शहद या बकरी के दूध के साथ मिलाकर पिलाने से गिरता हुआ गर्भ निश्चित ही रुक जाता है।

● योनि के मुख में बर्फ का टुकड़ा रखने से भी गर्भाशिय संकुचित होकर गर्भपात में लाभ होता है।

● समुद्र सोख को कूटपीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रख लें। इसे 6 ग्राम की मात्रा में शीतल जल से सेवन कराने से गर्भपात में लाभ हो जाता है। अनेक अंग्रेजी औषधियों के निष्फल होने पर भी यह परम लाभकारी योग है।

● मुलहठी का बारीक चूर्ण कर सुरक्षित रख लें। इसे निरोगी स्वस्थ गाय जिसका बछड़ा जीवित हो, के 250 दुग्ध में इतना ही जल मिलाकर 3 ग्राम मुलहटी

चूर्ण मिलाकर मन्दाग्नि पर गरम करें और जब दुग्ध मात्र शेष रह जाये तब शीतल होने पर बिना मिश्री मिलाये रोगिणी को (ऐसी खुराक नित्य) सुबह शाम निरन्तर गर्भ स्थिति से 9 वे मास तक सेवन कराने से गर्भपात का भय नहीं रहता है तथा प्रसव सुखपूर्वक सम्पन्न हो जाता है।

● नाग केशर 50 ग्राम, असली वंसलोचन 50 ग्राम, छोटी इलाइची के दाने 25 ग्राम, असली केशर 6 ग्राम, मिश्री कूँजा 150 ग्राम लें। मिश्री को छोड़कर सभी औषधियों को गुलाब जल में सुरमे की भाँति खरल करें। सूख जाने पर मिश्री मिलाकर शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें। इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में गौ दुग्ध के साथ (ऐसी गाय—जिसका बछड़ा न मरा हो तो अधिक उत्तम है) सेवन करायें। गर्भस्राव (गर्भपात) अकाल गर्भपात का भय समाप्त हो जायेगा।

● गर्भपाल रस (शास्त्रीय आयुर्वेद औषधि) 1 रत्ती से 2 रत्ती तक मधु 125 से 250 मि०ग्रा० से चटाकर ऊपर से दूध पिलाने से (गर्भावस्था के प्रारम्भ से ही) गर्भपात रोकने हेतु अचूक योग है।

● गूलर की छाल 12 ग्राम को 250 मि.ली. जल में मिलाकर काढ़ा बनायें। जब जल 30 मि०ली० शेष बचे तब छानकर गर्भिणी को प्रात:काल पिलाने से गर्भपात रुक जाता है।

● जवासा सारिवा, पदमाख, रास्ना, मुलहठी, कमल के फूल प्रत्येक 2-2 ग्राम लेकर एक साथ गाय के दूध में पीसकर सुबह शाम पिलाने से गर्भपात के समस्त लक्षण नष्ट होकर गर्भ गिरने से रुक जाता है।

● गर्भावस्था के तीसरे मास में शर्करा और नाग केशर प्रत्येक 3-3 ग्राम को दूध के साथ पीसकर पिलाने से अत्यधिक अन्त:स्रावी ग्रन्थियों का स्राव होकर हारमोन की पूर्ति हो जाती है।

● पीपल वृक्ष की छाल का चूर्ण 3 से 6 ग्राम तक ठण्डे जल से पिलाने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

● सफेद राल का चूर्ण और सोना गेरू सममात्रा में लेकर मिश्री मिलाकर कच्चे दूध के साथ पिलाने से रक्तस्राव बन्द होकर गर्भपात होना रुक जाता है तथा गर्भ पुष्ट हो जाता है।

● सहस्र अथवा सौ बार का धोये हुए गाय के घी को गर्भवती के पेडू पर मालिश करने से गर्भपात होना रुक जाता है। किन्तु गर्भवती को पूर्ण विश्राम दें। चारपाई का पायताना (पैर की ओर के पायें) के नीचे 1-1 ईंट रखकर पैर ऊँचे और सिर नीचा करके आराम से लिटायें।

● शिवलिंगी के बीज 5 या 7 अथवा 11 दाने लेकर गर्भवती को प्रतिदिन गो-दुग्ध से निगलवा दें । गर्भस्राव रुक जायेगा ।

नोटः—यदि गर्भवती का खून अत्यधिक बहुत अधिक बहने लग गया हो और दर्द भी बहुत बढ़ जाये एवं गर्भाशय का मुख भी अधिक खुल चुका हो और यह डर हो कि अब गर्भ रहना सम्भव नहीं है अथवा गर्भ का कुछ भाग लोथड़ों के रूप में निकल चुका हो तो ऐसी परिस्थिति में गर्भ निकालने की दवायें प्रयोग की जाती हैं और यही प्रयत्न किया जाता है कि गर्भ शीघ्र से शीघ्र और आसानी से निकल जाये ताकि स्त्री को कम से कम कष्ट हो । गर्भ निकल चुकने के बाद आँवल और झिल्ली का निकालने के लिए 2-4 दिन तक मासिक धर्म लाने वाली निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करायें, ताकि गर्भाशय की पूर्णरूपेण सफाई हो जाये ।

● **योग**—कपास की जड़ 12 ग्राम, गाजर के बीज, खरबूजे के बीज 6-6 ग्राम, पुराना गुड़ 24 ग्राम, सभी को 120 मि०ली० पानी में उबालें । जब पानी आधा रह जाये तब मल छानकर पिलायें । यह क्वाथ कई बार पिलाते रहने से गर्भ-आँवल और अन्य तमाम दूषित पदार्थ निकल जाते हैं और गर्भाशय की पूर्ण रूपेण सफाई हो जाती है ।

नोटः—(यदि दूषित पदार्थ रोगिणी के गर्भाशय में रुक जाये तो संक्रामक (इन्फैक्शन) होकर, कई प्रकार के रोग हो सकते हैं और मृत्यु तक हो सकती है ।)

● काले तिल 25 ग्राम, पुराना गुड़ 9 ग्राम, शुद्ध हींग 4 ग्राम, तिलों को कूटकर आधा किलो पानी में औटायें जब चौथाई रह जाये तब उतारकर कर छान लें । इसमें गुड़ और हींग मिलाकर मासिकधर्म (माहवारी) के पहले और दूसरे दिन भी दे सकते हैं किन्तु चौथे दिन न दें । इसके प्रयोग से गर्भाशय की शुद्धि हो जाती है ।

गर्भस्राव एवं गर्भपात नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

बावली घास घनसत्व (अतुल फार्मेसी)—1-1 ग्राम दिन में 3 बार ताजा पानी से दें । कैपसूलों के रूप में प्राप्य हैं । रक्त बन्द करने की अद्‌भुत औषधि है । रक्त चाहे शरीर में कहीं से (बवासीर, नक्सीर तथा रक्त प्रदर इत्यादि) गिरता है । अवश्य लाभ होता है ।

लेप्टाडिन टेबलेट (अलारसिन)—6 दिनों तक प्रतिदिन 3 बार 2-2 टिकिया तदुपरान्त 2-3 सप्ताह तक 2-2 टिकिया दिन में 2 बार दें । बार-बार होने वाले गर्भपातों तथा तत्सम्बन्धित विकृतियों में अत्यन्त लाभकारी है । यह गर्भधारण हेतु भी अनुकूल परिस्थितियों को स्वाभाविक अवस्था में लाती है । गर्भावस्था को स्थिर

रखती हुई निरापद प्रसव काल तक पहुँचाती है तथा इसके सेवन से पूर्ण मासिक (पूर्ण समय में) एवं जीवित तो उत्पन्न होता ही है ।

ल्यूकोरिन टेबलेट (मार्तन्ड)—1-2 टिकिया गर्भस्राव के लक्षण प्रारम्भ होते ही प्रत्येक 4-4 घन्टे पर सेवन करायें ।

कामिनी कार्डियल (मार्तम्ड)—1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार दें । बार-बार होने वाली गर्भस्राव में उपयोगी है ।

अमृत रसायन (त्रिमूर्ति फार्मेसी)—2 से 5 ग्राम तक दिन में 2 बार दूध से दें । यह अवलेह रूप में प्राप्य है । गर्भावस्था में प्रारम्भ से ही प्रयोग कराने से बालक पूर्ण दिनों (270 से 280 दिनों) में स्वस्थ उत्पन्न होता है ।

गृध्रसी

रोग परिचय—कमर से लेकर पैर तक बाहर और पीछे की ओर चलने फिरने या झुकने में दर्द होता है । यह दर्द प्रायः एक ही ओर होता है किन्तु कभी-कभी दोनों ओर भी हो सकता है । दर्द के कारण रोगी गधे की भाँति पैर घसीटकर (बेचैन होकर) चलता है, इसी कारण इस रोग का नाम गृध्रसी पड़ा है । अंग्रेजी में इसे (Sciatica) कहते हैं । रोग के अधिक बढ़ जाने पर बैठने और आराम करने की स्थिति में भी दर्द होता है ।

उपचार

● अकरकरा के महीन चूर्ण को अखरोट के तेल में मिलाकर मालिश करने से गृधसी के दर्द में लाभ होता है ।

● अडूसा, जमालगोटे की जड़, अमलताश का गूदा, (प्रत्येक 10-10 ग्राम) को आधा किलो जल में औटावें । जब पानी 125 ग्राम शेष बचे, तब इसे उतार छानकर 10 ग्राम अण्डी का तेल (कैस्टर आयल) मिलाकर 15 दिनों तक निरन्तर सेवन करने से गृधसी में अवश्य लाभ हो जाता है ।

● लहसुन 10 ग्राम, शुद्ध गुगल 50 ग्राम दोनों को खूब पीस लें । फिर जंगली बेर के आकार की गोलियाँ बना लें । इन गोलियों को प्रतिदिन सुबह शाम 1-1 गोली सेवन कराने से गृधसी में लाभ हो जाता है ।

● सुरन्जान मीठा, मुसब्बर तथा बड़ी हरड़ का छिलका 1-1 ग्राम लेकर पानी में मिलाकर मटर के आकार की गोलियाँ बना लें । 1-1 गोली सुबह

शाम अथवा रात्रि को 4 गोली गरम जल से सेवन करने से गृध्रसी में लाभ हो जाता है ।

● शैफालिका (हार सिंगार) के 1 किलो पत्ते लेकर 1 किलो पानी में औटावें। जब पानी 1 तिहाई जल जाये तब उतारकर रस निचोड़कर बोतल में सुरक्षित रख लें । इस क्वाथ को 20-20 ग्राम की मात्रा में दिन में 2-3 बार रोगी को पिलायें। जब काढ़ा समाप्त हो जाये तब दुबारा बना लें । इसके नित्यप्रति कुछ दिनों के सेवन से गृध्रसी (सायटिका) का दर्द ठीक हो जाता है ।

● अर्कमूल ताजी, अदरक, कालीमिर्च, (प्रत्येक सममात्रा में) लेकर गुलाब जल व केवड़ा जल के समान मिश्रण के साथ सेवन करायें । इस प्रयोग से गृध्रसी के दर्द के कारण उठने बैठने में लाचार रोगी भी 2 दिन के सेवन से ठीक हो जाता है । अनेकों बार का परीक्षित योग है ।

● कनक (धतूरा) के ताजा पत्ते ढ़ाई किलो, खाने वाली तम्बाकू 250 ग्राम लें । कनक पत्र (धतूरा पत्र) को कूटकर उसका 2 किलो स्वरस निकाल लें तथा खाने वाली (तीव्र) तेज असर तम्बाकू को 2 किलो पानी में भिगो दें । 1 रात भीगने के बाद मसलकर छान लें । फिर तिल का तेल 1 किलो डालकर इसको मन्द-मन्द आग पर पाक करें । जब पानी सब जल जाये और तेल मात्र शेष रह जाये, तब छानकर किसी साफ स्वच्छ बोतल में सुरक्षित रख लें । इस तेल का गृध्रसी नाड़ी के स्थान पर मालिश करने से गृध्रसी का दर्द शान्त हो जाता है ।

● सुरंजान मीठी, नागौरी असगन्ध तथा सौंफ प्रत्येक 30-30 ग्राम, काला जीरा, सौंठ, सनाय, शुष्क पोदीना प्रत्येक 10-10 ग्राम, काली मिर्च 6 ग्राम तथा रूमी मस्तंगी असली 10 ग्राम लें । पहले रूमी मस्तंगी को कूटकर अलग रख लें फिर शेष औषधियों को कूटकर मिलाकर कपड़छन कर (चूर्ण बनाकर) सुरक्षित रख लें । इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार दूध से सेवन करायें। गृध्रसी को निर्मूल करने हेतु अद्वितीय योग है । निरन्तर 40 दिन प्रयोग करायें। यह योग शत प्रतिशत सफल सिद्ध हुआ है ।

● पुराना गुड़ (2-3 वर्ष पुराना) 20 ग्राम, सूखे आँवले का यवकुट चूर्ण 20 ग्राम आधा किलो पानी में मन्दाग्नि पर क्वाथ करें । जब पानी चौथाई (125 ग्राम) शेष रह जाये तब प्रातःकाल तथा इसी प्रकार बनाकर सायंकाल को पिलावें। 6 से 11 दिनों के सेवन से गृध्रसी में लाभ हो जाता है । मूँग, चनेदाल, तोरई आदि को बिना नमक (नमक रहित) सेवन करायें ।

● दशमूल क्वाथ 10 ग्राम, पीपरामूल तथा अजवायन 3-3 ग्राम, आधा किलो पानी में विधिवत् क्वाथ (काढ़ा) करें । चौथाई जल रह जाने पर गरम-गरम क्वाथ में 10 ग्राम गौघृत डालें और प्रातः 6 बजे तथा इसी प्रकार बनाकर रात्रि को सोते समय सेवन करायें । यह क्वाथ सूतिका रोग, प्रसूति अवस्था के समय उत्पन्न हुई गृध्रसी में विशेष लाभ करता है । परीक्षित योग है ।

● आंवा हल्दी, मैदा लकड़ी दोनों 6-6 ग्राम, उत्तम गौघृत 12 ग्राम (उपलब्ध न होने पर भैस का घी ले लें) तथा मिश्री 12 ग्राम, सभी वस्तुओं को 250 ग्राम जल में डालकर उबालें । जब पानी जल जाये और दूध की मात्रा शेष रह जाये तब उतार कर छानकर गुनगुना-गुनगुना ही रोगी को पिला दें । तदुपरान्त रोगी को कपड़ा उढ़ाकर सुला दें । पसीना आयेगा, उसे कपड़े के भीतर ही भीतर पौंछते रहें । (हवा न लगने दें) दिन में 3 बार सेवन करायें । खाने को कुछ भी न दें। (यही औषध पर्याप्त है) 3 दिन में पूर्ण आराम आ जायेगा ।

● अरण्डी की मिंगी को दूध में पीसकर पिलाने से गृध्रसी और कटिशूल नष्ट हो जाता है ।

गृध्रसी नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

आर कम्पाउन्ड टेबलेट (अलारसिन)—पुराने रोगियों को 2-2 गोली दिन में 3-4 बार दें तथा आवश्यक सुधार आ जाने पर 1-2 गोली दिन में 2 बार जल या दूध से दें । परिणामों की स्थिति हेतु 1 से 6 मांस तक 2-2 टिकिया दिन में 2 बार सेवन करायें ।

रीमानील टिकिया तथा लिनीमेन्ट (चरक)—यह टिकिया वात रोग तथा सूजन की प्रभावकारी औषधि है । गठिया, वात रोग, नाड़ी शोथ, तन्त्रिका शूल, कटिशूल, जोड़ों की हड्डी में सूजन, सूत्रण रोग, कमर में सूल, मोच व टखने में दर्द आदि में अंत्यन्त प्रभावकारी है । वयस्कों को 2 टिकिया दिन में 3 बार बच्चों को 1 टिकिया दिन में 3 बार रीमानील टिकिया की ही रीमानिल लिनिमेन्ट भी उपयोगी है । गोली व लिनीमेन्ट का प्रयोग साथ-साथ करायें ।

रूमालिया टेबलेट (हिमालय)—1-2 गोली दिन में 2-3 बार दें । औषधि का प्रयोग तब तक निरन्तर जारी रखें, जब तक कि शोथ का पूर्ण रूपेण निराकरण नहीं हो जाये । सामान्यतः 2 सप्ताह में लाभ हो जाता है । फिर भी कुछ रोगियों को 4-6 सप्ताह लग जाते हैं । अन्य वात रोगों में भी लाभकारी है । इसी नाम

से बाह्य प्रयोग (मालिश) हेतु इसका मलहम भी आता है। टेबलेट तथा महलम का साथ-साथ प्रयोग अधिक प्रभावकारी होता है।

अन्य योग—रूमालिन टेबलेट (मोहता रसायन), रैमीटान (गैम्बर्स लैबोरेट्रीज), वातान्तक कैप्सूल (गर्ग बनौषधि), वात रोग हर कैप्सूल (ज्वाला आयुर्वेद), भामोस्ट्राइल कैप्सूल (धूत पापेश्वर), वातारि कैप्सूल (पंकज फार्मा), वात कन्टक कैप्सूल (जी० ए० मिश्रा) वातरोगादि कैप्सूल (निर्मल आयुर्वेद), रास्नाधन सत्ववटी (गर्ग बनौषधि), वातनौल मलहम (गर्ग बनौषधि), वातौना मलहम (ज्वाला आयुर्वेद भवन), वातकिल कैप्सूल (अतुल फार्मेसी), वातकिल मलहम (अतुल फार्मेसी) रास्ना घनसत्व (अतुल फार्मेसी) इत्यादि में से किसी प्राप्त औषधि का चुनाव कर पत्रक के दिशानुसार वल व अनुसार एवं विवेक से प्रयोग करें।

दन्त-शूल (दाँतों का दर्द)

रोग परिचय—(दन्तशूल)—नियमित दाँत साफ न करने, दांतों में भोजन के कण फँस जाने, कोई कड़ी बस्तु खाने चबाने, खट्टी, चटपटी वस्तुयें खाने-चबाने इत्यादि के कारणों से दाँतों में दर्द (दन्तशूल) होता है।

पायोरिया—यह एक प्रकार से मसूढ़ों में होने वाली शोथ (सूजन) और प्रदाह है, जिसकी बजह से मसूढ़ों से रक्त और पीव आने लगता है। दाँतों की नियमित सफाई न करने से यह रोग भोगना पड़ता है।

उपचार

● दाँतों में कृमि लगकर यदि मसूढ़े खोखले हो गये हों तो उन छेदों में अकरकरा का महीन चूर्ण भर देने से कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● दन्त-कृमिजन्य पीड़ा को तत्काल दूर करने हेतु अकरकरा का महीन चूर्ण, नौसादर तथा अफीम सभी 1-1 रत्ती तथा कपूर आधा रत्ती मिलाकर दाँत के खोखले स्थान में भरना अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● अकरकरा के चूर्ण को सिरके के साथ पकायें (जब यह खमीर जैसा हो जाये तो) कीड़े खाये दाँतों के ऊपर रखने से सब कीड़े झड़कर गिर जाते हैं।

● अजमोद को जलाकर दन्तपीड़ा वाले स्थान पर धूनी देने से या इसके महीन चूर्ण से मन्जन करने से दाँतों के दर्द में तत्काल लाभ मिलता है।

● दाढ़ या दाँत में दर्द होने पर पके हुए अनन्नास (फल) का रस दर्द युक्त

स्थान पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है। शिशुओं को दाँत निकलते समय जो पीड़ा होती है, वह भी अनन्नास (पके हुए फल) के रस को धीरे-धीरे मसूढ़ों पर मलने से दूर हो जाती है तथा दाँत आसानी से निकल आते हैं।

● दाँतों में टीस होती हो, मसूढ़ों से रक्तस्राव होता हो, दाँत हिलते हों अथवा उनमें दुर्गन्ध आती हो (पायरिया की प्रारम्भिक अवस्था हो) तो अपामार्ग की ताजी-मोटी लकड़ी या जड़ से दाँतुन करने से थोड़े ही दिनों में उक्त सभी विकार नष्ट हो जाते हैं। नियमित रूप से प्रयोग करें।

● आम के पत्तों को जलाकर उसकी राख कपड़छन कर सुरक्षित रख लें या आम की गुठली की गिरी का महीन कपड़छन चूर्ण करके सुरक्षित रखें। इनमें से किसी एक को दाँतों तथा मसूढ़ों पर मलने से दाँत दृढ मजबूत होते हैं तथा दन्तपूय (पायरिया) आदि विकार भी नष्ट हो जाते हैं।

● जायफल के तेल का फाहा दाँत या दाढ़ के कोटर (खाली स्थान) में रखने से कीटाणु व अन्य विकार नष्ट हो जाते हैं।

● ज्वार के दानों को जलाकर इसकी राख से मन्जन करने से दाँतों का हिलना, दन्तपीड़ा एवं मसूढ़ों की सूजन में लाभ होता है।

● झावुक (झाऊ) के चूर्ण का मन्जन करने से दन्त-पीड़ा व मसूढ़ों की शिथिलता में विशेष लाभ होता है।

● तम्बाकू (सुरती) तथा काली मिर्च 10-10 ग्राम तथा सांभर नमक 2 ग्राम, एकत्र महीन पीसकर दाँतों पर 2-3 बार मलने से (मन्जन करने से) दाँतों का दर्द एवं मसूढ़ों की सूजन इत्यादि दूर हो जाती है।

● तम्बाकू के सूखे फूल बीज रहित, कपूर, काली मिर्च, चूल्हे की जली हुई लाल मिट्टी (सभी सममात्रा में) लेकर चूर्ण कर लें। इसे दाढ़ या मसूढ़ों पर मलते ही दर्द ठीक हो जाता है।

● प्रतिदिन दाँतों तथा मसूढ़ों पर नीबू का रस या नीबू की फाँक को धीरे-धीरे मर्दन करते रहने से स्कर्वी, पायरिया, दन्त-कृमि एवं मसूढ़ों की सूजन इत्यादि में लाभ होता है।

● नीम की पतली कोमल शाखा की प्रतिदिन दाँतुन करने से दन्तविकार नष्ट हो जाते हैं। दाँतों में कीड़े नहीं लगते। दातुन को अधिक देर तक मुख में नहीं रखना चाहिए तथा बाद में जल से खूब भली प्रकार कुल्ला कर लेना चाहिए।

● बबूल की छाल 10 ग्राम, नौसादर, कालीमिर्च, अकरकरा एवं गेरू सभी

3-3 ग्राम एकत्र महीन पीसकर नित्य मंजन करने से मसूढ़ों एवं दाँतों के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● बरगद की छाल के साथ कत्था और काली मिर्च इन तीनों का खूब बारीक चूर्ण बनाकर प्रतिदिन मंजन करते रहने से दाँतों का हिलना, मैल व दुर्गन्ध नष्ट होकर दाँत स्वच्छ एवं श्वेत चमकदार हो जाते हैं ।

● दाढ़ के दर्द में बरगद का दूध लगाना अत्यन्त लाभप्रद है । दाँतों से दुर्गन्ध आती हो, उसमें गड्ढे पड़ गये हों या कृमि हों तो बरगद के दूध में एक रूई की फुरेरी को भिगोकर छिद्र में रख देने से दुर्गन्ध दूर होकर दाँत ठीक हो जाते हैं एवं दन्त-कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

● बंशलोचन, छोटी इलायची के बीज, रूमी मस्तंगी (सभी सम मात्रा में लेकर) महीन पीसकर सुरक्षित रख लें । इससे नित्य सुबह शाम मन्जन करने से दाँतों का मैल एवं दंत विकार दूर होकर दाँत मोती के सदृश चमकने लगते हैं।

● बादाम के छिलकों को 1 भाग कोयले के साथ आधा-आधा भाग काली मिर्च एवं सेंधा नमक मिलाकर खूब कूट पीसकर व छानकर सुरक्षित रख लें । इसका सुबह-शाम मंजन करने से मसूढ़ों से रक्त स्राव एवं दाँतों का हिलना इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● रोगी की जिस दाढ़ या दाँत में दर्द हो उसके विपरीत कान के अन्दर पीले भाँगरे के स्वरस की 2-4 बूँदें टपका देने से दाँत का दर्द ठीक हो जाता है।

● मसूढ़े शिथिल होकर दाँत हिलते हों तो माजूफल, कपूर, सफेद कत्था फूली हुई फिटकरी का चूर्ण 1-1 भाग तथा सेलखड़ी का चूर्ण 12 भाग मिलाकर नित्य मंजन करने से दाँत दृढ़ हो जाते हैं ।

● रीठे का बीज जलाकर कोमल बनालें तथा इसी के समभाग भुनी हुई फिटकरी मिलाकर खूब बारीक पीसकर सुरक्षित रख लें । इसका नित्य मन्जन करने से हिलते हुए दाँतों से रक्त बहने एवं दन्त पीड़ा में अत्यन्त लाभ होता है ।

● आक के दूध को दाँत के गड्ढे में भर देने से तत्काल दन्त-शूल बन्द हो जाता है ।

● सुपारी को जलाकर इसकी काली राख बनाकर उसे मसूढ़ों पर मलने से दाँतों और मसूढ़ों से होने वाला रक्तस्राव रुक जाता है ।

● हल्दी महीन पीसकर कपड़े में रखकर दर्द वाले दाँत के नीचे रखने से तथा हल्दी को दाँतों पर मलने से दाँत का दर्द ठीक हो जाता है ।

● अदरक के पतले कतलों पर नमक लगाकर पीड़ा वाले दाँतों के नीचे रखने से सर्दी से होने वाला दाँत-दर्द ठीक हो जाता है ।

● थोड़ा सा गन्धक सिरके में घोलकर रुई भिगोकर कीड़े खाये हुए दाँत में रखने से दन्त-पीड़ा दूर होती है ।

● यदि किसी तरह दन्त शूल शान्त न होता हो तो तूतिया में थोड़ा सा बुझा हुआ चूना मिलाकर कृमि वाले दंत-छिद्र में भर दें, तत्काल लाभ होगा ।

● कपूर, हींग, वच तथा दालचीनी चारों को समभाग मिलाकर कपड़छन चूर्ण कर लें । इसे थोड़ा सा कपड़े में बाँधकर दाँतों के बीच दबा लेने से कृमि नष्ट होकर दाढ़ या दाँतों का शूल उसी समय शान्त हो जाता है ।

● नमक और काली मिर्च को (सममात्रा) लेकर बारीक चूर्ण बनालें । सरसों के तेल में मिलाकर मंजन करने से (10 मिनट तक धीरे-धीरे मलने से दाँतों की पीड़ा तथा पायरिया में लाभ होता है ।

● यदि मसूढ़े सूज गये हों तो गुड़ का शरबत बनाकर गरम कर मुख में रखकर 3-4 बार कुल्ला करें । दाँतों की पीड़ा तथा पायरिया में लाभप्रद है ।

● मसूढ़ों में यदि तीव्र दर्द हो तो जीरा तवे पर भूनकर बराबर मात्रा में सेंधा नमक मिलाकर बारीक पीसकर धीरे-धीरे मसूढ़ों पर मलने से शीघ्र ही मसूढ़ों की सूजन दूर होकर दर्द बन्द हो जाता है ।

● कपूर 10 ग्राम, फिटकरी का फूला, सुहागे की खील, माजूफल, अकरकरा प्रत्येक 6-6 ग्राम, तज और लवंग 3-3 ग्राम एवं सेलखड़ी 100 ग्राम लें । सभी को पीसकर कपड़छन कर किसी स्वच्छ शीशी में रखें । इसका मन्जन नित्यप्रति सदैव करते रहने से दाँत स्वच्छ रहते हैं तथा मजबूत हो जाते हैं । दांतों को ठण्डक पहुँचाने वाला अतीव गुणकारी मंजन है ।

● तम्बाकू 30 ग्राम, अकरकरा तथा खड़िया मिट्टी 50-50 ग्राम, काली मिर्च 30 ग्राम, फिटकरी की खील 20 ग्राम तथा देसी कपूर 10 ग्राम को पीसकर मंजन बनाकर नित्यप्रति सुबह-शाम दाँतों पर मलने (मंजन करने) से दंत सम्बन्धी सभी विकार नष्ट हो जाते हैं । दन्तपूय में अत्यन्त लाभकारी मन्जन है ।

● हरड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, नीला थोथा, (भुना हुआ) सेंधा नमक, सोंचर नमक, सांभर नमक, एवं माजूफल, (समस्त सम मात्रा में) लेकर कूट पीसकर कपड़छन कर मंजन बनाकर नित्य उपयोग करने से दाँत बज्र की भांति मजबूत हो जाते हैं ।

दन्त विकार नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

जी 32 टेबलेट (अलारसिन बम्बई)—1-2 गोली आवश्यकतानुसार पीसकर मंजन करें। मन्जन करने से पूर्व सुहाता-सुहाता गरम पानी से कुल्ले करके दांत व मसूढ़ों को स्वच्छ कर लें। तत्पश्चात् जी--32 गोली पीसकर मसूढ़ों दाँतों व तालु आदि भाँगों पर हल्के-हल्के 5 मिनट मालिश करें। फिर 5 से 10 मिनट तक, मंजन लगा रहने दें। तत्पश्चात् सादा पानी से कुल्ला कर मुख स्वच्छ कर लें। इसके नियमित (लगातार) कुछ महीनों के प्रयोग से दन्त शूल, दन्त कृमि तथा पायरिया, शीताद, शोथ इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं। यदि किसी प्रिय पाठक के नगर में यह प्राप्य न हो तो सीधे अलारसिन मार्केटिंग प्रा० लि० दुभाषमार्ग, आरिकन हाउस फोर्ट बम्वई (मुम्बई) पिनकोड़-400023 के पते से मंगवा सकते हैं।

पायरिया दन्त मन्जन (धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)—प्रात:कल कुल्ले करके धीरे-धीरे मन्जन करें। 5-6 मिनट बाद गुनगुने जल से कुल्ले करें। पायरिया में शर्तिया लाभप्रद है।

दन्त वेष्टादि मंजन (वैद्यनाथ)—लाभ व उपयोग उपर्युक्त।

दाँत दर्द की दवा (वैद्यनाथ) दाँतों पर फोहे से लगाकर लार टपकायें। दन्तशूल में उपयोगी।

दरदोना (वैद्यनाथ)—1-2 गोली गरम जल से लें। दन्तशूलों में लाभप्रद।

दरदाँत (डाबर)—रुई के फाहे से दर्द वाले दाँतों पर लगाकर लार टपकायें।

नोट:— जीभ, गाल तथा मसूढ़ों को बचाकर प्रयोग करें।

दरदीना (डाबर) दांतों पर मलें, दन्तशूल में लाभकारी है।

लाल दन्त मंजन (डाबर), **दन्तमुक्ता**, (डाबर), **डेन्टाकेयर** (डाबर), **लाल दन्त मंजन** (वैद्यनाथ), **पायोरिया** (गुरुकल कांगड़ी हरिद्वार), **पायरो दन्त मंजन** (ज्वाला आयुर्वेद), **काला दन्तमंजन** (धन्वन्तरि कार्यालय), **गमटोन टूथ पावडर** (अलारसिन) इत्यादि मन्जन विभिन्न प्रकार के दन्त विकारों को दूर कर दाँत को स्वच्छ कर और चमकीला रखते हैं।

धातु दौर्बल्य, नपुंसकता, सामान्य दुर्बलता (Impotancy And General Weakness)

नपुंसकता—इसमें रोगी आशिंक या पूर्ण रूपेण स्त्री (पत्नी) को यौन सुख (सम्भोग क्रिया) दे पाने में असमर्थ हो जाता है। पुरुष का शिश्न (लिंग) इतना

दुर्बल हो जाता है कि उसमें उत्थान नहीं हो पाता है। इस रोग में यदि शारीरिक या मानसिक दुर्बलता हो तो उसको निर्मूल किया जा सकता है। यदि यह दोष पैतृक है तब उसको ठीक नहीं किया जा सकता। वैसे प्राय: 99 प्रतिशत यह रोग मानसिक अथवा शारीरिक कमजोरी (दुर्बलता) के परिणाम स्वरूप प्रकट होता है।

उपचार

- अमलतास की छाल का महीन चूर्ण 1-2 ग्राम की मात्रा में दो गुनी शक्कर मिलाकर 250 ग्राम गुनगुना गौ दुग्ध के साथ नित्य सुबह शाम सेवन करने से अपार बल व वीर्य की वृद्धि होती है।
- अश्वगन्धा का चूर्ण कपड़छन कर (खूब मैदे की भाँति कर लें) इसमें चौथाई भाग उत्तम गौघृत मिलाकर आपस में खूब खरल कर एक स्वच्छ पात्र में रख लें। इसे 1 से 3 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के वीर्य विकारों में लाभ होकर बल व वीर्य की वृद्धि होती है।
- अश्वगन्धा में (कब्ज न करते हुए) पतली धातु (वीर्य) को गाढ़ा करने की विचित्र प्राकृतिक शक्ति है। अश्वगन्धा चूर्ण तथा मिश्री एवं शहद 6-6 ग्राम तथा गोघृत 10 ग्राम को एकत्र कर नित्य सुबह-शाम शीतकाल में 4 माह तक सेवन करने से बलहीन वृद्धजनों में भी युवाओं जैसी शक्ति (बल व वीर्य की वृद्धि होकर) आ जाती है।
- इमली के बीजों को दूध के साथ पकावें। जब छिलका उतारने योग्य (मुलायम) हो जायें, तब छिलका उतारकर सिल पर खूब महीन पीसकर घृत में भून लें फिर उसमें सममात्रा में मिश्री मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम दूध के साथ सेवन करने से वीर्य पुष्ट हो जाता है तथा शारीरिक बल व स्तम्भन शक्ति भी बढ़ जाती है।
- इलायची के बीज 2 ग्राम, जावित्री 1 ग्राम, बादाम की मिंगी 5 नग, सभी को थोड़े से जल में खूब बारीक पीसकर गाय के मक्खन तथा मिश्री के साथ 10-10 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम सेवन करने से धातुगत दुर्बलता नष्ट होकर वीर्य पुष्ट हो जाता है।
- घी में भुनी हुई छिलके सहित उड़द की दाल का चूर्ण 120 ग्राम में समभाग सफेद खाँड़ मिलाकर शीशी में भरकर रख लें। इसे 20 ग्राम की मात्रा में शहद तथा घी (विषम मात्रा में) मिलाकर सेवन करने से बल-वीर्य की वृद्धि हो जाती है।

● कौंच के बीज के साथ ताल मखाना तथा मिश्री चूर्ण (सम मात्रा में) मिलाकर 1-2 ग्राम की मात्रा में धारोष्ण दुग्ध के साथ सेवन करने से पुरुषत्व की अपार वृद्धि होती है ।

● कौंच के बीज के साथ गोखरू समभाग चूर्ण कर तथा चूर्ण के समभाग मिश्री या खाड़ मिलाकर सुबह शाम 6 से 10 ग्राम तक की मात्रा में दुग्ध के साथ सेवन करने से अशक्ति दूर होकर वीर्य पुष्ट होता है एवं शरीर में नूतन बल का संचार होता है ।

● चने के आटे का हलुआ बनाकर या भिगोये हुए चने के पानी में मधु मिलाकर सेवन करने से वीर्य पुष्ट होता है तथा दुर्बलता नष्ट हो जाती है ।

● जायफल का चूर्ण 4-4 रत्ती सुबह शाम ताजे जल से 40 दिनों तक सेवन करने से शीघ्र पतन में लाभ होता है ।

● एक बड़ा जायफल (जो कम से कम 7 ग्राम का हो) लेकर उसे खोखला कर भीतर डेढ़ ग्राम अफीम भरकर उसके मुख को आटे से बन्द करें फिर ऊपर से आटा लगाकर गोली बनाकर आग पर सेक लें । सुर्ख हो जाने पर आग से निकालकर ऊपर से आटा हटा कर सम्पूर्ण जायफल को पीसकर शहद में मिलाकर छोटे-छोटे बेर के समान गोलियाँ बनाकर रख लें । इसमें से 1 गोली सम्भोग से पूर्व दूध के साथ सेवन करने से स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है ।

● काले तिल 100 ग्राम को कढ़ाई में भूनकर रख लें । फिर चावल का आटा 100 ग्राम तथा घी 25 ग्राम इसमें मिला लें । तदुपरान्त इन सबको दो गुनी मात्रा में शक्कर मिलाकर रख लें । इसमें से 25 ग्राम प्रातः तथा रात्रि को खाकर ऊपर से 250 ग्राम दूध (मीठा डालकर) सेवन करने से अपार वीर्य बल की वृद्धि होती है ।

● तुलसी के बीजों के साथ समभाग पुराना गुड़ मिलाकर डेढ़ से 3 ग्राम तक सुबह शाम दूध के साथ सेवन करने से मात्र 5-6 सप्ताह में वीर्य-विकार नष्ट होकर पुरुषत्व की यथेष्ट वृद्धि होती है ।

● धतूरे के बीज, अकरकरा तथा लौंग समभाग लेकर खूब बारीक खरल कर पानी के साथ मूँग (समूची मूँग की दाल) के आकार की गोलियां बनाकर रख लें । एक दो गोली दूध के साथ सेवन करने से वीर्य गाढ़ा होकर वाजीकरण की शक्ति बढ़ जाती है ।

● पीपल की छाल को ताजी लेकर कूट लें । फिर 12 घण्टे जल में भिगोकर मसलकर पीते रहने से भी स्तम्भन एवं वाजीकरण होता है ।

● श्वेत प्याज का रस तथा शहद 200 ग्राम तथा शक्कर 100 ग्राम एकत्र मिलाकर सरबत बनालें । इसे 25 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करने से काम-शक्ति का उद्वेग होता है तथा शरीर सबल हो जाता है ।

● श्वेत प्याज का रस 6 ग्राम, गोघृत 4 ग्राम तथा मधु 3 ग्राम को एकत्र मिलाकर सुबह शाम चाटने से हस्त-मैथुनजन्य नपुंसकता में लाभ होता है ।

● श्वेत प्याज का रस, शहद, मुर्गी के अण्डे की जर्दी और ब्राण्डी (शराब) 10-10 ग्राम का मिश्रण प्रतिदिन लेते रहने से शरीर में अत्यन्त शक्ति का संचार होता है ।

● मूसली सफेद तथा मिश्री समान भाग लेकर चूर्ण तैयार कर लें । उसे 6-6 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम गाय के दूध के साथ सेवन करने से शरीर में बल का संचार होता है ।

● मूसली सफेद, सत गिलोय, कौंच की गिरी, गोखरू, ताल मखाना, नागौरी असगन्ध तथा शताबर सभी समान मात्रा में लेकर सबके बराबर मिश्री मिलाकर चूर्ण तैयार कर सुरक्षित रख लें । इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम लेकर ऊपर से गाय का दूध सेवन करने से बल व वीर्य की वृद्धि होती है ।

● अश्वगन्धा के महीन चूर्ण को चमेली के तेल में पीसकर लगाने से इन्द्रिय की शिथिलता दूर होकर लिंग कठोर तथा दृढ़ हो जाता है ।

● अकरकरा का महीन चूर्ण कर लगभग 20 ग्राम प्रति रात्रि को धतूरे के स्वरस में घोटकर टिकिया बनाकर शिश्न का अग्रभाग (सुपाड़ी) छोड़कर अन्य सम्पूर्ण लिंग (की ऊपरी सतह) पर 6-8 दिनों तक बाँधने से लिंग पुष्ट होकर स्तम्भन शक्ति बढ़ती है तथा नपुंसकता दूर होती है । उक्त अकरकरा की लुग्दी पर पत्ता भी धतूरे का ही बाँधना चाहिए ।

● अश्वगन्धा, दालचीनी, कडवा कूट (सभी सम मात्रा में) कूट पीसकर छान लें । इसे गाय के मक्खन में मिलाकर सुबह शाम लिंग की सुपारी छोड़कर शेष लिंग पर मालिश करने से लिंग की शिथिलता दूर हो जाती है ।

● हस्त मैथुन के दुष्परिणाम स्वरूप उत्पन्न नामर्दी के रोगी अपने कुकर्म को तुरन्त त्यागें, ऐसे लोग रात्रि को सोते समय 3 ग्राम (बढ़िया किस्म की हींग) को पानी में घिसकर लिंग पर लेप किया करें (सुपाड़ी पर न लगायें) प्रात: उठकर गरम पानी से धो लिया करें । बल बढ़ाने हेतु गुणकारी औषधि है ।

● कायफल के चूर्ण को भैंस के दूध में पीसकर रात्रि के समय शिश्न पर लेप कर प्रात:काल शिश्न धोने से शिश्न दृढ़ होता है ।

● भिलावा 50 ग्राम, तिल का तेल 200 ग्राम दोनों को एक कड़ाही में इतना पकालें कि भिलावा जल जाये, फिर ठण्डा करके तेल छान लें। इस तेल की शिश्न पर मालिश करने से नामर्दी (नपुंसकता) दूर हो जाती है।

● सालम मिश्री, सकाकुल मिश्री, तोदरी सफेद, कौंच के बीजों की गिरी, इमली के बीजों की गिरी, ताल मखाना, सरवाली के बीज, सफेद मूसली, काली मूसली, सेवल की मूँसली, बहमन सफेद, बहमन लाल, शतावरी, कीकर का गोंद, कीकर की कच्ची कली, कीकर का सत्व, ढाक की नरम कली, प्रत्येक औषधि 10-10 ग्राम लें। इन सभी को खूब बारीक पीस-छानकर चूर्ण बनालें। तत्पश्चात् इसमें 180 ग्राम देशी मिश्री मिला दें। इसे 10-10 की मात्रा में सुबह शाम फांककर ऊपर से 250 ग्राम धारोष्ण दुग्ध पान करें। इस चूर्ण के सेवन से धातुक्षीणता शीघ्रपतन इत्यादि विकार शीघ्र ठीक होकर अपार बल वीर्य की वृद्धि होती है। इसे कम से कम लगातार 80 दिनों तक सेवन करें। परीक्षित योग है।

● अकरकरा, कपूर, कच्चा सुहागा, प्रत्येक 10 ग्राम लें और शहद में मिलाकर रख लें। सम्भोग से पहले लिंग पर लेप करें तथा 1 घण्टे बाद लिंग कपड़े से साफ कर मैथुन क्रिया सम्पन्न करें तो मैथुन में कईगुना अधिक आनन्द बढ़ जाता है। यह योग लिंग को स्थूल एवं सख्त बनाता है। अनुभूत योग है।

● संभोग करने से पूर्व 'विक्स वैपोरव' आइन्टमेन्ट (जो सर्दी जुकाम, सिरदर्द, नाशक औषधि के रूप में बाजार में उपलब्ध है।) को लिंग के अग्रभाग (सुपाड़ी) पर लगाकर रति क्रिया करने से स्तम्भन होता है अर्थात शीघ्र पतन नहीं होने पाता।

● हल्दी की गाँठ आधा किलो, अनबुझा चूना 1 किलो तथा पानी 2 किलो लें। एक मिट्टी के बर्तन में हल्दी और चूना डालकर ऊपर से पानी डाल दें। पानी गिरते ही चूना पकने लगेगा। चूना पकने के पश्चात वर्तन को ढँक दें और दो माँस तक ऐसे ही पड़ा रहने दें। तत्पश्चात् गाँठों को मिलाकर साफ करके सुखा लें और कूट पीसकर किसी स्वच्छ बोतल में भर लें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में 10 ग्राम शहद के साथ निरन्तर 4 माँस सेवन करें। इसके सेवन से शरीर में नवजीवन और शक्ति का संचार होता है। मुख मण्डल दमकने लगता है। रक्त शुद्ध हो जाता है। सफेद बाल काले हो जाते हैं। यदि वृद्ध जन् इसे सेवन करें तो नवयुवकों की भाँति शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

● बादाम की मिंगीं 4 नग को चन्दन की भाँति पत्थर पर घिसकर 1 ग्राम शहद व 1 ग्राम मिश्री मिलाकर नित्य प्रति सेवन करने से नामर्द भी मर्द हो जाता है।

नपुंसकता नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

स्पीमन प्लेन तथा स्पीमन फोर्ट टेबलेट (हिमालय ड्रग), **टेन टेक्स प्लेन तथा टेनटेक्स फोर्ट टेबलेट** (हिमालय ड्रग), **फोर्टेज टेबलेट** (अलारसिन), **टेस्टोबिग टेबलेट** (मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स बड़ौत (मेरठ), **टेस्टोगेन जी टेबलेट** (गैम्बर्स लेबोरेट्रीज मुम्बई), **पावरपिल्स** एवं, **बी. एच. पिल्स फोर्ट** (गैम्बर्स लेबो.) **मकरध्वज वटी** (धन्वन्तरि कार्यालय), **कामशक्ति केसरी वटी** (गर्ग बनौषधि भंडार, विजयगढ़, अलीगढ़), **नपुंसकत्वारि वटी,** (गर्ग बनौ.), **स्तम्भनवटी** (धन्वन्तरि कार्यालय), **सैक्सटोन टेबलेट** (मैडीकल इथिक्स), **क्लीवान्तक कैप्सूल** (गर्ग बनौषधि), **वीर्य तरलान्तक कैप्सूल** (गर्ग बनौ.), **मदन शक्ति कैप्सूल** (ज्वाला आयुर्वेद भवन, विजयगढ़ (अलीगढ़), **क्लीवारि कैपसूल** (ज्वाला आयु.) **मदनोसूल कैप्सूल** (पंकज फार्मा), **अफ्रोडेट कैप्सूल** (धूतपापेश्वर), **नवजीवन कैप्सूल** (जी. ए. मिश्रा), **शक्तिवा चूर्ण** (धन्वन्तरि कैपसूल (अतुल फार्मेसी), **एनर्जिक 31 कैप्सूल** (वि. संस्थान मुरादाबाद) **वीर्य प्रमेह हर कैप्सूल** (अतुल फार्मेसी), **हिमकोलिन क्रीम** (हिमालय ड्रग), **नवयौवन मलहम पोटली** (धन्वन्तरि कार्या.), **धन्वन्तरि तैल** (धन्वन्तरी कार्या.), **धन्वन्तरि पोटली** (धन्वन्तरि कार्या.), **टेस्टोबिग क्रीम** (मार्तन्ड), **बजरंग तिला** (मार्तन्ड), **विगोरिन आयन्टमेन्ट** (गैम्बर्स लैबो.), **ब्यूटाइल क्रीम, अद्बुत तिला** (मेहता), **वीर्य शोधन वटी** (अतुल फार्मेसी), **वीर्य शोधन चूर्ण** (अतुल फार्मेसी), **नवशक्ति मलहम** (अतुल फार्मेसी) इत्यादि में से किसी भी औषधि का चुनाव कर औषधि के साथ मिले पत्रक के दिशा निर्देशानुसार उचित अनुपान के साथ प्रयोग करें अथवा अपने पारिवारिक चिकित्सक के परामर्शानुसार सेवन करें।

सामान्य दुर्बलता नाशक पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

शक्ति संचय सीरप (अतुल फार्मेसी), **शिलाजीत कैप्सूल** (अतुल फार्मेसी), **ओजस टेबलेट** (चरक), **बंगसिल टेबलेट** (अलारसिन), **बी. एच. पिल्स, एल्फा टेबलेट, पोटेन्जा टेबलेट** (नोट— क्रम सं. 5, 6, 7 के निर्माता गैम्बर्स लेबो. मुम्बई), **शमशायनी पिल्स** (झन्डू फार्मेस्युटिकल्स), **मकरध्वज वटी** (धन्वन्तिरि कार्या.), **शिवाशक्ति कैप्सूल** (गर्ग बनौ.), **त्रिशक्ति कैप्सूल** (ज्वाला आयु.), **नवजीवन कैप्सूल** (जी. ए. मिश्रा), **केसरी जीवन** (झन्डू

फार्मेस्यु.), **लौहरसायन** (धन्वन्तिरि कार्या.), **द्राक्षोबिन स्पेशल** (धूतपापेश्वर), **द्राक्षोमाट** (ऊंझा फार्मेसी), **इथीविट सीरप** (मैडीकल इथीक्स), **रक्तोफास्फो माल्टसीरप** (झन्डू फार्मेस्यु.), **शुद्ध शिलाजीत**, (झन्डू, डाबर), **अंगूरासव** (पेय) (झन्डू), **ओजस सीरप** (चरक), **विकामिन टेबलेट** (चरक), **मेनाल टॉनिक और टिकिया** (चरक), **बिगराल जैली और टिकिया** (चरक), **शक्तिटोन टॉनिक** (निर्माता मुल्तानी फार्मा. लि. कनाट प्लेस, नई दिल्ली)

रक्त की कमी, थकावट व कमजोरी दूर कर दिल-दिमाग को ताकत कर भूख लगाते हैं, पाचन शक्ति बढ़ाते हैं मानसिक तनाव, वजन की कमी को दूर करते हैं। इनमें से किसी एक का नियम पूर्वक पत्रक के अनुसार सेवन करें।

नेत्र रोग (Eye Diseases)

● अरहर की दाल को स्वच्छ पत्थर पर पानी के साथ घिसकर दिन में 2-3 बार आँख की गुहेरी पर लगाने से लाभ होता है।

● लहसुन छील काटकर (दवाकर) इसका रस आँख के गुहेरी पर दिन में 3-4 बार लगाना अत्यधिक लाभप्रद है।

● अनन्त मूल के मुलायम पत्तों को तोड़ने से जो दूध निकलता है उसे नेत्रों में लगाते रहने से आँखों का फूला तथा जाला नष्ट हो जाता है।

● अनार के हरे पत्तों को कुचलकर निकाला हुआ रस खरल में डालकर जब शुष्क हो जाये तब कपड़े से छानकर सुरक्षित रख लें। इसे नित्य प्रति सिलाई से सुरमे की भाँति लगाने से नेत्रों की खुजली, नेत्र स्त्राव (पानी बहना) पलकों की खराबी, कुकरे इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं।

● आँवला 1 भाग तथा सैन्धव लवण आठवां भाग मिलाकर शहद के साथ आँखों में लगाने से वह रतौन्धी तथा दृष्टि-मान्द्य में लाभ होता है।

● आँवला का चूर्ण (महीन पीसकर) समभाग, समभाग मिश्री चूर्ण मिलाकर मीठे बादाम के तैल में तर करके किसी कांच के बर्तन में सुरक्षित रख लें। इसे 15 ग्राम की मात्रा में नित्य प्रातःकाल गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से आँख की धुन्ध में लाभ होता है।

● आँवले का चूर्ण 1 भाग तथा काले तिल आधा भाग लेकर दोनों को जल में भिगोकर (पीसकर) नेत्रों पर गाढ़ा-गाढ़ा प्रलेप करने से नेत्रों का दाह शमन होकर नेत्रों में तरावट (ठन्डक) आती है तथा नेत्र-ज्योति बढ़ती है।

● ताजे आँवले के स्वरस को कलईदार बर्तन में मन्द-मन्द अग्नि पर पकावें। रस जब गोली बनाने लायक गाढ़ा हो जाए तब लम्बी-लम्बी सी गोलियां बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे जल में घिसकर सलाई से नेत्रों में लगाने से लालिमा नष्ट होकर नेत्र निर्मल हो जाते हैं।

● कच्चे आलू को किसी साफ स्वच्छ पत्थर पर घिसकर सुबह शाम काजल की भांति आँखों में लगाने से 5-6 वर्षो तक का जाला तथा 4 वर्षों तक की फूली 2-3 माह के निरन्तर प्रयोग से साफ हो जाती है।

● बिनौला के 18 ग्राम तेल में समुद्र फेन चूर्ण 12 रत्ती मिलाकर नित्य थोड़ा-थोड़ा सलाई से आँजते रहने से जाला व फूला में लाभ होता है।

● कपूर 2-4 रत्ती तक को 50 ग्राम केले के पानी (पत्तों के रस) में घोलकर शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें। इसे सलाई से आँखों में लगाने से आँखों का ढरका व पानी बन्द हो जाता है।

● परवाल की अवस्था में करील की कोपलों को खूब बारीक चन्दन की भांति घिसकर सलाई से परवाल के स्थान पर (सावधानी के साथ लगाने से (औषधि पुतली पर न लगें) परबाल के बाल पुनः नहीं आते हैं। प्रयोग 2-3 बार करें।

● यदि अत्यधिक गाँजा तम्बाकू के सेवन के फलस्वरूप दृष्टि मन्द पड़ गई हो (रात्रि में न दीखता हो।) तो शुद्ध कुचला के चूर्ण की मात्रा 1-2 रत्ती दिन में 2 बार समभाग सोड़ा बाई कार्ब मिलाकर पानी के साथ पिलाते रहने से दृष्टि-मान्द्य में लाभ होता है।

● जैतून के शुद्ध तेल को नेत्रों में लगाने से नेत्र ज्योति बढ़ती है। खुजली, धुन्ध तथा जाला इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं।

● देशी तम्बाकू 10 ग्राम, रैन्डी का तेल 40 ग्राम लें। दोनों को 12 घन्टे तक खरल कर रात्रि में सोते समय एक सलाई प्रतिदिन नेत्रों में लगाने से प्रारम्भिक मोतियाबिन्द में लाभ होता है।

● तम्बाकू का धुँआ जो चिलम में जम जाता है। उसे खुरचकर उतना ही साबुन मिलाकर गोली बनाकर रात को सोते समय यह गोली एक बूंद पानी में घिसकर सलाई से लगाने से रतौन्धी में लाभ होता है।

● दुद्धि के पौधे को काटने पर जो दूध निकलता है, उसे सलाई के सिरे पर लगाते जायें, फिर रतौधी के रोगी की आँखों में भली प्रकार सलाई फेर दें, थोड़ी देर बार रोगी की आँखों में असहनीय वेदना होगी, किन्तु घबरायें नहीं, नेत्रों

को जल से धोयें भी नहीं, क्योंकि यह वेदना 1 पहर के वाद स्वयं ही दूर हो जायेगी। इस प्रयोग को मात्र एक बार करने से आजन्म रतौन्धी से मुक्ति मिल जाती है। परीक्षित योग है ।

● बारहसिंगा के सींग के बुरादे को नीबू के रस में खूब खरल कर सुरमा जैसा बारीक कर गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें । इसे अर्क-गुलाब या जल में घिसकर सलाई से आँखों में लगाते रहने से पुराने से पुराना जाला, धुन्ध इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● मोतियाबिन्द की प्रारम्भिकावस्था जो प्राय: 70 वर्ष की आयु के वृद्धजनों को होता है—में नीबू के रस की कुछ बूंदें नित्य प्रात:काल सूर्योदय के समय नेत्रों में डालते रहना धीरे-धीरे मोतियाबिन्द को नष्टकर दृष्टि-शक्ति को बढ़ा देता है।

● नीम वृक्ष की एक मोटी जड़ में खोल बनाकर उसमें सुरमें की डली रख दें तथा नीम की लकड़ी या छाल से ही नीम की जड़ के खोल (जिसमें सुरमे की डली रखी हो) को बन्द कर दें । फिर इसे दो मास के बाद निकालकर महीन पीसकर सुरक्षित रख लें । इसे सलाई से आँखों में नित्यप्रति लगाने से नेत्रों में ठन्डक रहती है । जलन, दाह एवं पैत्तिक विकार दूर हो जाते हैं ।

● काला सुरमा 50 ग्राम को 3 दिन तक निरन्तर प्याज के रस में खरल करें । शुष्क हो जाने पर किसी स्वच्छ शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें । इस सुरमे की 2-2 सलाई नेत्रों में फेरने से दुखती हुई आँख, धुन्ध, जाला तथा मोतियाबिन्दु में लाभ होता है ।

● वंशलोचन 12 भाग, छोटी इलायची बीज 10 भाग, आंवला 6 भाग, काली मिर्च 4 भाग, छोटी पिप्पली 2 भाग तथा इनसे आधा भाग शुद्ध सुरमा। इन सभी को महीन पीस-छानकर किसी स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रख लें। इस सुरमें को प्रतिदिन नेत्रों में लगाने से नेत्रों के समस्त विकार दूर हो जाते हैं ।

● नेत्र की पलक पर फुड़िया होने पर राई को घी मिलाकर लेप करने से तुरन्त लाभ होता है ।

● विशुद्ध एरन्ड तैल (Castor Oil) नेत्र में डालने से नेत्र में प्रवेश हुए स्नेही क्षीर या अर्क क्षीर, जन्मदाह, अणु (धूल), कोयला, मच्छर आदि बाहर निकल जाते हैं एवं कूणक रोग में उसकी तीक्ष्णता भी कम हो जाती है । एरन्ड तैल के अन्जन से नेत्रों में से जल स्राव होता है, अत: उसे नेत्र विरेचक भी कहा जाता है।

● जंगली कबूतर की बीट को बारीक पीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रख

लें । इसे सुरमें की भांति प्रयोग करने से आँखों की धुन्ध, जाला एवं खुजली इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● एरन्ड के तैल की बत्ती दीपक में रखकर जलावें । फिर दीपक पर औंधा तबा रखकर 40 ग्राम काजल एकत्र करें । फिर नीलाथोथे का फूला तथा फिटकरी का फूला 6-6 ग्राम लें । बच तथा आँवला 10-10 ग्राम लेकर जलाकर कोयला करें । तदुपरान्त सभी को मिलालें । इसमें 40 ग्राम गोघृत मिलाकर 1 दिन तक मर्दन करें । दूसरे दिन खरल में 100 ग्राम जल मिलाकर पुन: मर्दन करें तथा जल मैला होने पर निकाल कर फेंक दें और पुन: नया जल डालें । इस प्रकार जब तक मैला जल निकलता रहे तब तक निकाल कर फेंकतें रहें और नया जल मिलाकर मर्दन करते रहें । तत्पश्चात् 10 ग्राम कपूर मिलाकर खूब मर्दनकर शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें । इस काजल से नेत्रों में अन्जन करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है । बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी के नित्य आँखों में लगाने हेतु अत्यन्त उपयोगी काजल है । यह नेत्रों से मैल दूरकर शीतलता प्रदान करता है। इसके निरन्तर प्रयोग से नेत्र निर्मल एवं तेजस्वी रहते हैं ।

सामान्य नेत्र रोग नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

नेत्र ज्योतिवर्धक सुरमा (गर्ग बनौ०) रात्रि को सोते समय सलाई से नेत्रों में लगावें । नेत्र ज्योति वर्धक तथा जाला, धुन्ध, मोतियाबिन्दु में उपयोगी है। वृद्धजनों को अमृत समान आँखों की दिव्य औषधि है ।

नयनामृत सुरमा (धन्वन्तिरि कार्या०) लाभ व उपयोग उपर्युक्त ।

शिरोविरेचनीय सुरमा (धन्वन्तिरि कार्या०) आवश्यकता के समय नेत्रों में लगायें । नेत्र दुर्बलता के कारण होने वाले शिराशूल में उपयोगी है ।

नेत्रामृत सुरमा (बैद्यनाथ) नेत्र ज्योति बर्धक तथा विभिन्न रोग नाशक है ।

नेत्रामृत अन्जन (ज्वाला आयु०) उपयोग उपर्युक्त ।

नयनान्जन (भजनाश्रम) उपयोग उपर्युक्त ।

भीमसैनी काला सुरमा (गुरुकुल कांगड़ी) उपयोग उपर्युक्त ।

नेत्रसखा सुरमा (देशरक्षक) उपयोग उपर्युक्त ।

मोतियाबिन्दु 'बिन्दु' (ड्राप्स) 1-2 बूँद आँख में डालें ।

नयनी काजल (बैद्यनाथ) उपयोग उपर्युक्त ।

एडकाल सीरप (मार्तन्ड) 1-2 चम्मच दिन में 3 बार लें। नेत्र ज्योति बर्धक उपयोगी शरबत है।

त्रिफलावलेह (गर्ग बनौ०) 5-10 ग्राम दूध से सुबह शाम। नेत्र ज्योति बर्धक उपयोगी अवलेह है।

आईनोला ड्राप्स (डाबर) 1-2 बूँद रुग्ण आँखों में डालें। नेत्राभिष्यन्द आँख आना, आँख दुखना इत्यादि में लाभप्रद है।

पक्षाघात (Paralysis)

रोग परिचय—इसका आक्रमण सहसा एकाएक होता है। इस रोग में शरीर का आधा भाग बेकार हो जाता है तथा सिर से पैर तक एक तरफ का भाग रोगी अपनी इच्छा से हिला-डुला नहीं सकता है।

उपचार

- सन के बीजों को लेकर उनका बारीक चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 15 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम शहद मिलाकर 21 दिन सेवन करने से पक्षाघात में लाभ होता है।
- भांग एवं काली मिर्च को बराबर-बराबर लेकर बारीक चूर्ण कर लें। इसे 1-1 ग्राम की मात्रा में गो दुग्ध से प्रत्येक 12-12 घन्टे पर रोगी को सुबह-शाम कम से कम 21 या 41 दिनों तक प्रयोग करने से पक्षाघात में लाभ हो जाता है।
- वेतवा सोंठ तथा बच दोनों को बराबर मात्रा में लेकर बारीक चूर्ण कर सुरक्षित रख लें। इसे सुबह-शाम 10-10 ग्राम की मात्रा में मधु के साथ रोगी को चटाने से पक्षाघात में लाभ होता है।
- मुलहठी, सफेद जीरा, हल्दी, बच, रास्ना, सौंठ, पीपल, अजमोद व सेंधा नमक प्रत्येक 20-20 ग्राम एकत्र कर सभी का बारीक चूर्ण कर कपड़छन कर 21 पुड़िया बना लें। सुबह-शाम पुड़िया घी में चाट कर ऊपर से भुने हुए चने चबायें। पक्षाघात नाशक सरल योग है।
- बच 30 ग्राम, काली मिर्च 10 ग्राम, पोदीना 10 ग्राम, काला जीरा 10 ग्राम तथा कलोंजी 10 ग्राम सबको कूट पीसकर 250 ग्राम शहद में मिलाकर लेह सा बनालें। इसे 4-4 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम चाटने से पक्षाघात में लाभ होता है।

नोट—पक्षाघात के विविध नाम हैं जो इस प्रकार हैं। पाठकगण ध्यान दें :—

पक्षबध, पक्षाघात, अर्द्धांगवात, अर्द्धांगवध, एकांगवात, एक पक्षवध, हेमोप्लीजिया, फालिज।

केवल वात-प्रकोप से जो पक्षाघात होता है, वह कष्टसाध्य होता है। जो संसृष्ट वायु से पक्षाघात होता है, वह साध्य होता है तथा जो धातु-क्षय के कारण कुपित वात से पक्षाघात होता है, वह असाध्य होता है।

गर्भिणी स्त्रियों में, प्रसुता स्त्रियों में, बालकों में, वृद्धों में रक्तक्षय होने पर उच्च स्वर से बोलने से, अति कठिन पदार्थ खाने से, हंसने और जमुहाई लेने से, विषम बोझ उठाने से, विषम शयन पर सोने से, सिर, नासा, हांठ, कपोल, ललाट और नेत्र सन्धि में स्थित हुई वायु, कुपित होकर जब मुख को पीड़ित कर देती है "अर्दित" कहलाती है।

अर्दित (Facial Paralysis) में मुख टेढ़ा हो जाता है। चेहरे के एक ओर की पेशियाँ शिथिल हो जाती हैं। आधा चेहरा बांका (टेढ़ा) होता है, सिर चलायमान रहता है। वाणी का ठीक निर्गम नहीं होता है। नेत्रादि में विकृति होती है तथा जिस पार्श्व में अर्दित होता है उस पार्श्व, कपोल और दाँतों में पीड़ा होती है।

पक्षाघात—इस दशा में आधे शरीर का घात होता है। रोगी अपनी इच्छानुसार अर्ध शरीर की पेशियों का संकोच नहीं कर सकता है। चेहरा बदल जाता है। बोलने में रुकावट होती है तथा सम्वेदना में अन्तर आ जाता है।

नरसिंहघात (Paraplegia) यह शरीर के निचले अधोभाग का रोग है। इसमें कटि (कमर) प्रदेश से लेकर पैरों तक नीचे के अंग प्रत्यंगों की क्रिया शक्ति नष्ट हो जाती है।

सर्वांगघात (Piplegia) यह सम्पूर्ण शरीर में होने वाली विकृति होती है।

- शुद्ध कुचला और काली मिर्च सम मात्रा में लेकर महीन पीसकर खरल में डालकर पानी के साथ खरल करें। खूब घुट जाने पर आधा-आधा रत्ती की गोलियाँ बना लें और छाया में सुखा लें। नित्य प्रात: 1 गोली बंगलापन में रखकर खाने से पक्षाघात रोग नष्ट हो जाता है।
- सोंठ और काली मिर्च सम मात्रा में लेकर कूट पीसकर छान लें। इसमें थोड़ा-थोड़ा चूर्ण नाक में चढ़ाने से पक्षाघात और अर्दित रोग नष्ट हो जाते हैं।
- कुचले के पत्ते, सोंठ और सांभर नमक, समान मात्रा में लेकर पानी के साथ पीसकर लेप करने से आमवात, गठिया, पक्षाघात, फालिज, अर्द्धांग और चूहे का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

● काली मिर्च 1 छटांक पीसकर छानकर पाव भर तेल में मिलाकर कुछ देर पकाकर इस तेल का पतला-पतला लेफ करने से पक्षपात, एकांग घात या अर्द्धांग वात रोग नष्ट हो जाते हैं। यह लेप तुरन्त ही बनाकर गरम करके लगाया जाता है। पक्षाघात की रामवांण दवा है। प्रसिद्ध स्व० वैद्यराज श्री हरिदास जी ने अपनी अमरकृति 'चिकित्सा चन्द्रोदय' में इसकी अत्यधिक प्रशंसा की है।

● कड़वी लौकी के बीजों को पीसकर लेप करना पक्षाघात में लाभप्रद है।

● राई और अकरकरा 6-6 माशा लें। दोनों को महीन पीसकर शहद में मिलाकर दिन भर में पक्षाघात के रोगी की जीभ पर 3-4 बार घिसें। इस प्रयोग से स्वाद शक्ति प्राप्त होगी, वाणी शुद्ध होगी, मुख से गिरने वाली लार धीरे-धीरे बन्द हो जायेगी।

● रोगी को पुराना गौघृत थोड़ी-थोड़ी मात्रा में ऐसे ही अथवा भोजन के साथ दिन में 3-4 बार देना लकवा में लाभप्रद है। घी जितना ही अधिक पुराना होगा उतना ही अधिक लाभप्रद होगा।

● बच मीठी 15 ग्राम, सौठ व काला जीरा 20-20 ग्राम लें। तीनों को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर प्रतिदिन 3 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ मिलाकर सेवन कराना लकवे में अत्यधिक लाभप्रद है।

● सोंठ और बच सममात्रा में पीसकर आधा ग्राम औषधि 4 ग्राम शहद के साथ सुबह शाम सेवन करने से लकवा दूर हो जाता है।

● नीम के बीजों का तेल पक्षाघात से सुन्न हो चुके अंगों पर पहले चुपड़े और फिर मालिश करें। जितना यह तेल त्वचा में पहुँचेगा उतना ही जल्दी रक्त संचार में प्रभाव आयेगा। चैतन्यता लाने में नीम विशेषरूप से प्रभावकारी है।

● 20 ग्राम लहसुन की छिली हुई गिरी पीसकर गाय के आधा किलो दूध में पकायें। और खीर की भाँति गाढ़ी हो जाने पर उतार लें। शीतल होने पर लकवा रोग (किसी एक ओर का अंग मारा जाना) के रोगी को खिलायें। इसके सेवन से रोग जड़ से ठीक हो जाता है।

साथ ही लहसुन तेल निम्न प्रकार से बनाकर मालिश करें। छिली हुई लहसुन की 250 ग्राम गिरियों की पीठी आधा किलो सरसों का तेल और 2 किलो पानी में मिलाकर लोहे की कड़ाही में पकावें। जब पानी जल जाये तब कड़ाही को उतारकर ठन्डा कर कपड़े से तेल छानकर किसी साफ स्वच्छ बोतल में सुरक्षित रखें तथा प्रयोग में लायें।

● लहसुन 250 ग्राम, दूध 500 ग्राम लेकर मन्दाग्नि पर पाक करें। जब

लहसुन व दूध एकजीव हो जायें तब खूब मलकर छान लें तथा (पुन:) दुबारा छने हुए दूध को आग पर पकाकर खोवा बना लें। तदुपरान्त इस खोवा में 500 ग्राम खाँड मिलाकर 10 ग्राम के पेडे बनालें। इन पेड़ों को 1 से 2 तक सुबह शाम खाने से अर्द्धांग वात रोग एवं आर्दित रोग (Facial Paralysis) नष्ट हो जाते हैं। अतीव गुणकारी योग है।

● पक्षाघात (लकवा) ऐंठन, व स्नायु रोगों में—दिनभर में 2-3 बार 2 से 4 चम्मच शहद पिलाना अत्यधिक लाभप्रद है। क्योंकि शहद शरीर में कैल्शियम की मात्रा पूरी करता है।

पक्षपात नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

वार्ताकल कैपसूल (अतुल फार्मेसी) 1-1 कैपसूल सुबह शाम दूध अथवा चाय सेवन करायें। आमवात, पक्षाघात एवं जोड़ों के दर्द में अत्यन्त उपयोगी है।

वातारि टेबलेट (धन्वन्तरि कार्यालय) 1-2 गोली दिन में 3 बार जल से या दूध से दें। पक्षाघात तथा अन्य वात रोगों में उपयोगी है।

वातारि टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) मात्रा व लाभ उपर्युक्त हैं।

रूमालया टेबलेट (हिमालय ड्रग) मात्रा व लाभ उपर्युक्त हैं।

आर० कम्पाउन्ड (अलारसिन) मात्रा व लाभ उपर्युक्त हैं।

रीमानिल टेबलेट (चरक) सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त।

रूमेटिकाल टेबलेट (मार्तन्ड) सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त हैं।

वातान्तक कैपसूल (गर्ग बनौषधि) सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त हैं।

वात रोग हर कैपसूल (ज्वाला आयुर्वेद) सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त हैं।

वातारि कैपसूल (पंकज) सेवन विधि व लाभ उपर्युक्त हैं।

गस्ना घनसत्व टेबलेट व कैपसूल (गर्ग बनौषधि)।

पिण तिन्दुक वटी (झन्डू) आवश्यकतानुसार 1 से 4 पिल्स तक दिन में 2 बार दूध से सेवन करायें।

वातकन्टक कैपसूल (मिक्षा(1-2 कैपसूल दिन में 1-2 बार अथवा आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें।

रीमानी ललिनिमेन्ट (चरक) दिन में रोगग्रस्त स्तर पर 3-4 बार हलके हाथों से लगाकर सहलायें (मालिश करायें)

पान्डु (एनीमिया)

रोग परिचय—शरीर में खून की कमी के कारण होता है। शरीर में लौह (आयरन) कम हो जाने के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। लाल रक्त कण (R.B.C. रेड ब्लड सैल्स) कम हो जाते हैं तथा (W.B.C. व्हाइट ब्लड सैल्स) श्वेतकणों की वृद्धि हो जाती है। फलस्वरूप रोगी दुबला, पतला, कमजोर हो जाता है तथा उसके चर्म का रंग पीला-पीला दिखलाई देने लगता है। जीभ तथा आँख के पलकों के अन्दर कोये तथा हाथ-पैर के नाखूनों में खून की कमी (लाल कणों की कमी) के कारण सफेद-सफेद सा रंग दिखलाई पड़ने लगता है। रोगी को खुजली सी महसूस होती है तथा चक्कर भी आते हैं।

उपचार

● टमाटर के 100 ग्राम रस में 3 ग्राम काला नमक मिलाकर नित्य सुबह-शाम पिलाने से पान्डु रोग में लाभ होता है।

● इमली की छाल की काली भस्म 10 ग्राम तक बकरी के मूत्र में मिलाकर नित्य सेवन कराना पान्डु रोग में अत्यधिक लाभप्रद है।

● एक केले पर भीगा चूना लगाकर रात्रि के समय बाहर ओस में रखकर प्रातःकाल इस केले को छीलकर खाने से पान्डु रोग में लाभ होता है।

● निशोथ चूर्ण 10 रत्ती और गोखरू चूर्ण 5 रत्ती दोनों को एकत्र खरल कर 3 पुड़िया बनाकर दिन में 3 बार गरम जल से सेवन करना लाभप्रद है।

● नीबू का रस 10 ग्राम, खान्ड 20 ग्राम, खाने वाला सोडा 4 रत्ती तथा नौसादर 2 रत्ती का मिश्रण कर 10 ग्राम ताजा पानी मिलाकर सुबह व शाम नित्य सेवन करने से पान्डु रोग में लाभ होता है।

● बबूल के छाया-शुष्क फूलों को खरल कर उसमें सममात्रा में मिश्री मिलाकर (मिश्री के अभाव में खान्ड मिला सकते हैं) इसे 5 से 10 ग्राम तक की मात्रा में ताजे जल के साथ सेवन कराने से पान्डु रोग में लाभ होता है।

● बिडंग, त्रिफला, त्रिकटु, दारू हल्दी का चूर्ण एवं मान्डूर भस्म और लौह भस्म (प्रत्येक 1-1 भाग लेकर) एकत्र कर खरल कर लें। इसे 1 से डेढ़ ग्राम तक लें और घृत व मधु (विषम मात्रा) में मिलाकर सेवन करने से पान्डु रोग नष्ट हो जाता है।

● बेल के ताजे पत्तों के ढाई से 5 ग्राम तक रस में 1 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन कराने से पान्डु रोग नष्ट हो जाता है।

● मूली का स्वरस (पत्तों सहित) निकालकर दिन में 20-20 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन 3 बार पीने से पान्डु रोग में लाभ होता है अथवा मूली स्वरस 60 ग्राम में 40 ग्राम शक्कर मिलाकर पीने से पान्डु रोग नष्ट हो जाता है।

● कड़वे नीम के पत्तों को पानी में पीसकर रस निकाल लें। उस रस में मिश्री मिलाकर गरम कर तदुपरान्त शीतल करके पान्डु रोगी को सेवन कराना अत्यधिक लाभप्रद है।

● पुरानी इमली को भिगोकर उसका निथरा पानी पीने से पीलिया (पान्डु) रोग दूर हो जाता है।

● शहद का शरबत दिन में 3 बार नित्य पीने से रक्ताल्पता (खून की कमी) दूर होकर पान्डु रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—अधिक तीक्ष्ण दाहक पदार्थों के सेवन के फलस्वरूप जब यकृत् की क्रिया बिगड़ जाती है और पित्त आमाशय में न जाकर रक्त में मिलने लगता है तब वह रक्त के स्वाभाविक रंग को बदल कर पीला कर देता है। इसे ही आयुर्वेद मतानुसार पान्डु या पीलिया कहा जाता है।

अत्यधिक अम्लीय पदार्थ खाने, अत्यधिक मद्यपान करने, अत्यधिक मैथुन करने आदि कारणों से वात पित्त आदि कुपित होकर रक्त को विकृत कर त्वचा के रंग को पीला कर देते हैं। फलस्वरूप रोगी का मुख, नेत्र, नाखून और मूत्र का रंग पीला हो जाता है। पान्डु हो जाने पर मन्दाग्नि, दुर्बलता, अनिद्रा, भ्रम, थकान, ज्वर, शरीर में भारीपन, कानों में शब्द होना इत्यादि लक्षण प्रकट हो जाते हैं। मुख का स्वाद बिगड़ जाना, शरीर काँपना, शरीर पर सूजन हो जाना इत्यादि उपद्रव हो जाते हैं।

● ताजे करेले को पीस छान कर उसका रस ढाई से 3 तोला तक रोगी को पिलायें। इससे 2-4 दस्त हो जायेंगे। फिर नित्य प्रति 8-10 दिनों तक यही प्रयोग करते रहने से पान्डु रोग ठीक हो जायेगा।

● कुटकी का चूर्ण 6 माशे को 2 से ढाई तोला तक करेले के रस के साथ कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन करने से पान्डु रोग निश्चित ही नष्ट हो जाता है। करेले में विटामिन सी, लौह, कैल्शियम, फॉस्फोरस इत्यादि खनिज लवणों की विद्यमानता है, अतः यह यकृत की क्रिया को सुधारता है।

● हल्दी के चूर्ण 3 ग्राम की फंकी लगाकर गाय के दही का मट्ठा पीने से पीलिया नष्ट हो जाता है। गरम वस्तुओं एवं नशीले पदार्थों का सेवन त्याग

दें तथा ब्रह्मचर्य का पालन करें। स्वादिष्ट भोजन भी भरपेट न खायें, किन्तु भूखे भी न रहें। भूख लगने पर उचित पदार्थ अवश्य खायें, किन्तु मिर्च मसालों तथा उत्तेजक वस्तुओं का सेवन न करें।

● यदि जिगर की खराबी अथवा पीलिया या कामला (जान्डिस) के कारण आँखें पीली हों तो—हल्दी घिसकर सलाई से काजल की भाँति लगाया करें। तुरन्त लाभ मिलेगा।

पान्डु नाशक कुछ पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

लिवोमीन टेबलेट (चरक फार्मेस्युटिकल्स) 1-2 गोली दिन में 2-3 बार दें। यकृत् विकार जन्य पान्डुरोग में उपयोगी है। बच्चों के लिए ड्राप्स तथा सीरप भी उपलब्ध है।

लिव 52 (हिमालय) 1-2 गोली दिन में 2-3 बार दें। लाभ उपर्युक्त।

लिवाट्रीट टेबलेट (झन्डू) सेवन विधि मात्रा एवं लाभ उपर्युक्त। इसका प्रवाही क्वाथ भी आता है तथा सीरप भी उपलब्ध है।

लीवरबून टेबलेट (मार्तन्ड) मात्रा व लाभ उपर्युक्त। इसका सीरप भी आता है।

एल्फा टेबलेट (गैम्बर्स लेबो०) मात्रा उपर्युक्त। रक्तक्षय, पान्डु तथा अन्य प्रकार की दुर्बलताओं में उपयोगी है।

पाण्डुहारी कैपसूल (गर्ग बनौ०) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

पाण्डुनौल कैपसूल (ज्वाला आयु०) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

द्राक्षालौह कुमारी (धन्वन्तरि कार्या०) 2-4 चम्मच समान मात्रा में जल मिलाकर, भोजनोपरान्त दें। पान्डु नाशक अति उत्तम पेय है। क्षुधा बढ़ाता है तथा यकृत एवं आन्त्र की क्रिया को सामान्य अवस्था में लाता है।

एनर्जी प्लेक्स सीरप (मार्तन्ड) 1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार दें। पान्डु रोग तथा दुर्बलताजन्य विकारों में उपयोगी है। इसकी टेबलेट भी आती है।

शंखद्रव सीरप (झन्डू) 2 से 5 बूँद 1 औंस जल में मिलाकर प्रयोग करायें।

अतुल लिव सीरप (अतुल फार्मेसी) 2-2 चम्मच 3 बार दें। साथ में अतुल लिव 2 कैपसूल भी 1-1 खिलायें।

श्वेत प्रदर (Leucorrhoea)

रोग परिचय—यह स्त्रियों तथा पुरुषों दोनों को समान रूप से होता है। अन्तर मात्र इतना है कि स्त्रियों में होने वाले योनि से स्राव को ''प्रदर'' कहा जाता

है तथा पुरुषों को होने वाले स्राव को ''प्रमेह'' कहा जाता है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री के स्राव में अधिक दुर्गन्ध आती है। पुरुषों को यह मल-मूत्र त्याग के समय होता है जबकि स्त्री को यूं ही होता रहता है। पुरुषों का स्राव सफेद रंग का तथा स्त्रियों का स्राव विभिन्न रंगों का हो सकता है। मुख्यत: 2 रंग ही होते हैं श्वेत तथा लाल। इसी कारण यह श्वेत प्रदर तथा रक्त प्रदर के नाम से जाना जाता है।

उपचार

● 1-1 केला सुबह-शाम 6-6 ग्राम उत्तम घृत के साथ सेवन कराना श्वेत प्रदर में लाभप्रद है।

● जवासा का चूर्ण बनाकर 4 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम ताजा जल से सेवन कराने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

● दारु हल्दी के क्वाथ में शिलाजीत 3 ग्राम घोलकर पिलाने से मात्र 6 दिनों में श्वेत प्रदर रोग में लाभ हो जाता है।

● नागकेशर चूर्ण 40 ग्राम, सफेद राल व मुलहठी का चूर्ण 30-30 ग्राम तथा 100 ग्राम मिश्री मिलाकर खूब खरल कर 4 ग्राम की मात्रा में नित्य प्रात: सायं मिश्री मिले सुखोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के प्रदर रोगों में लाभ हो जाता है।

● पीपल का दूध 10 बूँद बताशे में डालकर देना अथवा बंशलोचन के चूर्ण में मिलाकर सेवन करना श्वेत प्रदर में अतीव गुणकारी है।

● विधारा के चूर्ण में समभाग शक्कर मिलाकर 10 ग्राम तक की मात्रा में ताजे जल के साथ सेवन कराना श्वेत प्रदर में लाभप्रद है।

● बेलगिरी, नागकेशर तथा रसौत समभाग का चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 3-4 ग्राम की मात्रा में चावल के धोवन के पानी के साथ खिलना श्वेत प्रदर में लाभकारी है।

● सुपारी को जलाकर उसका चूर्ण पोटली में भरकर योनि में रखने से गर्भाशय की दुर्बलता से होने वाले श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

● प्रदर का पतला स्राव होने पर हल्दी 2-3 ग्राम को रसौत के साथ तथा गाढ़ा स्राव होने पर गूगल के साथ सेवन कराना हितकारी है।

● प्रदर से पीड़ित रोगिणी को सिंघाड़े के आटे का हलुआ बनाकर खाना गुणकारी है।

● बेर की छाल का चूर्ण 3-3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गुड़ के साथ खाने से लाभ होता है।

● गर्भाशय शिथिलता के कारण जल की भांति पतला स्राव हुआ करता है। ऐसी परिस्थिति में मेंथी का चूर्ण 4-4 ग्राम गुड़ में मिलाकर कुछ दिनों तक खिलाने से तथा मैथी के चूर्ण की पोटली बनाकर योनि में धारण कराने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

● गूलर की छाल कूटपीस कर कपड़छन कर सममात्रा में मिश्री मिलाकर 1-2 ग्राम की मात्रा में दूध या जल से सेवन कराना श्वेत प्रदर में लाभप्रद है।

● चूहे की मैंगनी, फिटकरी तथा नागकेशर इन सभी को सम मात्रा में मिलाकर पीस छानकर इस चूर्ण को 1-2 ग्राम की मात्रा में शहद में मिलाकर सेवन कराना श्वेत प्रदर में अत्यन्त लाभप्रद है।

● अशोक की छाल 125 ग्राम, संगजहार 25 ग्राम तथा मिश्री 50 ग्राम इन सभी को कूट-पीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रख लें। इस चूर्ण को 3-3 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन कराना श्वेत प्रदर में लाभप्रद है।

● बड़ी इलायची तथा माजूफल को समान मात्रा में लेकर दोनों के बराबर वजन के मिश्री मिलाकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इस चूर्ण को 2-2 ग्राम की मात्रा में ताजा जल से खाना श्वेत प्रदर को समूल नष्ट करने वाला होता है।

● बबूल की छाल 25 ग्रान को डेढ़ किलो जल में पकालें। जब जल 1 किलो शेष रह जाये तब उतार छानकर सुहाता-सुहाता जल से पिचकारी द्वारा योनि प्रक्षालन कराना प्रदर रोग में अत्यधिक लाभप्रद है।

● हाथी-दाँत का बुरादा, माजूफल, वंशलोचन (प्रत्येक 20-20 ग्राम) बारीक पीसकर कपड़छन करके 15 पुड़िया बनाकर रख लें। नित्य प्रति 1-1 पुड़िया बकरी के दूध के साथ (15 दिन) सेवन करना श्वेत प्रदर में लाभकारी है।

● पुरानी बोरी (टाट) की राख 50 ग्राम, शक्कर 50 ग्राम, छोटी इलायची, लाख, पीपल, शुद्ध (प्रत्येक 25-25 ग्राम) का चूर्ण बनाकर 1 से 2 ग्राम की मात्रा में ठण्डे पानी से सेवन कराने से श्वेत प्रदर नष्ट हो जाता है।

● त्रिबंग भस्म, प्रवालभस्म 10-10 ग्राम लेकर मक्खन, मलाई अथवा शहद के साथ 4-4 रत्ती की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन कराने से, चाहे कैसा भी श्वेत प्रदर हो अवश्य ही ठीक हो जाता है।

● सफेद सुरमा को महीन पीसकर सुरक्षित रख लें। इसे 4 रत्ती की मात्रा में शहद के साथ कुछ दिन सेवन करने से श्वेत प्रदर नष्ट हो जाता है।

● कतीरा 20 ग्राम, गोखरू बड़ा 20 ग्राम, सफेद कत्था 50 ग्राम, खड़िया

20 ग्राम को कूट पीसकर (चूर्ण बनाकर) 3-3 माशा की मात्रा में सुबह-शाम मिश्री मिले 250 ग्राम दुग्ध के साथ सेवन करने से श्वेत प्रदर मिट हो जाता है।

● चोबचीनी लकड़ी को कूटपीसकर छानकर सुरक्षित रख लें। इसे 3 से 6 ग्राम की मात्रा में 250 ग्राम गोदुग्ध के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में श्वेत प्रदर में आश्चर्यजनक लाभ हो जाता है।

● बड़ी इलायची तथा माजूफल दोनों को समभाग चूर्ण बनायें तथा इन दोनों के वजन के बराबर मिश्री मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसे 2-2 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम ताजे जल से सेवन कराने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

● चूहे की बीट (मैंगनी) 40 ग्राम तथा पुराना गुड़ 10 ग्राम दोनों को खरल करके बेर के समान गोलियाँ बना लें। सुबह-शाम 1-2 गोली कच्चे दूध के साथ सेवन करने से पुराने से पुराना प्रदर शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

● गुग्गुल, गिलोय तथा शुद्ध शिलाजीत (प्रत्येक 10-10 ग्राम) लेकर पहले गिलोय को कूटपीसकर कपड़छन कर लें। तत्पश्चात् अन्य दोनों औषधियों को मिलाकर लोहे के खरल में कूटकर 1-1 ग्राम की गोलियां बना लें। इन्हें नित्यप्रति सुबह-शाम 1-1 गोली जल के साथ सेबन करने से वातज प्रदर नष्ट हो जाता है। प्रदर के साथ जब कमर में दर्द तथा पैरों में हड़कल अधिक हो तो यह प्रयोग अति उत्तम कार्य करता है।

● गोंद कतीरा, गोंद ढाक, गोंद कीकर, गोंद सिम्बल (प्रत्येक 10-10 ग्राम) ईसवगोल की भूसी 6 ग्राम मिलाकर चूर्ण तैयार करें। इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में नित्य सुबह शाम बकरी अथवा गाय के दूध के साथ सेवन कराने से श्वेत प्रदर में अवश्य लाभ होता है। परीक्षित योग है।

● पठानी लोध, असगन्ध नागौरी तथा विधारा (प्रत्येक 100-100 ग्राम) को कूट पीसकर कपड़छन कर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में गो दुग्ध के साथ निरन्तर 40 दिनों के प्रयोग से श्वेत प्रदर अवश्य नष्ट हो जाता है।

● सतावर, असगन्ध, सफेद मूसली, रूमी मस्तंगी (प्रत्येक 24-24 ग्राम) चांदी के वर्क 6 ग्राम तथा मिश्री 120 ग्राम लें। सभी को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर 40 मात्रायें बना लें। यह चूर्ण 1-1 मात्रा नित्य सुबह-शाम गो दुग्ध से सेवन करायें। यह योग श्वेत प्रदर नष्ट कर दुर्बल रोगिणी को हष्ट-पुष्ट कर नया जीवन दान देता है परीक्षित है।

श्वेत प्रदर नाशक प्रमुख आयुर्वेदीय पेटेन्ट योग

मायरान टेबलेट (अलारसिन) **ल्यूकोल टेबलेट** (हिमालय ड्रग), **ल्यूकोरिन टेबलेट** (मार्तन्ड फार्मेस्यु०), **फैमीप्लेक्स टेबलेट** (चरक फार्मेस्यु०), **ल्यूको टेबलेट** (प्रताप फार्मा.), **स्त्रीरजन टेबलेट** (गैम्बर्स लैबो.), **प्रदरान्तक कैपसूल** (गर्ग बनौ.), **ल्यूकोना कैपसूल** (ज्वाला आयु.), **ल्यूकोसूल** (पंकज फार्मा.), **श्वेत प्रदरान्तक चूर्ण** (गर्ग बनौ.), **हेमपुष्पा** (राजवैद्य शीतलप्रसाद एण्ड सन्स, चांदनी चौक, दिल्ली), **अबलारी** (डाबर), **स्त्रीसुधा** (धन्वन्तरि कार्या.), **अशोका कार्डियल फोर्ट** (गर्ग बनौ.), एम-2 टोन पेय (चरक), **अबला सुधा** (मोहता रसायनशाला), **स्त्री कल्याण सुधा** (ज्वाला आयु.), **ल्यूकोरिल** (पंकज फार्मा.), **वनितामृत** (त्रिमूर्ति), **सामिनी कार्डियल** (मार्तन्ड) **ओवोयूटोलिन** (झन्डू), **महिला कल्प** (भजनाश्रम), **गृहलक्ष्मी** (देशरक्षक), **श्वेत प्रदरान्तक कैपसूल** (श्वेत तथा रक्त प्रदर में लाभकारी, अतुल फार्मेसी), एफ. एम. सीरप (अतुल फार्मेसी), इत्यादि में से किसी एक का चुनाव कर औषधि के साथ मिले पत्रक के दिशा निर्देशानुसार अथवा स्वविवेक से पूर्ण आयु व बल को ध्यान में रखते हुए उचित अनुपान के साथ व्यवहार करें। आरोग्य सुन्दरी (धन्वन्तरि कार्या.) का प्रयोग श्वेत स्राव, रक्त स्राव, मासिकधर्म की अनियमितता तथा निर्बलता में लाभप्रद है।

जीवक प्लस टॉनिक (निर्माता मुल्तानी फार्मास्यु. लि. 36 कनाट प्लेस, नई दिल्ली 110001) शुद्ध रक्त का निर्माण कर स्त्रियों को सुन्दर बनाता है। घबराहट, उत्तेजना, भूख न लगना, चिड़चिड़ापन, हथेली, तलवों में जलन, कमर, पेट में दर्द, शारीरिक व मानसिक थकावट को दूर कर नई उमंग-तरंग प्रदान करता है।

सुपारी पाक (धन्वन्तरि फार्मेसी, चन्दौसी) का सेवन मासिक धर्म को नियमित कर गर्भ धारण की शक्ति उत्पन्न करती है, अधिक आयु की स्त्रियाँ इसके नियमित सेवन से नव-युवतियाँ सी प्रतीत होने लगती हैं तथा प्रसवोपरान्त इसका सेवन अत्यन्त लाभप्रद है। प्रत्येक प्रकार के प्रदर रोग नाशक है।

प्रमेह

रोग परिचय—यह रोग वात-पित्त और कफ के दूषित हो जाने के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। इसमें मूत्र के साथ एक प्रकार का गाढ़ा-पतला विभिन्न रंगों का

स्राव निकलता है। इस रोग की यदि उचित चिकित्सा व्यवस्था न की जाये तो रोगी कुछ ही समय में हड्डियों का ढाँचा बन जाता है।

समस्त प्रकार के प्रमेह रोगों में पेशाब अधिक होना तथा पेशाब गन्दला होना रोग का प्रमुख लक्षण होता है। पेशाब के साथ या पेशाब त्याग के पूर्व अथवा बाद में वीर्यस्राव होना ही प्रमेह है।

अधिक दही, मिर्च-मसाला, कड़ुवा तेल, खटाई इत्यादि तीक्ष्ण और अम्ल पदार्थ खाने, घी, मलाई, रबड़ी इत्यादि मिठाइयां तथा बादाम, काजू आदि स्निग्ध और पौष्टिक पदार्थों का प्रयोग करते हुए शारीरिक परिश्रम न करने, दिन-रात सोते रहने, सदैव विषय-वासना (Sexul) कार्यों और विचारों में लिप्त रहने से प्रमेह रोग की उत्पत्ति होती है। प्रमेह हो जाने से वीर्य क्षीण होकर पुंसत्व (मर्दाना) शक्ति का ह्रास हो जाता है फलस्वरूप शरीर दिन प्रतिदिन क्षीण होता जाता है।

जब तक शुद्ध और सात्विक विचारों के साथ पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए प्रमेह या अन्य वीर्य विकारों का उपचार नहीं किया जाता, तब तक ये विकार नष्ट नहीं हो सकते। ये कटु सत्य है। खान-पान के नियम-संयम सहित विचारों की शुद्धता, प्रमेह आदि विकारों को दूर (नष्ट) करने हेतु अनिवार्य शर्त है।

उपचार

- 2 तोले करेलों के रस के साथ 1 तोला ताजे आँवलों का रस अथवा 6 माशे की मात्रा में आंवले का चूर्ण अथवा कच्ची हल्दी का रस या हरी गिलोय का रस 1 तोला मिलाकर सुबह शाम सेवन करते रहने से प्रमेह रोग में अवश्य लाभ होता है।
- आम की अन्तर छाल के 20 ग्राम रस में चूने का निथरा हुआ जल मिलाकर पिलाने से (इस मिश्रण को तैयार कर तत्काल ही पिलायें अन्यथा इसका प्रभाव कम हो जाता है) प्रमेह में विशेष लाभ होता है।
- कच्चे केले का चूर्ण 1-2 ग्राम की मात्रा में बराबर मिश्री मिलाकर सेवन करने से प्रमेह रोग में लाभ हो जाता है।
- ईसबगोल की भुसी 6 ग्राम तथा मिश्री चूण 10 ग्राम दोनों को मिलाकर फंकी लगाकर ऊपर से गाय का धारोष्ण दुग्धपान करना प्रमेह में लाभकारी है।
- तालमखाने के बीज का चूर्ण, खरैटी, गंगेरन तथा गोखरू को सम मात्रा में लेकर चूर्ण बनायें तथा इन सभी औषधियों के बराबर वजन में मिश्री का चूर्ण मिलाकर इस चूर्ण को 4 ग्राम की मात्रा में दूध के सेवन करायें। प्रमेह में लाभकारी है।

● नीम पत्र का स्वरस 20 ग्राम 10 ग्राम मधु मिलाकर नित्य सेवन करना प्रमेह रोग में हितकारी है ।

● बीज रहित छाया शुष्क बबूल की फलियों का महीन चूर्ण 1 भाग में 8वां भाग बबूल का गोंद मिलाकर सुरक्षित रख लें । इसे नित्य 6 ग्राम की मात्रा में खाकर ऊपर से 200 ग्राम गो दुग्ध गरम किया हुआ या धारोष्ण दूध में शक्कर मिलाकर पीने से वीर्य गाढ़ा होकर प्रमेह में लाभ हो जाता है ।

● बरगद के दूध की 1 बूँद बताशे में डालकर पहले दिन एक बताशा और दूसरे दिन 2 बताशे में बरगद का दूध इसी क्रम से प्रतिदिन 1 बताशा बढ़ाते हुए 21 बताशे में बरगद के दूध की प्रति बताशा 1 बूँद डालकर प्रयोग करें । फिर इसी क्रम से 1-1 बताशा कम करते हुए 1 बताशे व 1 बूँद बरगद के दूध पर आकर प्रयोग बन्द कर दें । यह प्रमेह नाशक विशेष उपयोगी योग है ।

● त्रिफले का पिसा कुटा एवं छना हुआ चूर्ण 10 ग्राम, पिसी हल्दी 3 ग्राम, शहद 10 ग्राम मिलाकर कई महीनों तक लगातार चाटने से प्रमेह रोग से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है । इस प्रयोग से असाध्य प्रमेह भी ठीक हो जाता है।

● नागौरी असगन्ध, विधारा दोनों को सम मात्रा में लेकर कूट पीसकर कपड़छन कर सुरक्षित रख लें । इसे 9 ग्राम की मात्रा में फांककर गाय का दूध मिश्री मिलाकर पीने से प्रमेह आदि सभी धातु विकारों में लाभ हो जाता है ।

● छोटी इलायची के बीज 6 ग्राम, वंशलोचन, दक्खिन गोखरू (प्रत्येक 6 ग्राम) ताल मखाना, चिकनी सुपारी, हजरत बेर, सालम मिश्री प्रत्येक 10-10 ग्राम तथा ईसबगोल की भूसी, सफेद जीरा, बेल गिरी प्रत्येक वजन से आधे अधिक वजन में मिश्री मिलाकर इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में 250 ग्राम धारोष्ण दुग्ध के साथ 20 दिन सेवन करने से प्रमेह तथा स्वप्नदोष में लाभ हो जाता है ।

● छुहारे 100 ग्राम, मिश्री 90 ग्राम, रूमी मस्तंगी 40 ग्राम तथा सफेद मूसली 20 ग्राम सभी को कूट पीस छानकर ऊपर औटा (उबला) हुआ दूध 1 चम्मच घृत मिलाकर पिलाना प्रमेह रोग में अतीव गुणकारी है ।

● नीम की भीतरी सफेद छाल 50 ग्राम लेकर कुचलकर रात को गर्म जल में भिगोकर सुबह को मलकर व कपड़े से छानकर थोड़ी मिश्री मिलाकर नियमित कुछ दिन पिलाने से प्रमेह नष्ट हो जाता है ।

● एक पके ताजे केले में 5 ग्राम के लगभग उत्तम घृत मिलाकर सुबह शाम कुछ दिनों लगातार सेवन करने से प्रमेह में लाभ हो जाता है ।

● एक अण्डे की जर्दी, ईसबगोल की भूसी 6 ग्राम, मधु 10 ग्राम, घृत 20 ग्राम लें । पहले घृत को गरम कर भूसी तथा शहद मिला लें, फिर अण्डे की जर्दी फेंटकर दूध मिलाकर सेवन करें । इस योग के 15 दिनों के प्रयोग से प्रमेह नष्ट हो जाता है ।

● तालमखाना 60 ग्राम, जायफल 30 ग्राम चूर्ण कर कपड़छन कर उन दोनों के वजन के बराबर मिश्री मिलाकर शीशी में सुरक्षित रख लें । इसे 3 से 10 ग्राम सेवन कराने से मूत्र के साथ आने वाली लार या थूक जैसी वस्तु आना शीघ्र ही बन्द हो जाती है । दूध से सेवन करायें ।

● हल्दी कुटी पिसी कपड़छन की हुई 4 ग्राम की मात्रा में लेकर शहद में मिलाकर सुबह-शाम चाटने से कुछ ही दिनों में असाध्य प्रमेह भी नष्ट हो जाता है । ऊपर से बकरी का दूध पियें । यदि बकरी का दूध न मिले तो गाय के दूध में हल्दी व शहद मिलाकर एक उबाल (आग पर) देकर (अधिक गरम न करें) पियें। 40 दिन सेवन करें ।

● शीशम के हरे पत्ते 20 ग्राम लेकर पानी में पीसकर मिश्री मिला कर ठण्डाई बनाकर पिलायें । पुरुषों का प्रमेह रोग तथा स्त्रियों का प्रदर (ल्यूकोरिया) रोग की रामबाण औषधि है । केवल 7 दिन में ही आश्चर्यजनक लाभ दिखाकर रोग जड़ से नष्ट कर देता है ।

● धनिया 50 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम दोनों को बारीक चूर्ण कर सुरक्षित रखें। इसमें से 6-6 ग्राम की मात्रा में प्रातःकाल सेवन करने से मात्र 1 सप्ताह में शुक्रगत ऊष्मा वीर्यस्राव (प्रमेह) एवं स्वप्नदोष आदि रोगों का नाश हो जाता है ।

● उड़द के काढ़े में 1 रत्ती भुनी हल्दी और 6 माशा शहद मिलाकर पीने से प्रमेह में लाभ हो जाता है ।

प्रमेह नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

स्पीमेन टेबलेट (प्लेन तथा फोर्ट) (हिमालय ड्रग) 2-2 गोली दिन में 3 बार जल अथवा दूध से दें । प्रमेह, स्वप्नदोष तथा धातु स्राव में उपयोगी है ।

फोर्टेज टेबलेट (अलारसिन) सेवनविधि तथा लाभ उपर्युक्त ।

बंगसिल टेबलेट (अलारसिन) सेवनविधि तथा लाभ उपर्युक्त ।

नियो टेबलेट (चरक) सेवनविधि तथा लाभ उपर्युक्त ।

शिलाजीत पिल्स या बी. एच. पिल्स (गैम्बर्स लैबो.) सेवन विधि तथा लाभ उपर्युक्त ।

मकरध्वज वटी (धन्वन्तरि कार्या.) 1-2 गोली दिन में 3 बार दूध से दें। प्रमेह नाशक, शक्ति वर्धक अति प्रसिद्ध निरापद औषधि है।

स्वप्ना चूर्ण (गर्ग बनौ.) 1-2 चम्मच दिन में 3-4 बार जल से दें। प्रमेह, स्वप्नदोष तथा धातुस्राव में उपयोगी है।

प्रमेह केसरी चूर्ण (जी. ए. मिश्रा) 1-2 कैपसूल दिन में 3-4 बार दें।

स्वप्नहरी टेबलेट (डाबर) 1-2 गोली दिन में 3 बार दूध से दें।

स्वप्नोजित वटी (धन्वन्तरि) 1-2 टिकिया प्रतिदिन गाय के दूध से दें। प्रमेह रोग व स्वप्न प्रमेह रोग में लाभप्रद है।

महा स्तम्भन वटी (मोहता रसायनशाला इण्डिस्ट्रीयल एस्टेट, हाथरस, अलीगढ़) प्रमेह नाशक तथा शक्ति वर्धक, नवीन स्फूर्तिदायक, शारीरिक सन्तुष्टि हेतु शीघ्र प्रभावकारी औषधि है। इसकी 1-1 टिकिया दूध से प्रयोग करें।

वीर्य प्रमेह हर कैपसूल (अतुल फार्मेसी विजयगढ़, अलीगढ़) 1-1 कैपसूल अतुल पावर के साथ सेवन करायें। यह औषधि वीर्य को गाढ़ा कर प्रमेह को दूर करती है तथा इसी फार्मेसी द्वारा निर्मित कैपसूल अतुल पावर पौरुष शक्ति तथा स्तम्भन हेतु प्रसिद्धि-प्राप्त है। सुबह-शाम दिन में 2 बार प्रयोग करें।

शिलाजीत कैपसूल (डाबर) रोग दूर कर यौवन शक्ति बनाये रखता है।

अग्नि-दग्ध (Burns)

रोग परिचय—इसमें रोग परिचय की आवश्यकता नहीं है। किसी कारणवश (लापरवाही के फलस्वरूप) आग से अथवा गरम पदार्थों से जल जाने की दुर्घटनाऐं घटित हो जाती हैं जिसके फलस्वरूप रोगी को पीड़ा, जलन की तकलीफ के साथ ही साथ जख्म (घाव) का शिकार बनना पड़ जाता है।

उपचार

- गाजर को पीसकर जले हुए स्थान पर लगाने से दाह की शान्ति होती है तथा फफोले नहीं पड़ते हैं।
- केले के गूदे को फेंटकर एक स्वच्छ कपड़े पर मोटा-मोटा लेप करके अग्नि से जले हुए स्थान पर रखने से जलन शीघ्र ही दूर हो जाती है तथा व्रण नहीं बनता है।
- करेले के रस को जले हुए स्थान पर वस्त्र भिगोकर रखने से दाह की शान्ति होती है।
- जले हुए स्थान पर आलू को काटकर उसकी लुगदी बनाकर जले हुए

स्थान पर लगाने से जलन शीघ्र शान्त हो जाती है तथा दाग नहीं पड़ता है।

- बबूल के गोंद को जल में घोलकर अग्निदग्ध स्थान पर लेप करने से तत्काल जलन दूर होकर घाव दूर हो जाता है।
- जले हुए स्थान को तुरन्त ठण्डे जल में भिगोकर रखना चाहिए। ऐसा प्रयोग तब तक करें जब तक कि जले हुए स्थान की जलन पूर्णरूपेण शान्त न हो जाये। यदि पानी गरम हो जाये तो उसे बदल दें। इस प्रयोग से न तो फफोला पड़ेगा और न ही घाव ही होगा। उस स्थान के स्वस्थ हो जाने पर कोई निशान भी न रहेगा।
- मैथिलेटेड स्प्रिट में नीबू का रस निचोड़कर मिला दें। इसे अग्निदग्ध पर तुरन्त लगाने से जलन शान्त होती है तथा फफोले नहीं पड़ते हैं।
- असली हींग पानी में घोलकर मुर्गी के पर से जले हुए स्थान पर दिन में 2-3 बार लगाने से जलन शीघ्र दूर होकर छाला नहीं पड़ता है।
- इमली की लकड़ी को जलाकर राख बनालें तथा कपड़छन कर नारियल के तैल में मिलाकर जले हुए स्थान पर 2-3 बार लगाने से गम्भीर अग्निदग्ध भी ठीक हो जाते हैं।
- अनार की पत्तियों को पीसकर दग्ध स्थान पर लगाने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।
- शहद तथा नमक दोनों को एक साथ मिलाकर आग पर अच्छी तरह से गरम करके जले स्थान पर लेप लगा देने से तत्काल समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं तथा फफोले नहीं पड़ते हैं।
- जले स्थान पर तुरन्त मधु का लेप करना लाभप्रद है। जलन शान्त होने के बाद जब तक घाव अच्छा न हो तब तक मधु का लेप लगाते रहना चाहिए।

नोट—आग से जले जख्म के सफेद निशान को मिटाने के लिए भी उस पर मधु का फोहा रखना चाहिए (मधु के निरन्तर लेप से जले स्थान की चमड़ी स्वाभाविक वर्ण की हो जाती है।)

- अग्निदग्ध के स्थान पर गाय या भैंस का ताजा गोबर लगाने से तुरन्त ही जलन एवं पीड़ा शान्त हो जाती है।
- उपयोग किये गये बेकार बैटरी/टार्च सैल को तोड़कर काला पाउडर कपड़छन कर सुरक्षित रखें। जले हुए स्थान पर इसी पाउडर को छिड़कें। यदि दग्ध स्थान सूखा हो तो नारियल के तैल में इस पाउडर को मिलाकर लगाना लाभप्रद है।
- टमाटर की हरी पत्तियों का रस अग्निदग्ध में लगाते ही जलन और पीड़ा में तत्काल शान्ति मिलती है।

● किसी गरम बरतन अथवा धातु से जलने पर (जिसमें व्रण न बन कर अंगपीड़ा, दाह, झनझनाहट सी होती है) छाछ (मट्ठा) में 10-5 मिनट दग्ध स्थान डुबोये रखने से आराम हो जाता है। बाद में किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होती है। यदि व्रण (जख्म) सा भी हो जाये (जलने के कारण) तब भी तुरन्त ही जले स्थान को छाछ में डुबो देना परम हितकारी है।

● शक्कर 100 ग्राम, नमक 12 ग्राम, पानी 125 ग्राम में घोलकर लोशन बना लें और कपड़े पर लगाकर दग्ध स्थान पर लगा दें तथा 2-3 बार बदल दें। तुरन्त जलन शान्त होगी और घाव नहीं बनेगा।

● नारियल का तैल, अलसी का तैल तथा गाय का घृत (प्रत्येक 10-10 ग्राम) तथा कर्पूर व मोम 3-3 ग्राम लें। इन सभी को सुलगते हुए कोयलों की आंच पर (किसी पात्र में रखकर) थोड़ी देर रख कर फिर उतार लें। यह मलहम बन जाएगा। अग्निदग्ध का चाहें कैसा भी व्रण हो, इसके लगाने से अवश्य भर जाता है।

● नारियल का तैल 100 ग्राम तथा इतना ही चूने का निथरा हुआ पानी एवं कपूर 3 ग्राम लें चूना 250 ग्राम लेकर 500 ग्राम पानी में डाल दें। एक बड़ी बोतल में भरकर खूब हिलायें और हिलाकर छोड़ दें। तदुपरान्त 12 घंटे बाद बोतल को बगैर हिलाये बोतल में से चूने का पानी (ऊपर का) पानी 100 ग्राम निकाल लें फिर इसमें कोकोनेट ऑयल 100 ग्राम डालकर अन्य (दूसरी) बोतल में डालकर इतना हिलायें कि लोशन बन जाए। फिर इसी में कपूर भी बारीक कर पीसकर मिला दें। जब भी आवश्यकता हो बोतल को हिलाकर यह लोशन काम में लें। यह अग्निदग्ध हेतु अतीव गुणकारी है। अग्निदग्ध के व्रणों में भी गुणकारी है। दाह का शमन कर जल्द ही व्रण का रोपण करता है।

● तारपीन का तैल तथा कपूर दोनों को बराबर मिलाकर एकरस कर लें और एक शीशी में बन्द करके सुरक्षित रख लें। इसे अग्निदग्ध (जलने के) व्रणों (जख्मों) पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

अग्निदग्ध नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

दग्ध नौल मलहम (गर्ग बनौषधि भंडार), **हीलर मलहम** (बैद्यनाथ), **त्र्यम्बक मलहम** (राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड सन्स), **वर्नकटर** (ज्वाला आयु०), **वर्न क्रीम** (देवेन्द्राश्रम), **सप्त गुड़ तैल** (वैद्यनाथ)—यह सभी मलहम व तैल जलन

को तुरन्त मिटाते हैं तथा फफोले नहीं पड़ने देते हैं। क्रम सं० 6 पर उल्लिखित बैद्यनाथ का सप्तगुण तैल जलने के अतिरिक्त कीड़े-मकोड़ों का दंश तथा चोट आदि में भी उपयोगी है।

आधासीसी अर्द्धावभेदक (Migraine)

रोग परिचय—इस रोग को सूर्यावर्त्त भी कहा जाता है। इस रोग में आधे सिर का दर्द प्रतिदिन सुबह सूरज निकलते ही आरम्भ हो जाता है। जैसे-जैसे सूरज चढ़ता जाता है, दर्द बढ़ता जाता है किन्तु जैसे ही दोपहर के बाद सूरज पश्चिम की ओर ढलना (डूबना) शुरू होता है, दर्द में कमी होती जाती है और अन्तत: सिरदर्द रात को नहीं होता है।

उपचार

● तम्बाकू के पत्ते तथा लौंग सम भाग लें। पानी के साथ पीसकर मस्तक पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से अर्द्ध मस्तक-शूल में लाभ हो जाता है।

● तिल 2 ग्राम तथा बायबिडंग 1 भाग, दोनों को जल में पीसकर थोड़ा गरम करके मस्तक पर लेप करना अर्ध मस्तक शूल में लाभकारी है।

● लौंग 6 ग्राम को बारीक पीसकर पानी में घोलकर लेही जैसी तैयार कर थोड़ा सा गरम करके कनपटियों पर लगाने से आधासीसी में लाभ होता है।

● चीनी और दूध को सम मात्रा में मिलाकर नाक द्वारा सूंतने से अर्द्धावभेदक तथा अन्य शिर:शूल में लाभ होता है।

● लहसुन को छीलकर खरल में डालकर पीसें। फिर किसी बारीक मलमल के कपड़े से छानकर 10 ग्राम रस निकालकर उसमें 6 रत्ती हींग डालकर पुन: खरल करें। जब अच्छी तरह रस व हींग घुल जाए तो शीशी में रख लें। आधाशीशी के दर्द में आवश्यकता के समय रोगी के जिस ओर दर्द होता हो, उसी ओर के नाक के नथुने में 3 बूँद रस (औषधि) टपकायें। लाभप्रद योग है।

● सूर्यमुखी के बीजों को सूर्यमुखी के स्वरस में ही मिलाकर पीसें। सूर्योदय से पूर्व इसका लेप करने से आधासीसी में लाभ होता है।

● अकरकरा की लकड़ी छील कर सिर के जिस ओर में दर्द हो उसी ओर की दाड़ से चबाने से तत्काल आधासीसी का दर्द बन्द होता है।

● स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) का स्वरस कपड़छन कर 3-4 बूंद नाक में टपकाने से आधासीसी का दर्द शान्त हो जाता है।

● प्रातःकाल शौचादि निवृत्त हो, एवं हाथ-मुँह धोकर भुने हुए गरम-गरम चने चबाने से 2-3 दिन में ही आधासीसी का दर्द भाग जाता है।

● छनी हुई कन्डों की राख में आक के दूध की भावना देकर सुखाकर शीशी में सुरक्षित रख लें। रोगी के सिर में जिस ओर दर्द हो, उसी ओर के नथुने से उसे नस्म की तरह सुंघाने से छींके आ-आकर आधासीसी का दर्द सदैव के लिए ठीक हो जायेगा।

● नौसादर 1 ग्राम तथा गुलाबजल 10 ग्राम लेकर शीशी में मिलाकर सुरक्षित रख लें। रोगी को ऐसे खटिया (चारपाई) पर लिटायें कि उसका सिर (सिरहाने से) कुछ नीचे लटका हुआ रहे। फिर उक्त औषधि ड्रापर से 5-6 बूँद नाक के नथुनें में भली प्रकार डालें। इसके प्रयोग से नाक के नथुनें से पानी टपकने लगेगा और 5-10 मिनट में ही आधासीसी का रोग ठीक हो जायेगा।

● सरसों का तैल 6 भाग तथा तारपीन का तैल 1 भाग मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसकी 4-6 बूँदें नाक में ड्रापर से टपकायें और मुँह को नीचा कर दें। इस प्रयोग से पूय, कृमि आदि जो भी होगा वह बाहर निकल जायेगा और आधा सीसी का दर्द तत्काल बन्द हो जायेगा।

● सूर्योदय से पूर्व लगभग 25 ग्राम की मात्रा में चावल की खील शहद के साथ खिलाकर रोगी को सुलाना अर्द्धावभेदक में लाभकारी है।

● नयी सौंफ तथा धनिया सम मात्रा में लेकर महीन पीसकर इसके बाद इसमें इतनी ही मिश्री मिलाकर (मीठा हो जाना चाहिए) मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसे दिन में 3 बार 1-1 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करने से आधासीसी तथा अन्य शिरःशूलों में लाभ होता है।

● कपूर (उत्तम) 1 ग्राम तथा गोदुग्ध का खोवा (मावा) 50 ग्राम को पीसकर 3 लड्डू बनाकर एक लड्डू सूर्योदय से पूर्व तथा 1 लड्डू सूर्यास्त के बाद रोगी को खिलायें, 1 लड्डू दोपहर के समय चौराहे पर रखवा दें। इस प्रकार नित्य 3-4 दिन के प्रयोग से आधासीसी का दर्द सदैव के लिए मिटेगा।

● हरे कच्चे अमरूद को प्रातःकाल पत्थर पर घिसकर कल्क तैयार कर कपाल पर जहाँ दर्द हो वहाँ लगा दें। इससे 2-3 घण्टे में आधासीसी का दर्द शान्त हो जाता है। एक दिन के प्रयोग से लाभ न हो तो प्रयोग दूसरे दिन भी करें।

● देसी घी की ताजा गरम-गरम जलेबी सूर्योदय से 2 घंटे पूर्व दूध के साथ खिलाने से आधासीसी में अवश्य लाभ हो जाता है।

● स्वच्छ नौसादर को पीसकर सुरक्षित रख लें। इसे 1 ग्राम की मात्रा में सूर्योदय से 1 घंटा पूर्व जल के साथ सेवन कराने से अर्द्धावभेदक तथा अन्य शिरःशूल नष्ट हो जाते हैं।

● काली मिर्च और जौ दोनों को सम मात्रा में लेकर तवे पर भूनें। जब वे काली राख के समान हो जायें, तब पीसकर शीशी में सुरक्षित रख लें। इसे 1-1 रत्ती की मात्रा में प्रत्येक 4-4 घंटे पर ताजे जल से सेवन कराने से आधासीसी का दर्द अवश्य नष्ट हो जाता है।

● गाय का ताजा घी सुबह शाम नाक में चढ़ाने से नाक से खून गिरना तथा आधासीसी रोग जड़मूल से नष्ट हो जाता है।

● सिर में जिधर आधासीसी का दर्द हो, उधर के नथुने में 10 बूँद कड़वा तैल डालकर सुंघा देने से दर्द एकदम बन्द हो जाता है। दो-चार दिनों के इस प्रयोग से इस रोग से सदा के लिए मुक्ति मिल जाती है।

● जिस ओर दर्द हो उस ओर के कान में कागजी नीबू के रस की 3-4 बूँदें डालने से आधासीसी का दर्द तत्काल मिट जाता है।

● काली मिर्च पानी में घिसकर जिस ओर दर्द हो उससे (विपरीत) आँख में लगादें। यह दवा आँख में लगेगी तो बहुत, किन्तु आधासीसी का दर्द एक ही बार के प्रयोग से भाग जायेगा और जीवन में दोबारा नहीं होगा।

● सूर्योदय से पूर्व काली स्याही (जिससे बच्चे प्रारंभ में लिखना शुरू करते हैं) सलाई द्वारा आँखों में लगाने से आधासीसी का दर्द शर्तिया नष्ट हो जाता है।

● आधे सिर के दर्द में नथुनों में अदरक के रस की 2-3 बूँदें 2-2 घंटे के बाद डालने से अवश्य आराम होता है।

आधासीसी नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

सर्पेन्धिन टेबलेट (मार्तन्ड) 1-2 गोली दिन में 2-3 बार दें। यह आधासीसी नामक उत्तम औषधि है। इसके अतिरिक्त अपस्मार व आक्षेप में भी लाभप्रद है।

सरबाइना स्ट्रांग (डाबर) मात्रा उपर्युक्त। सिरदर्द के अतिरिक्त अन्य दर्दों में भी लाभप्रद है।

दर्दोना टेबलेट (बैद्यनाथ) मात्रा तथा लाभ उपर्युक्त।

दर्दनाशक टेबलेट (बैद्यनाथ) मात्रा तथा लाभ उपर्युक्त।

ए. पी. सी. एम. टेबलेट (देशरक्षक) मात्रा तथा लाभ उपर्युक्त।

शूल केसरी कैपसूल (मिश्रा) 1-2 कैपसूल आवश्यकतानुसार दें।

पीड़ाहर टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 2-2 टिकियाँ दिन में 2-3 बार अथवा आवश्यकतानुसार दें।

हैप्पीलेक्स टेबलेट (मेहता) कब्ज के कारण आधासीसी हो तो 2 गोली रात को सोते समय गर्म पानी से सेवन करायें।

ब्राह्मी तेल (झन्डू) मस्तिष्क को शीतल रखता है तथा आधासीसी में लाभप्रद है। सुबह-शाम सिर में मालिश करायें।

पेन बाम (बैद्यनाथ) भयानक सिरदर्द में पीड़ा के स्थान पर मलें।

देशरक्षक नस्य (देशरक्षक) नाक में 4-6 बूँद दिन में 2-3 बार डालें इसे सूंघने से सिरदर्द व जुकाम (प्रतिश्याय) में भी लाभ होता है।

कैलसीसत्व कैपसूल (अतुल फार्मेसी) बुखार के बाद की कमजोरी, क्षय रोग, नजला, जुकाम, दाँतों के रोग, पुरानी खाँसी इत्यादि को भी दूरकर वजन बढ़ाने वाली कैल्शियम की पूर्तिकारक उत्तम औषधि है।

अनिद्रा (नींद न आना)

रोग परिचय—यह स्वयं में कोई रोग नहीं है, बल्कि शरीर में उत्पन्न हो रहे अथवा उत्पन्न हो चुके अन्य दूसरे रोगों का एक विकार (लक्षण) मात्र है।

उपचार

● भांग को बकरी के दूध में पीसकर पैर के तलुओं पर मालिश करने से अथवा पलकों पर लेप करने से उत्तम निद्रा आती है।

● स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) के तैल की 1 बूंद बताशे में डालकर खिलाने तथा ऊपर से दूध पिलाने से अनिद्रा दूर हो जाती है।

● बैंगन के पत्तों का रस 20 ग्राम, इतना ही सफेद प्याज का रस और शहद 15 ग्राम एकत्र मिलाकर रात्रि के समय सोने से 1 घंटा पूर्व देकर ऊपर से थोड़ा दूध पिला देने से गहरी नींद आती है तथा स्नायु मण्डल का तनाव कम हो जाता है।

● सर्पगन्धा का चूर्ण अथवा खुरासानी अजवायन 1-1 ग्राम रात्रि-शयन के पहले दूध से ले लेने से निद्रा भली प्रकार आती है।

● सौंफ 6 ग्राम, पानी 40 ग्राम लेकर क्वाथ करें। जब पानी 10 ग्राम शेष रह जाये तो उसमें 1 पाव गाय का दूध और 10 ग्राम गाय का घी मिलाकर पिलाने से अनिद्रा में लाभ होता है।

● सर्पगन्धा तथा काली मिर्च दोनों सम मात्रा में लेकर अलग-अलग कूट

पीसकर सुरक्षित रखें। इसे 250 मि. ग्रा. कैपसूल में भरकर 2 कैपसूल रात्रि में सोते समय दूध या जल से अनिद्रा में सेवन कराना लाभप्रद है।

● भैंस का दूध 300 ग्राम, इतना ही पानी, एक साल पुराना गुड़ एवं 10 ग्राम पीपरामूल मिलाकर औटाकर दूधमात्र शेष रह जाने पर पिलाने से तत्काल निद्रा आती है।

● असगन्ध का चूर्ण 6 ग्राम तथा थोड़ा सा घी लें। इसे शक्कर (चीनी) में मिलाकर प्रतिदिन रात्रि को सेवन करने से थकावटजन्य अनिद्रा दूर होती है। इस प्रयोग से प्रगाढ़ निद्रा आती है।

● हरमल 2 ग्राम को शहद के साथ लेने से रात्रि को निद्रा आती है।

● शंखपुष्पी और अश्वगन्धा चूर्ण 3-3 ग्राम, घी तथा मिश्री मिलाकर सेवन करने से अनिद्रा में लाभ होता है।

● एरन्ड तैल को दीपक में जलाकर उससे काजल तैयार कर आँख में आँजने से अनिद्रा दूर हो जाती है।

● सौंफ 6 माशा जौकुट करें, पानी 40 तोला लेकर क्वाथ करें। 10 तोला शेष रह जाने पर नमक मिलाकर सुबह-शाम पिलाने से (यह एक मात्रा है) अति-निद्रा (अधिक नींद आने का) रोग ठीक हो जाता है।

● हरे धनिये का स्वरस निकाल कर 25 मि. ली. में 10 मि. ग्रा. मिश्री मिलाकर पिलाने से गैस रोग से पीड़ितों को अनिद्रा रोग नष्ट होकर सुखद निद्रा आने लगती है।

● खुरासानी अजवायन का क्वाथ (क्वाथ विधि से) बनाकर नित्य ढाई-ढाई तोला में सुबह-शाम पिलाने से कम्पवात, अनिद्रा, भ्रम, मिर्गी, योषापस्मार एवं सन्धिवात दूर हो जाते हैं।

अनिद्रा नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

सरपिन टेबलेट (हिमालय ड्रग) आधी से 1 गोली दिन में 3 बार अथवा रात्रि को सोने से पूर्व 1-2 गोली दें। यह अनिद्रा नाशक उत्तम औषधि है। रक्तदाब (ब्लड प्रेशर) भी कम करती है।

साइलेडिन टेबलेट (अलारसिन) दिन में 2-3 बार 2-2 टेबलेट (अन्तिम मात्रा सोते समय लें) लाभ उपर्युक्त की भाँति।

ब्राह्मी घनसत्व टेबलेट (गर्ग बनौ०) दिन में 2-3 बार 1-2 गोली दें। अनिद्रा-नाशक औषधि है । मस्तिष्क-जन्य उष्णता भी कम करती है ।

निद्राशी (धन्वन्तरि कार्या०) सिर पर मालिश हेतु यह तैल अनिद्रा एवं सिर चकराना आदि में अत्यन्त लाभकारी है ।

दिमाग दोषहरी (देशरक्षक) 1-2 गोली दिन में 3 बार दें । स्नायुपुष्टि-कारक है तथा बिना नशा तीव्र नींद लाने वाली औषधि है ।

निद्रायनी शुगर कोट टेबलेट (झन्डू) मात्रा व लाभ उपर्युक्त ।

सीरप शंखपुष्पी (ऊंझा व बुन्देलखण्ड) 2-2 चम्मच सुबह-शाम दूध में मिलाकर दें । अनिद्रा दूर करता है तथा मस्तिष्क का टॉनिक है ।

ब्राह्मी शंखपुष्पी सीरप (गर्ग बनौ.) मात्रा लाभ उपर्युक्त ।

सर्पगन्धा घनसत्व कैपसूल (अतुल फार्मेसी) अनिद्रा तथा रक्तचाप वृद्धि में अति उपयोगी महौषधि है ।

अपस्मार (मिर्गी) Epilepsy

रोग परिचय—यह अंग्रेजी में (Epilepsy) तथा हिकमत में सरा और आयुर्वेद में अपस्मार तथा साधारणतय: आम बोलचाल में मिर्गी के नाम से जाना जाता है । यह रोग सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम (केन्द्रीय तन्त्रिका संस्थान) अर्थात् मस्तिष्क से सम्बन्ध रखता है । इस रोग में मस्तिष्क के तन्त्रिका में गड़बड़ी हो जाती है। इस रोग में रोगी बेहोश हो जाता है और शीघ्र अथवा देर से दौरे पड़ते रहते हैं। उचित चिकित्सा व्यवस्था के अभाव में कई रोगियों को इसके दौरे जीवनभर पड़ते रहते हैं । मस्तिष्क की शोथ (Encephalitis) मस्तिष्क का भली भाँति पोषण न होने के कारण अर्थात् पूर्ण रूप से मस्तिष्क की रचना न होने पर अथवा किसी विषैली औषधि के प्रयोग से मस्तिष्क के तन्त्रिका में विष फैल जाने से, अथवा मस्तिष्क में अर्बुद (टयूमर Tumour) या फोड़ा हो जाने पर मिर्गी के दौरे पड़ने लगते हैं ।

नोट—अकारण आने वाले मृगी के दौरे को अंग्रेजी में इडियोपैथिक लैप्सी तथा लाक्षणिक मृगी को (Symptomatic Epilepsy) कहते हैं तथा इनके दौरे (FITS) को मामूली दौरे जो Petitmal तथा सख्त और तेज दौरे को Grandmal कहते हैं। बच्चों की मिर्गी को पिकानोलेप्सी कहते हैं ।

उपचार

- करौंदे के पत्ते 6 से 10 ग्राम तक पीसकर दही के तोड़ में 3 दिन तक पिलाने से अपस्मार में लाभ होता है ।

- कूट के चूर्ण के साथ बच का चूर्ण समभाग एकत्र कर खरल कर सुरक्षित रख लें । इसे 1 से 3 ग्राम की मात्रा में दिन में 2 बार शहद के साथ लगातार 4-5 मास सेवन करने से अपस्मार में स्थायी रूप से लाभ हो जाता है ।
- वच का चूर्ण 4-6 रत्ती की मात्रा में दिन में 2 बार शहद के साथ चटाने से अपस्मार में लाभ होता है । पथ्य में—12 दिनों तक केवल दूध-भात खायें।
- नीम की ताजी पत्तियाँ 5 तथा अजवायन और काला नमक 3-3 ग्राम एकत्र मिलाकर 50 ग्राम जल में घोलकर नित्य प्रति सुबह-शाम लगभग 3 माह तक सेवन करने से अपस्मार में लाभ होता है ।
- लहसुन 10 ग्राम, काले तिल 30 ग्राम लें । इन दोनों को मिलाकर सबेरे ही 21 दिन तक खाने से अपस्मार में लाभ होता है ।
- शुद्ध हींग 1-2 रत्ती गधी के दूध के साथ दिन में 2 बार निरन्तर 1 मास तक सेवन कराने से अपस्मार ठीक हो जाता है ।
- कॉटे वाली चौलाई की जड़ 20 ग्राम, काली मिर्च 9 नग, जल 50 ग्राम लें । पीस छानकर 7 दिनों तक रोगी को पिलाने से अपस्मार रोग जाता है।
- बेल के 5-7 पत्ते (प्रत्येक में 3-3 बेल पत्र हों) लेकर उन्हें 8-10 काली मिर्च के साथ पिलाने से अपस्मार में आश्चर्यजनक लाभ होता है । प्रयोग कम से कम रोग की अवस्थानुसार 1 से 3 माह तक करें ।
- भुनी हींग 10 ग्राम, दूध-बच 20 ग्राम, सोंठ 40 ग्राम, सैंधानमक 80 ग्राम, बायविडंग 100 ग्राम, सभी को कूटपीस कर कपड़छन कर रख लें । इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम सेवन कराने से अपस्मार में लाभ होता है ।
- अकरकरा 100 ग्राम, पुराना सिरका 100 ग्राम, शहद 140 ग्राम लें। पहले अकरकरा को पीसकर सिरके में खूब घोंटें, बाद में शहद भी मिला दें । इसे रोगी को 6 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन प्रात:काल चटायें । मिर्गी दूर होगी।
- 50 ग्राम नौसादर को 1 लीटर केले के पत्तों के रस में डालकर रखें। मृगी का दौरा तुरन्त शान्त हो जायेगा ।
- मृगी का दौरा प्रारम्भ होने से पूर्व सुरसराहट होने वाले अंग पर रूमाल या कपड़ा कसकर बाँध देने से जिस में ऐंठन प्रतीत हो उस अंग को खींच देने से रोगियों में मृगी का दौरा पड़ना रुक जाता है ।
- हींग, सौंठ, काली मिर्च, इन्द्रायन (जो भी उपलब्ध हो) को जल में घिसकर नाक में कुछ बूँदें टपकाने से मृगी का दौरा दूर हो जाता है ।

● खील किया हुआ (भुना) सुहागा 1 से 2 माशा तक 6 माशा में मधु मिलाकर सुबह-शाम खिलाते रहने से मृगी के दौरे का आराम आ जाता है।

● हींग 1 से 6 माशा तक मधु में मिलाकर सुबह-शाम चटाना अपस्मार नाशक है।

● छोटी चन्दन, काली मिर्च सममात्रा में पीसकर 4 से 6 रत्ती की मात्रा में सुबह शाम जल से खिलाना अपस्मार नाशक है।

● ब्राह्मी स्वरस और मधु 15-15 मि.ली. एक साथ मिलाकर दिन में 3 बार पिलाने से अपस्मार में लाभ होता है।

● हाथी की ताजी लीद वस्त्र में रखकर उसका 6 ग्राम की मात्रा में रस निचोड़कर प्रातःसायं 1 माह सेवन कराने से अपस्मार में लाभ होता है।

● जायफल के 21 दाने रेशमी धागे में पिरोकर गले में पहनने या भेड़िया की विष्ठा और हड्डी पास में रखने अथवा सुअर के नाखून की अंगूठी बनवाकर मंगलवार के दिन दाहिनी कनिष्ठका में धारण करने अथवा शुद्ध हींग 1 तोला की पोटली ताबीज की भांति गले में पहनने से मिर्गी रोग दूर हो जाता है।

● ऊदसलीम (पुरानी अथवा घुनी हुई न हो) नीला, या हरा या लाल या सुनहरे या पीले डोरे के बीच में बांधकर अपस्मार (मिर्गी) का रोगी गले में इस प्रकार लटकाले कि ऊदसलीम हृदय की संधि में स्पर्श करती रहे (ऊदसलीम हलके फाले के समान होती है) पन्सारी के यहाँ से खरीदें।

अपस्मार नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

नेड टिकिया (चरक) 2-2 टिकिया दिन में 3 बार बच्चों को आधी मात्रा दें। मिर्गी रोग, गम्भीर अपस्मार, सौम्य अपस्मार, मानसिक तनाव एवं ऐंठन रोग में अतीव लाभकारी है। यह औषधि केन्द्रीय मस्तिष्क की विकृति ठीक करने हेतु सर्वोत्तम निरापद औषधि है।

सायलेजिन टेबलेट (अलारसिन) मात्रा उपर्युक्त। यह एक उत्तम ट्रक्विंलाइजर आयुर्वेदिक औषधि है। अपस्मार, हिस्टीरिया व उन्माद आदि रोगों में अत्यधिक उपयोगी है निद्रा लाती है।

सर्पेन्थिन टेबलेट (मार्तन्ड) 1-2 गोली दिन में 3 बार दूध से दें। यह स्नायु दौर्बल्य जन्य रोगों (अपस्मार, योषापस्मार) में अतिशय लाभकारी है।

बालापस्मार वटी (धन्वन्तरी कार्या.) 1-2 गोली दिन में 3-4 बार। बच्चों के अपस्मार रोग की बहुपरीक्षित लाभकारी औषधि है।

हिस्टीरियान्तक कैपसूल (गर्ग बनौ.) 1-1 कैपसूल दिन में 3 बार हिस्टीरिया के साथ-साथ अपस्मार में भी अत्यन्त उपयोगी है।

नेत्रबलादि घनसत्व टेबलेट (गर्ग बनौ.) 2-2 गोली दिन में 3-4 बार। अपस्मार में स्थायी लाभ हेतु प्रशस्त है।

लिक्विड एक्सट्रेक्ट आफ ब्राह्मी (झन्डू) 1-2 चम्मच दिन में 3 बार जल मिलाकर दें। मस्तिष्क को बल प्रदान करता है तथा अपस्मार व उन्माद में लाभप्रद है।

चन्द्रावलेह (वैद्यनाथ) 1-2 चम्मच दूध के साथ दिन में 2 बार दें। यह मूर्च्छा, सिर में चक्कर अन्य एवं अपस्मार नाशक है तथा दिमाग को पुष्ट करता है। निद्रा लाता है।

दिमाग पौष्टिक रसायन (वैद्यनाथ) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

इथीनोर लिक्विड एवं टेबलेट (मेडिकल इथिक्सि) 1-2 चम्मच 1 गिलास जल के साथ 2-3 बार भोजनोपरान्त तथा टेबलेट दिन में 3 बार 1-1 गोली जल के साथ दें। मस्तिष्क को बल प्रदान करने वाला यह एक उत्तम टॉनिक है। इसके निरन्तर सेवन से मस्तिष्कजन्य दुर्बलता दूर हो जाती है।

आँख आना, अभिष्यन्द

रोग परिचय—इस रोग में आँखें दुखने पर कड़क, जलन, पीड़ा, तथा जल स्राव होता है, नेत्र लाल तथा शोथयुक्त हो जाते हैं, नेत्र खोलने में कष्ट होता है। शीत, चोट, धूल का कण अथवा 1 आंख आने पर उसके व्यवहार में आई हुई वस्तुओं का उपयोग, धूप, ओस तथा विटामिन 'ए' का शरीर में अभाव इत्यादि कारणों से यह रोग उत्पन्न होता है।

उपचार

● दो ढाई तोले करेले के रस में 4-6 रत्ती फिटकरी का चूर्ण मिलाकर स्वच्छ कपड़े से छानकर शीशी में रख लें। दिन में 3-4 बार इस लोशन को ड्रापर से नेत्रों में डालने से जलन, कड़क, लाली आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

● नौसादर और भुनी फिटकरी 4-4 माशा लें। दोनों को 2 तोला करेला के रस में खरल कर शुष्क करके शीशी में सुरक्षित रख लें। इसे सलाई द्वारा नेत्रों में लगाने से 3-4 दिनों में रतौंधी का रोग दूर हो जाता है।

● ककरौंदा स्वरस की 2-2 बूंदें सुबह-शाम आँख में डालने से अभिष्यनन्द में लाभ होता है।

● गुलाब जल 2-2 बूँद सुबह-शाम आँख में डालने से नेत्राभिष्यन्द-जन्य उपद्रव शान्त होते हैं तथा लालिमा भी खत्म हो जाती है।

● पान के रस में थोड़ा सा शहद मिलाकर आँख में डालने से अभिष्यन्द जन्य विकार शान्त हो जाते है। पान पर घृत चुपड़कर नेत्रों पर बाधने से अभिष्यन्द में लाभ होता है।

● 10 ग्राम हल्दी को 160 ग्राम जल में उबालकर स्वच्छ दोहरे कपड़े या फिल्टर पेपर से छानकर दिन में 2-2 बूँद आँखों में डालते रहने से या उसमें गौज भिगोकर नेत्र पर रखने से आँखों को ठण्डक मिलती है, वेदना शान्त होती है तथा नेत्राभिष्यन्द में लाभ होता है।

● बादाम की 6 गिरियों को पानी में पीसकर उसमें घृत या मिश्री 20-20 ग्राम मिलाकर प्रातः सायं सेवन करने से आँखें नहीं आती हैं तथा आई हुई आँखें ठीक हो जाती हैं।

● अनार के हरे पत्तों को कुचलकर निकाला हुआ रस खरल में डालकर खुश्क करें। जब खुश्क हो जाये तब कपड़े से छानकर सुरक्षित रख लें। उसे प्रातः सायं सलाई द्वारा सुरमे की भाँति लगाने से नेत्राभिष्यन्द में लाभ होता है या अनार के पत्तों को पानी में पीसकर दिन में 2 बार लेप करने से तथा पत्तों को पानी में भिगो पोटली की भाँति आँखों पर फेरने से दुखती आँखों में लाभ होता है।

● धतूरे के पत्तों पर घी लगाकर बाँधने से वेदना शमन होकर नेत्राभिष्यन्द में लाभ होता है।

● सरसों का तैल दोनों कानों में डालने से दुखती आँखों में आराम होता है।

● सफेद प्याज का अर्क 250 ग्राम, देशी शहद 125 ग्राम, लाहौरी नमक 20 ग्राम। तीनों को मिला, कपड़े में छानकर शीशी में रखें। इसे 2-2 बूँदें आँखों में डालने से दुखती आँखों में तत्काल लाभ होता है।

● फिटकरी तथा कल्मी शोरा 6-6 ग्राम लेकर पीस लें। तदुपरान्त वर्षा के पानी अथवा गुलाबजल की 1 बोतल में डाल दें। बाद में निथार, छान कर सुरक्षित रख लें। इसे 2-2 बूँद नेत्रों में डालने से नेत्राभिष्यन्द में लाभ होता है।

● सहजना के पत्तों के रस में समभाग शहद मिलाकर 1 बूँद डालने से ही नेत्राभिष्यन्द में लाभ होता है। आईफ्लू में भी विशेष लाभप्रद योग है।

● नीम के कोमल पत्तों का रस निकाल कर जिस ओर की आँख दुखती

हो उस ओर के कान में और यदि दोनों आँखें दुख रही हों तो दोनों ओर के कानों में डालने से लाभ होता है।

● बबूल के कोमल पत्तों को पीसकर रस निकाल लें। आँखों में टपकाने से या स्त्री के दूध के साथ आँख पर बाँधने से आँख की पीड़ा तथा सूजन मिटती है।

● नागकेशर का चूर्ण 60 ग्राम, छोटी इलायची के दाने 6 ग्राम दोनों को खूब बारीक पीसकर इसमें 60 ग्राम मिश्री मिलाकर सुरक्षित रख लें। इस चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में 20 ग्राम गाय के घी के साथ दिन में 1 बार चटाने से नेत्राभिष्यन्द, आँखों की लाली, खुजली, अश्रुस्राव इत्यादि को नष्ट करने हेतु यह साधारण योग अत्यधिक चमत्कारी है।

● नीला थोथा 2 रत्ती, पिपरमेन्ट आधा रत्ती, भीमसैनी कपूर आधी रत्ती, एक्रीफ्लेबिन 2 रत्ती (ऐलोपैथी की पीला टिंचर बनाने वाली दवा) बोरिक एसिड पाउडर (ऐलोपैथी का) 2 रत्ती, गिलेसरीन 1 तोला अर्क गुलाब या अर्क सौंफ 10 तोला में क्रम से 1 के बाद दूसरी औषधि को पक्के खरल में भली प्रकार घोटकर 2 परत वाले मलमल के कपड़े से छानकर मजबूत कार्क युक्त साफ शीशी में सुरक्षित रख लें। दुखती आँखों तथा अन्य नेत्र पीड़ाओं में अत्यन्त ही लाभकारी प्रयोग है। चिकित्सकों के लिए व्यवहारीय योग है।

● गोरखमुन्डी के फूल (बिना पानी के सेवन किये) जितने भी निगल सकते हों, उतने निगल जायें। इस प्रयोग में जितने फूल निगलेंगे उतने ही वर्षों तक आँखें नहीं दुखेंगी।

● नीम की पत्तियों का रस 1-1 बूँद आँखों में टपकाने से नीम का तीखापन पलों में आँख में ठण्डक भर देगा। छोटे बच्चों की दुखती आँखों में न डालकर 2-2 बूँदें कानों में डाल दें। यदि एक ही आँख दुखती हो तो एक ही कान में डालें किन्तु विपरीत (उल्टे) कान में। यदि दोनों आँखें दुख रही हों तो दोनों कानों में डालें।

● छोटी मक्खियों का शुद्ध मधु नेत्रों में आंजने से नेत्रों के सभी प्रकार के नेत्र दोष मिट जाते हैं।

● रीठा के छिलके के चूर्ण को पानी में घोलकर इसका निथरा हुआ पानी 4 बूँद आँखों में टपकाने से अभिष्यन्द (आँख आना) निश्चयपूर्वक ठीक हो जाता है। इसे 24 घंटे में सिर्फ 1 ही बार प्रयोग करें।

● 2 रत्ती फिटकरी 5 तोला आकाशजल अथवा परिश्रुत (उबालकर, छानकर

ठण्डा किया हुआ जल) में घोलकर 2-2 बूँद आँखों में डालने से आँख आना रोग ठीक हो जाता है।

● फिटकरी को 1 रत्ती गुलाब जल में मिलाकर 2-4 बूँद नेत्रों में डालने से आँखों की लाली तथा पीड़ा कम हो जाती है।

● लाल फूल के गुलाब के अर्क 5 तोला में 4 रत्ती फिटकरी को घोल कर एक साफ शीशी में सुरक्षित रख लें। इसके 2-3 बूँद नेत्रों में डालने से आँख का दुखना, पकना, शोथ व लालिमा आदि दूर हो जाती है।

● 1-2 चम्मच शहद दिन में 1-2 बार खाते रहने से 1-2 सप्ताह में ही आँखें बार-बार झपकने का रोग ठीक हो जाता है।

● काली मिर्च 6 माशा, शुद्ध मैनसिल 3 माशा डालकर काजल के समान घोटकर आँख में लगाने से ''ढलका'' रोग ठीक हो जाता है।

● अदरक को जलाकर उसकी राख महीन पीसकर नेत्र में लगाने से जाला व नेत्रस्राव में लाभ होता है।

● नमक का सूक्ष्म से भी सूक्ष्म चूर्ण बनाकर रात्रि में सलाई से नेत्र में लगाने से खुजली, दिनान्धता, रतौंधी, जलन व लाली आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

● नित्य 2 बूँद नीबू रस आँखों में डालने से रतौंधी में लाभ होता है।

● अन्धता तथा धुन्ध आदि विकारों में प्याज का रस मधु मिलाकर नेत्रों में लगाने से पर्याप्त लाभ होता है।

● नेत्र के पलक पर फुड़िया होने पर राई के चूर्ण को घृत मिला कर लेप करना अत्यन्त लाभप्रद है।

● आँखों में लालिमा होने पर आँख के ऊपर हल्दी का लेप करना चाहिए।

● देशी अजवायन, दालचीनी, काली मिर्च (तीनों सममात्रा में) लेकर खूब बारीक खरल करके सुरमा बना लें। तदुपरात कपड़छन करके शीशी में सुरक्षित रख लें। दिन में 3 बार इसे सलाई से आँखों में लगाने से रतौंधी रोग शर्तिया नष्ट हो जाता है। (यह योग रतौन्धी का महाकाल है।)

● पिसी हुई काली मिर्च ताजा मक्खन में मिलाकर कुछ दिनों निरन्तर चाटते रहने से पलकों की सूजन नष्ट हो जाती है तथा नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है। योग को स्वादिष्ट करने हेतु इसमें देशी खाँड़ मिला सकते हैं।

● यदि आँखें गरमी से दुख रही हों (गर्मी के मौसम में शुष्कावस्था, आँखें दुखना, आँखों से पानी नहीं निकलना तथा आँखों में गर्मी सी अनुभव होना अर्थात्

जलती हुई सी मालूम होना आदि हों तो हरा धनिया 10 ग्राम, कपूर 1 ग्राम बारीक पीसकर मलमल के साफ कपड़े में पोटली बांधकर आँखों पर ऐसे फिरायें कि कुछ बूँदें आँखों के अन्दर भी चली जायें, तुरन्त लाभ मिलेगा।

● प्याज़ के रस में रुई की बत्ती भिगोकर सुखालें। इसे तिल के तेल में जलाकर काजल बनाकर लगाने से जाला (आँखों की पुतली पर उत्पन्न सफेदी) नष्ट हो जाता है।

● मगज बादाम की सात गिरी, सौंफ 6 ग्राम तथा इतनी ही मिश्री। सौंफ और मिश्री का चूर्ण बनालें। मगज बादाम को छीलकर और अर्ध-कूटकर उसमें मिला लें। इसे 15 ग्राम की मात्रा में (निरन्तर 40 दिनों तक) रात्रि को सोते समय गरम दूध के साथ सेवन करने से दृष्टि (नजर) इतनी अधिक तीव्र हो जाती है कि चश्मा (ऐनक) लगाने की जरूरत ही नहीं रहती है तथा दिमागी कमजोरी भी दूर हो जाती है।

● खाने वाला नमक 1 ग्राम, असली गुलाबजल 50 ग्राम लें। नमक को बारीक पीसकर गुलाब जल में घोल लें, तदुपरान्त किसी स्वच्छ शीशी में मजबूत कार्क (डॉट) लगाकर रख लें। इसे नित्य आँखों में 2-2 बूँद डालने से (दिन में 2 बार) नेत्रों की लाली, धुन्ध, जाला, नेत्रस्राव, आँखें आना तथा साधारण किस्म का फूला कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

● नीम की पत्तियों को बारीक पीसकर रुई की बत्तियों पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप चढ़ायें तथा बत्तियों को छाया में रखकर सुखा लें। फिर सरसों के तेल में थोड़ा-सा कपूर मिलाकर और उक्त बत्ती को दीपक में जलाकर काजल बना लें। इस प्रकार जो काजल बनेगा वह 'ममीरे' का भी बाप होगा। इस काजल के सेवन से दुखती आँखों में लगाने से तुरन्त शान्ति मिलती है। चश्मा लगाने वाले बन्धु इसे कम से कम निरन्तर 15 दिन इस्तेमाल करें और प्रयोग काल में चश्मा लगायें। सुबह-शाम 1-1 मील शुद्ध वायु में भ्रमण करें, खान-पान एवं शरीर शुद्धि की ओर विशेष ध्यान दें, यदि इतना कर सके तो इस मामूली योग से उन्हें इतना लाभ प्राप्त हो जायेगा जो लाखों रुपया खर्च होने पर बड़े से बड़ा, आई स्पेशलिस्ट (आँखों का विशेषज्ञ चिकित्सक) भी नहीं दे सकता है। इसके प्रयोग से नेत्रों की लाली, नक्ताध्य, दिवान्ध, फूली, जाला तथा कम दिखायी देना इत्यादि समस्त नेत्र रोग नष्ट हो जाते है।

● जब आई फ्लू चल रहा हो तो और आँखें रोगग्रस्त हो गई हों तो कपूर

को आँखों में काजल लगाने की भाति फिराने से लाभ हो जाता है और यदि यही क्रिया स्वस्थ आँखों में दिन में 3-4 बार कर ली जाये तो आँखें आई फ्लू के चपेट में आने से बच जाती है।

अभिष्यन्द नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

नेत्र बिन्दु ड्राप्स (धन्वन्तरि) 1-2 बूँद 3 बार डालें। दुखती आँखों में लाभकारी है।

आई (आँख) ड्राप्स (वैद्यनाथ) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

नेत्ररक्षक ड्राप्स (वैद्यनाथ) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

नेत्रबिन्दु (देशरक्षक) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

भीमसैनी नेत्र बिन्दु (गुरूकुल कांगड़ी) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

नेत्रबिन्दु (गुरूकुल कांगड़ी) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

आईनोला (डाबर) 2-4 बूँद सुबह-शाम डालें।

नेत्रामृत बिन्दु (ज्वाला आयु०) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

झन्डु नेत्रबिन्दु (झन्डू) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

नेत्रसुधार (त्रिमूर्ति फार्मेसी) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

नयनसुधा (देवेन्द्र आयु०) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

गुरूकुल काजल (गुरूकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार) प्रतिदिन प्रयोगार्थ आँखों का चिपकना, खुजली, लाली, जलन दूर कर है।

भीमसैनी सुरमा सफेद व काला (गुरूकुल कांगड़ी) आँखों से पानी आना, निर्बलता एवं आँखों की अन्य बीमारियों में लाभप्रद।

सुरमा व काजल (मिहीलाल फार्मेसी चौक बाजार, पीलीभीत, उ. प्र.) दैनिक प्रयोगार्थ। आँख के समस्त रोगों व नेत्रों को ज्योति बढ़ाने में लाभप्रद।

अश्मरी (Stone)

रोग परिचय—इसे वृक्काश्मरी के नाम से भी जाना जाता है। गुर्दे की पथरी अत्यन्त कष्टदायक होती है। इसमें रोगी को भयंकर पीड़ा होती है। कभी-कभी तो रोगी को इतना तीव्र (अधिक) दर्द होता है कि रोगी की स्थिति बदहवास (पागलों की भांति) हो जाती है। यह चपटी, गोल, चिकनी, खुरदरी आदि सभी प्रकार की होती है। मैग्नेशियम फास्फेट से बनी पथरी का रंग सफेद अथवा पीलापन युक्त होता है। यह पथरी मुलायम और अण्डाकार होती है और मूत्राशय में बना

करती है। इस पथरी में मूत्र का स्वभाव क्षारीय होता है, इसलिए इस पथरी के रोगी क्षारीय औषधि में न देकर अम्लीय (खट्टी) औषधि में देते हैं।

पथरी का रोग कोई नया रोग नहीं है। प्राचीन चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थों में इस रोग के लक्षण विस्तारपूर्वक लिखे हुए मिलते है। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में यह रोग अधिक पाया जाता है।

शरीर में विकारों के कारण मूत्र में ठोस पदार्थ निकलने लग जाते हैं। यदि यह पदार्थ वृक्कों के गह्वर (मूत्र प्रणाली) अथवा मूत्राशय में रह जायें तो वह एकत्रित होकर एक दूसरे के साथ चिपक कर पथरी के रूप में रोग उत्पन्न कर देते हैं। ये पथरियाँ प्रायः यूरिक एसिड, यूरेटस, और आग्जलेट्स से बनती हैं। वृक्क (गुरदे) में फास्फेट से बनने वाली पथरियाँ कभी कभार ही बनती हैं। ऐसी पथरियाँ प्रायः मूत्राशय में ही बनती हैं।

नोट—यूरिक एसिड से बनी पथरी भूरी लाली लिये होती हैं यह पथरी मांसाहारियों (अधिक मांस खाने वालों) को होती है। ऐसे रोगी को अधिक मात्रा में हरी साग, सब्जियाँ खाना तथा नमकीन जुलाब लाभप्रद रहता है।

ऐसे रोगियों को दही की लस्सी पिलाना भी लाभप्रद होता है। कैल्शियम आग्जलेट की पथरी काली, सख्त और खुरदरी होती है ऐसी अवस्था में ऐसे भोजन जिनमें कैल्शियम, आग्जलेट बहुत कम हों (गाजर, मटर, हरे प्याज, हरी मिर्च, आलू, टमाटर, संतरा) इत्यादि खिलायें। जब रोगी में कैल्शियम फास्फेट अधिक मात्रा में होता है तो पीले और सफेद रंग की रेत मूत्र में आती है तथा मूत्र का स्वभाव क्षारीय होता है। ऐसे रोगयों को कैल्शियम और फॉस्फोरस युक्त (अण्डा, पनीर, मछली, खुश्क फल, केले, आलू, दाल, रोटी आदि ही खिलायें)

यूरिक एसिड से बनी पथरियाँ क्षारीय मिश्रण में घुल जाती है। मूत्र को क्षारीय बनाने हेतु 1800 मि.ग्रा. सोडाबाई कार्ब पानी के साथ दिन में 3-4 बार खिलाना चाहिए।

पित्ताशय (Gall Bladder) में पित्त Bile के कई अंशों से भी पथरियाँ बन जाया करती हैं जिन्हें 'पित्ताश्मरी' कहा जाता है जो मनुष्य व्यायाम कम करते हैं (जिनको सारा दिन बैठ कर काम करना पड़ता है) तथा माँस अधिक खाना, अधिक चिन्ता करना आदि इस पथरी की उत्पत्ति के प्रधान कारण होते हैं। यह पथरियाँ पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक हुआ करती है।

पाठकों की जानकारी हेतु वृक्काश्मरी एवं पित्ताश्मरी के दर्दों के लक्षणों के अन्तर को स्पष्ट कर रहा हूँ, कृपया ध्यान पूर्वक पढ़ें।

1. वृक्कों (गुरदे) की पथरी पीठ के निचले भाग में (जिस वृक्क में) पथरी होती है, उस ओर दर्द करती है ।

2. वृक्काश्मरी में टीसयुक्त सख्त दर्द कमर से अन्डकोष और जाँघों में जाता है । पित्ताशय की पथरी में आमाशय के दांयी ओर के गड्डे से दर्द शुरू होकर कमर को जाता है ।

3. वृक्काश्मरी का दर्द अक्सर कमर के एक ओर होता है (कभी-कभी दोनों ओर भी होता है ।) पित्ताश्मरी में दर्द सदैव दांयी ओर होता है तथा इसका (दर्द का) प्रभाव दांये कन्धों की हँसली तक पहुँचता है ।

4. वृक्काश्मरी में जाँघ या पैर संज्ञाहीन हो जाते हैं । पित्ताश्मरी में यह कष्ट नहीं होता है ।

5. वृक्काश्मरी में दर्द के कारण अन्डकोष की गोलियाँ ऊपर चढ़ जाती हैं । पित्ताश्मरी में दर्द में ऐसा नहीं होता है ।

6. वृक्काश्मरी के दर्द में बार-बार मूत्र त्याग की इच्छा होती है तथा मूत्र करते समय दर्द होता है । पित्ताश्मरी के दर्द में ऐसा नहीं होता है ।

7. वृक्काश्मरी के दर्द में मूत्र थोड़ा, तेज रंगयुक्त अथवा रक्त मिश्रित आता है, जबकि पित्ताश्मरी में मूत्र का रंग तेज हल्दी के रंग का हो जाता है ।

8. वृक्काश्मरी में छोटे जोड़ों का दर्द, जोड़ों का कष्ट रह चुका होता है। पित्ताश्मरी में पान्डु रोग, मिट्टी सदृश्य पाखाना के लक्षण होता है ।

9. पित्ताश्मरी स्त्रियों को अधिक होती है । वृक्काश्मरी पुरुषों को अधिक होता है ।

10. वृक्काश्मरी मध्य आयु में अधिक होता है । पित्ताश्मरी 50 वर्ष की आयु के बाद होता है ।

उपचार

● अजमोद का महीन चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में मूली के पत्तों के स्वरस में 20 ग्राम दिन में 2 बार या 3 बार कुछ दिनों के नियमित सेवन से अश्मरी गलने लगती है ।

● प्याज को काट लें जल से धोकर उसका 20 ग्राम रस निकाल लें । उसमें 50 ग्राम मिश्री मिलाकर पिलाने से पथरी टूट कर पेशाब के द्वारा बाहर निकल जाती है ।

● नीबू रस 6 ग्राम, कलमी शोरा 4 रत्ती, तिल पिसे हुए 1 ग्राम (एक मात्रा है) शीतल जल से दिन में 1 या 2 बार लगातार 21 दिन पिलाने से पथरी गल जाती है ।

● यवक्षार 1 ग्राम घृत के साथ मिलाकर पीने से तथा 5-7 मिनट बाद शीतल जल या दूध की लस्सी पीने से अश्मरी कण आदि निकलकर मूत्र ठीक आने लगता है

● छोटे गोखरू का चूर्ण 3 ग्राम को मधु के साथ चटाकर बकरी या भेड़ का दूध पिलाना अश्मरी नाशक है ।

● एरन्ड की ताजी जड़ 6 ग्राम, पपीता की ताजी जड़ 6 ग्राम लें । दोनों को नारियल के ताजा पानी के साथ पीसकर प्रातः-सायं 3 से 6 ग्राम तक जल से लेने पर बहुत शीघ्र पथरी गलकर बाहर निकल जाती है ।

● पाषाण-भेद 100 ग्राम, बेर यहूदी 10 ग्राम लें । दोनों को मिलाकर बारीक चूर्ण कर लें । इसे प्रातः सायं 3 से 6 ग्राम तक जल से लेने पर बहुत शीघ्र पथरी गलकर बाहर निकल जाती है ।

● अशोक बीज 6 ग्राम को पानी के साथ सिल पर बारीक पीसकर थोड़े जल में घोलकर पिलाने से कुछ ही दिनों में पथरी निर्मूल हो जाती है ।

● केले के पेड़ (खम्भे) का रस अथवा नारियल के 3-4 औस जल में 1-1 ग्राम शोरा मिलाकर दिन में 2 बार पिलाते रहने से अश्मरी-कण निकल कर पेशाब साफ आने लगता है ।

● पपीता की ताजा जड़ 6 ग्राम को 60 ग्राम जल में पीस छानकर 21 दिन तक पिलाने से पथरी गलकर निकल जाती है ।

● पित्ताशय या मूत्राशय में पथरी होने पर निशोथ और इन्द्र जौ का चूर्ण दूध के साथ देने से अश्मरी-शूल नष्ट हो जाता है तथा अश्मरी भी धीरे-धीरे टूटकर निकल जाती है ।

● टिन्डे का रस 50 ग्राम, जवाखार 16 ग्रेन लें । दोनों को मिलाकर पीने से पथरी रेत बनकर मूत्र मार्ग से बाहर निकल जाती है।

● मूली का रस 25 ग्राम, यवक्षार 1 ग्राम लें । दोनों को मिलाकर रोगी को पिलायें । पथरी गल कर निकल जायेगी ।

● पीपल की कोपलें 6 नग, काली मिर्च 5 नग लें । दोनों को ठण्डाई की भाँति घोटकर 1 गिलास पानी में मिलाकर पिलायें । 3 दिन के प्रयोग से पथरी गलकर निकल जायेगी ।

• नीम के पत्तों की राख 6 ग्राम फाँककर ऊपर से पानी पियें । कुछ दिन के प्रयोग से पथरी गल जाती है ।

• प्रतिदिन प्रात:काल 50 ग्राम गोमूत्र पियें तथा सायंकाल को 3 ग्राम फिटकरी 1 गिलास पानी में घोलकर पियें । नियमित 40 दिनों के सेवन से पथरी गलकर निकल जायेगी । (परीक्षित है) ।

• चीड़ की लकड़ी का चूर्ण आधी से 2 ग्राम तक जल के साथ 30 दिन तक सेवन करने से पथरी रोग नष्ट हो जाता है ।

• 2 अण्डों की जर्दी निकाल कर उसमें 6 ग्राम पिसी हल्दी मिलाकर कुछ गरम जल मिला कर लेप बनाकर गुर्दे का दर्द (वृक्क शूल) गुर्दे के स्थान पर लेप करने से ठीक हो जाता है ।

• चौलाई का साग और उसका रस निकालकर पिलाना वृक्क शूल और पथरी में लाभप्रद है ।

• हुक्का का पानी 8-10 तोला पिलाने से वृक्क शूल को आराम आ जाता है ।

• खरबूजा, ककड़ी और खीरा के बीज खाते रहने से भी पथरी घिस-घिस कर निकल जाती है ।

• आधी या 1 रत्ती (65 से 125 मि.ग्रा.) अफीम खिला देने से भी वृक्कशूल में तुरन्त आराम आ जाता है ।

• गरम जल का एनीमा करने से भी वृक्क शूल दूर होता है ।

• सफेद फूल वाली कनेर की जड़ तथा लाल फूल वाली कनेर की जड़ प्रत्येक अर्थात् 60-60 ग्राम लें । भली भांति कूटकर 2 किलो गाय के दूध में उबाल लें । फिर इस दूध का यथाविधि दही जमाकर मक्खन निकालें । फिर घी बनाकर सुरक्षित रख लें । इसे 1 से 3 रत्ती (125 से 375 मि.ग्रा.) तक खांड में मिलाकर खाने से वृक्कों, मूत्राशय और पित्ताशय की पथरी और रेत घिस-घिस कर मूत्र द्वारा निकल जाती है । वृक्कशूल में भी यह योग लाभदायक है ।

• 2 तोला करेला के रस में 1-2 माशा यवक्षार या कलमी शोरा मिलाकर पीते रहने से साधारण पथरी कुछ दिनों में बिखन्डित होकर मूत्र-मार्ग से निकल जाती है।

अश्मरी नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

सिस्टोन टेबलेट (हिमालय)—2-2 गोली दिन में 3-4 बार अश्मरी निकल

जाने तक दें । यह औषधि अश्मरी बाहर निकालने के लिए अत्यन्त ही निरापद सिद्ध हुई है । कुछ दिनों तक नियमित सेवन से अश्मरी टूटकर बाहर निकल जाती है । मूत्रकृच्छ तथा मूत्र की जलन में भी लाभकारी है ।

ओरूक्लीन टेबलेट (चरक)—2-2 गोली दिन में 3 बार । यह औषधि मूत्रमार्ग के समस्त रोगों में लाभकारी है । ओरूक्लीन टिकिया मूत्रवृद्धि कारक है। मूत्राशय में रोगाणुओं का नाश करती है । यह कैल्क्यूरी टिकिया की क्रिया (प्रभाव) को बढ़ाती है । इसके सेवन से पेशाब में जलन, मूत्राशय प्रदाह, गुर्दे में पीप आना, मूत्रनली में अवरोध, मूत्राशय में सूजन, मूत्राशय की पथरी में अत्यन्त लाभप्रद है। बच्चों को आधी मात्रा दें ।

कैलक्यूरी टिकिया (चरक फार्मेस्युटिकल्स इण्डिया प्रा. लि. मुम्बई) मूत्राशय की पथरी तथा समस्त प्रकार की पथरी नाशक है । मूत्रवर्धक क्रिया से पथरी बाहर निकालती है तथा पुन: पथरी बनने से रोकती तथा दर्द से आराम दिलाती है । ऐंठन अथवा गुर्दे में होने वाले दर्द को मिटाती है 2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार 6 सप्ताह तक दें ।

मूत्रल पाउडर (बैद्यनाथ)—मात्रा अवस्थानुसार पत्रक देखकर दें । यह मूत्र खुलासा करने हेतु उत्तम पाउडर है । अश्मरीजन्य शूल में पेशाब लाकर शूल शान्त करता है ।

पथरीना टेबलेट (बैद्यनाथ)—1-2 टिकिया 2-3 बार दिन भर में अथवा आवश्यकतानुसार दें ।

अश्मरी टेबलेट (धन्वन्तरि)—2-2 टिकिया दिन में 3 बार जल से दें। पथरी को तोड़ फोड़कर बाहर निकालने हेतु अचूक औषधि है ।

यूरीका कैपसूल (इन्डोजर्मन)—1-2 कैप्सूल दिन में 2-3 बार भोजन के पूर्व पानी के साथ प्रयोग करायें ।

रक्त प्रदर (Menorrhoea)

रोग परिचय—रक्तप्रदर मासिकधर्म (माहवारी) में आने वाले रक्त की अधिकता को कहा जाता है । इसमें रोगी स्त्री की दुर्बलता, हीनता आदि विकार रहते हैं । इसे अति आर्तव (मासिकधर्म की अधिकता) के नाम से भी जाना जाता है । इस रोग में मासिकधर्म बहुत अधिक मात्रा में तथा कभी-कभी नियत दिनों से बहुत अधिक दिन तक आता रहता है ।

इस रोग का कारण गर्भाशय-शोथ, गर्भाशय का झुक और टल जाना, गर्भाशय के घाव और अर्श, डिम्ब-ग्रन्थियों और डिम्ब प्रणालियों की शोथ, गर्भाशय की कमजोरी, प्रसव के बाद गर्भाशय का पूरी तरह से सिकुड़ कर अपनी वास्तविक दशा पर वापस न आना, गर्भाशय का कैन्सर, अत्यधिक मैथुन, गर्भपात, अधिक सन्तान उत्पन्न करने के बाद गर्भाशय का ढीला पड़ जाना, रसौली, चोट लग जाना या बच्चा कठिनाई से उत्पन्न होने के कारण गर्भाशय की शिराओं का फट जाना, रक्त संचार में गड़बड़ी करने वाले रोग—(हाई ब्लड प्रेशर, हृदय गति का कम हो जाना, हृदय कपाटों के रोग, यकृत रोग इत्यादि), ग्लैन्डज और डिम्ब ग्रन्थियों के दोष, आर्त्तव उत्पन्न करने वाले अन्तःस्रावों की अधिकता तथा रक्त के कई रोग—रक्ताल्पता, रक्त की अधिकता, स्कर्वी रोग, कफ के स्रावों का रक्त में मिल जाना या कई प्रकार के पुराने रोग—मधुमेह, क्षयरोग, पुरानी वृक्क शोथ, एल्कोहल (शराब पीने की अधिकता का प्रभाव) अथवा तीव्र संक्रामक ज्वर, टायफाइड, मलेरिया, इन्फ्लूएन्जा इत्यादि हैं।

मासिकधर्म का रक्त अत्याधिक मात्रा में बार-बार निकलता है। कभी रक्त पतला, कभी थक्का और कभी काला और जमा हुआ होता है। गर्भाशय की विशेष विकृति से मासिकधर्म का रक्तस्राव बड़ी तेजी से मोटे नाले की तरह होता है, इस कारण समस्त शरीर में सख्त कमजोरी हो जाती है। पेडू और कमर में धीमा-धीमा दर्द रहता है, सिर चकराता है, आँखों के सामने अन्धेरा छा जाता है, घबराहट होती हैं तथा बेहोशी भी हो जाती है, भूख नहीं लगती है, अधिक रक्त जारी रहने से कमजोरी बढ़ती जाती है, कभी-कभी एक ही बार में अधिक मात्रा में रक्त आ जाता है जिसके कारण रोगिणी की मृत्यु भी हो सकती है।

अधिक मात्रा में रजःस्राव होने से रोगिणी के हाथ-पैर के तलुवों में दाह और जलन, दुर्बलता, बेचैनी और छटपटाहट होती है तथा उसके कानों में भों-भों ध्वनि होती है। हृदय अधिक धड़कता है, जलोदर, मिर्गी शरीर में शोथ तथा मूर्च्छा आदि कष्ट भी हो सकते हैं। रोगिणी का सिर चकराता है तथा आँखों के आगे चमकती हुई चिनगारियाँ सी उड़ती हुई दृष्टिगोचर होती है।

उपचार

● गाजर के स्वरस को 100 ग्राम की मात्रा में पिलाने से रक्तप्रद में लाभ होता है।

● कुकरोंदा की जड़ 6 से 10 ग्राम तक घिसकर दूध के साथ पिलाने से भयंकर रक्तप्रदर में भी लाभ होता है। 2-3 दिन तक प्रयोग जारी रखें।

● अरहर के पत्ते 20 ग्राम जल के साथ पीसकर उसमें 100-150 ग्राम जल मिला कर छानकर पिलाने से रक्त प्रदर (असृग्दर) में लाभ होता है।

● बांसा पत्र स्वरस 100 ग्राम में समभाग मिश्री मिलाकर दिन में 3-4 बार सेवन करने से रक्त प्रदर में लाभ होता है।

● अश्वगन्धा का बारीक चूर्ण 2 ग्राम तथा मिश्री 10 ग्राम मिलाकर (मिश्रण) गोदुग्ध से प्रातःसायं सेवन करने से रक्त प्रदर में लाभ होता है।

● गूलर की ताजा छाल 20 ग्राम कूटकर 250 ग्राम पानी में पकावें। जब पानी आधा रह जाए तब छानकर उसमें मिश्री मिलाकर (20 ग्राम) लें तथा 2 ग्राम श्वेत जीरे का चूर्ण भी मिला लें। इसे सुबह-शाम सेवन करने से रक्त प्रदर में लाभ होता है।

● केले के चूर्ण के साथ समभाग कच्चे गूलर का चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम 10-10 ग्राम सेवन कराना रक्त प्रदर में लाभकारी है।

● 1 ग्राम मेहन्दी के बीज पीसकर 250 ग्राम गाय के दूध में छानकर मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्त प्रदर में विशेष लाभ होता है।

● ऊन को जलाकर (जब धुंआ निकल जाये) तब उसकी भस्म को पीसकर सुरक्षित रख लें। इसे 1 से 30 ग्राम की मात्रा में ठण्डे जल से सेवन कराने से रक्त प्रदर में लाभ होता है।

● नागकेशर का चूर्ण बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर (6 ग्राम की मात्रा में) दिन में 3-4 बार सेवन कराने से रक्त प्रदर में लाभ होता है।

● पका हुआ केला 6-6 ग्राम घी के साथ सुबह-शाम सेवन करने से रक्त-प्रदर में लाभ होता है।

● जामुन की गुठली का चूर्ण चावलों के पानी या मांड के साथ सेवन कराना रक्त प्रदर में लाभप्रद है।

● रसौत, राल, बबूल का गोंद प्रत्येक 6-6 ग्राम लेकर अच्छी तरह सभी को खूब खरल कर एकदिल कर डालें। इसे 6 ग्राम की मात्रा में दूध से सेवन करना रक्त प्रदर में लाभकारी है।

● कमरकस धो, पौंछ व सुखाकर घी में भून डालें। तत्पश्चात् उतार कर सम भाग बूरा मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार रक्त प्रदर की रोगिणी को सेवन करायें। अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● 250 ग्राम बबूल की पत्ती पीसकर घी में भून लें। तदुपरान्त उसमें मिश्री पीस कर तथा बंगभस्म (20 ग्राम) मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसे दिन में 6 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ दिन में 2 बार सेवन कराना रक्त प्रदर में लाभप्रद है।

● एक अच्छी लौकी पानी से धो-पोंछकर सुखा लें। जब खूब सूख जाए तब स्वच्छ चाकू से लौकी को कई हिस्सों में काटकर टुकड़ों को 2-4 दिन खूब धूप में सुखायें। फिर खूब बारीक पीसकर सममात्रा में मिश्री मिलाकर किसी घी आदि के चिकने पात्र में रख लें। इसे प्रतिदिन सुबह-शाम 20 ग्राम की मात्रा में दूध या कच्चे चावल के धोवन से दें। भयानक रक्त प्रदर भी 8-10 दिनों के निरन्तर सेवन से अवश्य ठीक हो जाता है।

● बकायन (महानीम) की कोपलों का रस पिलाने से रक्त प्रदर का रक्त गिरना थम जाता है।

● लाजवन्ती का 3 ग्राम चूर्ण फांककर ऊपर से बताशों का शरबत पीने से रक्तस्राव (रक्त प्रदर) ठीक हो जाता है।

● अग्नि पक्व फिटकरी की भस्म 4 रत्ती की मात्रा में चाटने से खाँसी और श्वास के वेग रुक जाते हैं। रक्तार्श का रक्त, रक्त प्रदर, रक्त प्रमेह, सुजाक, श्वेत प्रदर, योनिस्राव इत्यादि इसके निरन्तर सेवन से रुक जाते हैं। यह मलेरिया ज्वर में भी लाभप्रद है।

रक्तप्रदर नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

ल्यूकोल टेबलेट (हिमालय ड्रग)—1-2 गोली दिन में 3 बार 6 से 8 सप्ताह तक दें। यह श्वेत प्रदर तथा रक्त प्रदर दोनों में लाभकारी है। ताजा जल अथवा चावलों के धोवन से प्रयोग करें।

आयापान टेबलेट (अलारसिन)—2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार जल से। लाभ ल्यूकोल की भाँति।

फैमीप्लेक्स पिल्स (चरक)—1-2 टिकिया 2-3 बार दिन में जल से तीव्रावस्था में 2-2 गोली प्रत्येक 2 घंटे पर दें। रक्त प्रदर में उपयोगी है।

पोजेक्स टेबलेट (चरक) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

ल्यूकोरिन टेबलेट (मार्तन्ड) 2-2 गोली दिन में 3-4 बार दें। यह भी दोनों प्रकार के प्रदरों की अव्यर्थ औषधि है।

प्रदरान्तक कैपसूल (गर्ग बनौ.) 1-2 कैपसूल दिन में 3 बार। लाभ उपर्युक्त।

ल्यूकोना कैपसूल (ज्वाला) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

स्त्री सुधा (धन्वन्तरि कार्या.) 1-2 चम्मच 2 बार दिन भर में दें।

एम. टोन (चरक) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

स्त्री कल्याण सुधा (ज्वाला) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

अवलारी (डाबर) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

ओवोटोलीन (झन्डू) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

बाबली-घनसत्व (गर्ग बनौ.) 1-2 गोली दिन में 3 बार दें।

बल्लभ रसायन (धन्वन्तरि कार्या.) 250 ग्राम से 500 मि.ग्रा. शहद से 3 बार दें। रक्त रोकने हेतु सर्वोत्तम औषधि है।

बाबली-घनसत्व (अतुल फार्मेसी) 1-1 ग्राम दिन में 3 बार जल से दें। अर्श (बवासीर) से रक्तस्राव, नकसीर छूटना, रक्त प्रदर इत्यादि सभी प्रकार के रक्तस्रावों में अत्यन्त उपयोगी दिव्य औषधि है।

एफ. एम. सीरप (अतुल फार्मेसी) 2-2 चम्मच बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त दें। स्त्रियों का अमृत के समान, रक्त प्रदर एवं समस्त स्त्री रोगों में शीघ्र व स्थायी लाभ प्रदान करने वाली महौषधि है।

श्वेत प्रदरान्तक कैपसूल (अतुल फार्मेसी) 1-1 कैपसूल सुबह-शाम जल अथवा अशोकारिष्ट से दें। (विशेष—श्वेत प्रदरान्तक कैपसूल के साथ एफ. एम. सीरप का सेवन करने तथा योनि-प्रक्षालन कराने से शीघ्र लाभ होता है। श्वेत एवं रक्त प्रदर, योनिशूल, कमर का दर्द, मासिक धर्म से सम्बन्धित समस्त विकार) नाशक है।

आन्त्रिक ज्वर (मोतीझरा या टायफाइड)

रोग परिचय—आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसे टायफाइड के नाम से जाना जाता है। इसमें पहले दिन साधारण ज्वर आता है। दूसरे दिन तीव्र ज्वर हो जाता है। गले, पीठ और छाती पर लाल-लाल दाने निकल आते हैं। प्रायः 24 घंटों के अन्दर इन दानों में जल भर जाता है जिसके फलस्वरूप यह दाने मोती की भाँति चमकने लगते हैं। इसीलिए इसे मोतीझरा के नाम से भी जाना जाता है। धीरे-धीरे यह दाने सूख जाते हैं जिससे ज्वर भी मन्द पड़ जाता है तथा दानों की पपड़ी उतर जाती है।

उपचार

● बच्चों को मोती भस्म 15 से 30 मि.ग्रा. दिन में 2 बार मधु से चटाना अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● महासुदर्शन चूर्ण (भै. र.) बच्चों को 1 से 2 ग्राम तक गरम जल से प्रत्येक 4-6 घंटे पर देना लाभकारी है।

● गिलोय का काढ़ा 1 तोला को आधा तोला शहद में मिलाकर दिन में 2-3 बार पिलाना लाभकारी है।

● अजमोद का चूर्ण 2 से 4 ग्राम तक शहद के साथ सुबह शाम चाटने से लाभ होता है।

● मोथा, पित्त पापड़ा, मुलहठी, मुनक्का चारों को समभाग लेकर अष्टावशेष क्वाथ करें। इसे शहद डालकर पिलाने से ज्वर, दाह, भ्रम व वमन आदि नष्ट होते हैं।

● अनबिंधे मोती 1 रत्ती, कस्तूरी 2 रत्ती, केशर कश्मीरी 3 रत्ती, जायफल 4 रत्ती, जावित्री 5 रत्ती, लवंग 6 रत्ती, तुलसी पत्र 7 रत्ती, अभ्रक भस्म 8 रत्ती सभी औषधियों को खरल करके अदरक के स्वरस में घोटकर गोली बनालें। इसे चौथाई से आधी रत्ती तक जल में घिसकर सेवन कराने से मन्थर ज्वर के दाने शीघ्र ही निकलकर ढारा ले जाते हैं तथा अन्य उपद्रव भी नहीं होते हैं। यह योग बड़े-मूल्यवान अंग्रेजी औषधियों के भी कान काट देता है।

● नीम के बीज पीसकर 2-2 घंटे के बाद पिलाने से आन्त्रिक ज्वर उतर जाता है। यह योग मल निकालता है। शरीर में ताजा खून बनाता है, नयी शक्ति का संचार करता है। यदि मलेरिया बुखार से टायफाइड बना हो तो नीम जैसी औषधि के अतिरिक्त अन्य कोई सस्ता और सहज शर्तिया उपचार नहीं है।

● टायफाइड ज्वर के कारण उत्पन्न हुई कमजोरी में मधु का सेवन अंग्रेजी औषधि—हैप्टोग्लोबिन से भी अधिक लाभप्रद है।

● जीरे को जल के साथ महीन पीसकर 4-4 घंटे के अंतर से ओष्ठों (होंठ के किनारों पर लेप करने से ज्वर उतरने के पश्चात् ज्वरजन्य ओष्ठ-प्रकोप (बुखार का मूतना) अर्थात् होठों का पकना व फूटना ठीक हो जाता है।

● जीरा सफेद 3 ग्राम 100 मि. ली. उबलते जल में डाल दें। इसे 15-20 मिनट के बाद छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर रोगी को दें। 10-15 दिनों तक निरन्तर प्रातःकाल में पीने से ज्वर उतरने के पश्चात् आने वाली कमजोरी व अग्निमान्द्य नष्ट होकर भूख खुलकर लगने लगती है।

आन्त्रिक ज्वरनाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

ज्वरसंहार कैपसूल (जी. ए. मिश्रा) 1-2 कैपसूल दिन में 3 बार दें। आन्त्रिक ज्वर तथा अन्य ज्वरों में लाभप्रद है।

विषम ज्वरान्तक कैपसूल (गर्ग बनौ.) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

ज्वरघ्न कैपसूल (ज्वाला) मात्रा व लाभ उपयुर्वत।

मैनेगिन टेबलेट (देवेन्द्र आयु. आश्रम) फ्लू, आन्त्रिक ज्वर, श्वसनक (निमोनिया) ज्वर, शिर, शूल, जुकाम तथा सर्दी से होने वाले ज्वरों सहित प्रायः सभी ज्वरों में लाभप्रद है। जुकाम-खांसी सहित ज्वर में—'जुकाम रिपु सीरप' (इसी फार्मेसी का) साथ में प्रयोग करने से शीघ्र लाभ होता है। 1-1 कैपसूल 6-6 घंटे पर (तीव्रावस्था में 4-4 घंटे पर) दें। जुकाम रिपु का यदि सेवन करवायें तो 2-2 चम्मच दिन में 3 बार गरम जल से दें।

मुक्तावलेह (खमीरा मरवारीद) (धन्वन्तरि कार्या.) का सेवन कराना मोतीझरा टायफाइड चेचक तथा अन्य हृदय रोगों में अत्यधिक लाभकारी है।

आमवात (सन्धिवात) (Rheumatism)

रोग परिचय—इस रोग में एक बड़ी सन्धि में पीड़ा और सूजन होती है। कुछ दिन में वह तो ठीक हो जाती है परन्तु दूसरी सन्धि में पीड़ा हो जाती है।

उपचार

● धतूरे के पत्तों पर एरन्ड तैल चुपड़कर जोड़ों की सूजन पर बाँधकर ऊपर से नमक की गरम पोटली से सेंक करने से विशेष लाभ होता है।

● असगन्ध चूर्ण 3 ग्राम में समभाग घृत और 1 भाग शक्कर मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से सन्धिवात में लाभ होता है।

● करेला के छिलके को निगलकर शेष भाग को आग पर 10 मिनट रखकर भुर्ता बनालें और फिर उसमें थोड़ी शक्कर मिलाकर रोगी को सुहाता-सुहाता गरम सुबह-शाम प्रतिदिन 10 दिनों तक लगभग 100 ग्राम की मात्रा में खिलाने से आमवात में लाभ होता है।

● मैथी को पीसकर बनाया गया चूर्ण 10 ग्राम की मात्रा में पानी या तक्र के साथ सेवन करने से आमवात में शीघ्र लाभ होता है। अथवा मैथी और सौंठ का चूर्ण 4-4 ग्राम की मात्रा में दिन में 2 बार गुड़ के साथ मिलाकर सेवन करने से आमवात नष्ट हो जाता है।

● एरन्ड तैल प्रातःकाल कुछ दिनों तक खाली पेट लेने से आमवात समूल नष्ट हो जाता है।

● लहसुन का रस 6 ग्राम गोदुग्ध 50 ग्राम में मिलाकर पिलाते रहने से कुछ ही दिनों में आमवात में लाभ होता है।

● रात्रि को 250 ग्राम खजूरों को पानी में भिगो दें। सुबह मलकर रस निचोड़ लें। इसको पिलाने से आमवात में लाभ होता है।

● नागौरी असगन्ध, सौंठ, विधारा तीनों को 50-50 ग्राम तथा मिश्री 150 ग्राम सभी को बारीक कूट पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखें। इसे 6 से 10 ग्राम तक की मात्रा में गरम जल के साथ कुछ दिनों तक सेवन कराने से आमवात, सन्धिवात में शीघ्र लाभ होता है।

● कुचला शुद्ध और काली मिर्च दोनों को सममात्रा में लेकर अदरक के रस में घोंट कर मूँग के आकार की गोलियाँ बनाकर सुखाकर शीशी में सुरक्षित रखें। इसे सुबह-शाम (1 गोली) पानी के साथ सेवन करने से कुछ ही दिनों में पुराने से पुराना आमवात नष्ट हो जाता है।

● चोबचीनी 1 किलो, दालचीनी, अकरकरा, जावित्री, सोंठ, सतावर, वंशलोचन, लवंग, पीपल, श्वेत मूसली, जायफल, (प्रत्येक 6-6 ग्राम) सभी को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें तथा इसमें बराबर वजन में मिश्री मिलालें। इसे 10-10 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गोदुग्ध के साथ सेवन करने से आमवात में लाभ होता है।

● सरसों का तैल 200 ग्राम, काला जीरा 3 ग्राम, धतूरे का फल 1 नग, लहसुन 10 ग्राम, अफीम 15 ग्राम। लोहे की कड़ाही में तैल को फैन निकलने तक गरम होने दें, फिर काला जीरा छोड़ दें। इसके बाद धतूरे का फल तथा उसके बाद लहसुन डालें। तत्पश्चात् अफीम और कर्पूर डालें। ठण्डा होने के बाद छानकर बोतल में रख लें। इस तैल को 2-3 बार लगाने से हर प्रकार का वात का दर्द जड़ से नाश हो जाता है। यह योग आमवात में विशेष लाभकारी है। परीक्षित है।

● मिट्टी का तैल 1 कि., सरसों का तैल 1 कि., शुद्ध मोम 125 ग्राम, इलायची का तैल 1 औंस, लौंग का तैल 1 ड्राम लें। प्रथम सभी तैलों को परस्पर मिला लें। फिर यह तैल थोड़ा गरम करके धूप में बैठकर मलने तथा मालिश करने के बाद ऊपर से रुई बाँधने से सन्धि शूल आमवात नष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त भी सभी अन्य शूलों में भी लाभप्रद है।

● कुचला 8 नग, खुरासानी अजवायन 100 ग्राम, कलौंजी 200 ग्राम का चूर्ण कर 750 ग्राम सरसों के तैल में जलावें। तेल मात्र शेष रह जाने पर आग से पात्र उतार कर छानकर व्यवहार करने से (मालिश करने से) आमवात में विशेष लाभ होता है।

● मिट्टी का तैल 40 ग्राम, कपूर पिसा हुआ 10 ग्राम लें। दोनों को शीशी में डालकर मजबूत कार्क लगादें तथा आधा घन्टा धूप में रख दें। फिर दोनों को हिला लें। जहाँ दर्द हो वहाँ धीरे-धीरे इस तैल की मालिश करें तथा बाद में सिंकाई कर दें। दर्द ठीक हो जाएगा। यह तैल वात रोगियों के लिए अमृत समान है।

● अजवायन 3 ग्राम, काला नमक 5 ग्राम को मिलाकर (यह एक मात्रा है) दिन में 3 बार गरम जल से सेवन करने से पतला पाखाना तथा आम का बनना बन्द हो जाता है। आमवात नाशक भी है।

आमवात नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

रूमालयी टेबलेट (हिमालय ड्रग) 1-2 गोली दिन में 2-3 बार दें। आमवात तथा अन्य वात रोगों में लाभप्रद है। इसकी मालिश हेतु मलहम भी आती है।

आर. कम्पाउण्ड (अलारसिन) 2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार, तदुपरान्त 1 से 6 माह तक दिन में 2 बार दें। आमवात तथा अन्य वात रोगों में उपयोगी है।

शुण्ठियादि टेबलेट (झन्डू) 1 से 4 गोली दिन में 3 बार। लाभ उपर्युक्त।

रीमानील टेबलेट व लिनिमेन्ट (चरक) 1-1 गोली दिन में 3 बार।

पीड़ाहर टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

रूमालिन टेबलेट (मोहता रसा.) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

डी. ए. पायरिन टेबलेट (देवेन्द्र फार्मा.) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

मायोस्टाल कैपसूल (धूतपापेश्वर) 1-1 कैपसूल दिन में 3 बार।

वातान्तक कैपसूल (गर्ग बनौ.) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

वातारि कैपसूल (पंकज फार्मा.) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

वातकन्टक कैपसूल (मिश्रा) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

वातरोग हर कैपसूल (ज्वाला) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

रास्नाघनसत्व टेबलेट (गर्ग बनौ.) 1-2 गोली दिन में 3 बार दें।

वात नौल मलहम (गर्ग) पीड़ित स्थान पर मालिश कर सिंकाई करें तथा एरन्ड पत्र बांध दें। आमवात के रोगियों के लिए अमृत समान लाभप्रद है।

रूमालया मलहम (हिमालय ड्रग) धीमें-धीमें मालिश करें।

रास्ना फोर्ट पेय (शक्ति फार्मेसी) 1-2 चम्मच भोजनोपरान्त। आमवात एवं अन्य वातरोगों में उपयोगी।

वातकिल मलहम (अतुल फार्मेसी) आमवात, गृधसी, पक्षाघात, दर्द, सूजन पसली तथा गले के दर्द में लाभप्रद है। दर्द के स्थान पर धीरे-धीरे मालिश करें

तथा बाद में गर्म रुई से सिंकाई करें। यदि सूजन अधिक हो तो—अन्डी के ताजा पत्ते पर थोड़ा-सा मलहम चुपड़ कर और पत्ते को थोड़ा गरम करके बांध दें तथा इसके साथ ही वात किल कैपसूल 1-1 सुबह शाम प्रयोग करें।

वातकिल कैपसूल (अतुल फार्मेसी) आमवात, पक्षाघात, गृधसी, जोड़ों का दर्द, सूजन तथा समस्त वात विकार नाशक है। यह 1-1 कैपसूल सुबह-शाम दूध या चाय से दें।

उन्माद, पागलपन (Insanity)

रोग परिचय—इस रोग से रोगी अस्वाभाविक हरकतें करने लगता है। इसका कारण होता है मस्तिष्क की स्वाभाविक स्थिति में गड़बड़ी अथवा विकृति उत्पन्न हो जाना। इसमें रोगी की स्मरण शक्ति-लोप हो जाता है। रोगी अजीबो गरीब हरकतें करने लगता है। कभी रोता है, कभी गाता है, कभी हँसता है। रोगी का अपने मास्तिष्क पर सही नियन्त्रण नहीं रह पाता है। इसी को उन्माद रोग अथवा पागलपन कहा जाता है।

उपचार

● बच और कुलिंजन का चूर्ण सम भाग एकत्र कर 4 से 12 रत्ती की मात्रा में दिन में 2 बार शहद से चटाने से उन्माद में लाभ होता है।

● शंखपुष्पी-स्वरस को मधु के साथ 20 दिन तक नित्य देने से सभी प्रकार के उन्माद में लाभ होता है।

● सर्पगन्धा और जटामांसी का चूर्ण 4-4 ग्राम तथा शक्कर 2 ग्राम मिलाकर जल के साथ दिन में 3 बार कुछ दिन सेवन करने से उन्माद में लाभ होता है।

● इमली 20 ग्राम को पानी के साथ सिल पर पीसकर रोगी को पिला देने से उन्माद में लाभ होता है।

● नीबू के छाया-शुष्क छिलकों का चूर्ण 6 ग्राम रात्रि भर 400 ग्राम पानी में भिगोकर प्रातःकाल इसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से उन्माद में लाभ होता है।

● कपूर 1-2 रत्ती की मात्रा में दिन में 3 बार ब्राह्मी स्वरस अथवा सारस्वतारिष्ट के साथ सेवन कराने से उन्माद में लाभ होता है।

● चित्रक-मूल चूर्ण के साथ ब्राह्मी तथा बच का महीन चूर्ण समभाग एकत्र खरल कर 1-2 ग्राम तक सुबह-शाम गोदुग्ध से देने से उन्माद में लाभ होता है।

● ब्राह्मी, मुन्डी, शंखपुष्पी (प्रत्येक 10-10 ग्राम) त्रिफला 30 ग्राम, मिश्री

60 ग्राम सभी का चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे सुबह-साम 6-6 ग्राम की मात्रा में बकरी के दूध से 40 दिन निरन्तर सेवन कराने से पागलपन, दिमाग की कमजोरी में लाभ होता है। योग छोटा किन्तु अत्यन्त उपयोगी व परीक्षित है।

● सूखा धनिया 20 ग्राम, सफेद चन्दन, स्याह (काले) कुलफा के बीज, जहरमोहरा खताई पिष्टी, वंशलोचन, गावजवां (प्रत्येक 6-6 ग्राम) तथा मिश्री समभाग कूट पीस छानकर चूर्ण बनालें और सुरक्षित रख लें। इसे 10 ग्राम की मात्रा में प्रातःकाल अर्क गावजवां के साथ सेवन करने से उन्माद में लाभ होता है।

● भांग का सत्व (Extract Connabis Indica) और अभ्रक भस्म दोनों 10-10 ग्राम, सफेद मिर्च, छोटी इलायची के दाने, वंशलोचन (प्रत्येक 20-20 ग्राम) मिलाकर थोड़े जल के साथ खरल कर 1-1 रत्ती की गोलियां बना लें। उन्माद रोगी को 1-1 गोली दिन में 3 बार दें। जीर्ण रोग की तीव्रावस्था में 2-2 घंटे पर जल के साथ सेवन करायें। यह औषधि उन्माद रोग में विशेष लाभप्रद है इसके अतिरिक्त अपस्मार-प्रलाप में भी लाभप्रद है।

उन्माद नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

सरपीना टेबलेट (हिमालय ड्रग) 1 से 3 गोली दिन में 3 बार। बढ़े हुए उच्च रक्तदाब को कम करती है तथा मस्तिष्क को शान्ति देती है।

सर्पेन्थिन टेबलेट (मार्तन्ड) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

ब्राह्मी शंखपुष्पी टेबलेट (गर्ग बनौ.) मात्रा उपर्युक्त। मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करती है और मस्तिष्कजन्य उष्णता को कम करती है।

ब्राह्मी शंखपुष्पी सीरप (गर्ग बनौ.) 1-1 चम्मच दिन में 2-3 बार। मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है।

दिमाग दोषहरी टेबलेट (बैद्यनाथ) 1-1 टेबलेट दिन में 3 बार। तीव्रावस्था में 1 से 3 टिकियां दें। निद्रा लाती है, दिमाग शान्त करती है।

ब्रेनटेब (बैद्यनाथ) मात्रा उपरोक्त। मस्तिष्क को बल प्रदान करता है।

ब्राह्मी शर्बत (गुरुकुल कांगड़ी) 1-1 चम्मच दिन में 2-3 बार दें। मस्तिष्क को बल प्रदान करता है।

शंखपुष्पी सीरप (ऊँझा) 1-1 चम्मच सुबह-शाम दूध से। मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है।

शक्तिसंचय सीरप (अतुल फार्मेसी) 2-2 चम्मच दिन में 3 बार दूध या पानी से। शारीरिक एवं मानसिक शिथिलता नष्ट कर बल, बढ़ाती है।

उपदंश आतशाक (Syphilis)

रोग परिचय—इसे अंग्रेजी में 'सिफलिस' के नाम से जाना जाता है । यह दुष्टा (दुश्चरित्रा) स्त्री से सम्भोग करने से एक-दूसरे को होता है । पहले लिंग पर एक हल्के रंग का पीड़ा रहित घाव होता है । वह 3 सप्ताह में ठीक हो जाता है । फिर डेढ़-दो महीनों के बाद त्वचा पर बड़े-बड़े भूरे रंग के उद्‌भेद निकल आते हैं । यह रोग वंशानुगत (माता-पिता से) भी उनकी सन्तानों में पहुँच जाता है । यह एक महा भयंकर संक्रामक रोग है, जो एक रोगी से दूसरे को हो जाता है। जब किसी स्त्री या पुरुष को इसका संक्रमण लग जाता है तब उसके द्वारा किसी स्वस्थ स्त्री या पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध (संभोग, मैथुन) करने से उसे भी हो जाता है । उचित चिकित्सा व्यवस्था से यह रोग पूर्णरूपेण निर्मूल (नष्ट) हो जाता है । अत: यह रोग पूर्णत: साध्य है, असाध्य नहीं है ।

उपचार

● नीम की पत्तियों का 10 ग्राम रस प्रतिदिन पिलायें तथा नीम के बीजों का तैल यौनांगों पर मालिश करें । नीम का तैल कृमि और दूषित गर्मी का संहार करता है । नीम का तैल 5 ग्राम की मात्रा में पीना भी अतीव गुणकारी है । अथवा नीम को कोमल शाखाओं की छाल 10 ग्राम, भांगरा 10 ग्राम तथा काली मिर्च 10 दानें लें और 100 ग्राम पानी में पीसकर प्रतिदिन पिलायें । नीम का तैल यौनांगों पर मलें । यह आतशक को अन्दर-बाहर से समूल नष्ट करने हेतु शर्तिया घरेलू इलाज है । कोई एक योग नीम का अवश्य प्रयोग में लायें ।

नोट—उपदंश में सर्वप्रथम रोगी के बलाबल के अनुसार जुलाब देकर दोषों को निकालें । फिर उपदंश नाशक औषधियों (योगों) का प्रयोग करें । रोगी को शीतल औषधियों शीतल खाद्य पदार्थों तथा शीत से भी बचाना चाहिए अन्यथा उसे गठिया का रोग हो जाएगा ।

● मुन्डी और गिलोय सममात्रा में लेकर कूट पीसकर छानकर रख लें । इस चूर्ण को 4-4 माशा की मात्रा में शहद में मिलाकर सुबह-शाम शीतल जल के साथ नियमपूर्वक सेवन करने से उपदंश, वातरक्त, कोढ़ तथा पारे (पारा) के विकार नष्ट हो जाते हैं । परीक्षित है ।

● हरड़, बहेड़ा, आँवला, नीम की छाल, अर्जुन की छाल, पीपल की छाल, खैर की लकड़ी, विजय और अडूसे को पत्ते सभी को बारीक पीस छानकर चूर्ण तैयार कर लें । जितना चूर्ण हो उतनी ही शुद्ध गुग्गुल मिला लें ।

6-6 माशे की गोलियां बनाकर सुरक्षित रख लें । इन के सेवन करने से सभी तरह के उपदंश, रक्त विकार एवं दूसरे फोड़े एवं घाव नष्ट हो जाते है ।

(नोट—एक कलईदार पतीला में अन्दाजन पानी और त्रिफला भर दें, ऊपर से कपड़ा बांधकर उसी पर गुग्गुल का चूर्ण रखकर पतीला को ढक्कन से बन्द करके आग पर चढ़ाकर पकायें इस प्रयोग से गुग्गुल शुद्ध हो जाती है ।)

● अनन्तमूल 50 ग्राम को जौकुट करके आधा किलो खौलते हुए पानी में 2 घंटे तक भिगोवें, तदुपरान्त निचोड़ कर छान लें । इसे 50-50 ग्राम की मात्रा में दिन में 4-5 बार पिलाने से उपदंश में लाभ होता है ।

● आम के पेड़ की ताजा छाल का रस 20 से 40 ग्राम तक प्रतिदिन प्रात:काल ही, बकरी के दूध के साथ 6 दिन तक सेवन करने से उपदंश में लाभ होता है।

● अकरकरा और आक की जड़ को समभाग लें । उसमें 2 भाग काली मिर्च तथा 4 भाग मिश्री मिलाकर चूर्ण बना लें । इसे 2 से 4 ग्राम तक की मात्रा में सेवन कराने से उपदंश में लाभ होता है ।

● उपदंश द्वारा रक्त विकृत होने पर जब सम्पूर्ण शरीर में विस्फोट सन्धियों की जकड़न तथा धब्बे इत्यादि हो गये हों तो चोबचीनी का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में दिन में 2-3 बार दूध के साथ देने से विशेष लाभ होता है ।

● धतूरे की जड़ को छाया-शुष्क कर महीन चूर्ण कर सुरक्षित रख लें । आवश्यकता के समय इसमें से 2 चावल भर (आधी रत्ती) की मात्रा में पान में रखकर खिलाने से उपदंश समूल नष्ट हो जाता है ।

● नीम की छाल 200 ग्राम को जौकुट करके शाम को 1 किलो खौलते पानी में डालकर आग से नीचे उतारकर रात भर इसी पानी में पड़ी रहनें दें तथा प्रात: छानकर इसमें से 50 ग्राम उपदंश रोगी को पिला दें । शेष जल से उपदंश के व्रणों को प्रक्षालन करवायें । इस प्रयोग से शीघ्र ही उपदंश के व्रण सूख कर उपदंश नष्ट हो जाता है ।

● मेंहदी के पत्तों का रस 40 ग्राम में 20 ग्राम मिश्री मिलाकर 10-12 दिनों तक पिलाने से उपदंश की गर्मी शान्त होकर लाभ हो जाता है ।

● तम्बाकू के फूल 6 ग्राम, गेहूँ 200 ग्राम, सुहागा 1 ग्राम, आँवला 10 ग्राम सभी को पीसकर लेप बनाकर लगाने से उपदंश के व्रणों में शीघ्र लाभ होता है।

● सफेद कत्था 20 ग्राम, कर्पूर 10 ग्राम, सिन्दूर 5 ग्राम लें । तीनों को

पीस छानकर 100 बार धुले हुए 125 ग्राम मक्खन में मिलाकर मलहम बनालें। इस मलहम के लगाने से भयंकर उपदंश के घावों में भी लाभ हो जाता है।

● पीली हरड़, सुहागा, आंवला इन सबको जलालें और पीस कर पाउडर बनालें । उसे घावों पर छिड़कने से उपदंशजन्य व्रण भरने लगते हैं ।

● सुपारी को घिसकर लेप करने से उपदंश के व्रणों में लाभ होता है।

● उपदंश के कारण जब हलक में व्रण हो जावे तो उन पर तूतिया का प्रयोग अतीव गुणकारी है । कमजोर व्रणों पर इसका लोशन लगायें । एक औंस पानी में 1 ग्रेन तूतिया डालने से 'तूतिया लोशन' बन जाता है ।

● चन्दन के तैल की 4-5 बूँदें बताशे में डालकर 1 सप्ताह तक खाते रहने से उपदंश का रोग नष्ट हो जाता है ।

● भैंस की चर्बी गरम करके पाँवों की पिन्डलियों पर मलने से 7 दिन में उपदंश का नामोनिशान मिट जाता है ।

नोट—किसी स्त्री अथवा पुरुष को उपदंश है अथवा नहीं इसकी पहचान (परीक्षा) हेतु उसके शरीर पर किसी भी भाग पर नीबू का रस लगाकर देखें, यदि यह असहनीय प्रतीत हो तो समझ लें कि उपदंश का रोग है ।

● अधभुने जीरे में काला नमक मिलाकर उसका शरबत बनाकर पीने से शरीर पर के गर्मी के चकत्ते गायब हो जाते है तथा खून साफ होकर उपदंश रोग ठीक हो जाता है ।

उपदंश नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

सन्दल पिल्स (झन्डू) 2-3 गोली दिन में 3 बार । उपदंश, पूयमेह की अवस्था में लाभकारी है ।

उपदंशादि कैपसूल (जी. ए. मिश्रा) 1-2 कैपसूल सुबह-शाम । उपदंश की प्रत्येक अवस्था में लाभप्रद है ।

गोनारि कैपसूल (ज्वाला आयु.) मात्रा उपर्युक्त । उपदंश तथा फिरंग दोनों में लाभप्रद है ।

उपदंशहर वटी (मुल्तानी) 1-2 टिकिया दिन में 2 बार जल से दें तथा 1 टिकिया हल्के गरम जल में घोलकर उपदंश व्रणों पर लेप करें ।

उपदंशारि मलहम (धन्वन्तरि कार्या.) बाह्य प्रयोगार्थ । उपदंश तथा फिरंग दोनों में लाभकारी है ।

उष्णवात, सूजाक (Gonorrhoea)

रोग परिचय—यह एक औपसर्गिक (Venereal) रोग है, जो गोनोकोक्स (Gonococus) नामक बैक्टीरिया (कीटाणु) द्वारा उत्पन्न होता है । यह कीटाणु काफी के बीज के सदृश अथवा मनुष्य के वृक्क के आकार के अत्यन्त ही छोटे-छोटे होते हैं जो नंगी आँखों से दिखलाई नहीं पड़ते है । इन्हें अनुवीक्षण यन्त्र से सरलता से देखा जा सकता है ।

यह रोग सूजाक से ग्रसित स्त्री (विशेष कर वेश्या) के साथ संभोग करने से हो जाता है । सम्भोग के तीसरे-पांचवे दिन (किसी-किसी रोगी को 2-3 सप्ताह के बाद) इस रोग के लक्षण प्रकट होते हैं । मूत्र का छेद लाल होकर सूज जाता है । मूत्र जलन और दर्द के साथ आता है । उसके 3-4 दिनों के बाद रोगी के कष्ट बढ़ जाते हैं । मूत्र रुक जाता है अथवा जलन व दर्द के साथ मूत्र रक्त-मिश्रित आता है रोगी के लिंग में असहनीय दर्द होता है यहाँ तक कि लिंग में जरा-सा कपड़ा छू जाने पर भी रोगी तड़प उठता है । जाँघों के जोड़ की ग्रन्थियाँ सूज जाती हैं तथा ज्वर भी हो जाता है । रोग के प्रारम्भ में मामूली सी खराश और खुजली मूत्र के छेद में होती है और पूय (पीप) सी निकलती है फिर धीरे-धीरे मूत्र मार्ग सूज जाता है तथा पूय की अधिकता के कारण मूत्र धुएं के समान धुंधला सा आता है । रात्रि के समय रोगी का लिंग खड़ा हो जाने पर उसको तड़पा देने वाला दर्द होता है । दर्द के कारण लिंग 1 ओर या नीचे को मुड़ जाता है (बहुत से रोगियों में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है । रोगी यही समझता रहता है कि पूय आदि किसी दूसरे कारण से आ रही है और इसी कारण लापरवाही में वह अपना रोग बढ़ा लेता है ।

सूजाक 3-4 सप्ताह के बाद अपना संक्रमण (इन्फैक्शन) फैलाकर मूत्र मार्ग के अन्त तक चला जाता है । बाद में यह संक्रमण शुक्र प्रणालियों व ग्रन्थियों, पौरुष ग्रन्थि तथा वीर्य उछालने वाली नलियों में भी पहुँच जाता है । इसके बाद सुजाक के कीटाणुओं का संक्रमण रक्त में मिलकर सम्पूर्ण शरीर को रोगग्रस्त करने लगता है । उचित चिकित्सा के अभाव में यह रोग वर्षों तक बना रहता है । सुजाक से ग्रसित रोगी जब किसी भी स्त्री से संभोग करता है तो उसको भी सुजाक हो जाता है । रोगी पुरुष गर्भ ठहराने में असमर्थ हो जाता है ।

इस रोग के उपद्रव-स्वरूप जोड़ों का सूज व पथरा जाना, रक्त मिला मूत्र

आना, अण्डों का सूज जाना आदि भयानक रोग हो जाते हैं। रोग पुराना हो जाने पर पुराना सुजाक (ग्लीट) कहलाता है जो वर्षों तक रोगी को पीड़ित करता है। मूत्रमार्ग में घाव व रेशे उत्पन्न होकर मूत्र मार्ग अन्दर से सिकुड़कर बन्द हो जाता है। जिसके कारण मूत्र अत्यन्त ही कठिनाई से आता है। सम्भोग करने पर मूत्रमार्ग रुक जाने के कारण वीर्य मूत्राशय में चला जाता है। मूत्रमार्ग सिकुड़ जाने को (स्ट्रिक्चर) कहते हैं।

इस रोग का पूर्ण प्रभाव मूत्र व रक्त की परीक्षा (जाँच) करने और उसमें सुजाक के कीटाणु होने पर ही मिलता है। क्योंकि कई बार स्त्री की योनि तंग होने या खुश्क होने अथवा योनि में सूजन होने और श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) की रोगिणी स्त्री से सम्भोग करने पर पुरुष के मूत्र मार्ग में सूजन हो जाने से भी यह सब लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और पूय आने लगती है। इस रोग को 'मूत्र मार्ग शोथ' कहते हैं।

सुजाक के कीटाणु शिश्न (लिंग) के छिद्र में होकर मूत्रमार्ग में प्रविष्ट हो जाते हैं और वहां अपनी संख्या में निरन्तर वृद्धि करते हुए मूत्रपथ की भीतरी दीवार को काटकर खाने लगते हैं। जिससे पूय का निर्माण होने लगता है।

यह रोग स्त्री तथा पुरुष दोनों को हो सकता है। किन्तु यह रोग किसी पशु को नहीं होता है। स्त्री को यह रोग प्रायः उसके चरित्रहीन पति द्वारा मिलता है। पुरुषों को यह रोग दुश्चरित्रा स्त्री या वेश्या के साथ सम्भोग करने से होता है। इसके अतिरिक्त कई बार बेजाईनल स्पेक्यूलम या अन्य दूसरे यन्त्र जो चिकित्सक द्वारा किसी सुजाक वाली स्त्री को प्रयोग किये जाते हैं। उनको लापरवाही वश संक्रमण रहित न कर किसी स्वस्थ स्त्री को यन्त्र प्रयोग करा दिये जायें तब भी यह रोग हो जाता है।

इस रोग में स्त्री की योनि में एक विशेष प्रकार की गाँठ हो जाती है। जो बढ़कर भग के ओष्ठों, मूत्र के छेद क्लारोरिस तक और भीतर की ओर फैलोपियन प्रणालियों और डिम्बाशय तक पहुँच जाती है। जब तक यह रोग स्त्री के गुप्त अंगों के बाहरी भागों में बहता है। तब तक उसे केवल मूत्र करने में कष्ट और कठिनाई होती है और योनि में स्राव के साथ हल्के नीले रंग की पीव आने लगती है। किन्तु जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है और गर्भाशय में चला जाता है तो पीड़ा बहुत बढ़ जाती है। रोगिणी को हर समय जलन और बेचैनी रहती है। ज्वर भी हो जाता है तथा पीव भी अधिक आने लगता है। पेडू पर तीव्र जलन होती

है। वहाँ की स्नायु में कठोरता आ जाती है। जाँघों के जोड़ों की ग्रन्थियां सूज जाती है। कई बार बारथोलिन ग्लैज के सूज जाने से भगद्वार का छेद बिल्कुल ही बन्द हो जाता है। जिसके कारण स्राव और पीव का आना रुक जाता है।

कभी-कभी यह रोग बढ़कर स्त्री के वृक्कों तथा मूत्राशय तक को प्रभावित कर देता है। रोग प्रारम्भ होते ही उचित चिकित्सा व्यवस्था से यह रोग 15-20 दिनों में समूल नष्ट हो जाता है अन्यथा पुराना (क्रोनिक) हो जाता है। उस अवस्था में तमाम कष्ट कम हो जाते हैं। केवल मूत्र करने में जलन होती है। कभी-कभी सफेद स्राव जिसमें गाढ़ी पीव मिली होती है जो मूत्र के छेद और भग द्वार से आती रहती है। प्रदर मासिक धर्म जलन के साथ आता है। पीड़ित स्थान पर कुछ दूषित तन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। यह अवस्था बहुत कष्टदायक होती है। योनि की श्लैष्मिक-कला ढीली और गुलाबी रंग की हो जाती है।

रोग पुराना हो जाने पर—गर्भाशयस्राव से इस रोग का सन्देह (भ्रम) हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में दोनों रोगों का अन्तर इन लक्षणों से स्पष्ट हो सकता है। यदि स्त्री के मूत्र मार्ग के छेद को अँगुली से दबाया जाय तो सुजाक का रोग होने पर सफेद गाढ़ा तरल निकलता है, जबकि गर्भाशय-स्राव का रोग होने पर अंगुली से दबाने पर किसी भी प्रकार का स्राव नहीं निकलता हैं। इस रोग से ग्रसित स्त्री के मूत्र में संक्रमण और विषैले प्रभाव (यूरेनियां) दिल की भीतरी झिल्ली में शोथ, आँखें आ जाना, जोड़ों में दर्द होना, गर्भाशय-शोथ और घाव, बाँझपन स्त्री के बच्चे बार-बार मर जाना अथवा मृत (मरे हुए) बच्चे उत्पन्न होना, गर्भपात, मूत्राशय में शोथ, गुदा में शोथ, मूत्र में रक्त आना आदि लक्षण हो सकते हैं।

उपचार

- स्त्री या पुरुष दोनों में से किसी एक को यदि सुजाक का रोग हो तो पुरुष निरोध (फ्रैन्च लैदर) नामक रबड़ का कन्डोम शिश्न पर चढ़ाकर पूर्ण सावधानी पूर्वक सम्भोग क्रिया सम्पन्न करें इस प्रयोग से इस ''छूत'' की बीमारी से से भी बचेंगें तथा वीर्य स्खलन (रुकावट) का समय भी बढ़ जायेगा।
- अलसी 20 ग्राम रात्रि को आधा किलो पानी में भिगो दें तथा प्रातःकाल में उसका लुआब उठाकर छान लें। तदुपरान्त उसमें कच्ची खाँड़ मिलाकर पीने से स्वप्नदोष के समय वीर्य की रुकावट से होने वाले सुजाक में लाभ होता है।
- छाया-शुष्क आम के पत्तों का चूर्ण सुबह शाम 6-6 ग्राम पिलाने से सुजाक में लाभ होता है अथवा आम की ताजा अन्तरछाल का रस 40 ग्राम तथा चूने

का निथरा हुआ जल 10 ग्राम लें। दोनों को एकत्र कर 6 दिन तक पिलाने में पूयमेह में विशेष लाभ होता है तथा मूत्र के समय की वेदना कम हो जाती है।

● कबाबचीनी का चूर्ण 1 ग्राम तथा फिटकरी का चूर्ण 2 रत्ती मिलाकर जल के साथ दिन में 3 बार देने से सुजाक में लाभ होता है।

● कबाबचीनी का मोटा चूर्ण 4 ग्राम तक को 125 ग्राम उबलते पानी में मिलाकर ढक्कन से ढँक दें। उसे 15-20 मिनट बाद छानकर ठन्डा करें। फिर उसमें 5 बूंद चन्दन का तेल मिलाकर रोगी को दिन में 2 बार पिलाने से मूत्र साफ आने लगता है और पूयमेह (सुजाक) की वेदना शान्त हो जाती है।

● गिलोय 50 ग्राम को पीसकर 250 ग्राम पानी में छान लें। तदुपरान्त उसमें कलमी शोरा, यवक्षार, शीतलचीनी, प्रत्येक 6-6 ग्राम तथा शक्कर 50 ग्राम मिलाकर पुनः छान लें। इसे 4 घन्टे पर प्रतिदिन 4-5 बार दें। इस प्रयोग से 3-4 सप्ताह में सुजाक के समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं।

● चन्दन का तेल 5 से 15 बूँद तक दिन में 3 बार 4-5 बताशों पर डालकर दूध के साथ देने से सुजाक में विशेष लाभ होता है। यदि जलन अधिक हो तो 5-10 बूँद की मात्रा प्रत्येक घण्टे पर दें। पूय स्राव के बन्द हो जाने पर भी 14-15 दिनों तक निरन्तर देते रहने से इस रोग का पुनः आक्रमण नहीं होता।

● शुद्ध बैरोजा 25 ग्राम, छोटी इलायची 10 ग्राम और मिश्री 60 ग्राम लें। सभी के महीन चूर्ण का मिश्रण 6 ग्राम की मात्रा में दूध या लस्सी के साथ अथवा शीतल जल से सुबह शाम सेवन करने से सुजाक एवं तज्जन्य कष्टों का शीघ्र निवारण हो जाता है।

● बबूल का गोंद साफ जल में घोलकर पतला पानी जैसा बना लें। इससे पिचकारी करने से मूत्र की जलन तथा पीव में लाभ होता है।

● बरगद की 20 ग्राम कोपलों या कोमल पत्तों को कुचलकर रात्रि के समय 40 ग्राम पानी में भिगोवें तथा प्रातःकाल मल छानकर उसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से पेशाब की जलन तथा पूय आना शीघ्र बन्द हो जाता है।

● वंशलोचन, शीतलचीनी, नागकेशर तथा छोटी इलायची के बीज सभी सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे डेढ़ से तीन ग्राम की मात्रा में 6 बूँद चन्दन का तेल मिलाकर सुबह-शाम 3 दिन तक देने से मूत्र-वेदना दूर होकर सुजाक में लाभ होता है।

● बादाम की गिरी 6 नग छिलका रहित तथा असली श्वेत चन्दन का बुरादा

3 ग्राम लें। दोनों को महीन पीसकर मिश्री मिलाकर दिन में 3 बार जल से सेवन कराने से कष्टसाध्य पूयमेह में लाभ होता है।

● भाँग की ठन्डाई पिलाने से मूत्र विरेचन होकर पूय निकल जाता है तथा मूत्र त्याग के समय की दाह भी शान्त हो जाती है। भांग की पिचकारी से प्रक्षालन (धुलाई) करने से भी सुजाक में विशेष लाभ होता है।

● मूली की 4 फाँकें कर उन पर भुनी फिटकरी का चूर्ण 6 ग्राम बुरककर रात्रि में ओस में रख दें। प्रातःकाल वह फाँकें खाकर ऊपर से जो पानी निकलता है। उसे पी लेने से सुजाक में लाभ होता है।

● काली मूसली के 6 ग्राम चूर्ण को उबलते हुए दूध में थोड़ा-थोड़ा डालकर मिला लें। फिर मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाने से सुजाक में लाभ होता है।

● मूसली तथा शक्कर 6-6 ग्राम तथा चन्दन का तेल 3-5 बूँद तक डालकर दूध की लस्सी 3 दिन तक सेवन करने से सुजाकजनित तीव्र वेदना सहित मूत्रकृच्छ में लाभ होता है।

● रेवन्द चीनी, कलमी शोरा (प्रत्येक 7 ग्राम) यवक्षार 6 ग्राम, सफेद जीरा 10 ग्राम, खान्ड, 120 ग्राम सभी का चूर्ण कर लें। इसे 6 ग्राम की मात्रा में गाय के दूध की लस्सी से सेवन करें। सुजाक में लाभ होता है।

● माजूफल 10-10 रत्ती की मात्रा में दूध की लस्सी के साथ प्रातःकाल प्रति 1-1 घन्टे पर 3 बार सेवन करने से मूत्र-नलिका पर ग्राही प्रभाव पड़कर पूयस्राव कम हो जाता है।

नोट:—बिना कष्ट के जब अतिशय पूयस्राव हो रहा हो, तब इस योग का व्यवहार करना चाहिए।

● भुनी फिटकरी और सोना गेरू 10-10 ग्राम तथा मिश्री 40 ग्राम सभी को पीसकर चूर्ण बनालें। इसे 6 ग्राम की मात्रा में गाय के दूध के साथ सेवन करने से सुजाक में लाभ होता है।

● गेरू 60 ग्राम, शीतलचीनी 60 ग्राम, कपूर 6 रत्ती सभी को कूट पीसकर महीन चूर्ण बनाकर (छलनी या चलनी से छान लें) इसे 3 ग्राम की मात्रा में दिन 2-2 घन्टे के अन्तर पर 1-1 मात्रा देने से सुजाक में लाभ होता है।

● हल्दी तथा आँवला सम मात्रा में लेकर पीस छान लें तथा बराबर मात्रा में मिश्री मिला लें। इसमें से 10 ग्राम चूर्ण खाकर शीतल जल पीने से सुजाक में शीघ्र लाभ होता है।

● असली चन्दन का तेल और बैरोजा का तेल 10-10 बूँद बताशे में

डालकर दें । ऊपर से गाय का ठण्डा दूध पिलाने से 2-4 दिन में ही सुजाक में लाभ होता है ।

● बड़ का दूध प्रातःकाल बताशे में खाने से 1 सप्ताह में ही सुजाक का रोग मिट जाता है ।

● तूतिया 3 ग्राम फिटकरी 6 ग्राम इसको आधा किलो पानी में औटावें। आधा जल शेष रहने पर उतार लें । इसकी पिचकारी लगाने से सुजाक के व्रण भरने लगते है ।

● सफेद कत्था 20 अफीम 10 ग्राम, मेहन्दी के पत्ते 25 ग्राम और रसौत 10 ग्राम सभी को रात्रि के समय पानी में भिगोदें । प्रातःकाल छानकर उसकी पिचकारी से प्रक्षालन करने से सुजाक में लाभ होता है ।

सुजाक नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

उष्ण वातहर कैपसूल (गर्ग बनौषधि) 1-1 कैपसूल दिन में 3 बार उष्ण वात में अत्यन्त प्रभावशाली योग है । पुराने से पुराना सुजाक इसके निरन्तर सेवन से ठीक हो जाता है ।

यष्टी मधु चूर्ण (झन्डू) 1 से 4 ग्राम तक दिन में 3बार । लाभ उपयुक्त।

सरिवा लिक्वड़ (झन्डू) दिन में 3 बार लाभ उपर्युक्त । इसका सीरप भी आता है । इसे 2 से 4 मिली दिन में 3 बार दें ।

वेनो मिक्श्चर (झन्डु) मात्रा 4 सेट मिली. दिन में 3 बार ।

सार्सा परिल्ला आयोडाइड (झन्डू) 1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार दें।

आयोबीन टिकिया और ब्रह्माडाइन टिकिया (डिशेन) 1-1 टिकिया दिन में 2 बार लगातार 2-3 माह तक तथा इसी कम्पनी की अल्बोसांग टिकिया कमजोरी दूर करने हेतु 2-2 टिकिया दिन में 2 बार भोजनोपरान्त दें एवं जलन के साथ एक-एक कर कर पेशाब आने पर इसी कम्पनी की प्रत्येक 4-4 घन्टे पर 1-1 टिकिया तथा तीव्रावस्था में दो-दो टिकिया प्रयोग करायें ।

समय-समय पर पेशाब की जाँच भी करायें । क्योंकि मवाद रुक जाने से ही चिकित्सा पूर्ण नही हो जाती है । स्त्री रोगी को दिन में कम से कम 2 बार किसी भी कीटाणु नाशक औषधि से डूसिंग करना अति आवश्यक होता है । भोजन हल्का दें तथा मद्यपान निषेध कर दें ।

स्त्रियों का उपदंश (सिफलिस)

रोग परिचय—स्त्रियों को इस रोग में भग के ओष्ठों पर घाव बन जाता है, जो 3-4 सप्ताह तक रहता है । यह भी सुजाक की ही भाँति एक संक्रामक रोग है । इस रोग के दो प्रकार होते हैं—1. हार्डशेन्कर 2. साफ्टसेंकर । इसका कारण भी एक विशेष प्रकार का कीटाणु है । यदि यह रोग माता-पिता के कारण वंशानुगत क्रम से संतान को हो जाये तो इसको 'प्राइमरी सिफलिस' कहते हैं तथा यह रोग स्त्री से पुरुष को या पुरुष से स्त्री को सम्भोग द्वारा हो जाय तो उसको 'सेकेन्ड्री सिफलिस' कहते हैं। यदि माता पिता दोनों या किसी एक को यह रोग हो तो अनेक वीर्य द्वारा गर्भस्थ बच्चे को यह रोग हो जाता है । माता पिता के रक्त से इस रोग के कीटाणु आँवल द्वारा भ्रूण (बच्चे) में चले जाते हैं ।

यदि यह रोग पति या पत्नी को हो तो सम्भोग द्वारा एक से दूसरे को लग जाता है । ऐसी परिस्थिति में घाव सबसे पहले स्त्री या पुरुष जननेन्द्रिय पर होता है । यदि बच्चे को पैत्रिक उपदंश हो तो दूध पिलाने स्त्री को भी यह रोग अपनी चपेट में ले लेता है ।

उपदंश के रोगी से बहुत अधिक मिलने-जुलने, उसको चूमने-चाटने, उसके कपड़े पहनने, उसके बिस्तर पर लेटने तथा कई बार डाक्टरी यन्त्रों (जिन्हें किसी उपदंश रोगी पर प्रयोग किया जा चुका हो और यन्त्रों को भली प्रकार संक्रमण रहित न किया गया हो) को स्त्री की जननेन्द्रिय में प्रवेश कर देने से यह रोग हो जाता है । उपदंश के रोगी का खून या पीव यदि किसी स्वस्थ मनुष्य के शरीर में चला जाये तो उसको भी यह रोग हो जाता है ।

1. साफ्ट शेंकर—जब उपदंश का संक्रमण पीड़ित स्थान की श्लैष्मिक कला पर प्रभावी होता है तो वह स्थान छिल जाता है तथा 24 घन्टे के अन्दर वहाँ लाली हो जाती है । दूसरे या तीसरे दिन वहाँ फुन्सी निकल आती है । जिनकी नोंक काली होती है और उसके चारों ओर लाली के साथ नीलापन दिखलाई पड़ता है और अक्सर पाँचवे दिन फुन्सी फट जाती है । उसमें से कुछ तरल सा निकलकर गहरा घाव बन जाता है । जिसमें सख्त दर्द होता है तथा बहुत अधिक मात्रा में पीव निकलता है । इस घाव का रंग मटियाला और इसके किनारे साफ एवं जड़ कुछ कठोर होती है । प्रायः जाँघों की ग्रन्थियां सूजकर पक जाती हैं । अक्सर यह घाव भग के ओष्ठों और योनि की श्लैष्मिक-कला में होते हैं और कभी-कभी गर्भाशय

के मुँह तक हो जाते हैं । इसका समय 3 सप्ताह से 2 मास तक का होता है। इस रोग का संक्रमण रक्त में प्रवेश नहीं करता है । इसलिए इसे स्थानीय संक्रमण कहा जाता है ।

2. हार्ड शेन्कर—जिस समय इस प्रकार के उपदंश की छूत मनुष्य के शरीर में प्रवेश करती है तो तुरन्त ही इसके लक्षण प्रकट नहीं होते हैं बल्कि यह संक्रमण अन्दर ही अन्दर अपना विष फैलाता है तथा 10 से 60 दिनों के अन्दर लक्षण प्रकट होने लग जाते हैं । हार्ड शेन्कर उपदंश को लक्षणों के आधार पर 3 श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है ।

(अ) इसमें प्राय: भग के ओष्ठों या योनि के बाहरी भाग में एक लाल रंग का सख्त उभार उत्पन्न होकर फुन्सी का रूप ग्रहण करती है, जो कुछ ही दिनों में फूट जाती है और इसके चारों ओर एक घेरा उत्पन्न हो जाता है । इस घाव से कभी-कभी पतला स्राव और पीव निकलती रहती है और कई बार यह घाव बिल्कुल खुश्क भी हो जाता है । यह घाव अधिक गहरा नहीं होता है और न इसमें अधिक दर्द ही होता है । अक्सर यह घाव 6 माह के अन्दर स्वयं ही ठीक हो जाता है । परन्तु यह दुबारा भी निकल आता है ।

(ब) प्रथम श्रेणी के समाप्त होने के लगभग डेढ़ या दो माह के बाद रोगिणी स्वयं को स्वस्थ अनुभव करती है, किन्तु उपदंश अन्दर ही अन्दर अपने पैर मजबूती से जमाकर फैलता चला जाता है । फलस्वरूप रोगिणी के रक्त और शरीर के प्रत्येक तन्तु में फैल जाता है । जिसके कारण रक्तविकार के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं । शरीर के विभिन्न स्थानों (अंगों) पर फुन्सियाँ और दाने निकल आते हैं । जिनमें बारीक-बारीक छिलके उतरने लगते हैं । अक्सर बड़े-बड़े छाले निकला करते हैं । जिनमें पीव या पानी भरा रहता है । कभी-कभी चर्म पर छोटी-छोटी गाँठें भी हो जाया करती हैं । इस प्रकार इस अवस्था में रोगिणी दिन प्रतिदिन कमजोर होती चली जाती है । उसे अनिन्द्रा हो जाती है । भूख भी कम लगती है । बेचैनी, गले की टांन्सिल सूज जाना और बाद में पककर घाव बन जाना तथा उन घावों का रंग मटियाला होना और किनारे उभरे हुए होना इत्यादि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । इन लक्षणों के अतिरिक्त शरीर के दूसरे अंगों की ग्रन्थियाँ भी सूज जाती हैं। आँखों की भवों के बाल तथा सिर के बाल झड़ने लग जाते हैं । आँखों की पुतलियाँ भी धुँधली हो जाती हैं और आँखों के अन्य भाग सूज जाते हैं । (परन्तु यह आवश्यक भी नहीं है कि उपरोक्त समस्त लक्षण प्रत्येक रोगी स्त्री में पाये जायें) यह अवस्था रोगिणी में कुछ सप्ताहों से लेकर दो वर्ष तक रह सकती है ।

(स) जब उक्त दूसरी, श्रेणी समाप्त हो जाती है, उसके कुछ माह अथवा कई वर्ष बाद तीसरी, श्रेणी आरम्भ हो जाती है । इस खाली काल में अक्सर स्त्री की जीभ तथा उसके हाथों में कुछ जलन सी महसूस हुआ करती है । इस तीसरी श्रेणी की अवस्था में शरीर में शोथ आने लगती है और चर्म की रक्त-वाहिनियाँ फट जाती हैं । फलस्वरूप शरीर के विभिन्न अंगों और स्थानों पर घाव हो जाते हैं । सम्पूर्ण शरीर में हर समय हल्का-हल्का दर्द होता रहता है । लम्बी हड्डियाँ मध्य में जुड़ जाती हैं और उनके सिरे मोटे हो जाते हैं, तालु में छेद हो जाते हैं। नाक बैठ जाती है, आवाज साफ नहीं निकलती है और इन परिस्थितियों से जूझती हुई रोगिणी अन्त में विभिन्न भयानक रोगों यथा पक्षाघात, सन्यास (ऐपोलैक्सी) इत्यादि रोगों से ग्रसित होकर असमय ही काल के गाल में समा जाती है ।

उपचार—उपदंश के अन्तर्गत पिछले पृष्ठों में दिया जा चुका है वहीं देखें। जो लोग वैश्यागामी हैं उन्हें चाहिए कि—वह केलोमल को 3-4 गुनी वैसलीन में मिला कर सम्भोग के तुरन्त पश्चात् शिश्न पर मल लें तथा दो घन्टे बाद गरम पानी तथा साबुन से धो डालें । इस उपाय से इस रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और इसका खतरा समाप्त हो जाता है। इस रोग से ग्रस्त रोगी अथवा रोगिणी को काफी लम्बे समय तक रक्त शोधक औषधियों का प्रयोग करते रहना अति आवश्यक है । जब तक रक्त बिल्कुल ही उपदंश के कीटाणुओं से रहित न हो जाये, रक्त शोधक औषधियों का सेवन करना न छोड़ें ।

आयुर्वेद में शास्त्रीय तथा रक्त शोधक औषधियों का असीम भन्डार है । पेटेन्ट औषधियाँ तो उस ग्रन्थ में कई स्थान पर मिल जायेंगी । शास्त्रीय योगों में—मंजिष्ठादि क्वाथ, खदिरारिष्ट, सारवाद्यारिष्ट, उपदंश कुठार रस इत्यादि विशेष लाभप्रद है । पोटाशियम परमेगनेट एक भाग को दस हजार भाग पानी में मिलाकर (घोलकर) रोगिणी योनि में डूश (सफाई) करती रहे तथा पोटाशियम परमेगनेट के ही हल्के लोशन में गद्दी भिगोकर योनि पर अथवा अन्दर रक्खें ताकि संक्रमण का प्रभाव फैलने से रुक जाय । फिटकरी अथवा नीम की पत्तियों का गरम पानी में ठण्डा करके प्रयोग करना भी इसी श्रेणी में (ऐन्टी सैप्टिक) में आता है और इसी प्रकार बाजार में उपलब्ध डेटोल अथवा सेविलान इत्यादि का प्रयोग भी हितकर है।

कुछ विशिष्ट योग

- रस कपूर, केशर, चन्दन, लोंग, जावित्री, खाँड, (प्रत्येक समभाग) लेकर

पीसकर ख़सखस के क्वाथ में खरल करके खुश्क कर लें तथा सुरक्षित रख लें। इसे आधा से 2 रत्ती तक की मात्रा में दिन में 3 बार खिलाते रहने से उपदंश तथा इससे उत्पन्न समस्त विकार कष्ट हो जाते हैं ।

● फिटकरी सफेद 10 तोला, मकोय के हरे पत्ते 10 तोला लें । दोनों को पीसकर गोला सा बनाकर उसके मध्य में एक तोला संखिया रखकर दो प्यालों में बन्द करके यथाविधि 5 सेर उपलों की आग लगादें । प्याले ठन्डे हो जाने पर संखिया-भस्म और फिटकरी अलग-अलग करलें । संखिया-भस्म 2 से 4 चावल की मात्रा में खाली कैपसूल में भरकर खिलायें । यह औषधि उपदंश में अत्यन्त ही लाभप्रद है । यदि इस रोग से रोगी के तालु में घाव भी हो गये हों तथा रोगी की हालत बहुत ही खराब हो गई हो तब भी उसको आराम जा जाता है ।

● शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक 1-1 तोला लें । दोनों को 3-4 घन्टे तक खूब खरल करके पारा की चमक नष्ट करके कज्जली बनालें, तब इसमें शुद्ध जमालघोटा 2 तोला मिलाकर 6 घन्टे तक खरल करें । तदुपरान्त इसमें 1 तोला खपरिया मिलाकर पुन: 6 घन्टे तक खरल करते रहें । फिर मिट्टी के नये प्यालों में दवा को डालकर खरल को पानी में धोकर इस पानी को भी दवा में ही मिला दें, (पानी इतना हो कि दवा से 2 उँगली ऊँचाई रहे), फिर उसको आग पर उतनी देर तक रखें कि काफी पानी खुश्क हो जाये । दवा थोड़ी सी गाढ़ी रहे । इसको 2 रत्ती की मात्रा में कैपसूल में डालकर निगलकर दूध की कच्ची लस्सी पीयें । यह रोग उपदंश की दूसरी तथा तीसरी श्रेणी के लिए अमृत-तुल्य है । इसके उपयोग से उपदंश का विष दस्तों और कै (वमन) के द्वारा तमाम शरीर से निकल जाता है।

नोट—नाजुक स्वभाव तथा कमजोर रोगियों को यह योग प्रयोग न करायें ।

● नीम की छाल, कंचनार की छाल, इन्द्रायण की जड़, बबूल की फलियां, कंटकारी की जड़, फल और पत्ते, पुराना गुड़ (प्रत्येक 5 तोला) लेकर उन्हें 8 गुने पानी में उबाल लें । इसकी 7 मात्रायें बना लें । प्रतिदिन प्रात:काल 1 मात्रा पिलायें तथा औषधि प्रयोग-काल में मूँग की दाल की खिचड़ी खाने को दें । यह उपदंश के विष को शरीर से निकाल देती है ।

कण्ठमाला या अपची (Scrofula, Lymphadenitis)

रोग परिचय—गले की ग्रन्थियाँ बड़ी होती हैं और पक जाती हैं तथा फटने पर महीनों बहती रहती हैं । एक ठीक होने पर दूसरी हो जाती है । प्राय: एक साथ अनेक ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई हुआ करती हैं ।

उपचार

● कचनार की छाल 40 ग्राम को जौकुट कर कलईदार वर्तन में 40 ग्राम जल में पकायें । जब 50 ग्राम जल शेष रहे तो उतार कर सुखोष्ण ही छानलें। उसमें 3 से 5 ग्राम सौंठ का चूर्ण तथा 10 ग्राम मधु मिलाकर प्रतिदिन 1 बार 40 दिनों तक पिलाने से गन्डमाला में पूर्ण लाभ होता है ।

● चोबचीनी का चूर्ण 4 से 10 ग्राम तक नित्य 2 बार शहद के साथ चटाने से कन्ठमाला में पूर्ण लाभ होता है ।

● काली जीरी के साथ धतूरे के बीज तथा अफीम घोट पीसकर जल में गरम कर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से पीड़ा शान्त हो कर गाँठें बैठ जाती है ।

● नीम की छाल के साथ नीम के पत्तों को मिलाकर जौकुट कर क्वाथ बनाकर पिलाने से गंडमाला में लाभ होता है ।

● बबूल की छाया शुष्क अन्तर छाल के महीन चूर्ण को कन्ठमाला के घाव पर बुरकने से लाभ होता है ।

● बाकला को जौ के आटे और फिटकरी के साथ पीसकर जैतून के पुराने तेल में मिलाकर लेप करने से लाभ होता है ।

● बेल के कोमल पत्तों को पीसकर उसमें थोड़ा शुद्ध घी मिलाकर गरम करके टिकिया बनाकर गन्डमाला की ग्रन्थियों पर बाँधते रहने से लाभ होता है ।

● इमली के सूखे पत्ते पानी में पकावें । गंडमाला पर इसी पानी की भाप दें तथा यही उबले हुए पत्ते बाँधें । लगातार प्रयोग से गन्डमाला में लाभ होता है।

● नीम के पानी से धोकर रेवन्द चीनी का लेप करने से कन्ठमाला में बहुत लाभ होता है ।

● नागफनी के 2-4 फल प्रतिदिन खिलाने से तथा इसी फल को पीसकर कन्ठमाला की ग्रन्थियों पर लेप करने से गन्डमाला में लाभ होता है ।

● साँप की केंचुली, काली हरड़ तथा रसौत (सभी समभाग) लेकर गोलियाँ बनाकर रख लें । आवश्यकतानुसार गाय के घी में पीसकर कन्ठमाला पर लेप करने से शीघ्र लाभ होता है ।

● चिरचिटा (ओंधा) की जड़ के 8-10 टुकड़े लेकर उनकी माला बनाकर रोगी के गले में पहना देने से कुछ ही दिनों में कन्ठमाला ठीक हो जाती है ।

● मूली के बीजों को बकरी के दूध में पीसकर लेप करते रहने से कुछ ही दिनों में कन्ठमाला जाती रहती है ।

● लिसौढ़े की नरम-नरम पत्ती आग पर गरम कर 10 दिनों तक कंठ में बाँधने से कंठमाला का रोग नष्ट हो जाता है ।

● कसोंदी की पत्ती 15 ग्राम, काली मिर्च 4 नग लें । दोनों को पीसकर लेप करने से कंठमाला जाती रहती है ।

● गूगल 10 ग्राम, काली मिर्च 3 ग्राम को सिरके में पीसकर लगाने से कन्ठमाला दूर हो जाती है ।

● सौंठ 3 ग्राम, कुलथी के बीज 10 ग्राम लें । दोनों को गौ मूत्र में पकाकर उन्डा करें । इसका लेप करने से कंठमाला शीघ्र ठीक हो जाती है । अच्छी चिकित्सा व्यवस्था के अभाव में गन्डमाला अपची के रूप में परिवर्तित हो जाती है ।

● शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल, सैंधव लवण (तीनों समभाग) लहसुन रस 4 गुना तथा मधु 8 गुना लेकर प्रलेप सा बना लें । थोड़ी रुई या गॉज को इसमें भिगोकर व्रण के भीतर रखकर पट्टिका बाँध दें । इससे थोड़े ही दिनों में व्रण भर जाते हैं।

● सफेदा काशगीरी 6 ग्राम, सिन्दूर असली 10 ग्राम, सरसों का तेल 50 ग्राम, तीनों दवाओं को एक लोहे की कढ़ाई में डालकर मन्दाग्नि से जोश दें और उतार लें । इस प्रकार जोश देने की प्रक्रिया 3 बार करें । यह मलहम सदृश औषध बन जायेगी । इसको सुरक्षित रख लें ।

प्रयोग विधि—सर्वप्रथम रोगी को आसन पर बिठाकर 4 किलो दही में 20 ग्राम श्वेत मल्ल पीसकर डालकर रोगी के सामने रखकर रोगी से दोनों हाथों से दही मथने की आज्ञा दें । रोगी इस फेन की भाँति दही को इतना मथे कि उसके शरीर से पसीना निकलने लगे । पसीना आने पर हाथों को पौंछ लें । धोवें नहीं (दही भी केवल दानों हाथों के तल भाग से ही मथें) तत्पश्चात् दही को जमीन में गाढ़ दें । इसके दूसरे दिन से उक्त मलहम लगाना शुरू करें तथा साथ में काचनार गूगल प्रात:काल तथा साथ ही बसन्त मालती सायंकाल एक-एक खुराक देते रहें। इसके प्रयोग से कंठमाला चाहे वह क्षयात्मक अवस्था में आकर ही फूट गई हो, तब भी अवश्य ठीक हो जाती है ।

● रोगी का जूठा पानी पीने से प्राय: स्वस्थ लोग भी कंठमाला का शिकार हो जाते हैं । ऐसी स्थिति होने पर महानिम्ब (बकायन) के पत्तों और छाल का काढ़ा पिलायें तथा छाल और पत्तों की पुल्टिस बनाकर छाले पर बाँधें । कन्ठमाला नाशक अत्यन्त सरल प्रयोग है । विशेषत: बच्चों के लिए तो रामबाण है ।

कण्ठमाला नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

इस रोग हेतु आयुर्वेदिक पेटेन्ट निमाताओं ने सूचीवेध (इन्जेक्शन) तैयार किये हैं । जो शत प्रतिशत सफल है ।

अपराजिता सूचीवेध (मिश्रा व बुन्देलखण्ड) 1-2 मिली सप्ताह में 3 बार अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार लगवायें । कंठमाला में लाभप्रद है ।

काँचनार सूचीवेध (मिश्रा व बुन्देलखन्ड) प्रयोगविधि व लाभ उपर्युक्त।

चोबचीनी सूचीवेध (बुन्देलखण्ड) 1-2 मि. ली. प्रतिदिन ।

त्वचा विकार

रोग परिचय—परिचय की विशेष आवश्यकता नहीं, क्योंकि इन विकारों से प्राय: सभी परिचित हैं ।

खुजली दो प्रकार की होती है—सूखी खुजली तथा तर खुजली ।

सूखी खुजली—खुजली के रोगी का कपड़ा पहनने या उसके साथ रहने से 'सार कौटिप्स स्केबी' नामक कीटाणु स्वस्थ मनुष्य के बाहरी चर्म में छेद कर शरीर में प्रवेश कर जाते हैं । इन कीटाणुओं के विष से रक्त के श्वेत एवं लाल रक्त-कणों के नष्ट हो जाने से न पकने वाली छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं तथा चर्म में प्रदाह होकर उस स्थान का रंग खराब हो जाता है । सूखी खुजली प्रारम्भ में विशेषत: हाथ-पैर, मलद्वार, अन्डकोषों तथा योनि पर होती है जो बार बार खुजलाने से शरीर के अन्य स्थानों पर भी हो जाती है । उस रोग के होने का एक कारण रोगी का गन्दा रहना भी है ।

तर खुजली—खुजली को उत्पन्न करने वाले कीटाणु प्राय: कोमल त्वचा में रहते हैं । अँगुलियों के बीच वाले भाग, कलाई, जाँघ और बगल में फुन्सियाँ निकल आती हैं, जिनमें से तरल निकलता है । यही आर्द्र या तर खुजली कहलाती है । खुजलाने से यह तरल शरीर में जहाँ कहीं भी लग जाता है, उस स्थान पर भी यह रोग हो जाता है । फुन्सियों से पहले पतला तरल होता है, जो बाद में पीला हो जाता है, चर्म खुरदरी हो जाती है, अत्यन्त खुजली और दर्द व जलन होती है । यह कष्ट प्राय: रात्रिकाल में बढ़ जाया करता है । खुजली तीव्र संक्रामक रोग है।

पामा—यह रोग छाजन (एग्जिमा) पानीवात-इत्यादि कई नामों से जाने जाना

वाला रोग बड़ी कठिनाई से ठीक होता है । शोथ, मधुमेह, गठिया, छोटे जोड़ों का दर्द तथा अन्य जोड़ों का दर्द, स्थानीय खराश, साबुन का अधिक प्रयोग, बच्चों का दाँत निकलना, या पेट में कीड़े होना, पसीने की अधिकता, चर्म से भूसी उतरते रहने इत्यादि कारणों से हो जाता है । यह भी दो प्रकार का होता है—

यह तीव्र छालों के रूप में प्रकट होता है । जिसमें शीघ्र ही पीव पड़कर पीलाहट युक्त खुरण्ड पड़ जाते हैं । उसमें अत्यन्त खुजली होती है । जिसके कारण रोगी खुजला-खुजलाकर पीड़ित स्थान पर घाव तक बना डालता है ।

दद्रु (दाद) रिंगवर्म—इस रोग की उत्पत्ति का कारण 'फुन्सी' नामक कीटाणु होता है । जो मनुष्य की त्वचा में श्वेद पसीना ग्रन्थियों वाले स्थानों में पैदा होता है । दाद के रोगी के साथ उठने बैठने अथवा उसके कपड़े व्यवहार में लाने से स्वस्थ मनुष्य को दाद हो जाता है । अजीर्ण, स्नायु विकार, मलेरिया ज्वर, यकृत विकार तथा गन्दा रहने से भी यह रोग हो जाया करता है । पहले छोटी-छोटी गोल फुन्सियाँ अलग-अलग अथवा इकट्ठी उत्पन्न होंती हैं तथा उस स्थान में शोथ, लाली, दर्द, जलन एवं खुजली होती है । चर्म सख्त खुरदरी और मोटी सी हो जाती है । सिर में होने पर बालों की जड़ें कमजोर होकर बाल (केश) गिरकर वहाँ गंज सा हो जाता है । उस स्थान की चर्म उभर आती है और दाद फैलता चला जाता है । दाद प्राय: बाजू जाँघ, गाल, अंडकोष, पेडू, सिर, दाढ़ी इत्यादि स्थानों पर हुआ करता है ।

उपचार

● अजवायन को उबलते हुए जल में या वाष्प-जल में मिलाकर व्रणों को धोने से खुजली, दाद, फुन्सियों इत्यादि में शीघ्र लाभ होता है ।

● अजवायन को पानी में पीसकर दिन में दो बार सुखोष्ण लेप करने से दाद, खुजली तता कृमियुक्त व्रणों में लाभ होता है ।

● आक का दूध 10 ग्राम लेकर 50 ग्राम सरसों के तेल में पकावें । दूध जल जाने पर शीशी में सुरक्षित रख लें । इसे दिन में 2-3 बार खाज, पामा, छाजन इत्यादि रोगों में लगायें । यदि खुजली सम्पूर्ण शरीर में हो तो इसकी सम्पूर्ण शरीर पर मालिश करें । निश्चित लाभकारी योग है ।

● आक के ताजे अथवा सुखाये हुए एक भाग दूध में 5 भाग गौघृत अथवा मक्खन मिलाकर खूब खरल कर सुरक्षित शीशी में रख लें । खुजली के स्थान पर इसे लगाने से शीघ्र लाभ होता है ।

● आक के पत्ते 21 नग लेकर 250 ग्राम सरसों के तेल में जला लें तथा इसमें थोड़ी सी मैनसिल मिला लें । इसकी मालिश से त्वचा के विकारों में लाभ होता है ।

● आम के कच्चे फलों (जिनमें गुठली सख्त न हुई हो) को कुचलकर मोटे कपड़े में डालकर (रखकर) इसका रस निचोड़ लें तथा इस रस की मात्रा का चौथाई भाग मैथिलेटिड स्प्रिट अथवा देशी शराब मिलाकर शीशी में सुरक्षित रख लें । तीसरे दिन से उस टिन्कचर का उपयोग प्रारम्भ करें । उसको लगाने से पुराने से पुराना दाद, चम्बल (सोरायसिस) इत्यादि त्वचा सम्बन्धी रोग नष्ट हो जाते हैं।

● कच्चे आम को तोड़ते समय उसके डन्ठल के स्थान से जो तरल (चेंप) निकलता है । उसे खुजलाकर दाद पर लगाने से तुरन्त छाला पड़ जाता है और फूटकर पानी निकल जाता है । नये दाद में 2-3 बार इसको लगाने से लाभ होता है।

● तर या खुश्क किसी भी प्रकार की खुजली हो, आँवले की गुठली जलाकर भस्म बनालें । उसमें थोड़ा नारियल का तेल मिलाकर मलहम सा बनालें । इसे दाद पर लगाने से अवश्य लाभ होता है ।

● कटहल के पत्तों पर घृत चुपड़कर छाजन पर लगाना लाभकारी है ।

● कपूर 2 भाग तथा चूना और हल्दी 1-1 भाग (सभी चूर्ण करके) नारियल के तेल में मिलाकर लगाने से शरीर की खुजली में लाभ होता है ।

● कपूर 2 ग्राम में 25 ग्राम सुहागा मिलाकर लेप करने से शिश्न (लिंग) की खुजली नष्ट हो जाती है ।

● कूट के चूर्ण को मक्खन में मिलाकर शरीर पर मालिश करने से दाद, खुजली, पामा, इत्यादि चर्म-विकारों में लाभ हो जाता है ।

● अच्छे लाल टमाटर का रस सुबह शाम 20-20 ग्राम की मात्रा में पीने से तथा भोजन इत्यादि में नमक कम मात्रा में सेवन करने से त्वचा शुष्क होकर खुजली आना, लाल-लाल चकत्ते पड़ना इत्यादि चर्म विकारों में लाभ होता है ।

● तम्बाकू के 10 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम जल में 12 घण्टे भिगोकर इस जल से प्रक्षालन करने तथा पत्तों को गुलाब जल में घोटकर लेप करने गीली खुजली, छाजन, उकवत इत्यादि में लाभ हो जाता है ।

● तरबूज का मोटे बुक्कल (खोपड़ा) को उतारकर सुखालें । फिर अग्नि पर जलाकर राख कर लें । यदि दाद गीला हो तो इसे पाउडर की भाँति छिड़कें (बुरकें) और यदि सूखी खाज हो तो उसपर लेप चुपड़कर इसे बुरकें । लाभप्रद योग है ।

● थूहर (सेंहुड़) का दूध, आक का दूध तथा धत्तूर-पत्र (धतूरे के पत्ते) सभी 1-1 भाग लेकर गौमूत्र के साथ महीन पीसकर तेल में मिलाकर लेप करने से खाज तथा सिर के व्रण नष्ट हो जाते हैं ।

● थूहर का दूध दाद पर (चाहे जैसा भी दाद हो) केवल एक बार लगाने से ही ठीक हो जाता है ।

नोट:—इसको लगाने से पीड़ित स्थान जलता नहीं है, बल्कि वह दूसरे दिन लाल हो जाता है तथा उस स्थान पर फफोला सा उठकर दूषित पदार्थ तथा कीटाणु आदि नष्ट हो जाते हैं । इसके दो तीन दिन के बाद प्रदाह और लालिमा इत्यादि समस्त कष्ट दूर होकर रोग निर्मल हो जाता है।

● दुद्धी के पत्तों को या दुद्धी की जड़ को पीसकर दाद पर लगाने से या इसके पंचांग 20 ग्राम लेकर लोनियाँ गन्धक (10 ग्राम) के साथ महीन पीसकर मिट्टी के तेल में मिलाकर लगाने से दाद में लाभ होता है ।

● धत्तूरे के ताजे पत्तों का रस 200 ग्राम, धत्तूरे के पत्तों की लुग्दी या कल्क 12 ग्राम अथवा गोघृत 50 ग्राम को लेकर मंदाग्नि पर पकावें । घृत मात्र शेष रह जाने पर छानकर सुरक्षित रख लें । इसे छाजन पर रुई के फाहे या चिड़िया के पंख से दिन में 2-3 बार लगाने से लाभ होता है ।

● नारियल की गिरी का रस निकालकर उसमें थोड़ा सा आँवलासार गन्धक मिलाकर पवावें । जब सम्पूर्ण रस खुश्क हो जाये और तेल सदृश भाग शेष रहे, तब इसे निकाल लें । इस तेल को खाज-खुजली पर लगाने से लाभ होता है ।

● नीबू के रस में हल्दी और सरसों पीसकर उबटन करके चमेली का तेल लगाने से खुजली नष्ट हो जाती है ।

● नीबू का रस 20 ग्राम, चमेली का तेल 50 ग्राम लें । दोनों को चीनी मिट्टी के प्याले में खूब मर्दन करें । जब श्वेत रंग का मलहम सा बन जाये तो रात्रि के समय शरीर पर मालिश करें तथा प्रातःकाल नीबू के रस में गेहूँ की भुसी मिलाकर उबटन (मर्दन कर) गरम पानी से स्नान करें । इस प्रयोग से शुष्क खुजली नष्ट हो जाती है ।

● नीबू के रस में बारूद मिलाकर दाद के स्थान पर लेप करने से अथवा नीबू के रस में नौसादर, गन्धक, सुहागा, तथा कत्था महीन पीसकर लगाने से दाद में लाभ होता है ।

● पीपल की छाल को पानी में घिसकर लगाने से छाजन में अवश्यमेव लाभ होता है ।

● बच्छनाग का महीन चूर्ण तथा अफीम सम मात्रा में लेकर ब्रान्डी शराब में गाढ़ा पीसकर रखें । इसे दाद पर लगाने से लाभ होता है ।

● बावची तथा चन्दन का तेल 1-1 भाग तथा चालमोंगरे का तेल 2 भाग मिलाकर लगाने से खाज, पामा तथा विचर्चिका में लाभ होता है ।

● लहसुन का रस 10 ग्राम, सरसों का तेल 250 ग्राम मिलाकर शरीर पर मालिश करने से तथा उसके बाद 1 घन्टा तक धूप में बैठकर गरम पानी से स्नान करने से खुजली में लाभ होता है ।

● लहसुन को खूब बारीक पीसकर उसमें शुद्ध मधु मिलाकर लेप करने से कुछ ही दिनों में चम्बल (एक्जिमा) तथा दाद आदि नष्ट हो जाते हैं ।

● स्व-मूत्र दाद व चम्बल की सर्वश्रेष्ठ दवा है । जब अन्य योग निष्फल हो जाये तो यह अवश्य ही लाभप्रद है । एक कपड़े की गद्दी बनायें, उसको रोगी अपने मूत्र से तर कर लें और पीड़ित स्थान पर उस गद्दी को 1 घन्टा तक रखें, तत्पश्चात् उसे धोकर स्नान कर लें । केवल 10-12 बार के इस प्रयोग से ही रोगी स्वस्थ हो जायेगा ।

● भैंस का गोबर शरीर पर खूब मलकर थोड़ी देर बाद स्नान करने से खुजली व खारिश में लाभ हो जाता है ।

● कमल की जड़ को पानी में घिसकर लेप करने से दाद तथा अन्य त्वचा रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● 1 ग्राम शुद्ध गन्धक और 3 ग्राम त्रिफला चूर्ण को प्रातःकाल ठन्डे पानी से नियमित दो सप्ताह तक सेवन करने से खुजली नष्ट हो जाती है । किन्तु प्रयोग काल में नमक खटाई तथा गरम वस्तुओं का परहेज अवश्य रखें ।

● राई को सिरके के साथ पीसकर लेप करने से दाद में लाभ होता है ।

● अन्डी के मुलायम पत्ते सिलपर चटनी की भाँति पीसकर गीली खुजली या फोड़ों पर लगाने से विशेष लाभ होता है ।

● बकरी की मैगनी 50 ग्राम को 200 ग्राम सरसों के तेल में मिलाकर औटावें, फिर छानकर खाज पर लगाने से खाज ठीक हो जाती है और फिर जीवन में दुबारा दुखी नहीं करती ।

● खाने वाला चूना 1 भाग तथा अन्डी का तेल 3 भाग फेंटकर शरीर पर लगाने से खाज में लाभ होता है ।

● जीरा 30 ग्राम, सिन्दूर 150 ग्राम लें । दोनों को कड़वे तेल में मिलाकर लगाने से खाज में लाभ होता है ।

● सौंफ और धनियां 250-250 ग्राम को बारीक पीसलें। फिर 750 ग्राम घी और 1 किलो मिश्री मिलाकर सुरक्षित रखें। इसे सुबह शाम 50-50 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से प्रत्येक प्रकार की खुजली में लाभ हो जाता है।

● मजीठ, शुद्ध गन्धक, लाल चन्दन, प्रत्येक 40 ग्राम लें। हरड़ बहेड़ा, आँवला प्रत्येक 20 ग्राम लें। छोटी इलाइची, वंशलोचन 10-10 ग्राम तथा मिश्री 200 ग्राम लेकर सभी को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 10 से 15 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम जल या गिलोय-निम्ब क्वाथ से सेवन करने से समस्त प्रकार का चर्म रोग नष्ट हो जाता है। अनेकों बार का परीक्षित योग है।

● खरबूजे की मिगीं को घोटकर लगाने से दाद अच्छा हो जाता है।

त्वचा विकार नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

रक्त शोधक वटी (वैद्यनाथ) 1-2 गोली दिन में 2-3 बार दें। इसके सेवन से खाज खुजली, एक्जिमा इत्यादि विकार ठीक हो जाते हैं।

खुजलीना टेबलेट (डाबर) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

चर्मरोगान्तक कैपसूल (गर्ग बनौषधि भण्डार (अलीगढ़) 1-2 कैपसूल दिन में 2-3 बार। सभी रक्त विकारों में अत्यधिक लाभप्रद है।

डरमो प्लान कैपसूल (मेवा फार्मेसी) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

रक्त शोधक कैपसूल (ज्वाला आयुर्वेद) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

रक्त विकार कैपसूल (पंकज फार्मा) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

रक्तको कैपसूल (पंकज फार्मा) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

पुरील लिक्विड (चरक) 2-3 चम्मच दिन में 2-3 बार प्रयोग करें।

रक्त को सालसा (मोहता रसायन) मात्रा व लाभ उपर्युक्त।

ब्लड प्यूरीफाइर (झन्डू) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

आयोडाइज्ड सालसा (डाबर) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

धन्वन्तरि सालसा (धन्वन्तरि कार्यालय) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

सार्सापुरीला आयोडाइज्ड (झन्डू) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

खदिरा मन्जिष्ठा सारिवा (धन्वन्तरि कार्यालय) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

सुरक्ता (वैद्यनाथ) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

लेप्रीन (वैद्यनाथ) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

अनन्त सालसा (वैद्यनाथ) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

चर्मनोल मलहम (गर्ग वनौषधि) दाद, खाज में स्थानीय प्रयोगार्थ।

चरमोल मलहम (पंकज फार्मा) लाभ उपर्युक्त।

चर्मरोगरि मलहम (ज्वाला आयुर्वेद) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

चर्मरोगारि मलहम (वैद्यनाथ) मात्रा व लाभ उमर्युक्त

चर्म रोगहर मलहम (जी. ए. मिश्रा) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

निम्बादि मलहम (धन्वन्तरि कार्यालय) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

खाजरिपु (धन्वन्तरि कार्यालय) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

खाजारि (ज्वाला आयुर्वेद भवन) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

एक्जिमा मलहम (वैद्यनाथ) एक्जिमा में विशेष लाभप्रद है।

छाजनहर मलहम (गर्गबनौषधि) मात्रा व लाभ उपर्युक्त

दादुरीन (वैद्यनाथ) दाद में विशेष उपयोगी है।

चर्मक्लीन कैपसूल (अतुल फार्मेसी) 1-1 कैपसूल सुबह शाम जल या सारिवाद्यासव से प्रयोग करें। इसके व्यवहार से सभी प्रकार के कुष्ठ खाज, खुजली तथा चकत्ते आदि रक्त विकार नष्ट हो जाते हैं।

चर्मक्लीन मलहम (अतुल फार्मेसी, विजयगढ़, अलीगढ़) दाद, खाज, खुजली में बाहय प्रयोगार्थ है। पैकिंग 25 ग्राम की ट्युब 60 कैपसूल वाला 1 माह का सैट मंगाकर प्रयोग कर सकते हैं।

हर्बोसल्फ टिकिया (डीशेन) को पीसकर पाउडर कर लें और इसका 1 भाग इसी कम्पनी के "रिपेन्टो मलहम" के 10 भाग में मिलाकर त्वचा पर रात्रि को लगायें। प्रातःकाल स्नान करके धो डालें। अथवा आयोबीन इसी कम्पनी की खायें और रिपेन्टो लगायें। हर्बोसल्फ गोली खाना भी लाभप्रद है।

रिंगरिंग (डाबर) बाह्य प्रयोगार्थ। दाद में विशेष उपयोगी है।

दाद का मलहम (धन्वन्तिरि कार्यालय) दाद में विशेष उपयोगी है।

खुजलीना तेल (डाबर) दाद खाज, खुजली, में उपयोगी है।

चर्मोलिन मलहम (आनन्दकर) लाभ व सेवन विधि उपर्युक्त।

इसके अतिरिक्त जालिमलोशन, हाशमी मलहम, जर्म्स कटर इत्यादि औषधियाँ भी लाभप्रद हैं। सभी बाहरी प्रयोगार्थ हैं। चर्म रोगों से पीड़ित रोगी को साबुन बिल्कुल ही इस्तेमाल नहीं करना चाहिए तथा किसी भी एन्टी सैप्टिक घोल (नीम, फिटकरी, डैटोल या सैवलान इत्यादि से पीड़ित भाग अथवा समस्त शरीर की सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नीम और मेहन्दी के पत्ते एक

साथ रगड़कर रस निकालकर 25 ग्राम की मात्रा में पीना तथा शेष बचे रस को नारियल के तेल में भूनकर छानकर लगाना अथवा नीमका पंचांग (बीज, फूल, फल, पत्ते, जड़) समान मात्रा में लेकर पीसकर चार चम्मच सरसों के तेल में मिलाकर हल्की आँच पर तपावें। नीम जलने की गन्ध होते और धुँआ उठते ही, तेल उतार छानलें। इसे शीशी में सुरक्षित रखकर बाह्य मालिश करने से खुजली तथा अन्य त्वचा सम्बन्धी विकार नष्ट हो जाते हैं। रक्त खराब होने की स्थिति में प्रतिदिन नीम की 30 ग्राम कोपलों का रस मात्र 3 दिन पिलाना चाहिए।

नीम के पत्ते दही में पीसकर दाद पर लगायें। इससे दाद नष्ट हो जाता है।

● नीम की छाल, पीपल की छाल, मजीठ तथा नीम वाली गिलोय सभी 10-10 ग्राम लें और काढ़ा बनाकर सुबह शाम पियें। पीड़ित स्थल पर नीम का तेल लगायें। चम्बल समूल जड़ से नष्ट हो जायेगा। प्रयोग 40 दिन करें।

कर्णरोग (Ear disease)

उपचार

● आक के सुपक्व पीले पत्तों पर घृत चुपड़कर आग पर रख दें। जब वे झुलसने लगें, तभी झटपट उठाकर निचोड़ लें और इस रस को थोड़ा गरम करके कानों में डालें। तुरन्त ही तीव्र वेदनायुक्त कर्णशूल नष्ट हो जायेगा।

● कपास के बोन्डा को कूट पीसकर तिल या सरसों के तेल में पकाकर तेल सिद्ध करें, तत्पश्चात छानकर सुरक्षित रख लें। इस तेल की 4-5 बूँदें दिन में 2 बार कान में डालते रहने से कर्णपूय (कानमेंपीव) कर्णस्राव (कान बहना) दोनों रोगों में में अवश्य लाभ हो जाता है।

● अफीम 1 ग्राम, मुसब्बर 6 ग्राम, मसूर की दाल 10 ग्राम सभी को एकत्र कर धतूरे के रस में कुछ गरम करके कान के चारों ओर लेप करने से कर्णमूल-शोथ में लाभ होता है।

● अहिफेनासव और गिलेसरीन समभाग एकत्र मिलाकर 5-5 बूँदें कान में टपकाने या अफीम और सज्जी खार को शराब में मिलाकर कुछ बूँदें कान में डालने से तथा रात्रि के समय सेक कर ऊपर गरम कपड़ा लपेट कर (शीतल जल तथा शीतल वायु न लगने पाये) सो जाने से शीघ्र ही कर्णशूल (कान दर्द) नष्ट हो जाता है।

● अनार के ताजे पत्तों को कुचलकर निकाला हुआ रस 100 ग्राम, गौमूत्र आधा किलो तथा तिल का तेल 100 ग्राम लेकर तीनों को मन्दाग्नि पर पकावें। तेल मात्र शेष रह जाने पर छानकर सुरक्षित रख लें। उसकी कुछ बूँदें थोड़ा गरम करके सुबह शाम कान में डालते रहने से कर्णपीड़ा, कुर्णनाद (कान बजना) एवं बधिरता (बहरापन) नष्ट हो जाता है।

● तुलसी-पत्रों का ताजा रस गरम करके कान में डालने से तुरन्त ही कर्णशूल मिट जाता है। यदि कान के पीछे सूजन हो तो तुलसी के पत्तों के साथ रैंडी की कोपलें और थोड़ा सा नमक मिलाकर लुगदी बनालें। इस लुगदी को गरम कर सेकने से लाभ होता है।

● चुकन्दर के पत्तों का रस थोड़ा सा गरम करके कान में डालने से कर्ण-शूल में लाभ होता है।

● काकजंघा के पत्तों का रस को नियमित रूप से निरन्तर कुछ दिनों तक कान में डालते रहने से कर्णनाद, बधिरता एवं कान में किसी जन्तु के दंश से होने वाली जलन नष्ट हो जाती है।

● चीड़ की लकड़ी पर कपड़ा लपेटकर तथा घृत में डुबोकर जलाने से जो तेल निकलता है। उस तेल को कान में टपकाने से तुरन्त की कान का दर्द (कर्णशूल) नष्ट हो जाता है।

● जैतून के रस को कान में डालने से कर्णशूल, पीव (मवाद) तथा शोथ में लाभ होता है। कान में यदि फुन्सी अथवा बहरापन हो तो जैतून पत्र के स्वरस में समभाग शहद मिलाकर गुनगुना करके कान में डालने से लाभ होता है।

● शीत वायु अथवा शीतल जल के आघात से यदि कान में दर्द हो तो पान के रस को कुछ गरम करके कान में डालकर ऊपर से सेक करने से विशेष लाभ होता है।

● कर्णपाक अथवा कर्णस्राव में दारु हल्दी का महीन चूर्ण पीसकर कान में डालने से रोग से मुक्ति मिल हो जाती है।

● धतूर रस की कुछ बूँदें गरम करके कान में डालने से तुरन्त कर्णशूल में लाभ होता है।

● धतूर के ताजे फलों का रस 400 ग्राम में समभाग सरसों का तेल तथा हल्दी चूर्ण व गन्धक चूर्ण 40-40 ग्राम मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। तेल मात्र शेष रह जाने पर छानकर सुरक्षित रूप से किसी स्वच्छ शीशी में रखें इसे कान में डालने से कर्णस्राव, कर्णपीड़ा तथा बहरापन नष्ट हो जाता है।

● प्याज के रस में थोड़ी सी अफीम मिलाकर गुनगुना करके कुछ बूंदें कान में टपकाने से तत्काल ही पीड़ा नष्ट हो जाती है ।

● समुद्रफेन या पीली कौड़ियों की भस्म का महीन चूर्ण 1 रत्ती कान में डालकर ऊपर से नीबू रस की 2-4 बूँदें टपकाने से कान में झाग उठकर अन्दर के व्रण आदि स्वच्छ हो जाते हैं । तत्पश्चात् रूई की फुरैरी से कान को स्वच्छ करके गुनगुने नीबू के रस में थोड़ा सा सोड़ा बाई-कार्ब मिलाकर 2-4 बूँदें कान में डालने से कर्णशूल में तत्काल लाभ होता है ।

● नीम के तेल में शहद मिलाकर इसमें रुई की बत्ती को भिगोकर कान में रखने से कान का बहना नष्ट हो जाता है ।

● बच के चूर्ण को सरसों के तेल में पकाकर कान में डालने से कान का व्रण रोपण होकर पूय बहना बन्द हो जाता है । कृमि नाशक भी है ।

● बबूल के फूलों को दो गुने तिल के तेल में डालकर आग पर पकायें जब फूल बिल्कुल जल जायें, तब तेल को छानकर सुरक्षित रख लें । इसकी 2-4 बूँदें थोड़ा गरम करके कान में डालने से कान से पीव या मवाद आना जड़-मूल से बन्द हो जाता है ।

● बादाम के तेल की कुछ बूँदें गरम करके कान में डालते रहने से कान में होने वाली साँय-साँय की आवाज नष्ट हो जाती है ।

● कान में फुन्सी होने पर शूल की अधिकता में लहसुन, मूली, अदरक इन तीनों का मिश्रित रस निचोड़कर थोड़ा सा गरम करके कान में डालने से 2-3 दिन में फुन्सी बैठकर अथवा फूटकर वेदना शान्त हो जाती है । यदि कान से मवाद आ रहा हो और दर्द भी हो तो लहसुन रस में तेल मिलाकर कान में डालने से लाभ होता है ।

● सौंफ 6 ग्राम, को यवकूट कर 250 ग्राम पानी में औटावें । चौथाई भाग पानी शेष रहने पर गाय का दूध 250 ग्राम, घी 10 ग्राम तथा कुछ खाँड मिलाकर चाय की भाँति सुबह शाम पीने से मस्तिष्क में शक्ति आकर बहरापन नष्ट हो जाता है ।

● भाँग के स्वरस की 2-4 बूंदें कान में डालने से कर्णशूल मिटता है ।

● दालचीनी का तेल कान में टपकाने से बहरापन नष्ट हो जाता है ।

● चूके के गुनगुने रस को कान में डालने से कर्ण शूल नष्ट हो जाता है।

● नीबू के 200 ग्राम रस में सरसों का 50 ग्राम तेल अथवा इतना ही

तिल का तेल मिलाकर आग पर पकावें । तेल मात्र शेष बचने पर छानकर सुरक्षित रख लें । इस तेल की 2-2 बूँदें कान में डालने से पूय (मवाद) के कारण होने वाला कर्णशूल दूर हो जाता है । मवाद बहना भी नष्ट हो जाता है ।

● पुनर्नवा स्वरस को गरम करके कान में डालने से कर्णशूल मिटता है ।

● स्वमूत्र को दोनों समय गुनगुना गरम करके कान में डालते रहने से कान बहना, कान की फोड़े फुन्सियाँ कर्णनाद तथा बहिरापन नष्ट हो जाता है ।

● कुत्ते के मूत्र को रुई अथवा ड्रापर से कान में 2-4 बूँदें डालते रहने से बहुत से वर्षों का कर्णस्राव भी ठीक हो जाता है । परीक्षित है ।

● बकरी के दूध में सेंधा नमक मिलाकर थोड़ा गरम करके कान में डालने से तीव्र कर्णशूल नष्ट हो जाता है ।

● रसौत का बारीक चूर्ण कान में डालने से कर्णपाक एवं कर्णपूय (कान से मवाद आना में लाभ होता है ।

● शुद्ध तारपीन के तेल की 4-4 बूँदें सुबह शाम कान में डालते रहने से पूय-स्राव बन्द हो जाता है । कान के नाड़ी-व्रण में भी लाभ होता है ।

● पके बेल के बीजों को कोल्हू में पेरकर इस तेल को कान में डालते रहने से बहरापन नष्ट हो जाता है ।

● गौमूत्र बोतल में भर लें । निथर जाने पर छानकर सुरक्षित रख लें । कान को साफ करके 3-4 बूँदें कान में टपकाते रहने से पुराना कर्णस्राव भी कुछ ही दिनों के प्रयोग से ठीक हो जाता है ।

● 24 घन्टे में 1 बार समुद्रफेन का बारीक चूर्ण 2 रत्ती डालकर ऊपर से 7 बूँदें गोले का तेल डालकर कान में रूई का फोहा लगादें । दूसरे दिन साफ रूई की फुरैरी से भली भाँति कान साफ कर लें । पानी न डालें । इस प्रयोग से पुराने से पुराना कर्णस्राव शीघ्र रुक जाता है ।

● काले तिल के तेल में समभाग मूली के पत्तों का रस मिलाकर अग्नि पर पकायें । तेल मात्र शेष रह जाने पर ठन्डा करके सुरक्षित रख लें । इसे दिन में 2-3 बार 3-4 बूँदें डालने से कर्णस्राव में लाभ होता है ।

● लोहवान 10 ग्राम को स्प्रिट 100 ग्राम में मिलाकर 1 बोतल में ढक्कन लगाकर रखें । फिर बोतल के तल भाग को गरम पानी रखें और पानी को गरम करें । इस प्रयोग से स्प्रिट उड़ जायेगी तथा बोतल में गाढ़ा सा तेल रह जायेगा। इसे छानकर सुरक्षित रख लें । इसकी 2-4 बूँदें कान में डालने से कान की पीड़ा शीघ्र दूर हो जाती है ।

● अच्छी शराब 250 ग्राम में हीरा हींग 100 ग्राम घोल लें तथा छानकर शीशी में भर लें। इसे 2-4 बूँद कान में डालने से कान का दर्द, कान का बहना, आदि विकार नष्ट हो जाते है।

● सैम की पत्ती का रस गरम करके थोड़ी-थोड़ी देर बाद कान में डालने से (प्रतिदिन 3-4 बार) कान का बहना तथा कर्णशूल नष्ट हो जाता है।

● मेथी के दानों को गौमूत्र में पीसकर 2-4 बूँद कान में डालने से कर्णशूल में लाभ होता है।

● हाथी का ताजा मल कपड़े में डालकर रस निकालकर इसमें थोड़ा सा काली मिर्च का चूर्ण और 2 पान के पत्तों का रस मिलाकर कान में डालने से पुराने से पुराना कर्णस्राव नष्ट हो जाता है।

● हल्दी तथा भुनी फिटकरी समभाग मिलाकर कान में डालकर फूँक मार दें। इस प्रयोग से कान का बहना बन्द हो जाता है।

नोट:—औषधि कान के अन्दर चिपक जाती है। अतः कान को साफ करते रहना चाहिए।

● लहसुन की छिली कली 2 नग, कड़वे बादाम का तेल 25 ग्राम लें। दोनों को मिलाकर अग्नि पर पकायें। जब लहसुन काला पड़ जाये तब लहसुन निकालकर तेल छानकर सुरक्षित रख लें। आवश्यकता के समय गुनगुना कर 2-3 बूँद कानों में डालें। इसके प्रयोग से बहरापन नष्ट हो जाता है।

● बेल की जड़ का रस, गोमूत्र 50-50 ग्राम लें। सौंठ, मरिच, पीपल, अपामार्ग का क्षार, यवक्षार, पीपलामूल, कूट (प्रत्येक 10-10 ग्राम लें तथा तिली का तेल 250 ग्राम। सभी औषधियों को कूटकर तिल के तेल में हल्की आग पर पका छानकर सुरक्षित रख लें। इस तेल की 4-5 बूँदें कान में डालकर ऊपर से रुई का फाहा लगाया करें। इसके प्रयोग से कर्णस्राव, कर्ण नाद, कर्णशूल, बहरापन, इत्यादि सभी कर्ण विकार नष्ट हो जाते हैं। यह परीक्षित योग है।

● लाल मिर्च के डन्ठल, काले धतूरे के बीज, जटामांसी, (प्रत्येक 500-500 ग्राम) कुचला 350 ग्राम, नागर मोथा 100 ग्राम, बच्छनाग 100 ग्राम, हल्दी 300 ग्राम, लोध 100 ग्राम, सतावर 100 ग्राम, त्रिफला 200 ग्राम, रतनजोत 200 ग्राम, तारपीन का तेल 1 किग्रा. अण्डी का तेल, सरसों का तेल, तिल का तेल, अथवा अलसी का तेल प्रत्येक 1-1 किलो तथा महुआ का तेल 1 कि.ग्रा. लें। रतन जोत को छोड़कर शेष सभी औषधियों को 24 घण्टे तक पानी में भिगोयें। पानी की मात्रा 36 कि.ग्रा. होनी चाहिए। बाद में धीमी अग्नि

पर इनका क्वाथ करें। जब 9 कि. ग्रा. पानी शेष रहे, गरम-गरम छान लें और ठण्डा होने दें। तत्पश्चात् 24 घण्टे के बाद निथारकर उपर्युक्त योग में वर्णित 6 कि.ग्रा. तेल में मदाग्नि पर पुनः पकावें। इसी में रतनजोत भी पोटली बनाकर डाल दें। तेल मात्र शेष रहने पर छानकर स्वच्छ बोतलों में सुरक्षित रख लें। इस तेल की थोड़ी मात्रा उसमें बराबर कड़वा तेल मिलाकर 2-2 बूँद दिन में 2-3 बार कान में डालने से कान के समस्त रोगों (कर्णशूल, कर्णस्राव, कर्णशोथ, बहिरापन) में अत्यन्त ही आश्चर्यजनक लाभ होता है। इसके अतिरिक्त यह तेल चोट, मोच, घाव, दर्द, गठिया, निमोनियाँ आदि रोगों में भी लाभकारी है।

कर्णरोग नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

पाइनैक्स टैवलेट (चरक) 2-2 गोली दिन में 3 बार कर्णस्राव तथा बहिरेपन में लाभप्रद है।

कानपी (वैद्यनाथ) 2-4 बूँदें कानों में डालें। कर्णस्राव नाशक है। कुछ दिनों के नियमित प्रयोग से कर्णस्राव, कर्णकन्डू, तथा बदबू नष्ट हो जाती है।

कान दर्द की दवा (वैद्यनाथ) प्रयोग उपर्युक्त। कर्णशूल में अत्यन्त ही लाभप्रद है। कान के फोड़े-फुन्सियों में अत्यन्त लाभप्रद है।

कानपिप (डाबर) कर्णशूल, कर्णस्राव तथा कर्णमूल ग्रन्थिशोथ में लाभकारी औषधि है।

दरकान (डाबर) उपयोग उपर्युक्त कर्णशूल में प्रयोग करें।

कर्ण बिन्दु (धन्वन्तरि कार्यालय) कर्णशूल, कर्णस्राव, कर्णकन्डू (कान की खुजली) इत्यादि कर्ण विकारों में लाभप्रद है।

कर्ण बिन्दु (देश रक्षक) उपयोग उपरोक्त। कर्णशूल में लाभप्रद है।

सेप्टीलिन टेबलेट (हिमालय) 1-2 गोली दिन में 3-4 बार कर्णस्राव नाशक उत्तम औषधि है। जीर्णकर्णस्राव में भी उपयोगी है।

कर्णबिन्दु तेल (गुरुकुल कांगड़ी) समस्त कर्णरोग नाशक है।

बिल्व तेल (गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार) 2-4 बूँदें दिन में 3-4 बार कान में डालें। कर्णस्राव तथा बहिरेपन में विशेष उपयोगी है।

पीड़ाहर टेवलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद एन्ड संस दिल्ली) 2-2 टिकिया दिन 3-4 बार प्रयोग करें। इसे सेवन करने से प्रत्येक प्रकार की पीड़ा शान्त हो जाती है।

सप्तगुल्म तेल (वैद्यनाथ) 2-2 बूँदें दिन में 2-3 बार डालें। कर्णपीड़ा में अत्यन्त उपयोगी है।

बेक सोल्वी ड्राप्स (बोल) उपयोग व लाभ उपर्युक्त।

करामाती टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 1-2 टिकिया आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें। कर्णस्राव में उपयोगी है।

हीलान पाउडर (डीवोन) कर्णस्राव में उपयोगी है। इसके अतिरिक्त घावों की ड्रेसिंग हेतु बाह्य प्रयोगार्थ भी लाभप्रद है। कान की पीव को रुई से साफ करके इसे कान के अन्दर छिड़कें।

(डीशेन) कीटाणु नाशक एवं प्रतिरोधात्मक उत्तम टिकिया है। कीटाणुओं से उत्पन्न ज्वर, मवाद पड़ना, या मवाद की सम्भावना होना फोड़े, घाव, चर्मरोग, सुज़ाक, पुरानी खाँसी, टान्सिल इत्यादि में भी लाभप्रद है।

एन्ट्राप्स लोशन (डीशेन) कान, नाक व गले इलाज में बाह्य प्रयोगार्थ। पायोरिया व मसूढ़ों की सूजन में मन्जन करने से पूर्व व रात्रि को लगायें तथा 10 मिनट, कुल्ला न करें। मसूढ़ों का पिचपिचापन, सूजन, खून व मवाद आना, दाँत का दर्द शान्त हो जायेगा। गले व टॉन्सिलों श्वाँसद्वार तथा कण्ठग्रन्थि की सूजन में रुई के फाये से अन्दर लगावें। नाक में बदगोश्त (Nasal polypus) या नासिका के अन्दर हड्डी बढ़ जाने पर (Enlargement of adenoide) अथवा श्लैष्मिक झिल्ली की सूजन के कारण (Sinusitis) नाक बन्द हो जाने पर इसे ड्रापर से दिन में 3 बार 4-4 बूँदें डालें। उभरते हुए फोड़े में रुई के फाहे को भिगोकर रखने से फोड़ा बैठ जाता है अथवा फूटकर बह जाता है। यह कीटाणुनाशक, दर्दनाशक तथा सूजन नष्ट करने हेतु अति उपयोगी लोशन है।

नोटः—इसे आँखों में कदापि प्रयोग न करें। इस लोशन में तेल या पानी भी न मिलायें तथा ठण्डी जगह में रखें। प्रयोग से पूर्ण लोशन की शीशी को हिलाना न भूलें।

सूखा रोग (MARASMUS)

रोग परिचय—इस रोग से ग्रसित हो जाने पर बच्चा धीरे-धीरे सूखता चला जाता है। खाया पीया अंग नहीं लगता है। इस रोग को सुखन्डी, सूखिया मसान, बालशोष, अस्थिक्षीणता, अस्थिदुर्बलता, कैल्सियम की कमी अथवा रिकेट्स इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

यह रोग आँतों की क्षय से होता है। इसके अतिरिक्त माँ बाप के गुप्त रोग,

तीव्र ज्वर, आँतों के कीड़े इत्यादि के कारण भी सूखा रोग हो जाता है। सूखा रोग से ग्रस्त बच्चे का चेहरा डरावना हो जाता है। उसकी आँखें धँस कर निस्तेज हो जाती हैं। उसको बदबूदार हरे पीले दस्त आने लगते हैं। शरीर पर झुर्रियाँ सी दिखाई देती हैं। बच्चा अस्वस्थ, सुस्त, बेजान रहता है, उसको गहरी नींद नहीं आती है तथा खाया-पीया ठीक से नहीं पचता है। कान की लौर (Earlobe) जिसमें छिद्र करवाकर स्त्रियां बालियाँ पहनती हैं, को दबाने पर यदि बच्चा नहीं रोये, तो निश्चत समझलें कि बच्चा सूखा रोग से ग्रस्त हो चुका है। सूखा-ग्रस्त बच्चे के शरीर की स्वभाविक गर्मी नहीं होती बल्कि उसके शरीर का तापमान गिरा रहता है, अकारण रोता रहता है तथा उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। इस रोग से पीड़ित बच्चे के शरीर में विटामिन डी तथा कैल्शियम की भारी कमी हो जाती है।

मुर्गी के कच्चे अण्डे की जर्दी अपनी हथेली पर रखकर उसे बच्चे की गुदा से सटाये रखें। यदि सूखा रोग होगा तो जर्दी स्वयं ही बच्चे के पेट के अन्दर चली जायेगी। इसी तरह से एक अन्य परीक्षण भी है। मरी हुई मक्खी निगलने से प्रायः वमन हो जाती है, किन्तु सूखा रोग से ग्रस्त बच्चे को यदि मरी हुई मक्खी निगलवा दी जाये तो उसे कै नहीं होगी।

उपचार—सूखा रोग से ग्रस्त बच्चे को यदि मां का दूध मफिक न बैठता हो तो उसे गाय, बकरी अथवा गधी का दूध पिलाना श्रेष्ठ रहता है। यह दूध शीघ्र ही पच जाता है। यदि बच्चे का हाजमा खराब हो तो किसी भी प्रकार का दूध नहीं देना चाहिए। बल्कि साबूदाना आदि हल्का पेय देना ही श्रेष्ठ रहता है। यदि पेट खराब न हो तो थोड़ा-थोड़ा करके माँस का शोरबा दिया जा सकता है। गुदा मार्ग से अण्डे की सफेदी चढ़ाना भी लाभप्रद है। जैतून के तेल की मालिश भी लाभप्रद रहती है। क्योकि इसकी मालिश से भी रक्त-संचार सुचारु रूप से होने लगता है। दूध में लाइम वाटर मिलाकर पिलाना भी लाभप्रद रहता है।

- पथरचटा को समूल उखाड़ लें। तत्पश्चात् इसको कूटकूटकर इसका रस 6 माशा की मात्रा में यदि बच्चे की पीठ पर कहीं नस उभरी हुई दिखलायी दे तो उस पर नीम के पत्तों का रस निकालकर मलें।
- गोदन्ती हड़ताल भस्म शहद से बच्चे को चटायें। सूखा नाशक है।
- लटजीरा की जड़ तथा काली मिर्च के 2-3 दाने घिसकर 4 दिन लगातार पिलाने से सूखा रोग में लाभ होता है।

● बँगला पान में बराबर (सममात्रा में) कत्था व चूना लगवाकर पान के पत्ते के बजन के बराबर मकोय के पत्ते या अतिबला (काकहिया) के पत्ते 2-3 की संख्या में लेकर पान के अन्दर रखकर पत्थर की सिल पर मक्खन की भाँति मुलायम चटनी पिसवाकर बच्चे को पेट के बल लिटाकर अपनी अंगुली से थोड़ी सी यह औषधि (चटनी) उसकी समस्त रीढ़ की हड्डी पर मलें । इसको मलने से अत्यन्त ही सूक्ष्म (धागे के समान) कीटाणु रीढ़ से बाहर आते हुए दिखलाई देंगें । पास में बैठा कोई दूसरा व्यक्ति पानी की धार डालकर दवा को बहाता जाये तथा कीटाणुओं को हाथ से चुनकर निकालकर फेंकता जाये । (पानी ऋतु के अनुसार ठण्डा या गर्म इस्तेमाल करें ।) इस चटनी को जितनी तीव्रता से रोगग्रस्त बच्चे की रीढ़ पर मसलेंगें । उतने ही अधिक कीटाणु बाहर निकलेंगें। जब सब कीटाणु चुनकर बाहर फेंक दिये जायें, तब बच्चे के समस्त शरीर (विशेषकर रीढ़ पर) महानारायण या लाक्षादि तेल की मालिश करें । बच्चे को थोड़ी देर सुलाकर फिर स्नान करा दें। तदुपरान्त उसके शरीर को भली प्रकार पौंछकर वस्त्र पहिनाकर उसे सुला दें। बच्चा शान्तिपूर्वक गहरी नींद सोयेगा और जब जागेगा तो मुस्कुराता हुआ उसका रोना धोना, चिड़चिड़ाना बन्द हो जायेगा । यह प्रयोग प्रत्येक रविवार को करें, तो अति उत्तम रहता है ।

● प्रतिदिन एक जीवित मक्खी पकड़कर दूध में डुबोकर मारलें । बच्चे को निगलवाते रहें तथा ऊपर से दूध पिलाते रहें । जब तक बच्चा मक्खी हज्म करता रहे, प्रयोग निरन्तर जारी रखें । जिस दिन बच्चा मक्खी उलट दे (कै या वमन कर दे) प्रयोग बन्द कर दें । इस प्रयोग से सूखा रोग नष्ट हो जाता है ।

● भैंस का ताजा गोबर प्रात: समय बच्चे की कमर तथा कन्धों पर 5 मिनट तक भली प्रकार मालिश करें । उसे 15 मिनट पश्चात् गरम पानी से धोने पर कमर पर काले रंग के छोटे-छोटे काँटे से दिखलायी देंगें । इन काँटों को जल्दी-जल्दी चुनकर फेंक दें । इस प्रयोग को कुछ दिन निरन्तर करते रहने से काँटे निकलना बन्द हो जायेगें और सूखा रोग से ग्रसित बच्चा स्वस्थ हो जायेगा ।

● प्रात: सायं 6-6 ग्राम की मात्रा में गधी का दूध पिलाने तथा शरीर पर महानारायण तेल की मालिश करने से सूखा रोग नष्ट हो जाता है ।

● हरी गिलोय के रस में बच्चे का कुर्त्ता रंगकर सुखा लें और यह कुर्त्ता बच्चे को पहनाये रखें । सुखा रोग कुछ ही दिनों में नष्ट हो जाता है ।

● सिर से पैर तक सम्पूर्ण रूप से काली गाय (जिसके सफेद या पीला कोई

धब्बा न हो) का सूर्योदय से पूर्व 1 कि.ग्रा. मूत्र लें, इसमें 12 ग्राम असली केशर इसी गौमूत्र के साथ घोटकर मिला दें । फिर छानकर साफ स्वच्छ बोतल में भरकर रख लें । इसे सुबह, दोपहर, शाम दिन में तीन बार 6 मास के बच्चे को 4-4 बूँद, 6 मास से अधिक अवस्था के बच्चे को 8-8 बूँद बराबर मात्रा में माता के दूध में मिलाकर सात दिन सेवन कराने से सूखा रोग नष्ट हो जाता है ।

● प्रवाल भस्म 1 भाग मुक्ताशुक्ति भस्म 2 भाग, शंख भस्म 3 भाग, कौड़ी की भस्म 4 भाग, कछुए की पीठ की भस्म 5 भाग, तथा गोदन्ती भस्म 6 भाग लें । सभी को नीबू रस की 3 भावनायें देकर सुखाकर सुरक्षित शीशी में रखें । इसे 2 से 8 रत्ती की मात्रा में दूध के साथ सेवन करायें । यह शरीर में सुधांशु (Calcium) की कमी को पूरा कर सूखा रोग नष्ट कर देता है ।

● गाय की घी 1 भाग, तिल का तेल 1 भाग, मधु 8 भाग इनको मिलाकर खूब हिलालें । इसको बच्चे को आयु के अनुसार आधे से 2 चाय की चम्मच भरकर दिन में 2 से 4 बार तक जन्म से ही प्रयोग कराने से सूखा रोग होने का भय नहीं रहता है यदि सूखा रोग हो गया हो तो अच्छा हो जाता है । इस आयुर्वेदीय घरेलू योग में विटामिन ए और डी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है ।

● मुर्गी के अण्डे की सफेदी तथा इसी के वजन के बराबर पालक का रस लेकर दोनों को मिलाकर कई दिन तक घुटाई करें । जब सूखा चूर्ण सा बन जाये तब बालक की अवस्था के अनुसार इसे 5 रत्ती तक दूध के साथ सेवन करायें। सूखा रोग शर्तिया नष्ट हो जायेगा ।

● हल्के उबले दूध में प्रतिदिन हैलबिन लीवर आयल अथवा शार्क लीवर आयल (मछली का तेल अथवा मछली के जिगर का तेल) आयु के अनुसार 15 से 20 बूँद तक सुबह शाम बच्चे को देना सूखा रोग में अत्यन्त ही लाभदायक सिद्ध हुआ है ।

● बच्चे कें सूखा रोग, वमन, अतिसार, ज्वर, भ्रम, भूत बाधा इत्यादि में धागे में पिरोकर लहसुन की छिली हुई कलियों की माला गले में पहनाने से (जैसे-जैसे कलियाँ सूखती हैं ।) रोग ठीक होता चला जाता है ।

● छोटे बच्चे को जनरल टांनिक के स्थान पर प्रतिदिन मधु पिलाने से वे निरोग रहकर हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं ।

सूखा नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

कैल्सीपर्ल टेबलेट (मेहता रसायन) 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दें ।

लिक्विटोन लिक्विड (चरक) 2-3 चम्मच दिन में 3-4 बार बच्चों को दें, तथा नन्हें शिशुओं को आधे से 1 चम्मच तक दिन में 3-4 बार दुगुना जल मिलाकर प्रयोग करायें।

बालामृत लिक्विड (वैद्यनाथ) 5 से 15 बूँद तक पिलायें।

संजीवन लाल तेल (मेहता) इसके अतिरिक्त लाल तेल (उन्नाव (उ. प्र.) फार्मेसी का तथा ''डाबर'' का भी आता है। आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण शरीर पर मालिश करायें। बच्चा कुछ ही दिनों में निरोग होता नजर आयेगा तथा हर प्रकार की दुर्बलता जाती रहेगी। बच्चे को साफ स्वच्छ रखें तथा दुग्ध पान करायें।

लालशर (डाबर) वयस्कों को 1-1 चम्मच दिन में 2 बार तथा बच्चों को आधी मात्रा तथा शिशुओं को 2-10 बूँद तक सेवन करायें। साथ में शरीर पर मालिश करायें तथा पर्याप्त मात्रा में दूध पिलायें।

लाइम वाटर (वैधनाथ) का पत्रक के दिशानिर्देशानुसार प्रयोग करें।

शोषान्तक तेल (ज्वाला आयुर्वेद) मालिश हेतु अति उत्तम है।

बाल शोषान्तक कैपसूल (अतुल फार्मेसी) सुबह शाम 1-1 कैपसूल जल से दें। बच्चा यदि कैपसूल न निगल सके तो कैपसूल तोड़कर शहद अथवा इसी फार्मेसी द्वारा निर्मित बार्बी ड्राप्स से चटायें।

नोट:— जिन स्त्रियों के शिशु दुर्बल उत्पन्न होते हों उन स्त्रियों को गर्भावस्था में 3-4 माह इन कैपसूलों के सेवन से शिशु बलवान उत्पन्न होता है।

बार्बी ड्राप्स (अतुल फार्मेसी) 1 वर्ष तक बच्चे को 10 से 15 बूँद सुबह शाम माता के दूध से तथा 1 वर्ष से बड़े बच्चे को 20 से 25 बूँद पानी में मिलाकर दिन में 3 बार चटायें। शिशुओं के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यन्त उत्तम है।

सफेद दाग (Leucoderma)

रोग परिचय—इस रोग को फुल बहरी, श्वेत कुष्ठ, श्वित्र इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। शरीर के विभिन्न भागों चेहरा, होंठ, टाँग, हाथों पर पहले छोटे-छोटे सफेद दाग पड़ जाते हैं फिर धीरे-धीरे वे फैल जाते हैं। यह छूत (संक्रामक) का रोग नहीं होता है। इस रोग से ग्रस्त रोगी की औलाद इस रोग से ग्रसित नहीं होती है। इस सचाई से अनभिज्ञ लोग रोगी से घृणा करने लगते हैं।

उपचार—सफेद दागों वाले चर्म (खाल) को चुटकी से ऊपर उठाकर (माँस से प्रथक करके) उसमें सुई चुभोकर देखें। यदि उसमें रक्त निकल आये तब चिकित्सा

योग्य समझें और यदि पानी जैसा तरल निकले तो ''असाध्य'' समझें यदि दाग छोटे और कम हो तों वह चिकित्सा से शर्तिया ठीक हो जाते हैं।

● बाबची के बीज 200 ग्राम, हरताल 48 ग्राम, मैनसिल व चीता का जड़ 6-6 ग्राम लें। इन्हें गौमूत्र में पीसकर सफेद दागों पर दिन में 3 बार लेप करें।

● ब्राह्मी पंचाग, लहसुन, सेन्धानमक और चीता की जड़ प्रत्येक 12-12 ग्राम लें। इनको गौमूत्र के साथ पीसकर सफेद दागों पर लेप करें।

● अपामार्ग भस्म 12 ग्राम तथा मैनसिल 12 ग्राम मिलाकर जल के साथ पीसकर सफेद दागों पर दिन में 2 बार लेप करें।

● कत्था और आँवला चूर्ण 12-12 ग्राम जल में डालकर 250 ग्राम क्वाथ बनायें। जब जल 30 मि. ली. शेष रहे तब ठन्डा कर व छानकर इसमें 12 ग्राम बाबची-चूर्ण मिलाकर सुबह शाम ऐसी 1-1 मात्रा प्रयोग करें।

● मोर पंख की भस्म, बाबची, तथा हल्दी सम मात्रा में लेकर करेला के रस में खरल करके श्वेत दागों पर लगावें।

● बाबची, आँवला, रसौत, काले तिल, लौह चूर्ण, सममात्रा में लेकर एक हाँडी में बन्द करके फूँक लें। शीतल होने पर निकालकर भाँगरे के रस में घोटकर बार-बार लेप करने से श्वित्रकुष्ठ नष्ट हो जाता है।

● सफेद दागों पर बाबची के बीजों का लेप करना या तेल लगाना अत्यन्त ही लाभप्रद है। रोग नया हो तो इसमें अवश्य लाभ होता है। धैर्यपूर्वक निरन्तर प्रयोग करते रहें। समय अधिक लगता है।

● बाबची के बीजों को 21 दिन लाखी गौ के मूत्र में भिगों दें। प्रतिदिन जितना मूत्र सूख जाये उतना और डाल दें। फिर बीजों को मसलकर छिलका उतार दें। इस मज्जा के चूर्ण 5 ग्राम में शुद्ध गन्धक 4 ग्राम मिलाकर मधु के साथ दें। यह श्वेत कुष्ठ नाशक है।

● बाबची को सूक्ष्म चूर्ण कर 21 दिन जामुन फल के स्वरस में, फिर 21 दिन गौमूत्र में, तत्पश्चात् 21 दिन अदरख के स्वरस में खरल कर वटिका बना ले। इन गोलियों को अदरक स्वरस में घिसकर लेप करने से सफेद दाग नष्ट हो जाते हैं।

● मेंहन्दी के पत्तों का स्वरस 2 तोला नित्य सबेरे मधु के साथ पिलाने से 40 दिन में क्षुद्रकुष्ठ, चर्मरोग, एग्जिमा इत्यादि भयंकर कष्ट शान्त हो जाते हैं। खून शुद्ध हो जाता है।

● नमक की डली को नियमित घिसकर श्वेत दागों पर लगाने से श्वेत कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है ।

● राई के आटे को 8 गुने पुराने गौघृत में मिलाकर लेप करते रहने से थोड़े दिन में ही उस स्थान का रक्त संचालन प्रबल होकर सफेद दाग मिट जाते हैं।

● हल्दी दो तोला को बावची के रस में घोटकर बेर के समान गोली बनालें। सुबह शाम 1-1 गोली जल से दें तथा इसी को जल में घिसकर सफेद दागों पर लगायें । लाभप्रद योग है ।

● गौमूत्र का सतत प्रयोग करके 1 तोला से प्रारम्भ कर आधा-आधा तोला बढ़ाकर 10 तोला तक ले जायें । 15 दिनों तक 10 तोला पीना चालू रखें। फिर आधा-आधा तोला कम करें । लौटकर 1 तोला आ जाने पर 15 दिनों तक 1 तोला ही रखें, फिर आधा-आधा तोला बढ़ावें । इस प्रकार प्रयोग 6 माह तक करें । इस प्रयोग से गलित कुष्ठ तक नष्ट हो जाते हैं ।

● बाबची, पनबाड़ के बीज, अन्जीर, चाक्सू सभी समभाग लेकर पीसें । यह 6 से 12 ग्राम की मात्रा में लेकर रात को ढीली पोटली में बाँधकर गर्म पानी में भिगो दें । प्रातःकाल छानकर 40 दिनों तक पिलायें और औषधि का शेष बचा भाग सफेद दागों पर जोर से मालिश करते रहें ।

● चालमोंगरा का तेल 15 बूँद पिलाना भी परम लाभप्रद है ।

सफेद दागनाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

श्वित्रनाशक टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 1-2 टिकिया दिन में 2 बार चमड़ी का रंग स्वाभाविक होने तक प्रयोग करायें । उपयोगी है ।

ल्यूकोडर्मा कैपसूल (न्यू इन्डिया) 1 कैपसूल प्रतिदिन प्रयोग करें । यह अत्यन्त प्रभावकारी औषधि है । जो 40 दिनों के अन्दर त्वचा की स्वाभाविक रंगत ले आती है । इसके साथ ही इसी कम्पनी के द्वारा निर्मित ल्यूकोडर्मा मलहम का भी स्थानीय प्रयोग करें ।

श्वित्र नाशक लिक्विड (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 1-2 चम्मच दिन में 1-2 बार प्रयोग करें । सफेद दागों हेतु अत्युत्तम है ।

नोटः—इसके साथ ही श्वित्र नाशक टेबलेट इसी फार्मेसी द्वारा निर्मित का भी प्रयोग करें।

श्वित्र नाशक तेल (राजवैद्य शीतल प्रसाद) सफेद दागों में आवश्यकतानुसार लगायें । इसके साथ ही श्वित्र नाशक टेबलेट का भी प्रयोग करें । इस योग से अवश्य लाभ होता है ।

कोढ़ना टेबलेट (अजमेर) 1 टिकिया दिन में 2-3 बार अथवा आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें । उपयोगी व शीघ्र असरकारक है ।

श्वेत कुष्ठ हर (धन्वन्तरि कार्यालय) का पत्रक के दिशा निर्देशानुसार प्रयोग करें । शर्तिया लाभप्रद है ।

चर्मक्लीन कैपसूल (अतुल फार्मेसी) 1-1 कैपसूल सुबह शाम कम से कम निरन्तर 1 माह तक तथा साथ में इसी फार्मेसी द्वारा निर्मित 'चर्मक्लीन मलहम' को सफेद दागों पर मालिश करें ।

वायुगोला, योषापस्मार (Hysteria)

रोग परिचय—यह स्वयं में कोई स्वतंत्र रोग नहीं है । बल्कि यह शरीर में जड़ जमाये हुए अनेक दूसरे रोगों का एक लक्षण मात्र है । यह मृगी रोग भी नहीं है । किन्तु फिर भी मृगी (अपस्मार) की ही भाँति इसके दौरे पड़ा करते हैं। यह रोग प्रायः स्त्रियों को ही हुआ करता है, वैसे पुरुष भी इस रोग के शिकार हो सकते हैं । स्त्रियों को यह रोग गर्भाशय की किसी विकृति के कारण हुआ करता है । यौन विकृति भी इस रोग का कारण हो सकती है । अन्य कारणों में—प्रदर विकार, बिलासी जीवन, अत्यधिक काम-वासना, पुरानी कब्ज, अधिक आयु तक विवाह का न होना, चिन्ता, असफलता, भय, क्रोध, अजीर्ण,पेट, फूलना, अश्लील उपन्यास कहानियाँ पढ़ना या चलचित्र देखना भी है । वास्तव में यह एक नर्वस रोग है, जो नर्वस सिस्टम (स्नायु संस्थान) के दोषों से होता है। यह प्रायः 12 से 50 वर्ष आयु की स्त्रियों को हुआ करता है ।

इस रोग में स्त्री का गला घुटता प्रतीत होता है और ऐसा आभास होता है कि गोला उदर से उठकर गले में फँस गया हो इसके बाद स्त्री को दौरा पड़ जाता है । हाथ पैर एंठने लग जाते हैं और स्त्री बेहोश हो जाती है ।

नोटः—कई बार गले में गोला उठता नहीं भी प्रतीत होता है और स्त्री को दौरा पड़ जाता है । स्त्री यकायक चीखमारकर जोर से रोने या हँसने लगती है । इसके बाद स्त्री बेहोश होकर गिर पड़ती है । बेहोशी से पूर्व प्रायः छाती और जाँघों पर जोर से हाथ मारने और पीटने लगती है ताकि, गले में फँसा गोला निकल जाये । रोगिणी प्रायः सिर के बालों को भी नोंचती है, उसके हाथ पैर ऐंठ जाते हैं ।

कई बार रोगिणी अपने कपड़े फाड़ डालती है, सिर को दीवार से टकराती है, समीप खड़े मनुष्यों को काटने का प्रयत्न करती है, ठण्डी आहें भरती है । सांस

कठिनाई और अनियमितता से शीघ्र-शीघ्र आने लगता है। कोई-कोई रोगिणी बेतुकी बातें भी करने लगती है। हृदय अधिक धड़कता है तथा अफरा हो जाता है किन्तु रोगिणी बेहोशी की हालत में भी सभी बातों को सुनती रहती है। उसका मुख लाल हो जाता है, जबड़े बन्द हो जाते हैं, कुछ समय पश्चात् जब रोगिणी का दौरा कुछ कम होता है अर्थात दौरे का जोर कम पड़ता है तो रोगिणी काँपने लगती है। इसके बाद एकाएक रोग के लक्षणों का जोर हो जाता है। कई बार दौरे पड़ जाते हैं। दौरा समाप्त होने पर मूत्र अधिक आया करता है। कई बार कै भी आ जाती है। दौरा समाप्ति के पश्चात् रोगिणी सो जाती है।

दौरा कम होने पर स्त्री के पेट से गोला उठकर गले की ओर आता है तो रोगिणी उसे निकालने का प्रयत्न करती है, उसको साँस रुकती सी प्रतीत होती है। पेट फूल जाता है और डकारें आती हैं। स्त्री को थकावट, सिर दर्द, और गर्दन में कठोरता प्रतीत होती है। कुछ देर बाद यह लक्षण दूर हो जाते हैं। प्राय: इस रोग का दौरा समाप्त होने के बाद विभिन्न अंगों में अनेक कष्ट हो जाते हैं—हाजमा खराब हो जाता है, प्राय: कब्ज रहने लगती है, उत्साह और इच्छा-शक्ति कमजोर हो जाती है, स्त्री बहमी हो जाती है, शरीर में दर्द अनुभव होता है, कई बार मूत्र रुक जाता है। कई स्त्रियों को खुश्क खाँसी और कई स्त्रियों को हिचकियाँ आने लग जाती है। इस रोग से ग्रसित स्त्रियाँ मक्कार भी हो जाती हैं।

हिस्टीरिया और मिर्गी के दोरों का अन्तर

1. हिस्टीरिया का दौरा धीरे-धीरे पड़ता है तथा देर से दूर होता है। परन्तु मिर्गी का दौरा एकाएक तुरन्त पड़ जाता है और स्वयं ही दूर हो जाता है।

2. हिस्टीरिया का दौरा होने पर स्त्री स्वयं को सम्भालते हुए गिरती है। जबकि मिर्गी में स्त्री या पुरुष स्वयं को संभाल नहीं सकता और गिर पड़ता है।

3. हिस्टीरिया के दौरे की बेहोशी में स्त्री दूसरों की बातें सुनती रहती है किन्तु उनका उत्तर नहीं पाती, किन्तु मिर्गी में ऐसा नहीं होता है।

4. हिस्टीरिया के दौरे में स्त्री के मुख से झाग नहीं आते है वह अक्सर दाँत पीसती है, किन्तु उसकी जीभ दाँतों में आकर नहीं कटती है। इसके विपरीत मिर्गी रोग में मुख से झाग आते है और दाँतों में दब जाने से जीभ कट जाती है।

5. हिस्टीरिया में स्त्री के जबड़े और मुख बन्द हो जाते हैं। जब कि मिर्गी में जीभ बाहर निकल आती है और मुख खुला हुआ होता है।

6. हिस्टीरिया रोग प्राय: स्त्रियों को तथा मिर्गी रोग प्राय: पुरुषों को हुआ करता है।

7. हिस्टीरिया के दौरा के समय में मूत्र और पाखाना नहीं निकलता है, जबकि मिर्गी के दौरे में मूत्र व पाखाना अनजाने ही रोगी के कपड़ों में ही निकल जाता है।

8. हिस्टीरिया में चेहरा लाल और आँख बन्द, आँखों के पपोटे हिलते हुए और आँखों की पुतलियां बिना हिले एक स्थान पर ठहरी रहती हैं। प्रकाश डालने पर (टार्च इत्यादि से) पुतलियाँ सिकुड़ जाती है। जब कि मिर्गी में मुख का रंग नीला, आँखें उभरी हुई अधखुली, आँखों के ढेले और पुतलियाँ फैली हुई और हिलती है तथा प्रकाश डालने पर सिकुड़ती नही है।

उपचार—यदि यह रोग पैत्रिक हो या नर्वस कियाओं के विकार से उत्पन्न हुआ हो तो कष्टसाध्य होता है और यदि यह रोग डिम्ब-ग्रन्थियों, गर्भाशय या आमाशय की खराबियों और दोषों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुआ हो तो उचित चिकित्सा व्यवस्था से ठीक हो जाता है।

● दौरे के समय चूना तथा नौसादर सममात्रा में मिलाकर हाथ में खूब रगड़कर अथवा किसी साफ स्वच्छ शीशी में खूब हिला मिला कर सुँघायें। अथवा ऐमोनियाँ कार्ब (एमोनियाँ फोर्ट) बाजार से बना बनाया (अंग्रेजी दवा की दुकानों पर प्राप्य) लेकर खूब हिलाकर रोगी को सुँघाकर होश में लायें। अथवा दौरे के समय स्त्री को नरम बिस्तर पर लिटाकर बाजुओं और जाँघों को जोर से बाँध दें तथा प्याज कुचलकर हींग, लहसुन, जैसी तीव्र गन्ध वाली वस्तुयें सुघायें। गन्धक या गूगल की धूनी नाक में सुँघायें अथवा बीड़ी का धुँआ नाक में जोर से फूंक मारकर पहुँचायें। इन उपायों से स्त्री होश में आ जाती है।

यदि जबड़े बन्द हो तो दाँतों के बीच में चम्मच या कोई सख्त वस्तु डालकर उसको खोल दें। होश आ जाने पर वास्तविक रोग के कारण को जान व समझकर उसकी चिकित्सा करें। यदि मासिक बन्द या रुका हुआ हो तो हिस्टीरिया की चिकित्सा के साथ मासिकधर्म लानी वाले औषधियों का प्रयोग करें। यदि विवाह से पूर्व यह रोग हो गया हो और लड़की आयु काफी हो चुकी हो तो तुरन्त उसका विवाह कर दें, उसका यह रोग विवाहोपरान्त स्वयं ही ठीक हो जायेगा।

● यदि गर्भकाल में हिस्टीरिया के दौरे पड़ने लगें तो गुलकन्द दो तोला में 1 माशा असली रुमी मस्तंगी का चूर्ण मिलाकर खिलाने से लाभ होता है।

● निर्बसी, अगरु, हींग, काफूर, जटामाँसी, कुनीन, बन्सलोचन तथा केसर

सभी सम मात्रा में लेकर सबको खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। ये 1 से 2 गोली तक दिन में 2 बार खिलायें।

● खुरासानी बच 10 ग्राम लेकर खूब बारीक पीसकर 3 बार कपड़छन करके सुरक्षित रख लें। इसे 2 से 4 ग्रेन तक शुद्ध घी, मक्खन अथवा मलाई के साथ चटाकर ऊपर से खीर खिलायें तथा रोगिणी को दूध अधिक मात्रा में पिलायें। दिन में 3-3 घण्टे बाद 4 बार दवा प्रयोग करायें। मात्र 3-4 दिनों के सेवन से ही हिस्टीरिया रोग सदैव के लिए 'अलविदा' कह जायेगा।

● हिस्टीरिया में मूर्च्छा (बेहोशी) होने पर ठण्डे जल से सिर आँखों पर छींटा मारना, अथवा शीतल जल की धारा देना भी अत्यन्त लाभप्रद है।

● जटामाँसी, बच और घी में भुनी हींग प्रत्येक 2-2 तोले, कूट और काला नमक प्रत्येक 4-4 तोले और बायबिडंग 16 तोला सभी को एकत्र कूट पीसकर कपड़छन कर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 1 से 3 माशा की मात्रा में गुनगुने जल के साथ प्रतिदिन 3 बार सेवन करायें। योषापरस्मार में अत्यन्त लाभप्रद है। आक्षेप नाशक, गर्भाशय विकारजन्य कम्पवात, अपस्मार तथा मस्तिष्क तनाव में गुणकारी तथा अनिद्रा नाशक भी है।

● सर्पगन्धा मूल 10 सेर, खुरासानी अजवायन 2 सेर, जटामाँसी और भाँग 1-1 सेर एकत्र कर जौकुट कर चूर्ण कर लें। तदुपरान्त इस चूर्ण को अठगुने जल में रात्रि को भिगोकर प्रातःकाल मन्दाग्नि पर पकावें तथा कलछी से चलाते रहें। अष्टमांश द्रव्य शेष रहने पर नीचे उतार लें और वस्त्र में मसलकर छान लें। फिर दूसरी बार छानकर मन्द-मन्द आग पर पकावें। जब काढ़ा गाढ़ा हो जावे तब इसमें पीपलामूल का चूर्ण 20 तोला मिलाकर गोली बनाने योग्य जल वाष्प पर सुखाकर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनाकर रख लें। ये 2 से 3 गोलियाँ जल या दूध से रात्रि को सोने से 1-2 घण्टे पूर्व अथवा जब दौरा हो जाय तब सेवन करायें। यह औषधि मस्तिष्क-तनाव शामक है। रक्तचाप कम करने वाली, वेदनाहर गुण के कारण योषापस्मार में लाभप्रद है शान्त निद्रादायक है।

● सारस्वतारिष्ट (भैषज्य रत्नावली) भोजनोपरान्त 1 तोला द्रव बराबर जल मिलाकर प्रतिदिन 2 बार पिलाना लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त इस रोग में हिंग्वष्टक चूर्ण, ब्रह्मरसायन भी बहुत ही अनुभूत योग है।

● कायफल 5 भाग, नक छिकनी 2 भाग, छोटी इलायची के बीज, तुलसी पत्र, पीपल छोटी, कपूर, समस्त 1-1 भाग लें। सबको अलग-अलग कूट पीसकर

कपड़छन कर लें, फिर एक भावना आक के दूध की देकर सूक्ष्म पीस लें। आवश्यकता पड़ने पर इसकी नश्य दें।

● थोड़ा सा नमक घोलकर 4-5 बूँदें नासा-पुटों में भी डालना भी दौरे के समय की बेहोशी दूर करने में लाभप्रद है।

● एक पाव दूध में 2 चम्मच एरन्ड-तेल मिलाकर रात्रि को सोते समय पिलायें कब्ज मिटाने एवं वातजनित योषापस्मार के लिए प्रशस्त योग है।

● कुलंजन के कपड़छन चूर्ण को पोटली बनाकर (दौरे में) सुँघाना या रोगिणी के पैर के तलुवों पर राई और सेंधा नमक की मालिश करना अथवा पैरों पर गरम जल की धारा छोड़ना अथवा सिर पर बर्फ या ठण्डे पानी की पट्टी रखना, मुँह पर ठण्डे पानी के छींटे मारना अथवा किसी पक्षी के पंखों को जलाकर उसका धुँआ नाक में देना या चन्दन की मोटी बत्ती अथवा कोई सी साधारण धूप बत्ती जलाकर उसका धुँआ नाक में देना, या हींग सरसों, राई, गूगल, लौहवान की धूनी देना इत्यादि सभी उपाय हिस्टीरिया के आक्रमण काल (दौरे के समय) की बेहोशी दूर करने के हैं। मौके पर जो भी उपलब्ध हो, उसे करें।

● सौंठ पीपल और मिर्च का चूर्ण मसूढ़ों पर रगडने से हिस्टीरिया रोगी के भिचे हुए दाँत खुल जाते हैं।

● हिस्टीरिया रोगी की आँखों में यदि लाली हो तो गुलाबजल डालें। अथवा अंग्रेजी दवा का आई ड्राप्स लोकूला 30 प्रतिशत आँखों में डालें। (लौकूला गुलाब जल में सोडियम सल्फाएसिटेमाइड का 10 से 30 प्रतिशत तक घोल होता है।

● हिस्टीरिया रोगिणी की गर्भाशय सफाई हेतु बायबिडंग 6 ग्राम, समुद्रफेन 3 ग्राम, बिरोजा और सेंधा नमक भी 3-3 ग्राम लेकर सभी को कूट छानकर मलमल के 3 कपड़ों में 3 पोटलियां बनाकर योनि में गर्भाशय के मुख के दाँये-बाँये व सामने रखें। इस योग से गर्भाशय में जमा हुआ खून भी निकल जाता है। यह क्रिया निरन्तर 3 दिन तक करने से गर्भाशय का शोधन हो जाता है।

● जटामांसी, रास्ना, पीपल के पेड़ की छाल, एरन्ड के जड़ की छाल, सौंठ अजवायन तथा एलुआ—प्रत्येक 3-3 ग्राम लेकर मिट्टी के बरतन में आधा किलो जल में पकावें। जल 500ग्राम शेष रहे, तब छानकर सेवन करायें। इस क्वाथ का सेवन प्रत्येक प्रकार के हिस्टीरिया में लाभप्रद है। रजावरोध नाशक है। रज की गाँठों को गलाकर बहा दोता है। गर्भाशय शोधन हेतु उत्तम क्वाथ है। कम्पवात नाशक भी है।

● प्रताप लंकेश्वर रस सुबह शाम 125 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ सेवन करायें तथा भोजनोपरान्त दशमूलारिष्ट पिलायें। यह योग गर्भाशय विकारों को नष्ट कर हिस्टीरिया रोग से मुक्ति प्रदान करता है।

● वृहत वात चिन्ता मणिरस 250 मि.ली. सुबह शाम शहद के साथ सेवन करायें तथा भोजनोपरान्त दशमूलारिष्ट और द्राक्षासव समान मात्रा में जल मिलाकर सेवन करायें। यह योग वात नाशक है। इसके सेवन से हिस्टीरिया के दौरों का पुन: आक्रमण भी नहीं होता है।

● जे. एण्ड जेंडीशन (हैदराबाद) के द्वारा निर्मित पेटेन्ट औषधि विटल ऐसेन्स, 250 मिली. ग्रा. फ्रक्टोजाइम 250 मि.ग्रा. तथा अगर कम्पाउन्ड 125 मि.ग्रा. तीनों को मिलाकर सुबह शाम सेवन करने से भी दौरों का पुन: आक्रमण नहीं होता है। यह योग भी वातनाशक है।

● शुद्ध हीरा हींग 10 ग्राम, बच व जटामांसी 10-10 ग्राम, कूट 2 ग्राम, काला नमक 20 ग्राम, बायविडंग 10 ग्राम—सभी को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इसे 2 से 4 ग्राम की मात्रा में गर्म जल से दिन में 4 बार सेवन करायें। हिस्टीरिया नाशक है।

● असली केशर 4 ग्राम, जावित्री 4 ग्राम, असगन्ध 1 ग्राम, जायफल 1 ग्राम, गौदुग्ध में उबाली हुई छोटी पीपल 1 ग्राम, कच्चा अदरक 20 ग्राम, पके हुए सफेद बंगला पान के 10 पत्ते (नग) सभी को महीन पीसकर 250 मि. ग्राम, बजन की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। रोगानुसार तथा ऋतु (मौसम) का ध्यान रखते हुए (क्योंकि इस योग की तासीर गरम है) एक गोली पान के बीड़े में रखकर दिन में 2 से 4 बार सेवन करायें। यह योग भी हिस्टीरिया नाशक है।

हिस्टीरिया नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

सरपिना टेबलेट (हिमालय) आवश्यकतानुसार आधा से 1 गोली तक दिन में 2-3 बार दें।

सिलेडिन टेबलेट (अलारसिन) 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दें। रात्रि को सोते समय भी प्रयोग करायें।

हेम पुष्पा (पेय) (राजवैद्य शीतल प्रसाद) साथ में मिली हैमटेब 1 टिकिया ताजा पानी से निगलकर 1-2 चम्मच दवा दुगुना ताजा जल मिलाकर दिन में 2-3 बार प्रयोग करायें। मासिकधर्म के दिनों में प्रयोग बन्द रखें।

इथिनोर लिक्विड (मैडिकल इथिक्सि) 1-2 चम्मच दवा 1 गिलास पानी के साथ दिन में 2-3 बार भोजनोपरान्त दें।

आशार टेबलेट (चरक) 1-1 टिकिया दिन में 3 बार दें। तीव्रावस्था में मात्रा बढ़ाई जा सकती है।

नैड टेबलेट (चरक) वयस्कों को 2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार तथा बच्चों को 1-2 टिकिया जल से दें।

एफ. एम. सीरप (अतुल फार्मेसी) 2-2 चम्मच जल मिलाकर दिन में 2 बार भोजनोपरान्त दें। साथ में इसी निर्माता का श्वेत प्रदरान्तक 1-1 कैपसूल सुबह-शाम प्रयोग करायें। स्त्रियों के गुप्त संस्थानों को रोग रहित बनाकर बल प्रदान करता है। हिस्टीरिया में गुणकारी है।

शक्ति संचय सीरप (अतुल फार्मेसी) सभी (स्त्री पुरुष व बच्चों) आयु वर्ग के लिए शक्ति बर्धक टानिक है। पानी या दूध से सुबह शाम बच्चों को 1-1 चम्मच तथा वयस्कों को 2-2 चम्मच सुबह दोपहर शाम दिन में 3 बार प्रयोग करायें।

नीबू के रस में थोड़ी हींग मिलाकर दिन में 3 बार देने से हिस्टीरिया में आश्चर्यजनक लाभ होता है।

मधुमेह (Diabetes)

रोग परिचय—इस रोग की आजकल बहुतायत हो गई है। इस रोग में शर्करा (Sugar) बिना किसी रासायनिक परिवर्तन के मूत्र के साथ बाहर निकलती रहती है। इस रोग में शक्कर पच नहीं पाती है तथा रोगी को मूत्र अधिक आता है। बार-बार मूत्र त्याग के कारण प्यास भी अधिक लगती है, मुख सूखता रहता है, रोगी कमजोर व कृषकाय हो जाता है।

उपचार

● जामुन की गुठली का चूर्ण सौंठ, 50-50 ग्राम तथा गुड़मार बूटी 100 ग्राम लें। सभी को कूटपीसकर कपड़छन कर लें। फिर ग्वारपाठे के रस में घोटकर झड़बेर (जंगली बेर) के समान गोलियाँ बना लें। ये 1-1 गोली दिन में 3 बार शहद के साथ प्रयोग करायें। एक माह तक प्रयोग जारी रखें।

नोट:—इस योग के प्रारम्भ करने से पूर्व 3 दिन का उपवास करें। इस रोग में शक्कर अथवा शक्कर से बनी मिठाइयाँ, पकवान व पेय निषेध है। रोगी कम खाये। हरी साग-सब्जियों का प्रयोग अधिक करें। अल्प मात्रा में फल ले सकते हैं। दिन में सोवें, स्वच्छ पानी में तैरना

लाभप्रद है, कम बोलें, व्यायाम (शारीरिक शक्तिनुसार) अवश्य करें, यदि कर सकें तो नित्य 30 ग्राम, गौ मूत्र का पान करें, अवश्य लाभ होगा।

● केवल चने की रोटी सात दिनों तक खाने से पेशाब की शक्कर बन्द हो जाती है। गूलर के पत्तों के उबाले जल से स्नान करें। खूब घूमें, पानी एक साथ न पीकर कई बार में थोड़ा-थोड़ा पियें। आँवले के रस में मधु मिलाकर सेवन करें। नासपाती, सेब, अमरूद, नीबू, करेला, टमाटर लाभकारी है। जौ की रोटी खाना भी लाभप्रद है। एक समय रोटी तथा एक समय फलाहर तथा बिना चीनी का दूध लेना लाभप्रद है।

● बढ़िया क्वालिटी के उत्तम छुहारे लेकर उनके टुकड़े कर उनकी गुठलियाँ निकाल दें। उसके 3-4 टुकड़े मुख में रखकर चूसते रहें। दिन भर में 8-10 बार लगातार 5-6 माह तक चूसें। लाभप्रद है।

● हरी गिलोय 40 ग्राम, पाषाण भेद तथा शहद 6-6 ग्राम लें। तीनों को मिलाकर 1 माह पियें। मधुमेह नष्ट हो जायेगा।

● 5 ग्राम की मात्रा में शुद्ध शिलाजीत प्रतिदिन दूध में डालकर पीने से मधुमेह शर्तिया नष्ट हो जाता है। कम से कम 1 किलो शिलाजीत का सेवन करलें। यह प्रयोग सर्दियों की ऋतु में करें।

● गुड़मार बूटी, जामुन की गुठली दोनों सममात्रा में लेकर कूटपीसकर चूर्ण बनाकर रख लें। इसे 6 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम गरम पानीके साथ नित्य सेवन करें। लाभप्रद है।

● 20 ग्राम बिनौले को कूटकर 600 ग्राम पानी में औटावें। जब चौथाई रह जाये तब मल छानकर 10-10 ग्राम जल दिन में 3-4 बार में पिलायें। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से स्थायी लाभ हो जायेगा।

● चित्रक के पंचाग को यवकुट (जौकुट) करके 6 ग्राम की मात्रा में प्रातः सायं 300 ग्राम पानी में डालकर पकायें। जब 500 ग्राम पानी शेष रह जाये, तब अग्नि से उतार छानकर गुनगुना ही रोगी को पिलायें। मात्र 3 सप्ताह के सेवन से मधुमेह एवं बहुमूत्र रोग नष्ट हो जाता है। अल्प-मोली घरेलू प्रयोग है।

● वट वृक्ष (बड़ या बरगद) की 400 ग्राम छाल को 400 ग्राम पानी में पकायें। जब पानी 200 ग्राम शेष बचे, तब उतार छानकर दोनों समय (सुबह शाम) 1-1 मात्रा पिलायें। एक माह मात्र के नियमित सेवन से मधुमेह रोग नष्ट हो जाता है।

● जामुन की गुठली 12 ग्राम तथा अफीम 1 ग्राम लें। दोनों को जल के साथ घोटकर 32 गोलियाँ बनाकर छाया में सुखाकर शीशी में सुरक्षित रख लें। 2-2 गोली सुबह शाम जल के साथ निगलवायें। जौ की रोटी और हरे साग सब्जियों का प्रयोग अधिकता से करें।

● शीतलचीनी, गुड़मार, असगन्ध, शंखाहूली सभी समभाग लेकर कूट पीसकर चूर्ण बना लें। सुबह शाम 3-3 ग्राम की मात्रा में ताजा जल के साथ दें। मधुमेह में अत्यन्त लाभकारी है।

● करेले का रस नित्य प्रातःकाल 2 तोला की मात्रा में खाली पेट और भोजनोपरान्त पीने से 10 दिन में ही शर्करा का पेशाब में जाना बन्द हो जाता है। मधुमेह का अत्यन्त सफल प्रयोग है। करेला के रस को सुबह-शाम नित्य खाली पेट पीने से उदर की बढ़ी हुई तिल्ली (स्पलीन) कम हो जाती है।

● काली मिर्च व काला जीरा 2-2 तोला, तुलसी के पत्ते 2 तोला, काला नमक 1 तोला लें। सभी को खरल में डालकर जल के साथ घोटकर बेर के बराबर गोलियाँ बनालें। यह 1-1 गोली सुबह शाम जल के साथ लें। केवल 1 माह के अन्दर बहुमूत्र रोग जड़ से नष्ट हो जायेगा।

● करेलों के छाया-शुष्क टुकड़ों का महीन चूर्ण बनाकर इसे 6 ग्राम की मात्रा में जल के साथ लेने से मूत्र में शर्करा आना धीरे-धीरे बन्द हो जाता है।

● गुड़मार के चूर्ण को करेले के रस की 7 भावनायें देकर सुखाकर शीशी में सुरक्षित रख लें। इसे सुबह-शाम 3 से 6 ग्राम की मात्रा में जल के साथ लेने से तथा पूर्ण संयम के साथ पथ्य सेवन करने से महीना-डेढ़ महीना में मधुमेह नष्ट हो जाता है। इस रोग में मांस, मछली, अण्डे का शोरबा, घी, मक्खन, पनीर, ताजा साग-सब्जियाँ, मूली, पालक, परवल, लौकी, करेला, बैगन, आदि तथा फल-आम, अनार, सेब, जामुन, संतरा, मौसमी आदि सेवन करना तथा थोड़े नमक के साथ कागजी नीबू का रस पानी मिलाकर पीना पथ्य है। नये चावल, शीतल जल, बरफ, गरम और मीठे पदार्थ, धूप में घूमना-फिरना, परिश्रम, मैदा, चीनी, गुड़, माँस, मछली, तेल का सेवन तथा मैथुन करना अपथ्य है।

इस रोग के प्रारम्भ होने से पूर्व खूब भूख लगती है किन्तु धीरे-धीरे भूख कम होती जाती है। शरीर की त्वचा शुष्क और स्पर्श करने से रूखी, खुरदरी महसूस होती है। मसूढ़े फूल जाते हैं, उनसे रक्त निकलता है, कब्ज, अत्यधिक प्यास, पेशाब अधिक आना, मूत्र का आपेक्षित गुरुतत्व 1060 से भी ऊपर हो

जाना, पेशाब में शर्करा निकलना, शरीर में खुजलाहट, शरीर रुक्ष होना, दुर्बलता, शरीरिक भार में कमी इत्यादि प्रधान लक्षण है । इसके बाद शरीर धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है । पैर में शोथ हो जाता है । स्त्रियों को यह रोग होने पर उनकी योनि में खुजली उत्पन्न हो जाती है । बीमारी बढ़ने के साथ ही साथ फैफड़े भी खराब हो जाते हैं और अन्त में कारबन्कल (फोड़ा) होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है ।

यह रोग स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों को तथा निर्धनों की अपेक्षा धनवानों को, मध्य आयु वालों तथा वृद्धों को (40 से 60) वर्ष वालों को अधिक होता है । अत्यधिक मानसिक परिश्रिम करना, उत्तेजना, चोट एवं कुछ संक्रामक रोग जैसे—डिफ्थीरिया, मलेरिया, इन्फ्लूएन्जा आदि के कारण भी यह रोग हो जाया करता है । अधिक मद्यपान, या शर्करा युक्त भोजनों तथा यकृत और क्लोम ग्रन्थियों की कार्य प्रणाली में अवरोध उत्पन्न हो जाना भी कारण है । इस रोग में तेल और मिर्च मसाला रहित करेला की तरकारी विशेषरूप से खाते रहना रोगी के लिए हितकर है ।

● 3 ग्राम हल्दी चूर्ण 12 ग्राम शहद में मिलाकर नित्य प्रति 3 माह तक चाटने से मधुमेह ऐसा भागता है कि फिर मुड़कर पीछे नहीं देखता है।

● करेले को केवल धोकर ऊपर से वाले कोमल उभार को छीलकर निचोड़कर लीजिए । सुबह कुल्लादि करके आधा कप यह रस पी जाइए । निचुड़े हुए गूदे को हल्दी आदि में डालकर गाय के घी में भूनकर नाश्ता कर डालिए । करेलों की सुबह प्याज के साथ हल्के मसाले डलवाकर सब्जी बनवा लीजिए, दोपहर का खाना इसी सब्जी से खाइये । शाम को 2 साबुत करेले बारीक कुतरकर मक्खन में फ्राई कराइये और चाय के साथ शाम का नाश्ता करिये । रात में 2 केले कुतरबाकर पिसवा लीजिए और किसी भी तरीदार सब्जी के लिए मसाले के तौर पर प्याज करेले की पिसी हुई पीठी भी भुनवा डालिए । यदि किसी मधुमेह के रोगी ने नियमित रूप से 3 माह यही दिनचर्या बना ली तो मधु मेह के छक्के ही छूट जायेगें ।

ऐसे रोगी जो ऐलौपैथी की औषधियां और सूचीबेधों तथा इन्सूलीन से तंग आ चुके हों, उन्हें तो यह कुदरत का करिश्मा या वरदान ही साबित होगा ।

● नीम की छाल का काढ़ा पीना भी मधुमेह नाशक है ।

● त्रिबंग भस्म, नागभस्म 1-1 रत्ती, बंग भस्म 2 रत्ती, जामुन की गुठली का चूर्ण 3 माशा लेकर खरल करें, यह एक मात्रा है । इसे सुबह-शाम मधु से चटाकर ऊपर से 1 पाव गौ दुग्ध पिलावे ।

● मधुमेह के रोगी प्रतिदिन 2 बार भोजन के बाद त्रिफला चूर्ण (हरड़, बहेड़ा, आँवला) आधा तोला को गरम जल से अथवा पंच-सकार चूर्ण (सनाय, सौंठ, शिवा, (हरड़) सेंधा नमक और सौंठ का मिश्रण) आधा तोला (6 ग्राम) के साथ आधा तोला जामुन की गुठली का चूर्ण मिलाकर गरम जल के साथ लेते रहने से उदर शुद्धि होकर वातिक कोप का शमन हो जाता है ।

इस रोग में सुबह-शाम 1 पाव गरम दूध से 3 से 6 रत्ती की मात्रा में शुद्ध शिलाजीत का प्रयोग करने से मधुमेह का कुछ ही दिनों में शमन हो जाता है ।

● मधुमेह की चिकित्सा अत्यन्त ही सरल है और अत्यन्त कठिन भी । जो रोगी संयमी हैं, जो अपनी जीभ को वश में रखते हैं—उनके लिए इस रोग से मुक्ति मात्र बच्चों का खेल है और जो असंयमी, पेटू है, उन्हें उनके लिए इसकी चिकित्सा असम्भव है । सर्वप्रथन हर किसी को यह भली प्रकार समक्ष लेना चाहिए कि (We Eat to live But We donot live to eat) अर्थात हम जीने के लिए खाते हैं, खाने के लिए नहीं जीते हैं । मधुमेह रोग के साथ-साथ मधुमेह के रोगी को जो व्रण, पाण्डु, फोड़े, घाव, मोटापा, इत्यादि जो भी सहायक हों—उन सबके लिए अलग से किसी चिकित्सा अथवा चिन्ता की आवश्यकता नहीं है । मधुमेह के दूर होते ही वह सब स्वयं नष्ट हो जायेंगे जैसे जड़ काट देने पर किसी पेड़ के फूल और पत्ते आदि स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं ।

● छाया में सुखाये हुए आम के 1 तोला पत्तोंको आधा सेर (500 ग्राम) पानी में उबालकर आधा पानी शेष रहने पर कपड़े से छानकर सुबह-शाम पीना मधुमेह नाशक है ।

● महुआ की छाल 5 ग्राम एवं काली मिर्च 1 ग्राम लें । दोनों को मिलाकर जल के साथ पीसकर पीना मधुमेह नाशक है ।

● पान के साथ जस्ता-भस्म खाना मधुमेह नाशक है ।

● बेल की ताजी हरी पत्तियाँ 2 तोला को 11 नग काली मिर्चों के साथ पीसकर नित्यप्रति पीने से मधुमेह रोग नष्ट हो जाता है ।

● बिल्व पत्र स्वरस ढाई तोला को मधु के साथ सूर्योदय के पूर्व नित्य पीने से पेशाब में जाने वाली शर्करा 15 दिन में निरस्त हो जाती है ।

मधुमेह नाशक पेटेन्ट प्रमुख आयुर्वेदीय योग

जे. के. 22 टेबलेट (चरक) 1-2 टिकिया भोजनोपरान्त दिन में 1-2 बार जल के साथ दें । नोटः—जिन्हें मधुमेह रोग न हो उन्हें कदापि न दें ।

डायबिट टेबलेट (मेहता) 1-2 टिकिया आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें।

प्रमेह केसरी कैपसूल (मिश्रा) 1-2 कैपसूल सुबह शाम दें।

उदुम्बर धनसत्व (गर्ग बनौषधि) 1-1 ग्राम दिन में दो बार।

लिव 52 सीरप (हिमालय) 2 से 5 मि.ली. दिन में 2 बार दें।

टालवुटेबस टेबलेट (मार्तन्ड) आधा से 1 गोली दिन में 3-4 बार दें।

मधुमेहान्तक कैपसूल (गर्ग बनौषधि) आधा-आधा कैपसूल सुबह शाम दें।

मधुरौल कैपसूल (अतुल फार्मेसी) सुबह शाम 1-1 कैपसूल जल से दें। उदुम्बर फल के चूर्ण के क्वाथ के साथ देना शीघ्र लाभप्रद है। मधुमेह मूत्र तथा मूत्र संस्थान के रोगों में सर्वोत्तम है। मधुमेह को जड़ मूल से नष्ट कर देता है।

उदुम्बर धनसत्व (अतुल फार्मेसी) मात्रा 1 ग्राम है। सुबह शाम जल से लें 'मधुमेह तथा बहुमूत्र नाशक है। इसके अतिरिक्त रक्त पित्त, रक्तार्श और रक्त प्रदर में भी लाभप्रद है। अग्निदग्ध में इसका घोल अंग्रजी औषधियों से भी अधिक लाभकारी सिद्ध हुआ है।

मधुमेह नाशक सैट (अतुल फार्मेसी) इसमें मधुमेह गुटिका 60 गोली, बसन्त कुसुमाकुर रस 60 गोली तथा मधु शैल कैपसूल 60 शामिल है।

बाँझपन (Sterility)

रोग परिचय—इस रोग का अत्यन्त ही सीधा सादा सा अर्थ है बच्चे न होना। स्त्री गर्भधारण करने में असमर्थ रहती है। यह रोग पुरुषों को भी होता है। पुरुष भी स्त्री को गर्भ स्थापित करने में असमर्थ हो सकता है।

यदि पति में दोष न होने पर विवाहोपरान्त भी 5 वर्ष तक गर्भ न ठहरे तो स्त्री को बाँझ रोग से ग्रसित माना जाता है। इस रोग के मुख्यत: दो कारण हैं।

1. जन्मजात—जैसे स्त्री का जन्म से ही गर्भाशय न होना अथवा गर्भाशय बहुत ही छोटा होना, कुमारी पर्दा बहुत मोटा और बिल्कुल बन्द होना, योनि की नाली बिल्कुल बन्द होना या उसका अन्तिम भाग बन्द या बहुत तंग होना अथवा फैलोफियन ट्यूबों का न होना अथवा बन्द होना, डिम्बाशय का न होना या बन्द होना, गर्भाशय का मुख बिल्कुल ही बन्द हो जाना इत्यादि।

2. भगद्वार के ओष्ठों का आपस में जुड़ जाना—गर्भाशय शोथ, गर्भाशय का उलट जाना, गर्भाशय में बहुत अधिक चर्बी एकत्र हो जाना, गर्भाशय

कठोर हो जाना, डिम्बाशय पर आप्राकृतिक झिल्ली उत्पन्न हो जाना और उसकी रचना खराब हो जाना, फेलोपियन ट्यूब के झालर वाले किनारे खराब हो जाना, उपदंश श्वेत प्रदर आदि होना है।

गर्भाशय के अन्दर दूषित तरल का एकत्र हो जाना, मासिकधर्म सम्बन्धी विकार, गर्भाशय के घाव और कैन्सर, गर्भाशय में सर्दी, गर्मी, खुश्की और तरल की अधिकता, गर्भाशय में वायु एकत्र हो जाना या पानी पड़ जाना, गर्भाशय की बबासीर, हारमोन्स के दोष, मोटापा, रक्त अल्पता, गर्भाशय के तरल में अधिक अम्लता उत्पन्न हो जाना तथा गर्भशिय के अन्य अनेक रोग बाँझपन का कारण हो सकते हैं।

बाँझ पुरुष (Male infertelity) हालांकि बच्चा उत्पादन का प्रमुख क्षेत्र नारी मानी गई है किन्तु सन्तानोत्पादन में दोषी केवल स्त्री को मानना चिकित्सकीय दृष्टिकोण से कतई न्यायोचित नही है, क्योंकि चिकित्सा जगत में यह सप्रमाण सिद्ध हो गया है कि सन्तानोत्पादन न होने में पुरुष भी 30 प्रतिशत दोषी है। अत: जो पुरुष शुक्राणु जनन के अभाव में स्त्री को गर्भवती न कर सके तो वह बाँझ पुरुष कहलाता है। यदि स्त्रियों की जननेन्द्रियों में कोई खराबी सुयोग्य चिकित्सक के परामर्शानुसार न हो तो उसके पति का परीक्षण अति आवश्यक है।

बाँझ पुरुष में मैथुन शक्ति तो होती है किन्तु सन्तानोत्पादन क्षमता नहीं होती है। इसका प्रमुख कारण उसका वीर्य है। सम्भोग के समय पुरुष जननेन्द्रिय से लगभग 4 मि.ली.. वीर्य निकालता है। इसकी प्रत्येक सी.सी. (C.C.) में 10 से 40 करोड़ के लगभग शुक्राणु होते हैं। जिनमें 80 से 90 प्रतिशत तक सक्रिय होते हैं। इसी 1 शक्राणु और स्त्री के 1 डिम्बाणु से मिलकर सन्तान की उत्पत्ति होती है। किन्तु जिनके 6 करोड़ से कम शुक्राणु होते हैं वे सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकते हैं। शुक्राणुओं की जाँच (वीर्य परीक्षा) लेबोरेट्रीज में की जाती है।

कई बार पुरुष स्त्री से यथाविधि मैथुन नहीं करते। अत: शुक्रकीट (शुक्राणु) गर्भाशय में नही जा पाते हैं। इस हेतु सम्भोग के पश्चात् स्त्री को कई घन्टे तक लेटे रहना चाहिए। ताकि शुक्रकीट रेंगकर गर्भाशय में प्रवेश कर सकें क्योंकि वीर्य निकलने के 4 घन्टे बाद तक शुक्राणुओं में दुम हिलाकर हिलने-डुलने की शक्ति होती है। कई बार तो सम्भोग करने के 3 दिन (72 घन्टे) बाद गर्भाशय के तरल की परीक्षा करने के बाद उसमें शुक्रकीट गति करते हुए मिलते हैं। अब अनुसन्धानों के पश्चात् यह परिणाम निकाले गये हैं कि शुक्रकीट को गर्भाशय

में पहुँचने और गर्भ ठहराने के लिए कम से कम 24 घन्टे मिलना जरूरी ह । सम्भोग के समय जिन पुरुषों का वीर्य गर्भाशय मुख के पास उछलकर गिरने के बजाय योनि के आरम्भ में ही गिर जाता है । ऐसे पुरुष में भी स्त्री को गर्भ ठहराने की कम सम्भावना होती है । वीर्य में रक्त या पीव होने पर भी गर्भ ठहरने की शक्ति घट जाती है । पुरुष का सुजाक रोग भी गर्भ न ठहरा सकने का कारण हो सकता है ।

यदि बाँझपन का कारण स्त्री को जन्म से हो तो इसका निरीक्षण से पता चल जाता है । कुमारी पर्दा और योनि के बन्द होने की अवस्था में सम्भोग नहीं किया जा सकता है । डिम्बाशय न होने पर या उसकी रचना खराब होने पर स्त्री को संभोग का आनंद प्रतीत न होने के कारण, उसको सम्भोग की इच्छा ही उत्पन्न नहीं हुआ करती है ।

डिम्बाशय पर अप्राकृतिक झिल्ली उत्पन्न हो जाने पर या फैलोपियन प्रणालियों के बन्द हो जाने पर या उनके न होने पर सम्भोग का मजा तो आता है किन्तु तरल-पात नहीं होता है । वृक्कों के ऊपर की ग्रन्थियों और डिम्बाशय में रसूली हो जाये तो स्त्रियों में मर्दाना गुण उत्पन्न हो जाता है और उनकी दाढ़ी मूछों के बाल निकल आते हैं । छाती पेट हाथ तथा पैरों पर बहुत अधिक बाल निकल आते हैं । स्तन छोटे और कड़े हो जाते हैं । मासिक बन्द हो जाता है । कामकेन्द्र बड़ा हो जाता है और स्वर पुरुषों की भाँति भारी हो जाता है । यदि गर्भाशय के किसी दूसरे रोग के कारण बाँझपन हो तो स्त्री को उस रोग का स्वयं ज्ञान होता है ।

उपचार—सर्वप्रथम बाँझपन के वास्तविक कारण को जान कर उसको दूर करने का प्रयत्न करें । यदि स्त्री में जन्म से कोई दोष हो तो उसकी चिकित्सा नहीं हो सकती है । यदि अन्य गर्भाशय रोगों के कारण बाँझपन हो या पति में कोई वीर्य सम्बन्धी विकार है तो उसकी चिकित्सा पूर्णत: सम्भव है । मात्र धैर्य की आवश्यकता है ।

● कस्तूरी 2 रत्ती, अफीम, केसर, जायफल, प्रत्येक 1-1 मांशा, भाँग के पत्ते 2 मांशा 2 रत्ती, पुराना गुड़, सफेद कत्था प्रत्येक 5 माशा 2 रत्ती, सुपारी 3 नग, लौंग 4 नग, सभी को कूटपीस छानकर जंगली बेर के समान गोलियाँ बनाकर मासिक धर्म समाप्त होने के बाद 1-1 गोली सुबह-शाम 5 दिन तक खिलायें। इस औषधि से जिन स्त्रियों की आयु 40 वर्ष से भी अधिक हो गई और गर्भ नहीं ठहर पाया हो, उनकी भी मनोकामना पूर्ण हो गई । यदि प्रथम मास गर्भ न ठहरे, तो यही प्रयोग पुन: दूसरे तीसरे मांस कर सकते हैं ।

● मोरपंख के अन्दर सुन्दर गोल (चाँद) 9 लेकर गर्म तबे पर भून लें। और बारीक पीसकर पुराने गुड़ में गूँथकर 9 गोलियां बना लें । मासिक धर्म आने के दिनों में 1-1 गोली बहुत सबेरे गाय के दूध के साथ 9 दिन तक खिलायें । इसके बाद पति पत्नी सम्भोग करें । इस प्रयोग से भी यदि प्रथम मास में सफल न हों तो दूसरे तीसरे मांस पुन; किया जा सकता है ।

● पीपल की दाढ़ी छाया में सुखाई हुई और नागकेशर प्रत्येक 6-6 माशा, हाथी दाँत, बहुत बारीक कटा हुआ हो 1 तोला, असगन्ध, कायफल प्रत्येक 3 माशा लें । सभी औषधियों को अलग-अलग कूटपीसकर 2 तोला खांड में मिलाकर रख लें । मासिक धर्म आ चुकने के बाद रात को सोते समय 6 से 9 माशा की मात्रा में यह औषधि खिलायें और तीसरे चौथे दिन पति-पत्नी सम्भोग करें । इस 5 दिन तक यह दवा खिलाते रहें । 3 मास के अन्दर गर्भ ठहर जाता है ।

● शास्त्रीय औषधि सुपारी पाक के निरन्तर सेवन से भी श्वेत प्रदर और, गर्भशिय के रोग और कमजोरी दूर होकर गर्भ ठहर जाता है ।

● भुनी हुई फिटकरी, जायफल, बड़ी माई, अनार का छिलका सभी सममात्रा में बारीक पीसकर पानी मिलाकर बत्तियां बनालें । मासिकधर्म आ चुकने के बाद 1 बत्ती गर्भाशय के पास रखें तथा रात्रि को बत्ती निकाल कर सम्भोग करें ।

सम्भोग के बाद स्त्री चूतड़ों के नीचे तकिया रखकर काफी समय तक लेटी रहे । शीघ्रपाती तथा शक्ति बर्धक भोजन खाये । अनार, सेव, सन्तरा, गेहूँ का दलिया, लाभप्रद है । खट्टी वायुकारक और भारी देर से हज्म होने वाली वस्तुऐं न खाऐं । यह अपथ्य है ।

● गोरोचन 3 ग्राम, गजपीपल 10 ग्राम, असगन्ध 10 ग्राम लें । सभी को बारीक कूट पीसकर चूर्ण कर लें । ऋतु स्नान के पश्चात् चौथे दिन से 5 दिन तक यह चूर्ण 4-4 ग्राम की मात्रा में गौदुग्ध के साथ प्रयोग करें । तत्पश्चात् गर्भाधान (संभोग) करें । अवश्य गर्भधारण एवं पुत्र उत्पन्न होगा ।

● असगन्ध नागौरी को कूट पीसकर चूर्ण बना लें । तदुपरान्त गौघृत से चिकना कर लें । मासिक धर्म के पश्चात् 1 मास तक निरन्तर 6 ग्राम चूर्ण गौघृत के साथ सेवन करायें । अवश्य गर्भ धारण होगा ।

● शिवलिंग के बीज 9 अदद मासिकधर्म के बाद (स्नान के बाद) 4 दिन तक निरन्तर सेवन करें, तत्पश्चात् संभोग करें तो अवश्य गर्भ धारण होगा । यदि 1 बार में प्रयोग सफल न हो तो निराश न हों । 3-4 बार के प्रयोग में निराशा आशा में बदल जायेगी ।

● माजूफल 10 ग्राम, दक्षिणी सुपारी 10 ग्राम, हाथी दाँत का बुरादा 50 ग्राम लें। तीनों को कूटपीसकर गुड़ में मिलाकर रख लें। ऋतुकाल के पश्चात् स्नानकर शुद्ध होकर चौथे दिन से 6 ग्राम औषधि बछड़े वाली गाय के दूध के साथ सेवन करने से बन्ध्या (बाँझ) स्त्री अवश्य गर्भवती हो जाती है।

● अपामार्ग की जड़ का चूर्ण 30 ग्राम, काली मिर्च 30 नग दोनों को बारीक पीस लें। मासिक धर्म के 1 सप्ताह पूर्व से प्रयोग करें। तीन मास तक ब्रह्मचर्य का पालन करें। गर्भाशय के समस्त रोग दूर हो जाते हैं, मासिक धर्म नियमित हो जाता है। प्रदर एवं बांझपन को दूर करने वाला अमृत समान योग है।

● भली प्रकार साफ की हुई अजवायन 4 ग्राम, सेंधानमक 2 ग्राम लें। दोनों को बारीक पीसकर एक साफ कपड़े में रखकर पोटली बनालें। इसे सावधानी से योनि में गर्भाशय के समीप रखें। कुछ ही मिनटों में तेजी से पानी जैसा प्रवाह चालू होगा और थोड़ी देर बाद स्वयं ही बन्द हो जायेगा। जब पानी बन्द हो जाये तब पोटली बाहर निकाल लें। इससे गर्भाशय के समस्त विकार बाहर निकल जायेगें। यह प्रयोग शाम को 4-5 बजे करें। उस दिन सुपाच्य एवं पौष्टिक भोजन खीर अथवा गर्म हलुवा का सेवन करें तथा रात्रि के द्वितीय पहर में पति के संग सम्भोग करें। इस प्रयोग से अवश्य ही बाँझ स्त्री पुत्रवती हो जाती है।

● मासिकधर्म के बाद अजवायन और मिश्री 25-25 ग्राम को 25 ग्राम पानी में रात्रि में मिट्टी के बर्तन में भिगोदें। प्रातःकाल ठन्डाई की तरह खूब पीसकर पी जायें। पथ्य में मूँग की दाल और रोटी (बिना नमक की) खायें। औषधि सेवन मासिकधर्म के बाद आठ दिन तक निरन्तर करें। अवश्य गर्भ धारण होगा।

● बंगला पान 1 नग, लौंग 1 नग, बढ़िया अफीम 1 रत्ती लें। तीनों को बिना पानी मिलाये घोटकर गोलियां बनालें। मासिक धर्म स्नान के पश्चात् 1 गोली ताजा जल से प्रतिदिन 3 दिन तक निगलें और रात्रि में सम्भोग करें। प्रथम मास में ही उम्मीद सफल हो जायेगी। यदि कामयाबी हासिल न हो तो धैर्य पूर्वक पुनः यहीं क्रिया दूसरे मांस करें।

● सौठ, काली मिर्च, पीपल, नागकेशर, सभी 20-20 ग्राम लें। कूटपीसकर चूर्ण बनाकर रख लें। इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में गाय दूध में मिलाकर ऋतु स्नान के पीछे सेवन करायें। बाँझपन को नाश कर गर्भित करने वाला योग है।

● तुलसी के बीज आधा तोला पानी में पीसकर मासिक धर्म के समय 3 दिन तक देने से अवश्य गर्भ ठहर जाता है।

● सुपारी और नागकेशर को सम मात्रा में लें। पीसकर कपड़छन कर लें। इस चूर्ण को 2-3 माशे की मात्रा में ऋतु काल के 16 दिन तक जल के साथ स्त्री के सेवन करने से अवश्य ही गर्भ ठहर जाता है।

नोटः—पुरुष बाँझपन की चिकित्सा में आयुर्वेदीय मतानुसार बाजीकारण योगों का रोग के लक्षणों के अनुसार प्रयोग करना चाहिए। इस ग्रन्थ में इस प्रकार के कई अति महत्वपूर्ण योग अध्ययन करने पर आपको मिल जायेगें।

पुरुष बाँझपन नाशक कुछ बाजीकरण योग

नोटः—संखिया से निर्मित औषधियाँ 40 वर्ष की आयु से पूर्व न खायें। योग सेवन करने से पूर्व अपनी आयु का सदैव ध्यान रखें। विषैले योगों की औषधियाँ—कुचला, संखिया, भिलावा, धतूरा, कनेर, खुरासानी अजवायन, इत्यादि) कभी भी उचित मात्रा से अधिक न खायें। यकृत व वृक्करोगी को संखिया फास्फोरसयुक्त तथा ऐसे ही अन्य मर्दाना शक्ति के योगों का सेवन नहीं करना चाहिए। युवावस्था में विषैली औषधियां का अत्यधिक सेवन उन्माद क्षयरोग तथा नपुंसकता आदि रोग उत्पन्न कर सकते हैं। 40 वर्ष की अवस्था से पूर्व स्तम्भन की औषधियों का भूलकर भी प्रयोग न करना चाहिए। अफीम, गाँजा इत्यादि मादक पदार्थ कुछ समय के लिए स्तम्भन शक्ति बढ़ाते हैं, किन्तु अन्त में इनका पुरुष के स्वास्थ पर बुरा ही प्रभाव पड़ता है। संखिया मिश्रित योग कभी भी खाली पेट तथा मल से अधिक नहीं खाना चाहिए। इन योगों के प्रयोग काल में घी दूध, मक्खन इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इस ग्रन्थ में ऐसे योगों का समावेश न हो इसका विशेष ध्यान रखा गया है।

● प्याज की 30 गाँठों को एक बर्तन में रखकर उसके ऊपर इतना ताजा दूध डालें कि वह प्याज के ऊपर तक 4 अंगुल भर जाये, फिर उसको पकायें, जब गल जाये तब नीचे उतार लें। फिर प्याज के बराबर गाय का घी और शहद डालकर पुनः थोड़ी देर पकायें। फिर शकाकुल और कुलंजन 60-60 ग्राम उसमें मिलाकर सुरक्षित रख लें। इसे 10-10 ग्राम की मात्रा में खायें। यह योग अत्यन्त ही कामशक्ति बर्धक है।

● प्याज को किसी बर्तन में भरकर उसके मुँह को सावधानीपूर्वक बन्द कर दें जिससे उसमें वायु प्रवेश न कर सके। फिर उस बर्तन को गाय बाँधने की जगह पर 4 माह के लिए गाढ़ दें। तत्पश्चात् उसको निकालकर प्रतिदिन 1 प्याज खाने से मनुष्य की काम-शक्ति में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है।

● कोक शास्त्र के रचियता विद्धान पन्डित कोक के मतानुसार सर्वोत्तम बाजीकरण का प्रयोग यह है कि गुप्तांग के बाल सदैव साफ रखें तथा प्याज का प्रतिदिन सेवन करें। प्याज मन में हलचल उत्पन्न कर कामवासना को जागृत करता है तथा मैथुन करने की शक्ति प्रदान करता है। प्याज के रस के साथ शहद मिलाकर सेवन करना भी अत्यधिक लाभप्रद है। प्याज के सेवन करने वाला व्यक्ति जीवन

में कभी निर्बल नहीं होता है । सफेद प्याज.का रस 6 ग्राम देशी घी 6 ग्राम तथा शहद 3 ग्राम की 1 मात्रा बनाकर सुबह शाम प्रयोग करने से लिंग दौबर्ल्य, हस्तमैथुन-जन्य विकार मिटते हैं ।

● प्याज के रस को गाय के दूध के साथ सेवन करने से तथा साथ में प्याज का रस घी, शहद तीनों को असमान मात्रा में प्रयोग करने से दुर्बलता गायब हो जाती है ।

● काले उड़द की दाल धुली हुई 1 किलोग्राम को प्याज के रस में भिगोकर बर्तन को धूप में रख दें । जब रस सूख जाये तो फिर प्याज का 1 कि.ग्रा. रस डाल दें । इस प्रकार दाल में प्याज का 40 कि.ग्रा. रस शोषित करा दें । अब इसमें से 20 ग्राम दाल लेकर आधा कि. ग्रा. गाय के दूध में पकायें तथा 10 ग्राम की मात्रा में गाय का घी भी डाल दें । फिर इस में स्वेच्छानुसार शक्कर डालकर पियें । इसके सेवन से बल तथा मुख की कान्ति बढ़ेगी, समस्त शरीर को बल प्राप्त होगा । वीर्य सम्बन्धी समस्त विकार नष्ट हो जायेंगे ।

● प्याज का रस 3 से 10 ग्राम तक मधु में मिलाकर सुबह शाम सेवन करने से प्रमेह और वीर्य सम्बन्धी समस्त विकार दूर हो जाते हैं ।

● प्याज और गुड़ मिलाकर खाने से अत्यन्त बाजीकरण योग बन जाता है। इससे वीर्य वृद्धि होती है तथा कामशक्ति बढ़ती है ।

● प्रात:काल लहसुन की 4 कलियाँ छीलकर उन्हें दाँतों से देर तक चबाकर ऊपर से दूध या घी पी जायें । इससे बल और काम-शक्ति में अपार वृद्धि होगी। नामर्दी तक नष्ट हो जायेगी तथा स्त्रियों का बांझपन भी दूर हो जाता है । नियम से उसका प्रयोग सारे शीतकाल में करें । नागा बिल्कुल न करें ।

● चाय के साथ लहसुन के रस की 10 बूँदें दिन में 2-3 बार लेते रहने से शुक्राशय सबल होता है और उत्तेजना भी बढ़ती है । यदि फिर भी अशक्ति महसूस करें तो सुबह शाम लहसुन की बर्फी (एक पोतिया लहसुन साफ कर 1 कि. की मात्रा में धो पीसकर 5 कि. गाय के गुनगुने दूध में मिलाकर हल्की आग पर पकायें और उसका मावा (खोबा) बना लें । फिर इस मावा को देशी घी में भूनकर (हल्की आग में) खूब बादामी रंग का कर लें । फिर चाशनी के साथ बर्फी बना लें ।) 25-30 ग्राम की मात्रा में खाकर ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पी लें । इसके सेवन से सभी प्रकार के वीर्य दोष, मूत्र-विकार दूर होकर रतिक्रिया में अरुचि नष्ट हो जायेगी । यह बर्फी पुष्टिकर उल्लासप्रद, ज्ञान तन्तुओं को चैतन्यता प्रदान करने वाली, मधुर एवं स्वादिष्ट बाजीकरण उपयोगी औषधि है ।

● देशी घी में लहसुन की कुछ कलियां भूनकर नियमित रूप से खाने से स्तम्भन-शक्ति में अपार वृद्धि हो जाती है । यहाँ तक कि यदि नपुंसकता जन्मजात न हो तो वह भी आखिरी नमस्कार कर जाती है ।

● कबाबचीनी, इलायची, वंशलोचन, मिश्री—सभी सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर 10 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन करने से वीर्य सम्बन्धी समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● दालचीनी बारीक पीसकर रख लें । इसे 4-4 ग्राम की मात्रा में सुबह व रात को सोते समय गर्म दूध से लें । इससे वीर्य में वृद्धि होती है तथा दूध भी पच जाता है । बलप्रद योग है ।

● इमली के बीजों को रात्रि में पानी में भिगोकर सबेरे उन्हें छील पीसलें। फिर बराबर वजनका गुड़ मिलाकर 6-6 ग्राम की गोलियाँ बना लें । एक-एक गोली सुबह शाम सेवन करने से वीर्य की कमजोरी नष्ट होती है ।

● इमली के बीजों को भाड़ में भुनवाकर उसका छिलका उतार कर फेंक दें तथा गूदे को पीसकर चूर्ण बना लें । चूर्ण के बजन के बराबर खान्ड मिलाकर सुरक्षित रख लें । इसे नित्यप्रति प्रात:काल 6 ग्राम की मात्रा में गोदुग्ध से सेवन करने से धातु पुष्ट हो जाती है । स्त्रियों के प्रदर रोग में भी अत्यन्त उपयोगी है।

● शतावर 10 तोला खूब बारीक पीसकर सुरक्षित रख लें । इसे 6 माशा से 1 तोला तक की मात्रा में आधा सेर दूध में जोश देकर 5 तोला खान्ड मिलाकर गाढ़ा होने पर ठन्डा करके रात को सोते समय खायें । मूल्यवान बलवर्धक योग भी इसका मुकावला नहीं कर सकता है । जिगर, गुर्दे को शक्ति देने के साथ ही यह योग वीर्य को गाढ़ा करता है ।

● भूसी ईसब गोल 5 तोला तथा मूसली सफेद ढाई तोला लें । दोनों को कूट पीस छानकर मिला लें । 6 माशा की मात्रा में लेकर डेढ पाव दूध में पकायें। जब खीर सी बन जाये तब चीनी डालकर हल्का गुनगुना ही पी जायें । बल वीर्य बर्द्धक योग है ।

● असगन्ध नागौरी और विधारा दोनों को कूटपीसकर कपड़े से छानकर बराबर वजन में चीनी मिलाकर रख लें । इसे 3 से 6 ग्राम की मात्रा में ताजा दूध या पानी से दिन में 3 बार सेवन करें । देखने में यह योग अत्यन्त मामूली तथा अल्प मूल्य का है, किन्तु इसके सेवन करने से वीर्य का पतला होना, वीर्य में शुक्रकीट उत्पन्न न होना, स्वप्नदोष, वीर्य प्रमेह, अत्यन्त वीर्य नाश से उत्पन्न कमजोरी, वजन

गिर जाना, चेहरा पिचका हुआ, आँखें अन्दर धँसी हुई, शरीर मात्र हड्डी का पिन्जर हो जाना, स्त्री के नाम से ही भय खाने वाला रोगी तक जवान, और मोटा-ताजा हो जाता है। यही चूर्ण अश्वगन्धादि के नाम से जाना जाता है।

बाँझपन नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

हेमपुष्पा सीरप (राजवैद्य शीतल प्रसाद) साथ में प्राप्त **हेम टेब** नामक 1 टिकिया ताजे पानी से निगलकर 2 चम्मच दवा दो गुना जल मिलाकर दिन में 2 वार पिलायें। स्त्रियों के समस्त विकार नष्ट करके बाँझपन दूर कर देती है।

माइरोन टेवलेट (अलारसिन) आवश्यकतानुसार 1-2 टिकिया प्रयोग करायें। बाँझपन में अतिशय उपयोगी है।

कामिनी कम्पाउन्ड (प्रताप फार्मा) स्त्री के जननेन्द्रियों के विकारों को नष्ट करके गर्भाशय को गर्भधारण के योग्य बनाती है।

ल्यूकोल टेवलेट (हिमालय) बाँझपन में इसकी 1-2 गोली प्रयोग करें अथवा आवश्यकतानुसार सेवन करें।

अराटिनम टेवलेट (डिशेन) 1-2 टिकिया दिन में 3 बार भोजन से आधा घण्टा पूर्व दें।

कामिनी कार्डियल (मार्तन्ड फार्मेस्युटिकल्स) 1-2 चम्मच दिन में 2 बार अथवा आवश्यकतानुसार दें।

लिकोप्लेक्स टेवलेट (योगी) 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दें।

ल्यूको गायनोल पेय (ऐसेटिक) 2-2 चम्मच पानी के साथ दिन में 2 बार भोजन से पूर्व सेवन करें।

सेमोना कैपसूल—1-2 कैपसूल दिन में 2-3 बार सेवन करायें।

स्त्री सुधा (धन्वन्तरि) अलबारी या अशोकारिष्ट (डाबर) का प्रयोग करें।

नारी नपुंसकता (Inpotency of Females)

रोग परिचय—पुरुषों की भाँति नारियाँ भी नपुंसक होती हैं। इस रोग का बन्धत्व (बाँझपन) से कोई भी सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि नपुंसकता का अर्थ होता है—'सम्भोग क्षमता का अभाव' तथा इस रोग का सीधा अर्थ हुआ स्त्री में काम वासना का न होना। जब कि बाँझपन का अर्थ होता है, 'सन्तानोत्पादक क्षमता का अभाव' इस रोग से ग्रसित स्त्री को ठण्डी औरत भी कहा जाता है। क्योंकि

यह कामेच्छा का अनुभव ही नहीं करती है और नहीं उसे कामोत्तेजना आती है। आलिंगन, चुम्बन आदि कामुक प्रवृत्तियों तथा सम्भोग में उसे कोई आनन्द नहीं आता है। ऐसी स्त्री के अंग सूख जाते हैं तथा मस्ती एवं जोश उत्पन्न ही नहीं होता है।

इस रोग के कारण शारीरिक अथवा मानसिक दोनों ही हो सकते हैं। शारीरिक कारणों में नारी गुप्तांग की बनावट में विविध प्रकार की असंगतियाँ हो सकती हैं। उसके गुप्तांग के कपाटों के दोनों सिरे आपस में अड़े रहें तो योनिपथ के संकीर्ण व अवरुद्ध होने से शिश्न प्रवेश में बाधा होना, जरायु में अर्बुद होना तथा बस्ति की अस्थि विकृत रहने की अवस्था में भी नारियों की नपुंसकता उत्पन्न हो सकती है। शारीरिक विकृतियों के फलस्वरूप उत्पन्न नारी की नपुंसकता की चिकित्सा मात्र शल्य क्रिया द्वारा ही सम्भव होती है। मानसिक कारणों में सैक्स सम्बन्धी कोई दुखद आघात व पचपन की कुछ कटु स्मृतियाँ जैसे बलात्कार अथवा सम्भोग-कष्ट का भय या गर्भ स्थिति का भय अथवा माता पिता द्वारा सैक्स सम्बन्धी घटना से दन्डित होना अथवा अति धार्मिक शिक्षा के कारण पापकर्म का मन में स्थाई भाव उत्पन्न हो जाना, या जन्म से ही रक्ताल्पता एवं दुर्बलता के कारण वयस्क होने पर भी निर्बल होने से कामवासना का नहीं जागना, चिन्ता भय, घृणा इत्यादि से सैक्स की स्वाभाविक भावना से भी ग्रसित स्त्री को काम वासना की किंचित् मात्र भी उत्तेजना नहीं आती है।

उपचार

- ऐसी रोगिणी का चतुर पति ही 'मनोवैज्ञानिक ढंग से' संभोग के प्रति रुचि उत्पन्न कर उसके ठन्डेपन को दूर करने की चिकित्सा किन्ही घरेलू योगों अथवा यौन विशेषज्ञ चिकित्सकों की अपेक्षा खुद कर सकता है। बशर्ते कि वह सही कारणों की जानकारी प्राप्त कर पूर्णतः सहानुभूति पूर्वक स्त्री को अनुकूल बनाले। रोगिणी को सुन्दर-सुन्दर स्त्री एवं पुरुषों के नग्न चित्र रात्रि में एकान्त में दिखलाये।

पति को चाहिए कि एकान्त शान्त एवं निः शब्द वातावरण में प्रकाशयुक्त बन्द कमरे में पत्नी से मीठी-मीठी सुहावनी बातें करते हुए उसके गुप्तांग के भगांकुर या क्रामकेन्द्र का स्पर्श करें। यह स्त्री की कामवासना प्रधान अंग होता है। मामूली रगड़ या जोश से यह तनकर फूल जाता है और स्त्री में कामवासना जागृत हो उठती है। उसमें पुरुष के लिंग की भाँति मूत्र का छेद नहीं होता है तथा यह योनि

के बड़े ओष्ठों के संगम से लगभग 125 सेमी. नीचे और अन्दर होता है । मैथुन के समय स्त्री को इसी अंग के कारण आनन्द प्रतीत होता है ।

पत्नी के स्तनों को हल्के हाथों से सहलाये एवं समस्त शरीर का एक साथ आलिंगन करें । यदि उसके मन में किसी प्रकार का भय, चिन्ता या घृणा का भाव हो तो उसे आश्वासन, सान्तवना एवं जोशीले विचारों द्वारा पूर्णतय: सहानुभूतिपूर्वक समझा बुझाकर दूर कर दे । स्त्री पर जबरन प्रयास कदापि न करें, क्योंकि इससे वह रूठ जायेगी । यथा सम्भव प्रेमपूर्वक मुस्कुराते हुए प्रफुल्लित मन में उपरोक्त कार्य सम्पन्न करें । अवश्य सफलता मिलेगी और शनै:-शनै: रोग दूर हो जायेगा। साथ ही चिकित्सा भी करें ।

● ताल मखाना, लता, कस्तूरी बीज, असगन्ध नागौरी, शतावरी ताजा, मखाना, काकहिया के पत्ते, सफेद मूसली, काली मूसली, अशोक की छाल, आम के फूल, सौंठ, खशखश, अनार के फूल, भांग के पत्ते—प्रत्येक 5 तोला । कस्तूरी, केसर, भीमसैनी काफूर, मोचरस, छोटी इलायची के बीज 1-1 मांशा लेकर इनमें से सर्वप्रथम सख्त औषधियों को कूट पीसकर कपड़े से छानकर सूक्ष्म चूर्ण बनायें। फिर कस्तूरी आदि औषधियों को खरल करके मिलालें । भलीभाँति मिल जाने पर 1-1 माशा की मात्रा में सुबह शाम 10 ग्राम मलाई के साथ रोगिणी को खिलाकर ऊपर से 1 पाव गरम दूध पिलायें । इस योग के सेवन से स्त्री में अपूर्व बल कामोत्तेजना एवं जोश उत्पन्न हो जाता है ।

● दशमूलारिष्ट, बलारिष्ट तथा अश्वगन्धारिष्ट प्रत्येक 1 तोला एक साथ मिलाकर समान मात्रा में जल मिलाकर सेवन कराने से भी अपूर्व बल, जोश तथा उत्तेजना आती है । रोगिणी को पौष्टिक भोजन, मक्खन मलाई, सूखे फल, ताजा शतावर, अन्जीर, आम, सेव, अंकुरित चने, मूँग और अंकुरित गेहूँ, केला, खीर, बबूल के गोंद के लड्डू इत्यादि पर्याप्त मात्रा में खिलायें तथा उसके मन में चिन्ता शोक, शारीरिक परिश्रम से पैदा हुआ क्षोभ, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, तथा अन्य मानसिक विकार न आने दें । उसे हर समय खुश तथा मुस्कराता हुआ रखें । रोगिणी को गरम खट्टे भोजन, लालमिर्च, तेल, अचार, बाजारू चाट-पकौड़े इत्यादि से पूर्णत: परहेज रखवायें तथा दही, घी, और मिश्री मिला हुआ गाय का दूध 1-1 पाव सुबह शाम पिलायें ।

स्त्री में कामवासना की अधिकता

रोग परिचय—इस रोग से ग्रसित स्त्रियों को संभोग (प्रसंग) करने की इच्छा

बहुत अधिक हुआ करती है । यदि वे बार बार सम्भोग सम्पन्न नहीं कर पाती हैं तो इतनी अधिक कामातुर हो जाती हैं कि सामाजिक मान मर्यादा का विचार त्याग करके अपने समीप के पुरुषों को ही यहाँ तक कि किसी सगे सम्बन्धियों को सम्भोग करने हेतु उकसाती रहती है । ऐसी कामातुर स्त्री पागलों की तरह गप्पें मारती हैं। अपने यौवन को एवं शरीर को विचित्र तरीकों से प्रदर्शित करती हुई ऐंठन और अँगड़ाई के साथ अकड़ती हुई मुद्राऐं करती रहती हैं ।

वह हर किसी के सामने अपना प्रयण-निवेदन प्रस्तुत कर देती है । उसे बार-बार सम्भोग करने के बाद भी कभी सन्तुष्टि नही होती है । इस रोग का प्रधान कारण बचपन की कुसंगतियां, वासनामयी गन्दी-गन्दी बातें सुनना, यौवन के प्रारम्भ में ही हस्तमैथुन, पशुमैथुन इत्यादि लतों का शिकार हो जाना, गन्दे उपन्यास, नंगे अथवा अश्लील चित्र देखना इत्यादि होते हैं ।

ऐसी रोगिणी जब किसी से सम्भोग हेतु प्रयणं निवेदन करती है और उसकी पुरुष द्वारा स्वीकृति नहीं मिलती है तब वह झुंझला कर, बेचैन होकर ठन्डी आहें भरती हुई चीख उठती है । उसके माथे पर शिकन तथा मुख मण्डल पर सूखापन व उदासी छायी रहती है । यद्यपि वह पुरुषों (दूसरों) को रिझाने हेतु क्रीम पाउडर, काजल आदि से खूब शृंगार आदि करके हर समय टिप-टाप बनी रहती है ।

उपचार—रोगिणी को नाश्ता व खाना हल्का दें । चर्बी और मांस बढ़ाने वाले भोजन एवं पेय पदार्थ—घी-तेल, दूध मक्खन, मलाई, सूखे फल, दाल, चने के बने पदार्थ, मेवा, मिष्ठान, गेहूँ की रोटी आदि बिल्कुल न दें । उसे केवल पुराने चावल का भात, मूँग की दाल, महुआ की रोटी, परवल, पपीते की सब्जी आदि ही खाने को दें तथा शारीरिक मेहनत खूब करवायें और भजन कीर्तन एवं सत्संग के द्वारा उसके मन को सात्विक बनायें ।

● सर्वप्रथम रोगिणी को रिफाइन्ड कैस्टर आयल यथोचित मात्रा में पिलाकर दस्त करवाकर उदर शुद्धि करवायें । फिर यथाशक्ति उपवास करवायें ' प्रात:काल 4-5 बजे 1 कागजी नीबू को 200 मि.ली. जल में निचोड़कर पाखाना जाने के पहले प्रतिदिन पिलायें । नीबू के अभाव में अंग्रेजी दवा विटामिन सी (सेलिन) ग्लैक्सो कम्पनी द्वारा निर्मित) 500 मि.ग्रा. की 1 टिकिया दें ।

● धतूरे के फूल की जीरा (पुंकेश्वर) 6 रत्ती से 1 माशा तक सुबह शाम ताजा जल से पिलाने से भी स्त्री की भयंकर कामवासना शान्त हो जाती है ।

● बढ़िया ढेला कपूर आधे से एक माशा अथवा आवश्यकतानुसार खिलाने से भी स्त्री एवं पुरुषों की कामवासना शान्त हो जाती है ।

नोट:—यही औषधि सूक्ष्म मात्रा में कामवासना को जागृत भी करती है । अत: आवश्यकतानुसार अधिक मात्रा में प्रयोग कर सकते हैं। किन्तु यह भी ध्यान रहे कि कपूर भी विष है । अत: अधिक मात्रा सेवन न करें । कामवासनाधिक्य में स्त्रियों की योनि में कन्डू (खुजली) या उत्तेजित चिन्तनों के परिणाम स्वरूप जब कामवासना बढ़ जाती है, तब रोगिणी को कपूर 250 मि. ग्रा. की दिन में 2-3 मात्रायें कदली स्वरस 15 ग्राम के अनुपान से देने से प्रबल से प्रबल कामवासना शमन करने में सहायता मिलती है ।

● धनिया के 1 तोला बीज को पानी के साथ रगड़ कर सेवन करने से भी कामवासना की अधिकता शान्त हो जाती है । इसे इस रोग से ग्रसित पुरुष भी प्रयोग कर सकते हैं । धनिया की तासीर ठण्डी (शीतल) होती है ।

● शुद्ध अफीम, अमृतसार लौह, विड लवण तथा मोंथा सभी सम मात्रा में लेकर चित्रक-मूल के काढ़ों में भली प्रकार खरल करके 1-1 माशा की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें । यह 1-1 गोली सुबह शाम जल से खिलायें । कामवासना की तीव्र लालसा भी शान्त हो जायेगी ।

अपूर्ण कामेच्छा (हाईपरएसथेजिया)

रोग परिचय—पुरुष के लिंग के चर्म में संज्ञावाही नाड़ियों (सेन्सरी नर्वज) और स्नायु तन्तुओं में एक असाधारण संज्ञा पैदा हो जाती है । जिसके फलस्वरूप लिंग में बहुत अधिक मात्रा में रक्तसंचार होने लग जाता है । इसी का परिणाम यह होता है कि शिश्न में बार-बार उत्तेजना और हर्षण (एरेक्शन) होने लगता है । फलस्वरूप मैथुन इच्छा बढ़ जाती है । कभी-कभी किसी-किसी रोगी के लिंग में इतनी संज्ञा बढ़ जाती है कि कपड़े की मामूली रगड़ अथवा हाथ से छुअन होने पर भी उत्तेजना पैदा हो जाती है और रोगी मैथुन का आनन्द प्राप्त करने लग जाता है । इस रोग से ग्रसित रोगी अपनी नासमझी के कारण इस रोग को अपनी काम शक्ति (Sex Power) और मर्दाना ताकत समझकर खुश होता रहता है और उसे होश तब आता है, जब चिड़िया पूरा खेत ही चुग जाती हैं।

इस रोग का प्रधान कारण हर समय कामवासना सम्बन्धी विचारों में खोये रहना, सुन्दर स्त्रियों को निहारना, उनके नग्न चित्र अथवा ब्लू फिल्म देखना, अश्लील कहानियां, शेरो शायरी, उपन्यास आदि पढ़ना, कुसंगित, हस्तमैथुन की लत, गुदा सम्भोग में लिप्त रहना, वेश्याओं अथवा इन्हीं प्रवृत्ति की औरतों के साथ अधिक रहना तथा अत्यधिक मैथुन करना इत्यादि है ।

इस रोग के रोगी को उत्तेजना बार-बार आने लगती है । उत्तेजना के साथ

लिंग से वीर्य तथा दूसरे प्रकार के तरल निकल जाते हैं । कई बार तो वीर्यपात भी काफी मात्रा में हो जाता है । वीर्य पानी की भाँति पतला और कमजोर हो जाता है । स्त्री के पास जाते ही वीर्य शीघ्र ही मैथुन से पूर्व ही निकल जाता है । स्वप्न दोष, वीर्य प्रमेह, इत्यादि रोग हो जाते हैं । मूत्र प्रणाली में प्राय: जलन होती रहती है । समस्त शरीर कमजोर दुबला-पतला, चेहरा पीला तथा पिचका हुआ हो जाता है । सिर दर्द, सिर चकराना, दिल दिमाग कमजोर हो जाना, आलसी और उत्साहहीन जीवन हो जाता है, इच्छा शक्ति भी कमजोर हो जाती है, रोगी बहमी हो जाता है, जठराग्नि भी कमजोर हो जाती है । हाथ की हथेलियों तथा पाँवों के तलवों में जलन होती है, पीठ पर चीटियाँ सी रेंगती प्रतीत होती हैं ।

उपचार

● निद्राकारक योगों का सेवन करें ।

● छोटी इलायची के बीज, बड़ी इलायची के बीज, असली वंशलोचन, अजवायन, अनार के फूल, संभालु के बीज, काहू के बीज, तज-कलमी, बिना छेद के माजू, बड़ी माई, बबूल की गोंद, भुनी हुई कतीरा, सफेद खशखश के बीज, गुलाब के फूल, ईसबगोल का छिलका—सभी सममात्रा में लेकर चूर्ण तैयार करें । सबसे अन्त में ईसबगोल का छिलका मिला लें । इस चूर्ण को 3 ग्राम मात्रा में सुबह शाम बकरी या गाय के दूध के साथ सेवन करायें । 2-3 सप्ताह में ही पूर्ण लाभ होगा ।

● काहू के बीज, निर्गुन्डी के बीज, खुरफा के बीज, भांग के बीज, अनार के फूल, नीलोफर के फूल, प्रत्येक 1 तोला (12 ग्राम) लेकर कूट पीसकर चूर्ण बनालें और समभाग खाँड मिलाकर सुरक्षित रख लें । इसे 6 से 12 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम पानी से खायें । मैथुन इच्छा कम हो जाती है ।

● अफीम 3 माशा, कपूर 6 माशा, खुरासानी अजवायन 3 माशा, खसखस का तेल 5 तोला लें । पहले खुरासानी अजवायन को तेल में पकायें, तत्पश्चात् तेल को छान लें । फिर उसमें अफीम और कपूर मिलाकर धीमी आग पर पकाकर घोटकर सुरक्षित रख लें । इसे शिश्न, अन्डकोषों की सीवन और जाँघ के सिरों पर तेल मालिश करने हेतु निर्दिशित करें । बढ़ी हुई काम इच्छा दूर हो जायेगी।

रोगी को सादा और शीघ्रपाची भोजन खिलायें । ठण्डी सब्जियां और फल खिलायें । माँस, मछली, अण्डा, गरम मसाले तथा समस्त शक्तिप्रद और उत्तेजक

वस्तुओं से परहेज करायें। एकान्त में रोगी को न बैठने दें। अश्लील पठन-पाठन व चित्र अथवा चलचित्रों से बचायें। रात्रि भोजन सूर्यास्त से पूर्व करायें। रात्रि में सोने से पूर्व (लगभग 3 घन्टा पूर्व) मल-मूत्र आदि की शंका का निस्तारण करके ही सुलावें, तथा प्रतिदिन नाड़ी के निचले भाग (पेडू अण्डकोषों, जाँघ के किनारों, सींवन, और इन्द्री को) प्रातः और रात्रि को सोते समय ठण्डे जल से भली प्रकार धुलवायें और ठण्डे जल से स्नान करायें।

रोगी की रीढ़ की हड्डी पर रबड़ की थैली में बर्फ भरकर कुछ देर तक रखवायें। प्रातः सूर्योदय से पूर्व तथा सायंकाल भोजनोपरान्त भ्रमण करने हेतु निर्देशित करें। रोगी अपने विचारों को शुद्ध और पवित्र रखें। किसी स्त्री (यहाँ तक कि अपनी पत्नी) की ओर ध्यान न जाने दें। स्वयं को किसी व्यवसायिक अथवा साहित्यिक या धार्मिक कार्यों के व्यस्त रखें, ताकि कामवासना के विचार ही न आयें। जब तक बढ़ी हुई कामेच्छा पूर्णरूपेण दूर न हो जाये, तब तक वीर्य गाढ़ा करने वाली, वीर्य उत्पादक, शक्तिप्रद और उत्तेजक औषधियों का भूलकर भी सेवन न करें। उचित परहेज तथा नियम संयम दृढतापूर्वक पालन कर पक्के विश्वासानुसार उपर्युक्त किसी भी प्रयोग का सेवन करने से रोगी अवश्य ठीक हो जायेगा।

पार्श्वशूल कमर दर्द (Lumbago)

रोग परिचय—प्रायः स्त्री और पुरुष दोनों को यह दर्द होता है। वैसे अधिकांशतः यह वेदना स्त्रियों को ही होती है। कमर में एकाएक सख्त दर्द होने लग जाता है, जिसके कारण रोगी कमर को मोड़ने झुकाने या उठने-बैठने के अयोग्य हो जाता है। छींकने या थोड़ा सा हिलने पर ही रोगी को तड़पा देने वाला दर्द होने लगता है। अत्यधिक परिश्रम करने, झुककर भारी बोझ उठाने सर्दी लग जाने, सम्भोग की अधिकता एवं प्रदर विकार के कारण यह रोग हो जाता है।

उपचार

● शास्त्रीय औषधि योगराज गुग्गुल 2-2 गोलियाँ सुबह शाम महारास्नादि क्वाथ 15 से 30 मि.ली. समभाग जल में मिलाकर पिलायें तथा भोजन के साथ दिन व रात में 1 से 2 ग्राम की मात्रा में हिंग्वाष्टक चूर्ण गाय या भैंस के घी के साथ मिलाकर खिलायें।

● सौंठ का चूर्ण 1 ग्राम, त्रिफला चूर्ण 2 ग्राम, छिला हुआ लहसुन 500

मि. ग्राम, मीठा सोड़ा 250 मि. ग्रा. असगन्ध चूर्ण 2 ग्राम, इन्हें मिलाकर 2 मात्रा बनाकर हल्के नाश्ते के उपरान्त सुबह शाम खिलायें।

● असगन्ध चूर्ण 3 ग्राम, गर्म पानी या गर्म अर्क सौंफ से दिन में 2-3 बार दें। वात, कफ और सम्भोग की अधिकता के कारण होने वाले कमर-दर्द में अत्यन्त लाभकारी योग है।

● लौह भस्म 60 मि.ग्रा. को यूनानी औषधि फिलसफा 6 ग्राम में मिलाकर 3 दिन में 2 बार खिलाना भी लाभप्रद है।

● पिसी हुई अलसी और राई को गरम पुल्टिस को कमर दर्द वाले स्थान पर बाँधना भी परम लाभप्रद है।

● खसखस और मिश्री दोनों को समभाग लेकर कूटपीसकर रख लें। यह 10 ग्राम की मात्रा में खाकर ऊपर से गरम दूध पीने से कमर-दर्द मिटता है।

● छुहारे की गुठली निकालकर उसमें शुद्ध गूगल भर लें। फिर उस छुहारे पर आटे का मोटा लेप करके उसे आग में लाल होने तक खूब सेकें। तदुपरान्त आटे को उतार कर छुहारा और गूगल दोनों को कूटकर 8-8 ग्रेन की गोलियाँ बना लें। सुबह शाम 1-1 गोली का दूध से सेवन करें। सभी दर्दों में उपयोगी है।

● सरसों का तेल 120 ग्राम, देशी कपूर 30 ग्राम लें। दोनों को मिलाकर शीशी को धूप में रखें। जब कपूर पिघल जाये, तब इसे दर्द के स्थान पर लगाकर मालिश करें। कमर दर्द में अत्यधिक लाभप्रद है।

● सौंठ और गोखरू 6-6 ग्राम का काढ़ा बनाकर पीने से कमर दर्द शान्त हो जाता है।

● काली मिर्च 10 ग्राम, देशी मोम 40 ग्राम, हल्दी व गुड़ 40-40 ग्राम लें। काली मिर्च एवं हल्दी का सूक्ष्म चूर्ण करें। गुड़ तथा मोम को गरम कर इसमें उक्त चूर्ण डालकर मर्दन करें। एक रस हो जाने पर जंगली बेर के समान गोलियां बनाकर रख लें। निर्धूम (धुँआ रहित) अंगारों पर रखकर आक्रान्त स्थान पर धूनी दें। यह उदरशूल एवं वृक्कशूल की अव्यर्थ औषधि है। श्वांस रोग में धूम्रपान कराने से तत्काल ही दौरा का शमन हो जाता है और दन्त शूल, नेत्रशूल, तथा शोथ एवं पार्श्वशूल (कमर दर्द) में आश्चर्यजनक लाभकारी है।

कटिशूल नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

विष तिन्दुक वटी (झन्डू) 1 से 4 पिल्स दिन में 2 बार दूध के साथ प्रयोग करें।

शूल केसरी कैपसूल (मिश्रा) 1-2 कैपसूल आंवश्यकतानुसार लें ।

पिप्पली चूर्ण (झन्डू) आधा से 2 ग्राम तक दिन मै 3 बार लें ।

करामाती टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 1-2 गोली लें ।

डाबर, वैद्यनाथ, झण्डू, राजवैद्य शीतल प्रसाद आदि अनेक निर्माताओं द्वारा निर्मित ''बाम'' का पीड़ित स्थान पर मालिश करें ।

दमा, श्वांसरोग (ASTHAMA)

रोग परिचय—फेंफड़ों में वायु का संचार करने वाली अनेक नलिकाओं का जाल सा बिछा है, जो छोटी-छोटी माँसपेशियों से ढँकी रहती है । इन्हीं मांसपेशियों में जब आक्षेप, अकड़न, तनाव, सिकुड़ाव उत्पन्न होता है, तब रोगी को सांस लेने में कठिनाई होने लगती है । बस, यही श्वांस रोग है—जो दमा, श्वांस की बीमारी, आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है। अपने देश में ग्रामीणांचलों में यह रोग बहुतायत में पाया जाता है ।

उपचार

● धतूरे का 1 बीज 8 दिनों तक प्रातःकाल पानी से निगल लें । दूसरे सप्ताह 2-2 बीज निगलें । इसी प्रकार प्रत्येक सप्ताह 1-1 बीज बढ़ाते हुए पाँचवे सप्ताह में 5-5 बीज प्रतिदिन निगलें । पुराने से पुराना दमा इस प्रयोग से नष्ट हो जायेगा।

● करील की लकड़ी की भस्म 1 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन पान के साथ खाने से 15-20 दिन के प्रयोग से ही दमा रोग दूर हो जाता है ।

● सिन्धी भाषानुसार पटपेरू या काला नमक घास का शाक मात्र 3 दिन खाने से ही श्वास-कष्ट दूर हो जाता है ।

● आक के 250 ग्राम बन्द फूल लेकर आधा किलो गौदुग्ध में उबालें और छाया में सुखा लें । इसमें 25 ग्राम खुरासानी अजवायन मिलाकर कूट पीस लें। दूध को फेंक दें । पिसा हुआ चूर्ण आधा ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन प्रातःकाल शहद में मिलाकर चाटें ।

● थोड़े से गुड़ में आक (अर्क) के दूध की 2 बूँदें मिलाकर देने से दमा 5-6 दिन में ही गायब हो जाता है ।

नोटः— इस के प्रयोग से वमन भी हो सकता है और जी घबराता है । इसे धैर्यपूर्वक सहन करें । घी दूध, मक्खन मलाई, इत्यादि पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें । गुड़, तेल, खटाई, लाल मिर्च, इत्यादि हानिकारक वस्तुओं का सख्ती से परहेज रखें ।

● सौंठ और हरड़ का चूर्ण सेवन करने से दमा में लाभ हो जाता है ।

● गाय का गुनगुना घी नाक में सुड़कने से नासा-शोष मिट जाता है । नाक की दाह, श्वास-प्रश्वास का कष्ट दूर हो जाता है । बार-बार छींकें नहीं आती हैं।

● नौसादर 4 रत्ती, शुद्ध टंकण 4 रत्ती, सितोपलादि चूर्ण 2 माशा, तुलसीपत्र स्वरस या अदरक के रस को सुखोष्णकर 1 तोला में मधु मिलाकर चटाने से सूखी खाँसी, श्वांस का दौरा, को आराम आ जाता है । जकड़े हुए कफ को शीघ्र निकालता है । जिससे रोगी को राहत मिलती है । नींद शीघ्र आ जाती है । 6-6 घन्टे के अन्तराल से सेवन करें ।

● श्वास का प्रमुख लक्षण जुकाम है । पुराने जुकाम का प्रभाव नाक, गला, फेफड़ा और आमाशय व आँतों की श्लैष्मिक झिल्लियों पर पड़ता है । फिर अंगों के नामों के अनुसार रोगों का नामांकन होता है । यह सभी रोग दुग्धोपचार से ठीक हो जाते है । इसमें मात्र दुग्धपान ही करना होता है । दूध के प्रयोग करने से जब शरीर में नया खून बनता है, तब शरीर की इन्द्रियाँ शसक्त होने लगती हैं और स्वयं ही रोग कम होने लगता है । इस प्रकार तमक श्वांस, जठर श्वांस, क्षीण श्वांस, इत्यादि रोग लगभग 1 माह के दुग्धोपचार से ठीक हो जाते हैं । दूध उपयोग पहले रोग के लक्षणों को बढ़ाता जरूर है, किन्तु उससे कदापि न घबरायें । प्रतिदिन 4-5 लीटर दूध पीने पर सभी रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● कुछ दिनों तक लालटेन या लैम्प में जलने के पश्चात् बचा हुआ तेल 1-1 चाय की चम्मच भर सुबह शाम पीने से श्वांस रोग (दमा) में आराम आ जाता है । तेल पीने के उपरान्त अडूसे के पत्तों का रस 2 चम्मच अवश्य सेवन करें ।

● हल्दी को सैन्धव लवण के घोल में 1 सप्ताह तक भावना देकर फिर अर्क दूब में 1 भावना देकर सुखाकर बालू में भून लें । उसका टुकड़ा मुख में रखकर चूसने से श्वांस वेग सद्यः शान्त हो जाता है ।

● राई आधा-आधा माशा को घृत व शहद (असमान मात्रा में) में मिलाकर प्रातः सांय देते रहने से कफ प्रकोप श्वास रोग का शमन हो जाता है ।

● 20 ग्राम घृत में लहसुन की कली 5 ग्राम पीसकर भून लें । इसमें 10 ग्राम शहद मिलाकर रोगी को चटायें तो कफजनित श्वास रोग (दमा) अच्छा हो जाता है ।

● लहसुन का रस 20 से 30 बूंद तक शहद के साथ दिन में 3-4 बार

तक देने से फुफ्फुस के विभिन्न रोग जैसे श्वांस, खाँसी (Cough), श्वसनिकां विस्तीर्णता (ब्रोंकाइन्टिस), श्वसनिका प्रदाह, श्वांसकृच्छता (Dyspnoea) फुफ्फुस शोथ (gangrene of Lungs) वात श्लैष्मिक ज्वर (फ्लू Flue) फुफ्फुसपाक (न्यूमोनियाँ Preumonia) इत्यादि कष्ट नष्ट हो जाते हैं ।

● सौंफ 5 तोला को मिट्टी के वर्तन में रखकर उसमें आक का दूध इतना डालें कि वह तर हो जाये, फिर छाया में सुखालें । इस प्रकार यह क्रिया 3 बार करें । फिर सम्पुट कर 12 सेर उपलों में आग देकर भस्म तैयार कर लें । यदि भस्म तैयार हो जाये तो ठीक, वरना पुनः इसी प्रकार आँच दें और भस्म तैयार कर शीशी में सुरक्षित रख लें । कफ आता हो तो खान्ड में अन्यथा मलाई के साथ आधी से 1 रत्ती तक की मात्रा में लें ।

● कपूर तथा शुद्ध हींग दोनों को समान मात्रा में लेकर मधु के साथ खरल करके 250 मि. ग्रा. वजन की गोलियाँ बनाकर अदरक स्वरस के साथ 4-4 घन्टे के अन्तर से सेवन करने से तमक श्वांस के दौरों में शीघ्र लाभ होता है ।

● हल्दी 5 ग्राम की फंकी लेकर गुनगुने पानी के 5 घूँट भर लेने से ही दमा भाग खड़ा होता है ।

● 2 गाँठें हल्दी की लेकर गर्म राख में भून लें । बांस के किलो भर सूखे पत्तों के साथ 10 ग्राम काली मिर्च डालकर पीस लें । इसमें 50 ग्राम सेंन्धा नमक और थोड़ी-सी बबूल की गोंद मिलाकर मटर बराबर गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को दिन भर में 1-1 करके 4-5 बार चूसें । साँस के सभी कष्ट इस योग के सेवन से नष्ट हो जाते हैं ।

● नीम के पत्ते, सांभर नमक, कच्चे चने, अड़ूसा और भाँग सभी 50-50 ग्राम लें और कूट पीसकर टिकिया बनालें । पिर किसी हंडिया में रखकर ढ्क्कन लगाकर ऊपर से कपड़ा बाँधकर गीली मिट्टी का लेप कर हंडिया को उपलों की आग में 2 घन्टे तक जलने दें । तदुपरान्त आग ठन्डी होने पर हन्डिया निकालकर उसमें जल चुकी टिकिया की राख किसी शीशी में सुरक्षित रख लें। इस भस्म को डेढ़ से 2 रत्ती की मात्रा में सुबह शाम शहद से कुछ दिनों तक चाटने से ही दमा नष्ट हो जाता है ।

● नीम के बीजों का शुद्ध तेल दमे को जड़ से उखाड़ देता है । दिन में 50-60 बूँद यदि शरीर में पहुँच जाये तो वर्षों पुराना दमा सप्ताहों में ही अड्डा छोड़ जाता है । पान में डालकर नीम का 10 बूँद शुद्ध तेल का सेवन करें । ऐसे

पान दिन भर में 5-6 चबाकर निगल जायें । मात्र 3 महीने बाद दमा के रोगी यह महसूस करेगें कि जीवन में उन्हें दमा हुआ ही नहीं था ।

श्वास दमा नाशक प्रमुख आयुर्वेदिक योग

सोमा (टेबलेट, कैपसूल, सूचीवेध एवं सीरप) (मार्तण्ड) 2-2 टिकिया प्रतिदिन सुबह शाम तथा रात को गर्म दूध या पानी के साथ प्रयोग करें ।

डिकोक्सिन टेबलेट (अलारसिन) 2-2 टिकिया दिन में 3 बार एक सप्ताह तक । तत्पश्चात् 1-1 टिकिया 2-3 सप्ताह तक लें ।

श्वासान्तक कैपसूल (गर्ग बनौषधि) साधारण अवस्था के रोग में 1-1 कैपसूल जल के साथ अथवा कनकासव के साथ तथा श्वांस के तीव्र वेग में 1-1 कैपसूल 3 से 6 घन्टे के अन्तराल से प्रयोग करें ।

स्पाज्मा लिक्विड (चरक) वयस्कों 3-3 चम्मच तथा बच्चों को उसकी आधी मात्रा समान मात्रा में जल मिलाकर दें । दमें के दौरे के लिए उपयोगी है ।

दब दमा (डाबर) लिक्विड़ (पेय) साधारण अवस्था के दमे के दौरे में 10 से 15 बूँद ठण्डे पानी के साथ दिन में 3 बार तथा सुबह के दौरे के बचाव के लिए 10-15 बूँद औषधि रात को सोते समय प्रयोग करें । तीव्रावस्था में 10 से 15 बूँद औषधि प्रत्येक 3-3 घण्टे के अन्तराल से प्रयोग करें ।

एज्मोडीन पेय (एलम्बिक) 1-2 चम्मच पानी के साथ दिन में 3-4 बार तथा बच्चों को आवश्यकतानुसार दें ।

मैक्सिप पेय (मैक्सो) वयस्को को 2-2 चम्मच, बच्चों को आधी मात्रा शिशुओं को आधा-आधा चम्मच दिन में 2-3 बार दें ।

अस्थमा सिगार (सिन्थोकेम) यह एक विशेष प्रकार का सिगार है जो मात्र दमा के रोगियों के लिए निर्मित किया गया है । जो लोग धूम्रपान की लत नहीं छोड़ सकते हैं और इसी कारण से उसका रोग बढ़ता चला जाता है । उनको बीड़ी सिगरेट के स्थान पर यह सिगार पिलाने से लाभ हो जाता है ।

श्वास फिट कैपसूल (अतुल फार्मेसी) साधारण अवस्था में प्रतिदिन 1-1 कैपसूल सुबह शाम तथा तीव्रावस्था में 1-2 कैपसूल निगलवायें । श्वांस यदि शुष्क हो तो इसे गुनगुने जल से निगलवाकर थोड़ी सी मलाई चटायें । बच्चों की काली खाँसी में भी आयु तथा रोग की अवस्थानुसार मात्रा बनाकर शहद के साथ सेवन कराना लाभप्रद है ।

श्वांसकेतु (धन्वन्तरि फार्मेसी) का सेवन श्वांस, खांसी शुष्क तथा तर सभी अवस्थाओं में अत्यन्त ही लाभकारी है ।

धनुर्वात, धनुष्टंकार (Tetanus)

रोग परिचय—इस रोग को धनुस्तम्भ, धनुर्वात, धनुष्टंकार, धनुपतानक, हनुस्तम्भ तथा आंग्ल भाषा में टेटैनस के नाम से भी जाना जाता है । इस रोग का प्रधान कारण शलाकार कीटाणु होते हैं । जिसे आंग्ल भाषा में 'वैसिलस टिटेनैस' कहते हैं । इन कीटाणुओं का निवास स्थान गौ, अश्व इत्यादि पशुओं की अन्तडियां हैं । ये कीटाणु पशुओं की अंतडियों में रहते हुए भी उन्हें कुछ हानि नहीं पहुँचाते उनके मल द्वारा बाहर निकलते हैं । इसलिए ये अश्व-शालाओं (जहाँ पर लीद पड़ी रहती है) में विशेष रूप से होते हैं । मार्ग या खेत इत्यादि में भी जहाँ लीद पड़ी हो, वहाँ पर किसी मनुष्य को चोट लग जावे और उसमें किसी प्रकार से लीद में संसर्ग हो जावे तो उस क्षत में कीटाणु प्रविष्ट होकर रोग उत्पन्न कर देते हैं। इन कीटाणुओं की वृद्धि होने में 1 से 20 दिन तक का समय लग जाता है । नवजात शिशु को जंग लगे शस्त्र से नाल को काटने से भी यह रोग हो जाता है । ग्रामीण अंचलों में इसे 'जमोगा' रोग के नाम से भी पुकारते हैं ।

यह एक संक्रामक रोग है । जो कीटाणुओं के प्रकोप से शरीर को धनुष की भाँति टेढ़ा कर देता है । इसीलिए इस रोग को इससे मिलते जुलते नामों से जाना जाता है । सर्वप्रथम कड़ापन और हनुस्तम्भ के समान लक्षण ज्ञात होते हैं, फिर धीरे-धीरे माँस पेशियों में कड़ापन आ जाता है । जिसके कारण रोगी दुग्धपान अथवा भोजन आदि करने में असमर्थ हो जाता है । हनु में अत्यधिक कड़ापन होने से रोगी के जबड़ों का खुलना असम्भव हो जाता है । यह संकोच हनु (ठोड़ी) की मांसपेशियों में प्रारम्भ होकर मुख मण्डल की समस्त पेशियों में व्याप्त हो जाता है । जिससे भौंहें ऊपर को तन जाती हैं और मुख बाहर की ओर खिचा हुआ प्रतीत होता है । पीठ कमान की भाँति हो जाती है । सारा शरीर वक्र हो जाता है । यदि पेट की माँस पेशियों पर इसका प्रभाव होता है तो शरीर आगे की ओर झुक जाता है । ज्वर बहुत कम होता है । इस रोग में ज्वर का विशेष होना मृत्यु का परिचायक माना जाता है ।

यदि लक्षण हल्का है और चिकित्सा उसी समय आरम्भ कर दी जाये तो रोग साध्य होता है । क्षत के बाद शरीर में स्तम्भ होने पर असाध्य समझना

चाहिए । यदि रोगी 4 दिनों तक जीवित रह जाये तो कभी-कभी स्वस्थ भी हो जाता है ।

उपचार

● वृहदवात चिन्तामणिरस 2 रत्ती की गोलियों को द्राक्षासव 1 तोला अदरख के रस के साथ 3-3 घन्टे पर देना सर्वोत्तम औषधि है ।

● कस्तूरी, केसर, अहिफेन, (अफीम) जायफल समभाग लेकर 2-2 रत्ती की मात्रा में अदरक के स्वरस के साथ देने से लाभ होता है ।

● दशमूल क्वाथ पिलाने और सरसों का तेल मलने से धनु-स्तम्भ में लाभ होता है ।

● प्रसारिणी तेल (डाबर, वैद्यनाथ, धन्वन्तरि, गुरुकुल कांगड़ी, आदि अनेक निर्माता) का व्यवहार धनुर्वात में अत्यन्त उपकारी है । इसको मालिश के अतिरिक्त दूध के साथ सेवन भी करना चाहिए ।

● सज्जी का तेल मलने और दसमूल का क्वाथ पिलाने से तथा उसी काढ़े की नस्य देने से धनुस्तम्भ में अवश्य आराम हो जाता है ।

● पान के भीतर 2 रत्ती अफीम रखकर खाने से इस रोग में अवश्य आराम हो जाता है ।

● इस रोग के आपेक्षों में महाबला तेल का व्यवहार अत्यन्त लाभकारी है। इसे अनेक आयुर्वेदिक निर्माता तैयार करते हैं ।

● महामास तेल (निरामिष) डाबर, वैद्यनाथ, गुरुकुल कांगड़ी, धन्वन्तरि आदि अनेक निर्माता) की मालिश से भी पक्षाघात, हनुस्तम्भ इत्यादि कठिन रोगों में लाभ हुआ करता है ।

प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योगों में इस रोगापचार हेतु अनेक निर्माताओं ने सूचीवेध तैयार किये हैं । जिनका इस ग्रन्थ में घरेलू उपचार लेख न होने के कारण विस्तृत विवेचन न कर मात्र संकेत दिया जा रहा है ।

कुकुर भाँगरा सूचीवेध (बुन्देल खण्ड) **कल्पसोमा** (प्रताप) **दूर्वाश्वेत** (बुन्देल खण्ड) **चन्द्रोदय** (मिश्रा बुन्देलखण्ड) **बातौन** (सिद्धि फार्मेसी) **ललितपुर** (उन्नाव) उ.प्र.) **शूलान्तक** (मिश्रा) **लहसुन सूचीवेध** मिश्रा व बुन्देलखण्ड (रसोन (प्रताप फार्मेसी, लक्ष्मी आ० अ० भवन) **वातविदार** (जी.ए. मिश्रा झांसी उ. प्र.) **कुचला** (आदर्श व बुन्देलखण्ड व सिद्धि) इत्यादि सूचीवेधों में से किसी एक सूची

वेध का 1-2 सी.सी. (मिलीमीटर) की मात्रा में मांसान्तर्गत अथवा रोग व आयु की अवस्थानुसार व आवश्यकतानुसार प्रयोग करने से अवश्य लाभ प्राप्त होता है। किन्तु यह कार्य रजिस्टर्ड चिकित्सकों का ही है। घरेलू उपचार के अन्तर्गत यह उपचार दण्डनीय है।

नासूर, फोड़े, फुन्सी, घाव

रोग परिचय—नासूर को नालव्रण, विवर तथा अंग्रेजी में फिस्यूला (Fistula) और साइनस (Sinus) के नामों से भी जाना जाता है। पुराना और गहरा घाव जिसके फटने के बाद कम से कम 40 दिन बीत चुके हों, नासूर कहलाता है। यह अंदर से गहरा ट्यूब की भांति तंग टेढ़ा और लम्बा होता है। किन्तु इसका मुँह छोटा होता है और उसके अन्दर चारों ओर कठोर और सफेद मांस बढ़ जाता है। इस सफेद मांस को दूषित मांस भी कहा जाता है। नासूर से सदा पीली गाढ़ी या पतली पीव बहती रहती है। कभी पीव बहनी बन्द हो जाती है और घाव का स्थान शोथयुक्त हो जाता है। किन्तु दोबारा बहने पर शोथ दूर हो जाता है। नासूर का गड्ढा (नलिका) कभी सीधा कभी टेढ़ा-मेढ़ा होता है। तथा यह कभी-कभी पेशी या सिरा अथवा धमनी, (बन्धनी) या किसी अंग तक पहुँच जाता है।

कभी-कभी एक नासूर के कई मुँह भी होते हैं। नासूरों के भी विभिन्न नाम होते हैं। जैसे गुदा के पास होने वाले नासूर को भगन्दर (फिस्यूला इन एनो) कहते हैं। यदि नासूर का मुँह केवल एक ओर होता है। तो उसको अंग्रेजी में साइनस कहते हैं, एवं जिस नासूर की नलिका के 2 मुँह होते हैं। (एक बाहरी, दूसरा भीतरी) जो किसी अंग के गड्डे के अन्दर खुलता है। वह फिस्यूला कहलाता है। यह एक अत्यन्त कष्टदायक और हठीला रोग है। यह जिस अंग में होता है, उसको नष्ट कर देता है। हड्डी में उत्पन्न होने वाले नासूर का प्रमुख कारण क्षय रोग और कण्ठमाला होता है। और इस प्रकार का नासूर घुटने या टखने या कुहनी या हाथ के पहुँचे (हथेली और कलाई) के जोड़ समीप। जो अत्यन्त ही कठिनाई से ठीक हुआ करता है।

फोड़े, फुन्सियाँ, पिड़िका, लोमपाक, बालतोड़ आदि कई नामों से उच्चरित होने वाले रोगों से प्राय: सभी परिचित हैं। यों ही बाल उखड़ जाने से उस स्थान पर छोटी-छोटी फुन्सियां निकल आती हैं। इसमें सदैव नोंक निकलती है। बालों की जड़ों में स्टेफ्लोकोकस नामक कीटाणुओं के संक्रमण से, रक्त विकृत हो जाने

से, वर्षा ऋतु में कच्चे या पके आमों के अत्यधिक सेवन से अथवा दुर्बलता के कारण से फुन्सियाँ निकल आया करती हैं। पहले इसमें सूजन और दर्द होता है और इसके बाद इसमें पीव उत्पन्न हो जाता है। अनेक फुन्सियाँ बिना पके ही बैठ जाती हैं और अनेक पककर कड़ी हो जाती हैं। इन सबमें कोर रहती है। कोर के पीव के साथ निकल जाने पर दर्द, सूजन, जलन, एवं कष्ट प्राय: कम हो जाता है।

एक और विशिष्ट प्रकार की फुन्सी होती है जो कई संख्या में एक साथ समीप-समीप या दूर-दूर पर उत्पन्न होती हैं और सही त्वचा के जिस-जिस स्थान पर इन विशिष्ट फुन्सियों का पूय (पीव) लग जाता है उस स्थान पर भी यह उत्पन्न हो जाती है। यह प्राय: संक्रामक चर्मरोग के अन्तर्गत आती है। शरीर में घाव विविध कारणों से हुआ करते हैं। इसीलिए इनके अनेक प्रकार भी हैं। घाव में विशेषकर स्टेलेफिलो कोक्कस का संक्रमण होता है। आज के युग में लाठी, भाला, तलवार, छुरी, बरछा, तीर, बांस के फटा आदि की मार से घाव बन जाने की तो बात ही क्या, पिस्तौल, राइफल, बन्दूक, मशीनगन और बम इत्यादि अनेक घातक आग्नेय अस्त्रों से भी घाव हो जाया करते हैं।

उपचार

- संखिया सफेद, दारचिकना दोनों सम भाग 12 ग्राम लें। इसको ब्रान्डी में 1 दिन तक खरल करके उसका जौहर उड़ा लें। इसे 2 से 4 मिली ग्राम. की मात्रा में मुनक्के या कैपसूल डालकर खिलायें। नासूर, उपदंश, भगंदर आदि के लिए परम लाभप्रद योग है।
- सेलखड़ी 60 ग्राम, फिटकरी सफेद 60 ग्राम, सिन्दूर और नीलाथोथा 3-3 ग्राम लेकर 1 कोरी हांडी में फिटकरी और सेलखड़ी के चूर्ण को डालकर आग पर रखें। जब औषधि में जोश (उफान) आने लगे तब नीलाथोथा और सिन्दूर का चूर्ण थोड़ा-थोड़ा करके डालते जायें। जब औषधि फूल करके शुष्क हो जाये तो, ठन्डा करके पीस लें। इसे 500 मि.ग्राम से लेकर 1ग्राम तक यह औषधि मक्खन में मिलाकर खिलायें। नासूर में अनुभूत है।
- बारूद 24 ग्राम को तिलों के तेल 60 मि.ग्रा. में मिलाकर पिचकारी द्वारा नासूर के अन्दर डालना लाभप्रद है।
- गाय का घी, राल प्रत्येक 125 ग्राम लें। कत्था सफेद, फिटकरी सफेद, नीलाथोथा प्रत्येक 27 ग्राम लें। पहले राल को पीसकर घी में मिलायें और 100 बार पानी से धोयें। फिर शेष औषधियों को सुरमे की भाँति मिलायें। रुई की बत्ती

से लथपथ करके इसे नासूर जौहर उड़ाने की विधि किसी योग्य वैद्य से ज्ञात कर लें, अथवा लेखक की अन्य दूसरी पुस्तक 'आयुर्वेद प्रकाश' प्रकाशक भाषा भवन, कच्ची सड़क, हालनगंज मथुरा, (उ. प्र.) से प्रकाशित को खरीद कर पढ़ें । इस पुस्तक को पढ़ने के बाद किसी अन्य पुस्तक के पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस ग्रन्थ के अन्दर बालक, शिशु, वृद्ध, जवान के पैर से सिर तक प्रायः समस्त रोगों का परिचय, कारण, लक्षण, शास्त्रीय उपचार, पेटेन्ट आयुर्वेदीय उपचार, घरेलू उपचार, विष विज्ञान तथा अन्य बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारियाँ आपको मिलेंगी। जो आपको 50 अलग-अलग ग्रन्थों पर भी पढ़ने नहीं मिल सकेगीं । मूल्य भी अल्पतम है । कृपया शीघ्र मँगवाकर पढ़ें ।

● पुराना शहद घाव में भरकर ऊपर से पट्टी बाँधें, कुछ ही समय में नासूर ठीक हो जाता है ।

● मरे हुए मनुष्य की जली हुई हड्डी लेकर उसे पीसकर कपड़छन कर लें । इस चूर्ण को नासूर पर बुरककर पट्टी बाँधें । बिगड़े से बिगड़ा और पुराने से पुराना नासूर 5-6 दिनों में ठीक हो जाता है ।

नोटः—नाक के नासूर पर इस योग का प्रयोग कदापि न करें ।

● खरैटीं को गौमूत्र के साथ पीसकर लगाने से नासूर ठीक हो जाता है ।

● मनुष्य के कटे हुए नाखूनों का कपड़छन चूर्ण बुरकने से भी नासूर में शीघ्र लाभ पहुँचता है ।

● सेलखड़ी 20 ग्राम लेकर उसे अरण्डी के तेल में घिसें । जब घोल गाढ़ा हो जाये तो उस तेल में रुई की बत्ती भिगोकर नासूर में भर दें । लाभप्रद है ।

● बथुए के पत्ते तम्बाकू के बीज दोनों को सम मात्रा में लेकर घी में घोटकर नासूर पर लगायें । नासूर शीघ्र ठीक हो जाता है ।

● भैंस के सींग को जलाकर राख कर लें । इस राख को घी में मिलाकर नासूर में लगाने से नासूर शीघ्र अच्छा होने लगता है ।

● कुटकी और चिरायता प्रत्येक 5-5 ग्राम रात को जल में भिगोकर रखें। प्रातःकाल छानकर 15 से 30 मिली० तक की मात्रा में पिलायें । इसी प्रकार प्रातःकाल भिगोकर शाम को पिलायें । बच्चों को इसकी 1/4 से 1/2 मात्रा दें। इस योग के सेवन से लोमपाक, बालतोड़, फुन्सियां शीघ्र ठीक हो जाती है ।

● महामन्जिष्ठारिष्ठ (आयुर्वेद सार, संग्रह) 15 से 30 मि.ली. बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पिलायें । लोमपाक, बालतोड़, फुन्सियों में परम लाभकारी है ।

● समस्त प्रकार के फोड़े शोथ (सूजन) और व्रण (जख्म) आदि में मधु लगाकर पट्टी बाँधना लाभकारी है ।

● तिल का तेल 30 ग्राम लोहे की कढ़ाई में डालकर पकायें । जब पकने लगे । तब उसमें 10 ग्राम सिन्दूर मिलायें और लोहे की सींक से चलाते रहें । जब रंगत स्याह होने लगे और गाढ़ा हो जाये तब उतारकर किसी चौड़े मुँह की शीशी या स्वच्छ डिबिया में सुरक्षित रख लें । आवश्यकता पड़ने पर इसे कपड़े पर लगाकर चिपकायें । यह गले सड़े घावों को बहुत जल्दी अच्छा कर देता है।

● गूगल को पानी में घिसकर फोड़े पर लेप कर दें । इस प्रयोग फोड़ा या तो बैठ जायेगा या पककर फूट जायेगा ।

● पीपल के पत्ते को घी में चिकना करके, अग्नि पर गरम करें । उसे सुहाता-सुहाता बाँधने से फोड़ा बैठ जाता है अथवा पककर फूट जाता है ।

● कालीजीरी को पानी में पीसकर लगाने से फोड़े फुन्सियां दूर हो जाती हैं।

● शंखाहूली (ब्रह्मदन्ती, हुलहुल) 10 ग्राम, काली मिर्च 7 नग, दोनों को पानी में घोट, पीस, छानकर पीने से शरीर में निकलने वाले फोड़े फुन्सियाँ, दाद, खाज, खुजली, इत्यादि की शिकायत नष्ट हो जाती है ।

● महातिक्त घृत (सिद्ध योग संग्रह) सुबह शाम 1-2 ग्राम खिलायें।

● नीम के पत्तों के काढे से आक्रान्त त्वचा को प्रतिदिन सुबह धोकर स्वच्छ करें तथा सारिवाद्यासव और महामन्जिष्ठारिष्ट 15-15 मि. ली. बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पिलायें । यह विशेष प्रकार (संक्रामक चर्म रोग) के फोड़े-फुन्सियों के लिए परम लाभकारी है ।

● परवल के पत्ते, नीम के पत्ते 12-12 ग्राम और जल 1 लीटर लेकर उनका विधिवत काढ़ा बनायें । आधा लीटर जल शेष बच जाने पर छान लें । इससे आक्रान्त त्वचा को दिन में 2 बार धोवें, तब नीम और निर्गुन्डी के तैल में कपूर मिलाकर आक्रान्त त्वचा पर दिन में 3-4 बार लगायें । हर प्रकार की फोड़े-फुन्सियों में लाभप्रद है ।

● 100 ग्राम नीम के पत्ते पीसकर टिकिया सी बनालें और पुल्टिस की तरह सूजन पर रखकर बाँध दें । बालतोड़ की तीन दिन में सूजन उतरने लगेगी और दर्द मिट जाएगा ।

आधा किलो नीमरस और ढाई सौ ग्राम चीनी की हल्की आँच पर ऐसी गाढ़ी चासनी बनायें, कि करछुली चिपकने लगे । फिर चित्रक, हल्दी, त्रिफला, प्रत्येक

10-10 ग्राम, नागरमोथा, काली जीरी, अजवायन, निर्गुन्डी के बीज, पीपल, सौंठ, काली मिर्च, दन्तीमूल, नीम और बाबची के बीज, अनन्तमूल, और वायविंडग 25-25 ग्राम पीस छानकर चाशनी में मिलालें और सुरक्षित रखलें। इसे 10-10 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम ताजा पानी के साथ निगलें। इस योग से भगन्दर तो नष्ट हो ही जाएगा तथा चर्म के अनेकों दूसरे रोग भी मिट जाऐंगे।

● नीम का रस व भांगरा का रस 50-50 ग्राम, बबूल और मेंहदीं के पत्तों का रस 75-75 ग्राम तथा सेम का रस 50 ग्राम (पांचों का रस मिलाकर) धीमी आग पर पकायें। जब सभी पानी जल जाये, तब 25 ग्राम मोम डाल दें। यह मरहम इतना अधिक प्रभावशाली है कि नासूर (जड़ों वाले फोड़ा) को भी सुखा डालने की क्षमता रखता है तो अन्य मामूली फोड़े-फुन्सियों तो इसके सामने बेचते ही क्या हैं ? सभी प्रकार के फोड़े-फुन्सियों में लाभकारी है।

● पुराने घावों को नीम के पत्तों के काढ़े से धोएं। फिर नीम की छाल के अन्दरूनी हिस्से को सिल पर रगड़कर लेप करदें। यह क्रिया तब तक जारी रखें जब तक कि घाव पूर्णरूपेण भर न जाए। जिन फोड़े-फुन्सियों और घावों का इलाज बड़े-बड़े चर्म-विशेषज्ञ करने से भी मुंह मोड़ें अथवा हिचकिचाऐं उनका इस घरेलू योग से पीड़ित मानव की सेवा कर यश प्राप्त करें।

● बुझा हुआ चूना को नीम की पत्ती के रस में घोटकर नासूर में भरें। चूने के साथ नीम के सूखे हुए पत्ते भी मिला लें तो और भी उत्तम है।

● नीम की पत्तियों के रस में 2-3 बार चूने की डली भिगोकर सुखालें, और फिर पीसकर नासूर में भरें। परम लाभप्रद योग है।

● 250 ग्राम नीम का तैल, शुद्ध मोम और बिरोजा 50-50 ग्राम लें। पहले बिरोजा दरड़कर बारीक करलें और फिर तैल में पिघलायें और बाद में मोम डाल दें। जब तीनों मिलकर एकजान हो जायें तो यह नासूर नाशक अत्युत्तम मरहम बन जाएगा। इसे सुबह-शाम फोड़ेपर लगायें और रचने दें। प्रत्येक बार नीम के रस में रूई भिगोकर फोड़ा साफ करें और ताजा मरहम लगायें। घाव भरने और घाव को जड़ से उखाड़ फेंकने में यह अत्यन्त ही प्रभावकारी मरहम है।

● घावों पर जात्यादि तैल (शारंगधर संहिता) दिन में 2-3 बार लगायें या 1 बार लगाकर पट्टी बाँधें।

● रस माणिक्य (भैषज्य रत्नावली) आयु के अनुसार 125 से 250 मि.ग्रा. तथा गन्धक रसायन (ग्रन्थ सिद्धयोग संग्रह) 500 मि.गा. से 1 ग्राम तक इकट्ठा मिलाकर मधु से सुबह-शाम चटायें। घावों की रामबाण चिकित्सा है।

फोड़े-फुन्सियों, घावों की प्रमुख पेटेन्ट औषधियाँ

हीलर मरहम (वैद्यनाथ)—जल जाना, कट जाना, कीट पतंगों का काट खाना इत्यादि में आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

करामाती मलहम (राजवैद्य शीतल प्रसाद)—गन्दे पीपयुक्त घाव, तथा फोड़ों पर आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

त्र्यम्बक मलहम (राजवैद्य शीतलप्रसाद)—घाव, चोट, मोच, कीड़ों के डंक, विषैले जानवरों के काट खाने पर आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

शामक तैल (मेहता)—आवश्यकतानुसार व्रणों पर लगायें।

सप्तगुण तैल (वैद्यनाथ)—जल जाना, कट जाना, कान का दर्द, कान का बहना, पसली दर्द, फोड़े-फुन्सियों में परम लाभकारी है।

ब्लड प्यूरी फायर पेय (झन्डू)—रक्तदोष से उत्पन्न घाव, फोड़े-फुन्सियों कारबन्कल (फोड़ा) आदि में उपयोगी है। आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

केपाइना टेबलेट (हिमालय)—1-2 गोली दिन में 3 बार प्रयोग करें। हर प्रकार के घाव, फोड़े-फुन्सियां, नासूर, कारबन्कल में उपयोगी है।

करामाती टेबलेट (राजवैद्य शीतलप्रसाद)—खाज-खुजली, फोड़े-फुन्सी, छिल जाना, कट जाना, उस्तरे के घावों में 1-2 गोली दिन में 3-4 बार दें।

चर्मक्लीन कैपसूल (अतुल फार्मेसी)—1-1 कैपसूल सुबह-शाम जल या सारिवाद्यासव के साथ सेवन करें। रक्तशोधक है।

प्रसूत ज्वर (Puerperal Fever)

रोग परिचय—प्रसवोपरान्त होने वाले ज्वर को प्रसूत ज्वर कहा जाता है। प्रसव की असावधानियों, से जब योनि, गर्भाशय, गर्भाशय-ग्रीवा आदि में संक्रमण लग जाता है अथवा बच्चा पैदा होने के बाद प्रसूता स्त्री को जब आँवल (पिलसेन्टा) का विषैला पदार्थ रक्त में पहुँच जाता है तभी यह ज्वर हो जाता है।

बच्चा पैदा होने के 3 दिन बाद प्रसूता स्त्री को सर्दी लगकर कम्पन के साथ यह ज्वर चढ़ जाता है जिसका तापमान 102 से 105 डिग्री फारेनहाइट तक होता है। नाड़ी अत्यधिक तेज (तीव्र), गर्भाशय के स्थान पर दर्द, जी मिचलाना, दस्त लगना, कै (उल्टी वमन) होना, पेट फूल जाना, स्तनों में दूध न उतरना, गर्भाशय से दूषित तरल निकलना बन्द हो जाना इत्यादि लक्षण प्रकट हो जाते हैं। रोग की अधिकता में रोगिणी बेहोशी में बड़बड़ाती रहती है। पेट अधिक फूल जाने,

समय पर उचित चिकित्सा व्यवस्था के अभाव से रोगिणी की मृत्यु हो सकती है। इस रोग का मुख्य कारण कीटाणुओं का संक्रमण है । अक्सर देखने में आया है कि दाई (नर्स) के गन्दे हाथों अथवा प्रसूता की गुदा से कीटाणु गर्भाशय में चले जाते हैं अथवा आंवल के ठीक ढंग से न निकलने और प्रसवोत्तर रक्त-स्राव रुक जाने से यह रोग हो जाया करता है ।

उपचार

गर्भाशय-ग्रीवा को किसी भी ऐन्टीसेप्टिक लोशन से पानी मिलाकर (डेटाल, सेवलान, नीम की पत्तियों के गुनगुने पानी या फिटकरी के घोल आदि से) दिन में कम से कम 2 बार डूश (धुलाई, सफाई) कर उसके बाद योनि को बारीक रूई से भली प्रकार पौंछ कर साफ करें । रोगिणी के सिर और पीठ के नीचे तकिया लगादें, ताकि सिर और छाती ऊँची हो जाने से दूषित तरल निकल जाये । गर्भाशय के स्थान पर गरम-गरम टकोर करने अथवा गरम पुल्टिस बाँधने से भी रुका हुआ तरल आने लग जाता है ।

● सौंठ और कायफल दोनों को समान भाग लेकर कूट पीसकर चूर्ण बनालें। इसे आधा से 1 ग्राम तक 3 बार ठण्डे किये हुए पानी से दें । प्रारम्भ में आधा-आधा घण्टे में तथा बाद में 1-1 घंटे पर दें । उसके बाद 3-3 घंटे पर मात्र 2-3 दिन प्रयोग करायें । इसके सेवन से प्रसूता का ज्वर, शरीर दर्द, श्वास-कास आदि विकार ठीक हो जाते हैं । वात विकारों तथा कण्ठ रोगों में भी यह योग श्रेष्ठ कार्य करता है। इससे प्रसूता स्त्री के पेट की रतूबत बाहर निकल जाती है और गर्भाशय शुद्ध हो जाता है ।

● कायफल के बारीक चूर्ण को गुड़ में मिलाकर बत्ती बनाकर योनि में रखने से मासिक खुलकर आने लगता है ।

● प्रथम प्रसव के दौरान योनिद्वार के किनारे कट-फट जाते हैं । इसमें नीम के पत्तों का उबला हुआ पानी हल्का गरम करने पर योनि को दिन में 2-3 बार धोयें । इससे त्वचा में टाँके लगाने की जरूरत नहीं पड़ती है और नयी त्वचा उन कटावों को जोड़ देती है ।

● नीम की 5-6 पत्तियाँ अदरक के रस में पीसकर पिलादें और नीम की ही पत्तियों को गरम करके नाभि के नीचे बाँधे । इस प्रयोग से मासिक खुलकर आने लगता है ।

● 20 ग्राम नीम की छाल, 5 ग्राम सोंठ और 5 ही ग्राम गुड़ का काढ़ा बनाकर पीने से रुका हुआ मासिक चालू हो जाता है ।

● काली मिर्च 21-21 और 21 नीम के पत्तों की पोटली बांधकर आधा किलो पानी में डाल दें । पानी खौलने लगे तो ढक्कन लगा दें और ठण्डा होने पर सुबह-शाम 125-125 ग्राम की मात्रा में सेवन करें । दो दिन बाद देखें कि बुखार उतरा या नहीं । इस मामूली योग से पुराने से पुराना बुखार हड्डियों में से निकल जाता है ।

● नीम की छाल का उबला हुआ पानी प्रसूता को 1 सप्ताह तक देते रहने से प्रसूता की प्यास मिटती है, स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा स्तनों में शिशु हेतु दूध भी पौष्टिक बन जाता है ।

● जब प्रसव के दर्द शुरू हो जायें तो नीम के पत्तों का रस गुनगुना करके प्रसविनी को पिला दें । इससे गर्भाशय में संकुचन होगा । फलस्वरूप प्रसव शीघ्र व बगैर कष्ट के हो जायेगा ।

● जब प्रसविनी को नौवां महीना चढ़ जाये और प्रसव में हफ्ता 10 दिन ही कम रह जाये तो—5 ग्राम हल्दी का चूर्ण गरम दूध में मिलाकर सुबह-शाम पिलाना शुरू कर दें । इस योग से प्रसव आसानी से हो जाता है ।

● प्रसवोपरान्त मन्द-ज्वर, हाथ-पैरों की जलन, उदर शूल, मन्दाग्नि, जलन, जुकाम, खाँसी, पेट में तनाव, सूजन, रुधिर या धातु पदार्थ का मूत्रमार्ग से बहिर्गमन इत्यादि लक्षण प्रकट होने पर अजवायन डालकर जलाये हुए सरसों के तैल की मालिश करना अत्यन्त लाभप्रद है । अजवायन का काढ़ा भी हितकारी है, विशेषकर ज्वरावस्था में । रोगिणी को रोग-दशानुसार सुबह-शाम अजवायन का हरीरा देना चाहिए । अजवायन के क्वाथ से योनि में डूश करने से गर्भाशय साफ हो जाता है । अजवायन का बारीक चूर्ण 3 ग्राम तक की मात्रा में सुबह-शाम गरम दूध के साथ सेवन करने से मासिकधर्म की रुकावटें दूर होकर खुलकर रजःस्राव होता है ।

● किसी भी कारण से यदि योनि में पीड़ा हो तो—सौंठ का चूर्ण 25 ग्राम खाकर ऊपर से गरम दूध पी लेने से पीड़ा अवश्य दूर हो जाती है ।

● सौंठ का चूर्ण, चीनी बादाम इन्हें कूटकर प्रसूता को देने से उनके हर प्रकार के दर्द दूर हो जाते हैं ।

● किसी भी कारण से गर्भाशय की वेदना, कष्ट, शूल या दर्द प्रतीत हो

रहा हो तो कमर पर या नाभि के नीचे राई की पुल्टिस का बार-बार प्रयोग करने से आराम आ जाता है ।

● प्रसूता स्त्री की योनि में 40 दिनों तक अजवायन की धूनी देने से योनि कन्डू और अन्य योनि रोग नहीं होते हैं।

● अदरक के 6 ग्राम रस के साथ समभाग शहद मिलाकर दिन में 3-4 बार सेवन कराना प्राय: सभी प्रकार के ज्वरों में लाभप्रद है ।

● सन्निपात की दशा में जब शरीर ठण्डा पड़ जाये तो अदरक के रस में लहसुन का रस मिलाकर शरीर में मालिश करने से शरीर गरम हो जाता है ।

● सौंफ जौ-कुकूटकर 2 तोला को 1 सेर पानी में क्वाथ करें । चौथाई जल शेष रहने पर 2 तोला खान्ड पाव भर दूध के साथ सुबह-शाम 3-4 बार पिलाने से प्रसवोत्तर स्राव की अधिकता में कमी हो जायेगी तथा यदि मासिकधर्म बन्द हो गया होगा तो जारी हो जायेगा ।

पेटेन्ट आयुर्वेदीय औषधि निर्माताओं ने इस रोग के उपचार हेतु भी सूची वेधों का निर्माण किया है जिनका संक्षिप्त उल्लेख निम्न प्रकार है—

दशमूल सूचीवेध (बुन्देलखण्ड, मिश्रा), **काकजंघा सूचीवेध** (मिश्रा, सिद्धी, बुन्देलखन्ड), **घृतकुमारी सूचीवेध** (प्रताप, बुन्देलखन्ड), (गर्भावस्था में सख्त निषेध है) **तापीकर सूचीवेध** (प्रताप), **सूतशेखर सूचीवेध** (सिद्धि फार्मेसी), इत्यादि का 1-2 मि.ली. की मात्रा में प्रतिदिन 1 दिन छोड़कर मांसपेशी में रजिस्टर्ड चिकित्सक ही प्रयोग करें ।

योनि-कपाट-शोथ

रोग परिचय—योनिद्वार और उसके दोनों ओष्ठों में शोथ (सूजन) हो जाना ही योनि कपाट शोथ कहलाता है । यह रोग मैला-कुचैला रहने, हाजमा की खराबी, मधुमेह, योनि की बाहरी खुजली, श्वेत प्रदर या सुजाक, खून का पतला हो जाना, प्रसूत पीड़ा तथा प्रथम बार सम्भोग के कारण हो जाता है । इस रोग में दोनों ओर के ओष्ठों में सूजन आ जाने के कारण दर्द होता है तथा रोगिणी को तीव्र ज्वर हो जाता है । आस-पास का चर्म लाल हो जाता है । चलने फिरने में कष्ट होता है । पीप की भाँति गाढ़ा स्राव भी आने लगता है तथा कई बार शोथ में पीप पड़कर फोड़ा भी बन जाता है ।

उपचार—कब्ज हो तो उसे दूर करें तथा योनि को नीम की उबाली हुई पत्तियों के पानी से धोकर स्वच्छ रखें । योनि में गन्दे हाथों तथा कपड़ों आदि का स्पर्श न होने दें ।

● सूखी मकोय, खशखश का डोडा, नीम के पत्ते प्रत्येक 1 तोला तथा फिटकरी 6 माशा सभी को 1 लीटर जल में उबालकर छानकर पीड़ित स्थल पर टकोर करें और इसी क्वाथ से उस स्थान को धोवें । कब्ज दूर करने हेतु त्रिफला चूर्ण या पंच सकार चूर्ण को रात्रि के समय गुनगुने जल से सेवन करें और यदि अजीर्ण रहता हो तो 'रामबाण रस' या 'लवण भास्कर चूर्ण' का सेवन करें । यदि सुजाक अथवा मधुमेह के कारण यह रोग हो तो, उसकी इसी ग्रन्थ में लिखे अनुसार चिकित्सा (उपचार) करें ।

योनि-कपाट की खुजली (Valvari Praritis)

रोग परिचय—इस रोग में योनि के बाहर तीव्र खुजली होती है । खुजलाते-खुजलाते रोगिणी तंग आ जाती है और खुजलाने के बाद अत्यधिक जलन होती है तथा वहाँ की चर्म लाल हो जाती है । यह रोग रक्त विकार और अधिक गर्मी, रजोनिवृत्ति, गरम भोजन तथा उत्तेजक वस्तुओं का खानपान, योनि स्थान पर अत्यधिक खुश्की, प्रदर बन्द हो जाना, योनि द्वार शोथ, योनि की गन्दगी, श्वेत प्रदर, योनि के बालों (केशों में) जुएं (लीखें) हो जाना, आमाशय और यकृत दोष आदि के कारण से हो जाता है ।

उपचार—कोई अच्छी कोल्ड क्रीम का इस्तेमाल करें । बालों को साफ रखें तथा बालों को साफ करके डी. डी. टी. पाउडर (यदि जुएं हों तो) पानी में घोलकर लगायें । ओलिव आयल 30 ग्राम में 3 ग्राम कैम्फर मिलाकर खुजली वाले स्थान पर दिन में 2-3 बार लगायें ।

● सोप स्टोन (सैलखड़ी), मेहन्दी के पत्ते, लाल चन्दन प्रत्येक 5 ग्राम, काफूर ढाई ग्राम को पीसकर नारियल तैल 65 ग्राम में घोटकर खुजली के स्थान पर लगायें । रक्त को शुद्ध करने हेतु सारिवाद्यासव 2 तोला की मात्रा में बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त सेवन करें । शीघ्रपाची सादा भोजन खायें । गरम खाद्य वस्तुओं का सख्ती से परहेज करें तथा स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें ।

योनि-कपाट की फुन्सियाँ

रोग परिचय—इस रोग में योनि के बाहर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकल आती हैं, ये फुन्सियाँ लाल, सफेद और छोटी-छोटी होती हैं । कई बार इनमें पीप पड़

जाती है । जिनमें प्राय: खुजली नहीं होती, परन्तु तीव्र जलन होती है । यह रोग सफाई न रखने, गन्दा रहने तथा योनिद्वार की खुजली के कारण होता है ।

उपचार—नीम या कार्बोलिक साबुन से पीड़ित स्थान को धोकर स्वच्छ रखें।

● मुर्दासंग, कमीला, सफेदा काश्मरी प्रत्येक 6 माशा, कपूर 3 माशा को खूब खरल कर के गाय के 2 तोला घी में 21 बार नीम के क्वाथ से धोकर औषधियों को मिलाकर सुरक्षित रख लें । इस औषधि (मलहम) को पीड़ित स्थान पर लगायें। यदि उपदंश रोग के कारण छोटे-छोटे सख्त मस्से योनि के बाहर निकल आये हों तो उसकी चिकित्सा करें । मंजिष्ठादि क्वाथ व खदिरारिष्ट का सेवन करें तथा मस्सों को क्रोमिक एसिड से जला दें । रोगिणी प्रत्येक प्रकार के गरिष्ट खट्टे और वातवर्धक भोजनों से परहेज रखें । मीठी वस्तुओं को भी न खाये तथा सफाई का विशेष ध्यान रखें ।

योनिद्वार के घाव (Ulcers of Vulva)

रोग परिचय—फोड़े-फुन्सियों के कारण अथवा उपदंश रोग के कारण योनि के चारों ओर घाव हो जाते हैं और उनमें पीप पड़ जाती है जिसके कारण रोगिणी को प्राय: ज्वर भी हो जाया करता है । यदि ये घाव पुराने हो जाये तो रोगिणी को अत्यधिक कष्ट उठाने पड़ते हैं ।

उपचार—नीम के पत्तों के क्वाथ से घावों को धोकर निम्न मरहम लगायें।

● गन्धक ओमला सार 6 माशा, मुर्दासंग, राल, कमीला, प्रत्येक 6 माशा तथा पारा 2 माशा, नीला थोथा डेढ़ माशा, मेंहदी के पत्ते 6 माशा, मुल्तानी मिट्टी 1 तोला लें । पहले गन्धक और पारा को खूब खरल करके कज्जली बना लें । फिर सरसों के तैल में सभी औषधियाँ डालकर इतना खरल करें कि मरहम बन जाये (सरसों का तैल यदि 1 वर्ष पुराना हो तो अति उत्तम है, शुद्ध व असली भी होना चाहिए ।)

योनिशोथ (Vaginitis)

रोग परिचय—आजकल 90 प्रतिशत स्त्रियों को यह रोग होता है । इस रोग के प्रारम्भ में (नये रोग में) योनि की झिल्ली लाल और खुश्क हो जाती है उसमें जलन रहती है और दर्द होता है, जो उठने-बैठने और चलने-फिरने से बढ़ जाता है । यह दर्द योनि और गुदा के मध्य भाग में अधिक होता है । इस रोग

के उपद्रव स्वरूप रोगिणी का शरीर टूटता है, ज्वर हो जाता है, कमर सिर और पिन्डलियों में दर्द होता है । मूत्र थोड़ी मात्रा में तथा कई बार जलन के साथ 2-3 दिन के बाद लेसयुक्त पतला पानी आने लग जाता है । यह रोग जब 2 सप्ताह तक दूर नहीं होता है तो रोग पुराना (क्रोनिक) हो जाता है । ऐसी अवस्था में योनि से गाढ़ी छाछ की भाँति पानी आने लगता है । कमर में दर्द रहता है, भूख कम लगती है, कब्ज रहने लगती है, किसी काम करने की इच्छा नहीं होती है । रोगिणी कमजोर हो जाती है ।

यह रोग प्राय: शारीरिक कमजोरी, सूत में अधिक गर्मी, अत्यधिक मैथुन अथवा संभोग का बिल्कुल ही छोड़ देना, मासिक बन्द हो जाना, रुक जाना, सुजाक, बच्चा का अधिक कष्ट से उत्पन्न होना, गन्दा रहना, खट्टे और गर्म भोजनों का अधिक खान-पान, चोट लग जाना अथवा तेज और खराश उत्पन्न करने वाली बत्तियों का योनि में बार-बार खाना तथा छोटी आयु में शादी हो जाना इत्यादि कारणों से हो जाता है । आधुनिक चिकित्सा शास्त्री इस रोग का कारण एक प्रकार के कीटाणु को बतलाते हैं जो योनि तरल में अम्लता कम हो जाने से उत्पन्न हो जाते हैं ।

उपचार—सूखी मकोय, टेसू के फूल, खशखश के डोड़ा—प्रत्येक डेढ़ तोला को 2 सेर पानी में उबालें और सुरक्षित रखकर इससे प्रतिदिन 2-3 बार गरम (गुनगुना) डूश (योनि में सफाई) करें और गरम-गरम टकोर करें ।

● अशोकारिष्ट 2 से 4 छोटे चम्मच तक समान मात्रा में जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पियें ।

● पुरानी योनि-शोथ में बंग भस्म 1 रत्ती, अन्डे की छिलके की भस्म 1 रत्ती, सुपारी चूर्ण 6 माशा, 20 तोला दूध के साथ सुबह-शाम खायें । इसके साथ ही योनि और गर्भाशय को शक्ति प्रदान करने वाली औषधियाँ भी खिलायें ।

योनि की खुजली

रोग परिचय—इस रोग के कारण स्त्री को बहुत कष्ट होता है, वह अंगुली डालकर योनि को खुजलाती रहती है, खुजली के कारण रोगिणी को सम्भोग की इच्छा बहुत बढ़ जाती है । यह रोग योनि में शोथ, योनि स्राव में अधिक अम्लता हो जाना, रक्त विकार, पेट में चुरनों का हो जाना, शरीर में रक्त, विटामिन मिनरल्ज की कमी तथा थायराइड ग्लैन्ड की खराबी आदि के कारण यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है ।

उपचार—जैसा कि इससे पूर्व में ''योनि कपाट'' रोग में उपचार लिखा जा चुका है, उसी के अनुसार इस रोग का भी उपचार करें।

● सूखी मेंहदी, गाचनी, लाल चन्दन, प्रत्येक 3-3 माशा बारीक पीसकर बहीदाना के गाढ़े लेस वाले पानी में मिलाकर ठण्डा लेप लगाने से योनि की खुजली, जलन और शोथ में लाभ हो जाता है।

योनि के घाव

रोग परिचय—योनि के अन्दर प्राय: घाव हो जाया करते हैं जिनमें सख्त जलन और दर्द होता है। महिला चिकित्सक 'वेजाइना स्पेक्युलम' (एक विशेष प्रकार का यन्त्र) से योनि को फैला कर इन घावों को भली प्रकार निरीक्षण कर लिया करती हैं।

नये शोथ में पीप पड़ जाने और फुन्सियों के फूट जाने के कारण योनि में घात हो जाया करते हैं। योनि में अत्यधिक खट्टास हो जाने या सुजाक रोग होने से भी योनि में घाव हो जाया करते हैं। चूँकि योनि में प्रदर का गन्दा और अम्लता वाला तरल आता रहता है और यह स्थान तंग और गहरा होता है। इसलिए सावधानी न रखने से ये घाव नासूर बन सकते हैं जो बड़ी कठिनाई से ठीक होते हैं।

उपचार—मामूली घाव नीम के पत्तों के क्वाथ से डूश करते रहने से ठीक हो जाते हैं। डेटाल-एन्टीसेप्टिक क्रीम या डेटोल ओब्सटेरिक क्रीम को दिन में 2 बार योनि के घावों में लगाना अत्यधिक लाभप्रद है।

तिलों के 5 तोला तैल में नीम और मेंहदी के सूखे पत्ते 1-1 तोला, डालकर जलालें। तैल को छानकर इसमें विशुद्ध मोम 1 तोला डालकर पिघला लें। फिर इसमें कमीला सवा तोला मुर्दासंग और सफेदा काशगरी 4-4 माशा खरल करके मिलाकर पकायें। रुई की फुरैरी से यह दवा लगाकर, योनि में फाहा रखें। इसके प्रयोग से—योनि, गर्भाशय और योनि कपाट के घाव, फोड़े-फुन्सियाँ तथा खुजली को आराम आ जाता है। घाव शीघ्र भर जाते हैं। रक्त शुद्ध करने वाले योगों का सेवन भी साथ में करने से प्रत्येक प्रकार के चर्म रोग, रक्त विकार दूर होकर प्रत्येक प्रकार की खुजली, एक्जिमा और फोड़ा-फुन्सियों को आराम आ जाता है।

योनि का तंग या बिल्कुल बन्द हो जाना (Atresia of Vagina or Vaginismus)

रोग परिचय—यदि योनि बिल्कुल ही बन्द हो अथवा इतनी अधिक संकुचित हो कि सम्भोग (मैथुन) क्रिया न हो सके तो इसी रोग को—एटेरसेया ऑफ वैजाइना

(योनि का तंग या बिल्कुल बन्द हो जाना) कहा जाता है। यदि मैथुन-क्रिया में कष्ट और कठिनाई हो तो उसे 'वैजाइनिसमस' कहा जाता है। इसके निम्न दो कारण होते हैं—1. जन्म से योनि का बन्द होना, 2. योनि संकोच होना। योनि संकोच किसी रोग के बाद हो जाया करती है। ऐसी अवस्था में पहले स्त्री बिल्कुल स्वस्थ रहती है। प्राय: योनि पर लगी श्लैष्मिक कला शोथयुक्त होकर आपस में चिपक जाती है जिसके फलस्वरूप योनि का मार्ग बन्द हो जाता है। कभी-कभी योनि का बाहरी छेद तंग या बंद हो जाता है।

योनि की मांसपेशियों के तन्तुओं का ऐंठ जाना, योनि की भीतरी श्लैष्मिक कला में शोथ, योनि में तरलता की अत्यधिक कमी, कुमारी पर्दा की कठोरता, योनि के किसी बड़े घाव का इस प्रकार भर जाना कि उसकी रचना सिकुड़ जाये अथवा घाव भरने के बाद वहाँ फालतू मांस पैदा हो जाये अथवा योनि में खुश्की उत्पन्न करने वाली औषधियों का काफी समय तक रखते रहना इत्यादि इस रोग के उत्पन्न होने के मुख्य कारण होते हैं।

उपचार—यदि कुमारी की कठोरता अथवा फालतू मांस इस रोग का कारण हो तो तथा योनि कपाट के ओष्ठों और योनि की श्लैष्मिक झिल्ली के चिपक जाने पर शल्य चिकित्सा ही एक मात्र इस रोग से छुटकारे का उपाय है।

यदि योनि की भीतरी खुश्की या मांसपेशियों की ऐंठन अथवा खुश्क करने वाली औषधियों के स्थानीय प्रयोग से यह रोग हो तो ग्लीसरीन या वैसलीन साफ रुई में भली प्रकार लगाकर योनि में रखवायें। सम्भोग के समय शिश्न पर नारियल का तैल लगाकर ही मैथुन करें। यदि शरीर की खुश्की इस रोग का कारण हो तो घी, दूध, मक्खन इत्यादि अधिक खायें। बादाम, कद्दू के बीज व खरबूजा इत्यादि के बीजों को रगड़कर खिलायें।

योनि का ढीला हो जाना (Paralysis of Vagina)

रोग परिचय—योनि की मांसपेशियों के तन्तु ढीले हो जाने पर उसके फैलने और सिकुड़ने की शक्ति कम अथवा बिल्कुल ही समाप्त हो जाती है। जिसके फलस्वरूप योनि की नाली फैल जाती है और सम्भोग क्रिया करते समय पति-पत्नी को प्राकृतिक आनन्द की प्राप्ति नहीं होती है। रोग अधिक बढ़ जाने पर योनि बाहर निकल आने का रोग हो जाता है। यह रोग अधिक सम्भोग, सन्तान की अधिकता, शारीरिक कमजोरी, बुढ़ापा, जल्दी--जल्दी गर्भ ठहर जाना तथा योनि से अत्यधिक मात्रा में स्राव आते रहने के कारण हो जाता है।

उपचार—शारीरिक दुर्बलता के कारण यदि रोग उत्पन्न हुआ हो तो शक्तिबर्धक योग व खान-पान से यह रोग ठीक हो जाता है। यदि अत्यधिक सम्भोग के कारण रोग हो तो सम्भोग कुछ काल तक बिल्कुल ही बन्द कर दें।

● सुपारी पाक 6 से 9 माशा सुबह शाम दूध के साथ खिलायें तथा सायंकाल को बंगभस्म 1 रत्ती की मात्रा में मोचरस (सेम्बल वृक्ष की गोंद) एक माशा मधु में खिलाकर खिलायें तथा हरे माजू का फल, धाय के फूल, फिटकरी खील की हुई) एवं गुलाब के फूल—बराबर मात्रा में लेकर खूब बारीक पीसकर किसी पतले कपड़े में छोटी सी ढीली पोटली बाँध लें। सुबह शाम इस पोटली को योनि में रखवायें तथा यदि श्वेत प्रदर अथवा योनि से बहुत अधिक मात्रा में स्राव आने के कारण योनि ढीला होने का रोग हो गया हो तो—लौह भस्म 1 रत्ती को सुपारी पाक 6 माशा में मिलाकर सेवन करें।

● काले तिल 6 ग्राम, गोखरू 12 ग्राम तथा दूध आधा किलो शहद में मिलाकर नित्य सेवन करने से योनि (संकुचित) होकर कुवारी कन्या के समान हो जाती है।

● माजू, काफूर व शहद को आपस में मिलाकर योनि में मलने से वृद्धा की योनि भी जवान स्त्री की भाँति हो जाती है।

● माजू, फिटकरी, मांई और राल सममात्रा में लेकर खूब बारीक कूटपीसकर मलमल के कपड़े में डेढ़ माशा की पोटली बनाकर योनि में प्रयोग करने से योनि संकुचित हो जाती है। समुद्र झाग एवं हरड़ की गुठली दोनों सममात्रा में लें। इन्हें बारीक पीसकर योनि में मलने से वह अत्यन्त संकीर्ण हो जाती है।

गर्भाशय और योनि का बाहर निकल आना

रोग परिचय—इस रोग को अंग्रेजी में—प्रोलेप्सस ऑफ बेजाइना कहते हैं। इस रोग में योनि की भीतरी श्लैष्मिक कला ढीली होकर अपने स्थान से अलग हो जाती है और योनि की छेद का कुछ भाग बाहर निकल आता है। योनि का बाहर निकला भाग नर्म और गोल होता है। योनि में अंगुली डालकर देखने से गर्भाशय का मुँह अपने स्थान पर होता है, इसके विपरीत गर्भाशय बाहर आ जाने पर किसी दुर्घटना के फलस्वरूप योनि की सम्पूर्ण रचना बाहर आ जाती है। जब योनि की म्यूकस मेम्बरीन अपने स्थान से बाहर आ जाती है तब स्त्री की योनि के अन्दर खिंचाव जैसा दर्द महसूस होता है और योनि में डांट की भांति नरम

सी गोल वस्तु फैली हुई दिखाई देती है जिसका रंग गुलाबी या गहरा लाल हो जाता है। रोगिणी को चलने-फिरने तथा मल-मूत्र त्यागने में कष्ट होता है किन्तु कुछ दिनों के पश्चात् इन कष्टों में कमी आ जाती है। इसके अतिरिक्त इस रोग के फलस्वरूप रोगिणी के चूतड़ों, जाँघों और पिन्डलियों में भी सख्त दर्द होता है।

उपचार—शक्तिबर्धक योगों तथा दैनिक जीवन में शक्तिबर्धक खाद्य एवं पेय पदार्थों का भरपूर प्रयोग कराने से रोगिणी की कमजोरी दूर होकर शक्ति आती है तथा योनि संकुचित होकर तमाम कष्ट स्वत: ही दूर हो जाते हैं।

'योनि का ढीला हो जाना' में वर्जित औषधियाँ इस रोग में भी लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त अंगुली की सहायता से बाहर निकले भाग को अपने उचित स्थान पर ले जाकर 6 माशा फिटकरी को आधा सेर पानी में घोलकर डूश करना लाभप्रद है। यदि किसी दुर्घटनावश योनि की सम्पूर्ण रचना ही बाहर आ जाये तो रबड़ या प्लास्टिक का छल्ला (चेक पेसरी) जो इसी उद्देश्य हेतु निर्मित की जाती है, को किसी योग्य महिला चिकित्सक से योनि का गर्भाशय को अपने स्थान पर ले जाकर फिट करवा लें। रोगिणी सदैव शीघ्र-पाची, शक्तिबर्धक भोजन यथा—दूध, मक्खन, आधा उबला हुआ अण्डा, पके मांस का शोरबा, रोटी इत्यादि खायें तथा वातकारक व खट्टे और भारी भोजन से परहेज रखें।

स्तनों का बहुत छोटा हो जाना

रोग परिचय—इस रोग में स्त्री के स्तन साधारणावस्था से भी छोटे हो जाते हैं उनका उभार ही नहीं रहता है। दूध भी बहुत ही कम मात्रा में उत्पन्न होता है। स्त्री का सौन्दर्य तो नष्ट होता ही है साथ ही ऐसी स्त्री से उसका पति तथा अन्य स्त्रियाँ भी घृणा सी करती रहती हैं। इस रोग का कारण—शारीरिक कमजोरी, दुबलापन, रक्त विकार, स्तनों के पालन-पोषण हेतु रक्त पूर्ण मात्रा में न पहुँचना, रक्तवाहिका रगों (नसों) में सुद्दे पड़ जाना, हारमोन्स के विकार तथा स्त्री की भीतरी जननेन्द्रिय में जन्म से खराबी होना इत्यादि है।

उपचार—जैतून का तैल विशुद्ध तैल हल्के हाथों से धीरे-धीरे मालिश करने से स्तन की मांसपेशियां पुष्ट हो जाती हैं तथा वहाँ का रक्त संचार सुचारू रूप से होकर स्नायु बल होकर स्तन बढ़ जाते हैं तथा सुदृढ़ होते हैं। हमदर्द कम्पनी की यूनानी दवा "**जमादे शबाब**" की मालिश भी अत्यन्त लाभप्रद है।

● केंचुए साफ किए हुए 1 तोला, सूखी जोंक 6 माशा दोनों को पीसकर

सरसों के तैल में मिलाकर मालिश कर सेंक करना भी लाभकारी है । असगन्ध नागौरी, काली मिर्च, सोये के बीज, कड़वी कूट—प्रत्येक सममात्रा में लेकर खूब कूट-पीसकर भैंस के मक्खन में मिला कर 40 दिन तक नियमित लेप लगाना अत्यन्त ही लाभप्रद है । यह अनुभूत योग है ।

रोगिणी को शक्तिवर्धक भोजन, दूध, घी, मक्खन, आम, अनार, सेब और मेवायुक्त दूध यथेष्ट मात्रा में अवश्य खिलायें तथा रोगिणी अपने पति के पास रहे, पति भी उसे घृणा की दृष्टि से न देखकर स्नेहिल प्यार, दुलार का मधुर भाव रखें।

स्तनों का ढीला हो जाना

रोग परिचय—यह रोग शरीर में कफ की अधिकता, स्तनों का बहुत अधिक हिलना-डुलना, स्तनों को बार-बार और अधिक खींचना, अत्यधिक सन्तान होना, स्त्री का बॉडी न पीहनना, शिशु को अधिक समय तक दूध पिलाना इत्यादि कारणों से स्त्री के स्तन युवावस्था में ही ढीले होकर लटक जाते हैं ।

उपचार—सफेद रत्तियां, कसीस, चुनिया गोंद 1-1 तोला मिलाकर स्तनों पर लेप करके उपलों की आग से सेंक करें । मात्र 8-10 दिन के इस प्रयोग से स्तन कठोर हो जाते हैं ।

● फिटकरी, काफूर 1-1 तोला अनार का छिलका 3 तोला को पीस-छानकर आवश्यकतानुसार स्तनों पर पतला-पतला लेप करना भी लाभप्रद है ।

● कच्चे आम (जो चने के आकार के हों) बबूल की बिल्कुल कच्ची फलियाँ, इमली के बीजों की गिरी, अनार का छिलका लें । सभी को छाया में सुखाकर बारीक पीसलें । फिर इसमें डेढ़ तोला घी तथा 5 तोला खांड मिलाकर हलवा बना लें और 40 दिनों तक प्रतिदिन सुबह-शाम खायें । इसके सेवन से ढीले स्तन कठोर हो जाते हैं तथा गर्भाशय से पानी आना भी बन्द हो जाता है । गर्भाशय और स्तन जवान स्त्रियों की भांति हो जाते हैं ।

रोगिणी हर समय बाडी पहने तथा कफ और वातकारी भोजन न खायें ।

स्तन की चूचियों का घाव (Nipple Sore)

रोग परिचय—यह रोग चूंचियों को साफ न करने, दुग्धपान में असावधानी, शिशु द्वारा दुग्धपान करते समय दाँत से काट लेना, रक्तदोष तथा दुग्धपान करने वाले शिशु के मुख पाक हो जाने के कारण स्त्री की चूची में घाव हो जाते हैं । जिनमें प्रायः जलन होती है, शिशु को दुग्धपान कराने में कष्ट होता है, घाव में अधिक दर्द और कष्ट होने पर रोगिणी को ज्वर भी हो जाता है ।

उपचार—घाव को नीम के पत्तों के क्वाथ से धोकर साफ करें और सेलखड़ी, मेंहदी के सूखे पत्ते समभाग पीसकर नारियल के तैल में मिलाकर लगायें ।

रोग अधिक होने पर रक्तशोधक योगों का सेवन करें । जिंक आक्साइड को नारियल के तैल में मिलाकर लगायें या बोरो गिलेसरीन लगायें । शीघ्रपाची व सात्विक भोजन खायें ।

स्तनों में दूध की अधिकता (Galactorrhea)

रोग परिचय—इस रोग में स्त्री के स्तनों में दूध इतनी अधिकता से आने लगता है कि शिशु के दुग्धपानोंपरान्त स्वयं बहने लगता है जिसके कारण स्त्री के स्तनों में बहुत अधिक तनाव उत्पन्न होकर पीड़ा और कष्ट होने लगता है । प्रायः ऐसा भी देखने में आया है कि बिना गर्भ हुए स्तनों में दूध उत्पन्न होने लग जाता है । किन्तु ऐसा उसी समय हो सकता है जबकि मासिक धर्म काफी समय से बन्द हो । इस रोग का कारण रक्त और दूध उत्पन्न करने वाले भोजनों का अत्यधिक सेवन, शिशु का दुग्धपान छुड़वा देना और रक्त का पतला हो जाना, स्तनों को रोकने वाली शक्ति का कमजोर हो जाना इत्यादि है । प्रायः नर्वस स्वभाव की स्त्रियाँ जो अपने बच्चों को अत्यधिक प्रेम करती हैं उनको भी उनके स्तनों में भी बहुत अधिक मात्रा में दूध आने लगता है ।

उपचार—रोगिणी कब्ज न रहने दें और यदि आवश्यक हो तो हल्का-जुलाब लेकर पेट साफ करें ।

● चम्पा के फूल स्तनों पर बाँधते रहने से अधिक दूध उत्पन्न होना कम हो जाता है ।

● तुलसी के बीज, सम्भालू के बीज 1-1 तोला, भांग के बीज 6 माशा तथा इतनी ही मात्रा में मसूर बिना छिलका व काहू के बीज पीसकर 6 माशा की मात्रा में सुबह-शाम ताजा जल से खायें ।

● मुर्दासंग, चपड़ा लाख प्रत्येक 6 माशा को 2 तोला गुलरोगन में मिलाकर स्तनों पर 1 सप्ताह तक लेप लगायें ।

स्तनों में दूध अधिक हो जाने पर 'बेस्ट पम्प' (दवा की दुकानों से खरीदकर) द्वारा दूध निकाल दें । रोगिणी को चने के आटे की नमकीन रोटी, मसूर, मूंग या अरहर की दाल बिना घी के खिलायें ।

स्तनों में दूध घट जाना

रोग परिचय—इस रोग में स्त्री के स्तनों में इतना कम दूध उत्पन्न होता

है कि उसके शिशु का पेट भी नहीं भरता है, शिशु भूख से बेहाल होकर रोता रहता है तथा रोगिणी के स्तन मुरझा जाते हैं । इस रोग का कारण रक्त कम उत्पन्न होना, रक्त विकार, मासिक धर्म की अधिकता, शरीर से किसी भी रूप से रक्त का अधिक निकल जाना, क्रोध, भय, चिन्ता, शिशु से स्त्री का प्यार न करना तथा स्तनों में रक्त संचार की कमी इत्यादि से स्त्री के स्तनों में दूध घट जाता है ।

उपचार—स्तनों पर कैस्टर ऑयल (Castor Oil) की मालिश करें । एलारसिन कम्पनी की टेबलेट लेप्टाडीन (Leptaden) 3 से 4 टिकिया प्रतिदिन गाय या बकरी के दूध से खायें ।

शक्ति-बर्धक योगों व खाद्य एवं पेय पदार्थों का सेवन करें । दूध, घी, मक्खन, मलाई, गेहूँ का दलिया, मूंगफली, बिनौले की खीर इत्यादि अधिक खायें । शतावरी ताजा अधिक मात्रा में खायें तथा शिशु को रात्रि में दुग्धपान की आदत न डालें।

स्तनों में दूध रुक जाना या जम जाना (Retention or Freezing of Milk)

रोग परिचय—यह रोग स्त्री के स्तनों की दूध की नलियों या रक्त वाहिनियों के सुकड़ जाने या उनमें रसूलियां हो जाने, दूध की नलियों में गाढ़ी चिपकने वाली कफ रुक जाने सुद्दा उत्पन्न हो जाने, दूध के बहुत अधिक गाढ़ा हो जाने, स्तनों में बहुत अधिक मांस उत्पन्न होकर स्तनों के अन्दर रक्त वाहिनियों के दब जाने, दूध अधिक मात्रा में उत्पन्न होने और अधिकता के फलस्वरूप नलियों में फँसकर रुक जाने, शिशु के दुग्धपान न करने के कारण स्तनों में अधिक मात्रा में दुग्ध के एकत्र हो जाने तथा अत्यधिक गर्मी के कारण दूध का पानी सूख जाने अथवा अत्यधिक सर्दी के कारण दूध के जम जाने के कारण हो जाया करती है ।

इस रोग में दूध आवश्यकता से अधिक गाढ़ा होकर स्तनों में रुक जाता है और बाहर नहीं निकलता है । यदि काफी समय तक स्त्री के स्तनों में दूध रुका रहे तो वह गन्दा और दूषित होकर संक्रमण उत्पन्न करके ज्वर उत्पन्न कर देता है, स्त्री के स्तन अकड़ जाते हैं तथा अत्यधिक दर्द होता है । कई बार तो पीड़ित स्त्री को इन कष्टों के कारण सन्निपात (सरसाम) तक हो जाता है और कई बार स्तनों में शोथ होकर पककर फोड़ा बन जाता है।

उपचार—गरम पानी में बोरिक एसिड पाउडर मिला कर फलालेन के कपड़े के टुकड़े से हल्की-हल्की टकोर (सेंक) करें । जब दूध पतला हो जाए तो ब्रेस्ट

पम्प से निकाल दें । यदि ज्वर हो तो ज्वर नाशक योग का व्यवहार करें । दर्द के लिए दर्दनाशक योग का सेवन करें ।

● सोये के बीज, मैथी के बीज और जटामांसी समभाग लेकर जल में उबालकर स्तनों को भाप द्वारा सेंककर और इसी से फलालेन के कपड़े के टुकड़े से टकोर करें ।

रोगिणी को आराम से लिटाये रखें एवं उसको साफ स्वच्छ रखें । अधिक चलने-फिरने अथवा हिलने-डुलने न दें । शीघ्रपाची भोजन खिलायें ।

गर्भाशय शोथ (Metritis)

रोग परिचय—यह रोग मासिकधर्म बन्द हो जाने अथवा कम आने, अत्यधिक सम्भोग करने, चोट लग जाने, प्रदर काल में सर्दी लग जाने या ठण्डे पानी से नहाने-धोने अथवा ठण्डी वस्तुओं का सेवन करने, गर्भाशय में तेज औषधियों के स्थानीय प्रयोग, सूजाक, उपदंश तथा प्रसवकाल में असावधानियों के कारण हो जाता है । आधुनिक चिकित्साशास्त्री इस रोग का कारण शोथ उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को मानते हैं ।

इस रोग में (नई शोथ में) पेडू में बहुत तेज दर्द और जलन होती है, सर्दी लगकर ज्वर हो जाता है । बार-बार मल-मूत्र का त्याग होता है । प्यास लगती है, जी मिचलाता है, कमर और सीवन में दर्द होता है । यदि गर्भाशय के पिछले भाग में शोथ अधिक हो तो पाखाना करते समय कष्ट होता है । दो-चार दिनों के बाद पीले रंग का लेसयुक्त पानी आना आरम्भ हो जाता है । फिर 8-10 दिन के बाद लक्षणों में कमी आ जाती है और उचित उपचार से रोगिणी ठीक हो जाती है । किन्तु उचित चिकित्सा व्यवस्था के अभाव में यह रोग पुराना हो जाता है ।

गर्भाशय की पुरानी शोथ में ज्वर नहीं होता है, किन्तु पेडू पर बोझ प्रतीत होता है, हल्का-हल्का सिर दर्द रहता है तथा शोथ के स्थान पर ऊपर से उभार दिखलायी पड़ता है । शोथ जितना अधिक पुराना होता जाता है, उतनी ही दर्द में कमी और पेडू में सख्ती होती चली जाती है । शोथ होने पर दशा इसके विपरीत होती है । रोगिणी को अजीर्ण हो जाता है । मासिक अनियमित रूप में आता है तथा पीड़ित स्त्री कमजोर हो जाती है ।

उपचार—अशोकारिष्ट 2 से 4 छोटे चम्मच तक बराबर जल मिलाकर भोजन के बाद दिन में 2 बार पिलायें । इसके निरन्तर सेवन से गर्भाशय-शोथ

व गर्भाशय की निर्बलता (कमजोरी) और प्रदर सम्बन्धी रोग दूर होकर गर्भाशय शक्तिशाली होकर बांझ स्त्रियों तक को गर्भ ठहर जाता है ।

● ब्रान्डी (शराब) और जैतून का तैल सम मात्रा में मिलाकर साफ डाक्टरी वाली रूई डुबोकर गर्भाशय के मुख में रखना लाभप्रद है ।

● हरी मकोय के पत्तों का भुर्त्ता 1 तोला, मुनक्का बीज 5 दाना, बादाम की गिरी के छिलका रहित 5 नग पीसकर 1 अण्डे की जर्दी में मिलाकर गर्भाशय के मुख के पास रखना लाभकारी है ।

● नीम के पत्ते 1 तोला, मैथी के बीज 6 माशा, अलसी 6 माशा, अन्जीर 2 नग और मधु 2 तोला लें । इन्हें आधा सेर पानी में उबालकर इस क्वाथ डूश या टकोर करने से गर्भाशय शोथ पककर यदि उसमें पीप पड़ जाए तो पीप को निकालने के लिए लाभप्रद है । रोगिणी को अधिक परिश्रम और सम्भोग से बचायें तथा शीघ्रपाची पौष्टिक भोजन दें

नोट—गर्भाशय शोथ को आराम आ जाने पर भी मासिक धर्म आने के समय दोबारा शोथ होने का भय रहता है । अत: मासिक आने से कुछ दिन पूर्व पीड़ित स्त्री को गर्भाशय को शक्ति प्रदान करने वाले खाने और योनि में रखने की औषधियों का प्रयोग प्रारम्भ कर देना चाहिए । रोगिणी अत्यधिक कमजोर हो तो च्यवनप्राश या मकरध्वज वटी और गर्भाशय को शक्ति प्रदान करने वाली औषधियों का सेवन करते रहना चाहिए ।

गर्भाशय की बवासीर, गर्भाशय-अर्श

रोग परिचय—इस रोग में गर्भाशय के मुख पर छोटे-छोटे गोल मस्से हो जाते हैं । ये मस्से बढ़कर शहतूत की भाँति लटक जाते हैं । यह दशा 'पोलीपस ऑफ यूट्रस' कहलाती है । इसमें गर्भाशय के मुख में जलन, खुजली, दबाव और दर्द होता है तथा रक्त आने लगता है । रक्त आने के पश्चात सफेद, लाल या काला सा पानी आने लगता है । उसके बाद कष्ट कम हो जाते हैं किन्तु मासिक धर्म के समय से कष्ट बढ़ जाते हैं । यह रोग गर्भाशय के मुँह की भीतरी झिल्ली में खराश रहने से वहाँ के रक्त-वाहिनियों में रक्त एकत्रित हो जाने से होता है जिसके फलस्वरूप वह फूल जाता है । इस खराश का कारण मासिक बन्द हो जाना अथवा रुक जाना होता है । गर्भाशय की शोथ और डिम्बाशय की शोथ तथा कफ के दोषों के कारण भी यह रोग हो जाया करता है । ऐलोपैथी के चिकित्सक आप्रेशन करके **इन मस्सों** को काट देते हैं ।

उपचार—शुद्ध गूगल, नीम के बीज की गिरी, बकायन (महानिम्ब) के बीजों

की गिरी, रसौत, चाकसू (बिना छिलका) काली मिर्च और शुद्ध गन्धक सभी औषधियों को सममात्रा में लें । उन्हें कूट-पीसकर कुकरोंदा के रस में जंगली बेर के समान गोली बनाकर सुरक्षित रख लें । यह 1-1 गोली सुबह-शाम खायें । साथ में निम्न मरहम बनाकर मस्सों पर लगायें ।

● कछुआ की जलाई हुई हड्डी 3 माशा, कत्था सफेद 3 माशा, मुर्दासंग और सफेदा 6-6 माशा बारीक पीसकर मधुमक्खी का मोम 6 माशा और तिलों का तैल (जिसमें गुलाब के फूल जला लिये गए हों) 1 तोला को पिघलाकर इसमें एक आधे अण्डे की जर्दी मिलाकर भली-भांति खरल करके मरहम बनाकर उपयोग में लायें ।

गर्भाशय की रसूली

रोग परिचय—वैसे शरीर के प्रत्येक भाग में रसूली हो सकती है और रसूलियाँ भी विभिन्न प्रकार की होती हैं । गर्भाशय की रसूलियां तन्तुओं (रेशों) युक्त हुआ करती हैं । कई में चर्बी जैसा पदार्थ और कई में अण्डे की सफेदी जैसा लेसदार स्राव होता है । कई रसूलियों में पीले रंग का गाढ़ा स्राव होता है । कई रसूलियाँ लाल रंग की होती हैं जिसमें पेशाब जैसा खट्टा पदार्थ होता है । जिनकी संरचना स्पंज जैसी होती है और बहुत छोटी होती है, उनको डाक्टरी में पोलीवी (Polypi) कहा जाता है । इनसे रक्त भी आ सकता है । यह रोग रक्त के गाढ़ा हो जाने, उपदंश-दोष, कफ-विकार आदि कारणों से हो जाया करता है । इसके कारण बांझपन और गर्भपात का रोग भी हो जाता है । इस रोग का साधारण लक्षण मासिक बन्द हो जाना या अनियमित रूप से आना है ।

इस रोग के कारण स्त्री को रक्त अल्पता और श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) का रोग हो जाता है । ल्यूकोरिया स्वयं में कोई स्वतंत्र रोग नहीं है बल्कि विभिन्न रोगों के फलस्वरूप हो जाया करता है । अत: ल्यूकोरिया की उचित चिकित्सा भी यही है कि रोग के मूल कारण को ही दूर किया जाये । जो वैद्य ल्यूकोरिया को स्वतंत्र रोग मानकर चिकित्सा करते हैं उन्हें असफलता का मुख देखना पड़ता है।

पोलीपी जैसी छोटी-छोटी रसूलियां हो जाने पर सम्भोग क्रिया में तथा पाखाना करते समय जोर लगाने पर इनसे रक्त आने लगता है । कभी-कभी डिम्बाशय और वृक्कों की टोपी में भी रसूलियाँ हो जाती हैं जिनका प्रमुख लक्षण मासिक बन्द हो जाना, स्तन मुरझा जाना, चर्म के नीचे की चर्बी का घुल जाना, क्लोटोरिस

(योनि में स्थित भंगाकुर या कामकेन्द्र) का बढ़ जाना और अधिक बालों का पैदा हो जाना है। संक्षेप में इन रसूलियों के कारण स्त्रियों में पुरुषों के गुण और स्वभाव उत्पन्न हो जाते हैं इन रसूलियों को Arrheno-Blastoma कहा जाता है।

उपचार—आयुर्वेद की शास्त्रीय योग—कांचनारादि गुग्गुल, मुन्डी बूटी अर्क के साथ निरन्तर काफी लम्बे समय खाते रहने से रसूलियाँ घुल जाती हैं। रोगिणी वातकारी और कफकारी भोजनों का पूर्णत: सख्ती से परहेज रखें।

गर्भाशय में पानी पड़ जाना

रोग परिचय—इस रोग में गर्भाशय के अन्दर पतला स्राव एकत्रित हो जाता है। आरम्भ में पेड़ू के ऊपर उभार प्रतीत होता है और अन्त में जब तरल काफी अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाता है तब रोगिणी का पेट जलोदर रोग की भाँति हो जाता है। पेट के अन्दर पानी की लहरें प्रतीत होती हैं। पीड़ित स्त्री कमजोर हो जाती है, उसकी सांस रुकने लगती है तथा हाजमा खराब हो जाता है। पेट में वायु (गैस) चलने लगती है। मासिक बन्द हो जाता है और गर्भ ठहर जाने जैसा सन्देह होने लगता है। जलोदर रोग में पेट, यकृत् और नाभि के आस-पास का भाग बढ़ता है जबकि इस रोग में पेट पेड़ू के स्थान से बढ़ना प्रारम्भ होता है। जलोदर रोग के विपरीत इस रोग में मूत्र भी अधिक मात्रा में आता है। यह रोग मासिक बन्द हो जाने, शरीर में कफ की अधिकता, यकृत् विकार तथा गर्भाशय और वृक्कों की कमजोरी इत्यादि के कारण हुआ करता है।

उपचार—डाक्टर 'ट्रोकार यन्त्र' द्वारा गर्भाशय का पानी निकाल लेते हैं। पुनर्नवारिष्ट का सेवन लाभप्रद है। इस बूटी का रस प्रयोग करना भी लाभप्रद है।

● अजमोद, सोये के बीज, बायविडंग, खुश्क बेरोजा, लाहौरी नमक और नर- कचूर प्रत्येक औषधि का चूर्ण समान मात्रा में लेकर पतले साफ कपड़े में ढीली पोटली बनाकर रात को गर्भाशय के पास प्रतिदिन रखवायें। इससे गर्भाशय का पानी खुश्क हो जाता है।

● बकरी की मेंगनियों की राख, अंगूर की लकड़ी की राख 1-1 तोला, गन्धक आमलासार 6 माशा, उपलों की राख 1 तोला पानी में पीसलें। फिर विशुद्ध 2 तोला सिरका मिलाकर मामूली गरम करके पेड़ू पर लेप करना अत्यधिक लाभप्रद है।

● रोगिणी वायुकारक भारी भोजन न खाये। मकोय (काकमाची) का साग, भुना हुआ मांस, भुनी हुई मूंग की दाल, मूली, शलजम आदि की सब्जियाँ खायें।

प्यास में मकोय का अर्क पिलायें तथा प्यास को रोकने की कोशिश करें। शक्ति के अनुसार व्यायाम करें। पेय पदार्थ कम से कम मात्रा में सेवन करें। लोहे में बुझाया हुआ पानी बहुत कम मात्रा में पीना लाभप्रद है।

गर्भाशय का उलट या फिसल जाना

रोग परिचय—यह रोग स्त्रियों को अति दु:खदायी होता है। यदि एकाएक गर्भाशय पलट या फिसल जाये तो अत्यधिक मात्रा में रक्तस्राव हो जाता है, जिसके फलस्वरूप रोगिणी के हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं, शरीर का रंग पीला पड़ जाता है तथा बेहोशी हो जाती है। माथे पर ठण्डा पसीना आता है, पेड़ू से कोई चीज निकलती हुई महसूस होती है और कई बार तीव्र ऐंठन भी होती है। पेड़ू, गुदा, कमर, जाँघों और पिन्डलियों में तीव्र दर्द होता है। अक्सर रोगिणी को ज्वर भी हो जाता है। कभी-कभी मल-मूत्र रुक जाता है। यदि अंगुली प्रवेश करने पर गर्भाशय के मुख के खुले भाग से गर्भाशय फँसा हुआ हो तो यह समझ लेना चाहिए कि गर्भाशय पूर्णरूपेण उलट चुका है। यदि गर्भाशय की गर्दन बाहर आ जाए तो उसका छेद भी दिखलाई देता है। गर्भाशय बाहर आ जाने पर आंवल बाहर आ जाने का भी सन्देह हो सकता है। इसलिए यदि निकली हुई वस्तु छोटी प्रतीत हो और रक्त वाहिनियाँ दिखलायी दें तो पक्के तौर पर आंवल (कमल) ही समझें। यदि इसके विपरीत दशा हो तो उसको गर्भाशय समझें। गर्भाशय उलट जाने के मुख्यत: 4 प्रकार होते हैं।

(अ) पलटे हुए गर्भाशय का भाग गर्भाशय की ग्रीवा तक आ जाता है। ऐसी स्थिति में योनि में अंगुली प्रवेश कर निरीक्षण करना असम्भव होता है।

(आ) पलटा हुआ भाग गर्भाशय के मुख तक आ जाता है। उसका योनि में अंगुली डालने से पूर्णरूपेण पता चल जाता है। इसका निरीक्षण आसान है।

(इ) इस स्थिति में पूर्णरूपेण गर्भाशय फिसलकर योनि के बाहरी छेद के समीप आ जाता है और योनि-कपाट के अन्दर गोल सी वस्तु फँसी हुई महसूस होती है।

नोट—यदि इस स्थिति में योनि के अन्दर अंगुली डाली जाए तो गर्भाशय नीचे आ जाने के कारण अंगुली अन्दर नहीं जा सकती है।

(ई) इस स्थिति में गर्भाशय उलटकर बाहर निकल आता है और यदि एकाएक ऐसा हो जाये तो इसके परिणाम अत्यन्त ही गम्भीर हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में रोगिणी को बगैर बिलम्ब किए किसी पास के राजकीय महिला चिकित्सालय में ले जाना चाहिए।

यह रोग प्रसव समय में गर्भाशय में तीव्र ऐंठन हो जाने से आँवल अथवा मृत शिशु को अनुचित विधि से खींचकर बाहर निकालने से, गर्भाशय से बहुत अधिक रक्तस्राव होते रहने से, उनके बन्धन ढीले पड़ जाने के कारण तथा प्रसव के समय या गर्भपात के बाद स्त्री का जल्दी घरेलू काम करने लग जाने से, चूतड़ के बल गिर पड़ने से, अकड़कर या बैठकर मैथुन (सम्भोग) क्रिया करने से, रसूलियां हो जाने से, भारी बोझ उठाने से, अत्यधिक उछलने-कूदने से तथा पुरानी कब्ज के कारण हो जाता है ।

उपचार—1 चम्मच ब्रान्डी (शराब) और 5 बूँद टिंचर नक्सवोमिका (होम्योपैथिक औषधि) दूध में मिलाकर पिलाना लाभप्रद है । ब्रान्डी (शराब) को दो गुने गरम पानी में भली-भाँति मिलाकर और ठण्डा करके गर्भाशय में डूश करें तदुपरान्त ओलिव आयल और ब्रान्डी सममात्रा में मिलाकर साफ रुई का फोहा डुबोकर गर्भाशय के मुख में रखें । रोगिणी को शक्तिबर्धक योग (टॉनिक) अवश्य सेवन कराते रहें । सर्वप्रथम हाथों को किसी एन्टीसैप्टिक लोशन से भली प्रकार स्वच्छ कर अँगुलियाँ योनि में डालकर (किसी प्रशिक्षित नर्स अथवा रजि. महिला चिकित्सक द्वारा ही गर्भाशय को ठीक अवस्था में करके डाक्टरी रुई की गोल गद्दी बनाकर नीचे लिखे योग में गीला करके उसको गुलाब के फूल के तैल से चिकना करके योनि के ऊपरी भाग में रखवायें ।

योग—बबूल के वृक्ष से निकलने वाला (काला सा) गाढ़ा स्राव कुन्दर गोंद, बड़ी मांई, हरे माजू, सीता सुपारी, सभी सम मात्रा में लेकर माजू के क्वाथ में मिलाकर, रुई की गद्दी को इस औषधि में भली-भाँति गीला (तर) करके, इसको गुल रोगन में चिकना करके गभशिय के मुख के पास रखवायें तथा रुई की दूसरी गद्दी इसी औषधि में डुबोकर योनि के बाहर रखवा कर लंगोट बांधें । रोगिणी चूतड़ों के नीचे तकिया रखकर प्रभावित अंग को ऊँचा रखें और 24 घंटे इसी स्थिति में लेटी रहे, हिले-डुले नहीं । इस अवस्था में मूत्र को डाक्टर द्वारा कैथेटर डलवाकर निकलवायें । दूसरे दिन किसी कीटाणुनाशक (एन्टीसैप्टिक) औषधि डेटाल इत्यादि से सफाई करके फिर इसी क्वाथ में (पूर्व की भांति) नई रुई की नई गद्दियां रखवाकर लँगोट बांधें । रोगिणी को कब्ज नहीं रहना चाहिए—इस हेतु 2 तोला कैस्टर आयल को 2 तोला दूध में मिलाकर पिलायें । जब तक गर्भाशय अपने स्थान पर भली प्रकार न आ जाये तब तक रोगिणी को चलने-फिरने, हिलने-डुलने और काम करने से रोकें ।

● शराब और देवदारु का तैल समभाग में मिलाकर, साफ रुई में डुबोकर, गद्दी बनाकर, रखने से भी गर्भाशय को अपने स्थान पर रखने हेतु प्रयोग किया जा सकता है । यह योग भी अत्यन्त लाभप्रद है । यदि रसूली के कारण पीड़ित स्त्री को यह रोग हो तो—मुनक्का (बीज रहित) 15 दानें, बन्दगोभी के पत्ते, मकोय के पत्ते, कुकरौंदा के पत्ते समभाग लें । सभी की लुग्दी बनाकर 1-1 तोला की मात्रा में पीसकर देवदार के 1 तोला तेल में मिलाकर गर्भाशय के मुख के पास रखवायें, अत्यन्त ही लाभप्रद योग है ।

रोगिणी को आराम से लिटाये रखें । आरम्भ में भोजन बिल्कुल ही न खिलायें। कुछ आराम आ जाने के बाद दूध या पके मांस का रस (शोरबा) इत्यादि पेय पदार्थ सेवन करायें ।

गर्भाशय का फूल जाना

रोग परिचय—इस रोग में गर्भाशय के अन्दर गैस (वायु, हवा) भर जाती है अथवा गैस उत्पन्न हो जाती है, जिसके कारण गर्भाशय फूल जाता है । पेडू के स्थान पर उभार और तनाव प्रतीत होता है । इस उभार पर हाथ की थपकी मारने से ढोल जैसी आवाज आती है । रोगिणी के स्तनों में दर्द होता है । वायु के फिरने से पेडू, जाँघ के जोड़ और उदर में खिंचाव के साथ तीव्र वेदना होती है । सम्भोग के समय गर्भाशय से वायु निकलने की आवाज आती है । सामने की ओर झुकने पर तथा पाखाना के समय जोर लगाने पर अथवा खाँसने पर गर्भाशय से वायु निकला करती है । वायु की अधिकता के कारण मूत्र कम मात्रा में तथा बार-बार आया करता है । मल त्याग, कठिनाई और मरोड़ के साथ होता है । जब वायु से सारा पेट फूल जाता है, तब यह जलोदर के समान दिखलाई देने लगता है। याद रखें कि जलोदर रोग होने पर पहले पेट फूलता है जो धीरे-धीरे पेडू तक पहुँचता है और इस स्थिति के ठीक विपरीत गर्भाशय फूल जाने पर अफारा पहले पेडू से प्रारम्भ होकर पेट की ओर बढ़ता है । गर्भ होने पर पेट को ठोकने पर ठोस आवाज आती है और गर्भाशय के अफारा (फूल जाने में) ढोल जैसी आवाज आती है । गर्भ होने पर बच्चे की गति में भारीपन और गर्भाशय में वायु (गैस) हिलने पर हल्कापन प्रतीत होता है ।

इस रोग के प्रमुख कारण—गर्भाशय की कमजोरी, शरीर में शक्ति और गर्मी का घट जाना, गर्भपात के बाद गर्भाशय के अन्दर आंवल का टुकड़ा रह

जाने और संक्रमण हो जाने, गर्भाशय अधिक सर्द हो जाने या उसमें कफ की अधिकता हो जाने अथवा प्रदर या प्रसव के बाद गन्दा पदार्थ एकत्रित हो जाने और वायुकारक भोजनों के अधिक खाने आदि के कारण यह रोग हो जाया करता है।

उपचार—रोगिणी को शक्तिवर्धक योग तथा भोजन दें।

● घी में भुनी हींग, सेंधा नमक, जीरा, काला जीरा, अजमोद, सोंठ, पिप्पली काली मिर्च लें। इन सभी औषधियों को अलग-अलग कूट-पीसकर बराबर मात्रा में मिलाकर सुरक्षित रखें। इसे 5 से 15 रत्ती की मात्रा में दिन में 2 से 4 बार गर्म पानी से खिलायें। यह योग बाजार में (हिंगवष्टक चूर्ण) के नाम से आता है। इस चूर्ण के सेवन से गर्भाशय और पेट की वायु निकल जाती है, मासिक दर्द से आना, अजीर्ण, खट्टे डकार, पेट दर्द और आमाशय और अन्तड़ियों के दूसरे रोग नष्ट हो जाते हैं। बच्चा उत्पन्न होने के बाद इसका सेवन कराते रहने से प्रसव के बाद होने वाले दर्दों और कष्टों को आराम आ जाता है तथा गर्भाशय आसानी से सिकुड़कर अपने प्राकृतिक स्थान पर आ जाता है। मासिकधर्म दर्द और कष्ट से आने की स्थिति में इस चूर्ण को स्राव आने के 7-8 दिन पूर्व से ही खिलाना प्रारम्भ कर देना चाहिए।

रोगिणी को कब्ज न होने दें तथा उसके पेडू और पेट पर निम्न योग की टकोर (सेंक) करें—सोंठ और देशी अजवायन 6-6 माशा आटे की भूसी 1 तोला काला जीरा 3 माशा सभी को कूट पीसकर कपड़े की 2 पोटलियों में बाँधकर गरम तवे पर रखकर बारी-बारी से गरम-गरम टकोर करें।

● सौंफ, काला जीरा, अजमोद, सोये के बीज को पीसकर कपड़े से छानें। मधु में मिलाकर गर्भाशय के मुख के पास रुई में भिगोकर रख दें।

● सौंफ, सूखा पोदीना, अकरकरा, नरक चूर, अजमोद, वच, जायफल, पिप्पली दालचीनी (प्रत्येक 6-6 माशा) रूमी मस्तंगी 1 तोला छोटी इलायची के बीज 3 माशा सभी औषधियों को अलग-अलग पीसकर 3-3 माशा की मात्रा में सुबह-शाम पानी से खिलायें। अत्यन्त लाभप्रद योग है।

रोगिणी को वातकारी और भारी भोजनों से परहेज रखवायें। अरहर की दाल तथा पके मांस का रस पिलायें।

गर्भाशय की दुर्बलता

रोग परिचय—पोषण के अभाव में गर्भाशय से दुर्बल हो जाता है और इसकी कार्य क्षमता घट जाती है, जिसके फलस्वरूप मासिक भी कम आता है

तथा गर्भ ठहरने को सम्भावनाएं भी कम हो जाती हैं। इस रोग का कारण जन्म से ही गर्भाशय में विकृति, पोषण का पूर्ण अभाव, हर समय उदासीनता और मनोमालिन्य के कारण शरीर सूखकर काँटा हो जाने, बहुत अधिक समय तक सम्भोग क्रिया से वंचित रहने के कारण गर्भाशय में उत्तेजना का अभाव होने, अत्यधिक चिन्ता तथा बाल्यावस्था में विवाह होने से गर्भाशय कमजोर हो जाता है।

उपचार—रोगिणी को हर प्रकार से खुश रखें। पौष्टिक और सुमधुर स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ खिलायें। दुख चिन्ता, क्रोध से बचायें। सुख प्रदान करने वाले खेल, मनोरंजन तथा विभिन्न प्रकार के आमोद-प्रमोद में व्यस्त रखें।

● मूसली पाक 1 तोला और अश्वगन्धादि चूर्ण 2 माशा एक साथ गाय के गरम दूध से सुबह-शाम सेवन कराना अत्यधिक लाभप्रद है। अतिबला, मुलहठी, बरगद की जटा, खिरैटी, मिश्री तथा नागकेशर प्रत्येक को बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण कर लें फिर इसे 3 माशा की मात्रा में 6 माशा मधु और 12 माशा गाय का घी और पाव भर गाय के दूध के साथ सुबह-शाम सेवन करायें। दशमूलारिष्ट और बलारिष्ट 1-1 तोला की मात्रा में समान जल मिला कर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पिलाना भी अतीव गुणकारी है। अश्वगन्धारिष्ट 2 तोला की मात्रा में बराबर जल मिलाकर शाम को हल्के नाश्ते के बाद पिलाना लाभप्रद है।

गर्भाशय का बढ़ जाना अथवा छोटा हो जाना

रोग परिचय—गर्भाशय बढ़ना, कई प्रकार का होता है :— गैस भर जाने के कारण गर्भाशय की दीवार में चर्बी जमा हो जाने के कारण, गर्भाशय की सूजन के कारण, गर्भाशय में घाव हो जाने के कारण, बार-बार (अत्यधिक) बच्चों को जन्म देने के कारण, गर्भाशय प्राकृतिक आकार से बड़ा हो जाता है जिसके कारण पीड़ित स्त्री को अन्दर से भारीपन प्रतीत होता है। आघात लग जाने तथा उसके पुनः प्राकृतिक स्थिति में नहीं आने, दुर्बलता आदि कारणों से भी गर्भाशय बढ़ जाया करता है।

यदि किसी स्त्री का बचपन से ही गर्भाशय छोटा हो तो आरम्भ से ही मासिक कम मात्रा में आता है अथवा बिल्कुल ही नहीं आता है और विवाह के पश्चात् भी यही स्थिति बनी रहती है। स्त्री को गर्भ नहीं ठहरता। यदि ठहर भी जाए तो गर्भपात हो जाता है। इस रोग का मुख्य कारण जन्मजात दोष, गर्भाशय का पूर्ण रूप से पोषण न होना, गर्भाशय की रचना किसी कारण से नष्ट हो जाना,

स्त्री का सम्भोग क्रिया से विरत रहना, गर्भाशय घाव से भर जाना, मैथुन क्रिया की अधिकता, ग्रन्थि दोष तथा गर्भाशय का सिकुड़ जाना इत्यादि है ।

उपचार—गर्भाशय बढ़ जाने पर शोथ नाशक तथा शक्तिवर्धक योगों के सेवन से आराम आ जाता है । गर्भाशय के छोटा हो जाने पर 'सुपारी पाक' अथवा असगन्ध को पीसकर घी में मिलाकर काफी लम्बे समय तक निरन्तर सेवन कराते रहने से गर्भाशय अपनी प्राकृतिक साइज में आ जाता है ।

गर्भाशय में दर्द

रोग परिचय—गर्भाशय में अत्यधिक मात्रा में रक्त एकत्रित हो जाने, गर्भाशय शोथ, गर्भाशय के घाव, कैन्सर, गर्भाशय का अपने स्थान से हट जाना, झुक जाना, गर्भाशय की बबासीर, अफारा, बच्चा जनने में अधिक कष्ट, मासिक धर्म का कम अथवा अधिक मात्रा में आना, आँवल रुक जाना, गर्भाशय में तरल इकट्ठा हो जाना, गर्भाशय में रसूली हो जाना तथा एलर्जी इत्यादि कारणों से स्त्रियों के गर्भाशय में तीव्र कष्ट व दर्द हो जाया करता है ।

उपचार

● खशखश 2 तोला और खुरासानी अजवायन 2 माशा को सवासेर पानी में उबालकर छानकर मामूली गरम पानी से डूश करें । लाभप्रद है । नीम के पत्ते कूटकर लुगदी बनाकर गरम-गरम पेडू पर टकोर करना भी अत्यधिक लाभप्रद है।

● सौंफ 6 माशा, धनिया 6 माशा, अरन्ड की छाल 6 माशा, सौंठ 3 माशा आधा सेर पानी में उबाल लें । चौथाई पानी शेष रह जाने पर मल-छानकर पिलाना बच्चा होने के समय में लाभकारी है ।

झूठा गर्भ

रोग परिचय—इस रोग में स्त्री का पेट गर्भवती स्त्रियों की भाँति दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला जाता है, जिसके कारण गर्भ का सन्देह हो जाता है । मासिक धर्म बिल्कुल बन्द हो जाता है अथवा अल्प मात्रा में अनियमित रूप से आता रहता है । गर्भाशय का मुख बन्द हो जाता है । रोगिणी का चेहरा निस्तेज तथा स्तनों की चूंचियों का चारों ओर का घेरा काला सा हो जाता है । अजीर्ण, अंग टूटना, सुस्ती होकर पेट में गैस (वायु) चलने लगती है । प्राय: चौथे मास से गर्भाशय में वायु के कारण गति (हरकत) प्रतीत होने लगती है । संक्षेप में गर्भ होने के लगभग

समस्त लक्षण दिखलायी पड़ते हैं । यह रोग गर्भाशय के अन्दर दूषित पदार्थ और तरल के एकत्रित हो जाने, गर्भाशय की पूरी रचना या उसके भाग में बहुत अधिक शोथ हो जाने अथवा रक्त जमकर लोथड़ा बन जाने और निरन्तर रक्त लगकर जमते रहने से लोथड़े का बड़ा होते चले जाना, हिस्टीरिया रोग होना आदि कारणों से यह रोग उन युवा (जवान) स्त्रियों को हो जाता है—जिन्हें सन्तानोत्पत्ति की तीव्र लालसा होती है ।

असली और नकली गर्भ की पहचान

यदि गर्भाशय में जमे हुए रक्त का गाढ़ा लोथड़ा हो, जो प्राय: मासिक धर्म बन्द हो जाने के कारण बन जाता है तो स्त्री का पेट नरम होने की अपेक्षा अधिक सख्त होता है और उसमें भ्रूण की भाँति गति नहीं होती है ।

यदि गर्भाशय में दूषित तरल एकत्रित हो गया हो तो पेट के दांये और बांये दोनों ओर हाथ रखकर थपकने पर दूसरे हाथ को पानी की लहरें प्रतीत होती हैं।

यदि गर्भाशय में वायु एकत्रित हो गई हो तो थपकने (थपकी देने) पर ढोल जैसी आवाज सुनाई पड़ती है ।

यदि स्त्री को क्लोरोफार्म सुंघाकर बेहोश किया जाये (यह बड़े-बड़े चिकित्सालयों में ही सम्भव है) तो पेट की मांस पेशियां ढीली पड़ जाती हैं । जिससे पेट का उभार जाता रहता है परन्तु होश में आने पर उभार दोबारा निकल आता है किन्तु असली गर्भ होने पर ऐसा नहीं होता है ।

उपचार—रोग के मूल कारण का उपचार परम आवश्यक है ।

यदि मासिक न आने के कारण रोग हो तो रज: प्रवर्तनी वटी अथवा हिंग्वाष्टक चूर्ण अथवा अन्य मासिक धर्म लाने वाले योगों का प्रयोग करें, रोग ठीक हो जाएगा।

यदि गर्भाशय में शोथ के कारण यह रोग हो तो—उसकी चिकित्सा करें। यदि रक्त जम जमकर लोथड़ा बन गया हो मासिक जारी करने वाली तथा मृत बच्चा निकालने वाली तेज असरकारक औषधियों का प्रयोग करें ।

कलिहारी की जड़ पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से बन्द माहवारी खुल जाती है । कपास की जड़ों का क्वाथ पिलाते रहने से भी प्रदर जारी हो जाता है और मृत बच्चा बाहर निकल जाता है । दूषित पदार्थ जुलाब द्वारा निकालने वाले योग पिलाने से 2-4 दस्त आकर गर्भाशय साफ हो जाने से यह रोग दूर हो जाता है । अपामार्ग (चिरचिटा या ओंधा) की जड़ साफ करके 4-5 अंगुल

की लम्बाई में काट लें। इसके एक सिरे पर मजबूत धागा बाँधकर इस जड़ को पीड़ित स्त्री की योनि में रख देने से (डोरी वाला धागा नीचे की ओर योनि से बाहर लटकता रहे) कुछ ही मिनटों में मृत बच्चा गर्भ से बाहर आ जाता है। बच्चे के बाहर आते ही धागे को खींचकर तुरन्त ही बाहर निकल लें, देरी न करें अन्यथा स्त्री का गर्भाशय भी बाहर निकल आयेगा। आयुर्वेद का अद्भुत प्रयोग (योग) है। चीरा-फाड़ी के स्थान पर शल्य चिकित्सकों को हैरत में डालने वाला ईश्वरीय चमत्कार है किन्तु जड़ी ताजा होना आवश्यक है।

देसी अजवायन, बाबूना, कूट प्रत्येक 6-6 माशा। एलुवा, गुग्गुल, सुहागा 3-3 माशा। हरी मकोय और कुकुरौंदा के रस में पीसकर 2 तोला सिरका मिलाकर गरम-गरम पेट और पेड़ू पर लेप लगाते रहने से और निम्नलिखित बत्तियाँ गर्भाशय के मुख में रखने से भी यह रोग हो जाता है।

बत्ती बनाना

हींग, काली कुटकी, बड़ी मांई, सूखा बेरोजा, वायविंडग, सभी औषधियाँ सममात्रा में पीसकर (घृतकुमारी) के गूदे में खरल करके 3 अंगुल बत्तियाँ बनाकर सुखालें। इन बत्तियों को गर्भाशय के मुख में रखने से गर्भाशय का मुख खुल जाता है और मृत बच्चा या जमे रक्त या मांस का लोथड़ा या आँवल निकल जाता है तथा काफी समय से बन्द मासिक स्राव जारी हो जाता है।

दूषित गर्भ

रोग परिचय—इस रोग से ग्रसित स्त्रियों को बार-बार गर्भपात हो जाया करता है। मृत शिशु उत्पन्न होता है। प्रत्येक बार कुरूप अथवा विभिन्न पशुओं की आकृति का बच्चा उत्पन्न हुआ करता है अथवा बच्चा उत्पन्न हो चुकने पर किसी रोग से बच्चा मर जाता है। इस रोग के कारण हैं—पति या पत्नी को सुजाक अथवा उपदंश होना, गर्भाशय में खराबी होना, पुरुष (पति) के शुक्र कीटों की कमज़ोरी अथवा खराबी, स्त्री में रक्त विकार होना, मासिक धर्म के दिनों में गर्भ रह जाना, स्त्री का दिमाग खराब होना, मासिक आ चुकने अथवा सम्भोग के समय बुरी आकृतियों, भयानक जीवों और पशुओं का विचार करना और कई बार अकारण (बगैर किसी कारण का पता चले) यह रोग हो जाया करता है।

यदि किसी विशेष समय में गर्भपात होता है तो गर्भपात के तमाम लक्षण स्पष्ट प्रतीत होते हैं। अद्भुत आकृति या पशु समान गर्भ होने पर गर्भाशय में

उसकी गतियाँ बच्चे से भिन्न हुआ करती हैं। यदि भ्रूण अत्यधिक कमजोर हो तो कमजोरी के कारण गर्भाशय में उसकी गति प्रतीत नहीं होती या उसकी गति बहुत कमजोर होती है। इस रोग में पीड़ित प्राय: स्त्री सुस्त और बेचैन रहती है, उसके अंग घटते रहते हैं। गर्भ के समय उसको कोई-न-कोई रोग होता है, किन्तु कई बार कोई लक्षण स्पष्ट प्रतीत ही नहीं होता है।

उपचार—गर्भ होने से पूर्व ही वास्तविक (मूल) कारण को जानकर उसका उपचार करें। यदि गर्भाशय में खराबी हो तो उसका उपचार करें।

नोट—पति या पत्नी को सुजाक अथवा उपदंश होने पर यह रोग बार-बार हो जाता है। यदि किसी को किसी भी समय यह रोग रह चुके हों तो इनके प्रभाव जीवनभर रहते हैं और पुरुषों के शुक्रकीटों तथा स्त्रियों के अण्डों में दोष आ जाता है। ऐसी स्थिति में रक्त शोधक औषधियां यथा—मन्जिष्ठाहि क्वाथ, सारवाद्यारिष्ट काफी लम्बे समय तक प्रयोग कराने से तमाम रक्तदोष नष्ट हो जाते हैं। किन्तु इस औषधि सेवन काल में पति-पत्नी मैथुन न करें। गर्भ ठहर जाने पर सुपारी पाक और अशोकारिष्ट का काफी लम्बे समय तक स्त्री के सेवन करते रहने से भी गर्भाशय की खराबियां दूर होकर यह रोग दूर हो जाता है। चिकित्सा काल में संभोग न करें। तमाम वातकारक और रक्त को खराब करने वाली खट्टी वस्तुऐं बिल्कुल ही न खायें। गेहूँ का दलिया, बकरी के मांस का शोरबा, आधा उबला (हाफ बाइल) अण्डा, शलजम, परवल, टमाटर, दूध, अंगूर, अनार, मौसमी इत्यादि खायें। स्त्री को सुन्दर-सुन्दर मन को लुभाने वाले आकर्षक चित्र दिखायें और वह सम्भोग के समय और मासिक आ चुकने पर सुन्दर वस्तुओं को देखे तथा मन में भी सुन्दर विचार-भाव रखें।

गर्भाशय-आवरण-शोथ

रोग परिचय—उदरस्थ झिल्ली के उस भाग में सूजन आ जाती है जिसका सम्बन्ध गर्भाशय से होता है। इस रोग का कारण गर्भाशय की रचना का कमजोर हो जाना, गर्भाशय में अधिक मात्रा में रक्त एकत्रित हो जाना, सुजाक या उपदंश रोग हो जाना, अस्पताल में आप्रेशन करते समय और यन्त्र प्रवेश कराते समय चिकित्सक द्वारा असावधानी हो जाना, गर्भाशय, डिम्बाशय और फेलोपियन ट्युबों में शोथ आ जाने और उनमें रसूलियाँ हो जाने तथा मासिक धर्म के समय में सर्दी लग जाना इत्यादि हैं।

इस रोग में शोथ—तीव्र, एवं साधारण—दो प्रकार की होती है। तीव्र शोथ में पीड़ित स्त्री को कम्पन के साथ ज्वर हो जाता है। प्यास, मिचली और वमन का कष्ट होता है। मुँह का स्वाद कड़वा रहता है तथा पेड़ू में तीव्र दर्द होता है जो थोड़ा सा भी हिलने-डुलने अथवा दबाने से बढ़ जाता है। इसी कारण रोगिणी हर समय अपने पैर पेट की ओर सिकोड़े हुए पड़ी रहती है, क्योंकि पैर फैलाने से दर्द बहुत अधिक बढ़ जाया करता है। पीड़ित आवरण का पानी अत्यधिक

मात्रा में रिसकर पेडू के खाली गड्ढे में इकट्ठा होता रहता है, जिसके फलस्वरूप रोगिणी का पेडू उभर आता है। यही एकत्रित तरल प्राय: पीप बन जाता है। कई बार गर्भाशय का यह भाग अपने समीप के अंग से चिपक जाता है। योनि में अँगुली डालने पर पेडू के गड्ढे में सीरम या पीप की लहरें प्रतीत होती हैं। यदि गर्भाशय किसी अंग के साथ चिपक गया हो तो वह अपने स्थान से हिल नहीं सकता है, यदि अंगुली से उसको हिलाया जाए तो वह अपने स्थान पर जकड़ा हुआ प्रतीत होता है और स्त्री को सख्त दर्द होता है। यदि शोथ कम हो तो लक्षण भी कम होते हैं।

उपचार—सूखी मकोय, जौ का आटा, रसौत, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, निर्बसी प्रत्येक 3-3 माशा लें। हरी मकोय और हरे धनिया के रस में बहुत बारीक रगड़कर एक अण्डे की सफेदी और गुलरोगन 6 माशा में मिलाकर साफ बारीक कपड़े या साफ रुई की बत्ती बनाकर गर्भाशय में रखने से यह रोग दूर हो जाता है। चन्दनादिवटी 1-1 गोली सुबह-शाम शीतल जब से खिलाना लाभकारी है। इसके बनाने की विधि—गंधा बिरोजा का सूखा सत्व, कबाबचीनी, चोबचीनी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, सुगन्धवाला, खशखश प्रत्येक 1 तोला तथा गुग्गुल 2 तोला शुद्ध हींग 6 माशा, स्वर्णमाक्षिक भस्म, बंग भस्म प्रत्येक 6 माशा, अभ्रक भस्म 3 माशा, ताम्र भस्म डेढ़ माशा लें। उन्हें जल में खरल करके 50 वटियां (गोलियां) बना लें और सेवन करें अथवा बाजार से बनी हुई लेकर प्रयोग करें।

डिम्बाशय-शोथ, डिम्बाशय-प्रदाह

रोग परिचय—इस रोग में प्राय: स्त्री के एक ही डिम्बाशय में शोथ आती है और दूसरा बचा रहता है। दायां डिम्बाशय बांये डिम्बाशय की अपेक्षा अधिक रोग-ग्रस्त हुआ करता है। यह रोग चिकित्सा की दृष्टि से दो प्रकार का होता है— 1. एक्यूट (नया), 2. क्रोनिक (पुराना)।

नयें डिम्बाशय शोथ में थोड़ी-थोड़ी देर बाद तीव्र दर्द होता है और हल्का दर्द हर समय बना रहता है। कई बार तो दर्द की अधिकता के कारण रुग्णा बेहोश हो जाती है। कभी-कभी हिस्टीरिया के दौरे भी पड़ने लगते हैं। सम्भोग के समय तीव्र दर्द होता है। ज्वर रहता है। पेडू, कमर व जंघा में दर्द रहता है। पीड़ित डिम्बाशय की ओर की जांघ को दबाने से दर्द बढ़ जाता है। खड़ा होने पर पैर काँपने लगते हैं और दर्द बढ़ जाता है। रोगिणी को प्राय: कब्ज रहती है और पाखाना के समय बहुत अधिक जोर लगाना पड़ता है। कई बार पेचिश भी हो

जाती है। मितली, कै, हाजमा की खराबी तथा भूख की कमी हो जाती है। मूत्र लाल रंग का अल्प मात्रा में कष्ट से आता है। पेडू को टटोलने से डिम्बाशय की शोथ प्रतीत होती है। यदि शोथ में पीप पड़ जाए तो बार-बार कम्पन होता है और ज्वर आता है। नाड़ी कमजोर हो जाती है। मासिक अनियमित होकर गर्भाशय स्राव का रोग हो जाता है।

पुराने डिम्बाशय शोथ में भी थोड़ा-थोड़ा दर्द हर समय बना रहता है—जो दबाने से बढ़ जाता है। कई बार दर्द बिल्कुल नहीं होता है। पेट फूल जाना, अजीर्ण, कब्ज, गर्भाशय से पानी आने के रोग हो जाते हैं। हिस्टीरिया के दौरे पड़ने लगते हैं, मैथुन के समय, मासिक के समय सख्त दर्द होता है। पीड़ित स्त्री चिड़चिड़े स्वभाव की और पगली सी हो जाती है।

नोट—यदि दोनों ओर के डिम्बाशय में शोथ हो जाये तो स्त्री बांझ हो जाती है।

डिम्बाशय शोथ और गर्भाशय शोथ के लक्षण आपस में बहुत ही मिलते जुलते होते हैं। अत: पाठक ध्यान दें कि—डिम्बाशय शोथ में यदि योनि में अंगुली डालकर दबाया जाए तो रुग्णा स्त्री को तुरन्त ही मितली आने लगती है। यदि दांये डिम्बाशय में शोथ होती है तो मूत्र बार-बार तथा कठिनाई से आता है। यदि बांये डिम्बाशय में शोथ होती है तो पेचिश हो जाती है, इसके अतिरिक्त यह शोथ टटोलने से अण्डाकार प्रतीत होती है।

यह रोग प्राय: चोट लग जाने, डिम्बाशय की रचना की कमजोरी, मासिक बन्द हो जाने, मासिकधर्म के समय सर्दी लग जाने, उपदंश, आसपास के अंगों में शोथ होने के कारण, चिन्ता इत्यादि कारणों से होता है।

पुराना शोथ अत्यधिक मैथुन, मद्यपान, योनि-शोथ, गर्भाशय-शोथ, जोड़ों का दर्द, खराश उत्पन्न करने वाली औषधियों का योनि में अधिक प्रयोग, सुजाक व उपदंश रोग इत्यादि के कारण हो जाता है।

उपचार—इस रोग का उपचार 'गर्भाशय-शोथ' और 'योनि शोथ' की भाँति किया जाता है और उन्हीं योगों के व्यवहार से यह रोग भी दूर हो जाता है। इसके अतिरिक्त पीड़ित स्त्री को क्वाथ—टेसू के फूल 3 तोला, खशखश का डोडा 2 तोला, सूखी मकोय 3 तोला बाबूना 2 तोला आवश्यकतानुसार पानी में उबालें और सहने योग्य गरम में बैठें।

नोट—इस रोग में लोहे के योग से बनी (Iron) औषधियां सख्त हानिकारक सिद्ध होती हैं। हांलाकि रोगिणी इस रोग में बहुत अधिक कमजोर हो जाती हैं अत: उसकी कमजोरी दूर करने के लिए शक्तिप्रद योगों व भोज्य पदार्थों का सेवन अति आवश्यक है।

डिम्बाशय पर अस्थायी झिल्ली आ जाना
(False membrane of ovary)

रोग परिचय—स्त्रियों के इस रोग में डिम्बाशय के बाहरी स्थान पर एक कठोर झिल्ली उत्पन्न हो जाती है । इस रोग के उत्पन्न होने का मुख्य कारण डिम्बाशय का पुराना शोथ होता है । क्योकि डिम्बाशय से निकला गाढ़ा तरल झिल्ली का रूप धारण कर लेता है, तब उस झिल्ली के अन्दर पतला द्रव धीरे-धीरे एकत्रित होकर (Ovarian dropsy) (डिम्बाशय में पानी पड़ जाना) का रूप धारण कर लेता है । झिल्ली कठोर और मोटी होकर डिम्बाशय की (रचना पर हर समय दबाब डालती रहती है जिसके कारण वह धीरे-धीरे दबकर छोटी होती चली जाती है जिसको 'डिम्बाशय क्षय' कहते हैं ।

नोट—यदि दोनों डिम्बाशय इस रोग से बेकार हो जाये तो स्त्री के बांझ हो जाने के अतिरिक्त, उसको मासिक आना भी बिल्कुल बन्द हो जाता है ।

कई बार तो इस रोग से पीड़ित स्त्री के डिम्बाशय का आकार इतना अधिक छोटा हो जाता है कि वह मात्र छोटी सी गुठली के बराबर रह जाता है । रोग पुराना हो जाने पर इसके स्त्रीत्त्व गुण बिल्कुल घट जाते हैं ।

उपचार—पेडू पर (झिल्ली) को घुला देने वाले गरम तैलों की मालिश और लेपों का प्रयोग उपयोगी होता है तथा ऐसे ही योगों का बत्तियों के रूप में बाह्य प्रयोग अर्थात् गर्भाशय के मुख में रखना लाभकारी है । आमतौर पर इस रोग की चिकित्सा आप्रेशन अर्थात् (शल्य क्रिया) है ।

डिम्बाशय का अपने स्थान से हट जाना

रोग परिचय—गर्भाशय, योनि की रचना अथवा डिम्बाशय के बन्धनों के ढीला हो जाने पर उस स्थान पर झटका लगने अथवा जोर पड़ने पर डिम्बाशय अपने स्थान से खिसककर गर्भाशय के सामने अथवा पीछे या किनारों के नीचे आ जाते हैं ।

यदि गर्भाशय के उलट जाने के कारण यह रोग हो तो डिम्बाशय उलटे हुए गर्भाशय की गहराई में लटक जाता है । यदि डिम्बाशय गर्भाशय के अन्दर गोल बन्धन (Round Ligament) के साथ (Inguinal Canal) में या उसके बाहर जाँघ या भगद्वार की नर्म रचना में चर्म के नीचे आ जाये तो इसको पयोडन्डल हार्नियां कहा जाता है । यदि यह रोग, चोट लगने आदि के कारण हो तो पीड़ित

स्त्री के पेडू में सख्त दर्द होता है और जी मिचलाने तथा वमन की अधिकता हो जाती है ।

यदि गर्भाशय झुक जाने के कारण डिम्बाशय दबकर गर्भाशय के पीछे अपने स्थान से नीचे लटक गया हो तो गुदा में अंगुली प्रवेश करके उसका निरीक्षण महिला चिकित्सक द्वारा भली भाँति किया जा सकता है । यदि सामने या उसके दोनों ओर उठे हुए गर्भाशय की गहराई मे खिसक गया हो तो उसको भी योनि में अँगुली डालकर देखा जा सकता है । ध्यान रखें कि प्रत्येक अवस्था में डिम्बाशय पर अँगुली का दबाव पड़ने से स्त्री को सख्त दर्द होता है और उसको मितली या कै आने लगती है । यदि डिम्बाशय जांघ में या भगद्वार की कोमल भित्ति (दीवार) में खिसक आया हो तो भग के ओष्ठों के पीछे या चर्म के नीचे उसका उभार भली प्रकार देखा जा सकता है ।

उपचार—इस रोग का उपचार 'गर्भाशय ढीला हो जाना' और 'गभाशय पलट जाना जाना' के ही अनुसार किया जाता है । हार्निया होने पर संकुचित करने वाले लेप लगाये जाते हैं, किन्तु यदि स्त्री को बच्चा हो चुका हो तो उसको संकोचन वाली औषधियाँ नहीं दी जाती हैं । क्योंकि इनके सेवन से गर्भाशय का दूषित तरल रुक कर भयानक परिणाम दे सकता है । ऐसी स्थिति में शराब या जैतून (आलिव ऑयल) का तैल या गुलरोगन में रुई डुबोकर गर्भाशय के समीप रखें । छल्ला (पेसरीज) चढ़वाने से भी लाभ हो जाता है तथा हार्निया की पेटी (Hernia truss) का प्रयोग भी लाभप्रद है । वैसे इसकी उचित चिकित्सा आप्रेशन ही है ।

फैलोपियन प्रणालियों का फट जाना

रोग परिचय—फैलोपियन ट्यूब स्त्री की योनि के भीतरी अंग के अन्तर्गत होती है । यह गाय की दुम की भाँति दो पतली नलियाँ हैं, जो गर्भाशय के दोनों ओर ऊपरी भाग में डिम्बाशय और गर्भाशय के मध्य में स्थित होती हैं । इसकी प्रत्येक नली की सामान्यत: लम्बाई 11 या 12 सेन्टीमीटर तक होती है और गर्भाशय के ऊपरी किनारे से प्रारम्भ होकर गर्भाशय के चौड़े बन्धन पेडू में मूत्राशय और मलाशय के मध्य में होती है, इसकी औसत लम्बाई अधिक सन्तानें वाली स्त्रियों में (10 सेमी. लम्बाई, 6 सेमी. चौड़ाई तथा 4 सेमी. मोटाई और वजन लगभग 30 से 40 ग्राम होता है । यह आठ बन्धनों द्वारा अपने स्थान पर स्थित रहती है । यह बन्धन 1. गोल बन्धन (राउन्ड लिगमेन्टस, 2. चौड़े बन्धन (बाड लिगमेन्टस, 3. अगले बन्धन (एन्टिरियर लिगमेन्ट्स तथा 4. पिछले बन्धन

(पोस्टेरियर लिगमेन्ट्स) प्रत्येक बन्धन 2-2 अर्थात् कुल मिलाकर 8 बन्धन हैं।

चौड़े बन्धन भी अन्य तीनों बन्धनों की भांति 2 होते हैं और यह गर्भाशय के दोनों ओर दांये व बांये पहले से पेडू की ओर दीवारों तक जाते हैं। प्रत्येक बन्धन की 2 तह होती है, इन्हीं तहों के मध्य में फैलोपियन ट्यूब ओवरीज के मध्य से होती हुई डिम्बाशय के ऊपर की ओर समाप्त होती है। गर्भाशय के समीप जहाँ से यह नाली आरम्भ होती है और जैसे-जैसे आगे बढ़ती है वैसे-वैसे यह चौड़ी होती जाती है और इसका अन्तिम भाग सबसे अधिक फैला हुआ होता है और इस सिरे पर बहुत से कटाव होते हैं जिसके कारण यह भाग (क्षेत्र) झालरदार हो जाता है। इस झालर का एक कोना डिम्बाशय के बाहरी ओर मिला रहता है। जब स्त्री का अण्डा (डिम्ब या ओवम) डिम्बाशय से निकलकर इस झालरदार सिरे में प्रवेश करता है तो यह नलियाँ अपनी गतिविधि से उसको गर्भाशय तक पहुँचाती है।

फैलोपियन प्रणालियों के फट जाने का कारण प्राय: पेडू पर जोर से मुक्का इत्यादि का तीव्र आघात अथवा पेडू के बल गिर पड़ना अथवा फैलोपियन ट्यूब में गर्भ हो जाना इत्यादि हुआ करता है। यदि इस नाली की बड़ी वाहिनी (रग या नस) फट जाए तो रक्त स्राव अत्यधिक मात्रा में जारी हो जाता है। यह रक्त पेडू के अन्दर खाली गड्ढे में एकत्रित होकर उभार उत्पन्न कर देता है जिसके कारण सख्त तीव्र दर्द होता है और रुग्णा को कम्पन के साथ ज्वर हो जाता है तथा प्राय: रोगिणी बेहोश हो जाया करती है।

उपचार—यदि नाली बहुत अधिक फट गई हो और पीड़ित स्त्री की दशा भयानक हो तो अपना घरेलू उपचार अथवा किसी नीम हकीम चिकित्सक के चक्कर में न पड़कर अतिशीघ्र ही किसी योग्य चिकित्सक द्वारा संचालित नर्सिंग होम अथवा निकटवर्ती राजकीय महिला चिकित्सालय में भर्ती करवाकर चिकित्सा करायें। प्यास और सख्त कमजोरी दूर करने के लिए ग्लूकोज (ग्लूकोन डी) पिलायें। साथ ही जल्द ही खून रोकने वाली देसी औषधियों का प्रयोग करें। अधिक मासिक धर्म आना रोग के अन्तर्गत जो उपचार लिखें हैं उन्हीं का प्रयोग करना चाहिए।

● आधा सेर गुलाब जल में 1 तोला फिटकरी मिलाकर उबालें और छानकर बर्फ में ठण्डा करके पेडू के ऊपर पीड़ित स्थान पर रखें। रोगिणी को बिस्तर पर सीधा (चित्त) लिटाये रखें। अनार या मौसमी का रस, जौ का पानी अथवा अंगूर का रस पिलायें तथा रोग घट जाने पर पके मांस का रस, जूस (शोरबा) मूंग की दाल की पतली खिचड़ी (भदड़ी) और साबूदाना व रोटी आदि खिलायें।

फैलोपियन ट्यूबों का गल जाना

रोग परिचय—कई बार स्त्रियों के फैलोपियन ट्यूबों में घाव हो जाया करते हैं और कई बार उसका कुछ भाग गल-सड़कर नष्ट हो जाया करता है। घाव होने पर उस स्थान से पीप और पीला बदबूदार तरल गर्भाशय में आकर योनि से निकलता रहता है। साथ ही स्त्री के पेडू और कमर में सख्त दर्द होता रहता है और मासिक के समय यह दर्द अधिक होने लगता है तथा मासिक अनियमित आने लगता है। नाली का गल-सड़कर कुछ भाग (हिस्सा) भी नष्ट हो जाता है। इस कारण स्त्री का अण्डा (ओवम) डिम्बाशय से गर्भाशय तक नहीं पहुँच पाता है। फलस्वरूप रुग्णा को गर्भ नहीं ठहरता है और वह जीवन भर के लिए बाँझ हो जाती है।

यह रोग फैलोपियन ट्यूबों के फट जाने उपदंश और सूजाक आदि रोगों और अन्दर फोड़ा बन जाने के कारण हो जाता है।

उपचार—किसी हल्के ऐन्टीसैप्टिक लोशन जैसे—डेटोल, सैवलान, बोरिक एसिड पाउडर अथवा मरक्यूरोक्रोम (चोट, घाव में लगाने वाला लाल टिंक्चर की दवा) अथवा नीम की पत्तियों के क्वाथ आदि से गर्भाशय में डूश करते रहना चाहिए।

रक्त को शुद्ध करने वाली औषधियों जैसे—मन्जिष्ठादि क्वाथ, सारिवाद्यारिष्ट, खदिरारिष्ट इत्यादि का सेवन करें ताकि फोड़ा फट कर शीघ्र भर जाए।

● पापड़ा, सूखी मकोय, गुलाब के फूल, नीम के पत्ते, मेंहदी के पत्ते, कमीला, आवश्यकतानुसार लेकर पानी में उबाल और छानकर गर्भाशय में डूश करना लाभप्रद है।

नोट—डूश करते समय रुग्णा इस बात का विशेष ध्यान रखें कि पानी की धार रोगग्रस्त स्थान से आगे न जाने पाये।

आराम न आने पर सर्जरी चिकित्सा कराना लाभप्रद होता है। इस नाली के गल जाने की अन्तिम अवस्था में 'फैलोपियन ट्यूब' का झालर वाला सिरा बिल्कुल नष्ट हो जाता है और घाव भर जाता है। तब चिकित्सा से भी कोई लाभ नहीं हुआ करता है। ऐसी स्थिति में रोगिणी की काफी चिकित्सा कराने पर भी सन्तान नहीं हुआ करती है। रोगिणी को आराम से बिस्तर पर लिटाये तथा पूर्ण विश्राम करायें। शीघ्रपाची तथा शक्तिवर्धक भोजन खिलायें।

नष्टार्तव, मासिकधर्म बन्द हो जाना

रोग परिचय—इस रोग में मासिकधर्म बिल्कुल ही बन्द हो जाता है अथवा

नियत समय से बहुत देर बाद अल्प मात्रा में दर्द और कष्ट से आता है । यदि रजोधर्म आरम्भ से ही बन्द हो तो 'आरम्भिक कष्टार्तव' (प्राइमरी ऐमेनोरिया) और यदि मासिक धर्म पहले नियमित रूप से आता रहा हो और बाद में किसी विकार के कारण बन्द हो गया हो तो 'गौण आर्त्तव' (सेकेन्डी ऐमेनोरिया कहलाता है । इस रोग के 3 प्रकार हुआ करते हैं—(अ) आरम्भ से ही स्राव बन्द होना, (ब) 1 या 2 बार प्रदर आकर बन्द हो जाना, (स) मासिकधर्म का उत्पन्न तो होना किन्तु रास्ता बन्द होने के कारण उसका जारी न हो सकना ।

इस रोग का प्रथम कारण जन्म से गर्भाशय या डिम्बाशय का न होना अथवा बहुत छोटा होना होता है । डिम्बाशय का सम्बन्ध पिच्यूट्री ग्लैन्ड से होता है, इसलिए यदि इस ग्लैन्ड में कोई विकार हो तो भी डिम्बाशय का पूरा पालन पोषण नहीं हो सकता है । दूसरा कारण रक्त अल्पता अथवा रक्त का अत्यधिक गाढ़ा हो जाना अथवा कोई पुराने रोग जैसे—मधुमेह, क्षय, कैन्सर, वृक्कों सम्बन्धी रोग, दिल, यकृत अथवा आमाशय सम्बन्धी कई रोग, नर्वस सम्बन्धी कई रोग, मासिक के समय अथवा मासिक के पूर्व सर्दी लग जाना, ठण्डे पानी से नहाना- धोना, गर्मी की अधिकता, पागलपन, गर्भ धारण होने का भय, पिच्यूट्री या थायराइड इत्यादि ग्लैन्डों की खराबियाँ हैं । योनि या गर्भाशय के मुख का बन्द और बहुत मोटा तथा बिना छेद वाला होना इस रोग का कारण हुआ करता है ।

योनि या गर्भाशय का द्वार बन्द होने या 'हाईमन' (कुमारी पर्दा) मोटा होने के कारण यह रोग हो तो —प्रत्येक मास निश्चित दिनों में योनि और गर्भाशय में रक्त जमा होकर भांति-भांति के कष्ट और विकारों की उत्पत्ति हुआ करती है और कभी-कभी पेडू में उभार भी पैदा हो जाया करता है । यदि गर्भाशय, योनि, फैलोपियन ट्यूब और डिम्ब ग्रन्थियों की खराबियाँ जन्मजात हों तो यह रोग आरम्भ से ही होता है ।

इस रोग से ग्रसित स्त्री के लक्षण—रक्त घट जाने या पतला हो जाने पर शरीर का रंग फीका, मुख पीला, होंठ, आँखों के पपोटे और नाखून सफेद हो जाते हैं । शारीरिक कमजोरी और सुस्ती छायी रहती है, साँस फूलने लगता है। यह लक्षण रक्त की कमी और शारीरिक निर्बलता के हैं । यदि रोगिणी में चर्बी की अधिकता हो वह मोटी हो तो उसके अंग टूटते हैं, पेडू, कमर, जाँघ और कूल्हों में दर्द तथा भारीपन होता है ।

यदि रक्त गाढ़ा होना इस रोग का कारण हो तो—कफ और वात के लक्षण

पाए जाते हैं । यदि पिच्यूट्री ग्लैन्ड के विकारों के कारण यह रोग हो तो जननेन्द्रियों में कमजोरी हो जाती है और समय से पूर्व ही बुढ़ापे के लक्षण प्रकट हो जाते हैं और शारीरिक तापमान भी कम हो जाता है । शारीरिक और मानसिक निर्बलता बढ़ जाती है । यदि गर्भाशय में शुष्कता, सर्दी या गर्मी के कारण यह रोग हो तो स्त्री में सूखापन, सर्दी या गर्मी के लक्षण पाए जाते हैं।

मोटापा और कफ की अधिकता के कारण इस रोग में हाजमा खराब रहता है नींद भी अधिक आती है तथा अधिक गर्मी के कारण रोग होने पर प्यास अधिक लगती है मूत्र जलन के साथ पीले या लाल रंग का आता है तथा गर्भाशय में गर्मी प्रतीत होती है । मितली वमन, शरीर में गर्मी, हाथ-पैरों में जलन, सिर चकराना, स्तनों में दर्द और कमर दर्द इत्यादि कष्ट उत्पन्न हो जाते हैं ।

इस रोग के कारण विभिन्न प्रकार के गर्भाशय के रोग जैसे—गर्भाशय की पीड़ा, गर्भाशय की शोथ, गर्भाशय में पानी पड़ जाना, हिस्टीरिया आदि तथा अजीर्ण, यकृत दोष, वृक्क शोथ, उन्माद, जलोदर, पक्षाघात, सिर चकराना, सिर-दर्द, लकवा, पेट फूलना, दमा और विभिन्न प्रकार के ज्वर तथा रक्त दोष उत्पन्न हो जाते हैं ।

उपचार—यदि स्त्री में रक्त कम हो गया हो तो—रक्त बढ़ाने वाले योगों का प्रयोग करें । लोहा और कुचला से निर्मित योग सेवन करायें ।

● लोहाभस्म 1 रत्ती सुबह-शाम तथा लोहासव, द्राक्षारिष्ट और कुमार्यासव का निरन्तर सेवन अत्यन्त ही लाभदायक है । घी, दूध, मक्खन, का सेवन रक्त उत्पन्न करने हेतु अत्यन्त उपयोगी है ।

रजोधर्म के दिनों में वर्षा से भीग जाने या सर्दी लग जाने से मासिक धर्म बन्द हो जाने पर 'रजः प्रवर्तनी वटी' और हिंग्वाष्टक चूर्ण का सेवन करें । रजः प्रवर्तनी वटी मासिक धर्म बन्द हो जाने, कम आने, रुक जाने, दर्द और कष्ट से आने में अत्यन्त ही उपयोगी है । इसके प्रयोग से गर्भाशय में उत्तेजना, गर्मी और शक्ति आकर मासिक धर्म नियमित रूप से आने लगता है । इसके अतिरिक्त ये गोलियाँ अजीर्ण, पुरानी कब्ज, आमाशय और अन्तड़ियों के दूसरे रोगों में भी लाभप्रद हैं । बाजार में अनेक कम्पनियों द्वारा निर्मित उपलब्ध हैं अथवा स्वयं निर्माण करें । योग निम्न है—

● सुहागा खील किया हुआ, हींग, हीरा कसीस, मुसब्बर प्रत्येक औषधि सममात्रा में लें । पीसकर क्वार कन्दल (घीग्वार) के रस में खरल करके 1-1 रत्ती

(120 मिलीग्राम) की गोलियाँ बनालें। 1 से 2 गोलियाँ तक गरम पानी या चाय से खायें।

हिंग्वाष्टक चूर्ण—इसके सेवन करने से मासिक धर्म बन्द हो जाना, कम होना एवं दर्द से होना इत्यादि में अत्यन्त लाभ होता है। मासिक धर्म आने से 4-5 दिन पूर्व गरम पानी या चाय के साथ दिन में 2 बार खायें। इसका सेवन बच्चा होने के बाद प्रसूता के दर्दों को भी दूर करने तथा रुका हुआ गन्दा स्राव निकालने एवं गर्भाशय को संकुचित कर प्राकृतिक दशा में लाने के अतिरिक्त अजीर्ण, खट्टे डकार, पेट फूलना, पेट में वायु (गैस) और अजीर्ण के दस्तों में भी लाभप्रद है।

पुराने गुड़ को किसी बरतन में डालकर आग पर रखें, जब पिघलने लगे तो सूखा बेरोजा पीसकर मिलालें फिर इसकी लम्बी-लम्बी बत्तियाँ बना कर सुखा लें। प्रतिदिन 1 बत्ती का रात्रि में सोते समय मासिक धर्म आने से 3-4 दिन पूर्व योनि के एकदम भीतर गर्भाशय के मुख में रखने से बन्द या रुका हुआ मासिक धर्म आने लगता है। दर्द और कष्ट भी कम हो जाते हैं।

● इन्द्रायण की जड़, कालादाना एलुआ, बन्दाल के फल और कुटकी सभी सममात्रा में लेकर बारीक पीसें व कपड़े से छान लें। तदुपरान्त बांस की पतली सीकें (जो नीचे कुछ नुकीली और ऊपर मोटी हों) को 16 अंगुल मजबूत डोरे (धागे) से लपेटकर उपयुर्क्त कपड़छन चूर्ण क्वार कन्दल के रस में भिगो दें और बांस की तीलियों पर लगा करके हवा में) धूप में नहीं सुखा लें। आवश्यकता के समय इन बत्तियों को गर्भाशय के अन्दर थोड़ा-सा प्रवेश करके डोरा का छोर बाहर निकला रखें। डोरे को 6 घंटे के बाद सावधानी से खींच कर तीली (बत्ती) बाहर निकल लें। इसके प्रयोग से (मात्र 2 बार के प्रयोग से) बहुत अधिक दिनों से कैसा भी रुका हुआ मासिकधर्म हो, जारी हो जाता है और रुग्णा के समस्त कष्ट मिट जाते हैं।

● काले तिल की जड़, कपास की जड़, सहजन की छाल, ब्रह्म दन्डी की जड़, मुलहठी, सौठ, गोल मिर्च, पिप्पली सभी सममात्रा में लें। पीसकर कपड़छन चूर्ण सुरक्षित रखें। इसे 2-3 ग्राम की मात्रा में पुराने गुड़ के साथ दिन में 2-3 बार गरम जल से खायें। इसके प्रयीग से बन्द मासिक धर्म खुलकर आ जाता है।

● रजकृच्छ में बांस के पत्तों का काढ़ा बनाकर पिलाने से मासिक धर्म खुलकर आ जाता है तथा पेडू का दर्द और दूसरे कष्ट नष्ट हो जाते हैं।

● पेडू पर गरम ईंट, रेत या गरम जल की बोतल से सेंक करें रज: आने लगता है। शीघ्र लाभ हेतु—एरन्ड के पत्तों का पानी में क्वाथ बनाकर (इसी क्वाथ से) पेडू पर सेंक करें तथा बाद में एरन्ड के गरम-गरम पत्ते पेडू पर बाँधें।

● रीठा के छिलके को बारीक पीसकर बत्तियाँ बनाकर 1 बत्ती रात को सोते समय गर्भाशय के मुख में रखने से मासिक धर्म खुलकर आने लगता है।

● कपास की जड़ों का क्वाथ 5 तोला की मात्रा में 1-2 घंटे पर पिलाने से बन्द मासिकधर्म जारी हो जाता है।

● अशोक की छाल का क्वाथ 5 तोला की मात्रा में 3-4 बार पिलाने से बन्द मासिकधर्म आने लगता है।

● मंगरैल (कलौंजी) का विधिवत काढ़ा बनाकर उसमें पुराना गुड़ मिलाकर सुबह-शाम पिलाने से मासिकधर्म जारी हो जाता है तथा योनि की पीड़ा आदि दूर हो जाती है।

● अशोकारिष्ट के नियमित सेवन से बन्द या रुका अथवा अल्प मात्रा में दर्द और कष्ट के साथ आने वाले मासिक धर्म के कष्ट नष्ट हो जाते हैं। श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर और गर्भाशय सम्बन्धी सभी रोगों को दूर कर गर्भाशय को शक्तिशाली बनाता हैं। बांझपन नष्ट होता है। इसके अतिरिक्त गर्भाशय या नाक या मुँह अथवा गुदा या छाती से रक्त आने को भी आराम हो जाता है।

कष्टार्तव, मासिकधर्म का कष्ट के साथ आना

रोग परिचय—इस रोग (डिसमेनोरिया) में स्त्रियों को मासिकधर्म आने से 1-2 दिन पूर्व और आने के समय गर्भाशय पेडू और कमर में दर्द हुआ करता है। इसी स्थिति में रोगिणी को मासिक कम या अधिक मात्रा में भी आ सकता है। अनिद्रा, सिरदर्द और बेचैनी इत्यादि लक्षण पाये जाते हैं।

नोट—जब जवान लड़कियों को प्रथम बार मासिक धर्म आता है तो भीतरी जननेन्द्रियों की ओर रक्त संचार तेज होकर वहाँ की रक्तवाहिनियां रक्त की अधिकता के कारण उभर और तन जाती हैं। इसी कारण पेडू, कमर, गर्भाशय, जांघों और पिन्डलियों में थोड़ा या बहुत दर्द होने लगता है किन्तु 2-3 बार आ चुकने पर यह कष्ट स्वयं दूर हो जाते हैं।

इस के भी दो कारण होते हैं—(अ) जन्मजात दोष यथा—गर्भाशय की रचना में भी विकार, गर्भाशय की गर्दन का लम्बा होना, गर्भाशय के मुख का छोटा होना, गर्भाशय की मांसपेशियों की कमजोरी, डिम्बाशय के तरल में कमी, स्नायविक संस्थान की दुर्बलता आदि। (आ) गर्भाशय में असाधारण रूप से रक्त एकत्रित

हो जाना जैसे—गर्भाशय का पीछे की ओर झुक जाना, गर्भाशय या उसकी झिल्ली का उत्पन्न हो जाना इत्यादि ।

यदि जन्मजात दोष के कारण यह रोग हो तो महिला चिकित्सक द्वारा निरीक्षण कराने से इस रोग का पता चल जाता है। यदि डिम्बाशय में तरल की कमी होने के कारण यह रोग हो तो—गर्भ ठहर जाने के बाद यह कष्ट स्वयं दूर हो जाता है। गर्भाशय में रक्त एकत्रित हो जाने पर—मासिक होने के 1-2 दिन पूर्व तथा समाप्त होने के 1-2 दिन बाद तक दर्द होता रहता है। गर्भाशय के पुराने शोथ में भी मासिक धर्म आने के समय रक्त अधिक मात्रा में आता है तथा दर्द भी होता है और गर्भाशय से पानी आने का कष्ट भी होता है। डिम्बाशय में शोथ होने पर 1 या दोनों ओर उभार होता है, जिसको दबाने से मितली या कै होती है तथा दर्द भी होता है। गर्भाशय के अन्दर अस्थायी झिल्ली उत्पन्न हो जाने पर मासिकधर्म आने से 2-3 दिन पूर्व ही दर्द होने लगता है और स्राव आरम्भ हो जाने के बाद यह दर्द बढ़कर प्रसव-पीड़ा जैसा रूप धारण कर लेता है तथा जब तक यह अस्थायी झिल्ली निकल न जाए तब तक निरन्तर दर्द होता रहता है। स्नायविक कमजोरी के कारण यदि रोग उत्पन्न हुआ हो तो मासिक 1-2 दिन आकर बन्द हो जाता है और अत्यधिक दर्द होता है। इसके बाद काफी मात्रा में रक्त स्राव होकर गर्भाशय में ऐंठनयुक्त दर्द होने लगता है, जिसके कारण रोगिणी बहुत दुखी रहती है। प्राय: दिल की धड़कन बढ़ जाती है और बेहोशी छा जाने का कष्ट रहता है। कई बार सिर दर्द होकर सिर भी चकराता रहता है।

उपचार

●अशोकारिष्ट, अशोक घृत, रज:प्रवर्तनी वटी इत्यादि का सेवन इस रोग में अत्यन्त ही लाभप्रद है।

●उलटकम्बल की जड़ का चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में मासिकधर्म आने के 4-5 दिन पहले से दिन में 2-3 बार खिलाना अत्यन्त लाभकारी है। अंग्रेजी में इस औषधि को ''एब्रोमा अगेस्टा'' कहा जाता है। इससे मासिकधर्म अधिक आने को भी आराम आ जाता है और इसके प्रयोग से जवान स्त्रियों को गर्भ भी ठहर जाता है।

●कपास की जड़ का क्वाथ पिलाना भी लाभप्रद है।

●धतूरा के पत्तों को पानी में उबालकर, उस क्वाथ से पेडू का सेंक करना भी अत्यन्त लाभकारी है।

●लाजवन्ती का 3 ग्राम चूर्ण फांककर ऊपर से बताशों का शर्बत पिलाने से स्त्रियों का मासिक अधिक आना रुक जाता है।

●इन्द्रायण को पीसकर इसकी 6 ग्राम लुगदी योनि में रखने से 3 दिन में ऋतु स्राव खुलकर होने लगता है।

●इन्द्रायण के बीज 4 ग्राम, काली मिर्च 6 नग दोनों को कूटकर 200 ग्राम जल में औटावें, 50 ग्राम शेष रह जाने पर उतार-छानकर पिलायें। इस प्रयोग से रजोदर्शन प्रारम्भ हो जाता है।

●मूली के बीज और काले तिल 10-10 ग्राम लेकर 250 ग्राम पानी में औटावें। जब पानी चौथाई रह जाए तब उतारकर छान लें और इसमें थोड़ा-सा गुड़ मिलाकर दिन में 3-4 बार पीने से मासिकधर्म खुलकर आना प्रारंभ हो जाता है।

●कच्चा सुहागा 3 ग्राम, केसर 2 ग्रेन लें। दोनों को खरल में बारीक घोटकर प्रात:काल ठण्डे पानी के साथ देने से मासिकधर्म की अनियमितता का रोग नष्ट हो जाता है। (दूसरी खुराक देने की आवश्यकता बहुत कम पड़ती है) मासिक धर्म के 2-3 दिन पूर्व इस प्रयोग को करने से मासिक धर्म नियत समय पर खुलकर आने लगता है।

●20 ग्राम धनिये को 200 ग्राम पानी में औटावें जब। जब 50 ग्राम पानी शेष रह जाए तब उतार छानकर पीने से मासिक धर्म की अधिकता (अधिक रक्त आना) रुक जाता है।

●समुद्रसोख 10 ग्राम को खूब बारीक पीसकर सुरक्षित रखें। इसे प्रात: 1 ग्राम की मात्रा में ठण्डे पानी से सेवन करने से 3-4 दिन में ही माहवारी का अधिक रक्त आना बन्द हो जाता है। सफल एवं अनुभूत योग है।

●राई 50 को बारीक पीसकर सुरक्षित रखें। इसे 2-2 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम बकरी के दूध से मासिकधर्म प्रारम्भ होने से 2-4 दिन पूर्व ही सेवन प्रारम्भ करायें। जब तक दवा खत्म न हो तब तक सेवन करते रहने से मासिक धर्म अधिक होने का रोग जड़ से नष्ट हो जाता है और जीवन में दुबारा नहीं होता है।

●सफेदा काश्गरी 10 ग्राम, लालगेरू 1 ग्राम लें। दोनों को भली प्रकार मिलाकर शीशी में सुरक्षित रखलें। आवश्यकता पड़ने पर 2 ग्रेन (1 रत्ती) की मात्रा में बताशे में रखकर पिलाकर ऊपर से थोड़ा-सा दूध या पानी पिलाने से भी (मात्र 3 मात्राओं के प्रयोग से) मासिकधर्म अधिक आने के रोग को आश्चर्यजनक रूप से आराम आ जाता है।

●मुलहठी का छिलका उतारकर कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार चावल के धोवन (पानी) से 4-5 दिन सेवन कराने से मासिकधर्म की अधिकता का रोग नष्ट हो जाता है।

●राल 6 ग्राम में 100 ग्राम दही में मीठा मिलाकर पिलाने से 3-4 दिन में ही मासिक धर्म की अधिकता का रक्त गायब हो जाती है।

●हड़ताल गोदन्ती बढ़िया 25 ग्राम को नीम के पत्तों के रस में भली प्रकार खरल करके टिकिया बनालें। फिर नीम की पत्तियों की 60 ग्राम लुग्दी के मध्य में रखकर मिट्टी के प्यालों में बन्द करके 4 किलो उपलों की आग के मध्य में रखकर भस्म बना लें। यह गोदन्ती भस्म रजोधर्म की अधिकता, गर्भाशय से रक्त-स्राव की रामबाण दवा है। इसके अतिरिक्त यह योग नाक, फेफड़ों, गुदा अथवा मूत्रमार्ग से रक्त आने में भी अत्यन्त ही लाभप्रद है।

●माहवारी की अधिकता में पीपल वृक्ष के कोमल पत्तों का रस पिलायें।

●गूलर वृक्ष के फल का चूर्ण में खान्ड मिलाकर 2-3 ग्राम की मात्रा में दिन में 2-3 बार मासिकधर्म की अधिकता में सेवन करना लाभप्रद है।

●पके केलों में बनारसी आँवलों का रस खान्ड मिलाकर खाना मासिक धर्म की अधिकता में लाभप्रद है।

●वासक का रस या पत्ती का चूर्ण 2-3 ग्राम पिलाते रहने से शरीर के किसी भी भाग से होने वाले रक्तस्राव में अत्यन्त उपयोगी है।

●बबूल (कीकर) की छाल का क्वाथ बनाकर उससे डूश करना मासिकधर्म की अधिकता में लाभकारी है।

●आम की गुठली की गिरी का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में दिन में 2 बार पिलाना मासिकधर्म की अधिकता में लाभकारी है।

●लोध के चूर्ण में खान्ड मिलाकर 8 रत्ती (1 ग्राम) दिन में 2-3 बार खिलाना मासिकधर्म की अधिकता में लाभकारी है।

●जीरा तथा इमली के बीज की गिरी को सममात्रा में लेकर चूर्ण बनालें। उसे 3 माशा की मात्रा में चावलों के पानी के साथ दिन में 2-3 बार खिलाना मासिकधर्म की अधिकता में अत्यन्त लाभकारी है।

●प्रदर कम आने, थोड़े समय तक आने या देर से आने के लिए अशोकारिष्ट 2 तोला समान भाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार तथा हिंग्वाष्टक चूर्ण 3 से 5 माशा गरम जल से भोजन के साथ दिन में 2-3 बार खिलाना अत्यन्त ही लाभप्रद है।

●कपास के पौधे की जड़ 6 माशा, गाजर के बीज 6 माशा, खरबूजा के बीज 4 माशा लें। इनका क्वाथ बनाकर पिलाना मासिक कम और दर्द से आने में लाभकारी है। अनुभूत योग है।

●रेवन्द चीनी, कलमीशोरा 6-6 माशा, यवक्षार, जीरा 3-3 माशा पीसकर बराबर खान्ड मिला लें। इसे 3 से 6 माशा की मात्रा में सुबह-शाम गरम पानी से सेवन करने से प्रदर कम व दर्द से आना नष्ट हो जाता है।

●गन्धक आमलासार, काली जीरी 1-1 तोला, रसौत 3 माशा, एक्सट्रैक्ट बेलाडोना 3 माशा लें। सभी को मकोय के रस में खरल करके मटर के समान गोलियाँ बनालें। यह 1-1 गोली सुबह-शाम दूध या पानी से खाने से मासिक कम आना, अधिक आना, दर्द से आना, गर्भाशय से स्राव होना तथा प्रत्येक प्रकार के स्त्री (गुप्त) रोगों में रामबाण योग है।

●पिप्पली, मैनफल, यवक्षार, इन्द्रायण के बीज, मीठा कूठ और पुराना गुड़ सभी औषधियाँ अलग-अलग कूट पीसकर सममात्रा में लेकर गाय की दूध की सहायता से बत्तियाँ बना लें। शाम को 1-1 बत्ती गर्भाशय के मुख में रखें। मासिक खोलने में रामबाण प्रयोग है।

नोट—मासिक लाने वाली औषधियाँ मासिक आने से 5-7 दिन पूर्व प्रयोग करना प्रारम्भ कर दें तथा आने के दिनों में भी प्रयोग जारी रखें। योनि में रखने वाली बत्तियाँ मासिक आने से 3-4 दिन पहले रखनी आरम्भ की जाती है।

अत्यार्त्तव, अति रज:

रोग परिचय—इस रोग में मासिकधर्म अत्यधिक मात्रा में और नियत काल से अधिक दिनों तक आता रहता है। इस रोग के कारणों में निम्नलिखित 6 कारण प्रमुख रूप हैं। स्त्री को भीतरी जननेन्द्रियों के रोग जैसे—(1) गर्भाशय शोथ, गर्भाशय झुक जाना, गर्भाशय की बबासीर और घाव, फैलोपियन ट्यूबों और डिम्बाशय की शोथ, प्रसवोपरान्त गर्भाशय का सिकुड़कर अपनी प्राकृतिक अवस्था में न आना, गर्भाशय का कैन्सर और रसूलियां तथा रजोनिवृत्ति इत्यादि। (2) रक्त संचार सम्बन्धी रोग, जैसे—यकृत् का सख्त हो जाना, हाई ब्लड प्रेशर एवं हृदय सम्बन्धी कई रोग (3) हारमोन्स ग्रन्थियों के दोष, जैसे—थायरायड ग्लैन्ड का बढ़ जाना इत्यादि (4) रक्त विकार सम्बन्धी रोग जैसे—स्कर्वी, दाँतों और मसूढ़ों से खून आना) परप्यूरा आदि। (5) तीव्र ज्वर जैसे—टायफाइड, मलेरिया, इन्फ्लूएन्जा इत्यादि। (6) स्नायु उत्तेजना, नाड़ी संस्थान की कमजोरी, चिन्ता, क्रोध, बहम (संदेह) अत्यधिक सम्भोग एवं अत्यधिक प्रसन्नता इत्यादि।

नोट—यदि मासिक नियत समय के अतिरिक्त आने लग जाए तो इसको अंग्रेजी में मेट्रोरेजिया (Metrorrhagia) के नाम से जाना जाता है। इस रोग के भी लक्षण एवं कारण ''अत्यार्त्तव'' अर्थात् मैनोरेजिया वाले ही होते हैं। यह सभी रोग एक ही रोग के विभिन्न रूप हैं।

उपचार—जिस कारण से भी यह रोग हो, उस मूल कारण का उपचार करना चाहिए। यदि रोगिणी को रक्त अधिक आ रहा हो तो उसे आराम से चारपाई पर (सिरहाना नीचा करके तथा पायताना की ओर चारपाई के पाये के नीचे 1-1 ईंट लगाकर ऊँचा करके) लिटायें। अधिक चलने-फिरने से रोकें। नाभि और पेडू पर बर्फ की थैली रखें अथवा ठण्डे पानी में फिटकरी घोलकर उसमें कपड़ा गीला करके पेडू पर रखें।

● माजू, छोटी माई, लोध, वायविंडग, धाय के फूल, छोटा गोखरू, बड़ा गोखरू, सुपारी के फूल, सिम्बल की मूसली, मौलसिरी वृक्ष की छाल, समुद्रसोख, ढाक की गोंद, छोटी इलायची के बीज, कमरकस प्रत्येक 1 तोला लें। सेलखड़ी (सोप स्टोन) 2 तोला, कीकर की गोंद 7 तोला, फूल मखाने 5 तोला, साठी चावल का आटा आधा सेर, घी व खाँड़ 60-60 तोला को लेकर पहले गोंदों, मखानों और चावल के आटे को अलग-अलग घी में भूनें। तदुपरान्त सभी औषधियों को अलग-अलग कूट-पीस छानकर खान्ड का शर्बत बनाकर और मिलाकर नारियल, छुहारे, चिरौजी (प्रत्येक 5-5 तोला) बारीक काटकर मिलाकर 1-1 तोला वजन के लड्डू बनाकर सुरक्षित रख लें। मात्रा 1 से 2 लड्डू तक खाकर ऊपर से दुग्धपान करें। इस औषधि के सेवन से रक्त प्रदर, अतिरजः और गर्भाशय से स्राव आते रहना तथा वीर्य प्रमेह और स्वप्नदोष इत्यादि नष्ट हो जाते हैं।

● गुलाब के फूल, लाल चन्दन, पिसे हुए माजू, धाय के फूल, कायफल, अतीस, मजीठ, सूखा आँवला, बंशलोचन, छोटी इलायची के बीज, पाषाण भेद, सूखा धनिया, मोचरस, सफेद राल, शुद्ध केसर, सभी औषधियों को कूट-पीसकर छानकर (समान मात्रा में लें) तथा सभी औषधियों के वजन के बराबर खान्ड मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 4 से 6 माशा तक सायंकाल 4 बजे गोदुग्ध से सेवन करने से गर्भाशय की कमजोरी और ढीलापन, रक्त प्रदर से बहुत अधिक मात्रा में मासिकधर्म आना मासिक 1 माह में 2-3 बार आना इत्यादि में बहुत ही अधिक लाभ होता है।

● यदि रोगिणी को रक्ताल्पता अथवा रक्त पतला होने के कारण मासिकधर्म अधिक मात्रा में आ रहा हो तो लौह भस्म 1 रत्ती अनार के शर्बत में मिलाकर दिन में 2-3 बार पिलाते रहना अत्यधिक लाभप्रद है।

नोट—अन्य योग कष्टरजः (मासिकधर्म दर्द और कठिनाई से आना, रोग के अन्तर्गत देखें।

प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

चोट, घाव, वमन, बबासीर आदि किसी भी कारण से गर्भाशय से होने वाले रक्तस्राव में निम्नलिखित प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योगों का व्यवहार करें—

स्टेपलोन टेबलेट (हिमालय)—2-3 टिकिया आवश्यकतानुसार जब तक रक्तस्राव बन्द न हो देते रहें। रक्त स्राव थमने के उपरान्त 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दें।

पोजेक्स फोर्ट टिकिया (चरक) विभिन्न कारणों से रक्तस्राव, रक्त प्रदर, गर्भाशय में होने वाला रक्तस्राव, गर्भ निरोधक औषधियाँ खाने अथवा 'लूप' से होने वाला रक्तस्राव, खून की उल्टी होना, नाक से होने वाला रक्तस्राव, बबासीर व आप्रेशन के समय कम खून निकलने के लिए आप्रेशन से पूर्व उपचार में अत्यधिक उपयोगी है। ये 2-2 टिकिया दिन में 3 बार से 6 बार तक (रक्तस्राव के तीव्रता पर मात्रा आधारित)

सेनीलाइन लिक्विड (डाबर) आवश्यकतानुसार 5 से 10 मि.ली. तक पिलायें। विशेष जानकारी हेतु औषधि के साथ प्राप्त पत्रक देखें।

हयूमेराल कैपसूल (इन्डो जर्मन) 1-2 कैपसूल दूध या ठण्डा पानी अथवा फलों के रस से दिन में 2-3 बार प्रयोग करायें।

चिनियमको टेबलेट (डिशेन) वयस्कों को 1 से 3 टिकिया तथा बच्चों को आधी से 1 टिकिया दिन में 3 बार दें।

प्रदरान्तक कैपसूल (मिश्रा) **7 पाइन्ट कैपसूल** (आयुलेब्स)

जी. 32 टेबलेट (अलारसिन) का आवश्यकतानुसार पत्रक पढ़कर दें।

बाबलीघास घनसत्व कैपसूल (अतुल फार्मेसी) 1-1 ग्राम दिन में 3 बार जल से दें। शर्तिया लाभकारी औषधि है।

स्मरण-शक्ति की क्षीणता

रोगी की याददाश्त कमजोर हो जाती है। वह अपनी ही वस्तुओं को यहाँ तक कि रिश्तेदारों और मित्रों के नाम तक को भूल जाता है निम्न दवा दें—

स्वप्नहरी टेबलेट (डाबर) 1-2 टिकिया दिन में 2 बार। अथवा आवश्यकतानुसार दें। पेट साफ रखें। कब्ज न रहने दें।

दिमागीन (मु. तिब्बिया यूनिवर्सटी अलीगढ़) (यूनानी योग) 5-5 ग्राम बिस्कुट पर लगाकर सुबह-शाम खायें।

गावजवां अम्बरी जवाहर वालाखास (हमदर्द) (यूनानी योग) 5-5 ग्राम सुबह-शाम दूध से लें ।

शंखपुष्पी सीरप (ऊंझा) 1-2 ड्राम दिन में 2-3 बार दें ।

शर्बत ब्राह्मी (गर्ग) 10-20 मि.ली. दिन में 2 बार लें ।

ब्राह्मी शंखपुष्पी कैपसूल (गर्ग) आवश्यकतानुसार 1-2 कैपसूल लें।

ब्राह्मी तैल (झन्डू) आवश्यकतानुसार सिर में मालिश करें । बाजार में अन्य (नवरत्न तैल, हिमताज तैल, जयगंग तैल इत्यादि भी आते हैं) यह समस्त तैल भी लाभप्रद है ।

लीवर एक्सट्रेक्ट ऑफ ब्राह्मी (झन्डू) 4 से 8 मि.ली. अथवा आवश्यकतानुसार दिन में 3 बार जल के साथ लें ।

ब्राह्मी शंखपुष्पी घनसत्व (गर्ग) 1-1 ग्राम सुबह-शाम जल से दें ।

ब्राह्मी शंखपुष्पी टेबलेट (गर्ग) 1-2 टिकिया आवश्यकतानुसार दिन में 1-2 बार सेवन करें ।

शक्ति संचय सीरप (अतुल फार्मेसी) 2-2 चम्मच दिन में 3 बार दूध या पानी से । बच्चों को इसकी आधा मात्रा दें ।

सामान्य दुर्बलता

सामान्य दुर्बलता में निम्नलिखित प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योगों का निर्भयता पूर्वक व्यवहार करें ।

ओजस टेबलेट एवं सीरप— (चरक) 3 से 6 चम्मच या 2 टिकिया दिन में 2 बार बच्चों को 3 चम्मच या 1 टिकिया दिन में 2 बार दें ।

पेड्रिटोन पाउडर (चरक)—शिशु की पूर्ण देखभाल रोग निरोधक, सामान्य विकास में सहायक एवं मस्तिष्क विकास में सहायक । इसे 6 माह से कम आयु के शिशुओं को 1 ग्राम दिन में 2-3 बार तथा 6 माह से ऊपर आयु के शिशुओं को 2 ग्राम दिन में 2-3 बार दें ।

एडिजुआ टेबलेट (चरक)—शुक्राणुओं की कमी, नपुंसकता, पुरुषों में कामोत्तेजना का अभाव, लैंगिक दुर्बलता, वृद्धावस्था की कमजोरी में 2-2 टिकिया दिन में 3 बार 6 सप्ताह तक प्रयोग करें ।

अल्सारेक्स टेबलेट (चरक)—पौष्टिक, अल्सर, अति अम्लता, सीने में जलन, उदरदाह, आन्त्रशोथ, अम्ल, मन्दाग्नि, वात रोग नाशक व दर्द नाशक। 2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार 6 सप्ताह तक हल्के भोजन के साथ ।

अर्जुनिन टिकिया (चरक)—क्षतिग्रस्त हृदय का उपचार, सांस की तकलीफ एवं स्थानिक रक्ताल्पता । 2-2 टिकिया दिन में 2-3 बार ।

बिकामिन टिकिया (चरक)—चिड़चिड़ापन, मनस्ताप, मनोविकार विक्षिप्तता एवं खन्डित व्यक्तित्व में 2-2 टिकिया दिन में 3 बार ।

कैरीटोन टिकिया (चरक)—गर्भावस्था में स्वास्थ्यवर्धक है । गर्भ को पूर्णरूपेण सुरक्षित रखने तथा गर्भावस्था के दौरान किसी भी गड़बड़ी जैसे— गैस (वायु) मन्दाग्नि पांव की मांस पेशियों में खिंचाव, अनिद्रा आदि में भी उपयोगी है । 2-2 टिकिया दिन में 3 बार पूरी अवधि प्रसव होने) तक दें ।

सेफाग्रेन टिकिया और ड्राप्स (चरक)—नाड़ी में आकस्मिक तनाव, सिरदर्द, आधासीसी में (नोट—नाड़ी में संकुचन, तालु प्रदाह तथा गर्भावस्था में प्रयोग निषेध है ।)

ओरूक्लीन टिकिया (चरक)—पेशाब में जलन, मूत्राशय प्रदाह, गुर्दे में पीप आना, मूत्र नली में अवरोध, मूत्राशय में सूजन, मूत्राशय की पथरी में तथा सह विकारों औषधि के रूप में (प्रतिरोधक असर न हो इस आशय से लें) ।

नोट—इसी कम्पनी द्वारा निर्मित 'कैलक्यूरी' टिकिया मूत्राशय तथा समस्त प्रकार की अश्मरी (पथरी) हेतु अत्यन्त लाभप्रद है । 2 टिकिया दिन में 3-4 बार । औरूक्लीन टिकिया बच्चे को एक टिकिया दिन में तीन बार दें ।

पांलरिविन फोर्ट टिकिया (चरक)—नपुंसकता, विलम्ब से वीर्य स्खलन, लैंगिक-दुर्बलता, महिलाओं में काम वासना का अभाव, समय से पूर्व बुढ़ापा आ जाना में टॉनिक के रूप में 1-2 टिकिया दिन में 2 बार दूध से लें ।

पेडिलेक्स सीरप (चरक)—कब्जियत विशेषकर रोग शैय्या पर पड़े रोगियों जैसे—गर्भावस्था के दौरान म्दें । वयस्कों को 2-3 चम्मच सोते समय पानी के साथ दें । बच्चों को 1-2 चम्मच तथा शिशुओं को आधी चम्मच दें ।

फेमीफोर्ट टिकिया (चरक)—श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर अथवा पुराना मानसिक तनाव, स्थूलता, व्यायाम के अभाव में होने वाले प्रदर में 2 टिकिया दिन में 2 बार लें ।

फैमीप्लेक्स टिकिया (चरक)—श्वेत प्रदर व रक्त स्राव (तीव्र या पुराना) 2-2 टिकिया दिन में 3 बार 6 सप्ताह तक सेवन करें ।

गेलाकाल टिकिया (चरक)—दुग्धपान कराने वाली माताओं के दुग्ध स्राव के अभाव में स्तर मात्रा (दुग्धवर्धक) है । 2-2 टिकिया दिन में 4 बार 6 सप्ताह तक बाद में 2 टिकिया दिन में 3 बार दुग्ध स्राव होने तक ।

गार्लिल टिकिया (चरक)—उदर स्फीति, पेट व आँत में वायु (गैस), मन्दाग्नि, भोजनोपरान्त होने वाली घबराहट में (नोट— खूनी बबासीर तथा पेट दर्द के रोगी को न दें) 2-2 टिकिया दिन में 2-3 बार भोजनोपरान्त 6 सप्ताह तक । बच्चों को आधी मात्रा दें ।

गमटोन पाउडर (चरक)—मसूढ़े फूलना और उनसे रक्तस्राव होना, पायोरिया की प्रथमावस्था, दाँतों के विकार हेतु अत्युत्तम मंजन है । आधा चम्मच पाउडर ब्रुश पर रखकर मसूढ़ों तथा दाँतों पर हल्के-हल्के सुबह-शाम मलें ।

जे. के. 22 टिकिया (चरक)—पुराने मधुमेह के रोगियों हेतु जब प्राथमिक अथवा अन्य उपचार से लाभ न हो । मूत्र शर्करा एवं रक्त शर्करा के लिए अत्युत्तम है । नोट—बालकों के मधुमेह में तथा सगर्भा को न दें ।

कोफोल टिकिया (चरक)—गले में खराश, सूखी खाँसी, कण्ठ शोथ, गले में सूजन, टॉन्सिल, गले की झिल्ली में सूजन में उपयोगी है । इसकी 1-1 टिकिया प्रति घंटे पर मुख में रखकर गलने दें ।

लिवोमीन ड्राप्स टिकिया, सीरप (चरक)—मन्दाग्नि, यकृत विकार, पोलियो के साथ यकृत में विकार, मदिरापान के कारण यकृत क्षय, यकृत पर चर्बी जम जाने, अन्य औषधियों के दुष्प्रभाव स्वरूप यकृतक्षय तथा कुष्ठ रोग व तपेदिक में यकृत को प्रभावशाली बनाती है । मात्रा—वयस्कों को 2-3 चम्मच या 2-3 टिकिया दिन में 2-3 बार । शिशुओं को (ड्राप्स) 5 से 10 बूंद तक दिन में 3-4 बार कम से कम 6 सप्ताह तक दें ।

लिक्विटोन सीरप (चरक)—शिशुओं में सामान्य निर्बलता, वृद्धि रुकना, सूखा रोग, भूख न लगना तथा अत्यधिक लार निकलना । शिशुओं को 1 चम्मच दिन में 3 बार तथा बच्चों को 2-3 चम्मच दिन में 2-3 बार दें ।

ल्यूनारेक्स फोर्ट टिकिया (चरक)—अनियमित मासिक धर्म, मासिक धर्म बन्द होना (गर्भावस्था में नहीं देना चाहिए अन्यथा गर्भपात हो सकता है । मासिक के न होने पर 2-2 टिकिया दिन में 3 बार मासिक होने तक तथा अल्प मात्रा में मासिक होने पर 2 टिकिया दिन में 3 बार मासिक के सात दिन पहले से शुरू करके मासिक के नियमित होने तक दें ।

मेनाल टॉनिक और टिकिया (चरक)—सामान्य दुर्बलता, खून की कमी, पेट में तकलीफ, गर्भावस्था में रक्ताल्पता, अति अम्लता और मुँह के छालों में उपयोगी है । वयस्कों को 2 चम्मच या 3 टिकिया दिन में 3 बार दें । बच्चों को आधी मात्रा दें ।

एम. स्टोन सीरप (चरक)—यौवनारम्भ में विलम्ब, अनियमित मासिक धर्म, गर्भ ठहरने में कठिनाई, रजोनिवृत्ति की गड़बड़ी में अति उपयोगी है । तीन चम्मच दिन में 3 बार कम से कम 8 या 10 सप्ताह तक लें ।

नेडटिकिया (चरक)—मिर्गी रोग, गम्भीर अपस्मार, सौम्य अपस्मार मानसिक तनाव व ऐंठन रोग में 2 टिकिया दिन में 3 बार तथा बच्चों को 1 टिकिया दिन में 3 बार दें ।

नियो टिकिया (चरक)—वीर्यपात, स्वप्नदोष, पेशियों की सिकुड़न, कमर दर्द, महिलाओं में पीठ के निचले हिस्से में दर्द, पौरुष ग्रन्थि में वृद्धि, हथेली व तलुवों में अधिक पसीना आना तथा बाल्यावस्था में बिस्तर गीला करना आदि में अत्यन्त उपयोगी । वयस्कों को 2 टिकिया दिन में 3 बार बच्चों को 1 टिकिया दिन में 3 बार ।

ओबेनील टिकिया (चरक)—मोटापा, बिना किसी प्रकोप, मधुमेह के कारण मोटापा, रक्तदाब बढ़ना व हृदय रोग में 2-2 टिकिया दिन में 3 बार दें । कम से कम 12 सप्ताह तक भोजन में परहेज व परिश्रम (कसरत) आवश्यक है। बच्चों को 1 टिकिया दिन में 3 बार दें ।

ट्राक्विनिल टिकिया (चरक)—अत्यधिक तनाव, रक्त चाप व मासिक धर्म से पूर्व तनाव, तनाव के कारण सिरदर्द, अनिद्रा व अन्य मासिक परेशानियों में 3-3 टिकिया दिन में 2-3 बार । बच्चों को 1 टिकिया दिन में 3 बार दें ।

अर्टिब्लेक्स टिकिया (चरक)—यह औषधि भीतरी व बाहरी विष का प्रभाव मिटाकर तीव्रगाही असर को समाप्त करती है । यकृत भी कार्य-क्षमता को बढ़ाती है । वात, पित्त, कफ (त्रिदोष) का सन्तुलन करती है । तीव्रवाही चर्म रोगों में 2 टिकिया दिन में 3 बार लगातार प्रकोप प्रलुप्त होने के 6 दिन बाद तक करें । बच्चों को 1 टिकिया दिन में 3 बार दें ।

विगराल जैली और टिकिया (चरक)—सामान्य दुर्बलता में आरोग्य प्रदायक, बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ हेतु, उदासीनता और तनाव में भी उपयोगी। 1 चम्मच या 2 टिकिया दिन में 2 बार । बच्चों को आधी मात्रा दें ।

बोमीटेव सीरप और टिकिया (चरक)—अम्ल नाशक तथा उल्टी रोकने हेतु उत्तम है । गर्भावस्था की वमन व मिचली से छुटकारा दिलाती है। सीरप को धीरे-धीरे चाटकर सेवन करने से अधिक प्रभावशाली असर होता है । वयस्कों को 2 चम्मच या 2 टिकिया प्रत्येक आधा घन्टे पर । बच्चों को 1 चम्मच या 1 टिकिया तथा शिशुओं को आधी चम्मच प्रत्येक आधा घन्टे पर दें।

व्हीपेक्स सीरप (चरक)—दमा, सूखी खाँसी, ब्रोंकाइटिस, श्वास-नली में सूजन आदि में वयस्कों को 2-3 चम्मच दिन में 3 बार, बच्चों को 1 चम्मच दिन में 3 बार तथा शिशुओं को आधा चम्मच दिन में 3 बार दें।

सर्टिना टेबलेट (चरक)—तपेदिक जैसे जीर्ण रोग में शरीर में शक्ति बढ़ाती है। सह औषधि के रूप में सेवन करें। इसकी 2 टिकिया दिन में 3 बार तथा बच्चों को 1 टिकिया दिन में 3 बार दें।

केलिकार्ब टिकिया (चरक)—यह औषधि कोलेस्टराल तथा ट्रायग्लिसराइड के बढ़े हुए रक्त स्तर को कम करती है तथा कोलेस्ट्राल और लेसिथिन के अनुपात को सामान्य बनाती है। खून का सामान्तर दौरा खोलती है। हायपर कॅलस्ट्रोमिया, हायपर ट्राइग्लोनेराई डिमिया, अथरोस्केलेरोसिस व स्थानिक रक्ताल्पता में उपयोगी है। इसकी 2 टिकिया दिन में 3 बार लें।

कृमिनिल सीरप (चरक)—उदर-कृमि, गोल कृमि, पिनकृमि एवं हुक कृमि में वयस्कों को 2-3 चम्मच (10 से 15 मि.ली.) दिन में 3 बार) बच्चों को उपरोक्त की आधी मात्रा दें।

क्यूरिल टिकिया (चरक)—मलेरिया, इन्फ्लुएन्जा, सर्दी, जुकाम तथा अज्ञात किस्म के ज्वरों में उपयोगी है।

नोट—आन्त्र ज्वर वाले रोगियों को निषेध है। इसकी 2-3 टिकिया दिन में 3 बार लगातार लक्षणलुप्त होने के 7 दिन बाद तक सेवन करें। बच्चों को आधी मात्रा दें।

दीपन टिकिया (चरक)—विभिन्न प्रकार के दस्त, कृमिजन्य मौसमी दस्तों में उपयोगी है। ये 2 से 4 टिकिया दिन में 3 बार लगातार रोगमुक्त होने के 6 दिन बाद तक दें, बच्चों को आधी मात्रा दें।

डिटान्सी टिकिया और पेन्ट (चरक)—टान्सिल लाइटिस (तीव्र और पुराना) मुखशुद्धि हेतु उपयोगी है। यह मुख और गले के क्षेत्र में रस ग्रन्थियों के जीवाणुओं का नाश करती है और सूजन मिटाती है। दिन में 3-4 बार (पेन्ट) टान्सिल पर लगायें।

डायडिन सीरप (चरक)—विविध प्रकार के दस्तों में उपयोगी है, 3 से 6 चम्मच (15 से 30 मि.ली.) दिन में 3 बार लक्षणलुप्त होने के सात दिन बाद तक सेवन करें। बच्चों को आधी मात्रा प्रयोग करायें।

ड्रायकोनील सीरप (चरक)—सूखी खाँसी, सर्दी, जुकाम, उच्चताप, गले में खराश, गले की झिल्ली में सूजन, कण्ठ शोथ व श्वास प्रणाली शोथ में उपयोगी है। मात्रा वयस्कों को 2-3 चम्मच 3-3 घंटे पर। बच्चों को आधी मात्रा दें।

प्यूरिला सीरप (चरक)—तीव्र व पुराने या बार-बार होने वाले चर्म रोगों में उपयोगी है। इसे 2 चम्मच लगातार 3 बार प्रकोप मिटने के 7 दिन बाद तक बच्चों को 1 चम्मच दिन में 3 बार प्रयोग करायें।

रेग्यूलेक्स फोर्ट टिकिया (चरक)—कब्जियत यदा कदा अथवा आदतन। इसके सेवन से आदत नहीं पड़ती है। सेवन करने के 8-10 घंटे बाद असर करती है। बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं को नियमित रूप से दी जा सकती है। कब्ज की पुरानी शिकायत में तथा मांसाहारियों की कब्ज में भी उपयोगी है। मात्रा—1 फोर्ट टिकिया रात्रि में सोते समय लें।

रीमानील लिनिमेन्ट (चरक)—गठिया, वात रोग, नाड़ी शोथ, तन्त्रिका शूल, कटि-जोड़ों की हड्डी में सूजन, कमर में शूल, मोच, टखने में दर्द आदि में उपयोगी है। रीमानील टिकिया के साथ प्रयोग करने से तुरन्त आराम मिलता है। उपयोग—दर्द के स्थान पर हल्के हाथों से लगाकर दिन में 3-4 बार मलें।

रीमानील टिकिया—(चरक)—गठिया, वात रोग, नाड़ी-शोथ, तन्त्रिका शूल, कटिशूल, जोड़ों की हड्डी में सूजन, सूत्रण रोग, कमर में शूल, टखने में दर्द आदि में उपयोगी। साथ में रीमानील लिनिमेन्ट का प्रयोग करें। मात्रा—2 टिकिया दिन में 3 बार बच्चों को आधी मात्रा दें।

सपेराफोर्ट टिकिया (चरक)—रक्त चाप, धमनियों, मूत्राशय और तन्त्रिजनक गड़बड़ियों में तथा नाड़ी में तकलीफ तथा तनाव में उपयोगी है। 1 टिकिया फोर्ट दिन में 3 बार दें।

स्याज्मा सीरप (चरक)—ब्रोंकियल, दमा, ब्रांकाइटिस, सांस की तकलीफ में उपयोगी है। 2-3 चम्मच दिन में 3 बार बच्चों को 1 चम्मच दिन में 3 बार।

टीनापेन टिकिया (चरक)—अनियमित मासिक धर्म, गर्भाशय का कम विकास, मासिक से पूर्व तनाव तथा मासिक में कठिनाई में 2 टिकिया दिन में 3 बार मासिक के 10 वें दिन से शुरू करके मासिक आने तक दें।

शक्ति मकरध्वज टेबलेट (मार्तन्ड)—शक्तिदायक, वाजीकरण, पौरुषवर्धक, नपुंसकता नाशक है। मानसिक चिन्ता, मस्तिष्क और हृदय की दुर्बलता, मिर्गी, उन्माद, पक्षाघात, अर्दित, नाड़ी शूल, पान्डु रोग, कामला, रक्त की कमी, वीर्य की कमी, शीघ्रपतन, प्रमेह एवं हृदय रोगों में शीघ्र लाभकारी दिव्य औषधि है। श्वास रोग, पुरानी खाँसी और क्षय में भी लाभकारी है। हृदय, मस्तिष्क तथा वृक्कों को शक्ति देती है। भूख बढ़ाती है शुक्राणुओं को उत्पन्न करती है। इस औषधि

का अद्‌भुत मिश्रण (योग) बुढ़ापा और मृत्यु को जीतकर मनुष्य को तेजस्वी, सप्राण, शक्तिशाली और जवान बना देता है । 1-2 टिकिया दिन में 1-2 बार अथवा आवश्यकतानुसार दूध से सेवन करें ।

द्राक्षोबिन सीरप (धूतपापेश्वर)—1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार प्रयोग करें । अतिशय दुर्बलता में अत्यन्त लाभकारी है ।

अंगूरासव (झन्डू)—10 से 30 मि.ली. दिन में 2-3 बार लें । सामान्य दुर्बलता नाशक अति उत्तम पेय है ।

रक्तोफा स्फोमाल्ट (झन्डू)—10 से 30 मि.ली. दिन में 2-3 बार लें। अतिशय गुणकारी, स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक है ।

शुद्ध शिलाजीत (झन्डू)—आवश्यकतानुसार दें । दुर्बलता नाशक है ।

शमशामनी पिल्स नम्बर 1 (झन्डू)—दुर्बलता नाशक उत्तम योग है ।

इथिबाइट टेबलेट (मेडिकल इथिक्सि)—2-3 गोली दिन में 3-4 बार अति दुर्बलता में अति उपयोगी है ।

इथिलीवर फोर्ट (मेडिकल इथिक्सि) 2-2 टिकिया दिन में 3 बार अथवा आवश्यकतानुसार प्रयोग करें । बच्चों के लिए सीरप तथा नन्हें शिशुओं को इसका ड्राप्स भी आता है । यह प्रत्येक प्रकार की दुर्बलता में अत्यन्त उपयोगी है ।

रोग के बाद की दुर्बलता

रोग से उठने के उपरान्त प्राय: हर रोगी काफी कमजोर, कृषकाय, दीनहीन कमजोर और दुर्बल हो जाता है । ऐसी अवस्था में निम्नलिखित पेटेन्ट आयुर्वेदिक योगों का सेवन करें, लाभप्रद है ।

रसायन वटी (राजवैद्य शीतल प्रसाद)—प्रत्येक प्रकार की दुर्बलता नाशक है । 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार अथवा 2-2 सुबह-शाम दूध से लें।

ओजस लिक्विड (चरक)—1-2 छोटे चम्मच दिन में 2 बार भोजन से पूर्व समान जल मिलाकर ।

पंचारिष्ट पेय (झन्डू)—10 से 30 मि.ली. दिन में 2 बार भोजनोपरान्त।

सोमपान सीरप (राजवैद्य शीतल प्रसाद)—2-4 चम्मच दिन में 2 बार व्यस्कों को दें । बच्चों को आधी मात्रा सेवन करायें ।

आरोग्य मिश्रण (धूतपापेश्वर)—1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार दें ।

स्टेनेक्स टेबलेट (झन्डू)—युवा और वृद्धों हेतु उपयोगी है । 2-4 टिकिया दिन में 3 बार सेवन करें ।

मेनोलटेबलेट (चरक)—2-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दें ।

शतावरक्ष सीरप (झन्डू)—1 से 4 चम्मच शर्बत को सुबह-शाम दूध में डालकर लें ।

अंगूरासव (झन्डू)—2 से 4 चम्मच दिन में 2 बार भोजनोपरान्त लें ।

स्नायु दुर्बलता

इस रोग से ग्रसित रोगी भी अत्यन्त कमजोर हो जाता है । उसकी सहन शक्ति नष्ट हो जाती है । थोड़ा-सा शारीरिक अथवा मानसिक श्रम करने से ही रोगी थक जाता है । थोड़ी-सी उत्तेजना से ही उत्तेजित हो जाता है तथा हीनता-भाव से बौखलाकर भाव-विह्वल हो अँसू बहाने लगता है । ऐसी दशा में निम्नलिखित पेटेन्ट आयुर्वेदिक योगों का सेवन करें ।

नारड्रिल टेबलेट (हिमालय)—1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार या आवश्यकतानुसार लें । कब्ज न रहने दे तथा गैस का विकार भी न होने दें ।

गैन्डिको (डिशेन)—हृदय की शक्ति हेतु अत्युत्तम । दिल की धड़कन बढ़ने व सांस फूलने में उपयोगी है । गुर्दे की सूजन तथा पेशाब कम उतरने व जलोदर में भी उपयोगी है । यह औषधि नशीली अथवा उत्तेजक भी नहीं है । ये 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दें ।

बायोसाल ग्राइपवाटर (डिशेन)—बच्चों व शिशुओं के दाँत निकलने व पाचन सम्बन्धी विकारों हेतु अति उपयोगी । नवजात शिशुओं को चौथाई चम्मच दिन में 2 बार इसे तथा 1 से 6 माह के बच्चों के लिए आधी चम्मच दिन में 2 बार । 6 माह से 1 वर्ष आयु के बच्चों के लिए 1 चम्मच दिन में 2 बार तथा 1 वर्ष से ऊपर बच्चों के लिए 1-2 चम्मच दिन में 2 बार सेवन करायें ।

अल्बोसांग (डिशेन)—पोषण की कमी के लिए अत्यन्त उत्तम टॉनिक। वयस्कों को 1 चाय का चम्मच भर पाउडर या 2 टिकिया दिन में 2 बार भोजनोपरान्त तथा बच्चों की आधी मात्रा एवं शिशुओं को चौथाई मात्रा दें ।

अगरको (डिशेन)—उत्तेजित स्नायुमण्डल को शान्त कर मिर्गी, हिस्टीरिया व शिशुओं में ऐंठन से होने वाले दौरों में उपयोगी है । अधिक लाभ हेतु दिन में इसी कम्पनी की 'विटेसान' सबेरे तथा रात्रि को **'अगरको'** सेवन करें । वयस्कों को 1-2 टिकिया दिन में 3 बार भोजन से आधा घन्टा पूर्व तथा शिशुओं और बालकों को चौथाई टिकिया 3 या 4 बार शहद से दें ।

अराटिनम (डिशेन)—स्त्रियों की जननांगों की गड़बड़ी हेतु अति उत्तम है। समस्त स्त्री के गुप्त रोग नाशक तथा पुरुषों के अन्डकोषों के सूजन, दर्द तथा बढ़े हुए रक्तचाप में भी उपयोगी । 1 से 2 टिकिया दिन में 3 बार खाना खाने के आधा घन्टा पूर्व तथा रात्रि को सोते समय ।

ब्रह्माडाइन (डिशेन)—गर्भाशय सम्बन्धी विकारों रक्त प्रदर व श्वेत प्रदर में अति उपयोगी है । अनियमित तथा कष्ट से होने वाले मासिक विकारों में अत्यधिक लाभप्रद है । इसी कम्पनी की चिनियमको टेबलेट के साथ सेवन करना अधिक लाभप्रद है । इसकी 1 से 2 टिकिया सुबह-शाम लें ।

चेसाल (डिशेन)—सूजन व दर्द निवारक तैल । मांसपेशियों के कृष हो जाने पर उनमें रक्त संचार व उत्तेजना लाने हेतु अति उपयोगी है ।

नोट—नाजुक त्वचा के स्थानों पर तिली के तैल में मिलाकर हल्का कर उपयोग में लायें। आँख, नाक तथा होठों पर न लगायें । सर्दी के दिनों में बचाव हेतु छाती व पसलियों में रात्रि को मालिश करने से सर्दी नहीं लगती है तथा सर्दी से फेफड़ों में जमे बलगम को निकाल देता है । बाह्य प्रयोगार्थ (केवल मालिश हेतु) उपयोग में लें ।

चिनियमको (डिशेन)—दर्द के साथ मासिक धर्म, टाँगों में फटन, पेट में अफारा व दर्द, रक्तस्राव को बन्द करने हेतु यकायक शिशु के कान, दाँत या पेट में दर्द होने पर प्रयोग करें । वयस्कों को 1 से 2 टिकिया दिन में 3 बार बच्चों को आधी से 1 टिकिया तक दें ।

फेरस फ्यूमरेट टिकिया (डिशेन)—लौह की कमी से होने वाली रक्त की कमी में अति उपयोगी है । बड़ों को 1 से 3 टिकिया खाने के बाद । बच्चों को आधी से 1 गोली तक दें ।

नोट—आमाशय में घाव (पेप्टिक अल्सर) के रोगी न लें ।

मरसीना टेबलेट (डीशेन)—मधुमेह के लिए अतीव उपयोगी है । अधिक रक्त शर्करा में 4 टिकियों की 1 खुराक दिन में 3 बार दें जैसे-जैसे शक्कर कम होती जाए खुराक कम करते जायें ।

नर्वोप्लेक्स (स्नायु विकारों हेतु अति उत्तम इन्जेक्शन) (निर्माता डीशेन)—वयस्क 24 घंटे में 1 बार 1 मि.ली. की लगवायें । दशा में सुधार होने पर सप्ताह में 1 या 2 बार लगवाना ही काफी है । बच्चों को चौथाई मि.ली. दिन में 1 बार लगवायें । इसके प्रयोग से चिन्ता, चिड़चिड़ापन, मूर्च्छा, स्त्रियों के गर्भाशय सम्बन्धी रोग तथा नाड़ी संस्थान से नियन्त्रित होने वाले—गठिया, आमवात, जोड़ों व रगपुट्ठों, के दर्द, पेट की शूल, पीड़ा, पाचन विकार, सिरदर्द, दमा व खाँसी

के दौरों को रोकने हेतु एवं बेचैनी, सन्निपात, तीव्र ज्वर की दशा में नींद न आने पर तथा शीघ्र प्रसव कराने हेतु भी उपयोगी है ।

नेवास टिकिया (डीशेन)—प्रकृति के विरुद्ध आचरण के कारण उत्पन्न स्नायु दुर्बलता में परम उपयोगी है । काम विकारों (Sex) में भी उपयोगी है । अधिक कामवासना में भी लाभप्रद है । शीघ्र स्खलन दूर कर वीर्य स्तम्भन शक्ति भी प्रदान करती है । नवयुवकों के स्वप्नदोष रोग और बच्चों का बिस्तर में पेशाब कर देने में भी अत्यन्त उपयोगी है । मात्रा—बच्चों को चौथाई से आधी टिकिया 4 घंटे के अन्तर से तथा बड़ों को 1 से 2 टिकिया दूध से ।

ओलोसिन (डिशेन)—स्नायु विकारों हेतु बाह्य प्रयोगार्थ अति उत्तम तैल। इस तैल की मालिश से कमजोर मांसपेशियों में रक्त संचार होता है । अनिद्रा व घबराहट हेतु सिर में मालिश करें । नाड़ियों को शक्ति प्रदान करने हेतु तथा फालिज से पीड़ित अंगों में निरन्तर मालिश से लाभ होता है । गर्मी के दिनों में तेज ज्वर में हाथ-पैर व तलुवों में मालिश करने से 1-2 डिग्री ज्वर कम हो जाता है । सिर के बालों को गिरने से रोकता है, किसी अन्य केश तैल में 1-5 के अनुपात में मिलाकर अथवा ऐसे ही अकेले प्रयोग करें । मिरगी तथा मूर्च्छा में सिर में मालिश के अतिरिक्त 2-2 बूँद कानों में भी डालें । (कान का परदा यदि छिद्रमय हो तो न डालें ।)

सेन्जाइन टिकिया (डीशेन)—स्नायु दुर्बलता हेतु अति उपयोगी है । स्नायु दुर्बलता के कारण उत्पन्न नपुंसकता तथा कामशक्ति की कमी में उपयोगी है । यह उत्तेजक नहीं है, बल्कि कामं नियन्त्रण केन्द्र को शक्तिशाली बनाकर पौरुष शक्ति का संचय करता है । इसके सेवन से खोई हुई कामशक्ति पुनः वापस आ जाती है । मानसिक रोगियों हेतु ताजगी प्रदान करती है । स्नायु दुर्बलता हेतु खाने के 1 घंटा पूर्व दें 1 टिकिया दिन में 2 बार तथा पौरुष शक्ति हेतु 2 टिकिया दिन में 3 बार खाने के बाद दूध से लें ।

दिमाग दोषहरी टेबलेट (वैद्यनाथ)—1-2 टिकिया प्रतिदिन 2-3 बार अथवा आवश्यकतानुसार । स्नायु दोषों हेतु सर्वोत्तम औषधि है ।

रजोनिवृत्ति

रोग परिचय—यदि हकीकत में कहा जाए तो यह कोई रोग नहीं है । स्त्री की आयु जब 45 से 48 वर्ष की हो जाती है तब उसको रजः आना धीरे-धीरे बन्द हो जाता है । तब स्त्री को विभिन्न प्रकार के रोग और कष्ट हो जाते हैं । कई

स्त्रियों को मासिक समाप्त होने के पूर्व ही विभिन्न प्रकार के रोग और कष्ट हो जाते हैं और यह आवश्यक भी नहीं है कि प्रत्येक स्त्री को तमाम लक्षण और कष्ट हों अर्थात् किसी स्त्री को इनमें से कोई रोग व कष्ट और दूसरी अन्य किसी स्त्री को अन्य कष्ट हुआ करता है । स्त्री के मुख, सिर, गर्दन और गले के ऊपरी भाग में लाली और गर्मी उत्पन्न हो जाती है, पसीना अधिक आता है । प्रायः समस्त शरीर पर लाली-सी दिखाई देती है, सिरदर्द और सिर में चक्कर, मितली, बेचैनी, नींद न आना, भूख हट जाना, अजीर्ण, चिड़चिड़ापन, क्रोध, भय, घबराहट इत्यादि कष्ट हो जाते हैं । बहुत-सी स्त्रियों को हाईब्लड प्रेशर, बहम और पागलपन का रोग हो जाता है ।

मासिक बन्द होने के समय कई स्त्रियों का गर्भाशय बड़ा हो जाता है जिससे उनको बहुत अधिक मात्रा में रक्त आने लगता है । प्रायः इस तरह का कष्ट मासिक बंद होने से पूर्व हो जाता है और इसके बाद रजोदर्शन हमेशा के लिए बन्द हो जाता है । प्रायः गठिया (जोड़ों का दर्द), मोटापा, मूत्र में शक्कर आना, कमर दर्द, आधे सिर का दर्द आदि कष्ट हो जाते हैं । स्त्री हर समय दुखी रहती है, उसका दिल अधिक धड़कता है, शरीर में गर्मी की लहरें प्रतीत होती हैं । कभी-कभी कम्पन और रक्त में विकार आने से कई चर्म रोग उत्पन्न हो जाते हैं ।

उपचार—इस हेतु शास्त्रीय (आयुर्वेदिक) औषधि चन्द्रोदय रस अत्यन्त सफल सिद्ध हुआ है । इसे आधी से 1 रत्ती मात्रा में मधु में मिलाकर चाटें । तदुपरान्त गाय का 1 पाव भर दूध मधु मिलाकर पियें ।

एक्जिमा, छाजन, पामा

रोग परिचय—इसे अकौता, चम्बल, छाजन, पामा, पानीवात आदि अनेक नामों से जाना जाता है । इसका प्रकोप चर्म पर खाज-खुजली, जलन तथा दर्द युक्त छोटी-छोटी बारीक फुन्सियों से प्रारम्भ होता है । यही छोटी-छोटी फुन्सियाँ या दानें खुजलाते-खुजलाते घाव का रूप धारण कर बड़ा आकार ग्रहण कर लेते हैं । रोग नया हो या पुराना, बड़ी कठिनाई से ठीक होता है । इस रोग का कारण पाचन विकार, शारीरिक कमजोरी, वंशज प्रभाव, वृक्क शोथ, मधुमेह, गाऊट (छोटे जोड़ों का दर्द) अन्य जोड़ों का दर्द, स्थानीय खराश, साबुन का अधिक प्रयोग, बच्चों का दाँत निकलना या पेट में कीड़े होना, पसीने की अधिकता, चर्म से भूसी उतरना इत्यादि हैं ।

उपचार

● पुनर्नवा (साठी) की जड़ 125 ग्राम को सरसों के तैल में मिलाकर पीसें। फिर 50 ग्राम सिन्दूर मिलाकर मरहम तैयार करलें । इस मरहम को कुछ दिन लगाने से चम्बल जड़मूल से नष्ट हो जाता है। शर्तिया दवा है ।

● सरसों के तैल 50 ग्राम में थूहर (सेंहुड़) का डन्डा रखकर खूब गरम करें । जब थूहर जल जाए तब जले हुए डन्डे को बाहर फेंक दें और तैल को शीशी में सुरक्षित रखलें । चम्बल को नीम के क्वाथ से धोकर फुरैरी से यह तैल दोनों समय लगायें । पुराने से पुराना चम्बल 1 सप्ताह में नष्ट हो जाता है ।

● लालकत्था, काली मिर्च, नीला थोथा और बकरी की पशम सभी को समभाग लेकर सूक्ष्म पीसकर मिलाकर रखलें । दाद या चम्बल सूखा हो तो उसे खद्दर के मोटे तौलिए से इतना खुजला लें कि रक्त जैसा निकलने लगे (लाल-लाल हो जाए) तदुपरान्त गाय का मक्खन 101 बार का धुला हुआ लगाकर ऊपर से इस चूर्ण को बुरक दें । यदि दाद या खाज गीला हो तो उसे खुजलाने की आवश्यकता नहीं है, वैसे ही मक्खन लगाकर चूर्ण बुरक दिया करें । इस प्रयोग से पुराने से पुराना दाद और चम्बल जड़ से मिटता है ।

● तारकोल और कड़वा तैल दोनों समभाग लेकर आग पर गरम कर लें। जब खदक पड़ने लगे तब उतार कर शीशी में भर लें । इसे छाजन पर सुबह-शाम लगायें, 3-4 दिन रोग बढ़ा हुआ सा प्रतीत होगा, फिर ठीक हो जाएगा।

● चाल मोगरा के तैल का सेवन करने से प्रायः सभी प्रकार के चर्म रोग (खाज, खुजली, चकते, बद, कण्ठमाला, कुष्ठ, सफेद दाग, नासूर, दाद इत्यादि) ठीक हो जाते हैं । इसे खाया भी जाता है और लगाया भी जाता है ।

छाजन नाशक पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

छाजन मलहम (गर्ग), **एक्जिमा मलहम** (बैद्यनाथ), **रिंगरिंग मलहम**, **खुजलीना तैल** (डाबर), **चर्म रोगहर मरहम** (जी. ए. मिश्रा), **जर्मोल मलहम** (एसेटिक), **खाजना स्किन आइन्टमेन्ट** (अजमेरा), **मुलदाद तैल** (मुलतानी), **स्किन नाल मलहम** (सन इन्डिया), **स्कीनोक्स मलहम** (हरनोमेड), **चर्मनील मलहम** (गर्ग), **छाजनहर मलहम** (गर्ग), **चर्म क्लीन मलहम** (अतुल फार्मेसी) आदि का पीड़ित त्वचा पर प्रयोग करें ।

ब्लडप्योरेक्स टेबलेट (मार्तन्ड) रक्त विकार नाशक, रक्त शोधक, चर्म रोग नाशक 2-2 टेबलेट दिन में 2-3 बार जल से सेवन करें।

रक्तशोधन वटी (बैद्यनाथ) 1-1 टिकिया दिन में 3-4 बार दें।

'चारमोल' मलहम तथा 'रक्त विकारि' कैपसूल (पंकज फार्मा.) दोनों का साथ-साथ प्रयोग करें।

डरमाफेक्स सीरप (भारतीय औषध निर्माणशाला) 2-2 चम्मच दिन में 3 बार पियें तथा साथ में इसी कम्पनी का प्यूरोसीन मलहम लगायें।

रक्तटोन सीरप (ग्लोब) 1-2 चम्मच दिन में 3-4 बार भोजनोपरान्त।

रक्तशोधक टेबलेट (धन्वन्तरि) 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार लें।

गन्धक रसायन वटी (पनवेल) 2-2 टिकिया दिन में 3 बार लें।

गन्धक मिश्रण टेबलेट (धन्वन्तरि) यह रक्त शोधक है।

चर्मक्लीन कैपसूल (अतुल फार्मेसी) 1-1 कैपसूल सुबह-शाम जल अथवा सारिवाद्यासव के साथ सेवन करें।

छपाकी शीतपित्त (Irticaria)

रोग परिचय—इस रोग को-जुड़ी पित्ती, जुल्म पित्ती, शीत पित्ती, छपाकी इत्यादि कई नामों से जाना जाता है। रक्त की उष्णता के कारण शरीर पर चकत्ते या ददौरे पड़ जाते हैं, जो तेजी से खुजलाते हैं। रोग पुराना हो जाने पर इससे छुटकारा पाना अत्यधिक मुश्किल हो जाता है। कभी-कभी इसके साथ ज्वर भी हो जाता है। प्राय: यह रोग पाचक संस्थान की गड़बड़ी (अजीर्ण, अग्निमांद्य, मन्दाग्नि, कब्ज) अथवा स्त्रियों के गर्भाशयिक विकारों तथा वात रोग किसी प्रकार के जहरीले कीड़े—बर्र, मधुमक्खी, मच्छर, खटमल आदि के काटने से अथवा अत्यधिक शीत या धूप लग जाने, अत्यधिक परिश्रम, तनाव, चिन्ता, मानसिक उत्तेजना, किसी खाद्य या पेय पदार्थ किसी औषधि-विशेष से होने वाली एलर्जी, धूल, धुआँ, गन्ध, सुगन्ध, ऋतु परिवर्तन, भोजन में अत्यधिक तेज मिर्च मसाले, घी-तैल का प्रयोग, खट्टे, चटपटे पदार्थों का सेवन, उपदंश रोग के विषाणुओं और सर्दी-गर्मी का एक साथ प्रकोप यथा—नहाकर जल्दी से ही कोई गरम कम्बल अथवा रजाई ओढ़ लेना अथवा जल्दी से गर्म चाय, कॉफी, दूध अथवा कोई गरम पदार्थ सेवन कर लेना तथा ऐलोपैथिक (सैलिसिलेट, एस्प्रिन, वेदना हर दवाओं तथा पेनिसिलीन इत्यादि के प्रयोग के कारण यह रोग हो जाया करता है। मांस-

मछली का अधिक सेवन तथा क्वीनीन (मलेरिया की ऐलोपैथिक दवा) और संखिया मिश्रित योगों के सेवन से भी यह रोग हो जाता है।

उपचार

रोगी भयंकर शीत तथा गरमी से बचे। पानी में भीगना, ओस में सोना या चलना-फिरना, सर्द वायु में न रहे, मांस-मछली, अण्डे इत्यादि का सेवन न करें।

नीम के पत्ते डालकर गरम किये पानी से स्नान करना हितकर तथा आवश्यक है। नीबू के टुकड़ों से चकत्तों को मलना भी लाभकर है। भोजन हल्का सुपाच्य खाना चाहिए। इस रोग को दूर करने का सबसे सरल उपाय यह है कि रोग के मूल (वास्तविक) कारण का उपचार किया जाए अन्यथा यह रोग कई वर्षों तक बना रह सकता है।

- घी में थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर शरीर पर मलने से उठी हुई पित्ती शान्त होती है।
- नीम के हरे पत्ते साफ करके तब तक चबाते रहें जब तक कि कड़वे न लगने लग जायें। यदि हरी निबौली मिल जाए ते 6 नग चबायें। अत्यन्त प्रभावशाली औषधि है।
- यदि पित्ती के ददौड़ों में खुजली अधिक हो तो—अर्क गुलाब 30 ग्राम में सिरका 20 ग्राम को मिलाकर लगाने से तुरन्त आराम मिलता है।
- सर्पगन्धा की जड़ 1 ग्राम बारीक पीसकर पानी के साथ लेने से तुरन्त लाभ मिलता है।
- पोदीना 9 ग्राम और शक्कर 20 ग्राम लेकर दोनों को 200 ग्राम पानी में उबालकर, छानकर पिलाने से पित्ती शान्त हो जाती है।
- नागकेसर बारीक पीसकर 3 ग्राम लें। उसे 10 ग्राम शहद के साथ दिन में 4-5 बार चटाना लाभप्रद है।
- आँवले का चूर्ण गुड़ में मिलाकर सेवन करना लाभप्रद है।
- अदरक के रस में पुराना गुड़ मिलाकर खिलाना भी लाभप्रद है।
- त्रिफला चूर्ण शहद में मिलाकर सेवन करने से भी शीत पित्ती समूल नष्ट हो जाती है।
- अरने उपलों की राख शरीर पर मलना भी अतीव गुणकारी है।
- शीतपित्त के चकत्तों पर गेरू मलना और गेरू खाना लाभप्रद है।
- सरसों के तैल की मालिश करके गरम गुनगुने पानी से स्नान करना भी अत्यन्त ही लाभकारी है।

● गाय का घी, गेरू, सेंधानमक, कुसुम के फूल बराबर-बराबर लेकर पीस लें और उबटन बनाकर शीत पित्ती में मालिश करें। शीत पित्त हमेशा के लिए नष्ट हो जाती है।

● आँवले तथा नीम के कोमल पत्तों को घी में तलकर 15 दिन तक 4-4 पत्ते सेवन करने से मात्र शीतपित्त ही नहीं, बल्कि अनेक प्रकार के चर्म रोग नष्ट होकर त्वचा निरोग, साफ व सुथरी हो जाती है।

पित्तीनाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

आर्टप्लेक्स टेबलेट (चरक)—वयस्कों को 2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार चीनी मिश्रित जल से तथा बच्चों को आधी मात्रा दें।

वेगीकार्ट टेबलेट (हिमालय)—2-2 टिकिया दिन में 3-4 बार लें तथा इसी कम्पनी का वेगीकार्ट मलहम दिन में 3 बार अथवा आवश्यकतानुसार पित्ती में मालिश करें।

पुरीला लिक्विड (चरक)—वयस्कों को 3-3 चम्मच दिन में 3 बार समान मात्रा में जल मिलाकर तथा बच्चों को 1-2 चम्मच दिन में 3-4 बार।

एलार्जिन टेबलेट (अजमेरा)—1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दें।

चर्म रोगहर मलहम (जी. ए. मिश्रा)—आवश्यकतानुसार पीड़ित त्वचा पर दिन में 2-3 बार मलें।

क्यूरोसिन मलहम (भा: औ. निर्माणशाला)—दिन में 3 बार पीड़ित त्वचा पर मालिश करें।

एल्लेरिन टेबलेट (भा. औ. निर्माणशाला)—वयस्कों को 2-2 टिकिया दिन में 3 बार तथा बच्चों को 1-1 टिकिया दिन में 3 बार सेवन करायें।

रक्तोन सीरप (ग्लोब)—2-2 चम्मच प्रत्येक खाना खाने के बाद दें।

डरमिना मलहम (हरबोमेड)—आवश्यकतानुसार दिन में 2 बार पीड़ित त्वचा पर मलें।

शोधक सीरप (देशरक्षक)—वयस्कों को 2-2 छोटे चम्मच, समान जल मिलाकर दिन में 3 बार। बच्चों को आधा से 1 चम्मच दिन में 3 बार।

प्यूरीफाइर सीरप (मेडिकल इथिक्स)—वयस्कों को 1-2 छोटा चम्मच दिन में 3 बार बराबर पानी मिलाकर तथा बच्चों को आवश्यकतानुसार प्रयोग करायें।

ब्लूडेक्स लिक्विड (बी. ए. फार्मा)—वयस्कों को 1-2 चम्मच दिन में 3 बार बच्चों को आधा से 1 चम्मच दिन में 3 बार दें।

लघुसूत शेखर टिकिया (बैद्यनाथ)—1-2 गोली दिन में 2-3 बार मिश्री मिले दूध से दें।

अलटैक्स टेबलेट (हरबोमेड) 1-2 गोली दिन में 3 बार। इसी नाम से इसी कम्पनी का पेय भी आता है, इसे वयस्कों को 1-2 चम्मच दिन में 2-3 बार तथा बच्चों को आधा से 1 चम्मच दिन में 2-3 बार सेवन करायें।

रक्तशोधन वटी (धन्वन्तरि)—1-2 गोली दिन में 2-3 बार लें।

सारीन टेबलेट (ग्लोब)—2-3 टिकिया भोजनोपरान्त दिन में 3 बार।

अर्टीटैब गोली (धन्वन्तरि)—2-3 टिकिया दिन में 2-3 बार पानी से सेवन करें।

रक्ताशू सीरप (अजमेरा)—2-3 चम्मच समान मात्रा में जल मिलाकर दिन में 2-3 बार दें। साथ में इसी कम्पनी द्वारा निर्मित इसी नाम से प्राप्य टिकिया 1-2 दिन में 2-3 बार खायें।

सिद्धयोग चक्रिका (मुलतानी)—1 से 4 वर्ष के बच्चों को चौथाई तथा 4 से 12 वर्ष के बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को 1 और 12 वर्ष से ऊपर आयु वाले बच्चों एवं वयस्कों को 1 से 2 चक्रिका दिन में 2 बार दूध, मक्खन, मलाई अथवा मधु से सेवन करायें।

एमीप्योर सीरप (एमिल)—1-1 चम्मच बराबर पानी मिलाकर दिन में 3 बार। इसकी इसी नाम से टेबलेट भी प्राप्य है।

गन्धक मिश्रण (धन्वन्तरि)—1-2 गोली दिन में 2-3 बार जल से या आवश्यकतानुसार लें।

चम्बल, अपरस (Proriasis)

रोग परिचय—यह रोग प्राय: कुहनी, घुटनों, पीठ, छाती, जाँघों इत्यादि चर्म पर गुलाबी रंग के पित्त के सिरे जैसे छोटे-छोटे दानों के रूप में उत्पन्न होता है। इन दानों में पीप नहीं होती है। यह एक अत्यन्त हठीला रोग है जो वर्षों तक बना रहता है। कभी-कभी यह स्वत: दब जाता है किन्तु कुछ समय बाद अथवा विशेष मौसम में पुन: उभर आता है। यह रोग प्राय: गठिया, आमवात, दस्तों का पीप युक्त होना, टान्सिल और गर्भाशय ग्रीवा में जीवाणुओं के संक्रमण होने तथा घी, मक्खन आदि के अधिक सेवन करने तथा दांतों के विकार—पायोरिया आदि के कारण एवं अजीर्ण और उपदंश आदि रोगों के कारण यह रोग हो जाता है।

प्रारम्भ में त्वचा पर गुलाबी या लाल अथवा बैंगनी रंग के बहुत ही छोटे-छोटे पीप रहित दाने निकलते है, जो बाद में आपस में मिलकर एक बड़ा ताम्रवर्ण का चकत्ता बन जाता है। इसके समीप की त्वचा पर लाल रंग का प्रदाहयुक्त एवं रोगाक्रान्त स्थान ऊँचा और सूखा सा हो जाता है। उस चाँदी के सदृश छिलके उतरते रहते हैं। इनमें पीप नहीं होती है किन्तु खुजली होती है। बाद में यह धब्बे समस्त शरीर में फैल सकते हैं। यदि इन पिड़िकाओं को शलाका से उखाड़ा जाए तो उसके नीचे सोरायटिक झिल्ली दिखलाई देने लगती है। झिल्ली हटाये जाने पर उसके नीचे ओस की बूँदों की भाँति खून की पिड़िका का लाल सतह नजर आती है। इसके होने से शरीर में कोई विशेष हानि नहीं होती है। केवल रोगग्रस्त त्वचा का कष्ट और उसका भद्दा लगना ही रोगी को बर्दाश्त करना पड़ता है।

उपचार—किसी भी चर्म रोग को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि पहले किसी दस्त लाने वाली औषधि को खाकर रोगी पेट साफ करलें। इसे हेतु सनाय के पत्ते 1 ग्राम, गुलाब के फूल 1 ग्राम, मुनक्का 1 ग्राम, काला दाना (बीज) 1 ग्राम में थोड़ा गोंद और जल मिलाकर जंगली बेर के समान गोलियाँ बनाकर इसे आधी से 2 गोली दें, ताकि पेट साफ हो जाए। यह मृदु विरेचन योग है।

तीव्र विरेचन हेतु

जायफल शुद्ध, इलायची दाना, काली मिर्च, कत्था प्रत्येक 10-10 ग्राम लेकर सभी को खरल करके चने के आकार की गोलियाँ बनालें। कोमल प्रकृति के रोगी को आधी से 1 गोली तथा सख्त कोठा वाले रोगी को 2 से ढाई गोली तक ठण्डे जल से खिलायें। इस योग के सेवन के उपरान्त जितने चुल्लू पानी पियेंगे, उतने ही दस्त आयेंगे। दस्त बन्द करना चाहें तो उसी प्रकार गरम पानी के घूंट पियें तथा दही, भात या गीला मांड भात खायें। यह तीव्र **विरेचन है।**

शास्त्रीय औषधि सारिवाद्यासव के सेवन से रक्त एवं चर्म रोग दूर हो जाते हैं और रक्त शुद्ध हो जाता है।

● सफेद संखिया 60 मि. ग्रा., पिसी काली मिर्च 180 मि. ग्रा. और बबूल का गोंद आवश्यकतानुसार लेकर सर्वप्रथम संखिया और काली मिर्च को कई घंटे तक खरल करें। जब सुरमें की भाँति बारीक हो जाए तब बबूल की गोंद पीसकर और पानी से गीला करके 30 गोलियाँ बनालें। ये 1-1 गोली सुबह-शाम दूध से खायें। इसके सेवन से चम्बल और दूसरे चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं।

● अलकतरा 1 भाग को 2 भाग रैक्टिफाइड स्प्रिट में घोलकर ब्रुश से दिन में 2 बार चम्बल पर लगाना अति गुणकारी है।

● आमलासार गन्धक को बारीक पीसकर 6 से 8 गुनी वैसलीन में मिलाकर लगाना भी लाभप्रद है।

● नीम के ताजा पत्तों का रस 500 मि.ली., गाय का घी 125 ग्राम रस कपूर 12 ग्राम तथा मोम 25 ग्राम। सर्वप्रथम घी में नीम के पत्तों का रस और रस कपूर डालकर गरम करें। जब समस्त रस उबलकर शुष्क हो जाए तब इसमें मोम डालकर पिघलाकर घोट लें। चम्बल पर यह मलहम लगाना लाभकारी है।

● मुर्दासंग, सुहागा, नीला तूतिया, गोल मिर्च, अजवायन, कमीला तथा कत्था प्रत्येक 36-36 ग्राम एवं कपूर 9 ग्राम, जयपुरी सफेद कागज 18 ग्राम, सुपारी व पीली कौड़ी 4-4 नग लें। सर्वप्रथम गोल मिर्च, अजवायन और सुपारी इन तीनों को आधा जला लें फिर कौड़ी की भस्म बनायें। तदुपरान्त सभी को बारीक पीसकर कपड़े से छानकर वैसलीन में मिलाकर मरहम बनाकर सुरक्षित रखलें। नीम के पत्तों के क्वाथ से चम्बल को धो-पोंछकर प्रतिदिन 2 बार इस मल्हम को लगायें। यह प्रत्येक प्रकार के चर्म रोगों हेतु सर्वश्रेष्ठ लाभप्रद मलहम है।

● नीम की छाल, पीपल की छाल, मजीठ, नीम वाली गिलोय सभी 10-10 ग्राम लेकर काढ़ा बनाकर प्रतिदिन सुबह-शाम (40 दिनों तक) निरन्तर पियें तथा पीड़ित त्वचा पर नीम का तैल लगायें। चम्बल समूल नष्ट हो जायेगा। शर्तिया योग है।

चम्बल नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

रक्त शोधक वटी (राजवैद्य), **चारमोल मलहम** (पंकज, **रक्त विकारि कैपसूल** (पंकज), **ब्लडप्यूरी फायरपेय** (झन्डू), **रक्तशोधन कैपसूल** (ज्वाला), **चर्म नौल मलहम** (गर्ग), **निम्बादि मलहम** (धन्वन्तरि), **खाजरिपु** (धन्वन्तरि), **कन्डूनाशक मलहम** (राजवैद्य शीतल प्रसाद) **डरमाफैक्स पेय** (भारतीय औषध निर्माणशाला), **खाजना स्किन आइन्टमेन्ट** (अजमेरा), **मुलदाद तैल** (मुलतानी), **स्कीनोक्स मलहम** (हरबोमेड) इत्यादि का प्रयोग करें।

कील-मुंहासे (Acne)

रोग परिचय—युवावस्था में होने वाला यह एक प्रकार का शोथयुक्त चर्म रोग है। यह प्राय: जवान (युवा) हो रहे युवक-युवतियों को ही होता है। इस रोग

को मुख-दूषिका, युवा पिड़िका और वयोव्रण आदि नामों से भी जाना जाता है। यह 25-26 वर्ष की आयु में स्वयं ही दूर हो जाते हैं। इनका स्वास्थ्य पर भी कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है। मात्र चेहरा भद्दा (बुरा) लगता है। मुंहासों की कीलों को तोड़ने पर लेसदार गाढ़ी पीप निकलती है। यह रोग प्रायः अजीर्ण, रक्त में गरमी की अधिकता, रक्तदोष, गरम भोजन और पेय पदार्थों का अत्यधिक सेवन, बबासीर का रक्त आने, मासिकधर्म बन्द हो जाने आदि कारणों से हो जाता है। चिकने चर्म वाले मनुष्यों को यह अधिक होता है।

उपचार—रोगी धैर्यपूर्वक उपचार करें तथा पेट ठीक रखें, कब्ज न होने दें। पाचन शक्ति बढ़ायें। आँतें साफ रखें। विटामिन ए. 50 से 65 हजार यूनिट तक प्रतिदिन सेवन करना लाभप्रद है। खेलकूद, व्यायाम, खुली वायु में सुबह-शाम भ्रमण करना, उचित आहार-विहार रखें। इस रोग में सूर्य की किरणें (अल्ट्रावायलेट) का भी असर लाभप्रद होता है।

- सब्जियाँ उबालकर खाना या उनका रस पीना लाभप्रद है।
- त्रिफला और मुलहठी मिलाकर 3-4 ग्राम खाते रहने से कब्ज दूर होकर कील-मुंहासे दूर हो जाते हैं।
- काले चने भुने हुए 6 ग्राम, मुर्दासंग 3 ग्राम और सफेदा काशगरी 3 ग्राम को बकरी के दूध में पीसकर रात्रि को चेहरे पर मलकर प्रातःकाल चेहरा (मुख) गरम पानी से धोवें। यह प्रयोग भी कील मुंहासों को नष्ट कर देता है।
- पीली कौड़ियाँ एनामेल या शीशे की प्याली में डालकर नीबू का रस इतना डालें कि कौड़ियाँ डूब जाये। सात दिन में यह कौड़ियाँ गल जायेंगी। इनको पीसकर और कपड़े से छानकर रात्रि को मुख पर मलकर प्रातःकाल चेहरा धोने से चेहरा साफ हो जाता है। रोग पुराना हो तो साथ में सारिवाद्यासव और खदिरारिष्ट भी पियें।
- सख्त फुन्सियाँ जिनमें पीप न पड़ती हों उसमें बकरी की कलेजी खाना लाभप्रद है।
- काली मिर्च पीसकर मुंहासों पर लगाना लाभप्रद है।
- कैस्टर आयल (अंडी के तेल) में चने का आटा मिलाकर चेहरे पर मलना अत्यधिक लाभप्रद है।
- मसूर की दाल को बारीक पीसकर दूध में फेंटकर मुँह पर लगावें। थोड़ी देर बाद मुँह रगड़कर धो लें। यह प्रयोग सुबह-शाम करें। मात्र 5-7 दिनों में मुँहासे सदैव के लिए मिट जाऐंगे।

- नरकचूर के चूर्ण को पानी में पीसकर मुँहासों पर लेप करें।
- जायफल और काली मिर्च लें। दोनों को दूध में घिसकर मुँहासों पर लगाना गुणकारी है।
- सरसों और सेंधा नमक दोनों को नीबू के रस में घोटकर मुँहासों पर मलना लाभप्रद है।
- सफेद प्याज का अर्क 10 ग्राम, मधु 5 ग्राम, सेंधा नमक 1 ग्राम तीनों को मिलाकर छानलें। इसे लगाने से वे नष्ट हो जाते हैं। इस योग को नेत्रों में डालने से नेत्रों के अनेक रोग दूर हो जाते हैं। नेत्रों की सफेदी मिटती है और नेत्रों से पानी बहना बन्द हो जाता है।
- बादाम की गिरी बकरी के दूध में घिसकर मुंहासों पर लगाने से मुंहासे मिट जाते हैं।
- गधी का ताजा दूध लगाने से मुँहासे सदैव के लिए नष्ट हो जाते हैं।
- जिंक आक्साइड 20 ग्राम मक्खन में मिलाकर क्रीम बनाकर रात्रि में सोते समय मुँहासों पर लगाकर प्रातःकाल स्नान कर मुंह साफ कर लेने से 8 दिन में मुँहासे नष्ट हो जाते हैं।
- छुहारे की गुठली सिरके में घिसकर मुंहासों पर लगायें। एक घंटा बाद साबुन से धो डालें। केवल 3-4 दिन के प्रयोग से मुँहासे नष्ट हो जाते हैं।
- नीबू का रस, रोगन बादाम और गिलेसरीन तीनों समभाग लेकर अच्छी तरह मिलाकर स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रखलें। इस लोशन को प्रतिदिन चेहरे पर मलने से मुखमण्डल सुन्दर और मुलायम हो जाता है तथा निरन्तर प्रयोग से कील, छाइयाँ, मुँहासे नष्ट हो जाते हैं।
- अजवायन 30 ग्राम खूब बारीक पीसकर 3 से 25 ग्राम दही में घोटकर सोते समय रात्रि में मुखमण्डल पर लगाकर प्रातःकाल गरम पानी से धो डालने से 1 सप्ताह में मुंहासों में आशातीत लाभ प्राप्त हो जाता है।
- भुनी फिटकरी को समभाग काली मिर्च मिलाकर घोटदें। इसे पानी में घोलकर लगाने से मुँहासे और शरीर के किसी भी भाग के मस्से मिट जाते हैं। मस्सों को यह परम उपयोगी है। यदि कहीं से रक्त बहता हो तो इसे लगाने से वह भी बहना बन्द हो जाता है।
- चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए तगर और चिरौजी को पीसकर उसमें मक्खन मिलाकर चेहरे पर उबटन की भाँति मलना लाभप्रद है।

कारबंकल, राजफोड़ा

रोग परिचय—इस फोड़े को अदीठ फोड़ा, मधुमेह पीड़िका, शर्करार्बुद पृष्ठार्बुद आदि नामों से भी जाना जाता है। यह फोड़ा अधिकनर गर्दन, पीठ और चूतड़ की चर्म और उसके गहरे मांस में निकला करता है। यह फोड़ा खतरनाक होता है। प्राय: यह फोड़ा मधुमेह के रोगियों को निकलता है। इस फोड़े की चर्म अत्यधिक लाल हो जाती है और इसमें सख्त दर्द और शोथ होती है। व्रण निरन्तर बढ़ता और फैलता जाता है और काला सा हो जता है। उसके बाद उस पर एक छाला सा पैदा होकर जब यह फूटता है तो इसमें कई छेद दिखाई देते हैं। घाव प्रतिदिन बढ़ता जाता है अन्तत: पूरे फोड़े की चर्म छलनी की भांति छिद्रयुक्त हो जाती है। कई बार बहुत से छोटे-छोट छेद मिलकर एक बड़ा सा छेद बन जाता है जिसमें से काले रंग के छिछड़े से निकलते हैं।

इस फोड़े में हर समय पतली सी पीप बहती रहती है और यदि पीड़ित स्थान को दबाया जाए तो गाढ़ी पीप की कीलें निकलती हैं। रोगी को इस फोड़े के कारण बहुत अधिक कष्ट होता है। यदि इस फोड़े का उचित उपचार न किया जाए तो यह घातक सिद्ध हो सकता है। इस फोड़े के निकलने का सबसे बड़ा कारण मधुमेह (पेशाब में शक्कर आना) रोग तथा रक्तदोष होता है। इसके अतिरिक्त छोटे जोड़ों का दर्द (गठिया रोग) तथा शारीरिक दुर्बलता होती है।

उपचार—रोगी के रक्त और मूत्र की जाँच करायें। यदि रोगी के रक्त और मूत्र में शक्कर की मात्रा सामान्य से अधिक हो तो किसी सुयोग्य चिकित्सक से उसकी चिकित्सा करायें। क्योंकि यह घाव यदि समय पर ठीक न हुआ तो फिर यह असहाय, कमजोर, कृषकाय, मधुमेह के रोगी को मृत्यु के द्वार पर पहुँचा देता है। मधुमेह के रोगी अपने शरीर की सफाई की ओर विशेष ध्यान देते रहें वह किसी भी छोटी से छोटी फुन्सी को भी बेकार और बेजान न समझें क्योंकि मधुमेही को छोटी फुन्सी भी मृत्यु की अन्धी गहरी खाई में ढकेल सकती है।

फोड़े की सिंकाई से भी लाभ की उम्मीद रहती है, क्योंकि प्राय: फोड़े की सिंकाई करने से फूट जाते हैं। आटा, हल्दी, गुड़, अलसी की सेंक करें और इन्हीं में से किसी एक की पुल्टिस बांधें ताकि फोड़ा फूट जाए। त्वचा को साफ रखें। यदि रोगी को कब्ज, हो तो हल्का जुलाब या एनिमा लगाकर पेट साफ करें। खट्टे, मीठे, चटपटे, मिर्च-मसालेयुक्त खाद्य पदार्थ, गरिष्ठ भोजन, मिठाई, मीठे फल, गन्ना अथवा अन्य कोई भी मीठी वस्तु चाय, काफी आदि बन्द कर दें।

यदि मधुमेह हो तो सतर्कतापूर्वक उसका भी उपचार आवश्यक है। इस फोड़े में सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों से भी लाभ पहुँचता है। यदि यह फोड़ा नाक और ओंठ पर हो गया हो तो वहाँ भयंकर उपद्रव उत्पन्न कर सकता है। क्योंकि इसका संक्रमण सीधा मस्तिष्क में जा पहुँचता है जो भयानक स्थिति पैदा कर सकता है।

- शाम को शुद्ध गन्धक 250 से 500 मि. ग्रा. दूध के साथ खिलायें।
- कारबंकल के घावों को नीम की पत्तियों और मेंहदी की पत्तियों के क्वाथ से भली प्रकार साफ करें और कीलों को निकालकर निम्नलिखित प्रयोग करें—
- अनार का छिलका, मसूर बिना छिलका और गेरू प्रत्येक 12 ग्राम लें। सभी को पीसकर 3 वर्ष पुराने गुड़ में घोटकर लेप तैयार कर लगायें। यह लेप कारबंकल, कैन्सर और प्रत्येक प्रकार के जटिल घावों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। जब तक घाव पूर्णरूप से ठीक न हो जाए, तब तक इसका प्रयोग करते रहें।
- कछुए की हड्डी का राख घाव पर छिड़कें या बेर की पत्तियों को पीसकर घाव पर लगायें।
- दही को मोटे कपड़े में डालकर बाँधकर लटका दें—जब सारा पानी निकल जाए तो इस सख्त दही की टिकिया बनालें। इसको कारबंकल के फोड़े पर फैलाकर पट्टी बांधें। दिन भर में 3-4 नई दही की यह टिकिया बदल-बदल कर बांधें। इस प्रयोग से कारबंकल का समस्त गन्दा विषैला पदार्थ, रक्त, पीप इन टिकियों में आ जाएगा तथा जलन नष्ट होकर ठण्डक पड़ जायेगी।

कारबंकल नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

केपाइनाप्लेन टेबलेट (हिमालय)—वयस्कों को 2-3 टिकिया दिन में 3 बार दें तथा बच्चों को आयु व अवस्थानुसार बिना किसी हानि के प्रयोग करवा सकते हैं।

ब्लडप्यूरी फाइर सीरप (झन्डू)—4 से 8 मि.ली. पानी मिलाकर दिन में 3 बार लें।

भद्र मलहम (पंकज)—दुर्गन्धयुक्त घावों को सर्वप्रथम नीम के पानी से धो-पोंछकर मलहम का प्रयोग करें तथा साथ ही इसी कम्पनी का कैपसूल रक्त विकार सेवन करें।

करामाती मलहम (राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड संस)—का घावों में प्रयोग अत्यन्त ही लाभकारी है इसी कम्पनी की करामाती टेबलेट 1-2 गोली दिन में 3-4 बार लें।

घाव मलहम (वैद्यनाथ)—आवश्यकतानुसार गन्दे घावों पर प्रतिदिन 2-3 बार घाव को साफ करके प्रयोग करें।

कारबंकल घाव के शोथ की जलन शान्त करने हेतु तथा उसको जल्द ही पकाने के आशय से टमाटर को चन्दन के साथ पीसलें। यह पेस्ट जैसा बन जाएगा। इसको शोथ पर 3-4 बार लगाने से घाव में पीप जल्द बनकर घाव फट जायेगा।

बिवाई फटना (Chil Blains)

रोग परिचय—इस रोग को अंग्रेजी में हैन्डस या चैप्स ऑफ एक्सट्रेमिटीज आदि नामों से भी जाना जाता है। शीत ऋतु में सख्त सर्दी के कारण प्रायः हाथ-पाँव की चर्म फट जाती है और उसमें तीव्र वेदना होती है। कई बार तो चर्म इतनी अधिक फट जाती है कि बड़े-बड़े और गहरे चीरे पड़ जाते हैं। अत्यधिक शीत, सर्दी और बर्फ के प्रभाव से शरीर की त्वचागत रक्त-वाहिनियों में संकोच उत्पन्न हो जाता है जिसके फलस्वरूप रक्त की भीषण कमी हो जाती है और त्वचा सुन्न हो जाती है। इसका विशेष प्रभाव नाक तथा अँगुलियों पर पड़ता है। शीत (सर्दी) या बर्फ में अधिक देर रहने से अंगुलियां संज्ञाहीन हो जाती हैं। कभी ठण्डे और कभी गरम पानी से हाथ-पांव धोना, सर्दी में हाथ-पैर धोकर खुश्क न करना, ठण्डी वायु लगना इत्यादि इस रोग के कारण होते हैं।

उपचार—इसकी सर्वोत्तम चिकित्सा ठण्ड से बचना है। पीड़ित स्थान पर सूखी (बगैर तैल आदि लगाये) मालिश करना लाभप्रद है। सूर्य स्नान भी लाभप्रद है। कृत्रिम अल्ट्रावायलेट किरणों का अधिक देर उपयोग करने से रक्त-वाहिनियों की क्रिया में विकृति होकर (अन्य कोई नया रोग उत्पन्न हो सकता है।)

● मोम का रोगन लगाना, मक्खन की मालिश करना या सन्दरूस पीसकर अलसी के तैल में मिलाकर लगाना अथवा सफेद काशगरी और मुर्दासंग 6 ग्राम को पीसकर 48 ग्राम वैसलीन में मिलाकर लगाना लाभप्रद है।

● विशुद्ध अरन्ड तैल में अरन्ड की गिरी को डालकर खरल में खूब घोटकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप जैसा बनाकर छुरी से एक जैसा बिवाई की फटी दरारों में भरें। पूरा लाभ न होने तक प्रयोग जारी रखें। लाभप्रद है

● राल, कत्था, काली मिर्च प्रत्येक 40 ग्राम लें। गाय का घी और चमेली का तैल (प्रत्येक 40 मि.ली.) लें। उन सभी को लोहे के खरल में घोटें गाढ़ा-गाढ़ा लेप सा बनाकर फटी दरारों में प्रयोग करें। लाभप्रद योग है।

● मक्खन 50 ग्राम, अरन्ड के बीज 40 ग्राम, पोस्त दाना 25 ग्राम तथा नीम के पत्तों का कपड़छन चूर्ण 10 ग्राम सभी को खरल में एकत्र कर घोटकर सभी को एकजान कर लें। तदुपरान्त किसी साफ स्वच्छ विसंक्रमित छुरी आदि की नोंक से फटी दरारों में भरें। प्रयोग सुबह-शाम करें, अत्यधिक लाभप्रद योग है। दर्दनाशक भी है।

● मेंहदी के ताजे पत्ते, नीम के ताजे पत्ते, काकहिया के ताजे पत्ते, पत्थरचूर के ताजे पत्ते प्रत्येक समभाग लेकर पीसलें। फिर कल्क बनाकर अरन्ड के तैल में मिलाकर छुरी की नोंक से बिबाई की फटी दरारों में भरें। लाभदायक योग है।

● राल और घी 10-10 ग्राम, मोम 3 ग्राम लें। पहले घी को खूब गरम करें, फिर मोम मिला लें। जब दोनों मिल जायें तभी राल भी मिलालें। इस मरहम को रात को सोते समय पैरों को धोकर बिवाइयों में भरें। बिवाइयाँ ठीक होकर पैर अत्यन्त सुन्दर हो जाते हैं।

● मोम 6 ग्राम की मात्रा में लेकर 40 ग्राम तिल के तैल में पकालें। इसमें 10 ग्राम पिसी हुई राल डालकर पुनः थोड़ी देर पकाकर उतारकर सुरक्षित रखलें। इस मरहम को बिवाइयों में लगायें। अत्यन्त ही लाभप्रद है।

चकत्ते, रक्त चर्म

रोग परिचय—इसे अंग्रेजी में एरीथीमा के नाम से जाना जाता है। कई प्रकार के ज्वर, शोथ, जलन उत्पन्न करने वाले कई रोग, कब्ज, वायु के तेज झोंके, गर्मी, लू, धूल आदि के कारण त्वचा शुष्क और लाल वर्ण की हो जाती है तथा उस पर बहुत से लाल धब्बे पड़ जाते हैं। यह एक विशेष प्रकार का चर्म रोग है जिससे त्वचा पर शोथयुक्त लाल चकत्ते एवं चटाख निकल आते हैं। इन चकत्तों में खुजली, जलन और पीड़ा नहीं होती है। इस रोग में आमवात रोग की भाँति सन्धि-स्थलों में दर्द, थकावट और ज्वर कुछ दिनों तक रहता है तथा कभी-कभी दर्द भी होने लगता है। कभी-कभी इनसे छिलके या भूसी सी उतरने लगती है और कभी ज्वर और बेचैनी हो जाती है। चकत्ते अधिक उभरकर छाले बन जाते हैं जिनमें (सीरम) दूषित रक्त या पीप भर जाती है। इस रोग के भी कई प्रकार है—लाल रंग के गोल उभरे हुए चकत्ते जिसमें चर्म में रक्त की अधिकता हो जाती है, अँगुलियों पर अत्यधिक लाली फैलती चली जाती है, चकत्ते टांगों और बाजू पर होते है, चर्म में शोथ होकर चकत्तों का उभर आना, पेट में वायु दोष से अथवा विषैले प्रभावों से निकलने वाले चकत्ते इत्यादि।

रक्त में (प्राटोजुआ) नामक कीटाणु की उपस्थिति, सन्धि शोथ, धनुष्टंकार (टिटनेस), डिफ्थीरिया आदि रोगों में सीरम के इन्जेक्शन लगवाने, स्त्रियों को मासिक धर्म होने से पहले और शिशुओं के दांत निकलते समय भी यह रोग हो जाया करता है।

उपचार—रोग उत्पन्न होने के मूल कारण का उपचार कर रोग दूर करें। रोगी को सबसे पहले (इच्छाभेदी रस) खिलाकर (जुलाब देकर) पेट साफ करें। यह तीव्र विरेचन है। अत: बच्चों, स्त्रियों तथा वृद्धजनों को न दें।

● चिरायता, त्रिफला, नीम की छाल और पत्ते (प्रत्येक 3-3 ग्राम) कुटकी, चन्द, अड़ूसा के पत्ते और परवल के पत्ते प्रत्येक 30 मि.ग्रा. लेकर मोटा-मोटा कूटें। फिर 250 ग्राम जल में मिलाकर क्वाथ बनायें। जब 30 मि.ली. शेष बचे, तब आग से उतार, छानकर ऐसी 1-1 मात्रा सुबह-शाम पिलायें तथा भोजनोपरान्त अनन्तमूल और गोरखमुन्डी का क्वाथ 30 मि.ली. पिलायें। यह रक्तशोधन हेतु अत्यन्त लाभप्रद योग है।

● मंजीठ, हरड़, बहेड़ा, आंवला, कुटकी, वच, दारुहल्दी, नीम और गिलोय की छाल—प्रत्येक सम मात्रा में लेकर क्वाथ बनालें। इसे 100 मि.ली. की मात्रा में प्रात:काल निहार मुँह (बिना कुछ खाये) पियें।

● शुद्ध आँवलासार गन्धक 10 ग्राम, रस कपूर 6 ग्राम, फिटकरी 10 ग्राम सभी को बारीक पीसकर गाय के 108 बार धुले घी में मिलाकर लेप बनालें और पीड़ित चर्म पर लगायें।

● सफेद चन्दन का चूर्ण 10 ग्राम, कपूर 25 ग्राम तथा गाय का घी 25 ग्राम का लेप बनाकर रोगग्रस्त चर्म पर दिन में 2 बार लगायें। अतीव गुणकारी है।

● रसमाणिक्य (शास्त्रीय आयुर्वेदिक औषधि) 250 मि.ग्रा. की मात्रा में (पीसकर) (समभाग) घी और मधु में मिलाकर दिन में 2 बार सेवन करना लाभप्रद है।

बालों की जड़ों की पुरानी शोथ

रोग परिचय—इसे अंग्रेजी में (Barbers Itch, DeLekee Sycosis Barbee) के नाम से जाना जाता है। यह भी एक हठीला रोग है जो काफी लम्बे समय तक परेशान करता है। यह प्राय: दाढ़ी और सिर के बालों की जड़ों में हुआ करता है। इस रोग में त्वचा के रोम कूपों में पुरानी सूजन होती है जिसके कारण पीपयुक्त, पीली फुन्सियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। पीप निकलकर और सूखकर

खुरन्ड बन जाते हैं। इस रोग के कारण बाल कमजोर होकर झड़ने लग जाते हैं तथा इसकी छूत एक से दूसरे व्यक्ति को भी लग जाती है। यह रोग स्टेफिलीकोक्कस नामक कीटाणु के संक्रमण से उत्पन्न होता है।

उपचार

● 101 बार का धुला हुआ घी 250 ग्राम, सफेदा और कपूर 12-12 ग्राम, उत्तम (बढ़िया) सिन्दूर 6 ग्राम और चन्दन का तैल 18 ग्राम लें। सभी औषधियों को घी में रगड़कर मरहम बनाकर रोगाक्रान्त चर्म पर मलें। यह समस्त प्रकार के चर्म रोगों का नाशक बाह्य प्रयोगार्थ योग है।

● शुद्ध आँवलासार गन्धक 12 ग्राम, चिरायता 24 ग्राम, सौंफ चूर्ण 24 ग्राम, नीम का तैल 6 मि.ली. सभी को मिलाकर बड़े साइज के कैपसूलों में भरकर सुबह-शाम 1-1 कैपसूल खिलायें।

● नीम के नरम पत्ते, चिरायता के पत्ते, कुटकी, रीठा के छिलके सभी सममात्रा में लेकर कूट पीसकर बबूल के गोंद के साथ 250 मि.ग्रा. की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। इन्हें 1-2 गोली तक सुबह-शाम ताजे जल से खायें। इसके सेवन से बालों के जड़ों की शोथ, दाद, चम्बल, खुजली, उपदंश, पित्त विकार तथा अन्य चर्म या रक्त विकार नष्ट हो जाते हैं। अनुभूत योग है।

● सायंकाल को नीम के पत्तों को मोटा-मोटा कूटकर चौगुने जल में मिलाकर भिगोकर रख दें। प्रात:काल इसे बारीक कपड़े से छानकर इस जल से पीड़ित चर्म को भली प्रकार धोवें। तदुपरान्त किसी कलईदार बरतन में विशुद्ध सरसों का तैल 60 मि.ली. लेकर अग्नि पर गरम करके फिर इसमें मेंहदी की हरी पत्तियाँ डालकर इतना उबालें कि पत्तियाँ जल जायें। तब इसको छानकर पीड़ित चर्म पर लगाकर मालिश करें। अतीव गुणकारी है।

● मजीठ 30 ग्राम, त्रिफला 120 ग्राम, छोटी हरड़ 60 ग्राम, छोटी इलायची के बीज 30 ग्राम तथा स्वर्ण गेरू, कलमी शोरा, कासनी के बीज, गोक्षुर (प्रत्येक 30-30 ग्राम) सनाय 120 ग्राम, गुलाब के फूल 60 ग्राम लें। इन सभी को कूट पीसकर कपड़छन करके सुरक्षित रखलें। यह मंजिष्ठादि चूर्ण का योग है। इसे 3 ग्राम की मात्रा में प्रात:काल उष्ण जल से सेवन करें।

शुष्क खुजली (Dry Scabies)

रोग परिचय—खुजली के रोगी का कपड़ा पहनने या उसके साथ रहने, लेटने, सोने से सारकौटिप्स स्केबी नामक कीटाणु स्वस्थ मनुष्य के बाहरी चर्म में छेदकर शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। इनके विष से रक्त के श्वेत एवं लाल कणों के नष्ट हो जाने के कारण न पकने वाली छोटी-छोटी सूखी फुन्सियाँ निकल आती हैं तथा चर्म में प्रदाह हो जाता है आक्रान्त त्वचा का रंग खराब हो जाता है। उसमें तीव्र खुजली होती है। यह विशेषकर हाथ-पैर, कक्ष, मलद्वार, अन्डकोषों और योनि पर होती है। बार-बार खुजलाने से शरीर के अन्य भागों पर भी खुजली हो जाती है। यह रोग गन्दा रहने से भी हो जाता है।

उपचार—खुजली वाले रोगी को सर्वप्रथम विरेचन देकर पेट साफ करायें।

● नीम की कोपलें, चिरायता, कुटकी और सनाय प्रत्येक 12 ग्राम लेकर पीसलें और 250 ग्राम जल में रात्रि को भिगोकर रखें। प्रात:काल छान कर सेवन करने से 1-2 सप्ताह में ही सूखी खुजली जड़ से नष्ट हो जाती है।

● नीला तूतिया, पारा, गोल मिर्च (प्रत्येक 1-1 ग्राम), बन्दूक का बारूद 3 ग्राम, घी 13 ग्राम को घोटकर लेप बनाकर खुजली के स्थान पर मलें। फिर 4 घंटे बाद किसी सोडा कास्टिक रहित एवं ग्लेसरीनयुक्त सोप टेटमोसोल, पियर्स अथवा महारानी सन्दल) से स्नान करें।

● आँवला सार गन्धक, कपूर, नीला तूतिया (प्रत्येक 10 ग्राम) 101 बार का धुला हुआ घी 60 ग्राम को रगड़कर मरहम बनाकर खुजली पर मालिश करें तथा 2 घंटे बाद ठण्डे जल से स्नान करें। लाभप्रद है।

● गोरखमुन्डी, कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, शहतरा, आवाँ हल्दी, बावची, नीम के पत्ते, खदिर की छाल, स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल, अनन्तमूल, ब्राह्मी के पत्ते, मंजीठ प्रत्येक 24-24 ग्राम कूटकर छान लें। इसे 2 से 4 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम ताजे जल से सेवन करें।

तर खुजली (Maist Scabies)

रोग परिचय—खुजली को उत्पन्न करने वाले कीटाणु प्राय: कोमल त्वचा में रहते हैं। इनके संक्रमण से अँगुलियों के बीच वाले भाग, कलाई, जाँघ और बगल इत्यादि में छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकल आती हैं, जिनसे तरल निकलता रहता

है और इनको खुजलाने से यह तरल जहाँ कहीं भी लग जाता है उस स्थान पर यह रोग हो जाता है। यह तीव्र संक्रामक चर्म रोग है।

उपचार—सर्वप्रथम विरेचन देकर पेट साफ करें।

● सारिवाद्यासव, सारिवादि क्वाथ, मरिच्यादि तेल का प्रयोग लाभप्रद है।

● चाल मोंगरा का तैल, नीम का तैल 60-60 मि.ली., भिलावे का तैल 1 मि. ली. मिलाकर खुजली पर दिन में 1 बार लगाया करें। लाभप्रद है।

● आमलासार गन्धक वैसलीन में मिलाकर लगाना भी गुणकारी है।

● मेंहदी के सूखे पत्ते आधा किलो एवं शुद्ध गन्धक 125 ग्राम लें। दोनों को पीसकर कपड़े से छानकर सुरक्षित रखें। इसे 1-1 ग्राम की मात्रा में ठण्डे जल से दिन में 3 बार लें। खुजली, रक्त एवं चर्म दृष्टि नाशक है।

सूखी खुजली (Pruritis)

रोग परिचय—इस अंग्रेजी शब्द में कई प्रकार की खुजली सम्मिलित है। जैसे—भिड़, बिच्छू, मधुमक्खी अथवा अन्य दूसरे विषैले कीड़ों के डंक से उत्पन्न होने वाली खुजली और शोथ, एलर्जी से पैदा होनें वाली पित्ती आदि का कष्ट, बुढ़ापे में माला की भंति लाल दानें (Herpjr zoster) निकल आना—जिसमें खुजली तथा जलन होती है, पुरानी वृक्कशोथ से पैदा खुजली, यकृत दोष या पान्डु रोग के कारण उत्पन्न होने वाली खुजली, मधुमेह (मूत्र में शक्कर आना) से उत्पन्न फोड़े-फुन्सी, सख्त गर्मी और धूप में चलने से गर्मी के दाने, (पित्त) एवं रक्त विकारों से उत्पन्न खुजली, स्त्री की योनि, गुदा और पुरुषों के अन्डकोषों के पास उत्पन्न होने वाली खुजली इत्यादि।

यह रोग जीर्ण रोग भोगने के बाद जीवनी-शक्ति क्षीण हो जाने पर, मैला-कुचैला, गन्दा रहने पर, गरिष्ठ भोजनों से अथवा अधिक सर्दी या गर्मी के कारण हो जाता है। इसमें छोटे-छोटे शुष्क दाने निकलते हैं—जिनमें सख्त खुजली व जलन होती है, चर्म शोथयुक्त तथा लाल वर्ण का हो जाता है, जलन और खुजली के कारण नींद कम आती है।

उपचार—सर्वप्रथम रोगी जुलाब लेकर अपना पेट साफ करे।

● चालमोगरा और नीम का तैल सम मात्रा में मिलाकर पीड़ित त्वचा पर दिन में 2-3 बार मालिश करना अत्यन्त ही उपयोगी है।

● तुखमलंगा का बारीक चूर्ण करके 24 ग्राम की मात्रा में ताजा जल से सुबह-शाम खाना भी अतीव गुणकारी है।

● जंगी हरड़, शाहतारा, कड़वा चिरायता प्रत्येक 4-4 ग्राम लें। चूर्ण करके शाम को जल में भिगोकर प्रात:काल छानकर पीना लाभप्रद है।

● आँवलासार गन्धक को 100 बार धुले घी में भली-भाँति खरल करके लगाना अतीव गुणकारी है।

● सेंधव लवण, पाँवर के बीज, सरसों और पीपल को कंजी में सूक्ष्म पीसकर रोगाक्रान्त स्थान पर लेप करना अत्यधिक लाभकारी है।

गुदा की खुजली (Pruritis ani)

रोग परिचय—गुदा को अच्छी तरह न धोने या कन्डू (खुजली) के कीटाणुओं का गुदा की त्वचा में संक्रमण हो जाने से यह रोग हो जाता है। इस रोग में गुदा की बाहरी त्वचा में सख्त खुजली हुआ करती है। बारीक और सख्त फुन्सियाँ निकल आती हैं जिसके फलस्वरूप त्वचा खुरदरी हो जाती है।

उपचार

● नीम का तैल, चाल मोगरा का तेल समभाग लेकर मिला लें। इसमें थोड़ा सा कपूर मिलाकर दिन में 2-4 बार लगाना उपयोगी है।

● सरसों का तैल 60 मि.ली., नीम का तैल 12 मि.ली. तथा इतना ही चालमोगरा और बादाम का तैल और तारपीन का तैल 1 मि.ली. तथा कपूर 4 ग्राम मिलाकर रोगाक्रान्त स्थल पर लगाना गुणकारी है।

● 60 मि.ली. सरसों के तैल में यशद भस्म, सुहागा भस्म और गन्धक 4-4 ग्राम की मात्रा में लें—पकाकर खुजली के स्थान पर मलें।

● शुद्ध आमलासार गन्धक 1 भाग, काला जीरा 1 भाग, स्वर्ण गैरू 1 भाग सभी का बारीक चूर्ण कर कपड़छन करके सरसों के तैल में मिलाकर कन्डू स्थान पर दिन में 2 बार मालिश करना उपयोगी है।

● नीम के पत्तों का रस 500 मि.ग्राम, गाय का घी 125 ग्राम, रस कपूर 12 ग्राम तथा असली मोम 25 ग्राम लें। गाय के घी को गरम करके नीम के पत्तों का रस और रस कपूर मिलाकर धीमी आग पर इतना उबालें कि तैल मात्र शेष रह जाए, तदुपरान्त इसमें मोम मिलाकर मरहम बनालें। इसे गुदा की कन्डू पर दिन में 2-3 बार लगाकर पट्टी बाँधने से लाभ हो जाता है।

योनि की खुजली (Pruritis Vulvae)

रोग परिचय—भगकन्डू का रोग प्राय: गर्भकाल में स्त्रियों को होता है। इसके अतिरिक्त स्त्रियों में उपदंश, विचर्चिका आदि रोगों के संक्रमण, काटने वाले

तेज प्रदर के लगने, बच्चादानी एवं योनि से अनियमित रूप से तरल बहकर लगने तथा स्त्री के गुप्तांगों में सफाई न रखने इत्यादि के कारण योनि के बाहर की त्वचा पर छोटी-छोटी फुन्सियाँ उत्पन्न हो जाती हैं—जिनमें सख्त खुजली होती है। योनि को बार-बार खुजलाने से त्वचा छिल जाती है जिसमें तीव्र खुजली, जलन, दर्द और कष्ट होता है।

उपचार

● सतपिपरमेन्ट 2 ग्राम को बादाम रोगन 12 मि.ली. में मिलाकर रोगाक्रान्त स्थान पर लगाना अत्यन्त लाभप्रद है।

● यशद भस्म 1 ग्राम को 100 बार धुले हुए 12 ग्राम घी में मिलाकर योनि कन्डू में दिन में 2 बार लगाना गुणकारी है।

● कपूर 4 ग्राम, सुहागा भस्म 2 ग्राम और नारियल का बढ़िया तैल 30 मि.ली. को एकत्र कर भली प्रकार मिलाकर इसे योनि की खुजली में 2-3 बार लगाते रहने से अत्यन्त लाभ होता है।

● पंवार के बीज, बाबची, सरसों, तिल, कूट, दोनों हल्दी और नागरमोथा सभी को सममात्रा में लेकर छाछ में पीसकर योनि के भीतर और बाहर लेप करें।

नोट—लेप करने से पहले योनि के ऊपर के बालों को उस्तरे से भली प्रकार साफ करलें, तदुपरान्त यह लेप लगायें।

औषधि की प्रतिक्रिया से उत्पन्न चर्म रोग

रोग परिचय—बहुत-सी औषधियों के सेवन अथवा प्रयोग करने से चर्मरोग, चकत्ते, ददौड़े, खुजली और चर्म में जलन हो जाती है। त्वचा लाल और शोथ-युक्त हो जाती है।

उपचार—सर्वप्रथम उस औषधि का सेवन अथवा प्रयोग तत्काल बन्द कर दें, जिस प्रतिक्रिया स्वरूप चर्म रोग हुआ हो। ऐलोपेथी के चिकित्सक 'एन्टी हिस्टामीन' योगों—(एबिल, इन्सीडाल फोरिस्टाल, बेनाड्रिल का प्रयोग करते हैं।

● प्रवालपिष्टी (आ. सार संग्रह) 100 से 200 मि.ग्राम तक मधु से सुबह-शाम चाटें।

● गन्धक रसायन (सिद्ध योग संग्रह) आयु व सामर्थ्यानुसार 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक सुबह-शाम मधु से चाट कर ऊपर से महामंजिष्ठादि काढ़ा 15 मि.ली. समान जल मिलाकर पियें।

● महामंजिष्ठारिष्ट (आयुर्वेद सार संग्रह) एवं खदिरारिष्ट (भैषज्य रत्नावली)

प्रत्येक 15 मि.ली. लेकर दोनों को बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार सेवन करें।

● निर्गुन्डी तैल (भै. रत्नावली) तथा नीम का तैल प्रत्येक समभाग एकत्र मिलाकर आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2 बार लगायें।

घाव में कृमि पड़ जाना (Worms in Woulds)

रोग परिचय—कभी-कभी असावधानी के कारण रिसते हुए घाव को खुला छोड़ देने पर उस पर मक्खियां (लार्वा) छोड़ देने से पीप एवं रक्त में सम्पर्क पाकर वे मांस को काट-काट कर खाते रहते हैं जिसके कारण रोगी को भयंकर दर्द और कष्ट होता है। कभी-कभी तो काटते-काटते वह अन्दर से रक्त तक निकाल देते है। धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ती रहती है, क्योंकि मक्खियाँ बार-बार उस घाव पर बैठकर अण्डे छोड़ती रहती हैं।

उपचार

● घाव के आस-पास खान्ड के दाने छोड़ देने से खाने के लोभ में कीड़े बाहर निकल आते हैं, उन्हें विसंक्रिमत (खौलते पानी में उबालकर) साफ की हुई चिमटी से पकड़-पकड़ कर बाहर निकाल दें।

● उक्त घाव के पार्श्व भाग में या समीप में तारपीन के तेल से तर रुई की फुरैरी रखने से, इसकी गन्ध से व्याकुल होकर पिल्लू बाहर निकलकर घाव पर रखी हुई रुई में चिपक जाते हैं, जिन्हें चिमटी से से पकड़कर बाहर निकाल लेना चाहिए।

● घाव में कार्बोलिक एसिड (फेना) का आधा से 1 प्रतिशत तैलीय लोशन डाल रूई की फुरैरी रखने से, पिल्लू (कीड़े) मर-मर कर श्वास लेने के लिए बाहर आकर रूई पर चिपक जाते हैं। इन्हें चिमटी से निकाल लेना चाहिए।

● गुड़ और तारपीन के तैल की सहायता से (रूई की फुरैरी बनाकर घाव में रखकर) पिल्लू को चिमटी से पकड़कर निकाल फेंकें।

● घाव पर जात्यादि तैल (शार्गंधर संहिता) या व्रण राक्षस तैल (भै. र.) को रुई में भिगोकर उस पर पट्टी रखकर बाँधें।

अंगुलबेल, अंगुलीपाक (Whitlow)

रोग परिचय—अंगुली के नख के किनारे की त्वचा में कभी एक ओर कभी 1 से अधिक कील की तरह गढ़ती हुई कठोर, पतली और नुकीली चर्म की लघु

संरचना प्रकट होती है जिसके कारण आक्रान्त अंगुली में पीप, प्रदाह, शोथ, दर्द, जलन की अधिकता, ज्वर, बेचैनी ये लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। यह रोग केवल अंगुली के नाखून के अग्रभाग अथवा बीच में हुआ करता है। अंगुली के नाखूनों के किनारे के नुकीले कील समान त्वचा को खोटने, नाखून काटते समय असावधानी के कारण नख माँस (Nail Matrix) के कट जाने, नाखून पर चोट लगने, जल जाने, अंगुली या नख मांस में कील, काँटा, पिन, शलाका इत्यादि के चुभ जाने के कारण अंगुली में पीप उत्पन्न होकर यह रोग हो जाता है।

उपचार

● सुहागा को जल में घिसकर आक्रान्त अँगुली पर लेप करें। लेप के सूख जाने पर कपूर मिले हुए नारियल के तैल को दिन में 2-3 बार लगायें। लाभप्रद योग है।

● पीली कटैय्या (करेली) की जड़ की छाल, पीपल की जड़ की छाल, नीम के पत्ते, सहजना की जड़ की छाल, शंखपुष्पी के पत्ते, छोटी हरड़ का बक्कल, आंवला के बक्कल, मेंहदी के पत्ते और सिन्दुआ के पत्ते सभी सममात्रा में लेकर कपड़छन बारीक चूर्ण बना लें। इसे 5 से 10 ग्राम तक ताजा जल से सुबह-शाम खाने से अंगुली पाक दूर होकर दर्द जलन, प्रदाह नष्ट हो जाती है। परीक्षित एवं अनुभूत योग है।

● सफेद संखिया, सुहागा का लावा और नीला थोथे का फूला प्रत्येक 12 ग्राम को बारीक पीसकर इसमे 72 ग्राम गन्धा बिरोजा मिला लें। यदि अधिक कठोर हो तो इसमें थोड़ा-सा नीम का तैल मिला लें। इसका अंगुलीपाक पर निरन्तर लेप करने से कील पककर निकल घाव ठीक हो जाता है।

छीप, भूसी, रूसी

रोग परिचय—मैला कुचैला रहने से, बासी और खराब तथा गरिष्ठ भोजन खाने से चेहरा, छाती, पेट, गर्दन या बाजुओं पर छोटे-छोटे पीलाहट-युक्त या भूरे अथवा लाल रंग के दाग पड़ जाते हैं। उस स्थान पर भूसी लगी हुई प्रतीत होती है। इस रोग का कारण एम. फरका नामक फुंगस (फफूदी) का संक्रमण है। रोगी की छूत उसके कपड़े पहनने या उसके बिस्तर में सोने से लग जाती है। चिकित्सीय दृष्टिकोण से यह कई प्रकार की हुआ करती है।

उपचार

● मालती के पत्ते, चित्रकमूल, करंज के बीज की गिरी, प्रत्येक 50-50 ग्राम लेकर पानी से पीसकर लुग्दी सी बना लें। तिल का तैल 1 कि. और पानी 4 ली. को मिलाकर धीमी आग पर पकायें। जब तेल मात्र शेष रह जाए तब कपड़े से छानकर सुरक्षित रखलें। इसे आक्रान्त भाग पर दिन में 2-3 बार लगायें। लाभप्रद है।

● नीम के पत्ते, गिलोय, बकायन के पत्ते, पित्त पापड़ा, अनन्तमूल (प्रत्येक 50-50 ग्राम) 8 गुना पानी मिलाकर धीमी आग पर पकायें। जब आठवां भाग शेष रहे तब कपड़े से छानकर दुबारा इतना पकायें कि अवलेह सा बन जाए फिर धूप में रखकर बिल्कुल खुश्क करके पीस लें। इस चूर्ण में 60 ग्राम श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, मंजीठ, नीम के पत्तों का चूर्ण, मेंहदी के पत्तों का चूर्ण, कपूर, मुलहठी, स्वर्णगेरू, लाल दानेदार हरी मिर्च, रेवन्द चीनी, जदंवार खताई शुद्ध एलुवा, शुद्ध आमला सार गन्धक (प्रत्येक 12-12 ग्राम) तथा रस कपूर 3 ग्राम मिलाकर बारीक चूर्ण बनाकर थोड़ा घृतकुमारी का रस डालकर जोर से खरल करके चने के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। सुबह-शाम 1-1 गोली ताजा पानी से खायें। छीप (भूसी) रोग नाशक अति उत्तम योग है।

दाद, दद्रु

रोग परिचय—इस रोग की उत्पत्ति का कारण (फुन्गी) नामक कीटाणु है जो मनुष्य की त्वचा में स्वेद ग्रन्थियों वाले स्थानों में पैदा होते हैं। अजीर्ण, स्नायु विकार, मलेरिया ज्वर, यकृत विकार और गन्दा रहने से यह रोग हो जाया करता है तथा दाद के रोगी के साथ उठने-बैठने या उसके कपड़े आदि प्रयोग करने से भी यह स्वस्थ व्यक्ति को भी हो जाया करता है।

उपचार—पहले हल्का (मृदु) विरेचन लेकर पेट साफ करें।

● तूतिया चूर्ण 120 मि. ग्रा., माजूफल 360 मि.ग्रा. मोम 18 ग्राम, मधु 18 मि.ली.। मरहम बनाकर आक्रान्त अंग पर प्रयोग करें। पुराने से पुराना दाद नष्ट हो जाता है।

● राल, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी, गन्धक (प्रत्येक 12-12 ग्राम) सभी को एक साथ चूर्ण करके कपड़े से छानकर 100 बार पानी से धोये हुए घी में मिलाकर प्रयोग करें। दिन भर में 2-3 बार दाद पर लगायें।

● दाद वाले आक्रान्त अंग को खुरदरे कपड़े से खुजलाकर जमालगोटे का तैल लगाना अत्यन्त उपयोगी है।

● उकौता दाद जो प्राय: पीठ या हाथ के ऊपर होता है (इसमें चर्म भैंसे के कन्धे की भाँति काली, शुष्क और खुरदरी हो जाती है और चर्म फटकर इसमें ददौड़े पड़ जाते हैं, इसीलिए इसको ''भैंसिया दाद'' भी कहा जाता है।) इस दाद पर—गन्धक आमलासार, तूतिया, सुहागा (खील किया हुआ) प्रत्येक 12-12 ग्राम लेकर नीबू के रस में खरल करके गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। एक गोली नीबू के रस में घिस कर दाद पर लगायें। लाभ होगा।

विषैले कीड़ों का काटना (Stings, Insect Bites)

रोग परिचय—बिच्छू, बर्र, ततैया आदि कीड़े-मकोड़े के काट लेने से बहिर्त्वचा प्रदाहयुक्त हो जाती है। जिसमें अत्यधिक खुजली, जलन और तीव्र पीड़ा होती है, जिसके कारण रोगी बेचैन हो जाता है। बिच्छू के दंश (काट लेना अथवा छेद होना) से तो अत्यधिक जलन और पीड़ा होती है और रोगी का कंठ सूख जाता है। ऐलोपेथी दृष्टिकोण से इनकी चिकित्सा (एन्टी हिस्टामीन) औषधियों से की जाती है। क्षारीय (Alkaline) द्रव्यों का बाहरी (स्थानीय) प्रयोग इनके विष को निष्क्रिय कर देता है।

उपचार

● लाइकर अमोनिया फोर्ट (चूना व नौसादर का समभाग मिश्रण) दंशित स्थान पर भिगोकर बाँध देने तथा थोड़ी-थोड़ी देर बाद नई फुरैरी रखते रहना अत्यधिक लाभप्रद है।

● पोटाशियम परमैगनेट और यदि प्राप्य हो तो साइट्रिक एसिड के कुछ कण डंक वाले स्थान पर रखकर उस पर 2-4 बूँद नीबू का रस या जल डालने से पीड़ा तथा जलन को आराम आ जाता है।

● ऐलोपेथी के चिकित्सक सुन्न करने वाले सूचीवेध (इन्जेक्शन) का स्थानीय प्रयोग कर रोगी को आराम प्रदान करते हैं।

● खटमल, जुं, मच्छर, चीलर इत्यादि के काटने पर नमक मिला पानी सोडा. पोटास, प्याज या सिरका आदि को मलना लाभप्रद है।

● इमली के बीज पानी से पत्थर पर घिसकर लेई सी बनालें। उसे डंक पर लेप कर देने से बिच्छू दंश के समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं।

● केकड़ा चिपट जाने पर लोहे की गरम करके सुहानी गर्म छड़ उस पर रखें ताकि वह उस स्थान से अलग हो जाये । उस पर शक्कर छिड़कने से भी वह अलग हो जाता है ।

● कनखजूरा कान में चले जाने पर कान में विशुद्ध क्लोरोफार्म या कैन्डीज लोशन या हाइड्रोजन पर आक्साइड (झाग उत्पन्न करने वाला H2 का योग) अथवा गरम-गरम सरसों का तैल डालना लाभप्रद है ।

● मेंढ़क के काट लेने पर व्यक्ति का बदन ढीला हो जाता है, उसको सांस कष्ट के साथ आता है और मुख से दुर्गन्ध आने लगती है, आँखों के सामने अंधेरा सा छाने लगता है । जैतून का तैल और नमक गरम पानी में मिलाकर रोगी को कै (वमन) करायें तथा गरम पानी में बिठाकर पसीना लायें । लाभप्रद है ।

● लहसुन का रस 36 मि.ली. और इतनी ही मात्रा में मधु को मिलाकर रोगी को पिलाने से विष दूर हो जाता है ।

● नौसादर, सुहागा, चूना प्रत्येक 36-36 ग्राम एकत्र कर पीसलें और कार्क युक्त शीशी में बन्द करके रोगी को बार-बार सुँघायें । लाभकारी है ।

● मूली और नमक को पीसकर डंक पर मलना अतीव गुणकारी है ।

● दंश-स्थल को चीरकर रक्त निकालकर उसमें पोटेशियम परमेंगनेट डालकर (भरकर) नीबू का रस डालना अत्यधिक गुणकारी है ।

● अपामार्ग की जड़ को जल में रगड़कर डंक पर 2-2 मिनट बाद लगायें।

● दंश-स्थल पर कपूर और सिरका को एकसाथ पीसकर 1-1 मिनट बाद लेप करना उपयोगी है ।

● पीपल, काली मिर्च, अदरक, सेंधा नमक (प्रत्येक 3-3 ग्राम) एक साथ पीसकर (सभी का) चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें । आवश्यकता पड़ने पर मधु और मक्खन में मिलाकर खिलायें । यह योग समस्त प्रकार के विष दूर करने में लाभप्रद है । अनुभूत योग है ।

● फिटकरी सफेद 4 ग्रेन, गुलाब-जल या ताजा पानी 10 ग्राम दोनों को मिलाकर रोगी को चित्त लिटाकर उसकी आँखों में 4-4 बूँदें डालें । इससे 2 मिनट में ही लाभ मिलेगा । यह बिच्छू काटे का रामबाण घरेलू उपचार है ।

● लाहौरी नमक (सेंधा नमक) बारीक कूट पीसकर कपड़छन कर लें । बिच्छू दंश के स्थान पर इसे भर दें तथा रोगी के कान, नाक व आंख में इसी को पानी में घोलकर 2-3 बूँदें टपका दें । रोता हुआ बेचैन रोगी कुछ ही मिनटों में हँसता हुआ नजर आएगा ।

● मोचरस को पानी में पीसकर टिकिया बनाकर बिच्छू काटे (दंश) स्थान पर चिपका दें । यह टिकिया विष को चूसकर ही छूटेगी ।

● बिच्छू दंश के रोगी को मूली खिलाना और दंश-स्थल पर मूली का ही रस लगाना परम लाभकारी है ।

● जमालगोटे की गिरी को पानी में पीसकर बिच्छू दंश के स्थान पर लगाने से तुरन्त आराम होता है ।

● नीम की पत्ती वाली टहनी लेकर दंशित-स्थान को झाड़ने से भी बिच्छू का विष उतर जाता है ।

● आक के पत्तों की नस्य देने से छींकें आकर बिच्छू का विष उतर जाता है।

● तुलसी के पत्तों का रस दंशित स्थान पर लगाने से बिच्छू का विष उतर जाता है ।

● सत्यानासी का रस बिच्छू-दंश पर लगाने से तुरन्त आराम होता है।

● 20 से 1 तक उल्टी गिनती गिनने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

● बिच्छू या ततैया के काटने पर तारपीन का तैल लगाना गुणकारी है।

● नीम के पत्ते मसलकर काटे हुए स्थान पर कुछ देर तक मलें । इस प्रयोग से बिच्छू का डंक गल जायेगा और विष शान्त पड़ जायेगा । नीम की छाल को चिलम में रखकर सूटा (कश) मारना बिच्छू-दंश में लाभप्रद है । सूखी पत्तियाँ भी तम्बाकू की तरह (छाल के स्थान पर) पी जा सकती है । सूखी निमौली को चिलम में रखकर कश खींचना बिच्छू-विष का शर्तिया इलाज है ।

● बिच्छू-दंश स्थान पर अजवायन का लेप करना लाभप्रद है ।

नोट—अजवायन विषों के लिए रामबाण है । यह अफीम के भी विष को दूर करती है । इसके नियमानुसार सेवन करते रहने से अफीम खाने की आदत भी छूट जाती है ।

● चारपाई के चारों पायों पर अजवायन की 4 पोटली बाँधने से खटमल भाग जाते हैं । अजवायन पीसकर समभाग सरसों के तैल में मिलाकर उसमें गत्ते के टुकड़ों को तर करके कमरे के चार कोनों में लटका देने से मच्छर कमरे से भाग जाते हैं ।

● अमचूर पानी में पीसकर लेप करने से मकड़ी मली जाने (मकड़ी उभर आना) के विष को आराम आ जाता है । अमचूर और लहसुन समान मात्रा में पीसकर बिच्छू दंश स्थान पर लेप करने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

● कलौंजी के दानें ऊनी कपड़ों में रखने से कीड़े नहीं लगते हैं ।

● सौंठ और जीरा को पानी के साथ पीसकर लेप लगाने से मकड़ी का विष उतर जाता है। जीरा और नमक को पीसकर घी और शहद में मिलाकर थोड़ा-सा गरम करके बिच्छू के डंक पर लगाने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

● प्याज का रस 1 तोला और नौशादर 1 तोला खरल में डालकर खूब खरल करें। (जब दोनों खूब भली-भांति घुल-मिल जायें) तब शीशी में सुरक्षित रख लें। बिच्छू, भिड़, शहद की मक्खी, मच्छर इत्यादि के काट लेने पर इस औषधि की कुछ बूँदें मल दें, तुरन्त ठण्डक पड़ जाती है। पागल कुत्ते तथा बन्दर के काट लेने पर भी इसी प्रकार प्रयोग करें। अतीव लाभकारी घरेलू योग है।

● चिरौंजी के तैल के साथ पीसकर मालिश करने से मकड़ी का विष दूर हो जाता है।

● बिच्छू के काटने पर जहाँ बिच्छू ने काटा हो उसके विपरीत, कान में नमक से संतृप्त घोल (Saturated Solution) की 4 बूँदें डालें। इस प्रयोग से अति शीघ्र लाभ प्राप्त होता है। इस घोल को बिच्छू दंश स्थान पर भी लगायें तथा 1 घूंट पी लें। **घोल बनाने की विधि**—पानी में नमक डालते जायें और हिलाते जायें जब नमक डालते-डालते हिलाने पर घुलना बन्द हो जाये तो यही घोल ''संतृप्त घोल'' बन जाता है। इस घोल को लगाने से अन्य कीड़ों-मकोड़ों का काटा हुआ भी ठीक हो जाता है।

● 1 भाग नमक को 5 भाग पानी में मिलाकर काजल सी भाँति आँख में लगाने से बिच्छू का ज़हर तुरन्त उतर जाता है। विधि निम्न प्रकार है—लाहौरी नमक 10 ग्राम, स्वच्छ पानी 50 ग्राम लें। उसे 1 शीशी में डालकर हल कर लें। बिच्छू काटे रोगी की आँखों में सलाई से लगायें। चन्द मिनटों में ही डंक के स्थान पर भी दर्द नष्ट हो जाएगा।

● ट्रांजिस्टर एवं टार्च आदि में उपयोग होने वाले सैल (एवरेडी, जीप अथवा नोवीनो इत्यादि) जो अनुपयोगी हो गये हों के अन्दर का काला मसाला पानी में घोलकर बिच्छू दंश पर मलने से तत्काल विष नष्ट हो जाता है और सभी नष्ट हो जाते हैं। तत्काल फलप्रद परीक्षित घरेलू योग है।

● बिच्छू, ततैया, बर्र, मधुमक्खी के दंश स्थल को गो मूत्र से धोकर सौंठ को गोमूत्र में घिसकर लेप करने से शोथ व विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

● हींग को स्त्री के दूध में मिलाकर थोड़ा गरम करके बिच्छू के डंक-स्थल पर लगा देने या आक के दूध में हींग को पीसकर लेप करने से बिच्छू का विष

नाश हो जाता है। बिच्छू दंशित रोगी को गरम-गरम दूध पिलाना कराना भी अत्यधिक लाभप्रद है।

● बिच्छू, ततैया, मधुमक्खी के दंश स्थान पर नीबू के बीज पीसकर सैंधा नमक मिलाकर लगाना व पिलाना अतीव उपयोगी है।

विसर्प, सुर्खवाद (Erysipelas)

रोग परिचय—यह एक खतरनाक ज्वर होता है, जिसमें चर्म में फैलने वाला शोथ उत्पन्न हो जाता है। (इस रोग का कारण—स्ट्रप्टो कोक्कस पायोजेन्स नामक 1 कीटाणु होता है। इसकी छूत रोगी के बिस्तर या शरीर से लग जाती है और प्रायः चेहरे पर अथवा जिस बाजू पर टीका लगे या कभी फुन्सी या घाव में संक्रमण होकर यह रोग हो जाया करता है। छूत लगने के 3-4 दिनों के बाद कम्पन लगकर 105 डिग्री फा. हा. तक ज्वर चढ़ जाता है।

जी मिचलाना, सिर में दर्द होना, पीड़ित स्थल पर अत्यधिक लाली, चमक और शोथ जिसमें तीव्र दर्द के लक्षण होते हैं। इस रोग में चर्म के नीचे फोड़े हो जाते हैं (सैप्टीसीमिया) रक्त में कीटाणु आ जाने से उनमें विषैले प्रभाव से वृक्कशोथ (नैफाईटिस रोग) आदि रोग हो जाते हैं। कभी-कभी दिमाग और उसके पर्दों में शोथ होकर प्रलाप और सरसाम का रोग हो जाता है। जब यह रोग दूर होने लगता है तो लाली, शोथ, जलन व दर्द में कमी आ जाती है और कई दिन तक चर्म से छिलके उतरते रहते हैं। रोग न घटने पर चेहरा और सिर में इन्फ्लेमेशन हो जाना खतरनाक लक्षण होता है। इस रोग में 13 प्रतिशत रोगियों की मृत्यु हो जाती है।

उपचार

● चन्दन पिसा हुआ 12 ग्राम, कपूर और घी 30-30 ग्राम सभी को एक साथ खरल करके विसर्प पर दिन में 3 बार मालिश करना लाभप्रद है।

● खस, मुलहठी, पद्माख समान भाग जल में पीसकर विसर्प पर दिन में 3 बार लेप करें।

● वट की छाल, पीपल की छाल, गूलर की छाल, शिरीष की छाल, पाकड़ की छाल प्रत्येक 12-12 ग्राम को जल में पीसकर दिन में 2 बार लेप करना गुणकारी है।

● मुलहठी, दारुहल्दी, तगर, कूट, हल्दी, बालछड़, लाल चन्दन, छोटी

इलायची, सुगन्धवाला, शिरीष की छाल (प्रत्येक 6-6 ग्राम) सभी को जल में पीसकर घी में मिलावें और थाली पर मैदा की भाँति पीसकर विसर्प पर लगाते ही जलन, सूजन और ज्वर आदि कष्ट दूर हो जाते हैं।

● अरन्ड के बीज, नीम, बाबची, कड़वी राम तरोई, कड़वी तुम्बी, अंकोल, अरन्ड की जड़ और चकबड़ सभी सममात्रा में लेकर बारीक पीसकर कपड़े से छान कर क्रमशः गौमूत्र, दही, दूध, तिलों के तैल, बकरी के मूत्र में बारी-बारी से जोर से खरल करके पाताल-यन्त्र से तैल निकालकर इसको विसर्प पर दिन में 2-3 बार मलें। शर्तिया लाभप्रद योग है।

● चिरायता, त्रिफला, नीम, बाँस के पत्ते, कुटकी, परबल पत्र, श्वेत चन्दन प्रत्येक 3-3 ग्राम को 250 मि.ली. जल में काढ़ा बनायें। जब 30 मि.ली. शेष बचे तब उसे छानकर ऐसी एक मात्रा सुबह-शाम विसर्प के रोगी को पिलायें। विसर्प रोगी के समस्त कष्ट दूर कर निरोगी करने वाला योग है।

विसर्प नाशक कुछ प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

दुग्ध प्रोटीन सूचीवेध (बुन्देलखण्ड) **नीलिका सूचीवेध** (बुन्देलखण्ड), **उशीर सूचीवेध** (सिद्धि फार्मेसी, मिश्रा और बुन्देलखण्ड) का चिकित्सक के परामर्शानुसार 1-2 मि.ली. का प्रतिदिन अथवा सप्ताह में 2-3 बार मांसपेशी में सूचीकरण करायें। इस रोग में समस्त सूचीवेध लाभप्रद हैं।

छाले, फफोले (Pemphigus)

रोग परिचय—इस रोग में शरीर पर मटर के दाने से लेकर कबूतर के अण्डे के बराबर तक छाले उत्पन्न हो जाते हैं। इनके अन्दर पानी भरा रहता है। उनमें जलन तथा खुजली तो कम होती है किन्तु रोगी, कमजोर हो जाता है। शरीर पर जहाँ पर छाले निकलने वाले होते हैं वहाँ जलन, खुजली, दर्द और कष्ट प्रतीत होता है और कुछ देर के पश्चात् छाले निकल आते हैं। इनके फूटने और शुष्क होने के बाद ऊपर की चर्म भूसी की भाँति उतर जाती है। यह रोग पाचन-दोष, मैला-कुचैला रहना, आग से जल जाना, उपदंश का संक्रमण, सख्त धूप में रहना आदि तथा कई बार गर्मी की ऋतु में छोटे बच्चों को महामारी के रूप में उत्पन्न हो जाया करता है।

उपचार

● पाचनक्रिया का सुधार करें। कब्ज न होने दें। छालों पर मुलतानी मिट्टी

दही या छाछ में गूँथ कर लगायें या लाल चन्दन सिरके में घिसक लगायें। छालों के फूटने के बाद निम्न योग का मरहम बनाकर घावों पर लगावें।

सफेदा काशगरी, कमीला, मुर्दासंग प्रत्येक 12-12 ग्राम, कपूर 6 ग्राम, खरल करके गाय का घी 60 ग्राम (21 बार नीम की पत्तियों के क्वाथ से धोया हुआ) मिलाकर में सबको रख लें। छालों को काटकर पानी निकालकर शुष्क करके यह मरहम लगायें। हर प्रकार के फोड़े-फुन्सियों और छालों के लिए अतीव गुणकारी मरहम है।

● कुटकी, निरायता, शरपुंखा के पत्ते, नीम के पत्ते, मंजीठ समभाग लेकर जौ कूट कर ताजे जल में 12 घंटे तक भिगोकर रखें। प्रातःकाल कपड़े से छानकर 30 से 60 मि.ली. की मात्रा में रोगी को पिलायें। नित्य 10 दिन तक सुबह-शाम के इस प्रयोग से रोग जड़ मूल नष्ट हो जायेगा।

गर्मी के दाने, पित्त

रोग परिचय—इस रोग को अनूरिया, अंघौरी, इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। शरीर के छिद्रों या ग्रन्थियों में पसीना रुक जाने से शोथ आ जाया करती है। जिसके फलस्वरूप बाजरा के दानों अथवा उससे भी छोटे दानों के रूप में दाने चर्म पर निकल आते हैं। जिनमें खुजली होती है और सुइयां सी चुभती हैं। यह रोग गर्मी की अधिकता, बहुत अधिक पसीना आना, चर्म की सफाई न रखना, गर्म प्रकृति के भोजनों का अधिक खाना और गरम कपड़े पहनना इत्यादि कारणों से हो जाया करता है।

उपचार—यह रोग प्रायः गरमियों में पसीना आने के कारण शरीर में हवा लग जाने से उत्पन्न होता है, अतः रोगी को अधिक पसीना आने से बचायें। धूप में चलने-फिरने से रोकें। ठण्डी हवा में रखें तथा हल्के कपड़े पहनायें। कब्ज से दूर करें, पानी कम दें। गरम और तेज मिर्च-मसालेयुक्त भोजनों से परहेज रखें। ठण्डे और शान्तिदायक शर्बत और पेय यथा—अनार का शरबत, सन्तरे का शर्बत, चन्दन का शर्बत आदि पिलायें।

● मुर्दासंग एवं असली हींग समभाग लेकर खरल करें और चने के समान गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। प्रतिदिन 1 से- 3 गोली सुबह-शाम खिलायें। गर्मी के दानों के लिए अतीव गुणकारी है योग केवल 3-4 दिनों में दाने पूर्णरूपेण नष्ट हो जाते हैं और फिर नहीं निकलते हैं।

● दानों पर ग्लेक्सो (ऐलोपेथी औषधि निर्माता) कम्पनी का नारियल पाउडर छिड़कना भी अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● गुलाब के फूलों का तैल 12 मि.ली., सिरका 48 मि.ली., अर्क गुलाब 60 मि.ली., कपूर 1 ग्राम और फिटकरी 3 ग्राम लें । सभी को खरल करके गर्मी के दानों पर लगाना लाभकारी है ।

● नौशादर, कपूर, नीला थोथा, गन्धक आमलासार (प्रत्येक 9 ग्राम) सभी को पीसकर 3 भाग कर लें । फिर 1 भाग को दही में मिलाकर दानों पर मलें। जब औषधि खुश्क हो जाये, तो थोड़ी देर बाद स्नान कर लें । इसी प्रकार प्रयोग 3 दिन तक करें । आराम हो जाएगा ।

● मुलतानी मिट्टी, रेशा खातमी के लुआब में मिलाकर दानों पर मलें । अथवा मक्खन और कतीरा मिलाकर दानों पर मलें । अथवा खशखश के बीज 12 ग्राम बकरी के 60 मि. ली. दूध में पीसकर गर्मी के दानों पर मलें । तत्पश्चात् आधा घन्टे बाद गरम पानी से स्नान करें । गर्मी के दानों हेतु सभी लाभप्रद योग हैं ।

● डेली वाली बरफ जिसे शर्बत, लस्सी में डालते हैं) को गर्मी के दानों पर मलना भी गर्मी के दानों में अत्यन्त लाभप्रद है ।

अर्बुद, मस्सा (Wart)

रोग परिचय—शरीर के विभिन्न स्थानों (विशेषकर गर्दन, चेहरा, छाती, पीठ, अधोनख, पुरुषेन्द्रियों, स्त्री की योनि, गर्भाशय-मुख तथा पादतल में उपदंश आदि रोगों के विष के कारण त्वचा में मांस के सूक्ष्म खन्ड के सदृश अर्बुद उत्पन्न हो जाते हैं । वे सांवले व्यक्ति में काले तथा गोरे व्यक्ति में लाल रंग के होते हैं। यह कोई कष्ट नहीं देते हैं किन्तु देखने में बुरे (भद्दे) लगते हैं, केवल शारीरिक सौन्दर्य को बिगाड़ देते हैं

उपचार

● इस रोग हेतु हौम्योपैथी औषधि 'थूजा' ने अधिक ख्याति प्राप्त की है। किसी हौम्योपैथी चिकित्सक से परामर्श कर उचित पोटेन्सी में व्यवहार करें ।

● कब्ज दूर करने हेतु त्रिफला चूर्ण 3 से 5 ग्राम अथवा छोटी हरड़ का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में सुबह सूर्योदय से पूर्व स्वच्छ बासी जल के 5 घूंट के साथ खायें । तदुपरान्त नीम के पत्तों का कपड़छन चूर्ण 2 ग्राम, स्वर्णक्षीरी की जड़ का चूर्ण 1 ग्राम तथा काली मिर्च का चूर्ण 250 मि.ग्रा. एकत्र कर मिलाकर ऐसी 1-1 मात्रा सुबह-शाम ताजा जल अथवा मधु से लें । लाभकारी योग है ।

● व्याधि हरण रसायन या रसमाणिक्य अथवा तालकेश्वर रस आदि शास्त्रीय औषधियों का भी प्रयोग इस हेतु अत्यन्त लाभकारी है ।

● धोबी सोड़ा और कली चूना मिलाकर रुई के फाहे से मस्से पर दिन में 2-4 बार महीन ब्रुश से 2-2 घंटे पर लगाना लाभप्रद है ।

● मस्से पर हल्का चूना (पान में खाने वाला) लगाकर बंगला पान का डन्ठल रगड़ें । मस्सा कट जाएगा फिर जख्म का उपचार कर लें ।

● नाई के उस्तरे से मस्सा काटकर तुरन्त ही उस जगह पर पोटाश परमेंगनेट चुटकी में भरकर लगा दें । रक्त बन्द हो जायेगा तथा चर्म ठीक होकर 2-3 दिन बाद मस्सा मिट जायेगा ।

● मोर की बीट (विष्ठा) सिरके में मिलाकर मस्सों पर लगाना उपयोगी है।

● धनिये को पानी में पीसकर लेप करने से तिल और मस्से नष्ट हो जाते हैं।

● भुनी हुई फिटकरी में समभाग काली मिर्च मिलाकर बारीक घोट लें । इसे पानी में घोलकर मुँहासे या शरीर के किसी भी भाग पर मस्सों पर लगाने से वह नष्ट हो जाते हैं । मस्सों के लिए यह योग काल जैसा है ।

(नोट—जहाँ से रक्त बहता हो, वहाँ इसे लगाने से रक्त बहना भी बन्द हो जाता है ।)

● चूना और सज्जी दोनों समभाग लें और पानी में डाल दें । यह क्रिया रात्रि में करें । प्रातःकाल निथरे हुए पानी को छानकर शीशी में भर लें । मस्सों को ब्लेड से छीलकर यह लोशन पान के पत्तों की डन्डी (डन्ठल) से लगायें । सभी मस्से जल जायेंगे और जीवन में दोबारा नहीं होंगे ।

इन्द्रलुप्त, गंजापन

रोग परिचय—बालों में पोषक तत्वों का अभाव, बुढ़ापा, वंशानुगत असर, और विषैले द्रव्यों आदि के प्रभाव से सिर के बाल झड़-झड़ कर गिरने लग जाते हैं । कुछ ही समय में सिर गंजा हो जाता है । इस रोग के फलस्वरूप सिर की सुन्दरता नष्ट हो जाती है तथा सिर में किसी पदार्थ से चोट लगने पर बालों के अभाव में तीव्र पीड़ा होती है अथवा फटकर खून बहने लगता है ।

उपचार

● बालों को प्रतिदिन स्वच्छ जल से धोवें फिर सुखाकर शुद्ध नारियल तैल को बालों की जड़ों में मलना लाभप्रद है ।

● कैन्थराइडिन हेयर आयल (बाजार में इसी नाम से उपलब्ध) को गंज पर लगाकर मलना भी लाभप्रद है ।

● बालों को साबुन से न धोकर काली मिट्टी अथवा रीठा से धोवें । कोई.. तैल बालों को सुखाने के बाद उनकी जड़ों में मालिश करना लाभप्रद है ।

● गंजे स्थान पर हाथी के दाँत को कागजी नीबू के रस में घिसकर लेप बना कर लगाकर मलना भी गुणकारी है ।

● 5 से 10 वर्ष पुराने आम के अचार का तैल निथारकर शीशी में भरलें। इस तैल को रात्रि में सिर में मालिश करें । तदुपरान्त जिलेटीन कागज रखकर ऊपर से कपड़ा बाँध लें । रातभर यह कपड़ा बँधा रहने दें और प्रात:काल खोल दें । मुलतानी मिट्टी, आँवला, नीबू का रस, दही तथा तैल तिली को पानी में मथकर सिर पर लगायें और स्नान कर लें । इस प्रयोग को धैर्यपूर्वक निरन्तर 2 मास करने से बाल उग आते हैं ।

● कूट, काले तिल, गौरीसर, कमलगट्टा, छड़ छड़ीला, मधु और दूध समभाग लें । सभी को इकट्ठा खरल में घोटकर सिर पर लेप दिन में 2 बार करने से बाल लम्बे हो जाते हैं और झड़ना रुक जाते हैं ।

● त्रिफला के काढ़े में लोहा चूर्ण, काला भृंगराज पत्र स्वरस, ताजे आँवला का रस और काले तिल का स्वरस प्रत्येक समभाग मिलाकर 12 घंटे तक भिगोकर रखें और नित्य प्रात:काल इसको मथ व छानकर बालों की जड़ों व गंज स्थान में धीरे-धीरे मलें, लाभ हो जाता है ।

● शिकाकाई कैश तैल (निर्माता मैट्रो परफ्यूमरी दिल्ली) का नित्य बालों की जड़ों व गंज स्थान पर मलने से नये केश उग आते हैं और काले, लम्बे, और घने हो जाते हैं ।

● आँवला (सूखा), भृंगराज (सर्वांग सूखा), माजूफल, आम की गुठली की मींगी या गिरी समभाग लेकर चूर्ण करके रात में जल में भिगोकर रखें तथा प्रात:काल उस जल से बालों को मलकर ऐसा धोयें कि उक्त तरल खल्वाट स्थान तथा बालों की जड़ों में समा जाये । इस प्रयोग से गंज रोग दूर हो जाता है ।

● बाल खोरा (जगह-जगह सिर पर गंज रोग हो जाने में) जमालगोटा के बीज पानी में पीसकर, गाढ़ा-गाढ़ा लेप लगायें । इस प्रयोग से रोगाक्रान्त स्थान पर नन्हीं-नन्हीं सी पीली-पीली फुन्सियाँ सी निकलती दिखाई देंगी, इन्हीं फुन्सियों में से नये बाल उत्पन्न होकर 'बाल खोरा' रोग नष्ट हो जाएगा । प्रयोग 1 ही बार और अधिकतम 2 बार करें ।

नोट—इस लेप के उधर-उधर स्वस्थ स्थान (सिर या कनपटी) पर बहने पर तुरन्त ही किसी

स्वच्छ रुई या कपड़े से पोंछ दें, अन्यथा उस स्थान पर भी प्रदाह आदि कष्ट हो सकते हैं । परीक्षित व अनुभूत योग है ।

● सिर, मूँछ या दाढ़ी के बाल उड़ गए हों तो- प्याज का रस और शहद का लेप कुछ दिनों तक करें । कुछ ही दिनों के प्रयोग से बाल उग आवेंगे ।

● नीबू के बीज आवश्यकतानुसार लेकर पानी में पीसकर प्रतिदिन लेप करने से कुरूपता नष्ट होकर नये बाल उग आते हैं ।

● ताजे धनिये का रस कुछ दिनों तक निरन्तर सिर में लगाने से गंजरोग नष्ट हो जाता है ।

● पोदीने का सत साबुन के पानी में घोलकर सिर में डालें । उसे 15-20 मिनट बाद खूब मलकर सिर को धो डालें । 2-3 बार के इस प्रयोग से जूएं मर जाएंगी।

भूसी सिर की खुश्की (Dandruff)

रोग परिचय—पोषक तत्वों की कमी—विशेषत: स्निग्ध आहार का अभाव अथवा सिर के बालों में बहुत अधिक दिनों तक तैल मालिश न करने से और अल्कोहल मिश्रित या मिलावटी सस्ते किस्म के बाजारू तैल का अधिकता से प्रयोग करने, वृद्धावस्था आदि कारणों से सिर की त्वचा में शुष्कता उत्पन्न होकर भूसी निकलने लगती है । जिससे प्राय: सभी परिचित हैं ।

उपचार

● भृंगराज तैल को सिर के बाल और उसकी त्वचा पर दिन में 2 बार मालिश करने से भूसी (रूसी) निकलना, बाल झड़ना, बाल सफेद होना, सिर में छोटी-छोटी फुन्सियाँ होना इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● नीबू का रस निकाल कर गरम पानी में मिलाकर सिर में डालकर मलें इस प्रयोग को प्रतिदिन 2-4 दिन करने से खुश्की या रूसी हट जाएगी और बाल कोमल हो जायेंगे ।

● जात्यादि तैल (शारंगधर संहिता) शैम्पू से बालों को धोकर व सुखाकर बालों की जड़ों व त्वचा पर मलें । लाभप्रद है । निर्माता (वैद्यनाथ)

● महा भृंगराज तैल (भैषज्य रत्नावली) इसे दिन में 2 बार बालों की जड़ों व त्वचा में मलना भी अत्यधिक लाभकारी है ।

● हिमसागर तैल (भैषज्य रत्ना.) इसे दिन में 1-2 बार सूखे बालों की जड़ों तथा त्वचा पर मलें । लाभप्रद है । (निर्माता वैद्यनाथ)

जम-जूं या लीखें, जुएं, डींगर

रोग परिचय—इन्हें अंग्रेजी में 'लाइस' या 'पेडिकुलोसिस' के नाम से जाना जाता है। बालों को गन्दा रखने (नित्य प्रति धो पोंछकर स्वच्छ न रखने तथा उनमें कंघी न करने) उत्तम क्वालिटी का तैल प्रयोग न करने आदि कारणों से तथा जुओं वाले व्यक्ति के सम्पर्क (पास में लेटने-बैठने से) या उसके व्यवहार में आए हुए वस्त्रों के प्रयोग करने से या उससे सिर को पोंछने से बालों में जुऐं और उसके अण्डे पैदा हो जाते हैं। यही जब बालों से झड़कर वस्त्र या शरीर के अन्य भाग की त्वचा पर अपना निवास बना लेती है तो उसको (चीलर) के नाम से जाना जाता है।

उपचार

● सरसों के तैल 20 ग्राम में 25 ग्राम नीबू का रस मिलाकर दिन में 2-3 बार मालिश करने से जम-जूं नष्ट हो जाती हैं।

● नारियल का तैल 50 मि.ली., 1 ग्राम, कपूर और 1 ग्राम एक्सटेक्ट मार्गोसा (नीम का सत्व) को आपस में खूब भली प्रकार मिलाकर दिन में 3 बार जड़ वाली त्वचा पर लगाकर कपड़े से बाँध दें। दस घंटे बाद किसी उत्तम शैम्पू से सिर को धोकर सुखालें, फिर कंघी करके मरी हुई जुऐं निकाल लें।

● बालों और सिर की त्वचा में विशुद्ध नीम का तैल लगाकर मलें तदुपरान्त किसी कपड़े से बालों को बाँध दें। 10 घंटे तक रखने के पश्चात् स्नान कर बालों को साफ करने से जुओं का रोग नष्ट हो जाता है।

● नारियल के तैल में कपूर और लहसुन पीस कर व मिलाकर प्रयोग करने से जुऐं नष्ट हो जाती हैं।

● शरीफा के बीज की गिरी को पीसकर जल में मिलालें और बालों की जड़ों में मालिश करने के 10 घंटे बाद साबुन से बालों को धोकर व सुखाकर कंघी से मरी हुई जुओं को निकालें। औषधि आँखों में न लगने पाये। हानिप्रद है।

● रीठा के वक्कल 25 ग्राम को 200 मि.ली. जल में 12 घंटे तक भिगोकर छानलें और फेन चलाकर बालों की जड़ों में लगाकर मलें। छः घंटे बाद शैम्पू से बालों को साफ करलें इस प्रयोग से भी जुऐं नष्ट हो जाती हैं।

● 250 ग्राम सूखे आँवला को जल में 12 घंटे तक भिगोकर इस काले द्रव में लहसुन का 10 ग्राम मिलाकर, छानकर जुओं के स्थान पर लगाना अत्यधिक लाभकारी है।

पाला मारना, हिमदाह

सर्दी लगने के कारण शरीर के कोई अंग-विशेष रूप से अंगुलियाँ और कान पहले लाल हो जाते हैं फिर उनमें पीड़ा होती है और बाद में वे अंग सुन्न हो जाते है, क्योंकि अधिक समय तक सर्दी लगने से रक्त संचार में दोष आ जाता है। सर्दी लगने से चर्म का रंग पीला या नीला पड़ जाता है। सारे शरीर में कम्पन उत्पन्न हो जाता है, आवाज में थरथराहट उत्पन्न हो जाती है, चेतना मन्द कर तन्द्रा जैसी दशा हो जाती है। पसलियों में जकड़न सी प्रतीत होती है। हाथ-पैर चलाना, उठना-बैठना यहाँ तक कि करवट बदलना तक कठिन हो जाता है। कई बार बहुत अधिक सर्दी लग जाने के कारण मृत्यु भी हो जाती है। इस रोग में जिस अंग पर सर्दी का प्रभाव होता है उसमें रक्त जमने से पहले लाली पैदा हो जाती है, फिर उसमें प्रदाह उत्पन्न होकर दर्द होने लगता है। (यदि उस अंग में रक्त जमने लगे तो संज्ञाहीनता (सुन्नता) उत्पन्न होकर वह अंग सड़ने लगता है। मांसपेशियाँ ऐंठ जाती हैं, त्वचा सिकुड़कर बेकार हो जाती है तथा सांस कठिनाई से आती-जाती है।

उपचार—जिन लोगों को बहुत शीघ्र सर्दी का प्रभाव हो जाता हो, उन्हें सर्दी में गरम जुराबें, दस्तानें, स्वेटर, जर्सी आदि गरम कपड़े पहनायें रखें तथा सर्दी से बचाव हेतु सावधानी रखें।

गरम तैल जैसे—जैतून का तैल या महानारायण तैल आदि की पीड़ित अंगों अथवा सम्पूर्ण शरीर पर मालिश करें। यदि रोग के कारण पीड़ित अंग पर शोथ आ जाए तो शलजम के पत्ते, कमरकल्ला (बन्दगोभी) के पत्ते, बाबूना, नाखूना, गेहूं की भूसी और सोये के बीज के क्वाथ से उस अंग को धोवें, अथवा उस पीड़ित अंग को इस क्वाथ में कुछ देर तक डुबोये रखें।

पसीना अधिक आना (Hyperidrosis)

रोग परिचय—इस रोग को अति स्वेदलता भी कहा जाता है। वैसे तो गर्मी व्यायाम अथवा अन्य किसी परिश्रम के फलस्वरूप भी पसीना बहने लगता है किन्तु कई रोगों के कारण भी अधिक पसीना आने लगता है। क्षयजन्य क्षीणता, किसी भी कारण से उत्पन्न कमजोरी, स्नायविक विकार, तन्त्रिका संस्थान की कमजोरी, धातु क्षीणता, स्मरण शक्ति की कमी, सामान्य दुर्बलता, अरुचि मन्दाग्नि, मलेरिया बुखार, फेफड़ों का क्षय, रक्त का दूषित और पीपयुक्त हो जाना एवं तीव्र ज्वर

के समय और अस्थिमृदुता आदि रोगों में अधिक पसीना आना एक प्रमुख लक्षण होता है।

उपचार—रोग के मूल कारण को दूर करना ही वास्तविक उपचार है। पाचन क्रिया का सुधार करें। यदि शरीर में दूषित तरल की अधिकता के कारण पसीना अधिक आता हो तो उसे निकालें।

नोट—ज्वर अथवा अन्य तीव्र रोग दूर होने के समय आने वाले पसीने को कदापि रोकने का प्रयास न करें, अन्यथा परिणाम गम्भीर हो सकते हैं।

● मीठी निर्बसी, जायफल, जावित्री, केसर प्रत्येक 3-3 ग्राम लें। शिंगरफ, अफीम, लौहवान का सत, चांदी भस्म प्रत्येक डेढ़ ग्राम, कस्तूरी 1 ग्राम लें। सभी औषधियों को पान के पत्तों के रस और मधु में खरल करके उड़द के बराबर गोलियाँ बनाकर रख लें। आवश्यकतानुसार 1-2 गोली तक सेवन करें तथा बाह्य प्रयोगार्थ अरहर की दाल को भूनकर कायफल मिलाकर पीसलें और थोड़ा गरम करके पिन्डली से पांव की अँगुलियों तक और कोहनी से हाथ की अंगुलियों तक मालिश करें। यह योग प्रसूत और ठन्डक के कारण अधिक पसीना आने में अत्यधिक लाभकारी है।

● रूई का फाहा ठण्डे पानी में तर करके या बरफ की छोटी डली नाभि पर रखने से भी पसीना आना रुक जाता है।

● फिटकरी पानी में घोलकर उस पानी से स्नान करना या फिटकरी की डली पसीने के स्थान पर रगड़ना भी अधिक पसीना आने में लाभप्रद है।

चर्म की खुश्की, चर्म का खुरदरा हो जाना

रोग परिचय—इस रोग को शल्की त्वचा भी कहा जाता है। इस रोग में चर्म शुष्क और खुरदरी हो जाती है और चर्म से मछली की भाँति छिलके उतरते रहते हैं। जोड़ों, हथेलियों और तलवों के अतिरिक्त सम्पूर्ण शरीर के चर्म से छिलके उतरते हैं। नाखून भुरभुरे और शुष्क, बाल पतले और चमकहीन हो जाते हैं। पसीना कम आने लगता है। प्रायः यह चर्मरोग आनुवंशिक या पैत्रिक होता है। विटामिनों की कमी से भी यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है।

उपचार—काडलिवर आयल (मछली का तैल) की मालिश तथा विटामिन ए. युक्त भोज्य पदार्थों का अधिक सेवन करना लाभप्रद है। अधिक नहाना तथा साबुन का प्रयोग हानिकारक है। प्रातःकाल सूर्य-स्नान करना लाभप्रद है। चर्म पर खुश्की और शुष्कता उत्पन्न करने वाली वस्तुओं का सेवन करना त्याग दे।

● गाय या बकरी के दूध में उन्नाव का शर्बत मिलाकर पीना तथा बादाम या कद्दू के तैल की मालिश करना लाभकारी है।

● मीठे बादामों की गिरी (छिलका रहित) 6 नग, सफेद खशखश के बीज 12 ग्राम, मीठे कद्दू के बीजों की गिरी 12 ग्राम, चिरौंजी की गिरी 18 ग्राम, काले तिल भुने हुए 18 ग्राम लें। सभी औषधियों को गाय के दूध में पीसलें। इसमें गुलाब का तैल 25 मि.ली. मिलाकर मालिश करना लाभकारी है।

● बाहों को गोल करके 1 मुट्ठी नमक लेकर गोलाकार गति से बाँहों की मालिश करें। यह प्रयोग प्रति सप्ताह करें। इस प्रयोग से बाँहों की त्वचा में कोमलता आकर सुन्दरता बढ़ जायेगी।

● त्वचा खुश्क हो, हाथ-पैरों में बिवाई फटती हों तो गरम पानी में नमक मिलाकर धोवें और सेंक करें। प्रयोग प्रति सप्ताह करें। लाभप्रद है।

● गरम पानी में नमक डालकर पैर धोने से वे सुन्दर मुलायम हो जाते हैं।

1 जग गरम जल में डेढ़ चम्मच नमक घोलकर प्रतिदिन सुबह-शाम मुख धोने (आँखें बन्द रखें, तेज नमक आँखों के लिए हानिकारक है) और उसके बाद ब्लाटिंग पेपर से नमी सुखाकर कोई तैल या कोल्ड क्रीम लगाने से मुख की सुन्दरता तो बढ़ती ही है साथ ही 1 सप्ताह के प्रयोग से मुहाँसे भी नष्ट हो जाते हैं।

चर्म का सख्त हो जाना (Selerderoma)

रोग परिचय—इस रोग को त्वक-काठिन्य (प्रोगेसिव सिस्टेमिक स्केलोरिस) के नाम से भी जाना जाता है। इस चर्मरोग में त्वचा मोटी, चमकहीन और भद्दी हो जाती है, लचक नहीं रहती है। प्रायः चेहरा, गर्दन, कन्धों, छाती और बाजुओं के समीप की चर्म सख्त होना प्रारम्भ हो जाती है और फिर धीरे-धीरे यह शरीर के निचले भाग में फैल जाता है यहाँ तक कि अंगुलियों की चर्म सख्त हो जाती है। रोग के अत्यधिक बढ़ जाने पर प्रत्येक प्रकार की शारीरिक गतिविधियों में कठिनाई हुआ करती है। इस रोग में पसीना बहुत कम आता है और चर्म की चिकनाहट भी कम हो जाया करती है। अन्त में चर्म पर बनफशी रंग के या काले रंग के दाग पड़ जाया करते हैं। यह रोग भी हठीले किस्म का होता है जो मुश्किल से ठीक हुआ करता है। एड्रीनल ग्लैन्ड, थायरायड ग्लैन्ड और दूसरे ग्लैन्डों के दोष या हारमोन्स सम्बन्धी दोष—सर्दी लगना, कई प्रकार के दुख, चिन्ता, वृक्क रोगों आदि के कारण उत्पन्न हुआ करता है।

उपचार—चर्म पर तैल की मालिश करें । चर्म को गरम रखें । चर्म को सर्दी से बचायें । यदि वृक्कों में कोई दोष हो तो उसका उपचार करें ।

जौ का आटा, चने का आटा, बाकला का आटा सभी सममात्रा में लेकर दूध के पानी में गूँथकर सिरका और गुलाब का तैल मिलाकर उबटन बनाकर प्रभावित होकर चर्म की सख्ती नष्ट हो जाती है ।

गट्टा, आटन, गोरखुल (Corn)

रोग परिचय—तंग जूता पहनने के कारण उसके दबाव और रगड़ से प्रायः पाँव के अँगूठे या छोटी अँगुली के जोड़ की त्वचा सख्त हो जाया करती है । पैरों के तलुवों में कांटा, सुई, कांच का टुकड़ा, लोहे की कील आदि चुभ जाने के कारण भी पैर के तलुवे की चर्म में सख्त गाँठ बन जाया करती है । जिसमें चलते समय सख्त दर्द होता है ।

उपचार—तेज ब्लेड या उस्तरे से गोरखुल को काटकर उसको जड़ से (सख्त मांस को छील-छील) निकालें इसके सबसे नीचे छिद्र में पीप जमा रहती है । इस छिद्र को त्वचा की ओर काटकर समस्त पीप को हाइड्रोपर, आक्साइड (आग उत्पन्न कर जख्म, पीप आदि साफ करने वाली (H2) हाइड्रोजन आक्सीजन का घोल या एक्रिफ्लेबिन लोशन (पीला टिंक्चर बनाने वाली दवा जिससे डाक्टर लोग साधारण जख्मों की पट्टी) ड्रेसिंग करते हैं से साफ करके उसको रुई से भली-भांति पोंछकर उसमें विशुद्ध कार्बोलिक एसिड 1-2 बूंद डाल दें, फिर पट्टी बाँधें । तदुपरान्त साधारण जख्मों की भाँति उपचार कर ठीक कर लें । कार्बोलिक एसिड के अभाव में कार्नेक निर्माता (बी.सी.) का प्रयोग कर सकते हैं । या गट्टे को गरम पानी से भिगोकर नरम करके उस्तरे से सावधानी पूर्वक छीलकर उस पर फिटकरी गरम पानी में भिगोकर रगड़ें ।

- फिटकरी, सुहागा, नौशादर को सिरके में पीसकर गट्टे पर लगाना लाभप्रद है।
- गरम पानी भुनी खील फिटकरी और सरसों का तैल मिलाकर लगाना भी गोरखुल में अत्यधिक लाभप्रद है ।
- ताँबे का टुकड़ा या पैसा पानी में घिसकर गट्टों पर लगाना भी उपयोगी है । प्रयोग छोटा किन्तु चमत्कारी है ।

गाँठें, गिल्टियाँ, रसूलियाँ

रोग परिचय—गिल्टियाँ या गाँठें उभार के रूप में चर्म और मांस के बीच पाई जाती हैं । यदि शरीर की प्राकृतिक ग्रन्थियां बढ़ जायें तो उनको अंग्रेजी में **एनलार्जड ग्लैन्ड** और यदि किसी रोग के कारण अप्राकृतिक रूप से गिल्टियाँ उत्पन्न हो जाए तो उन्हें **ग्लेन्डयूलर ट्यूमर** कहते हैं । इन्हें आयुर्वेद में ग्रन्थिल अर्बुद के नाम से जाना जाता है । इन गिल्टियों में बहुत सी गिल्टियाँ तो स्वयं एक रोग का स्थान रखती है । जैसे—**कन्ठमाला (स्क्रोफ्यूला)** (यह प्रायः नरम मांस जैसे गर्दन और बगल में निकलती हैं । ये प्रायः एक ही झिल्ली में कई-कई होती हैं, किन्तु कभी-कभी रसूली की भाँति प्रत्येक की झिल्ली अलग हुआ करती है । इसका कारण गाढ़ा बलगम या कफ पदार्थ होता है । इसमें बहुत जल्द पीप पड़ जाती है परिणामस्वरूप ये फूट जाती हैं । आधुनिक चिकित्सा शास्त्री इस रोग (कन्ठमाला) को क्षय के संक्रमण (ट्यूबर क्युलोसिस) से उत्पन्न होना मानते हैं।

त्वद या ककरौली—यह एक दूषित प्रकार की रसूली या शोथ होती है, जो शरीर के किसी भी भाग पर उत्पन्न हो सकती है । यह गोलाकार काले या बैंगनी रंग की होती है जो क्रमशः बढ़ती रहती है (वैसे इसमें हरी और लाल कोषिकायें कड़े पँव (पैर) की भाँति निकल आती है) जब यह फूटती हैं तो घाव बैंगनी रंग का अथवा काला दिखलाई देता है और इसके किनारे मोटे हो जाते हैं—जिनमें दुर्गन्ध आती है और पीले रंग का बदबूदार पानी बहता है । रोगी को तीव्र जलन और टीस होती है, सुइयाँ-सी चुभती हुई महसूस होती है ।

नोट—जो कैन्सर फूटता नहीं है वह बलगम और पित्त के जल के कारण पैदा होता है (ग्लैन्डर्ज) Glanders इस रोग में चर्म के नीचे विभिन्न स्थानों पर गाँठें पैदा हो जाया करती हैं और लिम्फैटिक ग्लैन्डर्ज रोगाक्रान्त होकर बढ़ जाते हैं । चर्म पर छोटे-छोटे लाल दाने निकल आते हैं जो बहुत शीघ्र छालों के रूप में परिवर्तित होकर तदुपरान्त, उनमें घाव बन जाते हैं, इन घावों में रक्तयुक्त पीप निकलती है, चर्म के नीचे जो गाँठें पैदा होती हैं वे पहले सख्त और कष्टदायक होती हैं । बाद में उनमें पीप पड़कर वे फूट जाया करती हैं । इसके साथ ज्वर, बेचैनी, जोड़ों में दर्द और भूख की कमी इत्यादि उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं परन्तु जीर्ण (क्रोनिक) रोगों में यह कष्ट नहीं हुआ करते हैं । इसके उत्पत्ति का कारण कीटाणु बी-मलाई होता है । ये कीटाणु घोड़ों, गधों और खच्चरों के शरीर से मनुष्य के शरीर में आकर इस रोग को उत्पन्न कर देता है । बद, गिल्टी, ककराली, कछराली ये जाँघ और बगल की लिम्फैटिक ग्रन्थियाँ शोथयुक्त होकर पक जाती हैं । इन्हीं को उक्त विभिन्न नामों से जाना जाता है ।

उपचार

- सिरस के बीज 120 ग्राम को पीसकर 250 मि.ली. मधु में मिलाकर

पाक बनालें। तदुपरान्त एक रोगनी (ऊपर पेण्ट की गई) हाँडी में बन्द करके 15 दिनों तक धूप में रख दें। फिर 6 से 12 ग्राम की मात्रा में सेवन करें।

● सरफौंका को पीसकर 10 दिनों तक लगातार निहार-मुँह (बगैर कुछ खाये) 10 ग्राम चूर्ण ताजा जल से खायें। अनुभूत योग है।

● कटाई का फल पीसकर गरम करके पान पर रखकर बाँधें। बद और ककरौली के लिए अनुभूत है।

● चूना शुष्क डेढ़ ग्राम, कुन्दर 500 मि.ग्रा., शिंगरफ रूमी 500 मि.ग्रा. और गुग्गुल 1 ग्राम लें। सभी को पीसकर 1 अण्डे की जर्दी में मिलाकर खूब घोटें फिर कपड़े पर लगाकर बद या ककरौली पर चिपका दें। घाव ठीक हो जाने के बाद फाहा स्वयं अलग हो जाएगा।

● निर्बसी, मरमकी, गुग्गुल, एलवा, देसी अजवायन, मैंथी के बीज, काला जीरा, उरसा, बाबूना, कूट, बिरौजा सभी सममात्रा में लेकर मकोय के रस में पीसकर थोड़ा गरम करके लेप करें। यह लेप कन्ठमाला के अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार की गिल्टियों और सख्त प्रदाह को दूर करने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। अन्य प्रकार के व्रणों इत्यादि को दूर करने हेतु इसमें आवयकतानुसार सिरका मिलाकर लगायें।

लाहौरी फोड़ा

रोग परिचय—इस विशेष फोड़े को लाहौरी फोड़ा, लाहौर सौर, औरंगजेबी फोड़ा, मुगलानी फोड़ा, ट्रोपीकल बोइल या ईस्टर्न बोइल आदि नामों से भी जाना जाता है। यह अधिकतर उन अंगों पर होता है जो प्राय: खुले रहते हैं। इसका घाव हठीला होता है। यह प्राय: विश्व के समस्त गरम देशों के नागरिकों को ही निकलता है। इसका प्रकोप विशेषकर वर्षा ऋतु के अन्त में होता है। इसके कीटाणु अधिकांशत: मच्छरों और मक्खियों के काटने से स्वस्थ मनुष्य के शरीर में पहुँचते है। प्राय: ये कीटाणु प्रत्यक्ष रूप से भी प्रभाव डालते हैं। ये कीटाणु घाव की पीप में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त शरीर की सफाई न रखने आदि से भी रोग पैदा होता है। गरम और उत्तेजक पदार्थों का अधिक सेवन रोग का मुख्य कारण है।

इस रोग का संक्रमण लगने के लगभग 2 सप्ताह से 6 मास की अवधि में एक विशेष प्रकार का दाना निकलता है, जिस पर खुजली होती है। उसके बाद वह उभरने लगता है और बन्द मुँह के फोड़े का रूप में धारण कर लेता है। इसमें बादामी रंग के परत बार-बार उतरते हैं। दो-तीन सप्ताह के बाद इसी प्रकार

परत उतरने रहने के बाद घाव हो जाया करते हैं। इस घाव का निचला भाग सख्त और उभरा हुआ होता है और इसके किनारे ऊँचे-नीचे होते हैं। वह गोलाई में फैला हुआ होता है। उसमें पतली पीप निकलती है। यदि इस घाव को छेड़ा न जाए तो उस पर पुन: एक बार बारीक परत या खुरन्ड जम जाता है और उसके नीचे घाव पूर्ववत् बना रहता है। यह घाव 6 मास से 1 वर्ष तक उचित उपचार के अभाव में बना रह सकता है। कुछ समय के बाद घाव फैलने के साथ-साथ कुछ गहरा भी हो जाता है। घाव ठीक हो जाने के पश्चात् एक कुरूप दाग चर्म पर शेष रह जाता है। इस प्रकार के घाव चर्म पर कभी-कभी एक के अतिरिक्त कई भी हो सकते हैं।

उपचार

● यदि फोड़ा पंका हुआ नहीं हो तो अलसी और नीम पत्र की गरम-गरम पुल्टिस बाँधकर फोड़े को पकायें। पूरा पक जाने पर फोड़े को चीरकर पीप और दूषित रक्त को निकाल दें। फिर किसी एन्टीसैप्टिक औषधि (हाइड्रोजन आक्साइड) आदि से घाव को स्वच्छ और विसंक्रमित कर बारीक रुई से घाव को सुखा, पोंछकर साधारण घाव की भाँति उपचार कर लें।

● सर्वप्रथम घाव पर टिंचर आयोडीन और कार्बोलिक एसिड समभाग को भली प्रकार मिलाकर लगायें। जब घाव जल जाये तो अलसी की पुल्टिस में पत्थर का कोयला मिलाकर 3 दिन तक यही पुल्टिस बाँधें। इस प्रयोग से घाव का ऊपरी जला हुआ भाग फूल कर अलग हो जाएगा इसके बाद घाव भरने वाला कोई सा मरहम लगायें। अनुभूत योग है।

● नीलाथोथा, कमीला 3-3 ग्राम को पीसकर 12 ग्राम मोम और 24 ग्राम गी में पिघलाकर पत्थर का पिसा हुआ कोयला मिलाकर सुरक्षित रख लें। लाहौरी फोड़ा हेतु यह अत्यन्त लाभकारी मलहम है।

● मैनफल 30 ग्राम, देसी साबुन 15 ग्राम, रीठे का छिलका 30 ग्राम, बेलगिरी, मुर्दासंग, सफेद कत्था प्रत्येक 30-30 ग्राम तथा नीलाथोथा (भुना हुआ) 6 ग्राम। सभी औषधियों को अलग-अलग पीसकर मिला लें। आवश्यकता के समय पानी में घोलकर सुबह-शाम नीम की पत्तियों के क्वाथ से घाव को धो पोंछकर इस लेप को लगायें। इसको 8-10 दिनों के प्रयोग से आराम हो जाएगा।

● मेंहदी के शुष्क पत्ते, कमीला, गन्धक और ताजा चूना सभी समान मात्रा में लेकर चमेली के तैल में मिलाकर प्रात: समय लगायें। इसके प्रयोग से पहले

नीम की पत्तियों के क्वाथ से जख्म को धो लें । शाम को सोने समय केवल चमेली का तैल लगा दिया करें । यह योग भी लाहौरी फोड़ा हेतु अनुभूत है।

हाथ-पाँव की अंगुलियों का फूल जाना (Chilblain)

रोग परिचय—शीत ऋतु अथवा बरसात की सख्त सर्दी तथा गीली वायु के कारण हाथ-पैरों की अंगुलियों में सख्त खुजली और कष्ट होता है । उनमें शोथ हो जाती है तथा नीलापन आकर जलन होने लगती है । अंगुलियों के अतिरिक्त यह कष्ट शरीर के दूसरे अंगों में भी उत्पन्न हो जाता है जिसको 'पाला मारना' कहा जाता है ।

उपचार—भोजन में दूध, अण्डा, मक्खन इत्यादि का खूब प्रयोग करें । औषधि के रूप में काडलीवर आयल (मछली का तैल) आदि रसायन व शक्ति वर्धक योगों का प्रयोग करें । इस रोग की चिकित्सा भी पाला मारना रोग की ही भाँति की जाती है ।

- देसी अजवायन 6 ग्राम को 25 मि.ली. सरसों के तैल में पकाकर मामूली गरम औषधि की मालिश पीड़ित अंग पर करना अत्यधिक लाभप्रद है ।
- सरसों के तैल में नमक मिलाकर गरम करके पीड़ित अंग पर मालिश करने से समस्त कष्ट मिट हो जाते हैं ।

धोबी की खुजली (Dohobi Itch)

यह रोग खुजलाहट के रूप में प्रायः धोबियों को होता है, इसीलिए इसे धोबी की खुजली के नाम से जाना जाता है । इस रोग के उत्पन्न होने का प्रमुख कारण सोड़ा कास्टिक के सम्पर्क में रहना है । जो व्यक्ति साबुन, सोड़ा, वाशिंग पाउडर आदि का कपड़ा धोने में अधिक प्रयोग करते हैं, उन व्यक्तियों को भी यह रोग हो जाया करता है ।

उपचार—फफोलों, बहते या कच्चे त्वचा के भाग को नीम की पत्तियों के क्वाथ से स्वच्छ कर खुजली रोग के अन्तर्गत लिखे।

पैर का दाद (Althlete's Foot)

इस रोग के उत्पन्न होने का कारण (टिनिया पेडिज Tinea Pedis) नामक कीटाणु होता है । इस रोग में पैर में दाद के कीटाणुओं का संक्रमण होकर पैर खिलाड़ियों के पैर की तरह हो जाता है । सभी लक्षण दाद के सदृश होते हैं ।

उपचार

- सर्वप्रथम कोष्ठ (उदर) की शुद्धि करें । इस हेतु अपने कोष्ठ के अनुसार मृदु या तीव्र विरेचन औषधि प्रयोग करें । तीव्र विरेचन हेतु 'इच्छा-भेदी रस' की 2 गोलियाँ रात्रि को सोते समय ताजा जल से निगलें । इसके अतिरिक्त बच्चों को विरेचन हेतु छोटी हरड़ का चूर्ण 1 से 2 ग्राम तक ताजे जल से रात्रि को सोते समय दें ।

तदुपरांत 'रस माणिक्य' (भै. रत्नावली) आवश्यकता तथा आयु के अनुसार 125 से 250 मि.ग्रा. तक सूक्ष्म पीसकर मधु से प्रतिदिन 2 बार चाटें ।

- सोमराजी तैल (भै. रत्नावली) को आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार लगायें ।
- कैशोर गुग्गुल (शार्गधर संहिता) आवश्यकतानुसार 1 से 2 गोली तक दिन में दो बार दूध से सेवन करायें ।
- पंचतिक्त घृत गुग्गुल (भैषज्य रत्नावली) के आवश्यकता तथा आयु के अनुसार 6 से 12 ग्राम तक दिन में 3-4 बार प्रतिदिन ताजा जल या गाय के दूध से सेवन करायें ।
- महा मंजिष्ठाद्यरिष्ट (आयुर्वेद सार संग्रह) तथा सारिवाद्यारिष्ट (भैषज्य रत्नावली) प्रत्येक 15-15 मि.ली. ताजा जल 30 मि.ली. मिलाकर अथवा महा मंजिष्ठादि काढ़ा का दिन में 2 बार सेवन करना उपयोगी है ।

इन्जेक्शन की शोथ (Inflammation of Injection)

किसी नवसिखिया (एनाटामी एवं फिजियोलौजी के ज्ञान से शून्य) चिकित्सक अथवा उसके असिस्टेन्ट (कम्पाउडर) द्वारा किसी रोगी के असावधानी के कारण इन्जेक्शन लगा देने से इन्जेक्शन लगने के स्थान पर शोथ, लाली और पीड़ा हो जाती है और कभी-कभी इस उपद्रव स्वरूप ज्वर भी हो जाता है । समस्त शरीर में दर्द, टीस, हड्फूटन भी होने लगती है । रोगी द्वारा (उचित उपचार न करने) के फलस्वरूप उस आक्रान्त स्थान में पीप उत्पन्न हो जाती है—जिसको चीर-फाड़ (शल्य क्रिया) कर चिकित्सक आराम पहुँचाते हैं ।

उपचार

- बोरिक एसिड 2 चम्मच, 250 मि.ली. जल में भली भाँति घोलकर उसे खूब उबाल लें । बर्दाश्त करने लायक गर्म रहने पर उसमें स्वच्छ वस्त्र डुबोकर

इससे पीड़ित स्थान का दिन में 3-4 बार सेंक करें । यह क्रिया बोरिक कम्प्रेश कहलाती है । अत्यधिक लाभप्रद है ।

● यदि उपर्युक्त प्रयोग से लाभ न हो तो किसी स्वच्छ कपड़े में नमक की पोटली बांधकर उसे आग पर गरम करके इन्जेक्शन स्थान पर दिन भर में 2-3 बार सेंक करें ।

● मैगसल्फ (दानेदार पाउडर) को गठरी (पोटली) में बाँधकर आग से गरम करके पीड़ित (आक्रान्त) स्थान की दिन में 3-4 बार सेंक करना भी गुणकारी है।

● नमक मिले हुए गरम जल में स्वच्छ वस्त्र भिगोकर दिन में 3-4 बार सेंक करना भी लाभप्रद है ।

नोट—प्रत्येक बार जल गरम रहना चाहिए ।

● नीम के पत्ते, शरफोंका के पत्ते सम मात्रा में लें । पीसकर इन्जेक्शन के स्थान पर दिन में 2-4 बार आवश्यकतानुसार लेप लगायें । गुणकारी है ।

● कुटकी, चिरायता, नीमपत्र और शरफोंका के पत्ते समभाग लेकर जौ कूटकर चौगुने जल में भिगोकर रखें । उसे 12 घंटे के बाद कपड़े से छानकर 10 से 15 मि.ली. की मात्रा में सुबह-शाम पीना अत्यन्त लाभप्रद है ।

● नीम के पत्तों की भस्म, मजीठ की भस्म, शरफोंका के पत्तों की भस्म, स्वर्णक्षीरी मूलत्वक (कटेरी की जड़ की छाल की भस्म तथा सारिवासवाग भस्म प्रत्येक 5-5 ग्राम । सभी को एकत्र कर मिलाकर इसको 250 से 500 मि.ग्रा. तक मधु से सुबह-शाम चाटें । इस प्रयोग से गलत रूप से इन्जेक्शन लग जाने के कारण उत्पन्न शोथ, लाली, पीड़ा नष्ट हो जायेगी । लाभप्रद योग है ।

पाद्दरी (Phagates)

पैर के तलुवा, ऐड़ी के मोटे चमड़े अनेक कारणों से फट जाया करते हैं, उनमें दरारें पड़ जाती है तथा दर्द भी होता है ।

उपचार

● महा मंजिष्ठादि क्वाथ आवश्यकतानुसार रोगी की आयु के अनुसार (पत्रक देखकर) पिलायें तथा पाद्दरी पर दिन में 2-3 मोम लगायें । लाभकारी है ।

● विशुद्ध अरन्ड तैल में कपूर और जात्यादि तैल (शा. सं.) मिलाकर पाद्दरी में रुई का फाहा भिगोकर रखें । यह क्रिया दिन भर में प्रतिदिन लाभ न होने तक 3-4 बार किया करें ।

● नीम का तैल, अरन्ड तैल और निर्गुन्डी का तैल (भै. र.) सममात्रा में लेकर एकत्र कर पाद्दरी पर लगाना गुणकारी है ।

● सहचर घृत (भै. र.) दिन में 2 बार लगाना भी गुणकारी है ।

● रस माणिक्य (ग्र. भै. र.) 125 मि.ग्रा. राजवटी या गन्धक वटी (यो चिन्तामणि) 2 गोलियाँ मिलाकर ऐसी एक मात्रा मधु से दिन में 2 बार चाटना लाभकारी है ।

पिड़िका, लोमपाक, बाल तोड़ (फुन्सियाँ)

असावधानी में बाल उखड़ जाने से उस स्थान पर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकल आती है । बालों की जड़ों में मेरिस्टे फिलोकोक्स) नामक कीटाणुओं के संक्रमण, रक्त विकृत हो जाने से, बरसात की ऋतु में कच्चे या पके आमों के अत्यधिक सेवन, एवं दुर्बलता आदि के कारण फुन्सियां निकल आती है । पहले इनमें सूजन और दर्द होता है और बाद में इनमें पीप पड़ जाती है । अनेक फुन्सियाँ बिना पके ही बैठ जाती हैं और अनेक पककर कड़ी हो जाती हैं और इनमें कील रहती है। पीप के साथ कील निकल जाने पर दर्द, सूजन, जलन इत्यादि कष्ट कम हो जाते हैं।

उपचार

● सभी प्रकार के फोड़े, शोथ और व्रण इत्यादि में मधु लगाकर पट्टी बाँधना लाभकारी है ।

● गूगल को घिसकर फोड़े पर लेप कर दें । इस प्रयोग से फोड़ा बैठ जाएगा अथवा फूटकर ठीक हो ज़ाएगा ।

● कालीजीरी को पानी में पीसकर लगाने से फोड़े-फुन्सियाँ नष्ट होती हैं।

● पीपल के पत्ते को घी से चिकना कर उसे अग्नि पर गरम करके सुहाता-सुहाता बाँधने से फोड़ा बैठ जाता है अथवा पककर फूट जाता है ।

● तिल का तैल 30 ग्राम लोहे की कड़ाही में डालकर पकायें । जब पकने लगे तब उसमें 10 ग्राम सिन्दूर मिला दें और लोहे की सींक से चलाते रहें । जब रंगत स्याह होने लगे और गाढ़ा हो जाये तब उतार कर किसी चौड़े मुँह की स्वच्छ शीशी या डिबिया में सुरक्षित रखलें । आवश्यकता पड़ने पर किसी स्वच्छ कपड़े पर लगाकर यह मरहम चिपका दें । सड़े-गले घावों को यह बहुत जल्द ठीक कर देता है।

● शंखाहूली (ब्रह्मदण्डी, हुलहुल) 10 ग्राम, काली मिर्च 6 नग दोनों को पानी में घोट, पीस व छानकर पीने से शरीर में निकलने वाले फोड़े-फुन्सी, खुजली व दाद आदि कष्टों से निजात मिल जाती है । अतीव उपयोगी योग है।

● कुटकी और चिरायता प्रत्येक 5-5 ग्राम रात को जल में भिगोकर रखें तथा प्रातःकाल छानकर 15 से 30 मि.ली. की मात्रा में पियें। इसी प्रकार प्रातःकाल भिगोकर रखें और उसे शाम को पियें। बच्चों को चौथाई से आधी मात्रा दें।

● सरफोंका की जड़ की छाल एवं पत्ते 5 ग्राम, नीम के सूखे पत्ते 5 ग्राम लें। दोनों को जल के साथ पीसकर लेप तैयार करें। फिर इस लेप को फुन्सियों पर दिन में 3-4 बार लगायें तो फुन्सियाँ फूटकर घाव ठीक हो जाते है। जब तक घाव पूर्ण रूप से ठीक न हो जायें तब तक इस्तेमाल करते रहें। लाभप्रद योग है।

● महामंजीष्ठारिष्ट (आयुर्वेदसार संग्रह) 15 से 30 मि.ली. बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पियें।

● महातिक्त घृत (सिद्ध योग संग्रह) सुबह-शाम 1-2 ग्राम की मात्रा में सेवन करें।

फोड़े-फुन्सी नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

हीलर मलहम (वैद्यनाथ)—जल जाना, कट जाना, कीट-पतंगों का काट खाना इत्यादि में आवश्यकतानुाार बाह्य प्रयोग करें।

करामाती मलहम (राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड संस)—गन्दे पीपयुक्त घाव तथा फोड़ों पर आवश्यकतानुसार लगायें।

त्र्यम्बक मलहम (राजवैद्य शीतल प्रसाद) घाव, चोट, मोच, कीड़ों का डंक मारना, विषैले जानवरों का काट लेना इत्यादि में आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

शामक तेल (मेहता)—आवश्यकतानुाार व्रणों पर लगायें।

सप्त गुण तैल (वैद्यनाथ)—जल जाना, कट जाना, कान का दर्द, कान बहना, फोड़े-फुन्सियों तथा पसली दर्द में उपयोगी है।

ब्लड प्यूरीफायर (झन्डू)—रक्तदोष से उत्पन्न घाव, फोड़े-फुन्सी, कारबंकल फोड़ा आदि के लिए उपयोगी है। यह समस्त रक्तदोष नाशक है। इसे 1-2 ड्राम की मात्रा में दिन में 3-4 बार प्रयोग करें।

केपाइना टेबलेट (हिमालय) प्रत्येक प्रकार के घाव, फोड़े, नासूर, कारबंकल. में उपयोगी है। इसकी 1-2 टिकिया दिन में 3 बार लें।

करामाती टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद)—फोड़े-फुन्सी, खाज-खुजली, घाव, छिल जाना, कट जाना, उस्तरे का घाव इत्यादि में उपयोगी है।

तिल, माष (Male)

रक्त की विकृति के कारण त्वचा में विजातीय द्रव्यों का संचय होकर तिल जैसे—दाग चेहरा, गर्दन, छाती, पीठ आदि स्थानों में कहीं भी पड़ जाया करते हैं।

उपचार

● पान के डन्ठल का एक सिरा तोड़कर उस पर चूना लगाकर तिल पर दिन में 2-4 बार लगायें और आँवला-जल (सूखे आँवला को 12 घंटे तक जल में भिगोकर तत्पश्चात् छानकर निकाला हुआ) से हर बार धो दें।

● सोमराजी तैल (भै. रत्नावली) को सलाई से तिल पर दिन में 2-3 बार लगाना गुणकारी है।

● शल्य कर्म करके तिल को काटकर निकाल दें तथा व्रण पर, 'जात्यादि तैल' दिन में 3-4 बार रुई के फाहे से लगायें।

● कुटकी का कपड़छन चूर्ण 125 मि.ग्रा. और गन्धक रसायन (सि. यो. स.) 500 मि.ग्रा. दोनों को इकट्ठा मिलाकर मधु से सुबह-शाम चाटें।

● ताम्बे के बिजली वाले मोटे तार को आँवला जल में घिसकर तिल पर सलाई से दिन में 3-4 बार लगाना गुणकारी है।

● केशर 1 ग्राम, सूखे आँवला का कपड़छन चूर्ण 10 ग्राम, हल्दी का कपड़छन चूर्ण 5 ग्राम, नीम पत्र का कपड़छन चूर्ण 5 ग्राम तथा पीली सरसों 5 ग्राम लें। इन्हें इकट्ठा जल के साथ पीसकर कल्क बनालें। फिर इसे सलाई से तिल पर दिन में 4 बार लगायें और 1 घंटे बाद 'आँवला जल' से धो डालें।

जलने का घाव, दग्ध-व्रण (Burnsand Sealds)

रोग परिचय—आग या उबलते हुए विविध तरल पदार्थ अथवा पिघले धातु—रांगा, लोहा, जस्ता, तांबा, पीतल इत्यादि की गरम वाष्प द्वारा शरीर का भीतरी त्वचा कुछ भाग जल जाता है। विद्युत-धारा एवं प्राकृतिक विद्युत (बिजली से भी जल जाते हैं। जलने की कई स्थिति हुआ करती हैं। किसी में ऊपरी त्वचा, किसी में, किसी में मांस, चर्बी तथा किसी में हड्डी तन्त्रिकाऐं, धमनियें, शिरायें इत्यादि जल जाती हैं। हल्का जलने पर फफोले निकल आते हैं। गहरा जलने पर त्वचा सम्पूर्ण रूप से जल जाती हैं इसके साथ ही मांस, चर्बी, तन्त्रिकायें आदि भी जल जाने से कारण तीव्र दाह, भयंकर पीड़ा होती है। जले घावों से टीस उठती

है, प्यास अधिक लगती है, भयंकर वेदना के साथ रोगी को बेचैनी रहती है जिसके कारण उसे करवट तक बदलने में कठिनाई व कष्ट हुआ करता है । चादर, वस्त्र आदि जले हुए व्रण से चिपक जाते हैं । जिसे छुड़ाने पर तड़पाने वाली रोगी को पीड़ा होती है ।

उपचार

● तिल का तैल और 'चूना जल' प्रत्येक 6 मि.ली. को एकत्र कर उसमें ओला (बरसात में गिरने वाला बर्फ के पत्थर के छोटे या बड़े टुकड़े) का जल 15 मि.ली. भी मिलाकर खूब घोटकर सुरक्षित रखें । इसे दग्ध व्रणों पर नरमी से दिन में 2-4 बार लगायें ।

● आलू को पीसकर नरमी के साथ दग्ध व्रणों पर लगाना गुणकारी है ।

● फफोलों को विसंक्रमित कैंची से काट दें तथा दग्ध के साधारण एवं गम्भीर व्रणों पर जात्यादि तैल (शारंगधर संहिता) को चिड़िया के पंख से दिन में 2-4 बार लगायें तथा महामंजिष्ठादि क्वाथ 15 मि.ली. दिन में 2 बार पिलायें ।

जतुमणि (Malluscum)

शरीर के किसी भी भाग पर त्वचा ऊपर से उभरी हुई और बढ़ी हुई दिखलायी देती है । इसमें खुजली नहीं होती है ।

उपचार

● त्वचा काटकर निकाल दें । तदुपरान्त उस पर 'जात्यादि तैल' दिन में 2-3 बार लगायें ।

● त्वचा काटकर निकाल देने के पश्चात् घाव और व्रणों पर 'राक्षस तैल' (भैषज्य रत्नावली) और निर्गुन्डी तैल (भै. रत्नावली) समभाग मिलाकर दिन में 2-3 बार लगाना भी उपयोगी है ।

बिस्तृत पाक, उति-शोथ (Gellulitis)

रोग परिचय—चर्म के नीचे प्रसारित एक प्रकार का अतिशोथ होता है जो अक्सर संयोजक उतियों में उत्पन्न होता है । इस रोग के होने पर चर्म लाल, स्थूल, सूजनयुक्त, दर्दयुक्त, थोड़ा-थोड़ा सा उष्ण प्रतीत होता है । पीड़ित अंग की कार्य-शक्ति भी कम हो जाती है ।

उपचार

● रस माणिक्य (भै. रत्नावली) 125 से 250 मि.ग्रा. मधु से दिन भर में 2 बार चाटना लाभकारी है ।

● गन्धक रसायन (सिद्धयोग संग्रह) आवश्यकता तथा रोगी की दशा एवं आयु के अनुसार 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक मधु में सुबह-शाम चाटना भी परम लाभकारी है।

चेहरे का एक्जिमा (Eczema of the Face and Scalp)

रोग परिचय—मुखमण्डल और सिर की त्वचा पर जलन उत्पन्न करने वाली लाल-लाल फुन्सियाँ निकलती हैं, जो बाद में खुजलाते-खुजलाते घाव में बदल जाती हैं । इन घावों से स्वच्छ जल के समान या पीले पीप के समान रस निकलता रहता है । आक्रान्त त्वचा पर काफी खुजली व जलन होती है । इस रोग के अचानक दब जाने पर खुजली, दमा, फुफ्फुस के अन्य रोग, पतले दस्त, यकृत विकृति तथा स्त्रियों को प्रदर सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाया करते हैं । यह रोग कब्ज, पाचन शक्ति की कमजोरी, मन्दाग्नि, स्त्रियों में मासिक धर्म की गड़बड़ी, रक्त विकार, लू लग जाना, अनियमित एवं अनुचित भोज्य पदार्थों का सेवन करने से उत्पन्न हो जाया करता है ।

उपचार—पंचतिक्त घृत गुग्गुल (भैषज्य रत्नावली) 6 से 12 ग्राम तक जल से दिन में 2-3 बार सेवन करना अतिशय उपयोगी है ।

'अरुंषिका विनाशिनी' तैल पीड़ित अंग पर दिन में 2 बार लगाया करें ।

न्यच्छ (Navi)

नौका के आकार का काला दाग चेहरे पर या शरीर के अन्य कोमल भाग पर पड़ जाता है जो सौन्दर्य को नष्ट कर देता है ।

उपचार

● कार्बोलिक एसिड की 1-2 बूँद अफगान स्नो में मिलाकर दिन में 2 बार लगाना गुणकारी है ।

● न्यच्छ भाग को स्टेनलेस स्टील के विसंक्रमित स्पैचुला को गरम करके दग्ध कर देना भी लाभकारी है ।

● 'रस माणिक्य' 125 से 250 मि.ग्रा. तक मधु से दिन में 2 बार चाटना अतिशय उपयोगी है ।

● पंचतिक्त घृत या गुग्गुल 6 से 12 ग्राम की मात्रा में ताजा जल से दिन में 2-3 बार सेवन करना लाभकारी है ।

● निर्गुन्डी का तैल 1 भाग और नीम का तैल 2 भाग एकत्र मिलाकर दिन में 2-3 बार न्यच्छ पर लगाना लाभप्रद है ।

त्वक शोथ (Dermatitis)

रोग परिचय—रासायनिक पदार्थों के संस्पर्श से योषापस्मार, पैलाग्रा, पादप, स्त्रियों के मासिक धर्म के कष्ट तथा विविध औषधियों की प्रतिक्रिया तथा सर्वांग शोथ, शीतपित्त आदि के कारण त्वचा पर सूजन हो जाना ही त्वक शोथ के नाम से जाना जाता है । इस सूजन में जलन, खुजलाहट और लालिमा प्रतीत होती है तथा रोगी का मन उद्विग्न और बेचैन रहता है ।

उपचार

● नीम की अन्तरछाल, चिरायता के पत्ते, परवल के पत्ते, खस, इन्द्रायण, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, अडूसा के पत्ते, मुलहठी और त्रिफला प्रत्येक 2-2 ग्राम कूटकर सभी का क्वाथ बनाकर 30 मि.ली.की मात्रा में छानकर व शीतल कर ऐसी 1-1 मात्रा सुबह-शाम पियें । हर योग प्रत्येक प्रकार की चर्मशोथ को नष्ट कर देता है।

● सारिवाद्यारिष्ट (भै. रत्नावली) 15-30 मि.ली. की मात्रा में समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पीना लाभप्रद है ।

● चोपचिन्यादि चूर्ण (आर्य भिषक्) 3 ग्राम खाकर ऊपर से महामन्जिष्ठादि काढ़ा 15 से 30 मि.ली. बराबर जल मिलाकर सुबह-शाम सेवन करना अति उपयोगी है ।

● व्याधि हरण रसायन (वसव राजीयम) 125 मि.ग्रा. रस माणिक्य 125 मि.ग्रा. तथा पंच तिक्त घृत गुग्गुल 6 ग्राम एकत्र मिलाकर ऐसी 1-1 मात्रा दूध या जल से सुबह-शाम सेवन करना लाभप्रद है ।

एपिडर्मोफाइटोन (Dpidermophytosis)

रोग परिचय—इस रोग में त्वचा में विविध कारणों से विकृति आकर वहाँ शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है । आक्रान्त (पीड़ित) स्थान में जलन, खुजली और क्षोभ उत्पन्न हो जाता है ।

उपचार

● नीम और शरफोंका के समभाग पत्तों को धोकर-स्वच्छ करें । फिर पीसकर

आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-4 बार अथवा आवश्यकतानुसार और अधिक बार लगायें । लाभप्रद योग है ।

● महामन्जिष्ठारिष्ट 15 से 30 मि.ली. तक समान जल मिलाकर दिन में 2 बार भोजनोपरान्त पीना भी अतीव लाभकारी है ।

नख-शोथ, चिप्य (Onychia)

रोग परिचय—इस रोग में नख (नाखून) और इसके मांस में सूजन हो जलन और दर्द होता है । यह रोग रक्त की विकृति आदि गर्मी और सुजाक आदि कारणों से उत्पन्न होता है ।

उपचार

● नीम के ताजे पत्ते जल के साथ पीसकर पीड़ित भाग पर दिन में 3-4 बार मोटा-मोटा लेप करना अत्यधिक लाभप्रद है । वादी भोज्य पदार्थ को कदापि न खायें ।

● सप्तच्छावादि तैल (ग्रन्थ रस तन्त्र सार) को चिप्प पर दिन में 3-4 बार लगायें और इसो पूर्व नमक मिले उबले जल से सेंक करें ।

● जात्यादि तैल (शारंगधर संहिता) को दिन में 3-4 बार चिप्प पर लगाना अतिशय गुणकारी है ।

● निर्गुन्डी का तैल दिन में 3-4 बार लगाना तदुपरान्त नीम का तैल लगाना भी अतिशय लाभप्रद है ।

● महामंजिष्ठारिष्ट तथा सारिवाद्यारिष्ट प्रत्येक 15 मि.ली. एकत्र कर समभाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पीना भी लाभप्रद है ।

● व्याधिहरण रसायन (ग्रन्थ वसवराजीकयम) आयु के अनुसार 125 से 250 मि.ग्रा. तक खरल में बारीक घोटकर मधु मिलाकर सुबह-शाम चाटकर ऊपर से उबला हुआ गोदुग्ध 250 मि.ली. पीना भी गुणकारी है ।

● कुटकी मूल 5 ग्राम, चिरायता के पत्ते 10 ग्राम, शरफुंका के पत्ते 5 ग्राम, सभी को एकत्रकर जौ कुट करें । शाम के समय जल में भिगोकर प्रातःकाल छानकर तथा सुबह का भिगोया जल छानकर शाम को प्रयोग करें ।

● रस कपूर 2 मि.ग्रा. को बीजरहित मुनक्का के अन्दर रखकर मुख को गुड़ से बन्द करके ऐसी 1-1 मात्रा सुबह-शाम हल्के नाश्ता करने के उपरान्त लें।

● चिप्प में दर्द और कष्ट होने पर दशांगलेप (ग्रन्थ शार्गधर संहिता) का प्रयोग अतिशय लाभकारी है ।

पनसिका, फुन्सी (Furuncle)

रोग परिचय—यह एक विशिष्ट प्रकार की फोड़े-फुन्सियों का संक्रामक रोग है। एक साथ पास-पास या दूर-दूर उत्पन्न होती है। शरीर में जिस पर इन विशिष्ट फुन्सियों का पूय (पीप आदि) लग जाता है। त्वचा के उस स्वस्थ स्थान पर भी ये उत्पन्न हो जाया करती हैं।

उपचार

● नीम के पत्तों के काढ़े से आक्रान्त त्वचा को प्रतिदिन प्रातःकाल धो पौंछकर स्वच्छ करें।

● सारिवाद्यारिष्ट तथा महा मन्जिष्ठारिष्ट प्रत्येक 15 मि.ली. समान भाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पीना लाभप्रद है।

● परवल के पत्ते 12 ग्राम, नीम के पत्ते 12 ग्राम और जल 1 लीटर लेकर उनका विधिव् काढ़ा बनायें। आधा लीटर शेष बच जाने पर छानकर इससे आक्रान्त त्वचा को दिन में 2 बार धोवें तदुपरान्त नीम तैल और निर्गुन्डी के तैल में कपूर मिलाकर आक्रान्त त्वचा पर दिन में 3-4 बार लगायें। यह लाभकारी है।

केशों का असमय पकना (Premature Graying)

रोग परिचय—असमय अर्थात् कम आयु में विविध कारणों के कारण सिर के बाल पककर सफेद हो जाते हैं जिसके फलस्वरूप रोगी का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है।

उपचार

● रीठा को जल में 12 घंटे तक भिगोकर उसके फेन से सिर के समस्त बालों को धोकर सूखे तौलिया से सुखायें। तदुपरान्त सूखे आँवला 250 ग्राम को 12 घंटे तक जल में भिगोकर इसके निथरे हुए जल को छानकर इससे केशों की जड़ों को भिगोते हुए धोवें। यह क्रिया (प्रयोग) प्रतिदिन 1-2 बार किया करें। अत्यन्त लाभप्रद घरेलू योग है।

● शिकाकाई केश तैल (निर्माता मैट्रो) या महाभृंगराज केश तैल (निर्माता बैद्यनाथ) अथवा आंवला केश तैल (निर्माता डाबर) का बालों को धो पोंछ व सुखाकर बालों की जड़ों में प्रतिदिन 1-2 बार लगाना भी अतिशय गुणकारी है।

तलुवों में जलन होना (Burning hand and feet syndrome)

रोग परिचय—इस रोग के उत्पन्न होने के विभिन्न कारण हैं। कभी-कभी किसी-किसी रोगी के हाथ की हथेलियों और पैर के तलुवों में इतनी अधिक दाह या जलन होती है कि रोगी चैन की नींद नहीं सो पाता है।

उपचार

● हरड़, बहेड़ा, आँवला और अमलतास का गूदा प्रत्येक 5-5 ग्राम लेकर जौकूट कर 375 मि.ली. जल में काढ़ा बनायें। 60 मि.ली. जल शेष रहते ही उतार लें और छानकर ठण्डा करके सुबह-शाम पिलायें।

● मेंहदी के पत्ते, शरपुंखा के पत्ते तथा नीम के पत्ते प्रत्येक 10 ग्राम लेकर जल के साथ सूक्ष्म पीसलें। इसे हाथ की हथेलियों और पैर के तलुवों पर दिन में 3-4 बार लगाकर पट्टियाँ बाँध दें।

नोट—इस औषधि को बहुत देर तक लगाये रहना चाहिए।

● पित्त पापड़ा, लाल चन्दन, खस, पदमाख, नागरमोथा, प्रत्येक 5-5 ग्राम को जौ-कुट करके आधा लिटर पानी में क्वाथ बनायें। जल 300 मि.ली. शेष बचे, तब ठण्डा करके इसमें 12 मि.ली. शुद्ध शहद मिलाकर सुबह-शाम पीना इस रोग को नष्ट कर देता है।

● गिलोय सत्व (योग रत्नाकर) 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक मधु से दिन में 2-3 बार चाटें तथा भोजनोपरान्त सारिवरिष्ट 15 से 20 मि.ली. समान जल मिलाकर दिन में 2 बार पियें।

● महालाक्षादि तैल (भैषज्य रत्नावली) को हाथ पैरों में (हथेलियों व तलवों पर) दिन में 2-3 बार लगाकर मालिश करना भी उपयोगी है।

फाइलेरिया, श्लीपद या फीलपाँव

रोग परिचय—यह रोग (फाइलेरिया बेन्काफ्टाई) नामक कीटाणु के संक्रमण से उत्पन्न होता है। यह कीटाणु रोगी के रक्त या लसिका प्रवाह में उपथित रहता है। ये कीटाणु सूत के समान पतला तथा लगभग 2 मीटर तक लम्बा और 2.5 मि.मी. मोटा होता है। इस रोग में सर्वप्रथम पैरों की ऊपरी त्वचा में सूजन होकर उसका रंग गम्भीर हो जाता है। धीरे-धीरे आक्रान्त पैर अपनी प्राकृतिक अवस्था से दोगुना, तिगुना मोटा हो जाता है। इसकी सूजन में अंगुली से दबाने पर गड्ढे

नहीं पड़ा करते हैं। लंसिका वाहिनियाँ सूज जाती हैं जिससे कई स्थानों पर उभार बन जाते हैं और उसमें दूधिया जल के समान तरल बहने लगता है। किसी-किसी रोगी में इसका कीटाणु संक्रमण अण्डकोषों में पहुँच जाता है जिसके परिणामस्वरूप अण्डकोष 40 कि. ग्रा. तक भारी हो जाते हैं।

उपचार

● अँगूठे के ऊपर का रक्त निकाल देने से यह रोग नष्ट हो जाता है।

● गुड़ और हल्दी बराबर को गाय के मूत्र के साथ प्रयोग करने से यह रोग नष्ट हो जाता है।

● 10 माशा कसौंदी की जड़ को गाय के घी मिलाकर प्रयोग करने से श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

● सहदेवी को तालफल के रस में पीसकर पेस्ट बनाकर लेप करने से श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

● गाय के मूत्र में सिहोरा के बक्कल का काढ़ा मिलाकर प्रयोग करने से फाइलेरिया रोग नष्ट हो जाता है।

● सौंठ, सरसों और साठी की जड़ काजी में पीसाकर लेप करने से श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

● देवदारु, सौंठ, संहजने की जड़ और सरसों को गाय के मूत्र में पीसकर लेप करने से श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

● गोमूत्र 3-3 ग्राम दिन में 3 बार पियें तथा प्रतिदिन 2-3 काली हरड़ चूसें। श्लीपद नाशक उत्तम प्रयोग है। भोजन में दही, चावल, आलू और केला इत्यादि खाना बन्द कर दें। दोपहर में गेहूँ की हल्की रोटी (चपाती) और कम मिर्च मसाले की हरी सब्जी खायें। भोजन के समय पानी बिल्कुल न पियें। भोजनोपरान्त 1 घंटे बाद जल इच्छानुसार पीवें। रात्रि का भोजन सूर्यास्त से पूर्व ही करें तथा रात्रि में भी पानी बिल्कुल न पीयें।

● अरन्ड के तैल में बड़ी हरड़ की छाल को भून लें। फिर इसका चूर्ण कर सुरक्षित रख लें। यह 3 ग्राम चूर्ण फाँककर ऊपर से 50 ग्राम गोमूत्र पियें। श्लीपद नाशक उत्तम योग है।

● गोमूत्र के साथ गिलोय का रस नित्य पान करने से गोमूत्र तथा सरसों पीसकर लेप करने से श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

● श्लीपदारि कैपसूल (निर्माता जी. ए. मिश्रा), ये 1-2 कैपसूल दिन में 2-3 बार प्रयोग करना लाभप्रद है।

● श्लीपदारि (जी. ए. मिश्रा) इन्द्रायण (बुन्देलखण्ड, सिद्धी, मिश्रा) शोथारि (जी. ए. मिश्रा) अपराजिता (मिश्रा व बुन्देलखण्ड) दुग्धा (प्रताप) पुनर्नवा (बुन्देलखण्ड, प्रताप, मार्तन्ड) घृतकुमारी (प्रताप, बुन्देलखण्ड) अर्कमूल (मिश्रा, बुन्देलखण्ड) अपामार्ग (मिश्रा, सिद्धी, बुन्देलखण्ड) इत्यादि सूचीवेधों में से किसी 1 का प्रतिदिन अथवा आवश्यकतानुसार मांसपेशी में सूचीवेध करायें।

● श्लीपद गज केसरी (भै. र.) 1 गोली (250 मि.ग्रा.) गर्म जल से सुबह-शाम सेवन करें।

● नित्यानन्द रस (रसेन्द सागर संग्रह) 1 गोली (250 मि.ग्रा.) हरड़ भिगोकर तैयार किये गये जल से सुबह-शाम सेवन करें।

● सौरिवर घृत (भै. र.) 12 ग्राम 250 मि.ली. दूध में मिलाकर सुबह-शाम सेवन करें।

नोट—औषधि खाने से दो घंटे पूर्व तथा बाद में जल न पियें।

● वृद्धि वाधिका वटी (भावप्रकाश) 1 से 2 गोलियाँ (250 से 500 मि.ग्रा.) गरम जल या गाय के दूध से दिन में 2 बार सेवन करें। फाइलेरिया के संक्रमण से उत्पन्न अन्डकोष वृद्धि में अतिशय उपयोगी है।

● जलकुम्भी को सुखाकर भस्म बनायें। तदुपरान्त इसे गरम सरसों के तैल में मिलायें। उसे फाइलेरिया से आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार लगायें तथा भोजनोपरान्त लवणभास्कर चूर्ण (भैषज्य रत्नावली) 2 से 4 ग्राम तक गर्म जल से दिन में 2 बार सेवन करें।

● बायविंडग, काली मिर्च, आक की जड़, सौंठ, चीता की जड़, देवदारु, मुसब्बर एवं नमक पांचों प्रकार के लें। प्रत्येक औषधि 500 ग्राम को जल के साथ पीसकर लुगदी बनाकर तिलों का तैल 4 लीटर तथा जल 16 लीटर एक कड़ाही में डालकर इसी में उपयुक्त लुगदी भी डाल दें। तैल सिद्ध कर बाद में जब पानी सभी जल जाए और तैल मात्र शेष रह जाए तभी शीतल कर छान लें और बोतलों में भरकर सुरक्षित रख लें। इस तैल से फाइलेरिया से आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार हल्की-हल्की मालिश करें। लाभप्रद योग है।

त्वग्ग्राह (Pellagra)

रोग परिचय—यह रोग विटामिन निकोटेनिक एसिड (विटामिन बी काम्पलेक्स का 1 सदस्य अथवा विटामिन बी का 1 अन्य प्रकार) की कमी से

हो जाता है । यह रोग ज्वार (अनाज) तथा हरी शाक-सब्जियों को खाने वालों शाकाहारियों को विशेषकर होता है । अत्यधिक मद्यपान करने वालों, अतिसार, संग्रहणी और यकृत विकार से पीड़ित व्यक्तियों को भी यह रोग हो जाया करता है । अधिक मद्यपान के कारण उत्पन्न हुए रोग को (एल्कोहाली पेलाग्रा) कहा जाता है । इस रोग में चर्म पर चकत्ते प्रकट होते है तथा स्थानीय चर्म स्थूल हो जाता है । कभी-कभी सिर में दर्द, माथे में चक्कर, चाल की अनियमितता, हाथ और पैरों में दर्द, पाचन-क्रिया की गड़बड़ी, मुखपाक, जीभ एवं मसूढ़ों में सूजन तथा पतले दस्त आदि लक्षण प्रकट होते हैं । रोग के शुरू में चकत्तों में सूजन, लालिमा होती है, छूने से कष्ट होता है, किन्तु आगे चलकर ये चकत्ते भद्दे होकर उनमें खुरन्ड पड़ जाते हैं । निकोटोनिक एसिड (मेडीकल स्टोरों पर प्राप्य) खिलाने से इस रोग के लक्षणों में कमी हो जाती है । यह इसकी पहचान है ।

उपचार

● अश्वगन्धारिष्ट तथा अभयारिष्ट दोनों (भै. र.) प्रत्येक 15 मि.ली. तथा जल 30 मि.ली. मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार दें । लाभप्रद है ।

● कैशोर गुग्गुल (शा. सं.) रोगी की आयु एवं दशानुसार 1 से 2 गोलियाँ (250 से 500 मि. ग्रा.) गाय के गरम दूध से दिन में 2 बार सेवन करायें ।

● बलाका तैल (भै. र.) 6 से 10 ग्राम सुबह-शाम उष्ण दूध से दें ।

● सैन्धवादि तैल (भै. र.) आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार मालिश करें तथा साथ ही अश्वगन्धादि घृत 10 से 25 ग्राम तक दोपहर व रात को गरम दूध से खायें ।

● योगराज गुग्गुल (शा. सं.) 1 से 2 गोली 250 मि.ली. दूध के साथ सुबह-शाम खिलायें तथा भोजनोपरान्त महा रास्नादि काढ़ा (शा. सं.) 15 से 30 मि.ली. दिन में 2 बार सुबह-शाम सेवन करें ।

● गेहूँ के जवारे (15 से 18 लम्बे सेमी. गेहूँ के पौधे) को भली भांति धोकर उनका रस निचोड़, वस्त्र में छानकर 15 से 20 मि.ली. तथा बथुआ का साग धोकर उसके पत्तों का रस 15 से 30 मि.ली. लें । दोनों को इकट्ठा कर मिलाकर उसकी आधी-आधी मात्रा सुबह-शाम मधु में मिलाकर सेवन करें ।

● सुबह, दोपहर, शाम कुछ खाने के उपरान्त वात विध्वंसन रस 1 भाग, हिंग्वादि चूर्ण 4 ग्राम और पारसीक यवानी 4 भाग इकट्ठा कूट पीसकर कपड़छन

करके 1 से 2 ग्राम तक यह चूर्ण गाय के घी और गरम जल से खिलायें । यह योग प्राय: सर्वांग वात में भी परम लाभकारी है ।

● सौंठ, छिलका छिला हुआ लहसुन, शरफोंका के पत्ते, निर्गुन्डी के पत्ते प्रत्येक 10-10 ग्राम तथा त्रिवंग भस्म 2 ग्राम लें । सर्वप्रथम काष्ठौधियों का चूर्ण (कूटकर) कपड़छन कर लें । तदुपरान्त इसमें त्रिवंग भस्म मिलालें, फिर इन्हें खरल में डालकर 6 घंटे तक घोटें और सुरक्षित रखलें । इसमें से 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक की मात्रा में सुबह-शाम पूरा लाभ न होने तक मधु से सेवन करें ।

पीली फुन्सियाँ, चर्मदल (Impetigo Contagioser)

रोग परिचय—इस रोग में त्वचा पर 0.62 से 1.25 सेमी. व्यास में पीपयुक्त फुन्सियां हो जाती हैं, जो बाद में पीली या गहरी आभायुक्त पीले खुरन्ड में परिवार्तत हो जाती हैं । सिर पर निकली इस प्रकार की फुन्सियों से बाल परस्पर (आपस में) चिपक कर गुच्छे जैसे हो जाते है । यह रोग सामान्यत: मुखमण्डल एवं माथे के पृष्ठ भाग पर होता है । यह संक्रामक चर्म रोग होने के कारण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल जाता है ।

उपचार

● आक्रान्त भाग (त्वचा) को नीम की पत्तियों के काढ़े से भली-भाँति धो-सुखाकर जात्यादि तैल (शा. सं.) दिन में 3-4 बार लगायें । लाभप्रद है ।

● आक्रान्त त्वचा को नीम के साबुन से धोकर स्वच्छ करें व सुखाकर व्रण राक्षस तैल (भै. र.) दिन में 2-3 बार लगायें । लाभकारी है ।

● महामन्जिठाद्यारिष्ट (आयु. सार संग्रह) 15 मि.ली. तथा सारिवाद्यारिष्ट (ग्र. भै. र.) 15 मि.ली. दोनों को मिलाकर तथा औषधि के मात्रा के बराबर जल मिलाकर दिन में 2 बार भोजनोपरान्त सेवन करें ।

● महातिक्त घृत (सि. यो. सं.) भोजन के प्रथम ग्रास (कौर) के साथ 2 से 5 ग्राम तक दिन में 2 बार खायें ।

● गन्धक रसायन (सिद्धयोग संग्रह) रात को सोते समय प्रतिदिन 500 मि.ग्रा. मधु में भली प्रकार से मिलाकर चाटें । रक्त को शुद्ध करके फुन्सियों के चर्म-दल एवं विस्फोट रोग को नष्ट कर देता है ।

वाहिका तन्त्रिका-शोथ, कोठ दर्द (Angioneurotic Oedema)

त्वचा में तन्त्रिका विकृति के कारण स्थान स्थान पर लाल रंग के चकत्ते एवं

त्वचा में शोथ उत्पन्न हो जाती है। यही 'वाहिका तन्त्रिका शोथ' कहलाती है।

उपचार

● नीम के पत्तों का रस 15 मि.ली., पुनर्नवा क्षार 60 मि.ग्रा. के साथ सुबह-शाम प्रयोग करें।

● मधु मन्डूर भस्म (योग रत्नाकर) आवश्यकता तथा आयु के अनुसार 250 से 500 मि.ग्रा. तक दिन में 1-2 बार प्रयोग करें।

● शीत-पित्त भंजन रस (रस योग सागर) आवश्यकतानुसार 125 से 250 मि.ग्रा. तक मधु से दिन में 2-3 बार तक चटायें।

● पुनर्नवादि मन्डूर (भै. र.) आयु के अनुसार 1 से 2 गोलियां तक दिन में 2 बार त्रिफला के क्वाथ (काढ़ा) से सेवन करें।

सिध्म, सेंहुआ (Pitriasis)

रोग परिचय—यह रोग छीप रोग का ही एक अन्य प्रकार है। यह रोग फफूंद के संक्रमण से एक से दूसरे व्यक्ति में प्रसारित होता है।

उपचार

● महामन्जिष्ठादि काढ़ा 15 से 30 मि.ली. समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार सेवन करें।

● पंचतिक्त घृत गुग्गुल (आवश्यकता तथा रोगी की आयु के अनुसार) 6 से 12 ग्राम तक दूध या ताजे जल से दिन में 2-3 बार खिलायें।

● हल्दी, छोटी पीपर, दारु हल्दी और केशर प्रत्येक 50 ग्राम लें। इन्हें जल के साथ पीसकर लुगदी बना लें। फिर घी 1 किलो, चीतामूल का काढ़ा 4 कि. और उपर्युक्त लुगदी मिलाकर 1 कड़ाही में डालकर घी मात्र शेष बच जाने पर विधिपूर्वक पाक करें। तदुपरान्त छानकर व शीतल कर सुरक्षित रख लें। यह सिद्ध घी 13 ग्राम की मात्रा में 100 से 250 मि.ली. दूध में डालकर पिलायें, इसी का नस्य करें एवं आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2 बार मालिश करें। सिहम (सेंहुआ) नाशक उत्तम प्रयोग है।

शिरा-कुटिलताजन्य विचर्चिका (Vicersandeins)

रोग परिचय—शिरा के कुटिल, टेढ़ी-मेढ़ी हो जाने पर उस स्थान की त्वचा पर एक्जिमा उत्पन्न हो जाता है। आक्रान्त स्थान पर जलन उत्पन्न करने वाली लाल-

लाल फुन्सियाँ निकल आती हैं। वे खुजलाने पर व्रणों (Ulcers) में परिवर्तित हो जाती हैं। इन व्रणों से स्वच्छ जल के सदृश रस स्रवित होता रहता है जिसके कारण अत्यधिक खाज और दाह होता है। यह रोग शिरा के ऊपर त्वचा पर शिरा को टेढ़ा-मेढ़ा करते हुए निकलता है।

उपचार

● 'पंचतिक्त घृत गुग्गुल' 6 से 12 ग्राम तक गाय के दूध अथवा ताजा जल से दिन में 2-3 बार सेवन करें।

● 'सारिवाद्यारिष्ट' एवं 'महामन्जिठारिष्ट' क्रमशः 15 मि.ली. और 10 मि.ली. में जल 25 मि.ली. मिलाकर दिन में 2 बार भोजनोपरान्त सेवन करें।

● आक्रान्त त्वचा को धो-पोंछ व सुखाकर दिन में 2-3 बार 'महामरिच्यादि तैल' लगायें। तदुपरान्त हाथों को साबुन से धोकर स्वच्छ कर लें।

● 'गन्धक रसायन' रोगी की आयु व दशा को दृष्टिगत रखते हुए 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक मधु से सुबह-शाम दिन में 2 बार सेवन करें।

● प्रथम कोष्ठ शुद्धि हेतु इच्छाभेदी रस की 1-2 गोलियाँ ठण्डे पानी से रात्रि को भोजन करने के बाद लें। जब 2-4 पाखाना होकर पेट साफ हो जाए तो 'कैशोर गुगुल' 1 से 2 गोलियाँ तक दूध से दिन में 2 बार लें।

● 'सोमराजी तैल' आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार लगाकर 6 घंटे बाद नीम्न के काढ़ा से धोवें।

घाव का संक्रमण (Wound Infection)

रोग परिचय—शरीर पर अनेक कारणोंवश घाव हो जाया करते हैं। घाव में स्टैफिलोकोक्कस नामक कीटाणु का संक्रमण होता है। वर्तमान युग में लाठी, डन्डा, तलवार, भाला, छुरी, चाकू, बरछा, तीर, बांस अथवा अन्य कोई धारदार हथियार के प्रहार से घाव बन जाने की तो बात कौन कहे ? रायफल, बन्दूक, पिस्तौल, मशीनगन, इत्यादि आग्नेय अस्त्रों से भी घाव हो जाते हैं। चिकित्सीय दृष्टिकोण से यह घाव अनेकों प्रकार के होते हैं। जैसे—मृत्युकारक क्षत या घाव (Martal Wound) या बन्दूक की गोली का घाव या क्षत (Gunshot Wound) या आग्नेयास्त्र का क्षत या घाव इत्यादि।

उपचार

● सर्वप्रथम घावों को नीम के ताजे पत्तों के काढ़ा से भली भांति धो-पोंछकर

सुखाकर घावों पर 'जात्यादि तैल' दिन में 2-3 बार लगायें अथवा 1 बार लगाकर पट्टी बाँधें ।

● 'रसमाणिक्य' (भै. र.) 125 से 250 मि.ग्रा. तथा 'गन्धक रसायन' (भै. र.) 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक एकत्र मिलाकर मधु से सुबह-शाम चटायें।

● 'महातिक्तघृत' (सि. यो. संग्रह) भेद होते हैं । 1 से 4 ग्राम तक गौदुग्ध या जल से खायें ।

● 'महामन्जिष्ठाद्यरिष्ट' (आयुर्वेदसार संग्रह) 15 मि.ली. तथा 'सारिवाद्यसव' 15 मि.ली. एकत्र मिलालें । उसमें 30 मि.ली. जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार पिलायें ।

● व्याधिहरण रसायन, नाड़ी व्रण, हड्डी व्रण अथवा उपदंश के संक्रमण से उत्पन्न घावों में इसकी 125 से 250 मि.ग्रा (आयु और आवश्यकतानुसार) मधु से सुबह-शाम दिन में 2 बार चाटकर ऊपर से गौ-दुग्ध पान करें । पुराने घाव के संक्रमण में 'चोपचिन्यादि चूर्ण' (ग्रन्थ आर्यभिषक) भी आयु और आवश्यकतानुाार 3 से 6 ग्राम तक ताजे जल से दिन में 2-3 बार तक खिलायें।

● नीम के ताजे पत्ते, निर्गुन्डी के ताजे पत्ते, शरपुंखा के पत्ते, पत्थरचूर के पत्ते, प्रत्येक 25 ग्राम लेकर इकट्ठा रस निचोड़ कर व छानलें । इसमें स्वच्छ वस्त्र डुबोकर घावों पर पट्टी बाँध दें । अथवा उक्त चारों प्रकार के पत्तों को पीसकर लुगदी बनाकर इसे 1 कड़ाही में रखकर इससे 4 गुना नारियल का तैल डालकर (तेल मात्र शेष रहने तक) गरम करें । फिर भली भांति छानकर इसमें कार्बोलिक एसिड 100 भाग मिलाकर कांच की स्वच्छ ढक्कन युक्त बोतल में सुरक्षित रखें या इसमें पिघला हुआ मोम डालकर और मिलाकर मरहम बनाकर सुरक्षित रखें। तदुपरान्त इस तैल या मरहम को घावों पर दिन में 2-3 बार लगाया करें । अथवा प्रतिदिन 1 बार लगाकर पट्टी बाँधा करें ठीक न होने तक प्रतिदिन पट्टी बदलकर नई पट्टी बाँधते रहें ।

पदम-कन्टक, शैवालिका (Lichen)

यह भी एक विशिष्ट प्रकार का चर्म रोग है जिसमें त्वचा पर चपटे उभारयुक्त या गुलाबी आभा वाले चकत्ते प्रथम कलाई, आगे की बाँह एवं घुटनों पर निकलते हैं और फिर उसके बाद समस्त बाहु, पैर, टखने, जाँघ और बगलों, नितम्बों एवं उदर के भाग पर भी चकत्ते निकल आते हैं ।

उपचार

● एसिड कार्बोलिक (फेनाल) 4 मि.ली., कैम्फर 8 ग्राम, गिलेसरीन 16 मि.ली. तथा परिश्रुत (उबाला हुआ) जल 250 मि.ली. को एकत्र मिलाकर समस्त आक्रान्त त्वचा पर लगाकर मालिश करें ।

● बोरिक एसिड, जिंक आक्साइड और स्टार्च पाउडर (प्रत्येक 30-30 ग्राम को मिलाकर रखलें । स्नान के बाद शरीर को सूखे तौलिया से पोंछकर आक्रान्त अथवा समस्त शरीर पर लगाकर मालिश करें ।

● कार्बोलिक एसिड 1.5 मि.ग्रा. तथा जल 6 मि.ली. को भली-भाँति मिलालें इसे आक्रांत चर्म पर 2 मिनट तक लगाकर बाद में स्नान कर लें।

● एसिड सैलीसिलिक 4 ग्राम और रैक्टीफाइड स्प्रिट 240 मि.ली. दोनों को भली प्रकार मिलाकर त्वचा पर 2 मिनट तक लगाकर रखें । तदुपरान्त 'मार्गो' या 'टैटमोसाल' अथवा 'नीको' साबुन से स्नान करें ।

● नीम के पत्तों को सुखाकर कपड़छन चूर्ण कर सुरक्षित रखलें । समस्त आक्रान्त त्वचा को नीम के पत्तों के काढ़े से धो-पोंछ व सुखाकर उपर्युक्त नीम पत्तों का कपड़छन (पाउडर) छिड़कें अथवा इसी का मरहम दिन में 2 बार लगायें।

● 'जात्यादि तैल' समस्त आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार लगाना भी गुणकारी है ।

● 'सारिवाद्यारिष्ट' 30 मि.ली. समान भाग जल मिलाकर दिन में 2 बार भोजनोपरान्त पीना भी लाभकारी है ।

वंक्षण दद्रु (Tinea Crusis)

यह भी एक प्रकार का दद्रु (दाद) रोग ही है । इसके लक्षण दाद के समान होते है, अत: दाद के अन्तर्गत पढ़ें ।

उपचार

● टिंचर आयोडीन को आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2 बार लगायें ।

● चक्रमर्द (चकबड़) के बीजों को घिसकर आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2 बार लगाना लाभकारी है ।

● गन्धक, तूतिया, सुहागा, फिटकरी सभी को सममात्रा में लेकर एक कटोरे में आग पर पिघला कर भली भाँति मिला लें । तदुपरान्त इसकी पिघली हुई दशा में ही बड़ी-बड़ी गोलियाँ बना लें । ठण्डी होकर ये गोलियां कठोर हो जायेंगी ।

फिर इन्हें सरसों के तैल में घिसकर लेप तैयार कर आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार लगाया करें। लाभप्रद योग है।

● तूतिया का कपड़छन चूर्ण 120 मि.ग्रा. माजूफल का कपड़छन चूर्ण 360 मि.ग्रा. और मोम तथा मधु (18-18 ग्राम तथा मि.ली.) को खरल में खूब घोटकर मरहम (लेप) बनालें। इसको चाहे किसी भी शरीर के स्थान पर दाद हों, वहाँ दिन में 2-3 बार लगाने से शर्तिया लाभ हो जाता है।

● गन्धक, सुहागा, मुर्दासंग, नौशादर, माजूफल, मिर्च सफेद, खैर, अफीम और चीनियां गोंद प्रत्येक 12 ग्राम लेकर जल के साथ पीसकर गोलियां बनाकर रख लें। आवश्यकता के समय 1 गोली को नीबू के रस में घिसकर आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2-3 बार लगायें। लाभकारी है।

● सुहागा, लोबिया, गन्धक, चकबड़ के बीज प्रत्येक 15 ग्राम लेकर कपड़छन (चूर्ण करके रस में खरल करें। जब सभी एकजान (सम सर्वत्र) हो जायें तो इसकी 250 मि.ग्रा. की गोलियाँ बनाकर सुखाकर रखलें। इन गोलियाँ को नीबू के रस में घिसकर प्रत्येक दूसरे दिन आक्रान्त त्वचा पर लगाना भी लाभकारी है।

● भुना सुहागा, फिटकरी, गन्धक रांल प्रत्येक 10 ग्राम लेकर कपड़छन चूर्ण कर रख लें। इसको घी में मिलाकर आक्रान्त त्वचा पर दिन में 2 बार लगावें।

सिरदर्द (Headache)

सिरदर्द स्वयं में कोई रोग नहीं होता है बल्कि यह किन्हीं दूसरे रोगों के कारण हुआ करता है।

● आमाशय और अन्तड़ियाँ कमजोर हो जाने, भोजन न पचने, आमाशय और अन्तड़ियां फूल जाने या पेट के तन्त्रिका-तंत्र पर बोझ पड़ने से भोजनोपरान्त सिर भारी हो जाता है और सिर में दर्द होने लगता है। रोग के प्रारम्भ में यह कभी-कभार होता है किन्तु इसकी (पाचन रोगों की) चिकित्सा न करने पर खाने के बाद प्रतिदिन ही सिरदर्द का कष्ट होने लग जाता है।

उपचार—इस प्रकार से उत्पन्न सिरदर्द का उचित उपचार पाचन अंगों को शक्तिशाली बनाना ही है। पीड़ित रोगी तले हुए भोज्य पदार्थ-पूरियाँ, परांठें, डबलरोटी तथा मैदे से बने भोज्य पदार्थों का सेवन तुरन्त त्यागें। शीघ्र पचने वाले भोजन एवं फल इत्यादि ही खायें।

● हिंग्वष्टक चूर्ण या लवण भास्कर चूर्ण 2-3 ग्राम तथा प्रवाल भस्म 60 मि.ग्रा., लौह भस्म 30 मि.ग्रा. ऐसी एक मात्रा प्रतिदिन खाते रहना लाभप्रद है।

● **नजला, जुकाम से उत्पन्न सिर दर्द**—काफी समय तक नजला जुकाम के बने रहने से मस्तिष्क और तन्त्रिका कमजोर हो जाने के कारण सिर- दर्द रहने लगता है। इस प्रकार के सिरदर्द में नाक की झिल्ली में शोथ होकर नाक बहने लगती है, छींकें आती हैं, आँखें लाल हो जाती है सिर और माथे में दर्द होता है। रोगी सुस्त रहता है।

उपचार

● रोग के प्रारम्भ में कपूर 250 मि.ग्रा. अफीम 62 मि.ग्रा. गरम चाय के साथ सेवन करना लाभप्रद है।

● कपूर को 4-5 गुने अल्कोहल में घोलकर 2-3 बूँद चीनी या बताशे में डालकर सेवन करना भी लाभप्रद है।

● गेहूँ की भूसी 12 ग्राम को आधा लीटर पानी में 15-20 मिनट तक उबाल, छानकर, मीठा डालकर पीना भी लाभप्रद है।

● फिटकरी 12 ग्राम को आक (मदार) के दूध में खरल करके सुखा लें। फिर उसे धतूरा के ताजे पत्तों के रस में खरल करके टिकिया बनाकर 2 किलो उपलों के मध्य में रखकर आग लगादें। ठण्डा हो जाने पर टिकिया को पीस व छानकर सुरक्षित रखलें। इसे 125 से 250 मि.ग्रा. तक दूध की मलाई में खाते रहने से पुराने से पुराना नजला और इससे उत्पन्न सिरदर्द नष्ट हो जाता है।

● 'महा लक्ष्मी विलास रस' भी नजला, जुकाम, दिमागी और तन्त्रिका की कमजोरी से उत्पन्न पुराने सिरदर्द की अत्यन्त ही सफल शास्त्रीय आयुर्वेदिक औषधि है। इसे 1-1 गोली मधु में मिलाकर सुबह-शाम दिन में 2 बार सेवन करें।

● **पुराने उपदंश के कारण सिरदर्द**—इसके विषैले प्रभाव रक्त में चले जाने पर रोगी के रात्रि के समय तड़पा देने वाला दर्द होता है। यह दर्द इतना भयंकर होता है कि रोगी को लगता है कि जैसे हड्डी कुचली जा रही है।

उपचार—व्याधिहरण रसायन 125 से 250 मि.ग्रा. तक खरल में सूक्ष्म पीसकर मुनक्का में रखकर सुबह-शाम दिन में 2 बार निगलना लाभप्रद है।

● स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल सुखाकर 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तथा नीम के पत्तों का कपड़छचूर्ण 500 से 100 मि.ग्रा. को एकत्र मिलाकर ताजे जल से सुबह-शाम दें।

● रीठा के छिलकों की भस्म 125 से 250 मि.ग्रा. तक जल से दिन में 2-3 बार तक सेवन करें।

●फिटकरी की भस्म 125 मि.ग्रा., पीली कटैय्या की जड़ की छाल की भस्म 125 मि.ग्रा.—ऐसी एक मात्रा 6 से 12 घंटे के अंतर पर जल से दें।

●भोजन के बाद महामन्जिष्ठारिष्ट, वाद्यारिष्ट प्रत्येक 15 मि. ली. एकत्र मिलाकर उसमें समान जल मिलाकर दिन में 2 बार सेवन करना भी पुराने आतशक (उपदंश) से उत्पन्न सिरदर्द नष्ट हो जाता है।

●**गुर्दों में शोथ होने से उत्पन्न सिरदर्द**—ऐसी दशा में रोगी के सिर के निचले भाग में संक्रमण के कारण निरन्तर (हर समय) सिरदर्द होता रहता है तथा उसे रात्रि में बार-बार मूत्र आता है। रोगी के मूत्र में अण्डे की सफेदी जैसा पदार्थ (एल्क्युमिन) भी आता है। मूत्र का घनत्व भी कम हो जाता है। यह सिरदर्द बड़ी आयु में हुआ करता है। इस रोग से ग्रसित रोगी उचित उपचार व्यवस्था के अभाव में शीघ्र बूढ़ा हो जाया करता है।

उपचार—वृक्क शोथ (रोग के मूल कारण) का उपचार करें।

● बार-बार मलेरिया ज्वर आने के कारण (रहने के कारण) भी रोगी के माथे और सिर के सामने वाले भाग में तड़पा देने वाला सिरदर्द दौरे के रूप में हुआ करता है।

उपचार—मलेरिया ज्वर का उचित उपचार कर जड़मूल से दूर करें।

● दिमाग में रसूली (Intra Craninal Tumour) हो जाने पर भी पहले तो मामूली किन्तु बाद में भयंकर सिरदर्द से रोगी की दृष्टि कमजोर हो जाती है।

● घी या मक्खनयुक्त भोज्य पदार्थ पूड़ियाँ, परांठे इत्यादि खाने के कारण भी सिर दर्द हो जाया करता है। यह सिरदर्द प्रात: के समय अधिक होता है।

उपचार—1 या 2 नीबू का रस ठण्डे या गरम पानी निचोड़ कर व पीने से पित्ताशय में उत्तेजना से चिकनाई हज्म होकर सिरदर्द दूर हो जाता है।

● रक्त में जमने की शक्ति कम हो जाने पर सिरदर्द प्रात: समय हुआ करता है। ज्यों-ज्यों दिन बढ़ता जाता है, दर्द कम होता जाता है। रोगी के चर्म पर खुजली के दानें औरं पित्ती उछलने जैसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। रोगी का चेहरा और आँखों के पपोटे सूजे हुए होते है। यह रोग प्राय: स्त्रियों को होता है।

उपचार—रक्त स्राव के अन्तर्गत लिखे हुए रक्तशोधक योगों का प्रयोग भी करें।

● हाई ब्लड प्रेशर (रक्तदाव की अधिकता) के कारण उत्पन्न सिरदर्द होने पर ऐलोपैथी की 'एमाईल नाइट्रेट' नामक औषधि की 4-5 बूँदें साफ रूमाल पर डालकर मुँह और नाक के पास रखकर सुँघाने से तुरन्त आराम मिल जाता है।

● धूप में चलते-फिरने के कारण उत्पन्न सिरदर्द के रोगी को ठण्डे कमरे में लिटायें तथा बिजली का पंखा चलायें। खस का इत्र सुंघायें अथवा कद्दू का तैल नाक में टपकायें या आलू बुखारा 7 दानो अथवा इमली पानी में घोलकर पिलायें। वैसे गर्मी के कारण उत्पन्न सख्त सिरदर्द में होम्योपैथी औषधि (ग्लोनाइन 30 शक्ति की) 2-3 बूंदें पानी में डालकर प्रत्येक 20-25 मिनट पर सेवन करना लाभप्रद है।

● सिर में रक्त की अधिकता हो जाने के कारण भी तीव्र सिरदर्द उत्पन्न हो जाता है। सिर भारी, माथे और सिर की गुद्दी में सख्त दर्द, आँखों के सामने लाल चिनगारियाँ अथवा काले धब्बे और कनपटियों में तड़प प्रतीत होती है।

पाचनांगों के दोषों से एवं सिर में रक्त की अधिकता के कारण उत्पन्न सिर-दर्द में सिर को मसलना या दबाना उचित नहीं है। प्रत्येक प्रकार का सिरदर्द पाखाना आ जाने से कम हो जाया करता हैं। अत: दस्त लाने की औषधि या वेदना-शामक औषधि भी ले सकते हैं।

● मस्तिष्क में कीड़े पड़ने के कारण उत्पन्न सिर दर्द के रोगी की सूँघने की शक्ति घट जाती है और इसको पीनस रोग हो जाता है तथा रोगी के तालु में छेद पड़ सकता है। आतशक (उपदंश) के रोगियों को भी आधी रात के समय सिरदर्द हुआ करता है।

उपचार—चमड़े के पुराने जूते का तला आग में जलाकर, पीसकर कपड़े से छानकर सुरक्षित रखलें। इसकी ननस्य लेने से कीड़े निकल जाते हैं तथा सिरदर्द भी दूर हो जाता है।

● पित्ताधिक्य के कारण उत्पन्न सिरदर्द (Bilious Headache) जिगर की खराबी, गरम भोजनों को खाने अथवा गरम-पेय पदार्थों का पीने से उत्पन्न हुआ करता है। सिर में सख्त दर्द, मितली और मुख का स्वाद कड़वा हो जाया करता है कै और दस्तों में पित्त (Bile) निकल जाने पर सिरदर्द कम हो जाता है।

उपचार—सिर पर ठण्डे पानी की धार बांधकर पानी गिराना लाभप्रद है।

●अमृतधारा की 2-3 बूँदें बताशे पर डालकर खाना भी लाभकारी है।

●चन्दन तथा कपूर को घिसकर माथे और कनपटियों पर लेप करें।

●नीबू, आलूबुखारा या इमली से बना शरबत पीना लाभकारी है।

● दृष्टि कमजोर हो जाने से उत्पन्न सिरदर्द की अवस्था में आँख के विशेषज्ञ चिकित्सक से आँखें टेस्ट करवाकर उपयुक्त नम्बर के शीशों की ऐनक (चश्मा)

लगवाने से सिरदर्द नष्ट हो जाता है। अन्य नेत्रदृष्टिवर्धक सुरमा अथवा खाने की औषधियों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

● (लो ब्लड प्रैशर) रक्त का दबाव कम हो जाने से उत्पन्न सिरदर्द में ब्लडप्रेशर का उपचार करने से सिरदर्द स्वयं नष्ट हो जाता है।

● उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त अधिक और बार-बार खाने से भारी पगड़ी बाँधने से, सिर में जुएं तथा बाल बड़े-बड़े होने से, दाँत में कीड़ा लगने से, शराब, कोकीन एवं लौह (आयरन) की औषधियों के अधिक प्रयोग से तथा कुछ रोगों के कारण जैसे—खाँसी, सर्दी इत्यादि के कारण भी सिर में दर्द उत्पन्न हो जाया करता है। इन सभी के मूल कारणों का उपचार करने से सिरदर्द की शिकायत दूर हो जाती है।

● रीठे को पानी में पीसकर नाक में टपकाने से सिर के कीड़े मर जाते हैं।

● साँप की केंचुली 10 ग्राम को घी में बारीक पीसकर इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर खूब घुटाई कर शीशी में सुरक्षित रखलें। आवश्यकता पड़ने पर 2 ग्रेन यह दवा बताशे में भरकर रोगी को देकर ऊपर से 3-4 घूंट पानी पिलादें। इस प्रयोग से पुराने से पुराना सिरदर्द मात्र 2-4 मात्राओं से ही सदा-सदा के लिए नष्ट हो जायेगा।

● शुद्ध तिल का तैल 250 ग्राम, चन्दन और दालचीनी का तैल 10-10 ग्राम लें। सभी को साफ शीशी में डालकर रख लें। इस तैल को माथे पर लगाने से सिरदर्द तुरन्त दूर हो जाता है। 4-4 बूँदें दोनों कानों में भी डाल लें।

● नीबू की पत्तियों को कूटकर रस निकाललें। इसकी नस्य लेने से सिरदर्द नष्ट हो जाता है। जिन रोगियों को सदैव सिरदर्द की शिकायत रहती है वे इस प्रयोग को करें। जीवन भर के लिए उन्हें सिरदर्द से छुटकारा मिल जायेगा।

● पीपल को पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तक पीड़ा नष्ट हो जाती है।

● अनार की जड़ को पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से बात और कफ की पीड़ा दूर हो जाती है।

● धतूरे के 3-4 बीज प्रतिदिन निगलने से पुराने से पुराना सिरदर्द कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

● 'षडबिन्दु तैल' की नस्य लेने से सभी प्रकार का सिरदर्द दूर हो जाता है।

● नौशादर और बिना बुझा चूना बराबर मात्रा में लेकर शीशी में भर लें। जब भी सिरदर्द हो तो शीशी को हिलाकर सूँघें। इस प्रयोग से सिरदर्द तुरन्त ही दूर हो जाता है। नजले के कारण उत्पन्न सिरदर्द हेतु उत्तम प्रयोग है।

● खाने के चूने के थोड़े से घी में मिलाकर सिर पर लेप करने से गर्मी से उत्पन्न सिरदर्द दूर हो जाता है।

● कच्चे दूध में बिन्दाल की मींगी पीसकर सूंघने से सिर का भयंकर दर्द शान्त हो जाता है।

● पीपल और बच का समभाग चूर्ण सूँघने से सिरदर्द दूर हो जाता है।

● भटकटैय्या के फलों का रस सिर में लगाने से सिरदर्द दूर हो जाता है।

● रीठा, काली मिर्च और सौंठ तीनों को जल में घिसकर पानी मिलाकर 2-3 बूँदें नाक के नथुनों में टपकाकर नस्य लेने से सिरदर्द दूर हो जाता है।

● छोटी पीपल डेढ़ ग्राम को बारीक पीसकर 10 ग्राम शहद के साथ चाटने से सिरदर्द 5 मिनट में दूर हो जाता है।

● मैंथल 3 ड्राम, रेक्टी फाइड स्प्रिट 3 औंस, आयल क्वाथ 2 ड्राम सभी को शीशी में भरकर मजबूत कार्क लगाकर सुरक्षित रखलें। इसको फुरैरी से सिर पर लगाने से भयंकर से भयंकर सिरदर्द दूर हो जाता है।

नाड़ी शूल, स्नायुशूल (न्यूरेल्जिया)

रोग परिचय—स्नायुशूल उस दर्द को कहा जाता है जो विशेष दोष से पैदा होता है। जैसे—माथे की भवों में मलेरिया के कारण दर्द हो जाना दाँतदर्द के प्रभाव से चेहरे में दर्द या मासिकधर्म के दोष के कारण स्त्री के स्तन या आधे सिर का दर्द होना। वैसे प्राय: दर्द चाहें किसी भी कारण से किसी भी रोगी को हो किन्तु उस दर्द का ज्ञान तन्त्रिका द्वारा प्रतीत होता है। स्नायुशूल दौरों के रूप में हुआ करता है। रोगी को ज्वर या शोथ नहीं होता है केवल दर्द होता है।

स्नायुशूल (न्यूरेल्जिया) में तन्त्रिका या स्नायु में दर्द प्रतीत होता है किन्तु वात नाड़ी शोथ 'न्यूराइटिस' में तन्त्रिका में शोथ और दर्द भी होता है। एकाएक दर्द शुरू होकर बढ़ता जाता है और फिर तुरन्त ही दूर हो जाता है अर्थात् यह दर्द दौरों के रूप में हुआ करता है जबकि 'वात नाड़ी शूल' हर समय होता रहता है और रोगग्रस्त भाग को हिलाने या दबाने से दर्द बढ़ जाया करता है। नाड़ी में संज्ञाहीनता और पक्षाघात होने जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं किन्तु सदैव याद

रखें कि—नाड़ी शूल में नाड़ी में शोथ होता है तो उसको स्थानीय नाड़ी शोथ (Localised Neuritis) और जब कई नाड़ियों में शोथ हो जाती है तो बहुत तन्त्रिका शोथ (Polynaritis) के नाम से जाना जाता है। एक नाड़ी का शोथ चोट लगने, हड्डी उखड़ जाने आदि कारणों से होता है और दिमाग की उस नाड़ी में दर्द रहता है।

उपचार

● छिला हुआ लहसुन, पोस्त दाना, सौंठ चूर्ण, असगन्ध चूर्ण और रास्ना चूर्ण प्रत्येक 50 ग्राम लें। सभी को एकत्र कर खरल में डालकर बारीक पीसें व कपड़छन कर चूर्ण तैयार कर सुरक्षित रखलें। इसे 2 से 3 ग्राम तक गाय के 200 ग्राम गरम दूध से सुबह-शाम तथा रात्रि को सोते समय खिलाने से नाड़ीशूल (तन्त्रिका पीड़ा) तथा तन्त्रिकाशोथ को आराम मिलवा है।

● योगराज गुग्गुल 2 गोली, महारास्नादि क्वाथ 15 से 30 मि.ली. में बराबर जल मिलाकर ऐसी एक मात्रा प्रातःकाल नाश्ते के बाद तथा रात्रि को भोजनोपरान्त सेवन करने से तन्त्रिका-शूल एवं तन्त्रिका-शोथ में लाभ होता है।

● विषगर्भ तैल 1 भाग, सैंन्धवादि तैल आधा भाग तथा महा नारायण तैल आधा भाग सभी को एकत्र मिलाकर तन्त्रिकाशूल एवं शोथ वाले स्थान पर दिन में 3-4 बार मालिश करना अत्यन्त लाभकारी है।

विभिन्न कर्ण रोग (Otalgia, Earrche)

● जिस कान में दर्द हो उसमें ताजा हाइड्रोजन परआक्साइड (Hydrogen peroxide) 2-4 बूंद डालकर साफ रूई की फुरैरी से कान को पोंछकर साफ करें, तदुपरान्त कोई दवा डालें।

● प्याज का रस गरम करके कान में टपकाना लाभप्रद है।

● समुद्रझाग पीसकर व कपड़े से छानकर 60 मि.ग्रा. कान में टपका दें। ऊपर से नीबू का रस 2 बूंद डालें।

● मूली कूटकर उसका 25 मि.ली. रस निकालकर 62 मि.ली. तिल का तैल मिलाकर (धीमी आग पर इतना पकायें कि तैल मात्र शेष बचे) फिर इसे गुनगुना करके 2-3 बूँद कान में डालें। भयंकर कानदर्द भी मिट जाता है।

● लाल मिर्च के बीज को पानी में हाथ से मसलकर उस पानी की 2-4 बूँद कान में डालें। थोड़ा सा लगेगा तो जरूर—किन्तु कान का दर्द अवश्य ठीक हो जाएगा।

● सुखदर्शन के पत्ते पर जरा सा घी लगाकर गरम करलें। उसका रस निकालकर कान में टपकाने से कानदर्द तुरन्त बन्द हो जाता है।

● लहसुन की 3-4 कली लें। उन्हें 50 ग्राम सरसों के तैल में जलाकर रखें। आवश्यकता पड़ने पर इस तैल को थोड़ा सा गरम करके कानों में डालने से कानदर्द दूर हो जाता है।

● गधे की लीद का रस, प्याज का रस, गुलाबजल और सिरका सभी समभाग मिलाकर शीशी में सुरक्षित रखलें। यह सभी उत्तम योग है।

● कान में 2-3 बूंद गोमूत्र डालने से भी कर्ण-पीड़ा शान्त हो जाती है।

● जिस रोगी के कान से दुर्गन्धियुक्त पीप बहती हो, कान सूज गया हो अथवा कान दर्द के कारण सिर में भी दर्द हो ऐसे रोगी के कान में टरपेन्टाइन आयल (तारपीन के तेल) की 3-4 बूंद सुबह-शाम डालने से अवश्य लाभ होता है। दो मास तक इसके निरन्तर प्रयोग से बहरापन नष्ट हो जाता है।

● स्त्री के दूध की 2-3 बूँदें प्रतिदिन कान में टपकाने से कान दर्द व कान का घाव ठीक हो जाता है। सर्वोत्तम योग है।

● प्याज का रस थोडा सा गरम करके 1-2 बूँद कानों में डालते रहने से बहरापन, कानदर्द, कान बहना इत्यादि रोग दूर हो जाते हैं।

● इन्द्रायण का 1 ताजा फल लें। फिर कड़ाही में 250 ग्राम तिल के तेल में डालकर इसे पकालें। जब इन्द्रायण का फल जल जाए तब तेल को छानकर शीशी में भरलें। इस तेल की 1-1 बूंदें रात्रि को सोते समय कान में डालने से 20-25 दिन में ही बहरा व्यक्ति सुनने लगता है।

● सुहागा बारीक पीसकर कान में 2 ग्रेन डालकर ऊपर से नीबू रस की 5-6 बूँदें निचोड़ देने से प्राकृतिक गैस पैदा होकर कान के अन्दर का समस्त मैल बाहर निकल जाता है।

● कनखजूरे के चिपट जाने पर कान में कड़वा तैल डालने से कनखजूरा टुकड़े-टुकड़े होकर मर जाता है। अनुभूत योग है।

● कनखजूरा कान में घुस जाने पर नमक का पानी कान में डालना लाभप्रद है।

● बूरा कान में डालने से भी कनखजूरा गल जाता है।

● तारपीन के 6 ग्राम तेल को 100 ग्राम गरम पानी में मिलाकर पिचकारी से कान धोने से कान के अन्दर के समस्त कीड़े मरकर बाहर निकल जाते हैं।

● एलुवा 1 ग्राम को थोड़े से पानी में घोलकर कान में कुछ देर तक भरे

रखने से तथा कुछ देर कान झुकाकर औषधि निकाल देने से भी कान के समस्त कीड़े मरकर बाहर निकल जाते है।

● कान को साफ करके थोड़ी सी स्प्रिट डालने से 3-4 दिन में ही कान का बहना बंद हो जाता है। अचूक एवं उत्तम घरेलू प्रयोग है।

● सरसों के तेल 200 ग्राम में 10 ग्राम रतनजोत को खूब (जलने तक) पकालें। फिर तैल को स्वच्छ शीशी में छानकर सुरक्षित रख लें। इसे प्रतिदिन रात्रि में 2-2 बूँद कानों में डालने से कान दर्द, कान बहना तथा बहरापन इत्यादि सभी कर्णरोगों में लाभ होता है।

● अकौआ (आक) के पीले पत्ते लेकर उन पर घी चुपड़ कर गरम कर रस निचोड़कर कान में डालने से कान दर्द दूर हो जाता है।

● कौड़िया लोहवान 10 ग्राम और स्प्रिट 100 ग्राम दोनों को शीशी में भरकर कार्क लगाकर गरम पानी में रख दें जब दोनों औषधियाँ मिलकर एकजान हो जायें, तो शीसी को पानी से निकालकर छानकर किसी साफ स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रखलें। इसकी 2-3 बूँदें कान में डालने से कैसा भी कानदर्द हो अवश्य मिट जाता है। दवा कान में लगती है, किन्तु उससे न घबरायें।

● मूली के पत्तों का रस 100 ग्राम, मीठा तैल 250 ग्राम दोनों को मिलाकर औटालें। जब तेल मात्र शेष रह जाए तब उतार लें। इसे सुहाता-सुहाता कान में डालने से कानदर्द दूर हो जाता है।

● हजारा गेंदे का रस निकालकर गरम करके कान में टपकाने से कर्णशूल दूर हो जाता है। दाढ़ के दर्द में भी इस औषधि से उपचार करना लाभकारी है।

● हींग को स्त्री के दूध में घिसकर कानों में डालना बहरापन में मिटाता है।

● गाय के मूत्र में जरा सा सैंधा नमक घोलकर ताजा-ताजा डालने से कुछ ही दिनों में बहरापन नष्ट हो जाता है।

● आक का पका हुआ पीला पत्ता लेकर कपड़े से साफ, सरसों का तैल चुपड़कर अग्नि पर गरम करके इसका रस 2-4 बूँद सुबह-शाम कान में डालते रहने से कुछ ही दिनों में बहरापन खत्म हो जाता है।

● करेले के बीज और काला जीरा दोनों समभाग लेकर पानी में पीसकर छानलें। इसे कान में डालना बहरापन में लाभप्रद है।

● कलमी शोरा 60 ग्राम, नौशादर 10 ग्राम, फिटकरी की भस्म 15 ग्राम, सरसों का तैल 250 ग्राम लेकर सभी औषधियें को तेल में पकालें फिर शीशी

में छानकर सुरक्षित रख लें। इसे प्रतिदिन 2-4 बूँद कानों में डालने से बहरापन नष्ट हो जाता है।

● शंख में पानी भरकर रातभर रखने के बाद प्रातः उसे पीने और शंखध्वनि खूब सुनने से बहरापन नष्ट हो जाता है।

● आडू की गुठलियों का तैल प्रतिदिन दो महीना तक कान में डालते रहने से बहरापन नष्ट हो जाता है।

● मूली का रस, सरसों का तैल और शहद तीनों सममात्रा में लेकर शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें। सुबह-शाम 4-5 बूंद कानों में डालते रहने से बहरापन दूर हो जाता है।

● ऊँट का मूत्र गुनगुना करके कानों में डालते रहने से बहरापन नष्ट हो जाता है।

● बड़ी बछिया का डेढ़ किलो मूत्र कड़ाही में डालकर इतना औटावें कि मूत्र 250 ग्राम रह जाए, फिर ठण्डा होने पर शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें। इसे प्रतिदिन 2-3 बूँद कानों में डालते रहने से बहरापन नष्ट हो जाता है।

आँख दुखना एवं आँखों के अन्य विभिन्न रोग

रोग परिचय—इस रोग से प्रायः सभी परिचित हैं। इस रोग में आँखें लाल हो जाती है, सूज जाती हैं, उनमें सख्त दर्द होता है, पानी बहता रहता है जो बाद में गाढ़े स्राव के रूप में बदल जाता है। रोगी धूप या प्रकाश बर्दाश्त नहीं कर पाता है। रात्रि में सोने पर नींद के कारण आँखें चिपककर बन्द हो जाती हैं जिसके कारण सोकर उठने पर प्रातःकाल बहुत कष्ट होता है। पीप पड़ जाने पर आँख का ढेला गलने लग जाता है।

उपचार

● मैला-कुचैला हाथ या कपड़ा आँख पर कदापि न लगायें। आँखों से पानी बहने पर 15 ग्राम पिसी हल्दी 250 मि.ली. पानी में घोलकर उसमें कोई मलमल का साफ सफेद कपड़ा रंगकर उससे बार-बार आँखों को पोंछना तथा दबाते रहना लाभप्रद है।

● त्रिफला (हरड़ा, बहेड़ा, आँवला समभाग) का चूर्ण 3 ग्राम को 25 मि.ली. पानी में भिगोकर रातभर पड़ा रहने दें। प्रातःकाल इस निथरे हुए पानी से साफ कपड़े की गद्दी तर करके आँखों पर रखने और इस पानी से आँखें धोने से दर्द, पानी बहना, लाली और आँखें चिपक जाने को आराम आ जाता है।

● डाक्टरों वाली रुई का पैड बनाकर दूध में भिगोकर रात को सोते समय आँखों पर रखकर नरमी से पट्टी बांध देने से शोथ और दर्द को आराम आ जाता है।

● कब्ज होने पर हरड़ का मुरब्बा अथवा कोई अन्य हानिरहित कब्जनाशक औषधि सेवन कर कब्ज को अवश्य दूर करें।

● यदि रोगी ताकतवर हो, उसकी आँख में रक्त की अधिकता के कारण जिस ओर की आँख में दर्द हो उस ओर की कनपटी पर 3-4 जोंक लगाकर रक्त निकाल देना भी अत्यन्त लाभकारी है।

● सूर्योदय से पूर्व आँखों में बरगद (बड़) का दूध डालें। तुरन्त आँखों का दर्द मिट जाता है। एक पत्ता तोड़कर 2-3 बूँद प्राप्त किया जा सकता है।

● रीठे के छिलके को पानी में चन्दन की भाँति घिसकर रात को सोते समय सलाई से लगाने से आँख का फूला कट जाता है।

● फिटकरी 5 ग्राम, अर्क गुलाब 200 ग्राम लें। फिटकरी को बारीक पीसकर गुलाब जल से मिला लें। उसकी 2-3 बूँद दिन में कई बार आँखों में डालने से आँख दुखना सही हो जाती है।

● माजूफल और छोटी हरड़ दोनों को पानी में घिसकर नेत्रों में लगाने से नेत्रों की खुजली दूर हो जाती है।

● बढ़िया मिश्री 100 ग्राम, नीलाथोथा 4 ग्रेन लें। मिश्री को खूब बारीक पीसकर फिर इसमें नीलाथोथा डालकर घुटाई करें। जब सुरमा बन जाये, तब कपड़छन कर शीशी में सुरक्षित रखलें। इस सुरमें की 3-3 सलाई सुबह-शाम आँख में लगाने से आँख से बहते हुए पानी की धारा रुक जाती है। यह प्रयोग इतना चमत्कारिक है कि इसको लगाकर कोई मनुष्य किसी प्रियजन की मृत्यु पर रोना भी चाहे, तब भी उसके आंसू नहीं नहीं निकलेंगे।

● यदि आँखों में दर्द, खुजली, जाला हो अथवा मोतियाबिन्दु उतरना प्रारम्भ हो गया हो तो प्रतिदिन प्रातःकाल गाय का ताजा मूत्र 2-3 बूँद आँखों में डालें। मोतियबिन्दु बिना आप्रेशन के कट जाता है। चमत्कारिक योग है।

● नौसादर को पीसकर कपड़छन कर लें। उसे प्रतिदिन आँखों में लगाने से आँख का फूला कट जाता है।

● जंगली कबूतर की बीट पानी में घिसकर आँखों में लगाते रहने से आँखों का जाला कट जाता है।

● सफेद साठी (पुनर्नवा) की जड़ को पानी में घिसकर नेत्रों में लगाने से नेत्र का जाला कट जाता है।

● समुद्रफेन और सोना मक्खी को दोनों को समभाग लें। कूटपीस व कपड़छन सुरमें की भांति आँखों में लगाने से आँख का फूला कट जाता है।

दाँत दर्द, दाँत का कीड़ा (Toothache)

● हींग या लौंग पीसकर खोड़ में भर देना या मलना अथवा लहसुन पर नमक छिड़क कर चबाना, कोकीन लोशन, क्रियोजोट या कार्बोलिक एसिड लोशन लगाना, पिसा तम्बाकू मलने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है।

● काली मिर्च, अकरकरा, लौंग, राई सभी समभाग लें और पीसकर मंजन बनालें। उसे दाँतों पर मलने से दाँतों का दर्द दूर हो जाता है।

● नौशादर 60 ग्राम, फिटकरी 120 ग्राम बारीक पीसकर अंगूरी सिरका 240 ग्राम मिलाकर उबालें। जब सिरका खुश्क हो जाये तब कपड़े से छानकर रखलें। यह 250 से 500 मि.ग्रा. तक औषधि मसूढ़ों पर मलकर मुँह का पानी बहनें दें। थोड़ी देर कुछ खाये-पियें नहीं। दाँतों के दर्द में तुरन्त लाभ होगा।

● कपूर, सत अजवायन, सत पोदीना तीनों को समभाग लेकर शीशी में रखलें। थोड़ी देर यह तरल औषधि बन जायेगी। इसको अमृतधारा कहा जाता है। रुई के फाहे से 1-2 बूँद यह औषधि पीड़ित दाँतों पर मलें। दाँतदर्द में लाभकारी है।

● अमरूद के पत्तों के काढ़े से कुल्ला करने से मसूढ़ों की सूजन और दर्द दूर हो जाता है।

● नीम की छाल के काढ़े से कुल्ला करने से मसूढ़ों का असहनीय दर्द भी दूर हो जाता है।

● नौशादर और सोंठ दोनों समभाग लेकर पीसकर दाँतों पर मलने तथा खोखले स्थान में भरने से दाँत के कीड़े मरकर दाँतदर्द दूर हो जाता है।

● नीलाथोथा लेकर फुलालें फिर पीसलें। इसे 1 ग्राम की मात्रा में ठण्डे पानी में घोलकर गरारे करने से दन्तशूल और दन्तकृमि नष्ट हो जाते हैं।

● काली मिर्च पिसी हुई 2 ग्रेन लेकर जरा से पानी में घोलकर कान में टपका देने से दन्त-पीड़ा तुरन्त मिट जाती है। जब पीड़ा मिट जाए, तब कान में 3-4 बूँद घी टपका दें। इससे कान की सूजन दूर हो जाएगी।

● जरा सा कपूर दर्द वाले दाँत पर रखकर दबा लें। यदि दाढ़ में सूराख हो तो उसमें भर दें। दर्द दूर हो जायेगा।

● दालचीनी, कालीमिर्च, धनिया भुना हुआ, नीला थोथा भुना हुआ, कपूर-

कचरी, सेंधा नमक, मस्तंगी, चोबचीनी प्रत्येक 10 ग्राम तथा पपड़िया कत्था 2 ग्राम, माजूफल 5 नग लें। सभी को कूट पीसकर मंजन बनाकर प्रयोग करने से दन्त रोग नहीं सताते। बाल जीवन भर सफेद न होकर काले ही बने रहते हैं।

● अजवायन खुरासानी, बायविडंग, अकरकरा तीनों को बराबर लेकर कूट पीसकर मंजन बनाकर प्रयोग करने से दाँत स्वच्छ और दृढ़ होते हैं। इसे प्रतिदिन 3 बार मलने से दाँतों की पीड़ा शान्त हो जाती है।

● सफेद फिटकरी 250 ग्राम को बारीक पीसकर 25 ग्राम पिसा हुआ गेरू मिलाकर मंजन करने से दांतों से रक्त निकलना, पस आना, हिलना तथा दाँतों की गन्दगी आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

● नीम के पत्ते जले हुए 100 ग्राम, पिसा सैंधा नमक 10 ग्राम मिलाकर मंजन करने से दाँत उज्ज्वल व मजबूत हो जाते हैं।

● सौंठ, लौंग, काली मिर्च प्रत्येक 20 ग्राम, पुरानी सुपारी 25 ग्राम, तम्बाकू के पत्ते 25 ग्राम, सेंधा नमक 200 ग्राम, गेरू 250 ग्राम लें। सभी को कूट पीसकर मंजन बनालें। इसका प्रयोग करने से हिलते हुए दाँत मजबूत होकर मोती की भाँति चमकने लगते हैं।

● लौंग 10 ग्राम और कपूर 1 ग्राम दोनों को बारीक पीसकर दाँतों पर मलने से दाँतों के सभी रोग और दर्द आदि नष्ट हो जाते हैं।

● मौलश्री की सूखी हुई छाल 250 ग्राम को कूट पीसकर, कपड़छन मंजन बनालें। इसका सुबह-शाम प्रयोग करें आधा घंटा के बाद कुल्ला कर लें। दाँत बुढ़ापे तक मजबूत रहते हैं।

● मौलश्री की दातून करने से हिलते हुए दाँत दृढ़ हो जाते है। पायोरिया नष्ट हो जाती है। दाँत मोती के समान हो जाते हैं।

● सीप को जलाकर थोड़े के नमक के साथ बारीक पीस, छानकर मंजन की भाँति प्रयोग करने से दाँतों का मैल साफ होकर दांत मोती के समान चमकने लगते है।

● सोडाबाईकार्ब (खाने वाला सोडा) और हल्दी दोनों को मिलाकर मंजन करने से दाँतों के अनेकों रोग दूर हो जाते हैं।

● सैंधा नमक और सरसों का तैल दोनों को मिलाकर मंजन करने से पायोरिया, दाँतों का हिलना इत्यादि दूर हो जाता है।

● जामुन की लकड़ी अथवा बबूल की लकड़ी को जलाकर कोयला बनाकर

पीसकर मंजन करने से दाँत मोती के समान चमकीले हो जाते हैं और दर्द भी दूर हो जाता है।

● दन्त रोगों में 'लाक्षादि तेल' या 'अर्क कपूर' की फुरैरी लगाना लाभप्रद है।

● नियमित रूप से दाँतों की सफाई न करने, दाँतों में भोजन के कण फँस जाने, कोई कड़ी (कठोर) वस्तु खाने, खट्टी, मीठी या चटपटी वस्तुओं के खाने आदि कारणों से दाँतों में दर्द होने लग जाता है। अतः दाँतदर्द के रोगी इनका परहेज रखें।

● यदि मुख में अत्यधिक लार (थूक) बनता हो तो इबोमिन टेबलेट (निर्माता मेडीकल इथिक्स) 1-2 गोली दिन में 3-4 बार लें या पोनीटेब टेबलेट (चरक) 1-1 गोली दिन में 4-6 बार जल से अथवा इसी नाम से उपलब्ध सीरप 1-1 चम्मच दिन में 3-4 बार सेवन करें। बच्चों को आधी मात्रा तथा शिशुओं को 10 से 15 बूँद तक दें।

हृदयशूल (दिल का दर्द)

रोग परिचय—यह दर्द प्रायः 45 वर्ष की आयु के पश्चात् हुआ करता है। किन्तु आजकल दूषित वातावरण एवं अनियमित खान-पान के कारण कम आयु में भी होने लगा है। यह दर्द थोड़ी देर तक रहता है और जब तक उपचार हेतु किसी चिकित्सक को बुलाया जाता है और चिकित्सक रोगी के घर पर पहुँच जाता है तब तक यह दर्द दूर हो जाता है। यदि यह दर्द आधा घंटे से अधिक देर तक रहे तो दिल में रक्त की गुठली जम जाने से 'हृदय धमनी काठिन्य (Coronary Thromosis)' का सन्देह करना चाहिए।

कई बार हृदय का दर्द प्रारम्भ होने से पहले रोगी को हृदय के स्थान पर बोझ और बेचैनी सी प्रतीत हुआ करती है और कई बार यह दर्द बिना कुछ पता चले ही एकाएक प्रारम्भ हो जाता है। यह दर्द हृदय के स्थान और छाती की बाँयी ओर तथा बांये बाजू में जाता है और कभी दाँयी ओर की छाती में होता है। कई बार यह दर्द दिल, छाती, बाँये बाजू के अतिरिक्त गर्दन, निचले जबड़े, दाँतों और कमर तक जाता है। कई रोगियों को दर्द बिल्कुल नहीं होता है बल्कि सांस आने में कठिनाई होने लगती है।

इस दर्द से रोगी की छाती जकड़ी हुई प्रतीत होती है। काम करने, चलने-फिरने, दौड़ने, सीढ़ियाँ या ऊँचाई पर चढ़ने, भोजन के उपरान्त पेट फूल जाने,

पांचानांगों के दोष के कारण और सर्दियों में यह दर्द अधिक होता है। मानसिक उत्तेजना एवं क्रोध करने से भी दिल का दर्द प्रारम्भ हो जाता है। रोगी छाती को रस्सी या पेटी (बल्ब) से कसा हुआ अनुभव करता है, पेट फूला हुआ प्रतीत होता है। इस दर्द को पाचनदोष समझ कर रोगी व्यक्ति डकार लेकर दूर करने का निरर्थक प्रयास करता है।

उपचार—याद रखें कि सर्दी लगने, क्रोध तथा आर्थिक चिन्ताओं से दिल के रोग बढ़ जाया करते हैं। सर्दी के मौसम में इस दर्द का अधिक खतरा रहता है। भोजन खाकर शारीरिक या मानसिक कार्य करने से भी यह रोग हो सकता है, अतः खाना खा चुकने पर थोड़े समय तक लेटकर आराम कर लेना चाहिए। देर से पचने वाले भोजन, काफी, चाय, मांस-मसालेयुक्त भारी भोजन आदि खाना इसका कारण है। रोगी तम्बाकू, सिगरेट का सेवन तत्काल छोड़ दे।

● ऐलोपैथी का एमाईल नाइट्रेट का कैपसूल तोड़कर साफ रूमाल पर छिड़ककर रोगी की नाक के पास रखकर उसको लम्बी-लम्बी सांस लेने को निर्देशित करें, रोगी उस समय अपना मुख खुला रखें ताकि औषधि मुँह और नाक द्वारा शीघ्रता से फेफड़ों में पहुँच जाए। इस प्रयोग से हृदय का दर्द दूर हो जाता है। इस प्रयोग के साथ ही नाइट्रो गिलेसरीन, जैसे—नाइट्रिक रिटार्ड (निर्माता बायोकेम) के 1 या 2 कैपसूल जीभ के नीचे रखकर घुलने दें। जिन रोगियों को दिल का दर्द हो जाता हो, वह इस औषधि के कैपसूल हर समय (24 घंटे) अपने पास रखें। कोई काम करने पर यदि उस दर्द का सन्देह हो तो कुछ मिनट पहले ही 1-2 गोली जीभ के नीचे रखकर घुलने दें और थूक कुछ मिनट तक मुख में रहने दें। इस प्रयोग से दिल के दर्द का दौरा तुरन्त रुक जाता है। इन गोलियों को दिन में कई बार चूसते रहना हानिकारक साबित हो सकता है। दर्द दूर हो जाने पर वास्तविक कारण की योग्य चिकित्सक से चिकित्सा करवायें।

● हौम्योपैथी की औषधि क्रेटीगस आक्स. (Crategus-ox Q) 15 बूँद को 30 मि.ली. पानी में मिलाकर पिलाना भी अत्यधिक लाभकारी है। इससे दिल का दर्द और दिल फेल होने का डर दूर हो जाता है। बाद में यही औषधि 10 बूँद पानी में मिलाकर 1-2 घंटे बाद देते रहना चाहिए।

● दिल के दर्द के रोगी को आराम से बिस्तर पर लिटायें। दर्द के स्थान पर इत्र गुलाब की मालिश करें अथवा पिसा हुआ सुहागा, पिसी हुई हल्दी (प्रत्येक 12 ग्राम) को ग्वार पट्ठे का एक तरफ का छिलका दूर करके उस पर उपर्युक्त

सुहागा और हल्दी छिड़क करके तबे पर गरम करके रोगी के हृदय (दिल) पर टकोर करना लाभप्रद है।

● दिल के दर्द के रोगी के बेहोश हो जाने पर निर्बसी (जदबार) 1 ग्राम अर्क गुलाब में घिसकर गले में बूँद-बूँद करके टपकाते रहना चाहिए।

● अर्जुन वृक्ष की छाल पीसकर और कपड़े से छानकर जीभ पर रखकर चूसने से हृदय शक्तिशाली हो जाता है और हृदय का दर्द भी दूर हो जाता है।

● अर्जुन वृक्ष की छाल दूध में औटाकर पीने से हृदय रोग दूर होते हैं।

● गुड़ और घी मिलाकर खाने से हृदय की शक्ति बढ़ती है।

● एक चम्मच शहद प्रतिदिन प्रयोग करने से हृदय सबल हो जाता है। एक चम्मच शुद्ध शहद से 200 कैलोरी शक्ति प्राप्त होती है।

● गिलोय और काली मिर्च दोनों समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण करें। प्रतिदिन 3-3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से हृदय की दुर्बलता नष्ट हो जाती है।

● सूखा आँवला और मिश्री 50-50 ग्राम बारीक कूट पीसकर सुरक्षित रख लें। प्रतिदिन 6 ग्राम की मात्रा में इसे पानी के साथ सेवन करते रहने से हृदय सम्बन्धी समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

● रेहा के बीज 10 ग्राम रात्रि में मिट्टी के बरतन में आधा किलो पानी में भिगो दें तथा रात भर बाहर (ओस) में रखें। प्रातःकाल मल छानकर तथा थोड़ी सी मिश्री मिलाकर सेवन करें। एक सप्ताह के सेवन से हृत्कम्प, हृदय की दुर्बलता और हृदय के अन्य सभी रोग दूर हो जाते हैं।

● अर्जुन की छाल और गुड़ 10-10 ग्राम, दूध 500 ग्राम लें। अर्जुन की छाल का चूर्ण बना लें। फिर इसे दूध में डालकर, पकाकर तथा गुड़ मिलाकर रोगी को पिलायें। इसके सेवन से हृदय की शिथिलता और सूजन बढ़ जाना इत्यादि बीमारियां दूर हो जाती हैं।

गठिया, जोड़ों का दर्द, आमवात, सन्धिवात

रोग परिचय—इस रोग में रोगी को तीव्र ज्वर हो जाता है। शरीर के किसी एक कई जोड़ों में शोथ हो जाती है और उनमें बहुत ही तीव्र दर्द होता है। यह रोग कई प्रकार का हुआ करता है जैसे—बच्चों और युवाओं में गठिया का ज्वर, बूढ़ों में आर्थराइटिस, फाईब्रोसाइटिस, चूतड़ का दर्द, घुटने के जोड़ का दर्द इत्यादि। यह रोग चिकित्सीय दृष्टिकोण से 2 प्रकार का माना जाता है। 1- नया (एक्यूट), 2. पुराना (क्रोनिक)।

नये रोग में रोगी को ज्वर होकर जोड़ सूज जाते हैं और उनमें सख्त दर्द होता है। यह दर्द कभी एक जोड़ में होता है और कभी किसी दूसरे जोड़ में होता है। दर्द और शोथ के स्थान बदलते रहते है। पुराने रोग में जो जोड़ बहुत अधिक सूजकर मोटे हो जाते है और प्राय: जुड़ जाते हैं, उन्हें हिलाना भी कठिन हो जाता है। यह रोग वर्षो तक रहता है और हर जोड़ में रोग हो जाता है। यह रोग एक विशेष प्रकार के कीटाणु (स्ट्रप्टो कोक्स और हेमालाइटिस) से होता है। ये कीटाणु गले और टान्सिल द्वारा रोगी के शरीर में चले जाते हैं। यह रोग 4 वर्ष से 15 वर्ष के बच्चों को भी हो सकता है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक होता है।

गठिया ज्वर का कोई विशेष परीक्षण नहीं खोजा जा सका है। आधुनिक (ऐलोपेथी) चिकित्सकों के मतानुसार यदि रोगी को सोडा सैलीसिलास नामक औषधि 2-3 दिन खिलाने पर ज्वर, शोथ और दर्द कम न हो तो गठिया (छोटे जोड़ों का दर्द) विसर्प, डेंगु फीवर, आरिटा आमाइलाईटिस आदि का सन्देह करना चाहिए। इस रोग का उपचार रोग उत्पन्न होते ही अर्थात् शीघ्र कर लेना चाहिए क्योंकि चिकित्सा (उपचार) न करने से हृदय और मस्तिष्क तक रोगग्रस्त हो जाते हैं। उस अवस्था में यह रोग खतरनाक समझा जाता है।

उपचार

● 20 ग्राम गिलोय को जौ कूटकर 250 ग्राम पानी में औटायें। जब पानी चौथाई रह जाए तब इस काढ़े के साथ एरन्ड की जड़ का चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करें। गठिया नाशक अति उत्तम प्रयोग है।

● कपूर 10 ग्राम, तिल का तैल 40 ग्राम, दोनों को शीशी में भरकर मजबूत कार्क लगा दें तथा शीशी को धूप में रख दें जब कपूर और तैल मिलकर एक-जान हो जायें, तब इसे गठिया तथा अन्य वात विकारों में मालिश हेतु काम में लें। अल्प समय में इसके प्रयोग से लाभ हो जाता है।

● बकरी का मूत्र 6 कि. ग्रा., लाल मिर्च 250 ग्राम दोनों को एक मिट्टी के बर्तन में पकायें। जब पकते-पकते मूत्र मात्र 1 किलो रह जाये तो उतरकर छान लें। इसकी नियमित मालिश करने से लाभ हो जाता है।

● असगन्ध की जड़ और खांड दोनों को सममात्रा में लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखें। इसे 5 से 10 ग्राम तक की मात्रा में गरम दूध से खायें। गठिया का रोगी भी इस प्रयोग से स्वस्थ हो जाता है।

● अजवायन, शुद्ध गुग्गुल, माल कंगनी, काला दाना—सभी औषधियाँ

सममात्रा में लेकर कूट-पीसकर जल के साथ चने के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। यह 3 से 5 गोलियाँ दुग्ध से खायें। गठिया नाशक सर्वोत्तम घरेलू इलाज है।

● लौंग 1 ग्राम, सम्भालू के पत्ते (कोपलें) 20 ग्राम लें। दोनों को बारीक पीसकर बेर के आकार की गोलियां बनाकर सुरक्षित रखें। ये 2-3 गोली सुबह-शाम बासी पानी से खायें।

● सम्भालू, कलौंजी, मैथी और अजवायन चारों को समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखें। 3 ग्राम चूर्ण को पानी के साथ नित्य फांकें। गठिया तथा कमरदर्द में अत्यधिक लाभप्रद है।

● इन्द्रजौ (आवश्यकतानुसार) लेकर बारीक पीसकर रखलें। फिर इसमें दुगुनी मात्रा में खान्ड मिलाकर प्रतिदिन 10 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन करें। महीनों का जुड़ा रोगी कुछ ही दिनों में खुलकर ठीक हो जाएगा।

● एरन्ड का तैल, लहसुन तथा रत्नजोत का रस प्रत्येक 6-6 ग्राम लें। तीनों को मिलाकर पीने से 3-4 दिन में ही गठिया का दर्द नष्ट हो जाता है।

● भेड़ का दूध 125 ग्राम, काला जीरा 6 ग्राम एवं अफीम आधा ग्राम लें। तीनों को घोट पीसकर मिलाकर मालिश करने से गठिया का दर्द नष्ट हो जाता है। इसकी सम्पूर्ण शरीर पर भी मालिश की जा सकती है।

● नमक 20 ग्राम, अजमोद 30 ग्राम, सौंठ 50 ग्राम, हरड़ 120 ग्राम लें। सभी को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। प्रतिदिन 6 ग्राम चूर्ण जल के साथ खायें। गठिया नाशक उत्तम योग है।

● शतावर और विधारा 10-10 ग्राम का काढ़ा बनाकर पीना गठिया रोग में परम लाभप्रद है।

● मिट्टी का तैल 40 ग्राम, कपूर पिसा हुआ 10 ग्राम लेकर दोनों को शीशी में डालकर मजबूत कार्क लगाकर आधा घन्टा तक शीशी में धूप में रखें। फिर शीशी हिलाकर सुरक्षित रखलें। शरीर में चाहें कहीं भी दर्द हो वहाँ पर इसकी धीरे-धीरे मालिश करने के बाद सिकाई करें। दर्द ठीक हो जाएगा। यह वातनाशक तैल वात रोगियों के लिए अमृत समान लाभप्रद है।

● तारपीन का तैल 30 ग्राम, अरन्डी का तैल 30 ग्राम, सैंधानमक बारीक पिसा हुआ 10 ग्राम, कपूर 6 ग्राम, पिपरमैन्ट का तैल 20 बूँद लें। सभी को एक शीशी में मिलाकर सुरक्षित रखलें। शीशी को हिलाकर पीड़ायुक्त शरीर के

भाग पर दिन में 2-3 बार मलें। इसके प्रयोग से भयंकर से भयंकर वायु-पीड़ा मिटती है।

● चीते की जड़, इन्द्र जौ, पाढ़ की जड़, कुटकी, अतीस और हरड़ सभी समभाग लेकर कूट पीसकर कपड़ छनकर शीशी में सुरक्षित रखलें। इसे 2 से 4 ग्राम तक की मात्रा में गरम पानी से खायें। इसके सेवन से समस्त वात रोग निश्चित रूप से नष्ट हो जाते हैं। कम से कम एक माह सेवन करें।

● अरन्डी का तैल 20 ग्राम तथा अदरक का रस 20 ग्राम लें। दोनों को मिलाकर धीरे-धीरे पीवें। ऊपर से 2-4 गरम पानी पी लेने से भयंकर से भयंकर वायु-शूल नष्ट हो जाता है।

गठिया (वात रोग) नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

रूमालिया टेबलेट (हिमालय)—1-1 टिकिया दिन में 3 तथा तीव्रावस्था में 2-2 टिकिया 3 बार दें। 1-2 सप्ताह में आराम होने लगता है। चिकित्सा 4-6 माह जारी रखनी पड़ सकती है।

नोट—इसी नाम से इसी कम्पनी के मलहम (क्रीम) की पीड़ित अंग पर मालिश करें तथा यह टिकिया गर्भवती स्त्रियों का कदापि न दें।

मायोस्टाल कैपसूल (धूतपापेश्वर)—1-2 कैपसूल दिन में 2-3 बार अथवा आवश्यकतानुसार सेवन करायें। खाली पेट सेवन न करें।

लिक्विड एक्सट्रेक्ट आफ सरिवा (झन्डू)—4 से 8 मि.ली. दिन में 3 बार जल से प्रयाग करें।

शुण्ठियादि टेबलेट (झन्डु)—1 से 4 गोली दिन में 3 बार खायें।

पिप्पली चूर्ण (झन्डू) आधा से 2 ग्राम तक दिन में 3 बार जल से खायें।

पीड़ाहर टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 2-2 टिकिया दिन में 2-3 बार या जरूरत के मुताबिक सेवन करें। इसी गोली को खाते ही पीड़ा शान्त हो जाती है।

शूलान्तक कैपसूल (गर्ग)—1-2 कैपसूल दर्द में गरम जल से खायें।

वातारि टेबलेट (धन्वन्तरि)—1-2 टेबलेट सुबह शाम लें। ऊपर से अरन्ड का तैल गरम दूध में मिलाकर पिलायें। यदि अरन्ड का तैल न पी सकें तो मिश्री मिलाकर दूध पियें। सिकाई करें। कब्ज हो तो कोई कब्जनाशक योग लें।

अर्थाजोलडीन टेबलेट (मार्तन्ड)—1-2 गोली दिन में 3-4 बार भोजनोपरान्त सेवन करें।

आयडोप्रिन मरहम (मार्तन्ड)—वेदना, शोथ एवं जीवाणु नाशक उत्तम मलहम। पीड़ित अंग पर मालिश करें।

रूमेटी कोल टेबलेट (मार्तन्ड)—2-2 गोली दिन में 3-4 बार गरम दूध या चाय से सेवन करें। जब तक सन्धियों की शोथ और वेदना शान्त न हो जाए, सेवन जारी रखें। यदि दर्द अधिक हो तो इसी कम्पनी की अर्थापाइरिन या पेनाल्जिन या इबूफेनक 1-1 गोली भी दिन में 3-4 बार दें।

नोट—गर्भावस्था में टेबलेट अर्थापाइरीन का सेवन न करें।

कोलिकगन टेबलेट (मार्तन्ड)—शूलनाशक, ज्वरहीन, शोथहर एवं वेदनानाशक है। यह 1-2 टेबलेट दिन में 3-4 बार सेवन करें।

वातकिल कैपसूल (अतुल फार्मेसी)—1-1 कैपसूल सुबह-शाम दूध या चाय से सेवन करें। दही, चावल, मिठाई, तैल, शीतल तथा गरिष्ठ भोज्य पदार्थ न खायें। रोग की तीव्रता अधिक हो तो मात्र दुग्धपान करें। दर्द और सूजन की तीव्रता में इसी फार्मेसी के 'वातकिल मलहम' की मालिश करें। कब्ज न रहने दें। सप्ताह में 1-2 बार दूध में कैस्टर आयल मिलाकर पियें, ताकि कोष्ठ शुद्ध रहे।

विरेचन (जुलाब) हेतु कुछ अन्य उपयोगी योग

● रूमीमस्तंगी 3 ग्राम, मिश्री 6 ग्राम दोनों को बारीक पीसकर (यह 1 मात्रा है) रात्रि में सोते समय गर्म पानी या गरम दूध से लें। लगातार 3-4 दिन तक सेवन से कोष्ठबद्धता (कब्ज) से सदा-सदा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

● जुलाफा हरड़ 3 ग्राम, मिश्री 3 ग्राम दोनों को बारीक पीसकर फाँकने से तथा ऊपर से गरम जल पीने से कब्ज दूर हो जाती है। चाहें कितना ही सख्त मेदा हो, यह योग निष्फल नहीं होता है।

● स्वर्णक्षीरी (सत्यानासी) के 10 ग्राम बीज को हाथ में लेकर कई बार जोर-जोर से दबाने से टट्टी की हाजत होकर दस्त आ जाता है।

● सोये के बीजों को पानी में पीसकर गुदा पर लेप करने से तुरन्त दस्त आ जाता है। अनुभूत योग है।

मासिकधर्म दर्द से आना, कष्टार्तव

● गाजर के बीज, एलुआ, अमरबेल प्रत्येक 10 ग्राम, सौंठ, अतीस और केशर, मोंगरा प्रत्येक 5 ग्राम लें। सबको एकत्र सूक्ष्म पीसकर कपड़छन कर तिलों

के जल से (12 घंटे पूर्व काले तिलों को जल में भिगोय रखें) 125 मि.ग्रा. की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लें। यह 1-1 गोली सुबह-शाम खाकर ऊपर से तिलों का जल 15 मि.ली. पियें। अत्यन्त लाभप्रद योग है।

● तिल, सहजन, कपास तथा ब्रह्मदन्डी की जड़ की छाल, मुलहठी, पिप्पली, काली मिर्च, सौंठ प्रत्येक 100 ग्राम लें। सभी को एकत्र कर बारीक पीसकर (चूर्ण बनाकर) सुरक्षित रखें। यह चूर्ण दिन में 2 से 3 ग्राम तक की मात्रा में 2 बार गरम चाय के साथ सेवन करने से दर्द तथा रजोरोध दोनों दूर हो जाते हैं।

● कलौंजी, काले तिल और सपिस्तां समभाग लेकर जल में काढ़ा बनायें। 30 मि.ली. की मात्रा में यह काढ़ा 3 ग्राम गुड़ के साथ प्रयोग करने से पीड़ा और कृच्छार्तव दूर हो जाता है।

● रेशमी कपड़े को जलाकर भस्म बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 2 से 5 ग्राम की मात्रा में मट्ठे के साथ खिलाने से कष्टार्तव तत्काल शान्त हो जाता है।

प्रसव-समय का दर्द (Labour Pains)

कई स्त्रियों को बच्चा पैदा होने के समय काफी दर्द और कष्ट होता है। शहरी वातावरण में रहने वाली विशेषत: धनवान समाज की स्त्रियों को प्रसव-पीड़ा अधिक होती है। कई बार अनुभवहीन नर्स या दाई झूठे दर्दों को सच्ची प्रसव-पीड़ा समझकर बच्चा पैदा कराने का यत्न करने लग जाती हैं, जिसके कारण जच्चा और बच्चा दोनों को हानि होती है। कच्ची (झूठी) दर्द पेट के सामने से उठती है और अनियमित होती है। ध्यान रखें कि सच्ची (वास्तविक) प्रसव पीड़ा पीठ की ओर से प्रारम्भ होकर धीरे-धीरे पेडू के चारों ओर फैलती जाती है। इन दर्दों के जोर से गर्भाशय में रुक-रुककर सिकुड़ाव की लहरें गर्भ के अन्तिम समय में उठने लग जाती है जो कैस्टर आयल से पिलाने से दूर हो जाती है।

बच्चा कष्ट से पैदा होने के कुछ विशेष कारण हुआ करते हैं—सख्त कब्ज, मूत्राशय का मूत्र से भरा होना, सर्दी लग जाना, गर्भस्थ शिशु का सिर असाधारण रूप से बहुत अधिक बड़ा होना या गर्भाशय में बच्चा का प्राकृतिक दशा में न होना अर्थात् सिर नीचे की ओर होना इत्यादि। सच्ची प्रसव पीड़ा में प्रारम्भ हो जाने पर गर्भवती स्त्री को कमरे में धीरे-धीरे चलना-फिरना लाभप्रद है। क्योंकि इस प्रक्रिया से गर्भाशय का मुख अधिक सरलता से खुल जाता है। साथ ही 30 मि.ली. कैस्टर ऑयल गरम दूध में मिलाकर अथवा सनलाईट साबुन गरम पानी

में घोलकर गर्भवती स्त्री को एनिमा लगाना भी लाभप्रद होता है ताकि उसकी अन्तड़ियाँ साफ हो जाये और प्रसव पीड़ा तेज हो जाए। यदि गर्भवती स्त्री को काफी समय से मूत्र नहीं आया हो तो नर्स या दाई को चाहिए कि कैथेटर (रबड़ की नलिका) डालकर मूत्राशय से मूत्र निकालें। सदैव ध्यान रखें कि—मूत्राशय में मूत्र भरा रहने पर भी बच्चा पैदा नहीं होता है।

उपचार

● यदि बच्चा पैदा करने वाली स्त्री मोटी हो तो उसके उदर और पीठ पर जैतून का तैल या गुलरोगन मलने से बच्चा आसानी से हो जाता है।

● जब प्रसव में देर हो किन्तु समय पूरा हो गया हो तो कलिहारी की जड़ काँजी में पीसकर पैरों के तलुवों पर लेप करें। तुरन्त प्रसव हो जाएगा। प्रसवोपरान्त तुरंत ही तलवों को साबुन व जल से भली-भांति धोकर साफ कपड़े से पोंछ दें।

● स्त्री के गर्भाशय का मुख दो अंगुल खुल जाने पर (जब गर्भाशय शिशु का सिर गर्भाशय में सिर चमकने (दीखने लगे तो) अपामार्ग की ताजा जड़ धो-पौंछकर काले धागे में स्त्री के कमर में बाँध देने से शीघ्र प्रसव हो जाता है। प्रसवोपरान्त इसे तुरन्त ही खोलकर फेंक दें।

● गर्भाशय का मुख खुलते ही स्त्री को सुहागा का कपड़छन चूर्ण 4 ग्राम, बांस के पत्तों का काढ़ा 15 से 30 मि.ली. के साथ पिलाने से तुरन्त प्रसव हो जाता है। नोट—यदि 1 मात्रा से लाभ न हो तो 1 घंटे बाद दूसरी मात्रा दे सकते हैं।

● गर्मी का मौसम होने पर खट्टे अनार का रस 120 मि.ली. में 48 मि.ली. तुरंजबीन मिलाकर स्त्री को पिलाने से तुरन्त प्रसव हो जाता है।

● अमलतास का काला गूदा 24 ग्राम लेकर पानी में उबालें। जब 120 मि.ली. पानी शेष रहे, तब गुड़ मिलाकर पिलाने से तुरन्त प्रसव हो जाता है।

● दो अण्डों का छिलका और मजीठ 6 ग्राम लें। दोनों को पीसकर थोड़े से पानी के साथ निगलने से तुरन्त बिना कष्ट के प्रसव हो जाता है।

● सर्दी का मौसम होने पर स्त्री को मुर्गे के मीट का पका हुआ शोरबा गरम-गरम पिलाने से बच्चा आसानी से हो जाता है।

● भैस के गोबर का रस 2 तोला, भैस के पाव भर दूध में मिलाकर पिलाना कष्ट प्रसव में रामबाण की भाँति अचूक कार्य करता है।

नोट—सच्ची प्रसव पीड़ायें शुरू हो जाते ही स्त्री को बैठने और जोर लगाने को कदापि न कहें, क्योंकि इस क्रिया से गर्भाशय का मुख बहुत अधिक खुलकर बच्चा वाली थैली फट जाती

है इससे बच्चा पैदा होने में बहुत कष्ट होता है। प्रसव पीड़ा बहुत जोर से शुरू होने पर ही गर्भवती स्त्री को कूथने और जोर लगाने को आदेशित करें।

प्रसवोत्तर वेदना (Postpartum Pain)

पहला बच्चा पैदा होने पर दर्द कम होता है किन्तु अधिक बच्चा जन चुकने वाली स्त्रियों को यह दर्द अधिक होता है। यह दर्द प्राय: बच्चा पैदा होने के बाद 2-3 दिन अथवा 6 दिन तक रहकर दूर हो जाता है। बच्चा पैदा होने के बाद गर्भाशय में बार-बार सिकुड़ाव पैदा होता है और फैली हुई बच्चेदानी अपने प्राकृतिक साइज पर आने के कारण प्रसूता स्त्री को सख्त दर्द होता है जिसके कारण उसे नींद तक नहीं आती है। यह दर्द होना भी जरूरी है। अत: इसमें घबराने की जरूरत नहीं है क्योंकि गर्भाशय का मुख फैला हुआ और ढीला रह जाए तो इससे स्त्री का पेट बढ़ जाता है और उसको कमर दर्द रहने लग जाता है।

उपचार

● ईंट गरम करके पेडू पर सेंक करने से यह दर्द दूर हो जाता है तथा गर्भाशय में रुके पड़े गन्दे रक्त के छिछड़े भी निकल जाते हैं और गर्भाशय के प्राकृतिक स्थान पर आने में भी सहायता मिलती है।

● प्रसवोपरान्त 2-3 दिन तक पिप्पल्यादि चूर्ण 2 से 4 तक गरम गुड़ के जल के साथ सुबह-शाम अथवा दर्द के समय खाना अत्यन्त लाभप्रद है।

● गरम•पानी की बोतल से प्रसूता की नाभि पर सेंक करना लाभकारी है।

● यवक्षार 2 ग्राम को गरम गौघृत 6 ग्राम के साथ प्रतिदिन 4 बार 4-5 दिन तक (जब तक दर्द दूर न हो जाए) सेवन करना भी लाभप्रद है।

● भुनी हुई हींग 250 मि.ग्रा. को गाय के 6 ग्राम घी के साथ देना भी लाभप्रद है।

● यवक्षार 2 ग्राम को पिंप्पलादि क्वाथ 15 से 30 मि.ली. के साथ दर्द के समय अथवा प्रातः-सायं देना भी लाभप्रद है।

त्रिधारा नाड़ी का दर्द (Trgeminal Nuralgia)

रोग परिचय—यह दर्द आँखों की भवों, गालों एवं ठोड़ी में प्राय: दोपहर से पूर्व शुरू हो जाता है जो छुरी मारने की भाँति होता है। यह दर्द पुराना हो जाने पर जल्दी-जल्दी होने लग जाता है और कभी 2-4 बार होकर स्वयं ही दूर

हो जाता है। वैसे यह रोग हर आयु में हो सकता है किन्तु 50 वर्ष की आयु से पहले बहुत ही कम होते देखा गया है। यह दर्द बड़ी आयु में विशेषकर स्त्रियों को होता है। इस दर्द में 1 आँख के ऊपर और कभी-कभी चेहरे के आधे भाग में दर्द होता है। यह दर्द सीलन युक्त मकानों में रहने, थकावट, चिन्ता, क्रोध एवं शारीरिक कमजोरी आदि कारणों से उत्पन्न हो जाया करता है।

उपचार

● त्रिफला चूर्ण 3 ग्राम और पंचसकार चूर्ण 2 ग्राम एकत्र कर गरम जल से खायें, ताकि 1-2 पतले दस्त आकर पेट साफ हो जाए। इससे दर्द तुरन्त दूर हो जाएगा।

● दालचीनी, सौंठ, बादाम की गिरी को जल में घिसकर एक चम्मच में डालकर गरम करें तथा इसे दिन में 2-3 बार रोगी के माथे पर लगायें। इस प्रयोग से तत्काल दर्द शान्त हो जाता है।

● सफेद फिटकरी 12 ग्राम को आक के दूध में खरल करके सुखालें तथा धतूरे के ताजे पत्तों के रस में खरल करके गोली बनाकर 2 किलो उपलों के बीच रखकर आग लगादें। उपले जल जाने एवं राख ठण्डी हो जाने पर टिकियों को पीस-छानकर सुरक्षित रखलें। इस भस्म को 125 से 250 मि.ग्रा. तक मलाई में लपेटकर खिलाने से भवों के दर्द को आराम हो जाता है।

● भोजनोपरान्त 'दशमूल घृत' या 'रास्नाघृत' 12 ग्राम (भोजन के बाद अथवा भोजन के मध्य में) दिन में 1-2 बार खाना भी उपयोगी है।

● फिटकरी भस्म 500 मि.ग्रा., संगजराहत भस्म 200 मि.ग्रा., गोदन्ती हरताल भस्म 200 मि.ग्रा., त्रिफला भस्म 300 मि.ग्रा. सभी को एकत्र कर खरलकर एकजान हो जाने पर इसकी 4 मात्राऐं बनाकर 1-1 मात्रा सुबह-दोहपर तथा शाम को मधु या गरम जल से खाने से भवों का दर्द नष्ट हो जाता है।

कट जाने पर होने वाले दर्द व घाव

● नीम के पत्ते, सिन्दुआर के पत्ते, पत्थर चूर (पाषाणभेद) के पत्ते प्रत्येक 100 ग्राम लेकर जल से धोकर सिल पर पीसकर रस निचोड़ कर कपड़े से छान लें। फिर कड़ाही में डालकर 250 मि.ली. नारियल के तैल में पकाकर (मन्दाग्नि पर पकायें) तेल सिद्ध होने पर इसमें विशुद्ध कार्बोलिक एसिड 125 मि.ली. मिलाकर सुरक्षित रखलें। यदि मरहम बनाना चाहते हों तो सफेद मोम को पिघलाकर

इसमें मिलालें । मरहम बनाकर सुरक्षित रखलें । कटे घाव, जख्म पर इस मरहम को दिन में 2-3 बार लगायें । अत्यन्त लाभप्रद है ।

● व्रणरोपण रस (रस योग सागर) 1 गोली को मधु, शुद्ध गूगल या ताजे जल के साथ दिन में 2 बार सेवन करें । यह कटे या आघातीय व्रण, जख्म, समस्त नाड़ी व्रण और मकड़ी के विष से उत्पन्न व्रण में लाभप्रद है ।

● व्रणान्तक रस (रसयोग सागर) आवश्यकतानुसार 1 से 3 गोलियाँ तक घी के साथ दिन में 2 बार प्रयोग करें । यह प्रत्येक प्रकार के कटे, जले एवं घावों के लिए लाभप्रद है । उपदंश से उत्पन्न व्रणों में भी लाभकारी है । भोजन में गाय, भैंस का घी अधिक प्रयोग करें । घर पर बनाना चाहें तो निर्माण विधि यह है—शुद्ध सफेद सोमल 1 भाग, शुद्ध सिंगरफ 2 भाग, श्वेत कत्था 2 भाग सभी को काले पत्थर वाले उत्तम खरल में मिलाकर अदरक के स्वरस में 3 दिन तक खरल करके सरसों के आकार की गोलियाँ बनालें । इन्हें सुखाकर काँच की कार्क युक्त शीशी में सुरक्षित रखलें ।

● व्रणापहारी रस (रसयोग सागर) 1 से 2 गोली (120 से 240 मि.ग्रा.) त्रिफला क्वाथ या मंजिष्ठादि अर्क 15 से 30 मि.ली. के साथ 2 बार प्रतिदिन सेवन करें । यह हर प्रकार के व्रण, दुष्ट व्रण आदि में गुणकारी है ।

● यदि शोथ या फोड़ा काफी सूजकर अधिक दर्द कर रहा हो तो शरपुंखा की जड़ की छाल व पत्ते, नीम के पत्ते और तुख्मलंगा प्रत्येक बराबर-बराबर लेकर जल में पीसकर लुगदी बनालें । इसे कपड़े की गोल पट्टी और मध्य में एक छोटा छिद्र करके पीड़ित स्थान पर गरम-गरम चिपका दें । इसे 12-12 घंटे बाद बदलते रहें । इस योग से दर्द तुरन्त ही दूर हो जाएगा तथा साथ ही फोड़ा पककर बह जाएगा ।

● महामन्जिष्ठारिष्ट (शारंगधर संहिता) तथा सारिवाद्यासव (भै. र.) प्रत्येक 15 मि.ली. समभाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त दिन में 2 बार सेवन करें । फोड़ों और घावों के दर्द में पूर्ण लाभ हेतु अत्यन्त उत्तम औषधि है ।

● जात्यादिघृत (शारंगधर संहिता) बाजार में उपलब्ध है अथवा स्वयं बनालें—नीम के ताजे पत्ते, पटोल के पत्ते, मैनफल, हल्दी, दारु हल्दी, कुटकी, मजीठ, मुलहठी, करन्ज के पत्ते, नेत्रवाला और अनन्त मूल प्रत्येक 12 ग्राम लें। सभी को एकत्रकर जल में पीसकर लुगदी बनालें । इस लुगदी से चार गुणा गौघृत और 16 गुणा अधिक जल मिलाकर मन्द आग पर पाक करते हुए घृत सिद्ध

करलें । फिर इसे सुरक्षित रखलें । यदि इसे और लाभकारी बनाना चाहते हों तो इसे छानकर आवश्यक मात्रा में मोम एवं नीला तूतिया का फूला 12-12 ग्राम मिलाकर लेप जैसा मरहम बनाकर सुरक्षित रखलें । इसे घाव, फोड़े-फुन्सी पर दिन में 2-3 बार लगाकर पट्टी बाँधा करें । यह दुष्ट व्रण, फोड़े, फुन्सी, नासूर, गम्भीर व्रण तथा अन्य व्रणों में अतिशीघ्र लाभ प्रदान करने वाला योग है ।

न्यूमोनिया फुफ्फुसावरण प्रदाह

रोग परिचय—यह दर्द छाती के अन्दर फेफड़ों के ऊपरी पर्दों में शोथ आ जाने के कारण हुआ करता है । इन पर्दों की दो तहें होती हैं । निचली तहें फेफड़े के ऊपर चिपकी रहती हैं और दूसरी तह छाती का भीतरी दीवार के साथ लगी रहती हैं । इस रोग के उत्पन्न होने का प्रमुख कारण—सर्दी लग जाना, पानी में भीगना, चोट लग जाना, क्षय रोग होने के कारण उसमें संक्रमण का होना आदि है । प्राय: ज्वर के समय अथवा न्यूमोनिया रोग होने से पूर्व अथवा बाद में यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है । यदि न्यूमोनिया में छाती में सख्त दर्द हो तो यह पसली के दर्द (प्लूरिसी) का लक्षण है । आमतौर पर न्यूमोनिया रोग में ज्वर, खाँसी रहने के साथ कफ अधिकता के साथ निकला करता है तथा रोगी को सांस लेने में बहुत कष्ट हुआ करता है ।

यह दर्द छाती में बाँयी या दांई ओर की पसलियों में अत्यधिक तीव्रता के साथ हुआ करता है जो उस ओर के कन्धे तक जाता है । जोर लगाकर खाँसने या रोगग्रस्त छाती की ओर करवट से लेटने पर रोगी को दर्द और कष्ट बढ़ जाया करता है । इस रोग में ज्वर शुरू होकर 101 से 103 डिग्री फोरेनहाइट तक हो जाया करता है तथा रोगी को शुष्क खाँसी आया करती है और उसे सांस लेने में भी कष्ट होता है । स्टेथोस्कोप छाती पर लगाकर मर्मर ध्वनि सुनने पर पहले रगड़ की आवाज तत्पश्चात् गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई पड़ती है । फुफ्फुसावरण में कभी-कभी पानी पड़ जाता है और कभी-कभी पीप पड़ जाती है और शुष्क शोथ हो जाती है ।

उपचार

● रोगी को आराम से बिस्तर पर लिटाये रखें । यदि इस रोग में रोगी को ज्वर काफी समय तक रहे और बार-बार कम्पन होने लगे तो समझलें कि रोगी

के फुफ्फुसावरण में पूय (पीप) पड़ चुकी है। ऐसी अवस्था में कुशल चिकित्सक उस स्थान को सुन्न (संज्ञाहीन) करके छटी और सातवी पसली के मध्य में सुई प्रवृष्टि करके पूय निकाल लेते हैं। इस रोग से ग्रसित रोगी को शीघ्रपाची भोजन—मूंग की दाल, वार्लेवाटर इत्यादि देना लाभप्रद होता है। अधिक मात्रा में पानी पीना हानिकारक होता है।

● नीलान्जन भस्म 120 से 240 मि.ग्रा. को पीपल के चूर्ण सममात्रा में मिलाकर मधु से सेवन करवाकर ऊपर से मुलहठी डेढ़ से 2 ग्राम तक का फान्ट पिलाना लाभकारी रहता है। फान्ट निर्माण विधि—मुलहठी चूर्ण को थोड़े से जल में भिगोकर 12 घंटे तक रखें। तत्पश्चात् उसे छानकर व्यवहार में लायें। इसके सेवन से फेफड़ों के पार्श्व में संचित जल निकल कर दर्द शान्त हो जाता है। इस रोग का दिन में 2 बार सेवन करें।

● शुभ्रा भस्म (भेड़ के मूत्र में बनी श्वेत फिटकरी की भस्म) 120 से 480 मिग्रा. मधु या शर्बत बनफशा से दिन में 2-3 बार देना भी लाभप्रद है। यह योग पार्श्वशूल को नष्ट कर देता है।

● आरोग्य बर्द्धिनी वटी (रसरत्न समुच्चय) 1-2 गोली, बंग भस्म 480 से 960 मि.ग्रा. मिलाकर भृंगराज की जड़, पुनर्नवा श्वेत सर्वांग तथा देवदारु और वासक के क्वाथ से सुबह-शाम खिलाना लाभकारी है।

● सौंठ, कुचला और बारहसिंगे को जल में घिसलें। तदुपरान्त इसमें 240 से 480 मि.ग्रा. तक अफीम मिलाकर इसे हल्का सा गरम करके पीड़ित स्थान (छाती) पर लेप लगाकर ऊपर से गरम जल की बोतल से सेंक करना इस रोग में रामबाण की भांति अचूक कार्य करता है।

यकृत का दर्द, यकृत शूल

रोग परिचय—इस रोग में यकृत बढ़ जाता है और उसमें दर्द होने लगता है। इस रोग के उत्पन्न होने के निम्न कारण होते हैं—यकृत में फोड़ा होना, एमीबिक पेचिश के कीटाणु द्वारा यकृत में पहुँचकर शोथ उत्पन्न कर दें, जिसके फलस्वरूप यकृत के दाँए लोथड़े में फोड़ा बनकर यकृत बढ़ जाना। इसमें रोगी को धीमा ज्वर, कभी-कभी पेचिश रोग पुराना हो जाने पर दिन में 2-3 बार पेट में मरोड़ उठना इत्यादि कष्ट हो जाते है। आधुनिक चिकित्सक फोड़े में अधिक पीप पड़ने पर एसपाइरेटर नामक यन्त्र से पीप निकाल लेते हैं। इस फोड़े को किसी यन्त्र

को प्रविष्टि करके अथवा औषधि सेवन द्वारा चीरना या फोड़ना अथवा घाव को धोना बेहद हानिकारक सिद्ध होता है। यकृत में रक्त की अधिकता (Congesttion of the liver) के कारण से भी यह रोग हो जाया करता है। इसमें दांई पसलियों के नीचे बोझ और मामूली दर्द होता है। अजीर्ण, पेट फूल जाना, भूख न लगना, पेट में गैस, भोजनोपरान्त पेट में भारीपन, सिरदर्द, अत्यधिक मांस व मदिरा का सेवन, गर्मी की अधिकता, पुरानी कब्ज, फेफड़ों या दिल के रोगों इत्यादि के कारण भी यह रोग हो जाया करता है।

यकृत शोथ (Hepatities)—यकृत के पर्दे में शोथ हो जाने पर यकृत के स्थान पर दर्द होता है। और रोगी को सांस कठिनाई से आता है किन्तु यकृत के अन्दर शोथ हो जाने पर ज्वर भी हो जाता है और दांयी ओर निचली पसलियां पर यकृत स्थान को दबाने पर दर्द होता है।

उपचार—रोगी को बिस्तर पर लिटाये रखें। वास्तविक (मूल) कारण का निरीक्षणोपरान्त उपचार करें। कब्ज को दूर करने के लिए रात्रि को सोते समय पंचसकार चूर्ण 2 ग्राम अथवा त्रिफला चूर्ण 3 ग्राम गरम जल से खायें।

● कुमार्यासव (योग रत्नाकर) भोजनोपरान्त 15 से 30 मि.ली. समान जल मिलाकर दिन में 2 बार लें।

● शूलवज्रिणी (रस चन्डांश) 1 से 4 गोलियां (250 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक) बकरी के दूध से दिन में 3 बार सेवन करना लाभप्रद है।

● मकोय के पत्तों का रस 15 मि.ली. समभाग नीम के पत्तों के रस के साथ मिलाकर सुबह-शाम. दिन में 2 बार सेवन करना लाभकारी है।

ऐंठन (आक्षेप) से उत्पन्न दर्द

रोग परिचय—जब शरीर के किसी अंग में आक्षेप (ऐंठन) के साथ दर्द होता है तो वह उद्वेष्ट (Cramps) कहलाता है। यह दर्द प्रायः टांगों, हाथ-पैरों अथवा शरीर के दूसरे भागों के पुट्ठों तथा अन्तड़ियों में सड़ाँध और अन्य दूषित पदार्थों के एकत्र हो जाने के फलस्वरूप होता है। हैजा में भी इस प्रकार के आक्षेप उत्पन्न हो जाते हैं। सर्दी लग जाने के कारण भी यह रोग हो जाया करता है। टाईप करने वालों अथवा दिन-रात लिखने वालों की कलाइयों में भी ऐंठन हुआ करती है।

उपचार

● लक्ष्मीविलास रस (रस योग सागर) 1 से 2 गोलियाँ मधु से दिन में 3 बार सेवन करना लाभप्रद है। रोग की तीव्रता तथा गम्भीर दशा में मृतसंजीवनी सुरा में यह औषधि खरल करके सेवन करें।

● महावात विध्वंशन रस (रस चन्डांश) 1 से 2 गोलियाँ सिन्दुआर पत्र के स्वरस 10 मि.ली. और मधु के साथ दिन में 2 बार सुबह और शाम सेवन करना लाभप्रद है।

● महायोगराज गुग्गुल (शारंगधर संहिता) 1 से 2 गोलियाँ तक मधु से चटाकर ऊपर से रास्नादि क्वाथ 15 से 30 मि.ली. दिन में 2 बार पिलायें।

● दशमूल क्वाथ (शार्गधर संहिता) 15 से 30 मि.ली. अथवा आवश्यकतानुसार अधिक मात्रा में दिन में 2 बार पिलायें तथा जहाँ भी हाथ-पैरों या शरीर के जिस अंग में ऐंठनयुक्त दर्द हो वहाँ पर गरम किए हुए सरसों के तैल में सौठ का चूर्ण मिलाकर मालिश करते रहें।

मांसपेशियों का दर्द

चोट, मोच, आघात, कटने या कुछ चुभने अथवा अस्त्र-शस्त्र आदि के लगने, जलने, फटने या कैन्सर पैदा होने, घाव, व्रण, फोड़े-फुन्सी इत्यादि चर्म रोगों के होने आदि (विविध कारणों) से मांसपेशियों में प्राय: दर्द होने लगता है।

उपचार

● शूल वज्रिणी वटी (र. च.) आवश्यकतानुसार 1 से 4 गोलियाँ बकरी के दूध अथवा ताजा जल से प्रतिदिन 3 बार सेवन करना लाभप्रद है।

● सुवर्ण भूपति रस (मो. र.) 120 से 180 मि.ग्रा. तक अदरक के रस तथा मधु के साथ लें। अथवा पिप्पली चूर्ण को मधु के साथ दिन में 2-3 बार सेवन करना लाभकारी है।

● सरसों के तैल को खुब गरम करके उसमें कपूर, पिपरमेंट और अजवायन सत्व (प्रत्येक समभाग) मिलाकर दिन में 2-3 बार पीड़ित मांसपेशी पर मालिश करना अत्यधिक लाभकारी है।

हड्डी-तोड़ ज्वर (Dengue Fever)

यह एक विशेष प्रकार के कीटाणु से पैदा होने वाला एक संक्रामक और

महामारी के रूप में फैलने वाला ज्वर है, जो दक्षिण एशिया के समस्त देशों में पाया जाता है। वर्ष 1996 के अन्त में अपने देश की राजधानी दिल्ली में यह ज्वर फैल गया था। मच्छर के काटने से इस ज्वर का कीटाणु मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होता है। ज्वर के आरम्भ में सिर, आँखों के ढेले, हड्डियों के जोड़ों और कमर में सख्त दर्द होता है। रोगी बेचैन और बहुत कमजोर हो जाता है। ज्वर के तीसरे से पांचवें दिन रोगी के शरीर पर पित्ती के लक्षण पैदा होकर लाल दानें हाथ-पैर पर निकल आते हैं ज्वर भी बहुत तेज हो जाता है। यह अवस्था 2-4 दिन रहकर रोगी स्वस्थ हो जाता है। किन्तु इसी प्रकार ज्वर और लाल दानें इत्यादि लक्षण उभर कर पुन: ज्वर चढ़ जाता है। इस प्रकार के 2-3 बार रोगी को ज्वर के दौरे ठहर-ठहर कर पड़ते हैं। इस ज्वर के समय रोगी को दस्त, पेचिश और यकृत शोथ भी हो जाता है।

उपचार

● मच्छरों के काटने से बचाव हेतु दिन रात में मच्छरदानी का प्रयोग करें। दिन में मच्छदानी अवश्य लगायें क्योंकि यह मच्छर दिन में ही काटते हैं। मच्छरों को दूर करने के लिए गन्धक की धूनी लगायें। इस रोग में तेज जुलाब कदापि न लें। यदि कब्ज हो तो एनिमा प्रयोग में लावें।

● महासुदर्शन चूर्ण (शारंगधर संहिता) 2 से 4 ग्राम तक जल से प्रतिदिन 3 बार सेवन करायें। हड्डी तोड़ ज्वर के दर्द में अत्यन्त ही लाभकारी है।

● हिंगुलेश्वर रस (भैषज्य रत्नावली) आधी से 1 गोली (60 से 120 मि.ग्रा. तक) सुबह-शाम अदरक के रस एवं मधु के साथ चाटने से तेज ज्वर हड्डी तोड़ ज्वर की विकृति के कारण शरीर में भयंकर दर्द तथा सन्धि स्थानों में तीव्र पीड़ा होने में परम लाभकारी है।

नोट—बच्चों को सावधानीपूर्वक अथवा अपने चिकित्सक के परामर्श से सेवन करायें।

● किरातादि अर्क—चिरायता, कुटकी, नीम की अन्तर छाल, सौठ, हरीतकी बड़ी परवल पत्र लाल चंदन, नागरमोथा और खसखस सभी को सममात्रा में लेकर जौ कूट कर चूर्ण करें। तदुपरान्त 8 गुना जल में रात्रि को भिगोकर प्रात:काल नलिका यन्त्र (भबके) से अर्क खीच लें। इस अर्क को 30 मि.ली. की मात्रा में प्रत्येक 3-3 घंटे पर दिन में 3 बार पिलायें। यह अर्क प्रत्येक प्रकार के ज्वर व समस्त शरीर में दर्द को दूर कर देता है।

पीठ का दर्द, पृष्ठ शूल, पृष्ठ वेदना

रोग परिचय—यह दर्द पीठ में ऊपर या नीचे रह-रहकर खूब तेज होता है। चलने-फिरने, झुकने, उठने, बैठने और सोने में रोगी को कष्ट होता है। पीठ अकड़ी हुई सी प्रतीत होती है।

उपचार

- शुभ्रा भस्म 120 से 240 मि.ग्रा. मधु से दिन में 2-3 बार चटाना लाभकारी है।
- महावात विध्वंसन रस (रस चन्डांश) 120 से 240 मि.ग्रा. तक सुबह शाम निर्गुन्डी पत्र स्वरस और मधु के साथ सेवन करना लाभप्रद है।
- शूल वज्रिणी वटी (र. च.) 1 से 4 गोलियाँ तक बकरी के दूध या पानी से दिन में 3 बार सेवन करायें। लाभप्रद है।
- पीली सरसों के तैल को खूब गरम करके 100 मि.ली. लें। 5 ग्राम कपूर, पिपरमेन्ट फूल 2 ग्राम और अजवायन सत्व 2 ग्राम को भली-भाँति मिलाकर दर्द के स्थान पर दिन में 3-4 बार मालिश करके पीड़ित स्थान को रुई से ढँक दें।

कन्धे का दर्द, स्कन्ध शूल (Solder Pain)

रोग परिचय—यकृत क्रिया की विकृति, यकृत शोथ, कन्धे में चोट, मोच, सोने में असावधानी इत्यादि कारणों से कन्धे में हल्की सी सूजन आकर उसमें दर्द होने लगता है जो हिलने-डुलने से बढ़ जाया करता है।

उपचार

- शोभान्जन की जड़ की छाल, कटकरन्ज की भुनी मींगी, श्वेत फिटकरी और पुराना गुड़ सभी समभाग लेकर जल में पीसकर दर्द वाले कन्धे पर दिन में 2-3 बार लेप करना लाभप्रद है।
- दशमूल का काढ़ा 15 से 30 मि.ली. दिन में 2-3 बार पीना लाभप्रद है।
- शूलगज केसरी (भै. र.) 1 से 2 गोलियाँ मधु एवं अदरक के रस (10 मि.ली.) के साथ सुबह-शाम सेवन करना लाभप्रद है।
- अजवायन सत्व, पुदीना सत्व, असली कपूर (प्रत्येक 12 ग्राम) तारपीन का तैल 20 बूँद, लौंग का तैल 5 बूँद सभी को मिलाकर (तरल बनने पर) इसे पीड़ित कन्धे पर दिन में 2-3 बार मालिश करें। अत्यन्त लाभप्रद है।

सर्वांगशूल, समस्त शरीर में दर्द

रोग परिचय—अधिक चलने-फिरने या अधिक जागते रहने अथवा ज्वर, मलेरिया, हरारत इत्यादि तथा फोड़ा, विद्रधि, जले-कटे घाव आदि के कारण पूरे (समस्त) शरीर में दर्द होने लग जाता है।

उपचार

- शोभांजन का गोंद, श्वेत फिटकरी का फूला, सौंठ का चूर्ण, हरड़ का चूर्ण, आँवला चूर्ण, बहेड़ा चूर्ण, गोदन्ती हड़ताल भस्म, संग जराहत भस्म और अरारोट प्रत्येक 10 ग्राम लेकर इकट्ठा कर मिलाकर खरल में खूब घोटकर कपड़छन कर सुरक्षित रखलें। इसे 250 से 500 मि.ग्रा. अथवा 1 ग्राम तक हल्के गरम जब से सुबह-शाम हल्के नाश्ते के बाद खाने से समस्त शरीर का दर्द नष्ट हो जाता है।
- पीली सरसों का तैल 100 ग्राम को इतना गरम करके कड़कड़ायें कि तैल के अन्दर का जलीयांश उड़ जाए। फिर इसमें 10 ग्राम कपूर, 5 ग्राम पिपरमेन्ट क्रिस्टल, 4 ग्राम अजवायन सत्व तथा लौंग का तैल 15 बूँद खूब मिलाकर हिला डुलाकर सुरक्षित रखलें। इस तेल में सम मात्रा में सरसों का तैल मिलाकर समस्त शरीर पर दिन में 1-2 बार मालिश करने से समस्त शरीर का दर्द (सर्वांग शूल) नष्ट हो जाता है।

आँत उतर जाना (हार्निया) का दर्द

रोग परिचय—आँत या तो अन्डकोषों में या वक्षण नाल में उतर जाने से कभी-कभी भयंकर दर्द और बेचैनी होने लग जाती है। आँत जब तक ऊपर स्थान में जाती नहीं है, रोगी को असहनीय दर्द होता रहता है।

उपचार

- सर्वप्रथम आँत को वंक्षणछिद्र या जिस छिद्र से अपने स्थान से नीचे आयी हो, उसी मार्ग से ऊपर भेजने की यथा-संभव चेष्टा करें। यदि आँत ऊपर नहीं जा रही हो तो आँत शुद्धि हेतु रोगी को उपवास करायें तथा हल्की दस्तावर औषधि दें अथवा एनिमा लगायें। दर्द दूर करने हेतु दर्द निवारक योगों का सेवन करायें। यदि आँत अन्दर प्रविष्ट हो जाए तो उपयुक्त साईज की हानियल ट्रेस (पेटी) बाँधें तथा इसका निरन्तर प्रयोग जारी रखें।

● कब्ज दूर करने के लिए पंचसकार चूर्ण या त्रिफला चूर्ण सुबह-शाम 2 से 4 ग्राम तक जल से दें ।

● अन्त्रवृद्धि हर गुटिका 1 से 2 गोलियाँ तक जल से दिन में 2 बार सेवन करायें । बीड़ी, सिगरेट, गरम चाय, मिर्च व खटाई आदि का सेवन कदापि न करें।

● अन्त्रवृद्धि हर चूर्ण 4 से 6 ग्राम तक, मिश्री चूर्ण, छोटी इलायची, दालचीनी, सौंठ एवं लौंग का चूर्ण मिलाये हुए 400 मि.ली. गरम दूध के साथ दिन में 2 बार सेवन करायें । अत्यन्त लाभप्रद है ।

● वृद्धि वाटिका वटी (भाव प्रकाश) 1 से 2 गोली तक जल से दिन में 2 बार दें । यदि रोगी को कब्ज हो तो आरोग्य वर्द्धिनी वटी का भी साथ-साथ सेवन करायें ।

नोट—यदि रोगी को मितली और बेचैनी हो तो नमक मिले मट्ठा या नीबू का रस, शक्कर एवं जल मिलाकर सेवन करायें । इस औषधि के सेवन कराने के तुरन्त बाद दूध, चाय, काफी गरम-गरम कदापि न दें । यदि दूध पीना ही हो तो कम से कम 1-2 घंटे बाद ही पिलायें।

आन्त्र-कृमि (Intestinal Worms)

रोग परिचय—कभी-कभी आन्त्र में कृमि होने पर अत्यधिक तेज उदर पीड़ा (विशेषकर बच्चों को) होने लग जाती है । जब तक ये कृमि निकलते या मरते नहीं हैं तब तक ठहर-ठहर कर पेट में भयंकर दर्द होता रहता है ।

उपचार

● कृमि कुठार रस 1 से 3 गोलियों को सत्यानाशी की जड़ के काढ़े के साथ दिन में 2 बार देना लाभप्रद है ।

● कृमि मुद्गर रस (योग रत्नाकर) 120 से 240 मि.ग्रा. नागरमोथा के क्वाथ से दिन में 2-3 बार देकर 3 दिन के बाद (चौथे दिन) कोई हल्का विरेचन देकर पेट साफ कराना लाभप्रद है ।

● अनार की ताजी जड़ के छाल के टुकड़े 60 ग्राम, पलाश के बीजों का चूर्ण 6 ग्राम, बायविडंग का चूर्ण 12 ग्राम को 1200 मि.ली. जल मिलाकर ढक्कन से बन्द करके कलईदार बर्तन में डेढ़ घंटे तक खूब उबाललें । जब आधी शेष रह जाए तब ठण्डा होने पर कपड़े से छानकर कार्क (डाट) युक्त किसी साफ-स्वच्छ बोतल में सुरक्षित रखलें । इस क्वाथ की 60 मि.ली. की मात्रा में 6 ग्राम मधु मिलाकर प्रात:काल प्रत्येक 30-30 मिनट पर 4 बार पिलायें। लाभप्रद योग है।

● कटकरंज की मींगी, प्लाश के बीज, किरमानी अजवायन, कबीला और बायबिडंग प्रत्येक समभाग लेकर कपड़छन चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 2 से 3 ग्राम तक गुड़ मिलाकर हल्के गरम जल से दिन में 3 बार सेवन कराये तथा दूसरे दिन प्रात: अरन्ड का तैल का विरेचन दें । इस योग से समस्त प्रकार के उदर कृमियों का नाश हो जाता है ।

● शुद्ध कबीला चूर्ण 3 ग्राम को 100 ग्राम दही में भली-भाँति मिलाकर लगातार 2 दिन तक प्रात:काल को बच्चों को खिलाते रहने से तथा तीसरे दिन विशुद्ध अरन्ड का तैल का विरेचन देने से मल में मरे हुए कद्दू दाने, चुरने आदि निकल जाते हैं ।

● कृमि कुठार रस या कृमि मुद्गर रस की आधी से 2 गोली तक बच्चों को आयु के अनुसार दिन में 2 बार प्रात:सायं मधु से देना भी अत्यन्त लाभकारी है।

● विडंगारिष्ट 5 से 10 मि.ली. बराबर जल मिलाकर आहार के बाद दिन में 2 बार बच्चों को पिलाना हितकारी है ।

● पलाश के बीज (पित्तपापड़ा) सुखा करके चूर्ण करके 1 से 2 ग्राम तक बच्चों के खिलाने से आँत के समस्त प्रकार के कीड़े मर कर निकल जाते हैं ।

● नीम के पत्तों को कूटें और जल में उबालकर छानलें । इसमें थोड़ा सा नमक मिलाकर गरम-गरम ही बच्चों को एनिमा करने से सूतकृमि (चुरने) नष्ट हो जाते हैं ।

● कृमिहन वटी (भै. र.) बच्चों को 1 से 3 गोली प्रात:सायं तथा रात को सोते समय गरम दूध या गरम जल से खिलायें तथा 3 दिन के पश्चात् ''बाल हरीतकी चूर्ण'' 1 से 3 ग्राम सेवन करवाकर विरेचन दें । चुरने, केंचुए मरकर निकल जायेंगे ।

● काशीफल (पीले रंग का सब्जी बनाने वाला बहुत बड़ा सा फल) के बीज भी बच्चों के कीड़े मारने हेतु अत्यन्त ही सफल एवं शर्तिया औषधि है । इसे देने से दो दिन पूर्व उदर कृमियों से पीड़ित बच्चों को सब्जियाँ तथा फल खिलाना बन्द कर दें तथा प्रात: समय नाश्ते से पूर्व एनिमा दें और शाम को नमकीन जुलाब दे दिया करें । ताजा काशीफल के बीजों की मींगीं लें 1 से 3 वर्ष के बच्चों को 50 ग्राम, 3 से 5 वर्ष के बच्चों को 75 ग्राम, 5 से 6 वर्ष के बच्चों को 100 ग्राम, 7 से 10 वर्ष के बच्चों को 125 ग्राम तथा 12 से 15 वर्ष के बच्चों को 200 ग्राम मात्रा उचित है । मींगी को पानी में पीसकर शर्बत बनाकर पिलायें ।

इस शर्बत में चीनी या मधु मिला सकते हैं । छोटे बच्चों को 60 मि.ली. तक तथा बड़े बच्चों को और अधिक मात्रा में शरबत बनाकर थोड़ी-थोड़ी देर बाद पिलायें। दवा (शरबत) पी लेने के 4 घंटे बाद कोई मृदु विरेचक औषधि खिलादें ताकि पाखाना भली प्रकार आ जाए इसके बाद एनिमा लगाकर पुनः पेट साफ कर दें। तत्पश्चात् बच्चे को भोजन दें । इस औषधि के उक्त विधिपूर्वक सेवन कराने से उदर के प्रत्येक प्रकार के कीड़े मरकर अवश्य ही निकल जाते हैं ।

आध्मान के कारण दर्द, उदावर्त पीड़ा

रोग परिचय—कब्ज, अपच, गैस बनने आदि कारणों से पेट काफी फूल जाता है और तेज या हल्का-हल्का दर्द होने लगता है ।

उपचार

● शंखवटी (योग रत्नाकर) 1 से 4 गोलियाँ तक जल से दिन में 3 बार या आवश्यकतानुसार सेवन करें । बच्चों को आधी मात्रा में सेवन करायें ।

● क्रत्यादि रस 240 से 480 मि.ग्रा. मट्ठा और सैंधा नमक के साथ दिन में 2-3 बार तक सेवन करें ।

● अग्नि तुन्डी वटी 1 गोली दिन में 2 बार जल से सेवन करें । लाभप्रद है।

वृषणार्ति, अन्डकोषों के शोथ का दर्द

रोग परिचय—चोट लग जाने अथवा वीर्य के वीर्य वाहिनी नालिका में अटक जाने आदि कारणों से अन्डकोष सूज जाते हैं तथा उनमें कभी कम और कभी बहुत तेज दर्द होने लग जाता है ।

उपचार

● वृद्धि वाटिका वटी (भाव प्रकाश) 1 से 2 गोली प्रतिदिन जल के साथ लें।

नोट—इसे सेवन करने के तुरन्त बाद गरम-गरम दूध, चाय, काफी न लें । यदि कब्ज न हो तो आरोग्य बर्द्धिनी वटी 2 गोलियाँ दिन में 2 बार साथ-साथ सेवन करें ।

● नित्यानन्द रस 1 से 2 गोलियाँ तक ठण्डे जल से दिन में 2 बार सेवन करें । यह अन्डकोष एवं वृषण शोथ में से उत्पन्न दर्द में गुणकारी है ।

● गुग्गुल, एलुवा, कुन्दरू, लोध्र, फिटकरी, गन्धा बिरोजा प्रत्येक सममात्रा में लेकर जल में पीसकर लेप बनाकर अन्डकोषों के बालों को उस्तरे से साफ करके इस लेप को दिन भर में 3-4 बार लगाते रहने से सूजन व दर्द नष्ट हो जाता है।

● त्रिफला चूर्ण (चरक संहिता) 2 से 6 ग्राम तक दिन में 1-2 बार गोमूत्र के साथ सेवन करना भी लाभकारी है ।

● छोटी कटेरी की जड़ की ताजा छाल 15 ग्राम (छाल यदि सूखी हो तो 10 ग्राम) काली मिर्च 7 दानें दोनों को घोट पीसकर 125 ग्राम पानी में मिलाकर प्रतिदिन सप्ताह तक प्रातः काल सेवन करने से अन्डकोषवृद्धि का रोग समूल नष्ट हो जाता है ।

● तम्बाकू का पत्ता गरम करके अन्डकोषों पर बाँधकर लंगोट चढ़ाले । एक घंटे के अन्दर लंगोट भीग जाएगा, तब दूसरा लंगोट बाँध लें । इसी प्रकार तीसरा लंगोट बदल लें, खुजली होगी किन्तु खुजलावे नहीं, रातभर बँधा रहने के बाद प्रातःकाल पत्ते को खोल दें । यदि अन्डकोष पर सूराख (छिद्र) हो गये हों तो वहाँ पर मक्खन लगाया करें । यदि तम्बाकू का गीला (ताजा) पत्ता न मिले तो सूखे पत्ते को दिन भर पानी में भिगोकर रात्रि को प्रयोग करें ।

● माजूफल 20 ग्राम, फिटकरी 5 ग्राम दोनों को पानी में पीसकर अन्डकोषों पर निरन्तर 2 सप्ताह तक लेप करना भी लाभप्रद है । अन्डकोष वृद्धि नाशक योग है ।

8. आम के पत्ते 20 ग्राम, सैंधा नमक 10 ग्राम दोनों को बारीक पीसकर थोड़ा गरम करके लेप करने से अन्डकोष वृद्धि को आराम आ जाता है और फिर यह रोग जीवन में दुबारा नहीं होता है ।

योनिशूल, मैथुन असहनीयता

रोग परिचय—अधिक मैथुन अथवा चोट आदि विविध कारणों से स्त्री की योनि में दर्द उत्पन्न हो जाता है जिससे उसे भारी अत्यधिक कष्ट रहता है ।

उपचार

● नारियल तैल 100 मि.ली. में कपूर 10 ग्राम मिलाकर योनि के अन्दर दिन और रात में लगाना लाभप्रद है ।

● प्रवाल पिष्टी 120 मि.ग्रा. मधु के साथ दिन में 2-3 बार चाटकर ऊपर से चावल का धोवन (पानी) 25 मि.ली. पीना लाभप्रद है ।

● नारियल तैल 100 ग्राम में कपूर और यशद भस्म 10-10 ग्राम मिलाकर दिन में 2-3 बार योनि के अन्दर लगाना अतीव गुणकारी है ।

● चन्द्रांशु रस (रस चन्डांशू) 1 गोली 30 मि.ली. जीरे के क्वाथ के साथ दिन में 2 बार सेवन करते रहने से योनिशूल नष्ट हो जाता है ।

● सफेद मोम 60 ग्राम, सफेदा 120 ग्राम, नारियल का तैल 120 मि.ली.. और कपूर 12 ग्राम लें। सर्वप्रथम नारियल का तैल और कपूर मिलाकर गरम करें। जरा सा ठण्डा होने पर सफेदा मिलालें, फिर कपूर मिलाकर मरहम बनालें। रबड़ के दस्ताने पहन कर अँगुली से इस मरहम को योनि के अन्दर सुबह और शाम को लगायें। अत्यन्त लाभकारी मलहम है।

पौरुष-ग्रन्थि-वृद्धि शूल (Prostate Enlargement)

रोग परिचय—वृद्ध पुरुषों की प्रोस्टेट ग्रन्थि के बढ़ जाने के कारण मूत्र आना रुक जाता है। मूत्राशय मूत्र से भर जाता है जिसके फलस्वरूप मूत्र वेग के समय अत्यधिक दर्द होता है। रोगी व्याकुल होकर तिलमिला उठता है।

उपचार

● सर्वप्रथम उपयुक्त साइज के रबड़ कैथेटर को किसी योग्य चिकित्सक से लिंग में प्रविष्ट करवाकर मूत्राशय में समस्त एकत्रित मूत्र को बाहर निकलवा दें। इसके उपरान्त पेय पदार्थ कम से कम सेवन करें, ताकि मूत्र कम बने।

● पुरस्थ वृद्धि हर वटी, शोभांजन की जड़ की छाल, शोभान्जन की गोंद, नीम पत्र, सिन्दुआर पत्र, श्वेत पुनर्नवा मूल, प्रत्येक 100 ग्राम तथा श्वेत फिटकरी भस्म 25 ग्राम एवं कन्टकारी भस्म 10 ग्राम लें। सभी को कूट पीस व कपड़छन कर त्रिफला के काढ़े से संयुक्त करके 250 मि.ग्रा. की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। यह 1-2 गोली दिन में 3 बार त्रिफला के काढ़ा से सेवन करें।

● सहजन की जड़ की ताजी अन्तर छाल, श्वेत पुनर्नवा मूल, नीम की अन्तर छाल और रोहितक छाल—प्रत्येक समभाग लेकर त्रिफला क्वाथ के साथ सूक्ष्म पीसकर लेप बनालें। इस लेप को शिश्नमूल और समस्त शिश्न पर मोटा लेप दिन में 2-3 बार लगाया करें। लेप काफी देर तक लगाये रखें।

● श्वेत पुनर्नवा सर्वांग तथा नीम के ताजे पत्ते (बिना कीड़े खाये) समभाग लेकर एक बड़ी कड़ाही में डालकर उसमें इतना पानी डाल लें कि पुनर्नवा, नीम आदि डूब जाए। फिर खूब उबलने पर इसकी भाप से शिश्न पुरस्थ प्रदेश को दिन में 3-4 बार 2-3 दिन तक सेकें। अति लाभप्रद योग है।

शुक्राशय की पथरी का दर्द

रोग परिचय—शुक्राशय में पथरी अटक जाने से भयंकर दर्द होता है। रोगी दर्द से अत्यन्त बेचैन होकर कष्ट से तड़पता रहता है।

उपचार

● त्रिकंटकादि क्वाथ (भै. रत्नावली) गोखरू, अमलतास का गूदा, दर्भ की जड़, कासमूल, धमासा, पाषाण भेद तथा हरीतकी प्रत्येक 48 ग्राम लेकर विधिवत् क्वाथ बनाकर 60 मि.ली. की मात्रा में मधु मिलाकर 2-3 घंटे पर पीना लाभप्रद है।

● त्रिविक्रम रस (रस रत्न समुच्चय) 60 से 240 मि.ग्रा. तक मधु के साथ एक बार प्रतिदिन चाटकर ऊपर से 6 ग्राम बिजौरे की जड़ को जल में घिसकर पियें।

नोट—इस औषधि के सेवन करने से यदि बेचैनी महसूस हो तो पीले पके नीबू के रस में शक्कर एवं थोड़ा सा जल मिलाकर पीलें। इस रसायन के प्रयोग कराने पर 1 घंटे तक गरम-गरम दूध चाय या काफी इत्यादि कोई भी अन्य गरम पेय कदापि न पियें।

● संगेयहूद (हिजरल महूद) भस्म 240 से 480 मि.ग्रा. शर्बत बजूरी के साथ 1-1 घंटे के अन्तर से दिन में 2-3 बार सेवन करना लाभकारी है।

● यवक्षार, बेर पत्थर भस्म, अपामार्ग क्षार प्रत्येक 15 मि.ग्रा. को इकट्ठा मिलाकर दही की लस्सी के साथ 4-4 घंटे बाद खाना अत्यन्त लाभप्रद है।

अपूर्ण कामेच्छा

रोग परिचय—इस रोग में रोगी को बार-बार उत्तेजना होने लग जाती है तथा उत्तेजना के साथ ही लिंग से वीर्य तथा अन्य दूसरे प्रकार के तरल निकल जाया करते हैं। कई बार अत्यधिक मात्रा में वीर्यपात हो जाया करता है। वीर्य पानी की भाँति पतला और कमजोर हो जाता है। स्त्री के पास जाते ही वीर्य शीघ्र अथवा मैथुन से पूर्व ही निकल जाता है। स्वप्नदोष, वीर्य, प्रमेह आदि रोग हो जाते हैं। मूत्रप्रणाली में प्राय: जलन होती रहती है। इस रोग से ग्रसित रोगी का शरीर दुबला-पतला और चेहरा पीला, पिचका हुआ हो जाता है। सिर दर्द, सिर चकराना, दिल दिमाग कमजोर हो, रोगी उत्साहहीन हो जाता है। जठराग्नि कमजोर हो जाती है हाथ की हथेलियाँ और पाँव के तलुवों में जलन होती है तथा पीठ पर चीटियाँ सी रेंगती प्रतीत होती है।

●छोटी इलायची के बीज, बड़ी इलायची के बीज, बंशलोचन, अजवायन, अनार के फूल, संभालू के बीज, काहू के बीज, तज-कलमी, बिना छेद के माजू, बड़ी माई, बबूल की गोंद, कतीरा, सफेद खशखश के बीज, काली खशखश के बीज, गुलाब के फूल, ईसवगोल का छिलका सभी समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण तैयार करें। ईसबगोल का छिलका सबसे अन्त में मिलायें। इसे 3 ग्राम की

मात्रा में सुबह-शाम गाय या बकरी के दूध से 2-3 सप्ताह निरन्तर सेवन करें। अवश्य लाभ होगा।

● काहू के बीज, निर्गुन्डी के बीज, खुरफा के बीज, भांग के बीज, अनार के फूल, नीलोफर के फूल प्रत्येक 12 ग्राम लेकर कूट पीसकर चूर्ण बनायें तथा समभाग खान्ड मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 6 से 12 ग्राम तक सुबह शाम ताजा पानी के साथ खायें। बढ़ी हुई कामवासना अवश्य प्राकृतिक रूप में हो जाएगी।

● अफीम 3 ग्राम, कपूर 6 ग्राम, अजवायन खुरासानी 3 ग्राम, खशखश का तैल 5 तोला लें। पहले खुरासानी अजवायन को तैल में पकायें फिर तैल को छानकर अफीम और कपूर मिलाकर धीमी आग पर घोटकर सुरक्षित रखलें। इसे शिश्न, अन्डकोषों, सींवन और जाँघ के सिरों पर मालिश करें। लाभप्रद योग है।

स्वप्नदोष, नाईट डिस्चार्ज

रोग परिचय—इस रोग को उर्दू में एहतलाम के नाम से जाना जाता है। इस रोग में नींद में स्त्री का स्वप्न आता है। रोगी स्वप्न में उस स्त्री से संभोग करता है, जिसके फलस्वरूप नींद में ही वीर्यपात हो जाता है और पहने हुए कपड़े गंदे हो जाते हैं। इस प्रकार स्वप्न में जब बार-बार वीर्य निकलने लग जता है तब यह स्वप्नदोष रोग के नाम से जाना जाता है।

इस रोग के प्रधान कारण—बुरे विचार, अत्यधिक मैथुन, हस्त मैथुन, गुदा मैथुन, कब्ज, बदहज्मी, चित्त पड़कर सोना, अविवाहित रहना, वृक्कों की गर्मी, भोजनोपरान्त तुरन्त सो जाना, स्वप्नदोष हो जाने का मन में भय बने रहना, पेट में कीड़े होना, प्रोस्टेट ग्लैन्ड की खराश, सुपारी का लम्बा होना, मूत्रमार्ग का प्रदाह, काम इच्छा बढ़ जाना, उत्तेजक एवं मादक पदार्थों का अत्यधिक सेवन, स्तम्भन शक्ति की कमी, वीर्य की थैलियों में ऐंठन, नंगे चित्र अथवा चलचित्रों का देखना, वीर्य की अधिकता, वीर्य की गर्मी, शारीरिक दुर्बलता, मूत्राशय की खराश, खट्टे अथवा अधिक भोजन खाना इत्यादि है।

स्वप्नदोष के रोगी के कमर में दर्द रहने लगता है, उसका चेहरा पीला, आँखें धँसी हुई और वीर्य पतला पड़ जाता है। रोगी का शरीर ढीला-ढाला और वजन कम हो जाता है। आलस्य से वह ऊँघता रहता है, माथे में भी दर्द हो सकता है। दृष्टि-एकाग्रता में कमी हो जाती है, स्मरण शक्ति का अभाव, आँखों के पीछे की ओर दर्द, मर्दाना शक्ति की कमी इत्यादि हो जाती है। अनुभवहीन चिकित्सक

स्वप्नदोष को एक भयानक रोग को बतलाकर और भी अधिक पीड़ित कर देते हैं। जबकि यह एक मामूली रोग है जो उचित उपचार नियम, संयम के पालन एवं उचित आहार-विहार के फलस्वरूप अवश्य ही पूर्णरूपेण नष्ट हो जाता है।

उपचार

● धतूरे के बीज का पुंकेश्वर जीरा 1 तोला, बंगभस्म 3 ग्राम, खरल करके 10 पुड़िया (खुराक) बनाकर 1 मात्रा सायंकाल के समय खायें। यह योग स्वप्नदोष तथा शीघ्रपतन नाशक है।

● बड़ का दूध 10 बूँद प्रातःकाल बताशे में डालकर खाना स्वप्नदोष के लिए अमृत समान है। स्वप्नदोष नाशक अनुभूत योग है।

● भोफली बूटी 6 से 9 ग्राम तक जल में पीसकर खान्ड मिलाकर प्रातःकाल पीना अत्यन्त लाभप्रद है।

● इमली के बीजों को थोड़ा भूनकर (छिलका दूर करके) मैदा के समान चूर्ण बनाकर डेढ़ ग्राम की मात्रा में खान्ड मिलाकर गाय के दूध के साथ प्रातः-सायं खाना अतीव गुणकारी है।

● शतावरी, असगन्ध, विधारा के बीज प्रत्येक सममात्रा में लेकर कूट पीसकर सभी वजन के बराबर खान्ड मिलाकर 3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम जल या गोदुग्ध से सेवन करने से स्वप्नदोष एवं वीर्य प्रमेह नष्ट हो जाता है। वीर्य गाढ़ा हो जाता है एवं रोगी का कायाकल्प होकर वह मोटा-ताजा, हृष्ट पुष्ट हो जाता है। इसे टॉनिक के तौर पर स्वस्थ व्यक्ति भी प्रयोग कर सकता है। अत्यन्त ही शक्तिवर्धक योग है।

● ईसबगोल का छिलका (भूसी) 20 ग्राम को 3 बार बड़ के दूध में गीला करके खुश्क करें तथा बड़ वृक्ष की कोपलें छाया में शुष्क की हुई 12 ग्राम, इमली के बीजों की गिरी 12 ग्राम, बंग भस्म 6 माशा सभी का चूर्ण बनाकर बड़ वृक्ष के ताजा दूध में भली प्रकार खरल करके मटर के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। 2 से 4 गोली तक सुबह-शाम बकरी या गाय के दूध से सेवन करने से स्वप्नदोष, वीर्य प्रमेह शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन दूर होता है।

● सोते समय 4 ग्रेन कपूर मिश्री मिलाकर फाँकने से कुछ ही दिनों में स्वप्नदोष होना बन्द हो जाता है।

● मुलहठी का चूर्ण 3 ग्राम मधु में मिलाकर चाटने से स्वप्नदोष रोग नष्ट हो जाता है।

● सूर्योदय से पूर्व वट वृक्ष के पत्ते तोड़कर 1 बताशे में 10 बूँद दूध भरकर नित्य खाने से स्वप्नदोष एवं वीर्य का पतलापन मिटकर शुक्राणु बढ़ जाते हैं ।

● बनारसी आँवला (बढ़िया किस्म का मोटा वाला) का मुरब्बा 1 नग प्रतिदिन पानी से भली प्रकार धो चबाकर खाने से भयंकर से भयंकर स्वप्नदोष का रोग कुछ ही दिनों में नष्ट हो जाता है । आँवला अत्यन्त उत्तम रसायन है । जो वीर्य विकारों को दूर करने के अतिरिक्त हृदय, मस्तिष्क एवं नेत्र-विकारों को दूर कर शरीर में प्रतिरोधात्मक क्षमता विटामिन ''सी'' प्रदान कर बढ़ाता है ।

● 6 ग्राम चिरौंजी को कूटकर आधा किलो गौदुग्ध में औटावें । जब दूध 25 ग्राम शेष रह जाए तब रोगी सोते समय पियें । इसके सेवन से 3 दिन में ही चमत्कारिक लाभ दृष्टिगोचर होगा ।

● कपूर 2 ग्राम, अफीम डेढ़ ग्राम दोनों को मिलाकर रात्रि में सोते समय खाने से स्वप्नदोष नहीं होता है ।

नोट—रात्रि में लघुशंका करके सोवें, विचारों को पवित्र रखें । कुसंगति, गन्दा साहित्य व गन्दे चलचित्रों, गन्दे (स्त्री व पुरूष) मित्रों से (दुष्चरित्रों) से दूर रहें, प्रत्येक लड़की व युवती आदि को मां-बहिन के समान दृष्टि से देखें तथा उनके पैरों की ओर मुख कर शुद्ध विचारों के साथ वार्ता करें । मनको काम-काज, अच्छे साहित्य के पठन-पाठन अथवा ईश्वर भजन में लगायें । प्रतिदिन भोजन के 2 घंटे पश्चात् शीतलचीनी एवं मिश्री (दोनों समभाग) का चूर्ण 3 ग्राम फांककर ऊपर से एक गिलास पानी पीयें । तदुपरान्त जब भी पेशाब जायें तो एक गिलास पानी पी लें, इस प्रयोग से मसाने की गर्मी शान्त हो जाती है ।

● चुनिया गोंद, छोटी इलायची के दाने, सालब मिश्री, सत गिलोय और तबाशीर प्रत्येक 1-1 तोला लेकर सबको कूट पीसकर इसमें ढाई तोला शक्कर पीसकर मिला लें । इस चूर्ण को प्रतिदिन 5 ग्राम गुनगुने दूध से खायें । स्वप्नदोष नाशक उत्तम औषधि है ।

● जामुन का चूर्ण नित्य सुबह-शाम 4 ग्राम पानी से खाना स्वप्नदोष नाशक है।

● आँवला 50 ग्राम, सत गिलोय, गोखरू, तबाशीर, छोटी इलायची के दानें प्रत्येक 10-10 ग्राम का बारीक चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें । यह 10 ग्राम चूर्ण 10 ग्राम मक्खन और 20 ग्राम शहद में मिलाकर खाने से स्वप्नदोष और शीघ्रपतन नष्ट होकर वीर्य गाढ़ा हो जाता है ।

● आँवले का ताजा रस 20 ग्राम (अथवा 10 सूखे आंवले को 60 मि.ली. पानी में 12 घंटे तक भिगोकर मल-छानकर निकाला हुआ 50 मि.ली.) तथा पिसी हुई हल्दी 1 ग्राम खाना नवयुवकों के स्वप्नदोष नाश हेतु सर्वोत्तम योग है ।

स्वप्नदोष नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

स्वप्नहरी टेबलेट (डाबर)—1-1 गोली दिन में 2 बार ताजा जल से लें ।

जियो टेबलेट (चरक)—2-2 टिकिया दिन में 3 बार दूध से सेवन करायें।

प्रमेह केसरी कैपसूल (मिश्रा)—1-1 कैपसूल सुबह-शाम लें । स्वप्नदोष व वीर्य प्रमेह नाशक है ।

स्वप्नहरी लिक्विड (डाबर)—आवश्यकतानुसार पत्रक देखकर सेवन करें।

वीर्य बिना इच्छा निकल जाना

रोग परिचय—इसको उर्दू में जरयान तथा अंग्रेजी (ऐलोपैथी में) स्परमेटोरिया के नाम से जाना जाता है । इस रोग में मैथुन की बिना इच्छा के ही मल-मूत्र त्याग करते समय वीर्य निकल जाता है । अन्डे की सफेदी की भांति अथवा लेसदार पदार्थ (तरल) निकलने की बीमारी को ही वीर्य प्रमेह के नाम से जाना जाता है। यह रोग—गन्दे विचारों, उत्तेजक, चटपटे खट्टे-मीठे गरम मसालों से युक्त पदार्थों का अत्यधिक सेवन, वीर्य में गर्मी की अधिकता, वीर्य का पतलापन, वीर्य की अधिकता, वीर्य की थैलियों में ऐंठन, हस्तमैथुन, गुदा-मैथुन, मैथुन की अधिकता, विभिन्न स्त्रियों से मैथुन करना, सुजाक फोड़ा या साईकिल या ऊँट आदि की अधिक सवारी करना, स्वप्नदोष की अधिकता, पेट में कृमि होना, दीर्घकाल तक सम्भोग न करना, वृक्कों की कमजोरी, कब्ज, मैथुन इच्छा की अधिकता, सुषुम्ना में खराश, बबासीर, सुपारी के पर्दे में मैल एकत्र हो जाना, मूत्राशय और मूत्रमार्ग की खराश, पथरी होने का रोग होना इत्यादि कारणों से उत्पन्न हुआ करता है ।

इस रोग में मल-मूत्र त्याग करते समय अथवा वैसे ही वीर्य की कुछ बूंदें मूत्र-मार्ग से बाहर निकलती रहती हैं, फलस्वरूप रोगी दुर्बल हो जाता है। सुस्ती, कमजोरी और उसमें साहसहीनता उत्पन्न हो जाती है । कमरदर्द, सिर में चक्कर, मानसिक दुर्बलता, याददाश्त की कमी एवं स्नायु दुर्बलता, शीघ्रपतन आदि । रोगी को मैथुन-क्रिया में प्राकृतिक आनन्द नहीं आता है । आँखों के नीचे काले-काले गड्ढे पड़ जाते हैं । पाचनक्रिया बिगड़ जाती है । विचार अस्थिर हो जाते हैं । मर्दाना शक्ति घट जाती है । रोगी निराशावादी तथा डरपोक हो जाता है ।

उपचार

● ताल मखाना के बीज, छोटा गोखरू, हरे माजूफल, लोध, पीपल की लाख, काले बीजबन्द, सुपारी के फूल, धाय के फूल (प्रत्येक औषधि 6 ग्राम)

अजवायन खुरासानी, तज, कलमी, मस्तंगी (प्रत्येक 3 ग्राम) सालब मिश्री, मौलसिरी की जड़ की छाल (प्रत्येक 12 ग्राम) सभी औषधियों को बारीक (मैदे की भांति) पीसकर चूर्ण बनायें, तदुपरान्त बंग भस्म, त्रिबंग भस्म (प्रत्येक 12 ग्राम) मुर्गी अण्डा त्वक भस्म 6 ग्राम तथा समस्त औषधि के वजन के बराबर चीनी मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 6 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गाय के दूध के साथ खाने से वीर्य प्रमेह, प्रोस्टेटोरिया, यूरेथोरिया, वीर्य का पतलापन एवं स्वप्नदोष की अधिकता, शीघ्रपतन इत्यादि नष्ट हो जाते हैं।

● इमली के बीजों की गिरी को पीसकर बड़ वृक्ष का दूध डालकर 12 घंटे तक खरल करते रहें तथा मटर के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। 1-1 गोली प्रातःसायं दूध के साथ खाने से वीर्य प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, कामेच्छा की अधिकता दूर हो जाती है।

● बबूल (कीकर) के पत्तों को छाया में सुखाकर इसमें असगन्ध का चूर्ण मिलाकर बराबर वजन में पिसी खान्ड मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 6 से 9 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम दूध के साथ खाने से वीर्य प्रमेह तथा अन्य वीर्य विकार नष्ट हो जाते हैं।

● बबूल वृक्ष की कच्ची फलियाँ (जिनमें बीज न पड़े हों) को छाया में सुखाकर बारीक पीसकर पिसी हुई खान्ड सुरक्षित रखलें। छः ग्राम दवा प्रातःसायं गाय के दूध से खाने से उपर्युक्त योगों में लिखे समस्त वीर्य विकार नष्ट हो जाते हैं।

● बड़ वृक्ष की कोपलें 125 ग्राम को 2 किग्रा. गाय के दूध में धीमी आग पर पकायें और विधिपूर्वक खोया (मावा) बनाकर दुगुनी खान्ड मिलाकर पेड़े बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 24 ग्राम की मात्रा में सुबह खायें। वीर्य प्रमेह के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

● छोटे गोखरू का चूर्ण, चुनिया गोंद का चूर्ण प्रत्येक 250 ग्राम, मूँग का आटा, घी, खान्ड प्रत्येक आधा किग्रा. लें। पहले चुनिया गोंद और मूँग के आटे को अलग-अलग घी में भूनें। फिर गोखरू का चूर्ण और खान्ड, मूंग के आटे को खान्ड में मिलाकर थोड़े दूध का छींटा मारकर 25-25 ग्राम वजन के लड्डू बनाकर सुरक्षित रखलें। यह 1-1 लड्डू नित्य सुबह-शाम खायें। वीर्य प्रमेह नाशक उत्तम स्वादिष्ट योग है।

● ईसबगोल का छिलका (सत ईसबगोल) दिन में 2 बार दूध के साथ प्रयोग करते रहने से वीर्य प्रमेह रोग दूर हो जाता है।

● सतगिलोय, फिटकरी भुनी हुई 1-1 तोला लेकर बारीक पीसकर सुरक्षित रखलें। इसे 3-3 माशा की मात्रा में सुबह-शाम ताजा जल से खाने से कुछ ही दिनों में पुराने से पुराना वीर्य प्रमेह रोग नष्ट हो जाता है।

● फिटकरी भुनी हुई 1 तोला, गेरू 6 माशा दोनों को बारीक पीसकर सुरक्षित रखलें। इसे 1 माशा की मात्रा में दूध की लस्सी से सेवन करें। इसके प्रयोग से कुछ दिन पश्चात् मल में लालिमा नजर आयेगी, उसे रोग विनाश अर्थात् स्वास्थ्य-प्राप्ति का लक्षण समझें।

● आम के फूल, सुपारी के फूल, धाय के फूल, चुनिया गोंद, छोटा गोखरू, तज, सालब मिश्री, मीठी इन्द्रजौ, सफेद मूसली, हरे माजूफल, अनार के फूल, मस्तंगी प्रत्येक 12 ग्राम। कमरकस, कच्चा केला (बिना छिलका तथा छाया में सुखाया हुआ) बकायन के बीजों की गिरी, प्रत्येक 9 ग्राम, इमली के बीजों की गिरी 36 ग्राम, सफेद चन्दन का चूर्ण, बंगभस्म 6-6 ग्राम लेकर सभी औषधियों को कूट-पीसकर तथा कपड़छन कर बराबर मात्रा में खान्ड मिलालें। इसे 6 से 12 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गाय के धारोष्ण दूध से सेवन करने से वीर्य प्रमेह, वीर्य का पतला हो जाना तथा स्त्रियों का श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) में अत्यन्त ही लाभप्रद योग है।

शीघ्रपतन

रोग परिचय—सम्भोग के समय शिश्न योनि में प्रवृष्ट करने से पहले अथवा प्रवृष्ट करते समय ही इस रोग में तुरन्त वीर्य निकल जाता है। प्राकृतिक स्तम्भन शक्ति 2 से 5 मिनट तक होती है। इससे अधिक देर तक संभोगरत रह पाना जोड़े का संयम-धारण तथा विशेष प्रेमालाप एवं उत्तम स्वास्थ्य के कारण सम्भव हुआ करता है, किन्तु 2 मिनट से भी कम स्तम्भन शक्ति रखने वाला पुरुष शीघ्रपतन का रोगी कहलाता है। इस रोग का कारण मैथुन इच्छा की अधिकता, हस्त मैथुन, वीर्य प्रमेह, वीर्य की अधिकता, गुदा संभोग करना, अत्यधिक मैथुन करना, वीर्य की गर्मी, अधिक आनन्द प्राप्ति की कामना से बाजारू तिलाओं की अत्यधिक मालिश करना, दिल, दिमाग और यकृत की कमजोरी, वीर्य का पतलापन, मूत्राशय में रेत, पेट में कीड़े, स्त्री के गुप्त अंग का तंग और शुष्क होना, लिंग की सुपारी पर मैल जमना, सुपारी की बबासीर, सुजाक, मूत्र मार्ग की खराश, प्रोस्टैट ग्लैन्ड की शोथ इत्यादि होता है।

उपचार

● शुद्ध भाँग 24 ग्राम को 1 ढीली पोटली में बांधकर 1 कि. ग्रा. गाय के दूध में डालकर पकाकर खोया तैयार करें और फिर पोटली को निकालकर फेंक दें। तदुपरान्त शुद्ध देशी घी 100 ग्राम में इस खोये (मावा) को भून लें। फिर आधा किलो खान्ड मिला लें और मीठे बादामों की गिरी (छिलका रहित), शुष्क नारियल की गिरी छिली हुई, पिस्ता की गिरी, हरी किशमिश, चिलगोंजा की गिरी प्रत्येक 30 ग्राम को पीसकर मिलाकर पुनः भूनें। अन्त में आग से उतारकर कौंच के बीजों की गिरी, इमली के बीजों की गिरी, छोटा गोखरू, सफेद मूसली, काली मूसली, असगन्ध-नागौरी, सालब मिश्री प्रत्येक 12 ग्राम, लाल बहमन, सफेद बहमन, सौंठ, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक 3 ग्राम लें सभी का सुरमें की भांति चूर्ण बनाकर उक्त मेवा औषधि में मिलाकर सुरक्षित रखलें। इस पाक को 30 ग्राम की मात्रा में प्रातःकाल निहार मुँह (बिना कुछ खाये) गाय के दूध के साथ सेवन करने से शीघ्रपतन, मर्दाना कमजोरी और वीर्य का पतलापन दूर हो जाता है। अतीव गुणकारी रामबाण योग है।

● शुद्ध भाँग 12 ग्राम, जायफल, बबूल की गोंद भुनी हुई कुन्दर, चुनियां गोंद, मस्तंगी प्रत्येक 3 ग्राम, इमली के बीजों की गिरी, जामुन की गुठली की गिरी, प्रत्येक 6 ग्राम, विशुद्ध केसर डेढ़ ग्राम लें। सभी को विशुद्ध गुलाबजल में खरल करके चने के आकार की गोलियां बनाकरके सुरक्षित रखलें। ये 2 से 3 गोलियाँ रात्रि को सोते समय खाते रहने से स्तम्भन शक्ति उत्पन्न होकर शीघ्रपतन रोग नष्ट हो जाता है।

● सत्व गिलोय और वंशलोचन लेकर कूटपीसकर सुरक्षित रखलें। प्रतिदिन यह 2 ग्राम औषधि शहद के साथ सेवन करने से 1 सप्ताह में वीर्य गाढ़ा हो जाता है और स्वतः स्खलित नहीं होता है। अपूर्व वीर्य स्तम्भक योग है।

● अकरकरा, सौंठ, कपूर, केसर, पीपली, लौंग प्रत्येक 1 तोला लेकर कूट पीसकर छानकर चने के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। यह 1-1 गोली प्रातःसायं दूध से खायें। ऐसे रोगी जो काफी इलाज करवाकर निराश हो गये हों, इस योग का सेवन करें।

● कुशतिला 3 मासा, रस सिन्दूर 6 माशा, कपूर 6 माशा, जायफल 1 तोला, पीपली 1 तोला, कस्तूरी (शुद्ध) 1 माशा लेकर पानी की सहायता से 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। यह 1 गोली रात को सोते समय

दूध में शहद मिलाकर सेवन करें। यह योग प्रथम दिन से ही अपने शक्तिशाली होने का प्रभाव दिखलाता है।

● कौंच के बीज और ताल मखाना समान मात्रा में लेकर कूट पीसकर छांनकर सुरक्षित रखलें। इसे 3 माशा की मात्रा में (सम्भोग का परहेज रखते हुए) निरन्तर 1 मास तक दूध के साथ खाने से शीघ्रपतन रोग नष्ट हो जाता है तथा रोगी को स्त्री के सामने फिर कभी दुबारा जीवन में शर्मिन्दगी उठानी नहीं पड़ती है।

● जामुन की गुठली का चूर्ण 4 माशा की मात्रा में प्रतिदिन शाम को गुनगुने दूध से खाने से शीघ्रपतन रोग नष्ट होता है तथा वीर्य भी बढ़ता है।

● लाजवन्ती के बीज और खान्ड सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 6 माशा की मात्रा में प्रतिदिन दूध के साथ खाने से शीघ्रपतन दूर होकर वीर्यवृद्धि हो जाती है।

● ब्रह्मदण्डी का चूर्ण 6 माशा की मात्रा में प्रतिदिन खाने से शीघ्रपतन रोग दूर हो जाता है।

● बहुफली का चूर्ण 5 माशा की मात्रा में 15 दिन खा लेने से शीघ्रपतन का रोग दूर हो जाता है।

● स्पीमेन फोर्ट (हिमालय ड्रग) दिन में 1-2 टिकिया निरन्तर खाते रहने से भी शीघ्रपतन का रोग दूर हो जाता है।

● जंगली बेर की गुठलियों की गिरी पीसकर उसमें उससे आधी खांड मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 12 ग्राम की मात्रा में नित्य सुबह-शाम गोदुग्ध से सेवन करने से शीघ्रपतन का रोग नष्ट हो जाता है।

हस्तमैथुन

रोग परिचय—यह कोई रोग न होकर एक गन्दी आदत होती है जो कि स्वास्थ्य व समाज के लिए अशोभनीय है। यहाँ यह भी पुरुष वर्ग ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी इस घृणित आदत से ग्रसित हो जाती हैं किन्तु उनकी इस आदत को 'चपटी' कहा जाता है। इस लत का शिकार होकर मनुष्य अपने वीर्य को हाथों, जाँघों या तकिये की रगड़ से निकाल लेता है जबकि स्त्रियाँ अपनी अंगुली, मोमबत्ती, बैंगन, मोटी कलम अथवा पैसिल, मूली इत्यादि से अपना यह घृणित कार्य करती हैं। इस रोग का कारण एकान्त में रहना, कामवासना की अधिकता, बुरे-गन्दे विचार, नंगे चित्र अथवा चलचित्र देखना, सम्भोग प्रिय दुष्चरित्रा स्त्री-पुरुष से मेल, पेट

में कीड़े होना, मूत्राशय में पथरी होना, सुपारी के मांस का लम्बा और संकीर्ण होना अथवा सुपारी पर मैल जम जाना इत्यादि है। इस घृणित आदत के फलस्वरूप स्वप्नदोष, वीर्य प्रमेह, शीघ्रपतन, नामर्दी, इन्द्री (लिंग) का छोटा, टेढ़ा-मेढ़ा और कमजोर हो जाना इत्यादि परिणाम झेलना पड़ता है।

इस रोग से ग्रसित व्यक्ति हताश, साहसहीन, उदास, व्यवसाय से घृणा करने वाला, एकान्तप्रिय, चिड़चिड़ा, डरपोक होता है। उसकी आँखों के चारों ओर काले गड्ढे पड़ जाते हैं, कब्ज रहती है, हृदय अधिक धड़कता है, रक्ताल्पता, पाचन विकार, पुराना नजला, स्मरण शक्ति की कमी, स्नायु दुर्बलता इत्यादि रोग हो जाते हैं। दिल, दिमाग, जिगर, फेफड़े, आँतें और मूत्राशय कमजोर हो जाता है। मूत्र करते समय गुदगुदी और जलन होती है। रीढ़ की हड्डी पर चीटियाँ सी रेंगती हुई प्रतीत होती है। कमर में दर्द और हथेली-तलुवों में जलन होती है। रोगी को ठण्डा पसीना आता है। दृष्टि कमजोर हो जाती है। चेहरा पीला और गाल पिचके हुए हो जाते हैं। शिश्न में भी खराबी आ जाती है। उसकी जड़ कमजोर और पतली हो जाती है तथा वह ढीली-ढीली और असाधारण रूप से छोटी और किसी-किसा की एक ओर का (अत्यधिक रूप से) टेढ़ी हो जाती है तथा इसकी शिरायें फूल जाती है और इसकी सम्वेदनात्मक संज्ञा अधिक बढ़ जाती है फलस्वरूप अन्त में रोगी नपुंसक हो जाता है। यदि इस रोग की उचित रोकथाम और उपयुक्त उपचार न किया गया तो रोगी भयानक रोगों से ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

उपचार

● प्याज को कूटकर आधा किलो रस निकालें और फिर किसी कलईदार बर्तन में डालकर 250 ग्राम मधु मिलाकर धीमी आग पर इतना पका डालें कि प्याज का समस्त रस जल जाये और मात्र मधु शेष रहे। तभी आग से उतारकर सफेद मूसली का चूर्ण 125 ग्राम मिलाकर घोटकर शीशी में सुरक्षित रखलें। इसे 6 से 12 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम खाने से नपुन्सकता, हस्तमैथुन से उत्पन्न लिंग एवं वीर्य विकार के लिए यह योग अमृततुल्य है।

● सफेद संखिया 3 ग्राम, चांदी के वर्क 9 ग्राम दोनों को मिलाकर सुरमें की भाँति खरल करें। फिर इसमें 48 ग्राम खान्ड मिलाकर पुन: खरल करके सुरक्षित रखलें। यह चूर्ण 125 मि.ग्रा. की मात्रा में प्रातःकाल नाश्ते के बाद मक्खन या मलाई में लपेटकर खाने से शारीरिक और स्नायविक दुर्बलता दूर होकर शिश्न में सख्ती उत्पन्न हो जाती है। बलवान बनाने वाला अति उत्तम योग है।

● बीजबन्द, सफेद मूसली, दक्षिणी शतावर, ढाक की गोंद, सेमल की गोंद, कौंच के बीज, ऊंगन के बीज, काली मूसली, गोंद नागौरी, सखाली, समुद्रसोख, बालछड़, तालमखाना, गोखरू, मोचरस, हुस्न यूसुफ, बहुफली, लसोड़ा सभी बराबर मात्रा में एकत्र करें। फिर समस्त औषधियों को अलग-अलग कूटपीस कर मिला लें और एक शीशी में सुरक्षित रखलें। इसे 5 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करें। इसके सेवन से नामर्दी, नपुंसकता, मैथुनशक्ति का सर्वथा अभाव, बचपन की गल्तियों (हस्तमैथुन) से उत्पन्न विकार, मैथुन एवं वीर्यपात हो जाना, बुढ़ापे के विकार, प्रौढ़ावस्था की असमर्थता, कमजोरी, हीनता, कृषता आदि दूर हो जाती है।

● एक सेर घी, 500 ग्राम खोया, डेढ़ सेर गेहूँ का आटा, 200 ग्राम कीकर का गौंद, 125 ग्राम सालब मिश्री, 125 ग्राम सफेद मूसली, 50 ग्राम किशमिश 50 ग्राम चिलगोजा, 50 ग्राम पिस्ता। केसर और कस्तूरी 2-2 ग्राम एवं चीनी डेढ़ सेर लें। पहले आटे को घी में भूनें फिर उसमें खोया मिलाकर चलायें। अन्त में सभी औषधियों का मिश्रण डालकर चलायें। सबसे अन्त में केसर और कस्तूरी एक प्याली में भली प्रकार घिसकर 50-50 ग्राम वजन के लड्डू तैयार कर सुरक्षित रखलें। ये 1-2 लड्डू आवश्यकतानुसार गरम दूध में मिश्री और मलाई मिलाकर रात को सोने से पूर्व सेवन करें। इसके सेवन से क्षीणता, कृषता, दुर्बलता, नामर्दी, नपुंसकता, वीर्य विकार, बार-बार मूत्र त्याग करना, कमर-दर्द तथा शरीर-दर्द, हस्तमैथुन-जन्य समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं।

● सौंठ, सफेद सन्दल, आक की जड़, कंकोल, जायफल, लौंग, अकरकरा, अफीम, दारु, रूमीमस्तंगी, केसर—ये सभी औषधियाँ समान मात्रा में लेकर अलग-अलग बारीक (सुरमें की भाँति) पीसें। अन्त में आपस में मिलाकर शहद की सहायता से चने के आकार की गोलियां बनाकर सुरक्षित रखलें। ये 1-2 गोली दूध के साथ सेवन करें। यह योग अत्यन्त ही स्तम्भक, शक्ति एवं वीर्यवर्धक है। इसके सेवन से शीघ्रपतन, प्रमेह, वीर्य प्रमेह, नामर्दी और हस्तमैथुनजन्य विकार नष्ट होकर अपूर्व बल प्राप्त हो जाता है।

● गुंदना के बीज, कुचला चूर्ण तथा लौंग 5-5 ग्राम, जरजीर के बीज, चिलगोजा की गिरी, कड़वी कूट, शीतरज सभी 10-10 ग्राम। कलौंजी, गाजर के बीज, सुरंजान मीठी सभी 30-30 ग्राम लेकर सभी औषधियों को पृथक-पृथक कूट पीसकर आपस में मिलाकर अदरक के रस में 4-4 ग्राम की मात्रा की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखें। यह 1-2 गोली आवश्यकतानुसार पानी से प्रयोग करें।

हस्तमैथुन के रोगी दूध में शहद मिलाकर गोली सेवन करें। कमजोर रोगी भी दूध से ही सेवन करें। इस औषधि के सेवन से स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हस्तमैथुनजन्य विकार, मैथुनहीनता, कमजोरी, नामर्दी, नपुंसकता असमय वीर्यपात हो जाना आदि रोग अवश्य ही नष्ट हो जाते हैं।

● सफेद प्याज का रस 10 ग्राम, शहद 6 ग्राम, शुद्ध घी 2 ग्राम को मिलाकर सुबह-शाम चाटकर ऊपर से गाय का दूध पीने से हस्तक्रिया-जनित नपुंसकता नष्ट हो जाती है।

● रात को सोते समय 3 ग्राम हींग को पानी में पीसकर 15-20 दिन तक लिंग पर लेप करने से तथा प्रातःकाल गरम पानी से धो देने से हस्तमैथुन-जन्य लिंग के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं। हानिरहित दवा है।

● माल कंगनी का तैल, लौंग का तैल 60-60 ग्राम, जमालगोटे का तैल 1 ग्राम सभी को 120 ग्राम तिल के तैल में डालकर हिलाकर सुरक्षित रखलें। 4-5 बूँद यह दवा इन्द्री के ऊपर नरमी से मलें (सुपारी तथा अन्डकोषों पर न लगने पाये) ऊपर से पान का पत्ता रखकर पट्टी लपेटकर धागे से बाँध दें। जब तक यह मालिश की दवा का प्रयोग करें तब तक लिंग को गरम पानी से धोने के पश्चात् ही स्नान करें। हस्तमैथुनजन्य एवं समस्त प्रकार के इन्द्री-दोष दूर करने हेतु अद्भुत प्रयोग है।

● जमाल गोटे का तैल असली 1 भाग, अजवायन का तैल 3 भाग को मिलाकर दस मिनट तक इन्द्री पर हल्के हाथों से रगड़कर मालिश करें। (जोर से मालिश कदापि न करें) अधिक लगाने से छाले पड़ सकते हैं, अत्यन्त तेज दवा है। इसके प्रयोग से लिंग में जोश उत्पन्न न होना, लिंग सुकड़ जाना, सम्भोग इच्छा की कमी इत्यादि नष्ट हो जाती है। मात्र 1-2 बूंदों की ही मालिश करें।

● आम के कच्चे फल जो चने के बराबर हों, कच्चे गूलर जो सख्त और बहुत छोटे हों तथा बबूल की कच्ची फलियाँ, जिनमें बीज न पड़े हों का कपड़छन छानकर चूर्ण तैयार करके रखलें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में 12 ग्राम मधु मिलाकर 3 सप्ताह तक निरन्तर प्रातःकाल सेवन करने से हस्तमैथुनजन्य शीघ्रपतन नष्ट हो जाता है।

पुरुष गुप्त रोग सम्बन्धी प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

स्वर्णमदन पिल्स (सिद्धि)—1-2 गोली आवश्यकतानुसार दूध से सेवन करें। यह एक शक्तिशाली बाजीकरण योग है। नामर्दी, शारीरिक, मानसिक तथा

स्नायु सम्बन्धी दुर्बलता, लैंगिक दुर्बलता, ध्वजभंग, धातुक्षीणता, शिश्न की शिथिलता, वीर्य प्रमेह, शुक्रक्षय, अतृप्त मैथुन-सुख, वीर्य की कमी, वीर्य का पतलापन आदि तमाम वीर्यदोष नष्ट होकर रोगी को अपूर्व शक्ति प्राप्त होगी।

पेरेन्ड्रेन क्रीम (सीबा)—पशुओं के वृषणों के एक्सट्रेक्ट के उचित अनुपान से निर्मित आवश्यकतानुसार आहिस्ता-आहिस्ता शिश्न पर मलें। समस्त पुरुष गुप्तरोग (लिंग-सम्बन्धी) विकारों को नष्ट करने में आशु गुणकारी है।

विगोरीना टेबलेट (ग्रीपो)—नामर्दी, वीर्यविकारों व प्रमेह आदि को नष्ट कर मानसिक, शारीरिक व स्नायु शक्ति प्रदाता है। आवश्यकतानुसार 1-2 टिकिया दूध के साथ प्रयोग करें।

सुपरटोन कैपसूल (सिंथोकेम)—2-3 कैपसूल गर्मियों में आंवले के मुरब्बे के साथ प्रयोग कर द्राक्षासव या मृत संजीवनी सुरा का उचित मात्रा में प्रयोग करें तथा सर्दियों में च्यवनप्राश या अश्वगन्धारिष्ट के साथ प्रयोग करें तथा पर्याप्त मात्रा में दूध, मलाई, रबड़ी खायें। प्रमेह विकार, वीर्य दोष, नामर्दी, मैथुनशक्ति-क्षीणता, मैथुन के पूर्व अथवा मैथुन के दौरान असमर्थ हो जाना, स्वप्नदोष, समय से पूर्व बुढ़ापा आ जाना, वीर्य में शुक्रकीटों की कमी आदि में उपयोगी है।

इम्पोटेन्स क्योर कैपसूल (न्यू इण्डिया)—1-2 कैपसूल आवश्यकतानुसार दूध से लगातार 40 दिनों तक ब्रह्मचर्य से रहकर सेवन करें। स्त्री के प्रति अनुराग की कमी, शीघ्रपतन, वीर्य विकार, मूत्र विकार, शिश्न की कमजोरी को नष्ट कर मैथुन शक्ति बढ़ानेवाली दिव्य औषधि है।

शुद्ध शिलाजीत (झन्डु)—आवश्यकतानुसार दिन में 2 बार दूध से प्रयोग करें। नामर्दी, मूत्र रोग, सामान्य दुर्बलता, वीर्य में शुक्र की कमी आदि में अतिशय गुणकारी है।

स्वप्न प्रमेहान्तक कैपसूल (श्रीज्वाला)—1-2 कैपसूल आवश्यकतानुसार दिन में 2 बार जल अथवा चन्दनासव के साथ सेवन करें। स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन, मैथुन शक्ति का हास, लैंगिक दुर्बलता, अतृप्त मैथुन-सुख आदि विकार नष्ट कर नवजीवन प्रदान करने वाली औषधि है।

अश्वगन्धा लिक्विड एक्सट्रेक्ट (झन्डु)—2 से 4 चम्मच दिन में 2-3 बार दूध या सादा जल से आवश्यकतानुसार प्रयोग करें। सामान्य दुर्बलता, स्नायविक दुर्बलता, धातु की कमजोरी, मांसपेशियों की कमजोरी, वीर्य विकार, शुक्राणुओं की कमी, शुक्रकीटों की गतिहीनता, मूत्र के साथ वीर्यक्षय आदि विकारों में हितकर है।

स्वप्नोजित वटी (धन्वन्तरि)—1-2 टिकिया आवश्यकतानुसार सुबह-शाम दूध के साथ। स्वप्नदोष, वीर्य का पतलापन, वीर्य के मैथुन सम्बन्धी समस्त विकार, मैथुन की असमर्थता, वीर्यपात होना, शीघ्रपतन, नामर्दी आदि विकारों का समूल नाश करने वाली औषधि है।

नोट—यदि इस टिकिया के साथ कुशावलेह तथा चन्दनासव का भी प्रयोग किया जाए तो स्वप्न प्रमेह में आशातीत लाभ मिलता है।

स्तम्भन वटी (धन्वन्तरि)—1-2 टिकिया आवश्यकतानुसार रात्रि को सोने से पूर्व दूध या मलाई से प्रयोग करें। यह टिकिया 'आनन्द वटी' के नाम से भी प्रसिद्ध है। शीघ्रपतन, अतृप्त (लैंगिक दुर्बलता के कारण) मैथुन प्रमेह, स्वप्नदोष आदि नष्ट होकर स्थायी रूप से स्तम्भन शक्ति प्राप्त होती है। प्रयोगकाल में कम से कम 1 माह ब्रह्मचर्य पालन करें। भोग विलास के इच्छुक 1 घंटा पूर्व 1-2 टिकिया दूध से प्रयोग कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

शक्तिराज टॉनिक (देशरक्षक)—2-2 बड़े चम्मच समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त सेवन करें। हृदय दुर्बलता, नाड़ी दुर्बलता, स्नायु दुर्बलता, मानसिक एवं शारीरिक दुर्बलता, घबराहट, बेचैनी, तनाव, हीन भावना में अतिशय लाभप्रद है।

विश्वेश्वर वटी (श्री कुष्ट चिकित्सालय)—1-2 टिकिया आवश्यकतानुसार दूध से सेवन करें। धातु क्षीणता, शीघ्रपतन, प्रमेह, नपुंसकता, नामर्दी, मैथुन असमर्थता हेतु अतिशय गुणकारी है।

जैरीफोर्ट टेबलेट तथा पेय (सीरप)—निर्माता हिमालय—2-2 टिकिया दिन में 2 बार (इसकी 1 टिकिया दिन में 1-2 बार अथवा आवश्यकतानुसार जीवन भर भी प्रयोग की जा सकती है। हानिरहित औषधि है, अथवा पेय 2-2 चम्मच सुबह-शाम अथवा भोजनोपरान्त प्रयोग करें। यह अति उत्तम युवाओं तथा वृद्धों हेतु स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक है। शारीरिक व मानसिक शक्ति प्रदान करता है। असफल संभोग क्रिया को सफल बनाता है। भूख बढ़ाता है। पाचन क्रिया को सुधारता है तथा मधुमेहियों को तो अमृततुल्य है। हृदय क्रिया को भी सुधारता है तथा रक्त प्रवाह को बढ़ाता है। स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से उपयोगी है।

क्लीवादि कैपसूल (श्रीज्वाला)—1-2 कैपसूल आवश्यकतानुसार सुबह-शाम गरम दूध से। प्रत्येक प्रकार के पुरुष गुप्त रोगों को नष्ट कर शारीरिक, मानसिक, स्नायविक दुर्बलता को नष्ट करता है। रात्रि को स्त्री प्रसंग के पूर्व प्रयोग करने से आशातीत लाभ होता है। इसके साथ ही इसी कम्पनी का ''नव जीवन'' मलहम इन्द्रिय पर मालिश करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है।

एनर्जी फोर्ट कैपसूल (इन्डोजर्मन)—संभोग के 1-2 घंटा पूर्व प्रयोग करने से अपूर्व आनन्द, तृप्ति एवं सन्तोष प्राप्त होता है। यह स्त्रियों और पुरुषों के लिए समान रूप से गुणकारी है। उत्साह, जोश देकर नपुंसकता, स्वप्नदोष, नामर्दी, लैंगिक दुर्बलता मिटाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग—योगी बसन्त कुसुमाकर रस (योगी), कामिनी विध्वंस कैपसूल (साहू), शर्बत शिलाजीत (देशरक्षक), द्राक्षाटोन सीरप (मेहता), भगवन्त मकरध्वज वटी (देशरक्षक), सैक्सोटेक्स टेबलेट (योगी), तिला मुलतानी (गैम्बर्स), स्विंग टेबलेट (श्री धन्वन्तरि), ओको रसाफोर्ट कैपसूल (न्यू इण्डिया)।

पालरिविन फोर्ट टेबलेट तथा प्लेन टेबलेट (चरक), एड कैपसूल (एम्पल), स्पीमेन प्लेन तथा स्पीमेन फोर्ट टेबलेट (हिमालय), विगोरेक्स टेबलेट (झन्डू), मासटिना टेबलेट (मेडीकल इथिक्स), मुलटॉनिक टेबलेट (मुलतानी), सैक्सोटोन टेबलेट (सिन्थोवन्स), अश्वगन्धा घनसत्व (गर्ग) नवशक्ति कैपसूल (निर्मल), थ्री नाट थ्री कैपसूल (शान्ताकरम), वीगोरोल्स कैपसूल (चरक), अल्फाटेबलेट (गैम्बर्स), स्वप्न चिन्तामणि चक्रिका (मुलतानी), अद्भुत तिला (मेहता), नवजीवन कैपसूल (जी. ए. मिश्रा), बजरंग तिला (मार्तन्ड), टेक्सल टेबलेट (कमल फार्मेसी), स्ट्रेनेक्स कैपसूल (झन्डू), वीटाप्लेक्स टेबलेट (योगी), अमीबीटा फोर्ट कैपसूल (ऊंझा)।

कामरोज कैपसूल (साहू), सैक्सटोन आइन्टमेन्ट (सिन्थोकेम), नपुंसकत्वरि टेबलेट (गर्ग), नवयौवन मलहम (गर्ग), फोर्टेज टेबलेट (अलारसिन), बानोफिट टेबलेट (भारतीय औषधि निर्माणशाला), क्लीवान्तक कैपसूल (गर्ग), टाइम इन्क्रीजिंग कैपसूल (न्यू इन्डिया), सैक्सटोन सीरप (मेडीकल इथिक्स) सिद्ध चन्द्रोदय वटी (मेहता), स्ट्रेनेक्स टेबलेट (झन्डू), टोनोविरान टानिक (एसेप्टिक), एलोज कम्पाउन्ड (एलारसिन), ग्लोटोन टेबलेट (ग्लोब), बाय सैक्सड्रेगी (भारतीय औषधि निर्माणशाला), वाइतौन 99 सीरप (भारतीय औषधि निर्माणशाला), सीमेन्टो टेबलेट (एमिल), सिक्स-एक्स टेबलेट (अजमेरा), रसायन वटी (राजवैद्य शीतल प्रसाद एन्ड संस)।

शक्ति विकास सीरप (योगी), अल्फा अल्फा टानिक (एसेप्टिक), वीगोरानी आइन्टमेन्ट (गैम्बर्स), स्वास्थ वर्धक कैपसूल (सन इण्डिया), अतुल शक्तिदाता योग (बैद्यनाथ), शिलाजीत कैपसूल (डाबर), अल्बोसांग पाउडर (डिशेन), सैक्सोटेक्स क्रीम (योगी), पालरिविन माइल्ड टेबलेट (चरक), ओकारसा टेबलेट

व कैपसूल (न्यू इन्डिया), मदनशक्ति कैपसूल (ज्वाला), एनर्जिक 31 (विकास संस्थान मुरादाबाद), शक्ति मकरध्वज वटी (मार्तन्ड), केसरी जीवन (झन्डू), कामशक्ति टेबलेट (साहू), सैक्सपान क्रीम (साहू), बिगोरांना फोर्ट टेबलेट (हरबोमेड), वीर्य तरलान्तक कैपसूल (गर्ग बनौ.), जेन्टल टेबलेट (अजमेरा)।

वी-3 जेली (हिमालय), टेस्टोविग टेबलेट (मार्तन्ड), नटवैक्स फोर्ट टेबलेट (ग्लोब), हिमकोलीन क्रीम (हिमालय), अददजोया टेबलेट (चरक), महास्तम्भन वटी (मेहता), मदनोसूल कैपसूल (पंकज फार्मा.), केसरपाक (देशरक्षक), नवयौवन मलहम (गर्ग), बंगसिल टेबलेट (अलारसिन), जरयान टेबलेट (योगी), वीगाटोन टेबलेट (अजमेरा), साहना आयल कम्पाउन्ड (गैम्बर्स), शक्ति सम्राट कैपसूल (साहू), एक्टीफोर्ट सीरप (अनुजा), के. पी. याकूति टेबलेट (दुग्धानुपान), नरबैक्स फोर्ट टेबलेट (ग्लोब), अफ्रोडेट कैपसूल (धूतपापेश्वर), लामाटेक्स पिल्स (लामा), रतिप्रियावटी, शुक्रस्तम्भक चक्रिका (मुलतानी), शक्तिसंचार वटी (देशरक्षक),

प्रमेह केसरी कैपसूल (जी. ए. मिश्रा), शक्तिसन कैपसूल (सन इन्डिया), कामशक्ति केसरी टेंबलेट (गर्ग), वीगोरल्स स्पेशल जैली (चरक), सत शिलाजीत (श्रीगंगा), रतिबर्धन कैपसूल (साहू), क्लैव्यारी कैपसूल (निर्मल), टेनटेक्स प्लेन एवं फोर्ट टेबलेट (हिमालय), एडिजुआ टेबलेट (चरक), ओजस टेबलेट (चरक), नियो टेबलेट (चरक), वीर्य प्रमेहहर कैपसूल (अतुल फार्मेसी), अतुल पावर कैपसूल (अतुल फार्मेसी), शिलाजीत कैपसूल (अतुल फार्मेसी), शक्ति संचय सीरप (अतुल फार्मेसी), नवशक्ति मलहम (अतुल फार्मेसी), वीर्यशोधन चूर्ण व वीर्य शोधनवटी (अतुल फार्मेसी) इत्यादि योग भी अतिशय उपयोगी एवं लाभकारी है। औषधि के साथ प्राप्त पत्रक के दिशानिर्देशानुसार अथवा अपने फैमिली डाक्टर के परामर्शानुसार सेवन करें अन्धाधुन्धा प्रयोग करें।

नपुन्सकता, नामर्दी

रोग परिचय—इस रोग से ग्रसित रोगी पूर्णरूपेण मैथुन करने के अयोग्य हो जाता है। यदि उसके लिंग में होता भी है तो बहुत कम और थोड़ी देर के लिए। अंग्रेजी में इसे सैक्सुअल डेविलिटी भी कहते हैं। इस रोग के मुख्यत: 2 कारण हुआ करता है—1. शिश्न का टेढ़ापन, ढीलापन और पतलापन आदि रोगों के कारण नामर्दी उत्पन्न हो जाना, 2. किसी अन्य शारीरिक दोषों के कारण जैसे—अत्यधिक मैथुन, गुदा सम्भोग करना, मैथुन, मस्तिष्क एवं स्नायु दुर्बलता, अस्थिर मानसिक विचारों का होना, अधिक समय मैथुन का त्याग कर देना।

हृदय की कमजोरी, वृक्कों के दोष, अन्डकोषों के दोष, वीर्य और वीर्य अंगों के दोष, हारमोन्स सम्बन्धी दोष, रक्त संचार में दोष, अधिक उपवास रहना, अधिक मद्यपान करना, वीर्य प्रमेह और स्वप्नदोष, सुजाक, उपदंश, मूत्राशय शोथ, मूत्राशय की पथरी, अन्तड़ियों के कीड़े, मलाशय के रोग, लिंग के सीवन पर फोड़ा होना अथवा चोट लग जाना, नशीली और सुन्न करने वाली भांग, गांजा, अफीम इत्यादि का अधिक सेवन करना इत्यादि।

इस रोग में लिंग शक्तिहीन हो जाता है तथा उत्थान होना बन्द हो जाता है। इसे एक प्रकार से पुरुष गुप्तांग का लकवा कह सकते हैं। यह शोक, भय, चिन्ता, रमणी के प्रति अनुराग की कमी, वृद्धावस्था, स्नायविक दुर्बलता, अत्यधिक मानसिक परिश्रम, स्त्री के शरीर अथवा वातावरण का दुर्गन्धित होना, शीतल पदार्थों का अत्यधिक सेवन, सम्भोग क्रिया के प्रति भय उत्पन्न हो जाना, पत्नी अथवा प्रेमिका द्वारा झिड़क दिया जाना, अपराधी होने का भय, शर्मीलापन इत्यादि के कारण भी नपुंसकता रोग उत्पन्न हो सकता है। चिकित्सीय दृष्टिकोण से यह 5 प्रकार का होता है—1. सहज नपुंसकता, 2. रोगजन्य नपुंसकता, 3. जरासम्भव नपुंसकता, 4. मानसिक नपुंसकता, 5. वीर्यक्षय नपुंसकता। हांलाकि नपुंसकता की समस्या अत्यन्त गम्भीर मानी जाती है किन्तु इसकी चिकित्सा साध्य है, असाध्य नहीं। वैसे यह स्वयं में कोई रोग भी नहीं है बल्कि एक लक्षण है जिसका प्रभाव मनोवैज्ञानिक अधिक होता है। जो नपुंसकता असाध्य होती है वह है जन्मजात नपुंसकता। इसमें औषधियों के सेवन के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक उपचार अधिक कारगर साबित होता है। धैर्यपूर्वक उपचार आवश्यक है, जल्द दवाएं न बदलें।

उपचार

● दालचीनी 2 भाग, लौंग व राई 1-1 भाग लेकर पाउडर बनालें। इसे आधी ग्राम की मात्रा में गुनगुने दूध के साथ सुबह-शाम खाते रहें।

● मालकंगनी का तैल 40 ग्राम, घी 80 ग्राम, शहद 120 ग्राम को मिलाकर 1 कांच के बरतन में सुरक्षित रखलें। प्रात:काल 6 ग्राम की मात्रा में सेवन करें। इसके प्रयोग करने से राजयक्ष्मा और नपुंसकता नष्ट हो जाती है तथा दृष्टि (नजर) तेज हो जाती है। गोदुग्ध अधिक पियें तथा 40 दिन तक दवा का सेवन करें।

● सफेद प्याज का रस, अदरक का रस, देशी घी 6-6 ग्राम शुद्ध शहद 10 ग्राम को मिलाकर प्रात:काल 40 दिनों तक नियमित रूप से चाटने से नामर्द-मर्द बन जाता है।

● 200 ग्राम लहसुन को सिल पर बारीक पीसकर 600 ग्राम शुद्ध शहद में मिलाकर शीशी में डालकर शीशी का मुँह बन्द कर दें। फिर इसे गेहूँ की बोरी या ढेर में दबा दें। उसे 21 या 31 दिन बाद इसे निकालकर सबेरे-शाम 10 ग्राम की मात्रा में खाकर ऊपर से गुनगुना दूध पियें, 21 दिन प्रयोग करें।

● 60 ग्राम छिला लहसुन घोटलें और इतना ही पानी मिलाकर छान लें। तदुपरान्त इसमें 10 ग्राम शहद मिलालें। फिर इस शरबत को पीलें। इसके पीने के डेढ़ या 2 घंटे बाद कम से कम 250 ग्राम, इच्छा हो तो किलोभर तक दूध पिया करें। मात्र 2 सप्ताह बाद ही चमत्कार स्वयं दृष्टिगोचर होने लगेगा। आँखों की ज्योति भी बढ़ जाएगी तथा बाल भी सफेद होने से बच जाऐंगे।

● 6 ग्राम केसर को बारीक पीसकर 5 ग्राम सत्यानाशी के बीजों के तैल में खूब अच्छी तरह खरल करके इस लेप को शीशी में सुरक्षित रखलें। इसे शिश्न के ऊपरी भाग (सुपारी) को छोड़कर शेष भाग पर 2 बूंदों को धीरे-धीरे मालिश करें। प्रतिदिन के इस प्रयोग से लिंग की प्रत्येक प्रकार की निर्बलता मात्र थोड़े ही दिनों में दूर हो जाती है और इन्द्री सुदृढ़ हो जाती है।

● देशी घी में लहसुन की कुछ कलियां भूनकर नियमित रूप से खाने से स्तम्भन-शक्ति में वृद्धि होती है और जन्मजात नपुंसकता को छोड़कर हर प्रकार की नपुंसकता नष्ट हो जाती है।

● 1 अदद (नग) मीठा अम्बरी सेब छीलकर उसमें जितनी भी लौंग आ सकें चुभोकर किसी चीनी-मिट्टी के बरतन में 1 सप्ताह तक पड़ा रहने दें। तत्पश्चात् लौंग निकाल कर सुरक्षित रखलें। फिर प्रतिदिन यह 4 लौंग दूध के साथ चबाने से स्तम्भन शक्ति में अत्यन्त वृद्धि हो जाती है और इन्द्रिय की दुर्बलता समाप्त होकर रोगी पुरुष पौरुष से परिपूर्ण हो जाता है।

नोट—स्वप्नदोष व धातु रोगी प्रयोग न करें।

● दालचीनी का तैल 10 ग्राम, जैतून का तैल 30 ग्राम को आपस में भली भांति मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे लिंग पर रोग-दशानुसार कुछ दिनों तक निरन्तर मालिश करें तथा इन्द्री को ठण्डे जल से भीगने से बचायें। शीघ्रपतन नष्ट होकर पौरुषवृद्धि हेतु अति उपयोगी प्रयोग है।

● सरसों और अरन्ड के बीज 10-10 ग्राम कूट छानकर 50 ग्राम तिलके तैल में मिलाकर सुरक्षित रखलें। रात के समय लिंग पर मालिश करने से शादी से पहले और शादी के बाद की कमजोरी नष्ट हो जाती है।

● इमली के बीजों को रात में भिगोकर सबेरे इन्हें छील, पीसकर बराबर गुड़ मिलाकर 6-6 ग्राम की गोलियाँ बनाकर रखलें। यह 1-1 गोली प्रातःसायं खाने से वीर्य की कमजोरी मिटकर पुरुषार्थ वृद्धि हो जाती है। गरीबों के लिए अत्यन्त उपयोगी घरेलू उपचार है।

● बादाम को भिगोकर छीली गई गिरियां तथा काली मिर्च (6-6 नग) सौंठ 2 ग्राम, मिश्री इच्छानुसार मिलाकर चबाकर ऊपर से दुग्धपान करने से शीघ्रपतन दूर होकर स्तम्भन शक्ति बढ़ती है। नपुंसकता दूर हो जाती है।

● मूसलीपाक, लक्ष्मी विलास रस, महापाक, हिंगुल भस्म, शिंगरफ युक्त लौह भस्म, पारायुक्त चाँदी भस्म आदि में से किसी भी 1 का सेवन करना भी नपुंसकता को दूर कर देता है।

● छोटा गोखरू 125 ग्राम लेकर चूर्ण तैयार कर घी में भूनकर 250 ग्राम मधु में मिलाकर रखें। प्रातः समय 12 ग्राम खाकर ऊपर से दुग्धपान करने से मर्दाना शक्ति उत्पन्न होकर नपुसकता नष्ट हो जाती है।

● असगन्ध नागौरी, कौंच के बीज की गिरी, सालब मिश्री समभाग लेकर मैदा के समान चूर्ण बनालें। इसे 3 ग्राम में 12 ग्राम मधु मिलाकर सुबह-शाम दुग्ध के साथ सेवन करने से असाधारण मर्दाना शक्ति उत्पन्न होती है।

● पान की जड़, असगन्ध नागौरी, सफेद मूसली, सम मात्रा में लेकर सुरमे की भाँति बारीक पीस लें। फिर समस्त औषधि के वजन के बराबर खान्ड मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 6-6 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ खाने से नपुंसकता नष्ट हो जाती है। अनुभूत योग है।

● दालचीनी का तैल, लौंग का तैल, बादाम का तैल, जमालगोटा का तैल, पिस्ता का तैल सभी समभाग लेकर मिलाकर सुरक्षित रखलें। रात्रि को सोते समय सुपारी और सींवन को बचाकर, शेष इन्द्री पर 1 बूंद की मालिश कर ऊपर से पान का पत्ता बाँधने से नपुंसकता दूर होकर इन्द्री का टेढ़ापन, पतलापन एवं असमानता दूर होकर वह दृढ़ और शक्तिशाली हो जाती है।

● अदरक का रस, प्याज का रस, गाजर का रस प्रत्येक 250 मि.ली. लें तथा मुर्गी के 10 अण्डों की जर्दी, बिनौले का तैल 125 मि.ली., मधु 375 मि.ली. सभी को मिलाकर भली प्रकार फेंटकर धीमी आग पर पकालें। जब चटनी की भाँति गाढ़ा हो जाए तो उतारकर शीशे के बरतन में रखलें। इसे 30 मि.ग्रा. की मात्रा में प्रातःकाल सेवन करें। वृद्धों और नपुंसकों के लिए अमृततुल्य है।

● सूखे हुए केंचुएं जो बरसात के मौसम में गीली जमीन में निकलते हैं, इनको काँटे में फँसाकर लोग मछली का शिकार करते हैं। इन केंचुओं को जिन्दा पकड़कर नमकीन छाछ में डाल देने से इनके पेट की मिट्टी निकल जाती है, यह शुद्ध केंचुआ कहलाता है, इसे थोड़े-थोड़े पानी और घी में डालकर धीमी आग पर पकायें कि केंचुओं का प्रभाव घी में आ जाए, जब पानी जल जाए तो घी को छानकर सुरक्षित रखलें। यह घी 15 से बूँद तक घी या दूध में मिलाकर पीते रहने से नपुंसकता तथा शारीरिक कमजोरी आदि रोग दूर हो जाते हैं। पिसे हुए खुश्क केंचुओं का चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में खाने से मर्दाना शक्ति बढ़ कर सम्भोग में आनन्द प्राप्त होने लगता है। दुबले, पतले और क्षयरोग से ग्रसित रोगी इसके सेवन से मोटे-ताजे हो जाते हैं। चमत्कारिक योग है।

● बीर बहूटी (लाल रंग के बहुत सुन्दर कीड़े जो सावन-भादों की बरसात में ग्रामीणांचलों एवं जंगलों में दिखलायी देते हैं) 60 से 120 मि.ग्रा. तक प्रतिदिन खाते रहने से मर्दाना ताकत उत्पन्न होकर वीर्य गाढ़ा हो जाता है। इसका सेवन मानसिक व स्नायविक कमजोरी, हिस्टीरिया, दमा, खाँसी में भी लाभप्रद है। यदि चेचक के दानें किसी के भली प्रकार न निकलें तो 1 कीड़ा पीसकर खिला देने से चेचक के दानें खुलकर निकल आते हैं।

नपुंसकता नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदिक योग

टेन्टैक्स प्लेन तथा फोर्ट टिकिया (हिमालय) (नोट—वृक्क रोगों और हृदयनिपात की अवस्था में कदापि सेवन न करें।) आवश्यकतानुसार 1-2 टिकिया दिन में 2-3 बार दूध के साथ सेवन करें।

हिमकोलीन मलहम (हिमालय)—शिश्न पर मालिश करें।

अफ्रोडेट कैपसूल (धूतपापेश्वर)—1-2 कैपसूल दूध के साथ दिन में 1-2 बार सेवन करायें। यह स्त्री पुरुष दोनों के लिए उपयोगी है।

नवजीवन कैपसूल (मिश्रा)—सैक्सटोन लिक्विड (मेडीकल इथिक्स) फोर्टेज टेबलेट (एलारसिन) मकरध्वज टेबलेट (मार्तन्ड), टेस्टोबिग टेबलेट (मार्तन्ड) इत्यादि में से किसी एक का व्यवहार करें।

अण्डकोष की शिराओं का फूल जाना

रोग परिचय—रोगग्रस्त वृषण के ऊपर उभार सा पैदा हो जाता है जो ऊपर से तंग और नीचे चौड़ा होता है। इसमें चौड़ी गुठलियाँ प्रतीत होती हैं। जोर से

साँस लेने, खाँसने, बोलने, खड़ा हो जाने से सूजन बढ़ जाया करती है, इसमें दर्द होता है। रोगी को चलना-फिरना भी मुश्किल हो जाता है। उसे मर्दाना कमजोरी, स्वप्नदोष, वीर्य प्रमेह, शीघ्रपतन आदि रोग भी इसी के उपद्रवस्वरूप हो जाते हैं। इस रोग का कारण अत्यधिक मैथुन करना, यकृत रोग, कब्ज, साईकिल, ऊँट अथवा घोड़े की सवारी करना है।

उपचार—यदि सम्भव हो तो एनिमा द्वारा अथवा हानिरहित जुलाब द्वारा पाखाना लाकर सर्वप्रथम अन्तड़ियों को साफ करें। तत्पश्चात् सस्पैन्सरी बैन्डेज (पट्टी) लगायें अथवा ढीला लंगोट बाँधें। लेडलोशन या ठण्डे पानी की कपड़े की गद्दी रखें। सर्द पानी से प्रतिदिन स्नान करें। कब्ज न रहने दें, जब तक रोगमुक्त न हो जायें तब तक सम्भोग (मैथुन क्रिया) से बचाव रखें।

● एरन्ड के बीजों की गिरी दूध में पकाकर अन्डकोष पर लेप करें।

● कदम्ब के पत्ते 50 ग्राम की भुजिया पकाकर उसमें जौ का आटा, बकरी के गुर्दे की चर्बी मिलाकर अन्डकोष पर बाँधें।

● मैथी के बीज, अलसी के बीज, बबूरा के फूल प्रत्येक 12-12 ग्राम बकरी के गुर्दे की चर्बी 24 ग्राम, सोसन का तैल 24 ग्राम में मिलाकर (अन्य दवायें पीसकर मिलालें) रोगग्रस्त स्थान पर लगायें। लाभप्रद योग है।

● पुष्करमूल, महानिम्ब के बीजों की गिरी, नीम के बीजों की गिरी, मस्तंगीरूमी गुग्गुल 1-1 ग्राम सौंफ के अर्क में घिसकर लेप लगायें।

नोट—औषधियों से लाभ न हो तो तुरन्त योग्य शल्य चिकित्सक से आप्रेशन करवायें।

अन्डकोषों की खुजली, फोतों की खुजली

रोग परिचय—कई बार अन्डकोषों में इतनी खुजली हो जाती है कि रोगी अन्डकोषों को खुजला-खुजला कर घाव पैदा कर डालता है। यह रोग मैल कुचैला रहने, मिर्च-मसालें युक्त गरम-गरम अधिक तथा बार भोजन करने, पुरानी कब्ज, अन्डकोषों के बालों में जुएं पड़ जाने, कपड़ों की रगड़ तथा भोजनों में लोहा, विटामिन बी काम्पलेक्स और प्रोटीन के अभाव से उत्पन्न होता है।

उपचार

● गन्धक या कमीला को सरसों के तैल में घिसकर लगाने से अन्डकोषों की खुजली नष्ट हो जाती है।

● पीला मुसब्बर गुलाब के तैल में घोलकर फोतों पर खुजली में लगाना लाभप्रद है।

● मुर्दासंग को हरे धनिया के रस और अर्क गुलाब में घिसकर या गुलाब तैल (गुल रोगन) में मिलाकर अन्डकोषों पर लगाने से खुजली दूर हो जाती है।

वृषण या खसियों का दर्द

रोग परिचय—अन्डकोषों में यह दर्द हस्तमैथुन, सम्भोग की अधिकता, मूत्र मार्ग की शोथ, वृक्कों में पथरी या रेत होना, अजीर्ण, पुरानी शोथ अथवा छोटे जोड़ों के दर्द आदि कारणों से उत्पन्न हुआ करता है। यह दर्द 1 ओर अथवा दोनों ओर के अन्डकोषों में ठहर-ठहर कर उठता है तथा दर्द के समय खसिया ऊपर चढ़ जाया करता है। हाथ लगाने अथवा छू लेने से दर्द अधिक बढ़ जाया करता है। कभी-कभी इतने अधिक जोर से दर्द उठता है कि रोगी तड़प उठता है। इस रोग में शोथ या जलन नहीं होती है। इस दर्द का सम्बन्ध स्नायु से हुआ करता है।

उपचार

● यदि रोगी को कब्ज हो तो हानिरहित जुलाब देकर अथवा एनिमा लगाकर पेट अवश्य साफ करें।

● ठण्डे पानी में कपड़ा डुबोकर खसियों पर रखना अथवा बर्फ का टुकड़ा रगड़ना इस दर्द में (खसियों के दर्द में) लाभप्रद है।

● हरे धनिये का रस व काकमाची (मकोय) के रस में थोड़ी अफीम घिसकर दर्द के स्थान पर लगाना लाभप्रद है।

● सिरका व अर्क गुलाब में थोड़ा सा कपूर घोलकर कपड़ा गीला करके अन्डकोषों पर लपेटना अतीव गुणकारी है।

● अफीम, कपूर, केसर, कीकर का गोंद, अजवायन—खुरासानी सभी को सम भाग लें और पीसकर अण्डे की सफेदी में लेप बनाकर अन्डकोषों पर लगाने से दर्द नष्ट होता है।

● माजून फिलसफा (यूनानी हकीमों वाली दवा) बाजार में उपलब्ध है। का सेवन करते रहना भी अन्डकोषों के दर्द में अत्यन्त ही लाभकारी है।

अण्डकोषों (फोतों) में पानी पड़ जाना

रोग परिचय—पुरुषों के इस रोग में वृषणों को ढकने वाली श्लैष्मिक कला (Tunica Vaginalis) में रक्त का पानी (Serous of luid) एकत्र हो जाता है। कई

बार यह रोग स्वयं दूर हो जाता है किन्तु कभी-कभी यह पुराना हो जाता है, क्योंकि इस रोग के आरम्भ में रोगी को पता ही नहीं चलता है। फोतों में सूजन होने से फोते बड़े हो जाते हैं परन्तु उनमें दर्द नही होता है। कई रोगियों को फोते शाम को अधिक सूज जाते हैं। जिस ओर सूजन होती है वह भाग नाशपाती के आकार का अथवा अन्डाकार हो जाता है। निचला भाग अधिक चौड़ाई में और ऊपरी भाग कम, चौड़ाई में सूजा होता है। अन्डकोष के अन्दर का तरल पारदर्शक होता है, इसलिए अन्डकोष के एक ओर टार्च या मोमबत्ती जलाकर रखने और दूसरी ओर देखने पर उसका प्रकाश दिखलायी देता है। (यह निरीक्षण अन्धेरे कमरे में करें, यदि इस तरल में रक्त मिला हो अथवा अन्डकोष का पर्दा बहुत मोटा हो चुका हो तब ऐसी स्थिति में प्रकाश आर-पार दिखलाई नहीं देता है।

कई बार अन्डकोषों में मामूली सी चोट लग जाने पर और रोगी को पता न लगने पर भी पानी वाला भीतरी पर्दा फट जाता है, जिसके कारण रोगी को अत्यधिक दर्द होता है सूजन तो कम होती है किन्तु 1 या 2 दिन में फोता पानी से पुनः भर जाता है और उस पर रक्त की लाली सी प्रतीत होने लगती है। फोता नीचे की ओर अधिक फूल जाता है और ऊपर का पानी कम हो जाता है। बाद में यह पानी फोते के अन्दर शोषित होने लगता है। हाइड्रोसील का पानी (तरल) साफ और पीला सा होता है। किन्तु रक्त मिल जाने पर इसका रंग लाल (चाकलेट के रंग का) अथवा भूरा या हल्का हरा हो जाता है।

उपचार—एलवा (मुसब्बर) गुग्गुल, आम्बा हल्दी प्रत्येक 1-1 ग्राम और सरेश 3 ग्राम लेकर सबको पानी में पीसकर लेप बनाकर फोतों पर लगाते रहें। पानी को शोषित करने के लिए यूनानी दवा—जवारस मस्तंगी 6 ग्राम या माजून फिलसफा 5 ग्राम की मात्रा में खाते रहना अत्यन्त ही लाभप्रद है। इस उपचार से लाभ न होने पर योग्य चिकित्सक द्वारा ट्रोकार कैनुला से पानी निकलवा दें।

लिंग को मोटा, लम्बा व कठोर बनाने के कुछ योग

लिंग के दो कार्य होते हैं—1. मूत्र बाहर निकालना, 2. सम्भोग क्रिया में उत्थित होकर वीर्य को एक चरम आनन्दमय अनुभूति के साथ स्त्री की योनि की गहराईयों में उड़ेल देना। भिन्न-भिन्न पुरुषों के शिश्न की लम्बाई, मोटाई उनके वंश परम्परानुसार कम व अधिक हो सकती है। प्राकृतिक रूप से भी प्रत्येक व्यक्ति का लिंग एक जैसा लम्बा व मोटा नहीं होता है। तने हुए (उत्थितवस्था में) लिंग

की औसत लम्बाई लगभग 6 इंच और लिंग का व्यास (घेरा) सवा चार इंच तक हो सकता है। जहाँ तक स्त्री के यौनसुख (तृप्ति) का सवाल है वहाँ लगभग साढ़े चार इंच उत्थित अवस्था में लिंग वाला व्यक्ति भी स्त्री को तृप्त कर सकता है क्योंकि कामोत्तेजना की अवस्था में स्त्री की योनि की लम्बाई 1 से 3 इंच तक बढ़ती है इससे पूर्व वह साढ़े तीन इंच लम्बाई रखती है। योनिमुख से योनि की लम्बाई का पहला तिहाई भाग ही संवेदनशील होता है। (यही चरम सुख की अनुभूति कराने वाला भाग कहा जाता है।) लिंग 33 वर्ष की आयु तक लम्बाई में बढ़ सकता है तथा मोटाई हर आयु में बढ़ायी जा सकती है।

● जौंक खुश्क पीसकर तिल के तैल में मिलाकर 7 दिन तक मालिश करने से लिंग कठोर एवं लम्बा हो जाता है।

● केंचुए खुश्क को तिलों के तैल में जलाकर इस तैल की लिंग पर मालिश करने से 1 सप्ताह में ही लम्बाई एवं कठोरता बढ़ जाती है।

● काली मिर्च 11 नग, लौंग 13 नग, भीमसैनी कपूर 1 ग्राम बारीक पीसकर लिंग पर मालिश करने से लिंग मोटा व लम्बा हो जाता है।

● चमेली का बढ़िया शुद्ध तैल लिंग पर मालिश करने से कठोरता व लम्बाई में वृद्धि हो जाती है।

● बकरी का घी या शेर की चर्बी की लिंग पर मालिश करने से भी लम्बाई बढ़कर कठोरता वृद्धि भी हो जाती है।

● जंगली प्याज 10 ग्राम, अकरकरा 2 ग्राम, बारीक पीसकर रखलें। इसका 11 या 21 दिन लिंग पर लेप करने से लिंग कठोर हो जाता है।

● जमीकन्द का रस, घी, कपूर, पीपल, शहद, सुहागा और धतूरे का रस सभी समभाग लें और घोटकर सुरक्षित रखलें। इसका प्रतिदिन 1 माह तक लेप करने से लिंग बहुत बड़ा हो जाता है।

● शहद, सैंधा नमक, कबूतर की बीट आपस में मिलाकर पानी में पीसकर लिंग पर लेप करने से लिंग मोटा हो जाता है तथा स्तम्भन भी अधिक होता है।

● चीटे बड़े 7 अदद, (कब्रिस्तान में अधिकता से पाए जाते हैं) लाकर 1-1 को मारकर तुरन्त शुद्ध चमेली के तैल में डालते जायें। तदुपरान्त तेल को शीशी में भरकर मजबूत कार्क लगाकर 1 दिन तथा रात (24 घंटे तक) बकरे की मैंगनियों में दबा दें फिर शीशी को निकालकर मरे हुए चींटों को इतना रगड़ें कि वह तैल में ही घुल जाए। फिर इस तैल को हल्का गरम करके लिंग पर मलें

(मालिश से पूर्व लिंग को खुरदरे कपड़े से रगड़ कर लाल कर लें) फिर तुरन्त ही यह तैल मलें। 15-20 दिन के प्रयोग से ही लिंग लम्बा, मोटा और कठोर हो जाता है।

संभोग शक्तिवर्धक कुछ योग

● बिदारीकन्द का चूर्ण उसी के रस में भिगोकर घी और शहद में मिलाकर खाने से सम्भोग शक्ति बढ़ जाती है।

● आँवले का चूर्ण 6 बार उसी के रस में भिगोकर घी, शहद या खान्ड मिलाकर चाटकर ऊपर से दुग्धपान से वीर्य वृद्धि हो जाती है।

● तालमखाना, बीजबन्द, उटंगन के बीज प्रत्येक 1-1 तोला, सालब मिश्री, शकाकुल मिश्री, सफेद मूसली, काली मूसली प्रत्येक 2-2 तोला, फूल मखाना, सिंघाड़े का आटा प्रत्येक 4-4 तोला, कमरकस 6 तोला तथा खान्ड सभी औषधियों के कुल वजन के बराबर लें। सभी औषधियों को अलग-अलग कूट पीसकर मिलायें तथा अन्त में खान्ड भी मिला लें। इसे 9-9 माशा की मात्रा में सुबह-शाम गौ दुग्ध के साथ खायें। इसे दो माह प्रयोग करें।

● भूसी ईसबगोल 5 तोला, सफेद मूसली ढाई तोला दोनों को लेकर कूटपीसकर चूर्ण बनालें। इसे 6 माशा की मात्रा में लेकर डेढ़ पाव दूध में पकाकर (खीर सी बनाकर) चीनी मिलाकर हल्की गुनगुनी ही खायें। अत्यन्त बल-वीर्य वर्धक योग है।

● बहुफली का चूर्ण 3 माशा की मात्रा में दूध के साथ 8 दिन खाने से कमजोरी नष्ट हो जाती है।

● शतावर 10 तोला खूब बारीक पीस लें। इसे 6 माशा से 1 तोला तक रात्रि को आधा सेर दूध में जोश देकर (पकाकर) गाढ़ा होने पर ठण्डा करके सोते समय खायें। जिगर और गुर्दे को शक्ति प्रदान कर वीर्य गाढ़ा कर देता है।

● गोखरू के दानों को दूध में 3 बार उबालकर खुश्क करें। (1 बार उबालें फिर खुश्क करें अर्थात् सुखालें, यह प्रक्रिया 3 बार करें।) तत्पश्चात् पीसकर चूर्ण बनाकर सेवन करें। मर्दाना शक्ति उत्पन्न करने हेतु रामबाण योग है।

● ढाक के बीज, सिरस के बीज ढाई-ढाई ग्राम, मिश्री 500 ग्राम को कूटपीसकर छान लें। इसे 12 ग्राम की मात्रा में नित्य प्रातःकाल प्रयोग करें। वीर्य बढ़ाने वाला उत्तम योग है।

● लौंग, सफेद मूसली, बिदारीकन्द, गिलोय, गोखरू सभी सममात्रा में लेकर

कूट पीस छानकर सुरक्षित रखलें। इसे 3 ग्राम की मात्रा में रात्रि के समय दूध से सेवन करें। सम्भोग के पश्चात् खाना भी लाभप्रद है। वीर्यवर्द्धक अनुभूत योग है।

● सफेद मूसली, काली मूसली, बहमन लाल, बहमन सफेद, शतावर, बिदारीकन्द, बिधारा, कौंच, असगन्ध सभी सममात्रा में लेकर कूटपीसकर छान लें। 4 ग्राम की मात्रा में दूध से सेवन करें। अत्यन्त गुणकारी योग है।

वीर्य को गाढ़ा बनाने वाले कुछ योग

● आम की गुठली की गिरी का बारीक चूर्ण करके 3 माशे की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करते रहने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

● बहुफली का चूर्ण 3 माशे की मात्रा में प्रतिदिन सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करने से शीघ्रपतन, वीर्य प्रमेह, स्वप्नदोष आदि रोग नष्ट होकर वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

● जामुन की गुठली का चूर्ण 5 ग्राम प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करने से वीर्यवृद्धि होती है तथा वीर्य गाढ़ा होता है।

● इमली के बीजों की गिरी को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर प्रतिदिन 3 ग्राम फाँककर ऊपर से गरम दूध ठण्डा करके पीने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

● बबूल की फलियों को छाया में सुखाकर बनाया गया चूर्ण समान मात्रा में मिश्री मिलाकर 5 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ खाने से वीर्य गाढ़ा होगा।

● बारीक पिसी हुई दालचीनी 4-4 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

● कुछ गरम स्वभाव वाले युवकों का वीर्य बहुत पतला हो जाता है उनके हितार्थ हम एक अतीव गुणकारी योग लिख रहे हैं—एक मुट्ठी भर शीशम के हरे पत्ते रात को एक चीनी प्याले में डालकर पानी में भिगोकर रख दें। प्रातःकाल इन पत्तों को मलकर छानलें और चीनी मिलाकर पीवें। केवल 5-7 दिन के प्रयोग से ही लाभ हो जाता है।

● बिधारा की जड़, असगन्धागौरी एवं शतावर समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। सुबह-शाम 6-6 माशा की मात्रा में ताजा जल अथवा गाय के गुनगुने दुग्ध से सेवन करने पानी की तरह पतला वीर्य गाढ़ा हो जाता है तथा कमजोर शरीर मोटा-ताजा हो जाता है।

● खसखस पिसी हुई 5 ग्राम तथा 5 ग्राम कौंच के बीजों की गिरी मिलाकर

खाकर ऊपर से मिश्रीयुक्त गुनगुना दुग्धपान करने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है तथा वीर्य-वृद्धि भी हो जाती है।

● गोखरू, सम्बल, मूसली, शताबर, तालमखाना के बीज तथा कौंच के बीज सभी औषधियां समान मात्रा में लेकर तथा समस्त औषधियों के वजन के बराबर मिश्री मिलाकर बारीक चूर्ण कर सुरक्षित रखलें। इसे 1-1 तोला की मात्रा में प्रतिदिन सुबह-शाम निरन्तर 3-4 मास तक गाय के गुनगुने दूध के साथ सेवन करते रहने से वीर्य गाढ़ा होकर पुन्सत्व (मर्दाना शक्ति) बढ़ जाती है।

सम्भोग में आनन्द बढ़ाने वाले कुछ योग

● उड़द की दाल, बिदारीकन्द एवं उटंगन सम मात्रा में लेकर गाय के दूध में पकायें फिर इसमें शहद 10 ग्राम, घी 15 ग्राम शक्कर मिलाकर प्रयोग करें। सम्भोग-शक्ति एवं आनन्द बढ़ाने वाला उपयोगी योग है।

● सफेद चन्दन, लौंग, जायफल, अफीम, कंकोल, केसर, अकरकरा, पीपल, सौंठ सभी सममात्रा में लेकर कूट पीसकर कपड़छन सुरक्षित रखें। (समस्त औषधियों के वजन के बराबर इस चूर्ण में खान्ड मिलालें) सम्भोग आनन्द एवं स्तम्भनशक्ति बढ़ाने हेतु इसे सम्भोग से पूर्व 1 माशा की मात्रा में शहद से खायें।

● संखिया सफेद तथा अफीम 1-1 तोला लेकर 1 बोतल विहस्की (अंग्रेजी शराब) या बंगला पान के रस में खरल करके उड़द के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। सम्भोग से 1 घंटा पूर्व 1 गोली खा लेने से असीम आनन्द की अनुभूति होगी।

नोट—संखिया से निर्मित कोई भी योग 40 वर्ष की आयु से पूर्व तथा खाली पेट कदापि न खाना चाहिए। इस प्रकार के योगों का यदि सेवन करें तो दूध मलाई, मक्खन इत्यादि अवश्य भरपूर मात्रा में खायें अन्यथा योग हानिकारक सिद्ध होगा।

● दालचीनी का चूर्ण 750 मि.ग्रा. की मात्रा में सुबह-शाम खाकर ऊपर से गौदुग्ध का सेवन करते रहने से सम्भोग में अत्यधिक आनन्द प्राप्त होता है।

● अकरकरा, चरस, अफीम प्रत्येक 3-3 माशा लेकर इन्हें एक मोटे से छुहारे में रखकर उपलों की आग पर थोड़ा सा गरम करके उड़द के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। यह योग अपूर्व स्तम्भन-शक्ति प्रदान कर सहवास में असीम आनन्द प्रदान करता है।

● जायफल, शहद, शिंगरफ रूमी, अफीम, अकरकरा को समान मात्रा में लें, पीसकर मूँग की दाल के बराबर गोलियाँ बना लें। सम्भोग से डेढ़ घंटा पूर्व 1 गोली गाय के 250 ग्राम दूध से खाने पर रतिक्रिया आनन्ददायक हो जाती है।

● विक्स वेपोरब (सर्दी, जुकाम व सिरदर्द नाशक मलहम) सम्भोग के समय लिंग के सुपाड़े पर हल्के हाथ से थोड़ा मसलकर संभोग करने से सम्भोग सुख एवं आनन्द में वृद्धि कर देता है ।

नोट—शक्तिवर्द्धक औषधियों का प्रयोग भोजन के तुरन्त बाद उचित नहीं होता है । कम से कम 3-4 घंटे का अन्तराल होना चाहिए । इसी प्रकार से संभोग के कम से कम 2 घंटे पूर्व शक्तिवर्द्धक औषधियों का प्रयोग लाभप्रद होता है । शक्तिवर्द्धक औषधियाँ अपने उत्तेजक गुणों के कारण प्रयोगकर्त्ता को अपना गुलाम बना लेती हैं । अत: आवश्यकता होने पर ही इन औषधियों का प्रयोग करें तथा आवश्यकता समाप्त हो जाने के बाद इन औषधियों के सेवन को अवश्य ही बन्द कर देना चाहिए । यदि लिंग पर तिला प्रयोग करने से छाले, फुन्सियां अथवा अन्य विकार उत्पन्न हो जाए तो चमेली का तैल अथवा वैसलीन लगाने से यह विकार शान्त हो जाया करते हैं।

प्रदर रोग ग्रसित स्त्री के साथ सम्भोग पूर्व तिला का प्रयोग न करें अन्यथा उसका रोग और भी अधिक बढ़ जायेगा । अफीम, गांजा इत्यादि औषधियाँ स्तम्भक तो होती है किन्तु इनका शरीर पर भविष्य में अत्यन्त हानिकारक प्रभाव पड़ता है। अत: अत्यन्त आवश्यक स्थिति में आवश्यकता रहने तक ही ऐसी औषधियों का सेवन करें और फिर बन्द कर दें ।

खाना खाने के तुरन्त बाद सम्भोग नहीं करना चाहिये । नग्न स्त्री के साथ रात भर नग्न पड़े रहना भी अनुचित है, योनि को दृष्टि जमाकर देखना, हर समय प्रेमालाप करना इत्यादि कारणों से व्यक्ति को नामर्दी आ घेरती है । अत्यधिक रति-क्रिया विनाश की जड़ है । शीघ्रपतन के रोगी को उत्तेजक औषधियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए । उत्तेजक औषधियों के साथ यदि स्तम्भक औषधियों का भी सेवन किया जाए तो आशातीत लाभ प्राप्त हो जाता है । काम शक्तिवर्धक औषधियों के प्रयोगकाल में ब्रह्मचर्य का पालन करने से ही लाभ अर्जित होने की आशा रखें। औषधि प्रयोग काल में उत्तेजित होकर स्त्री के साथ संभोग करते रहने से शक्ति व्यर्थ हो जाती है और रोगी को वही स्थिति होती है—मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की । स्वस्थ मनुष्य को तो कामोत्तेजक औषधियों का भूलकर भी सेवन नहीं करना चाहिए अन्यथा अच्छा भला व्यक्ति भी अधिक वीर्य निकल जाने के कारण (कामोत्तेजक औषधियों के अधिक प्रयोग से) नपुंसक हो सकता है । आशा है कि प्रबुद्ध पाठकगण इन बातों का लाभ प्राप्त करेंगे ।

कामोत्तेजक योग

● अजवायन खुरासानी लेकर उस पर इतना नीबू का रस डालें कि रस एक अंगुल अजवायन से ऊपर रहे । सूखने पर फिर से इसी प्रकार रस डालें । यह

क्रिया सात बार करें । फिर खुश्क होने पर सुरक्षित रखलें । इसे 3 माशा की मात्रा में गरम दूध के साथ खाने से इतनी अधिक कामोत्तेजना उत्पन्न होती है कि सब्र करना भी कठिन हो जाता है ।

● बूटी हजारदानी (छोटी दूधी) और नकछिकनी सममात्रा में लेकर कूट पीस चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें । इसे 4-4 माशा की मात्रा में सुबह-शाम दूध में उबालकर ठण्डा किये हुए दूध से खायें । कैसा भी नपुंसक हो 15 दिनों के प्रयोग से मर्द बन जाता है । अत्यधिक उत्तेजना एवं जोश उत्पन्न करने वाला परम उपयोगी योग है ।

● नकछिकनी खुश्क 4 रत्ती तथा सोंठ बेरेशा 4 रत्ती दोनों को पीसकर 2 तोला शहद में मिलाकर खायें । ऊपर से गाय का गुनगुना दूध थोड़ी-थोड़ी मात्रा में 2-3 बार पियें । अत्यधिक कामोत्तेजना उत्पन्न करने वाला योग है ।

● पीपलामूल 4 रत्ती तथा कपूर 1 रत्ती को शहद में पीसकर प्रतिदिन 1 बार लेप करते रहने से लिंग में उत्तेजना बढ़ जाती है ।

● बिधारा व असगन्ध नागौरी समान मात्रा में कूट पीस छानकर बराबर मात्रा में चीनी मिलाकर सुरक्षित रखें । इस चूर्ण को 3 से 6 ग्राम की मात्रा में दूध अथवा गरम पानी से दिन में 3 बार खाते रहने से एक मास में ही लिंग में तीव्र उत्तेजना एवं जोश उत्पन्न होने लगता है ।

● मिश्री 20 ग्राम, सफेद या काली मूसली का चूर्ण 10 ग्राम लेकर मिट्टी के प्याले में 100 मि.ली. जल में रात्रि के समय भिगो दें । प्रात:काल खूब मथकर प्रयोग करें । निरन्तर 30 दिन के सेवन करने से ही कामोत्तेजना उत्पन्न होती है तथा वीर्यवृद्धि हो जाती है । प्रयोगकाल में संभोग वर्जित है । यह योग इतना अधिक शक्तिशाली है कि 50 वर्षीय प्रौढ़ भी इसके सेवनोपरान्त 20 वर्षीय युवा जैसी कामशक्ति प्राप्त कर लेता है ।

● कुश्ता तिला 3 माशा, रस सिन्दूर 6 माशा, कपूर 6 माशा, जायफल और पीपली 1-1 तोला कस्तूरी शुद्ध 1 माशा लेकर पानी की सहायता से 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें । 1 गोली रात्रि को सोते समय शहद मिले गाय के दूध से सेवन करें । अत्यन्त ही शक्तिवर्द्धक योग है । प्रथम दिन से ही अपना प्रभाव दिखला देता है । भोजन को शरीरांश बनाकर रक्त उत्पन्न करता है । शीघ्रपतन में भी लाभप्रद है ।

स्तम्भन शक्तिवर्द्धक योग

● अकरकरा 1 ग्राम, तुख्मोरहां 8 ग्राम और बूरा 9 ग्राम लें। सभी वस्तुओं को कूट पीसकर कपड़छन कर पानी की सहायता से चने के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। सम्भोग से 1 घंटा पूर्व 1 गोली दूध के साथ निगललें। जब तक सम्भोगरत व्यक्ति नीबू नहीं खायेगा, स्खलित नहीं होगा।

● अफीम शुद्ध 8 ग्राम, लौंग 4 ग्राम, कस्तूरी 1 रत्ती, जायफल 6 ग्राम सभी को बारीक कूट पीसकर शहद की सहायता से 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय 1 गोली बंगलापान में रखकर खायें। अत्यधिक स्तम्भक योग है। संभोगरत (सेवनकर्त्ता) जब स्खलित होना चाहे, तब खटाई खा ले।

● कौंच की जड़ अँगुली के बराबर मोटी लेकर सहवास के समय मुख में रख लें। जब तक इसका रस पेट में जाता रहेगा, तब तक स्खलन नहीं होगा। जब स्खलित होना चाहें, इसे मुख से बाहर निकाल लें, स्खलन हो जायेगा।

● इन्द्रायन फलों को काटकर दोनों पैर के तलुवों पर खूब मलें, जब मुख में कड़वाहट का आभास हो जाए तब पृथ्वी पर (जमीन) बिना पैर रखे ही सम्भोगरत हो जायें। जब तक जमीन पर पैर (तलुवे) नहीं रखोगे तब तक स्खलित नहीं होगे।

● आम की छाल और फल दोनों का चूर्ण बनाकर प्रतिदिन खाने से स्तम्भन शक्ति बढ़ती है। वीर्यवृद्धि भी होती है। धात गिरने के रोग में तथा स्त्रियों के प्रमेह में भी लाभकारी है। मूत्राशय को शक्ति प्रदान करने वाला योग है।

● भाँग का पौधा जड़, पत्ती तथा बीजों सहित पीसकर छाया में सुखाकर लाल शक्कर के साथ थोड़ी सी मात्रा में सेवन करने से अत्यन्त स्तम्भन होता है।

● पीपल की छाल पानी में पीसकर लिंग पर लगाकर शुष्क हो जाने के बाद साफ करके संभोग करने से अत्यधिक स्तम्भन होता है।

● इन्द्रायण के बीज संभोग से 15 मिनट पूर्व मुख में रख लेने से पर्याप्त स्तम्भन होता है।

● अण्डे को आधा उबालकर उसकी जर्दी निकाल लें। फिर इस जर्दी में 1 माशा की मात्रा में पिसी हुई सौंठ मिलाकर प्रतिदिन 1 अण्डा सेवन करने से वीर्य वृद्धि होती है। वीर्य गाढ़ा होता है। शरीर मोटा-ताजा हो जाता है तथा अत्यधिक स्तम्भन भी उत्पन्न होता है।

● लाजवन्ती के बीज 3 ग्राम और मिश्री 6 ग्राम मिलाकर चूर्ण मिलाकर रखलें (यह 1 मात्रा है। निरन्तर 2 सप्ताह तक सुबह-शाम गौदुग्ध से सेवन करने से ऐसा स्तम्भन होगा कि अफीम आदि की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

● जमीकन्द का चूर्ण तथा तुलसी की जड़ का चूर्ण समान मात्रा में मिलाकर रखें। इसे 2 माशा तक की मात्रा में पान के साथ खाने से स्तम्भन-शक्ति बढ़ जाती है।

● समुद्रसोख, तालमखाने के बीज, रिहां के बीज प्रत्येक 100-100 ग्राम लेकर बारीक पीसकर चूर्ण बना सुरक्षित रखलें। इसे 5 से 10 ग्राम तक प्रतिदिन प्रातःकाल निहारमुंह खाने से वीर्य वृद्धि होती है तथा स्तम्भनशक्ति बढ़ती है।

संभोग के उपरान्त शक्ति बनाये रखने वाले कुछ योग

● शतावर को दूध में मिलाकर गाढ़ा बनाकर उसमें मिश्री मिलाकर संभोग के बाद पीने से थकावट एवं कमजोरी नष्ट होकर पुनः शक्ति प्राप्त हो जाती है।

● सम्भोग के पश्चात् मलाई, दूध, गुड़, खांड, मिश्री या मक्खन आदि खाने से दुर्बलता नहीं आती है।

● काली या सफेद मूसली 9 ग्राम में इतनी ही चीनी मिलाकर गुनगुने दूध से सेवन करें तो संभोग में व्यय हुई शक्ति पुनः प्राप्त होती है।

● कबाबचीनी, दालचीनी, छोटी इलायची दाना (प्रत्येक 3 माशा) कलमी शोरा 6 माशा, मिश्री 2 तोला लेकर चूर्ण बनाकर रखलें। डेढ़ माशा की मात्रा में खाकर ऊपर से दुग्धपान करने से संभोग के पश्चात् कमजोरी नहीं सताती है।

● भैंस के गरम दूध में 2 बड़े चम्मच शहद भली-भाँति मिलाकर पीने से संभोग क्रिया में व्यय हुई शक्ति पुनः वापस लौट आती है।

● सताबर, बिधारा, असगन्ध नागौरी, मूसली सफेद, सिम्बल मूसली, सालब मिश्री और सफेद तथा लाल बहमन सभी को सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर समस्त औषधियों के वजन के बराबर मिश्री चूर्ण मिलाकर संभोग के पश्चात् गुनगुने दूध के साथ सेवन करने से कामशक्ति कम नहीं होती है।

संभोग क्रिया में अत्यन्त आनंद देने वाले कुछ योग

● इत्र मोतिया 3 माशा, इत्र नर्गिस 3 माशा, इत्र हिना मुश्की 6 माशा, अफीम ढाई माशा, सुहागा 3 माशा, कपूर 2 माशा, माजू 6 माशा, सादा वैसलीन

10 तोला सूखी औषधियों की मैदा की भाँति बारीक पीसकर अन्य सभी औषधियों को एक साथ घोंटकर सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय 1 चने के बराबर लेकर लिंग पर मालिश करने के उपरान्त सम्भोग करें। आनन्द प्राप्त होगा।

● इत्र गुलाब, चोया, लौंग का तैल, जायफल का तैल सभी समभाग मिलाकर सुरक्षित रखलें। सम्भोग से पूर्व तिला की भांति प्रयोग करें। असीम आनन्द प्रदायक योग है।

● सुहागा, चौकिया, इत्र गुलाब दोनों को समभाग मिलाकर सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय थोड़े से थूक में मिलाकर लिंग की सुपारी पर लगायें। तदुपरान्त सम्भोग करें अत्यधिक यौन आनन्द की प्राप्ति होगी।

● कपूर, सुहाग, चौकिया, बीरबहूटी पीसकर घी में जलायें तत्पश्चात् उतारकर खरल करें। ठण्डा हो जाने पर गुलाब को इत्र मिलाकर सुरक्षित रखलें। सम्भोग से पूर्व लिंग पर लगाने से अत्यन्त यौनसुख की प्राप्ति होती है।

● आदमी के सिर के बालों की राख, चमेली के तैल में मिलाकर सम्भोग के समय लिंग पर मलने से स्त्री को अत्यधिक आनन्द की अनुभूति होती है।

● स्त्री के सिर के बाल (जो कंघी में टूटते हैं) को जलाकर शहद में मिलाकर लिंग पर मलने के उपरान्त जिस स्त्री से सम्भोग किया जाएगा वह यौन-सुख से अत्यधिक आनन्दित हो जाएगी।

● थोड़ा-सा अकरकरा लेकर पीसलें। सम्भोग के समय थोड़ा सा यह चूर्ण चमेली के तैल में मिलाकर सुपारी बचाकर शेष लिंग पर मालिश के उपरान्त सम्भोग करने से स्त्री पुरुष (दोनों को) अत्यधिक यौन आनन्द आयेगा।

ढीली योनि को संकुचित करने वाले कुछ योग

● घोड़ी का दूध (बच्चा जनने के बाद पहला दूध) में एक साफ कपड़ा लेकर तर करके सुखाकर सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय इस कपड़े का एक टुकड़ा लेकर स्त्री अपनी योनि में इतनी देर तक रखें कि कपड़ा पूर्णरूपेण गीला हो जाए। योनि एकदम संकुचित होगी।

● काले तिल 7 ग्राम, गोखरू 12 ग्राम, दूध 500 मि.ली. में शहद मिलाकर स्त्री प्रतिदिन प्रयोग करें। योनि कुंवारी कन्या के समान हो जाती है।

● केवड़े के फूलों को चीनी के बर्तन में निचोड़कर इस रस को स्त्री अपनी योनि में टपकाये। योनि संकुचित करने हेतु उत्तम एवं अनुभूत योग है।

● ढाक के गोंद की बत्ती अथवा बत्ती जैसी लम्बी पोटली बनाकर योनि में रखने से योनि संकीर्ण (तंग) हो जाती है।

● समुद्रझाग, हरड़ की गुठली समभाग लेकर बारीक पीसकर योनि में मलने से योनि अत्यन्त संकीर्ण हो जाती है।

● पलाश (ढाक) की कोंपलें या कलियां लेकर छाया में सुखालें फिर पीस छानकर मिश्री मिलाकर रखलें। ढाई से 3 माशा तक की मात्रा में ठण्डे पानी से सेवन करने से (एक सप्ताह प्रयोग करें) योनि संकीर्ण हो जाती है।

● माजू, फिटकरी, मांई, और राल प्रत्येक सममात्रा में लेकर कूट पीसकर बारीक मलमल के कपड़े में डेढ़ से 2 माशा तक की पोटली बनाकर योनि में रखने से योनि संकुचित हो जाती है।

अविकसित अथवा ढीले स्तनों हेतु कुछ योग

● असगन्ध नागौरी, कड़वी कूट, सोये के बीज, काली मिर्च सभी सम मात्रा में लेकर पीसलें। तदुपरान्त इसे भैंस के मक्खन में मिलाकर 40 दिनों निरन्तर स्तनों पर लेप करने से लड़कियों के अविकसित स्तनों का विकास हो जाता है। अत्यन्त सफल और अनुभूत योग है।

● जैतून के विशुद्ध तैल की स्तनों पर हल्के हाथों से धीरे-धीरे मालिश करने से मांस-पेशियां पुष्ट होकर, रक्त संचार बढ़कर अविकसित स्तन बढ़ जाते हैं।

● अश्वगन्धा चूर्ण 1 भाग को 4 भाग तिलों के तैल में पका, छानकर सुरक्षित रखलें। इस तैल की प्रतिदिन रात्रि को सोते समय स्तनों पर हल्के हाथों से मालिश करने से लड़कियों के अविकसित स्तनों का विकास हो जाता है।

● जिन स्त्रियों के सन्तान उत्पन्न होने के बाद स्तन पक जाते हों वे अश्वगन्धा चूर्ण आधा-आधा चम्मच प्रातःसायं मधु के साथ खायें तथा स्तनों पर सरसों के तैल की हल्के-हल्के मालिश करें। अतीव गुणकारी योग है।

● स्नान करते समय स्तनों पर बारी-बारी से ठण्डे तथा गरम पानी के छींटे मारने से वहाँ का रक्त संचार खुल जाता है। यदि बर्फ का ठण्डा पानी हो तो और भी अधिक अच्छा है केवल 10-15 मिनट तक नियमित रूप से प्रतिदिन इस क्रिया के करने से भी स्तन विकास पाकर स्त्री के सौन्दर्य में वृद्धि देते हैं।

● तोदरी लाल 2 ग्राम की मात्रा में पीसकर दूध के साथ खाने से भी लड़कियों के अविकसित स्तनों का पूर्ण विकास हो जाता है।

● स्तनों को बढ़ाने के लिए गहरी साँस लेकर छोड़ना (पहले सांस अन्दर ले जायें और कुछ देर तक अन्दर सांस को रोके रहकर धीरे-धीरे बाहर निकालें) इस क्रिया के नियमित रूप से करने के फलस्वरूप वक्षस्थल सुडौल, सुदृढ़ और आकर्षक हो जाता है तथा अविकसित स्तनों का पूर्णत: विकास भी हो जाता है। यह क्रिया अनेक हृदय सम्बन्धी बीमारियों को भी नष्ट कर देती है तथा हृदय शक्तिशाली हो जाता है ।

आयु की अधिकता, शारीरिक दुर्बलता, सदैव गरम पानी से स्नान करना, स्तनों को अधिक रगड़ना, शरीर में पित्त की अधिकता, बच्चे को गलत ढंग से दुग्धपान कराना, सन्तान अधिक होना, ब्रेजियर (बाडी) न पहनना, गर्भ निरोधक गोलियों का अत्यधिक प्रयोग आदि ऐसे कारण हैं जिससे स्तन ढीले-ढाले और थैलियों की भाँति लटककर स्त्री के सौन्दर्य को नष्ट कर डालते हैं ।

● कमल-गट्टे की गिरी निकालकर इनका बारीक चूर्ण पीसकर सुरक्षित रख लें । प्रतिदिन इस चूर्ण को 10 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन करने से 15-20 दिनों में ही ढीले स्तनों में कठोरता आने लगती है और वे तन जाते हैं ।

● अनार का छिलका 85 ग्राम, फिटकरी और कपूर 30-30 ग्राम को बारीक पीसलें । रात्रि को सोते समय पानी में घोलकर स्तनों पर हल्का सा लेप करके कपड़ा बाँधकर सो जाया करें । इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में लटके हुए स्तन कठोर होकर अपने प्राकृतिक (वास्तविक) आकार में पुन: आ जाते हैं।

● लिसोढ़े के पत्ते 125 ग्राम, घी 250 ग्राम, आटा 125 ग्राम और चीनी 250 ग्राम सभी को मिलाकर प्रतिदिन प्रात:काल हलुआ बनाकर खाने से लटके और ढीले स्तन 1 मास के नियमित प्रयोग से कठोर एवं सुदृढ़ होते हैं ।

● कच्चे आम के (चने के बराबर वाले) फल, बबूल की कच्ची फलियाँ, इमली के बीज़ों की गिरी और अनार का छिलका लेकर बारीक पीसकर रखलें। इसमें डेढ़ तोला घी और 5 तोला खान्ड मिलाकर हलुआ बनालें । उसका 40 दिनों तक प्रतिदिन सुबह-शाम सेवन करें । अधिक आयु की स्त्रियों के स्तन भी युवा स्त्री के भाँति सुन्दर हो जाते हैं ।

● बबूल की कच्ची फलियों का रस निकालकर इसमें मोटा सूती कपड़ा भली प्रकार भिगो-सुखालें । (यह मोमजामा जैसा हो जाएगा । चोली बनाकर पहनने से लटके और ढीले स्तन तनकर कठोर होकर सुन्दर हो जाते हैं ।

वृद्धावस्था में सम्भोगानन्द बढ़ाने के योग

● घोंघची (चिरमिटी) दूध में पकाकर इस दूध से मक्खन निकालें । यह मक्खन अत्यन्त ही बाजीकारक है । मर्दानाशक्ति उत्पन्न कर पुट्ठों की शक्ति प्रदान करता है । वीर्यवर्धक एवं स्तम्भक है । बुढ़ापे को भगाने वाला योग है ।

● मुन्डी बूटी 6 माशा की मात्रा में प्रतिदिन बकरी के 250 ग्राम दूध से खाते रहने से शरीर मजबूत हो जाता है । बुढ़ापा और शक्तिहीनता नष्ट होकर चेहरे पर सुर्खी आ जाती है, आँख व कान की शक्ति भी बढ़ जाती है । इस योग के नियमित सेवन से बूढ़ा भी जवान हो जाता है और यदि युवावस्था में सेवन किया जाए तो बुढ़ापा जल्द नहीं आता है । दिल घबराना, हृदय की दुर्बलता, मस्तिष्क की कमजोरी नष्ट होकर वीर्य सम्बन्धी समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● इमली के भुने हुए बीज या अश्वगन्धा और सिरस के बीज अथवा लाजवन्ती के बीज या हरमल के बीजों का चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें । इस चूर्ण को प्रतिदिन सुबह-शाम 3-3 ग्राम की मात्रा में 1 माह तक निरन्तर दूध के साथ खाने से बुढ़ापा दूर हो जाता है और यौवन का पुन: संचार हो जाता है ।

● सिम्बल मूसली का चूर्ण डेढ़ से तीन तोला तक 40 दिनों तक निरन्तर शहद या खाँड़ में मिलाकर खाने से बूढ़ा व्यक्ति पुन: जवान हो जाता है ।

● भाँगरा के बीज समभाग में तिल और गुड़ मिलाकर प्रतिदिन खाने से शरीर के समस्त अंगों में शक्ति आकर उनके कार्यों (देखना व सुनना आदि) में तेजी आ जाती है । (बुढ़ापा आता ही नहीं है अतीव गुणकारी योग है ।

● हरड़, बहेड़ा, आँवला और काले तिल समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें । इसे 6 से 10 ग्राम तक की मात्रा में मधु के साथ नियमित रूप से चाटते रहने से बूढ़ा व्यक्ति भी सम्भोग में सामर्थ्यवान हो जाता है ।

● यदि किसी बूढ़े व्यक्ति ने जवान स्त्री से शादी कर अपनी कम्बख्ती कर ली हो तो वह होम्योपैथिक औषधि ''लाइकोपोडियम'' 1 लाख शक्ति की (जर्मनी की बनी हुई लिक्विड) 4 बूँद 1 औंस पानी में मिलाकर मास में 1 बार सेवन कर अपनी लाज बचाये रख सकता है ।

रसायन वटी (निर्माता राजवैद्य शीतलप्रसद एण्ड संस 23 दरिया गंज, नई दिल्ली-2) केसर, मोती, शिलाजीत, ब्रह्मी, असगन्ध, मूसली आदि से निर्मित यह औषधि रक्तवृद्धि कर अंग-प्रत्यंग में शक्ति प्रदान करती है ।

बाँझपन के कुछ अन्य सफल योग

● पीपल की दाढ़ी 20 तोला, कूट पीस चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसके बराबर वजन में शक्कर मिलालें। मासिकधर्म आरम्भ होने के दिन से प्रतिदिन 2-2 तोला की मात्रा में स्त्री-पुरुष (दोनों) गाय के दूध से खायें तथा 11 वें दिन सम्भोग करें। स्त्री गर्भवती हो जाएगी।

● असगन्ध नागौरी का चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन प्रात:काल निरन्तर 1 से 3 मास तक स्त्री द्वारा सेवन करने से उसकी गर्भवती होकर शिशु उत्पन्न कर माँ बनने की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

● कायफल को कूटपीस कर कपड़छन कर सुरक्षित रखलें। इस चूर्ण में सम मात्रा में चीनी मिलाकर 4 से 6 ग्राम तक मासिक धर्म के पश्चात् 4 दिन खाने से बाँझ स्त्री को गर्भ धारण हो जाता है।

● नागकेसर, सौंठ, काली मिर्च सभी सम मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 1 ग्राम की मात्रा में शुद्ध घी से लें। बांझपन नाशक योग है।

● पीपल की सफेद दाढ़ी 10 ग्राम, शिवलिंगी के बीज 1 ग्राम का बारीक चूर्ण बनालें। इसे 1 ग्राम की मात्रा में मासिकधर्म के पश्चात् गोदुग्ध से खायें। बाँझपन नष्ट होकर माँ बनने की मनोकामना पूर्ण हो जाएगी।

पौरुष शक्ति बढ़ाने के कुछ अन्य योग

● शुद्ध कुचला 1 रत्ती की मात्रा में मलाई में रखकर खाने से नामर्दी नष्ट हो जाती है।

● कच्चा चौकिया सुहागा 1 माशा दूध में पीसकर स्त्री को खिला देने से स्त्री पहले स्खलित हो जाती है।

● सूखे हुए हरमल को पीसकर मधु में मिलाकर लिंग पर मालिश करने के उपरान्त सम्भोग करने से स्त्री पहले स्खलित हो जाती है।

● सेमर की जड़ का चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम दूध के साथ प्रयोग करने से नामर्दी नष्ट हो जाती है।

● शुद्ध केसर 2 रत्ती की मात्रा में दूध के साथ सेवन करने से नपुंसकता नष्ट हो जाती है।

● अखरोट की गिरी दूध में उबालकर और दूध में असली केसर तथा शक्कर मिलाकर पीने से अपूर्व शारीरिक एवं मर्दाना शक्ति प्राप्त हो जाती है।

● कपूर 1 भाग तथा चूना 2 भाग मिलाकर स्त्री को खिलाने से स्त्री पहले स्खलित हो जाती है।

● काबुली हरड़ और हरा कसीस 4-4 माशा की मात्रा में बासी पानी से प्रयोग करने से नपुंसकता, नामर्दी और शीघ्रपतन नष्ट हो जाता है।

● ताल मखाना 3 माशा दूध के साथ लेने से नपुंसकता नष्ट हो जाती है।

स्त्री अथवा पुरुष के बांझपन की पहचान

सन्तान उत्पन्न होने के लिए वास्तविक दोषी स्त्री अथवा पुरुष में कौन है ? इस हेतु कृपया निम्न जाँचों को अपनाकर निर्णय करें—

● एक साफ स्वच्छ शीशे के पानी-भरे गिलास में पुरुष अपना वीर्य गिराये। यदि वीर्य गिलास की तली पर बैठ जाए तो बाँझपन हेतु पुरुष उत्तरदायी नहीं है।

● लौकी की जड़ों पर (अलग-अलग) स्त्री-पुरुष दोनों (1-1 जड़ पर) मूत्र त्याग करें जिसके मूत्र से जड़ सूख जाए, बाँझपन हेतु वही उत्तरदायी है। वही अपनी सुयोग्य चिकित्सक से चिकित्सा कराये।

● भूख की अवस्था में गाय के दुग्ध में तर कपड़े को अपनी योनि में रखें। यदि कुछ समय के बाद दूध की गन्ध उसके मुख में आने लगे तो वह कदापि दोषी नहीं है।

● दो स्थानों पर गेहूँ अथवा जौ के दाने बो दें और 1-1 जगह पर स्त्री-पुरुष वहाँ दानों पर मूत्र त्याग करते रहें, जिसके मूत्र से दानें अंकुरित न हों वही दोषी है और जिसके मूत्र त्याग करते रहने से पर भी दानें उग आवें, वह दोषी नहीं है। यह घरेलू जाँच है।

गर्भ निरोधक योग

● मासिक धर्म के पश्चात् जब स्त्री स्नान कर चुके, तब एरन्ड के बीज को छीलकर 1 गिरी निगलने से 1 वर्ष तक 2 गिरी निगलने से 2 वर्ष तक तथा 3 गिरी निगलने से 3 वर्ष तक गर्भ नहीं ठहरता है। तीन गिरियों से अधिक सेवन न करें। जब सन्तान की इच्छा हो तो एरन्ड बीज की गिरी न खायें। 1 वर्ष के बाद स्वत: गर्भ धारण करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

● संभोग के समय अरन्ड के तैल में साफ रुई भिगोकर योनि में कुछ देर पहले रखकर फिर निकाल कर फेंक दें। इस तैल के गाढ़ेपन के कारण शुक्रकीट

गर्भाशय तक न पहुँचकर बाहर ही रह जाते हैं । तदुपरान्त संभोग क्रिया सम्पन्न कराने से गर्भ धारण नहीं होता है । इस प्रयोग से योनि को कोई हानि भी नहीं पहुँचती है और इसका काफी समय तक प्रयोग किया जा सकता है ।

● मासिकधर्म से फारिग होकर यदि स्त्री चमेली के फूल की 1 कली निगल लें तो 1 वर्ष तक गर्भ नहीं ठहरेगा और इस प्रयोग के साथ यदि पुरुष भी लिंग पर चमेली या अलसी तैल मलकर संभोग करे तो सोने पर सुहागा है ।

● नीम के तैल में स्पंज भिगोकर गर्भाशय के मुख के पास रख लेने से गर्भ नहीं ठहरता है ।

● नीम का तैल और बिनौले का तैल (बराबर मात्रा में) मिलाकर रखलें। संभोग से पूर्व इसे फुरैरी से अथवा रूई में भिगोकर योनि में लगाने अथवा रख लेने से गर्भ नहीं ठहरता है । हानिरहित अत्यन्त सफल योग है ।

● पीपली, वायविडंग, सुहागा (भुना हुआ) समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर रखलें । इसे 1 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम गाय के दूध से मासिकधर्म के समय में अथवा मासिक धर्म के बाद 3 अथवा 5 दिनों तक सेवन करने से स्त्री को गर्भ नहीं ठहरता है । यह योग ''भाव प्रकाश निघन्टु'' का है ।

● संभोग से कुछ देर पूर्व छाया में सुखाया हुआ पुदीना का चूर्ण 9 ग्राम की मात्रा में ताजा पानी से स्त्री निगल ले तो वह गर्भ धारण नहीं करेगी । जिस दिन भी रति क्रिया सम्पन्न करनी हो, तब इस प्रयोग को करलें ।

● मेन्सोरिन कैपसूल (होम्योपैथिक औषधि) मासिक धर्म के पश्चात् मात्र एक कैपसूल खाने से एक मास तक गर्भ धारण नहीं होता है । प्रयोगकर्त्ता स्त्री गरिष्ठ और खट्टा-मीठा भोजन 36 घंटे तक करे । मात्र हल्का फुल्का सुपाच्य सादा भोजन खाये ।

● नैट्रमम्यूर (बायोकैमिक औषधि) 200 शक्ति की मासिक धर्म के पश्चात् 2 दिन तक (प्रतिदिन 1 मात्रा) खा ले तो 1 मास तक गर्भ धारण करने की क्षमता नष्ट हो जाती है । गर्भनिरोध हेतु प्रतिमास प्रयोग किया जा सकता है ।

● संभोग के तुरन्त पश्चात् यदि स्त्री उठकर उठा-बैठक (दण्ड बैठक) लगाकर योनि को ऋतु के अनुसार गरम अथवा ठण्डे जल से खूब भली प्रकार धो डाले और कुछ देर चलने-फिरने के पश्चात् लेटे तो गर्भ धारण का खतरा टल जाता है ।

स्त्री को सदा के लिए बाँझ बनाने वाले कुछ योग

● ऋतुस्नाता स्त्री को ढाक के बीजों की राख और हींग दूध में मिलाकर 3 दिन पिलाने से कदापि गर्भ नहीं ठहरता है ।

● ढाक के बीज पानी में पीसकर ऋतुमती स्त्री 3 दिन पी लें तो निश्चय ही सदैव के लिए बाँझ हो जाती है ।

● यदि स्त्री मासिकधर्म के स्नानोपरान्त असगन्ध की 7 डोडियाँ निगल ले तो वह कभी गर्भवती नहीं होती है ।

● मैथी, गाजर, सोयाबीन के बीज सममात्रा में लेकर पीसकर रखलें । इसको ठण्डे पानी से प्रयोग करने से गर्भधारण की शक्ति सदा के लिए मिट जाती है।

● गुड़हल के फूलों को ठण्डे पानी की सहायता से पीसकर लेप बनाकर नाभि पर मलने से स्त्री को कभी गर्भ नहीं ठहरता है ।

● पुराना गुड़ 4-4 ग्राम की मात्रा में निरन्तर कम से कम 15 दिनों तक खाने से स्त्री सदा के लिए बाँझ हो जाती है ।

● खीरा, ककड़ी व पलाश के बीज सम मात्रा में लेकर कूट पीसकर रख लें । मासिक धर्म में 3 दिन 3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से गर्भ नहीं रहता है।

● कपूर, कलौंजी, काला जीरा, हरड़, कायफल और नागकेशर सभी सम मात्रा में लेकर कूटपीस कर पानी की सहायता से बेर के समान गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें । मासिक धर्म के बाद सात दिन तक निरन्तर 1-1 गोली दूध से सेवन करने से स्त्री बाँझ हो जाती है ।

● शुद्ध हींग, पलाश के बीजों की राख और पीपल सभी सम मात्रा में लेकर चूर्ण बनालें । इस चूर्ण से दुगुनी मात्रा में भुना हुआ सुहागा पीसकर मिलालें और सुरक्षित रखलें । मासिक धर्म आरम्भ होने के दिन से 2 रत्ती की मात्रा में यह चूर्ण शाम तथा रात को सोने से पूर्व थोड़े से दूध के साथ प्रयोग करने तथा साथ ही प्रातःकाल में 1 लौंग बिना चबाये निगलने से (यह प्रयोग 7 से 11 दिन तक करें) तथा दूसरे व तीसरे मासिक धर्म के बाद भी यही प्रयोग इसी प्रकार से करें। तो ऐसा करने से स्त्री बांझ हो जाती है और उसे मासिक धर्म भी पूर्ववत (पहले की तरह) होता रहता है ।

अन्य गर्भ निरोधक योग

● मासिकधर्म के दिनों में लगातार 15 दिनों तक प्रातः-सायं पुराना गुड़ औटाकर पीने से गर्भ नहीं ठहरता है ।

● सुहागा 2 ग्राम, काली मिर्च 2 ग्राम, हल्दी 1 ग्राम, चित्रक-मूल का चूर्ण 12 ग्राम सभी को ले कूटपीस व छानकर 16-16 मात्राएं बनाकर सुरक्षित रखलें। जिस दिन से मासिक धर्म प्रारम्भ हो जाए ठीक उसी दिन से 1-1 मात्रा प्रात: तथा (8-10 दिन) लगातार सेवन करने से गर्भ नहीं ठहरता है ।

● सम्भोग से पूर्व गरम जल में फिटकरी घोलकर योनि धोने तथा सम्भोग के पश्चात् पुन इसी घोल से योनि धो देने से गर्भ धारण नहीं होता है ।

● नीम के पत्तों के बने काढ़े से सम्भोग से पूर्व तथा बाद में योनि को धो देने से गर्भ धारण नहीं होता है ।

● निबौली के काढ़े का फाहा मासिकधर्म के दौरान योनि में लगातार 5 दिनों तक रखने से गर्भ स्थापित नहीं होता है ।

● सम्भोग के पूर्व स्त्री अपनी योनि में स्पंज को 'हाइड्रोजन परआक्साइड' (झाग उत्पन्न कर जख्म धोने या साफ करने वाली अंग्रेजी दवा) से तर करके रख ले तो वीर्य के शुक्राणु मर जाते हैं और गर्भ नहीं ठहरता है ।

● हल्दी 1 ग्राम पुराने गुड़ में घोटकर सुबह-शाम 10 दिनों तक सेवन करने से स्त्री की गर्भ धारण शक्ति नष्ट हो जाती है।

● नीबू का रस और जल समभाग लेकर उसमें स्पंज या रुई को भिगोकर योनि में रख लेने के बाद मैथुन कराने से गर्भ नहीं ठहरता है ।

● मासिकधर्म के दौरान यदि स्त्री की योनि में नीम की जड़ की धूनी दी जाए तो स्त्री जीवन भर के लिए बाँझ हो जाती है ।

● चौलाई की जड़ को चावल के पानी के साथ पीसकर 5 दिन तक सेवन करने से स्त्री जीवन भर के लिए बाँझ हो जाती है ।

● मासिकधर्म के दिनों में गेरू को पानी में घोलकर पीने से गर्भ नहीं ठहरता है।

● मासिकधर्म के बाद हल्दी की 1 गाँठ का चूर्ण निरन्तर 6 दिनों तक सेवन करने से स्त्री गर्भवती नहीं हो पाती है ।

● मासिकधर्म के बाद यदि कोई स्त्री 1 निबौली को चबाकर गाय के दूध के साथ निगल जाए तो वह 1 वर्ष के लिए बाँझ हो जाती है ।

● सम्भोग के तुरन्त बाद हुक्के के जल से योनि को धो लेने से गर्भ नहीं ठहरता है । हुक्के के पानी के गन्ध मात्र से ही शुक्रकीट मर जाते हैं ।

● यदि स्त्री किसी भी प्रकार के घी, बिनौले के तैल, शहद, जैतून के तैल या नीम का तैल में से किसी एक में स्पंज भिगोकर योनि में धारण कर संभोग कराये तो उसे गर्भ स्थापना का भय नहीं रहता है ।

गर्भपात के कुछ अचूक योग

पूर्ण गर्भ 280 दिनों का होता है । यदि 28 सप्ताह से पूर्व गर्भाशय को त्यागकर गर्भ बाहर निकल आता है तब इस स्थिति को गर्भपात कहा जाता है । गर्भावस्था के प्रारम्भिक महीनों में यदि गर्भवती स्त्री की योनि से रक्तस्राव होता है तब यह भी गर्भपात की ही स्थिति कहलाती है । हमारे देश में 10 से 20 प्रतिशत गर्भवती स्त्रियों को किसी न किसी कारण से गर्भपात हो जाता है ।

आमतौर पर 12 सप्ताह तक के गर्भ को आसानी से गिराया जा सकता है । जनसंख्या विस्फोट को देखते हुए भारत सरकार ने अपने देश में गर्भ गिराने का कानून मेडीकल टर्मिनेशन आफ प्रेग्नेन्सी एक्ट (M.T.P.) सन् 1972 से वैधानिक रूप से लागू किया है जबकि यह कानून सन् 1971 में ही पास हो गया था । इस धारा के अन्तर्गत (भारतीय अपराध संहिता) के अनुसार कोई मान्यता प्राप्त रजिटर्ड चिकित्सक तभी गर्भपात कर सकता है जब चिकित्सीय दृष्टि से गर्भपात करना आवश्यक हो । इसके अतिरिक्त यदि कोई चिकित्सक जो गर्भपात के लिए मान्यता प्राप्त नहीं हो और वह अवैधानिक रूप से गर्भपात करता है अथवा कोई अन्य पुरुष जो चिकित्सक नहीं है और गर्भपात की कुचेष्ट करता है, यहाँ तक कि स्वयं गर्भिणी भी अथवा उसके माता-पिता या पति आदि नजदीकी रिश्तेदार गर्भ गिराने की चेष्ट करते हैं तो उनको इन्डियन पैनल कोड (भारतीय अपराध संहिता) के अनुसार 3 वर्ष तक की कड़ी सजा अथवा जुर्माना भुगतना पड़ सकता है ।

गर्भ गिराने की न्यायसंगत स्थितियाँ

अत्यधिक वमन, हृदय रोग, रक्ताल्पता, अत्यधिक सन्तान होना, क्षय रोग, पेशाब में एल्ब्यूमिन (सफेदी अर्थात् मुर्गी के अण्डे की सफेदी की भाँति) आना, गर्भ का मर जाना, उपदंश रोग, शारीरिक आघात, वृक्क रोग, मानसिक आघात, गर्भाशय का कैन्सर, मधुमेह, वातकम्प रोग, विषैले अर्बुद, उन्माद रोग, अर्द्ध-विक्षिप्त गर्भिणी, छोटा दूध पीता बच्चा होना और उसकी माँ का कमजोर होना, घातक उदर रोग, बलात्कार के कारण गर्भ स्थित हो जाना, परिवार कल्याण के साधन अपनाये जाने पर भी गर्भ ठहर जाना, अवयस्क कन्या के गर्भ ठहर जाना आदि ।

नोट—इस ग्रन्थ में गम्भीर किस्म के रोगों का उपचार अथवा गर्भपात आदि के लिए किन्हीं भी योगों का प्रयोग अपने पारिवारिक रजिस्टर्ड चिकित्सक के परामर्शानुसार एवं उसकी देखरेख

में ही करें। किसी प्रकार की हानि हेतु लेखक अथवा प्रकाशक कतई जिम्मेदार नहीं हैं। इन रोगों का वृतान्त मात्र जानकारी एवं रजिस्टर्ड चिकित्सकों के ज्ञानार्थ ही लिखा गया है।

● 25-25 ग्राम की मात्रा में मैथी का विधिवत काढ़ा बनाकर (मैथी को तब तक मन्दाग्नि पर उबालें। जब तक कि वह कोकाकोला रंग की दिखाई न देने लगे। इसे बार-बार के पीने से ही 3-4 मास तक का गर्भ इस प्रयोग से आसानी से गिर जाता है।

● काले तिल और 3 साल पुराना गुड़ का काढ़ा बनाकर पिलाने से भी 10-12 घंटे के बाद गर्भ गिरकर बच्चेदानी साफ हो जाती है।

● 50 से 100 ग्राम तक मैथी और 50 से 100 ग्राम तक गुड़ को पानी में पकाकर पीने से किसी भी कारण से रुका हुआ मासिकधर्म जारी हो जाता है। यदि स्त्री गर्भवती हो तो उसका गर्भ गिर जाता है। अनुभूत योग है।

● गाजर के बीज गुड़ के साथ पानी में पकाकर पिलाने से निश्चय ही रुका हुआ मासिकधर्म शुरू हो जाता है। गर्भवती सेवन करे तो उसका गर्भ गिर जाता है।

● काले तिल, गाजर के बीज, चिरोंजी प्रत्येक 25-25 ग्राम लेकर कूट पीसकर कपड़छन कर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। आवश्यकतानुसार 3 से 6 ग्राम तक यह चूर्ण लगभग 3 वर्ष पुराने गुड़ के साथ सेवन कराने से गर्भपात हो जाता है तथा अन्य किसी भी कारण से बन्द हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

● सौंठ 3 ग्राम, छिला हुआ लहसुन 15 ग्राम तथा जौ 250 ग्राम लेकर काढ़ा बनायें। जब जब 30 मि.ली. शेष रह जाए तब इसे उतारकर छानकर तथा ठण्डा करके (यह 1 मात्रा है) ऐसी 2 मात्राऐं दिन में 2 बार सेवन कराने से गर्भपात हो जाता है अथवा किसी भी कारण से रुका हुआ मासिकधर्म खुल जाता है।

● साँप की केंचुल को कड़वे तैल में भिगोकर इसकी धूनी योनि में देने से गर्भपात हो जाता है और बन्द मासिकधर्म प्रारम्भ हो जाता है।

● पोटेशियम परमैगनेट चौथाई ग्रेन में पुराना गुड़ मिलाकर 1 गोली तैयार कर लें। ऐसी 1-1 मात्रा आवश्यकतानुसार दिन में 1-2 बार सेवन कराने से कैसा भी रुका हुआ मासिक धर्म हो, प्रारम्भ हो जाता है अथवा पोटेशियम परमैगनेट आधी से 2 ग्रेन तक की गोली बनाकर भोजन के बाद निरन्तर 2-3 दिन तक सेवन करने से रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाता है।

● खाने वाली तम्बाकू, नौसादर, चूना सभी को बारीक-बारीक कर बत्तियाँ तैयार करलें। आवश्यकता पड़ने पर 1 बत्ती अरन्डी के तैल में भिगोकर स्त्री की योनि में रखवा देने से कुछ ही देर के बाद मासिकधर्म जारी हो जाता है।

● स्त्री को तेज शराब का सेवन करा देने से भी गर्भपात हो जाता है।

● खाने का तम्बाकू, एलुवा, नौसादर और सीप का चूना सभी समान मात्रा में लेकर बारीक पीसकर बत्ती बनालें, तदुपरान्त इन बत्तियों को अरन्डी के तैल में तरकर के स्त्री के योनि में रखवा देने से रज: शर्तिया खुल जाता है। लगभग 1 घंटे पश्चात् ही बड़ी तेजी से मासिकधर्म आना प्रारम्भ हो जाएगा।

● 20 ग्राम बथुआ का बीज 250 ग्राम जल में डालकर काढ़ा तैयार करें। जब चौथाई शेष बचे तब उतार लें। ऐसी 1 मात्रा प्रातःकाल खाली पेट 2-3 दिन तक पिलायें। निश्चय ही गर्भपात हो जाएगा अथवा किसी भी अन्य कारण से रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाएगा।

● गाजर के बीज पानी में पीसकर 4-5 दिन पिलाने से रुका हुआ मासिकधर्म जारी हो जाता है।

● रिसोचिन 2 टेबलेट (ऐलोपैथी की क्वीनीन की) बायर कम्पनी की 2 टिकिया ईरगाकेप या ईरगा टेब कैपसूल (ऐलोपैथिक औषधि) 2 कैपसूल अथवा पुष्पान्तक गोली 2 और अशोकारिष्ट 4 चम्मच तथा पुराना गुड़ (ऐसी 1-1 मात्रा 4 बार) सेवन करने से कैसा भी रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाता है।

● चौकिया सुहागा को तबे पर भूनकर (फुलाकर) प्रत्येक आधा घंटे के अन्तर से 4 ग्राम की मात्रा में 3-4 बार गरम जल से सेवन कराने से गर्भपात हो जाता है।

● पुराना गुड़ लेकर किसी बरतन में रखकर आग पर पकायें। जब गुड़ पकने लगे तब बहरोजा मिलाकर ठण्डा होने दें और फिर लम्बी-लम्बी बत्तियाँ तैयार कर लें। यह 1-1 बत्ती सुबह-शाम योनि में रखने से किसी भी कारण से रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाता है।

● किसी साफ-सुथरे मुलायम कपड़े अथवा रुई को कच्चे पपीते के दूध से तर करके एक बत्ती बनालें। इस बत्ती को गर्भाशय के मुख में रखने से किसी भी प्रकार से रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाता है।

● कबूतर की बीट पीसकर दिन में 3 बार शहद के साथ चाटने से गर्भपात हो जाता है। सफल अनुभूत योग है।

● जायफल को पीसकर दूध में घोलकर स्त्री के पी लेने से गर्भपात हो जाता है।

● आक के पत्तों का रस निकालकर उसमें कोई साफ-सुथरा कपड़ा अथवा रुई भिगोकर स्त्री की योनि में रख देने से गर्भपात हो जाता है।

● करेले के पत्तों का अथवा इसकी जड़ का क्वाथ बनाकर स्त्री को पिला देने से गर्भपात हो जाता है।

● सीताफल के पत्ते और बीज पीसकर सेवन कराने से रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाता है तथा गर्भ गिर जाता है।

● अमरबेल का क्वाथ बनाकर पिलाने से गर्भपात हो जाता है।

● मूली के बीज 6 ग्राम, पुराना गुड़ 20 ग्राम को कूट पीसकर आधा लिटर पानी में पकाकर दिन में 3-4 बार पिलाने से 3-4 दिन में मासिकधर्म जारी हो जाता है।

● पिसा हुआ जीरा एक चौथाई पिला देने से गर्भपात हो जाता है। यदि शिशु पेट में मर गया हो तो, वह भी बाहर निकल आता है।

● हौम्योपैथिक औषधि 'पल्सेटिला' एक लाख शक्ति (पोटेन्सी) की सेवन कराने के बाद 'सल्फर' 1 हजार शक्ति की सेवन करवा देने से गर्भपात हो जाता है।

भगन्दर (Fistula in Ano)

रोग परिचय—यह एक अत्यन्त कष्टप्रद रोग है। इस रोग में रोगी की गुदा से 1-2 अंगुल छोड़कर फुन्सियाँ सी हो जाती हैं, जिनसे मवाद रक्त बहता रहता है। इन फुन्सियों में तीव्र पीड़ा होती है और रोगी को उठने-बैठने, चलने-फिरने में अत्यन्त कष्ट होता है। यह फुन्सियाँ आसानी से सूख नहीं पाती हैं और रोगी के नाड़ीव्रण अथवा नासूर जैसे घातक घाव उचित उपचार के अभाव में हो जाते हैं। हांलाकि यह रोग असाध्य नहीं है किन्तु कष्टसाध्य अवश्य है। इसका उपचार भी कठिन है। यह रोग शिशुओं को भी हो जाता है। इसके लक्षण निम्न प्रकार हैं। गुदमार्ग के बगल में दरार होकर उसमें पीप, दूषित रक्तवारि का स्राव होना तथा यदा-कदा पीड़ा होना और पीड़ित स्थान पर घाव बन जाना।

उपचार—इस रोग का ऐलोपैथिक चिकित्सक आप्रेशन द्वारा और आयुर्वेदिक चिकित्सा 1. विरेचन, 2. अग्नि कर्म, 3. शस्त्रकर्म एवं 4. क्षारकर्म के उपचारों से पीड़ित रोगी की चिकित्सा करते हैं। बच्चों एवं शिशुओं में क्षारसूत्र का प्रयोग मृदु कर्म होने के कारण घरेलू उपचार ही लिखे जा रहे हैं—

● उत्तम क्वालिटी की राल को बारीक पीसकर भगन्दर पर लगाने से भगन्दर नष्ट हो जाता है।

● करील व अंडी के पत्तों को हल्का गरम बाँधने से भगन्दर घुल जाता है।

नोट—करील में पत्ते नहीं होते हैं अतः ऊपर की कोपलें ही प्रयोग करें।

● अलसी की राख को गुदा के घावे पर बुरकने से घाव भर जाता है।

● आधा किलो नीम रस और 250 ग्राम बूरा चीनी को मन्दाग्नि पर ऐसी गाढ़ी चाश्नी बनालें कि कलुछी चिपकने लग जाए। तदुपरान्त चित्रक, हल्दी, त्रिफला, प्रत्येक 10-10 ग्राम तथा अजवायन, निर्गुन्डी बीज, पीपल, सौंठ, काली मिर्च, दन्तीमूल, नीम और बाबची के बीज (प्रत्येक 25-25 ग्राम) अनन्तमूल और बायविंडग पीस छानकर चाशनी में मिलादें और सुरक्षित रखलें। इसे 10-10 की मात्रा में ताजा पानी के साथ निगल जायें। भगन्दर नष्ट हो जाएगा।

● हल्दी, आक का दूध, सैंधा नमक, गुग्गुल, कनेर, इन्द्र-जौ प्रत्येक 12 ग्राम को जल में पीसकर लुगदी बनायें। तदुपरान्त तिल का तैल 150 मि.ली., जल 600 मि.ली., तथा उपर्युक्त लुगदी मिलाकर विधिवत् तैल पाक कर लें। जब तैल मात्र शेष रह जाए तब छानकर सुरक्षित रखलें। इस तैल को भगन्दर पर दिन में 3-4 बार लगायें। व्रण रोपण करने वाला उत्तम योग है।

● व्रण गजांकुश रस (भैषज्य रत्नावली) बच्चों को 1 ग्राम औषधि 3 ग्राम मधु में मिलाकर सुबह-शाम सेवन कराना लाभप्रद है।

● सप्त विशन्ति गुग्गुल (भैषज्य रत्नावली) 6 ग्राम की मात्रा में गरम जल के साथ बच्चों को सुबह-शाम खिलाना लाभकारी है।

पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

कैपाइना टेबलेट (हिमालय) की आवश्यकतानुसार 2-3 टिकिया दिन में 2-3 बार अथवा करामाती टेबलेट (निर्माता राजवैद्य शीतलप्रसाद एण्ड संस) 1-2 टिकिया दिन में 3-4 बार खाकर चोबचीनी (मिश्रा बुन्देलखण्ड) अथवा स्वर्णक्षीरी (मिश्रा, बुन्देलखण्ड, सिद्धी फार्मेसी) का सूचीवेध 1-2 मि.ली. की मात्रा में (चिकित्सक के परामर्शानुसार) लगवायें। अत्यन्त लाभप्रद योग बन जाता है।

चेचक

रोग परिचय—यह एक प्रकार का तीव्र संक्रामक रोग है। जिसमें तीसरे दिन शरीर पर विशेष प्रकार के दाने निकल आते हैं। यह रोग अधिकतर बच्चों को होता है। इस रोग के उत्पन्न होने का कारण एक विशेष प्रकार का कीटाणु होता है। इस रोग में एकाएक सर्दी लगकर बुखार चढ़ता है, हाथ-पैर टेढ़े हो

जाते हैं। कमर, सिर और आमाशय के ऊपरी मुँह के स्थान पर दर्द होता है। कै, मितली, उबकाइयाँ आती हैं तथा भूख कम लगती है। चेहरा गरम, प्यास की अधिकता, जीभ मैली रहती है, ज्वर के उतरते ही दाने निकल आते हैं। ये दाने 3-4 दिन में पानीयुक्त छाले बन जाते हैं, जो पांचवे या छठें दिन पककर फट जाते हैं। अथवा उनमें पीप पड़ जाती है और छालों के चारों ओर लाल रंग का घेरा सा बन जाता है। रोगी के मुख से दुर्गन्ध आने लगती है, 10-12 दिन के बाद दाने पक जाने पर रोगी को तीव्र ज्वर (104 से 105 डिग्री) तक हो जाता है।

चेचक के दाने हाथ-पैर और मुँह पर अधिक तथा पहले निकलते हैं इसके बाद शरीर के अन्य भाग पर निकल आते हैं। दाने अलग-अलग अथवा आपस में मिले हुए होते हैं। दाने 10-12 दिन में ये मुरझाने लगते हैं और इन पर कालिमा युक्त अथवा भूरे रंग के खुरन्ड बन जाते हैं। ये खुरन्ड 19वें दिन उतरने लगते हैं और 1-2 महीने तक उतरते रहते हैं। बाद में शरीर पर मात्र चिह्न रह जाते हैं।

उपचार

● सत्यानाशी का कोमल पत्ता लेकर थोड़ा सा गुड़ मिलाकर खिला देने से चेचक नहीं निकलती है।

● जब चेचक का जोर हो उस समय बच्चों को चेचक निकलने से पूर्व (जब बच्चे को ज्वर हो गया हो, मुँह लाल हो) तब अपामार्ग की जड़ और खाने (सब्जी में डालने वाली) हल्दी दोनों को समभाग लेकर तथा पानी में चन्दन की भाँति घिसकर हाथ-पैरों की बीसों नाखूनों पर लगाकर तथा 1 तिलक माथे पर बीच में और एक जीभ पर लगा देने ईश कृपा से चेचक नहीं निकलती है।

● अपामार्ग (ओंधा, चिरचिटा या लटजीरा आदि नामों से प्रसिद्ध) की ताजा जड़ की चन्दन की भाँति गंगाजल या शुद्ध ताजे जल में घिसकर काँच के बरतन में रखते जायें। इस दवा को अँगुली या रुई की फुरैरी से चेचक (बिगड़ी हुई चेचक) के दानों पर लगा दें। बैठी हुई और बिगड़ी हुई चेचक भी 2 घंटे में बताशे की भाँति उठ जायेगी। रोगी को कुछ ज्वर भी बढ़ेगा किन्तु कोई भी हानि नहीं होगी। इसी दवा की 8-10 बूँदें रोगी को पिला भी दें।

नोट—यह क्रिया केवल एक बार तथा एक ही दिन करें। रोगी कुछ ही समय में निरोग हो जाएगा।

● मासिकधर्म प्रारम्भ होने के 16वें दिन यदि गर्भाधान किया जाए अथवा

इस दिन स्त्री को गर्भ रह जाए तो ऐसी सन्तान अत्यन्त ही बलिष्ठ, ओजस्वी एवं तेजस्वी होती है और उसे जीवन भर चेचक नहीं निकलती है।

● ग्लीसरीन को 3 गुना गुलाबजल में घोलकर चेचक के स्थान के शुष्क दानों पर लगाते रहने से खुरन्ड सरलता से उतर जाते हैं।

● यदि चेचक के दानें भली प्रकार न निकले हों तो रोगी को गरम पानी में बिठायें तथा गरम पानी या चाय के साथ 30 मि.ली. की मात्रा में मुश्क (कस्तूरी) खिलायें।

● चेचक के दानों में जलन और संक्रमण रोकने हेतु कार्बोलिक लोशन में स्पंज भिगोकर सारे शरीर को साफ करते रहना लाभप्रद है।

● चेचक के रोगी के बिस्तर पर नीम की पत्तियां बिछाना अत्यन्त लाभप्रद है।

● हाइड्रोपैराक्साइड के 2 गुना पानी में मिलाकर रोगी का मुख, जीभ, गला प्रतिदिन साफ कराते रहना चाहिए तथा शक्ति प्रदान करने वाले तरल पेय यथा—कच्चे नारियल का पानी, मौसम्मी और मीठे संतरे का रस ही पिलायें, ठोस भोजन कदापि न दें। यह हानिकारक है।

● आस-पास में चेचक रोग फैलने पर नीम की सात लाल पत्तियाँ और 7 काली मिर्च के दानें प्रतिदिन चबाना श्रेष्ठ बचाव है। यह योग चेचक से रक्षा कवच और ढाल की भाँति कार्य करता है। अथवा नीम और बहेड़े के 5-5 ग्राम बीज, हल्दी 5 ग्राम के साथ पीसकर ताजा पानी में घोलकर 1 सप्ताह प्रतिदिन पीने से चेचक से बचाव हो जाता है।

● चेचक निकलने पर कतई नहीं घबरायें, बल्कि रोगी की तीमारदारी और वायुमण्डल की स्वच्छता मनोयोग से करें। इस हेतु रोगी को मुनक्के का उबला हुआ जल पीने को दें और वही उबला हुआ खिड़कियों पर वन्दनवार बाँधकर उनको खुला रखें तथा रोगी के बिस्तर पर भी नीम पत्तियां बिछायें, उन्हें सुबह-शाम बदलते रहें।

● चेचक में जब असहनीय जलन हो तब नीम की पत्तियों को घोट व छानकर मथनी से बिलोकर जब झाग बनने लगें तो वही झाग रोगी के बदन पर लगायें। अत्यन्त लाभप्रद योग है।

● नीम की कोपलें पीसकर चेचक के फफोलों पर पतला-पतला (गाढ़ा हरगिज नहीं) लेप लगाने से दानों की आग कम हो जाती है।

● चेचक के रोगी को ठण्डा पानी देना हानिकारक है। रोगी को प्यास व

खुश्की (भड़ास) में नीम की छाल जलाकर अंगारे जल भरी कटोरी में बुझाकर, वही पानी पिलाना भी उत्तम है ।

● चेचक के बुखार को उतारना हानिकारक है क्योंकि इसी के कारण चेचक के दाने बाहर निकल कर फूटते हैं । यदि ये दानें शरीर में अन्दर ही रह गये तो जीवन में कभी भी दुबारा इसका असर भोगना पड़ सकता है और इसका रूप अत्यन्त ही उग्र होगा । यदि खसरा और चेचक पूर्णरूपेण बाहर न निकल पायें तो क्रोनिक ब्रोंकाइटिस' का दु:ख जो अत्यन्त कष्टकारक रोग होता है को भुगतना पड़ जाता है । इस हेतु—नीम की पत्तियों का रस गुनगुना करके दिन में 3 बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाते रहना चाहिए ताकि चेचक के दानें खुलकर निकल आयें ।

● नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर तथा ठण्डा करके (चेचक के दानें सूख जाने पर) स्नान करवाकर नीम पत्तियों में तपाकर छाना हुआ तैल बदन में लगाना अत्यन्त उपयोगी होता है ।

● जैसे ही चेचक का उबाल शान्त पड़ जाए नीम का तैल गढ़ों वाली त्वचा पर लगायें । इस प्रयोग से त्वचा इकसार, इकरंग और समतल हो जाती है अर्थात् चेचक के बदसूरत, गड्ढे तुरन्त भर जाते हैं तथा सिर पर भी भी नीम का तैल लगायें, ताकि चेचक की कमजोरी के कारण सिर के बाल न झड़ें ।

● चेचक के दानों में संक्रमण, दर्द और खुजली कम करने हेतु दाने फट जाने पर डेटोल (एन्टीसैप्टिक लोशन) 15 बूंद, मैन्थोल 300 मि.ग्रा. दालचीनी का तैल आधा बूंद और नारियल का तैल 30 मि.ली. को मिलाकर सुरक्षित रखकर रूई की फुरैरी से लगाना भी अतीव गुणकारी है ।

छोटी माता, शीतला

रोग परिचय—यह एक संक्रामक ज्वर बच्चों को महामारी के रूप में होने वाला रोग है । इसे मसूरिका, लघु मसूरिका, काकड़ा-लाकड़ा और वैरियोला (Vaiola) इत्यादि नामों से भी जाना जाता है । चार वर्ष और इससे कम आयु के बच्चे इस रोग से भी अधिक ग्रसित होते हैं । एक बार यह रोग हो जाने के बाद फिर दुबारा नहीं होता है । इस रोग का वायरस श्वासांगों—नाक और मुँह के मार्ग से शरीर में प्रवेश कर जाता है । शिशुओं में यह रोग अधिक तीव्र नहीं होता है । यदि वयस्क रोगी को यह रोग हो जाए तो अत्यन्त तीव्र रूप धारण कर लेता है । उनको इस रोग से न्यूमोनिया होकर त्वचा पर दाने निकल आते हैं जिनसे

रक्त आने लगता है । कीटाणु शरीर में चले जाने के 15-16 दिन के बाद इस रोग के निम्न लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं :—

गुलाबी रंग के दानें व धब्बे गुच्छों के रूप में बारी-बारी से शरीर पर कभी एक अंग पर तो कभी दूसरे अंग पर निकलते हैं । ज्यों-ज्यों दाने और धब्बे निकलते हैं त्यों-त्यों रक्त में उत्तेजना से बच्चे को 103 से 104 डिग्री फारेनहाइट तक ज्वर हो जाता है । ये दाने 25 घंटों में फूलकर छाले बन जाते हैं । इनमें पानी जैसा तरल उत्पन्न होने लगता है और चौथे दिन शुष्क होने लगते हैं तथा 1-2 दिन के बाद इनके खुरन्ड उतरने लगते हैं । यदि सम्पूर्ण शरीर पर एक ही बार ये दाने निकल आयें तो यह रोग एक सप्ताह में दूर हो जाता है । चेचक के दानें तो एक ही बार निकल आते हैं किन्तु छोटी माता के दाने ठहर-ठहर कर बारी-बारी से निकलते रहते हैं । ज्वर हो जाने के 24 घंटे बाद पीठ पर, फिर माथे और चेहरे पर दाने निकलते हैं ।

उपचार—विषाणुओं (Virus) से पैदा रोग शीतला, खसरा, चेचक आदि कष्टों को दूर करने हेतु ही दवा दिये जाने का नियम है । बच्चे को दाने निकल रहे हों तो उसको स्नान कराना और ठण्डे पेय पदार्थ देना उचित नहीं है । मुनक्का खिलाने से दाने आसानी से निकल आते हैं । बच्चे को दानें खुजलाने एवं खुरचने से अवश्य ही रोकें । खसरा तथा चेचक में लिखे योगों का सेवन कराना ही इसका उपचार है ।

खसरा (Measles)

रोग परिचय—इस संक्रामक रोग का प्रारम्भ सर्दी, जुकाम और नजला से होता है फिर ज्वर हो जाता है । बुखार चढ़ने के चौथे दिन सारे शरीर और चेहरे पर बहुत छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं जिसके कारण समस्त शरीर लाल रंग का दिखाई देने लगता है । नाक से पानी बहना, सर्दी, खाँसी, बार-बार छींकें आना, आँखें लाल हो जाना, आँसू आना, सिर में दर्द, आवाज बैठ जाना, पीठ और हाथ-पैरों में दर्द आदि के साथ 101 से 104 तक ज्वर हो जाना, मुँह के अन्दर गालों और होठों के अन्दर हर ओर छोटे-छोटे लाल दाने पैदा हो जाना आदि लक्षण होते हैं । खसरा के दाने खशखश के दानों से भी छोटे होते हैं । बच्चों को इस रोग के उपद्रव स्वरूप उचित उपचार के अभाव में प्लूरिसी, गले की शोथ और क्षय रोग आदि भी हो सकते हैं । इस रोग का कारण भी एक वाइरस

है जो रोगी की नाक के तरल, दानों, खुरन्ड, साँस, छींकों और थूक द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संक्रमण फैलाता है। अधिकतर यह रोग बच्चों को ही होता है।

इस रोग में रोगी को एकाएक 101 से 102 तक ज्वर हो जाता है। आँखों और नाक से पानी बहने लगता है। गले में दर्द और खाँसी, सर्दी और कम्पन होती है। रोगी के मुँह के अन्दर सफेद दाग पैदा हो जाते हैं। इन सफेद दागों को (काप्लीक स्पाट्स) कहते हैं।

नोट—बच्चे को जब भी जुकाम हो जाए तो मुँह के अन्दर की ओर इन सफेद दागों को जरूर देख लिया करें। यदि ऐसे दाग हो तो निश्चित समझें कि बच्चे को खसरा निकल रहा है। खसरा प्रारम्भ होने पर कई बच्चों को शरीर पर पित्ती उछलने की भाँति दाने निकल आते हैं जिनमें खुजली होने लगती है। इस रोग के चौथे दिन खसरा के दाने चेहरे व शरीर पर निकल आते हैं। कई रोगियों को खसरे के दाने 10वें दिन भी निकला करते हैं। ये दाने लाल होते हैं जब तक दानें निकलते रहते हैं तब तक ज्वर बढ़ता रहता है। रोगी की आँखें दुखने लग जाती हैं, प्रकाश में आँखें खोलने पर रोगी को कष्ट होता है। ये दाने एक सप्ताह के बाद समाप्त हो जाते हैं। दाने का भूरा सा निशान शेष रह जाता है। बच्चों को इस रोग के उपद्रवस्वरूप प्रायः ब्रान्को निमोनिया हो जाता है। यदि खसरे में बच्चे की सांस तेजी से चलने लगे और नथुने धौंकनी की भांति फूलने लगे तो निमोनिया के लक्षण होते हैं। इसका तुरन्त उपचार आवश्यक है। खसरे के रोगी बच्चे के कान के अन्दर अक्सर सूजन भी हो जाया करती है इसीलिए चिकित्सक प्रतिदिन कान के पर्दे से जांच करते रहते हैं। कान में सूजन हो जाने पर काफी समय तक कान में पीप आती रहती है।

उपचार

● इस रोग के कीटाणु का संक्रमण हो जाने पर 8 से 12 दिन तक शरीर में छिपी रहती है और रोगी को कोई कष्ट नहीं होता है। इसके उपरान्त ही इसके लक्षण उत्पन्न होते हैं। खसरा का रोग प्रायः बसन्त ऋतु अथवा सर्दी की ऋतु में होता है।

हल्दी और दारु हल्दी दोनों को सममात्रा में लेकर गुलाबजल में घोटकर चने के आकार की गोलियाँ बनाकर रखलें। नित्यप्रति बसन्त ऋतु में शीतल जल के साथ दिन भर में तीन गोलियाँ देते रहने से शीतला (चेचक, खसरा व छोटी माता) कदापि नहीं निकलती है और यदि निकल आई हो तो इन गोलियों के सेवन करने के फलस्वरूप आगे नहीं बढ़ेंगी। वेग रुक-रुक कर शीघ्र शान्त हो जाएगा। शीतला निकल आने पर अथवा इससे पूर्व किसी भी समय प्रयोग करवा सकते हैं। हानिरहित अनुभूत योग है।

● अनबिधा मोती शिशुओं को 40 दिन की आयु के अन्दर निगलवा देने से जिन्दगी भर मोतीझला, खसरा, चेचक छोटी माता सूखा रोग नहीं होता।

● जब शीतला के दिनों में ज्वर हो जाये तो तत्काल श्वेत चन्दन स्वरस के क्वाथ अथवा बांसा के स्वरस के साथ अथवा मुलहठी रस के साथ या चमेली के पत्तों के रस के साथ मधु पिलाने से शीतला के विकार नष्ट हो जाते हैं।

● बसन्त ऋतु में स्वस्थावस्था में नीम की निबौली, हल्दी, बहेड़े के बीज, सम मात्रा में सभी को जल में घोटकर पिलाने से चेचक आदि का आक्रमण नहीं होता है।

● आँख दुखने पर नेत्रों की भीतरी-नीचे की पलकों पर कर्पूर की डली दिन भर में 2-3 बार घुमाना भी लाभप्रद है। नेत्रों के संक्रामक रोगों में यह प्रयोग अत्यन्त ही हितकर है।

● चेचक ग्रस्त रोगी को केले के बीज का चूर्ण 1 से 2 रत्ती तक की मात्रा में शहद के साथ देना अत्यन्त ही लाभप्रद है। इसका चमत्कारिक प्रभाव होता है। केले के बीजों का चूर्ण बनाकर स्वस्थ अवस्था में शिशुओं को देने से वे खूब हष्ट-पुष्ट हो जाते हैं। मात्र 6 माह के निरन्तर प्रयोग से चेहरों पर रक्त की लालिमा दौड़ आती है।

शिशुओं के लालन-पालन से सम्बन्धित मुख्य बातें

● नन्हा शिशु 24 घंटे में यदि 20-22 घंटे सुख की नींद सोये तो उसकी पूर्ण स्वस्थ समझना चाहिए।

● शिशु के जन्मते ही आहार आदि देने की हड़बड़ी न करें। जन्म के 24 घंटे के बाद शिशु को माता का स्तनपान करवायें।

● यदि घर-परिवार का कोई सदस्य किसी संक्रामक रोग से ग्रसित हो तो उससे नन्हें शिशु को अवश्य ही दूर रखें।

● नन्हें शिशुओं को अत्यधिक हँसाना अथवा डराना हानिकारक है।

● शिशुओं को तीव्र धूप, तेज वायु तथा तीव्र शीतलता से बचाये रखें।

● शिशु के निकट चूल्हा, गैस चूल्हा, स्टोव, लालटेन अथवा कांच की वस्तुऐं, जहरीले पदार्थ, बिजली के तार (रेडियो, टी. वी. पंखे आदि) कदापि नहीं होने चाहिए।

● बच्चों को प्रायः सूती कपड़े तथा सर्दियों में ऊनी कपड़े ही पहिनायें।

● स्वस्थ शिशु को वमन नहीं होता है बल्कि उसके मुख में भरा हुआ (दुग्धपानोपरान्त) दूध बाहर निकल आता है तथा स्वस्थ शिशु के माथे पर पसीना

नहीं आना है तथा उसके मल का रंग पीला और हल्का गरम रहता है । स्वस्थ शिशु की नाड़ी तीव्र चलती है और वह दिन भर में 3-4 बार तक मल त्याग करता है ।

● शिशु को जिस स्थान (शरीर के भाग) पर पीड़ा होती है वह रोता हुआ बार-बार दर्द वाली जगह पर अपना हाथ अवश्य ले जाता है । सिरदर्द होने पर शिशु के कपाल की रेखायें स्पष्ट रूप से उभर जाती हैं तथा दोनों भौंहें एक दूसरे के समीप खिंच जाती हैं और उसकें माथे पर बल पड़ जाते हैं ।

● स्वस्थ शिशु अपनी माता का स्तन तीव्रता से चूसता है अस्वस्थ होने पर उसके स्तन चूसने की गति धीमी हो जाती है अथवा वह स्तनपान करने में पूर्णत: असमर्थ हो जाता है ।

● शिशु को अधिक कै, दस्त के कारण पानी की कमी हो जाने पर उसके माथे का गड्ढा धँस जाता है । आँखें निस्तेज हो जाती हैं, शरीर की चमड़ी रूखी-सूखी, कान्तिहीन हो जाती है, बच्चा चिड़चिड़ा हे जाता है, उसके होंठ सूख जाते हैं और ओठों पर पपड़ी जम जाती है तथा चुटकी से उसके मांस सहित खाल पकड़ने पर वह सिकुड़ी हुई कुछ देर तक ऐसी ही अवस्था में रह जाती है ।

● रोगी बच्चे के मल (टट्टी) से असहनीय दुर्गन्ध आती है ।

● दुग्धपान कराते समय यदि शिशु रोने-चिल्लाने लगे तो यह लक्षण उसके कान में दर्द होने का है ।

● यदि शिशु की जीभ पीले रंग की हो तो वह लीवर (जिगर) अथवा आमाशय सम्बन्धी किसी रोग से ग्रसित हो गया है ।

● यदि शिशु की जीभ स्वाभाविक लाल होती है । यदि उसमें रक्त की अधिकता है जो उसकी अच्छी तन्दुरुस्ती की निशानी है । मुख प्रदाह हो जाने पर भी शिशु की जीभ लाल रंग की हो जाती है किन्तु तब उसके मुख से लार टपकती है।

● शिशु 3-4 मास की आयु में अपनी गर्दन, संभालकर सिर उठा लेता है तथा 9 मास से 1 वर्ष तक की आयु में बैठना सीख जाता है । एक से डेढ़ वर्ष की आयु का शिशु अपनी टाँगों से चलने लगता है । यदि इस स्वाभाविक विकास में कोई अन्तर आ जाए तो बच्चे के मानसिक विकास की गति अवरुद्ध हो चुकी है अथवा वह सूखा रोग से पीड़ित हो गया है यह समझें ।

● शिशुओं को यकृत रोग 1 वर्ष से कम और 3 वर्ष तक की आयु में होता है । कभी-कभी जन्म बाद भी यह रोग हो जाया करता है।

● ज्वर के समय बच्चे को दिनभर में कम से कम 10-12 बार पानी अवश्य पिलाना चाहिए । साधारण स्वस्थावस्था में भी यदि बच्चे को कुछ घंटे तक पानी न पिलाया जाए तो उसके शरीर का तापमान बढ़ जाता है ।

● जन्म के तुरन्त बाद यदि शिशु न रोवे तो यह सम्भावना होती है कि वह साँस नहीं ले पा रहा है । साँस न चलने पर शिशु का शरीर नीला पड़ जाता है। इस स्थिति में नाड़ी की गति धीमी रहती है या हृदय की गति ठप्प रहती है । ऐसी विकट स्थिति नाक और मुँह में कफ आदि के फँस जाने से हुआ करती है। इस परिस्थिति में बालक को उल्टा करके उसके मेरुदण्ड को हल्के-हल्के हाथ से थपथपाने से श्वास चलने लगता है और शिशु रोने लगता है । यदि फिर भी साँस जारी न हो तो शिशु के नाक और मुँह में फूंक मारने से श्वास चलने लगता है। यह कार्य तुरन्त ही करने के होते हैं । अनावश्यक देरी से शिशु काल-कवलित हो जाता है ।

● ऊपरी दूध (कृत्रिम दुग्धपान) करने वाले शिशु के दाँत या तो बहुत ही जल्दी निकल आते हैं अन्यथा बहुत दिनों बाद देरी से निकला करते हैं ।

गर्भस्थ शिशु की रचना सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण जानकारी

प्रथम तीन मास की अवस्था

● आठ सप्ताह तक के गर्भ को Embryo तथा इसके बाद के गर्भ को (भ्रूण-शिशु या गर्भस्थ शिशु कहा जाता है ।

● छठे से 12वें सप्ताह (Place) अपरा का निर्माण हो जाता है ।

● गर्भस्थ भ्रूण में दिल का स्पन्दन 4 सप्ताह के बाद प्रारम्भ हो जाता है।

● नाड़ी तन्त्र का विकास 8वें सप्ताह से प्रारम्भ होता है तथा अस्थियों का बनना भी प्रारम्भ हो जाता है और इस समय गर्भस्थ शिशु में मनुष्य के समान सिर, नेत्र, कान, हाथ, पैर दिखाई देना प्रारम्भ हो जाते हैं ।

द्वितीय तीन मास की अवस्था

● बाह्य जननांगों का स्पष्ट होना ।

● गर्भस्थ शिशु के दिल की धड़कन माँ के उदर में सुनाई देने लगती है।

● अस्थि निर्माण गति में वृद्धि हो जाती है ।

● श्वसन संस्थान निर्माण कार्य पूर्ण हो जाता है ।

● निगलने की प्रक्रिया भी प्रारम्भ करने की शक्ति हो जाती है ।

● बालों का निर्माण होने लगता है ।

अन्तिम तीन मास की अवस्था

● 27-वें सप्ताह में श्वसन संस्थान का निर्माण कार्य पूर्ण हो जाता है ।

● गर्भस्थ शिशु में चूसने पकड़ने की प्रक्रिया का विकास हो जाता है ।

अपरा द्वारा छनकर गर्भस्थ शिशु तक पहुँचने वाले पदार्थ

● दर्द निवारक औषधियाँ—बार्बीडरेट, मारफीन, पेथाडीन, अफीम ।

● नलिका विहीन ग्रन्थियों का स्राव (हारमोन्स)

● उड़नशील, संज्ञानाशक औषधियाँ ।

● जीवाणु नाशक औषधियाँ

● विषाणु — बड़ी माता खसरा और पोलियो ।

● जीवाणु (वैक्टीरिया)

● रोग प्रतिरोधक तत्व (Anti Bodies)

माता की व्याधि का गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव

● लम्बे समय तक अथवा तीव्र रूप में होने वाली किसी भी व्याधि के फलस्वरूप गर्भपात या गर्भस्राव (एर्बोशन) या मृत सन्तान (Still Birth) का अपरिपक्व प्रसव हो सकता है ।

● भ्रूण विकास के प्रथम 3-4 मास के गर्भ के दौरान यदि छोटी माता, हरपीज या मलेरिया का रोग गर्भिणी को हो जाए तो—गर्भपात, अपरिपक्व प्रसव, गलसुआ के कारण दिल की व्याधि, पोलियो के कारण जन्म से ही पक्षाघात, खसरे के साथ ही बच्चे का पैदा होना एवं Vibriofetus से मस्तिष्क ज्वर हो जाता है ।

● गर्भिणी यदि मधुमेह की रोगिणी हो तो जन्म लेने वाले शिशु का वज़न अधिक होता है, सिर बड़ा होता है (Hydrocephalas) और Hypertrophy एवं Hyperplasia of I selet call का होना, Phenyl Ketonuria के कारण जन्मजात अंग-विकृति होती है ।

● गर्भिणी द्वारा अंग्रेजी औषधि कारटीजोन्स के योग खाने से शिशु के होंठ कटे होना (Cleft Palate)

● कैफीन के योग खाने से गर्भस्राव, मृत सन्तान या अपरिपक्व प्रसव होना।

● एमफेटामीन के योग खाने से हृदय शिशु में विकृति आ जाती है ।

● एसीडेरेक्स के कारण शिशु में रक्त विकृति हो जाती है ।

● गर्भिणी द्वारा धूम्रपान करने से जन्में शिशु का वजन कम हो जाता है ।

● एल. एस. डी. के सेवन से शिशु की अस्थियों में विकृति हो जाती है।

● कुनैन के सेवन के फलस्वरूप रक्त-विकृति हो जाती है ।

● स्ट्रप्टोमायसिन के प्रयोग के फलस्वरूप शिशु बहरा हो जाता है ।

● टेट्रासाइक्लिन का गर्भिणी द्वारा प्रयोग करने के फलस्वरूप शिशु की हड्डियों का विकास प्रभावित होता है, दाँतों पर रंग होना तथा मोतियाबिन्द की शिकायत हो सकती है ।

● थैलीडामाइड के प्रयोग से शिशु के अंग जन्मजात विकृत होते हैं ।

● नारकोटिक, बार्बीचुरेट तथा ट्रन्कुलाइजर का यदि गर्भिणी सेवन करे तो केन्द्रित नाड़ी तन्त्र पर अवसादक प्रभाव पड़ता है और शिशु सांस नहीं लेने के कारण मर जाता है ।

● सर्पगन्धा (Reserpin) के क़ारण शिशु पर प्रभाव स्वरूप प्रभावों में निद्रालुता, नाक में भारीपन हो जाता है ।

● अफीम के कारण शिशु का कम दूध पीना, वमन, दस्त, सांस फूलना, शरीर का नीला पड़ना तथा प्राइमाक्वीन के कारण—रक्त विकृति का रोग शिशु को हो जाता है ।

गर्भवती का सन्तुलित आहार

गर्भिणी (माता) का आहार (भोजन) सन्तुलित न होने पर गर्भस्थ शिशु का पोषण ठीक प्रकार से नहीं हो पाता है । अत: इसका ज्ञान परम आवश्यक है ।

आवश्यक ऊर्जा (शक्ति)—(रासायनिक संगठनों पर आधारित)—2200 कैलोरी (सामान्य वजन की गर्भिणी के लिए प्रोटीन 55 ग्राम, इसका आधा भाग पशु जनित प्रोटीन जैसे—दूध, यकृत इत्यादि । वसा 60 से 65 ग्राम रीबाफ्लोबिन 1.2 मि.ग्रा., कार्बोहाइड्रेट 300 से 320 ग्राम, निकोटिनिक एसिड 15 मि.ग्रा., कैल्शियम 1 ग्राम, विटामिन सी 50 मि.ग्रा. लौहतत्त्व 40 मि.ग्रा., विटामिन बी 12 डेढ़ माइक्रोग्राम, विटामिन बी 1 (1 से 2 मि.ग्रा.) तथा विटामिन डी 200 इन्टरनेशनल यूनिट—(आई. सी. एम. आर. 1968 द्वारा निर्धारित)

माँसाहारी गर्भवती का भोजन

दूध 1 पिन्ट या 2 अण्डा, मांस, मछली 4 औंस, हरी ताजी सब्जी 10 औंस, कुछ ताजे फल जैसे—सेब, सन्तरा इत्यादि। भोजन का अन्य भाग रोटी, अन्न, दालों से परिपूर्ण होना चाहिए तथा उसमें मक्खन, घी, तैल, नमक एवं अन्य मसाले मात्रानुसार होने चाहिए।

शाकाहारी गर्भवती का भोजन

दूध अथवा दूध से बने पदार्थ, डेढ़ पिन्ट तक, चोकर युक्त गेहूँ के आटे की रोटियां, अन्न, दाल, हरी सब्जी, 2 टमाटर, मिष्ठान्न तथा भोजन का अन्य शेष भाग मांसाहारी भोजन के ही समान प्रयुक्त करें। औषधि के रूप में—कैल्शियम, लौह, विटामिन तत्त्वों का खूब प्रयोग करें। इनकी कदापि कमी न होने दें।

नोट—गर्भिणी को गर्भ के छठे, सातवें और आठवें मास में 1-1 इन्जेक्शन टेटनस का एम्बुल मेडीकल स्टोर से खरीदकर किसी रजिस्टर्ड चिकित्सक से लगवा देना चाहिए तथा गर्भिणी और उसके उत्पन्न होने वाले नवजात शिशु की टिटनेस (धनुस्तम्भ या धनुष्टंकार) रोग से रक्षा हो जावे।

नवजात शिशु के उत्तम स्वास्थ्य का परीक्षण

● शिशु के जन्मते सिर का व्यास 35 सेमी. होता है तथा शिशु नाक से श्वास लेता है। श्वसन गति सामान्य स्थिति में 20 से 100 तक हो सकती है। (सांस प्राय: 40 से 44 तक प्रति मिनट होती है।) दिल की गति 120 से 140 तक प्रति मिनट, रक्तचाप सिस्टोलिक 75 से 100 तथा डायास्टोलिक 70 मि.मि. आफ मरमरी तथा तापक्रम 100 फा. पैदा होने पर रहता है तथा बाद में 1 से 2 डिग्री फारेनहाइट कम हो जाता है। देखने की शक्ति विकसित नहीं रहती है। सर का गूमड़ जो एक दिन में समाप्त हो जाता है।

● नवजात शिशु की त्वचा उप-उत्तवक (Vernix Caseosa) तथा शरीर पर उस समय के रहने वाले बाल विशेष (Lanugo hairs) रंग गुलाबी तथा हाथ-पैर नीले (लाल त्वचा कपड़े के रगड़ वाले स्थान पर) कभी-कभी बाह्य जननांगों में शोथ (सूजन) होती है जो धीरे-धीरे स्वयं ही खत्म हो जाती है और इस शोथ से कोई किसी प्रकार की हानि नहीं है। कभी-कभी नवजात शिशुओं की त्वचा में हल्का पीलापन दीखता है जो 2-3 दिन में स्वत: ही समाप्त हो जाता है।

नोट—यदि ऐसा न हो तो तुरन्त किसी अच्छे चिकित्सालय में जाकर चिकित्सक के परामर्शानुसार चिकित्सा करायें।

● नवजात शिशु का नाभि नाल 24 घंटे में सिकुड़ना प्रारम्भ हो जाता है। रंग गाढ़ा हो जाता है तथा सात दिनों में नाल गिर जाती है।

● नवजात शिशु के मलद्वार का निर्माण हुआ है या नहीं, यह देखें। काला पाखाना प्रथम 3-4 दिन तक 3-4 बार हुआ करता है। जन्म के 12 घंटे में ही प्रथम बार पाखाना हो जाता है। यदि न हो तो आन्त्रिक अवरोध हेतु किसी रजिस्टर्ड चिकित्सक से निरीक्षण करवाकर उपचार करायें। बाद में Brown Yellow (भूरा-पीला) पाखाना आने लगता है तथा स्तनपान से सुनहला, पीला, मुलायम 1 से 6 बार तक पाखाना आता है। शीशी से दूध पिलाने पर पीला, कड़ा, बदबूदार (फटा-फटा दूध सा भी) पाखाना आता है। कभी-कभी सामान्य रूप से दुग्धपान के समय भी पाखाना होता है।

● प्रसव के समय ही अथवा उसके तुरन्त बाद मूत्र त्याग हो जाता है। मूत्र त्याग न होने पर ध्यान देना आवश्यक है। प्रथम सप्ताह में कम से कम 2 औंस तथा द्वितीय सप्ताह में 20 गुना अधिक शिशुओं को मूत्रत्याग हुआ करता है।

● कभी-कभी नवजात बालक-बालिकाओं में स्तन बढ़े हुए मिल सकते हैं। ओस्ट्रोजेन (Oestrogen) नामक हारमोन के कारण, और कभी-कभी इनसे स्राव भी हो सकता है, किन्तु उक्त दोनों कारणों के लिए उपचार की कतई आवश्यकता नहीं है, केवल स्वच्छता का ही ध्यान व वातावरण रखें। एक सप्ताह में यह समस्त उपद्रव स्वत: ही ठीक हो जाते हैं।

● कभी नवजात शिशु (बालिका) के योनिमार्ग से रक्तस्राव भी (कभी-कभी 2 दिन तक) हो सकता है। इस हेतु भी किसी उपचार की आवश्यकता नहीं, यह भी स्वत: ही बन्द हो जाता है।

● नवजात शिशु का प्रसवोपरान्त शरीर भार 3 से 4 किलोग्राम तक तथा लम्बाई 50 सेन्टीमीटर, भूख लगने पर चीखना, निद्रा 20 से 22 घंटे तक, चूसने की गतिविधि प्रथम दिन से ही होती है।

● शिशु के लिए उसकी माता का ही दूध सर्वोत्तम होता है क्योंकि इस आहार में मिलावट नहीं होती है। शरीर के तापक्रम पर तथा ताजा उपलब्ध होता है। मातृ-दुग्धपान से बीमारियों से लड़ने की शक्ति तथा विषाणु व पोलियो के निरोधक के रूप में भी होती है।

● प्रसूत ज्वर, बड़ी माता, यक्ष्मा (T. B.) न्यूमोनिया, मियादी बुखार, हैजा, पान्डु रोग (Anaemia) तथा दिल व गुर्दे की तीव्र बीमारियां और स्तन विद्रधि, स्तन का फटा होना या अन्दर दबा हुआ होने की स्थिति में माता को अपने शिशु को कदापि दुग्धपान नहीं कराना चाहिए। दूध ब्रेस्ट पम्प से निचोड़कर फेंक देना चाहिए।

● यों शिशु को दुग्धपान कराने हेतु कोई निश्चित नियम नहीं है। किन्तु प्राय: 6-6 घंटे पर तथा उसके बाद 5-5 घंटे पर फिर दूसरे, तीसरे दिन 4-4 घंटे पर फिर बाद में 3-3 घंटे पर दुग्धपान कराना उत्तम रहता है। शिशु के उत्पन्न होने पर 1 या 2 मिनट बाद में 2-3 दिन 3-3 मिनट बाद, फिर धीरे-धीरे समय बढ़ाकर 15-20 मिनट किया जा सकता है। वैसे जब भी माँ और बच्चा स्वस्थ हो, स्तनपान करा सकती है। दोनों स्तनों का दूध पिलाना चाहिए। दिन में कम से कम 1 बार स्तनों को साबुन से अवश्य धो लेना चाहिए। फिर पोंछ व सुखाकर प्लास्टिक युक्त अँगिया माता को पहननी चाहिए। भोजन में माँ को दूध के सम्पूर्ण मिश्रित उचित भोजन तथा रसभरी, टमाटर, केला, बन्दगोभी इत्यादि फल एवं तरकारी (कम से मिर्च मसालायुक्त) दें।

नोट—कभी-कभी माँ के द्वार इसके सेवन से शिशु को पतले दस्त आ जाया करते हैं इसका ध्यान रखें।

● माँ को यह मालूम होना चाहिए कि उसका बच्चा कब भूखा है। बच्चे प्रारम्भ के कुछ दिन (3 दिन तक) सोते रहते हैं। जब कुछ वजन घटता है उस समय मां परेशान होती है कि उसका बच्चा दूध नहीं पी रहा है। किन्तु वास्तव में शिशु चौथे दिन से ही दूध पीने की इच्छा प्रकट करते हैं। बच्चे 5 से 20 मिनट में दूध पीकर माँ का स्तन खाली कर देते हैं। दूध पिलाने के बाद शिशु को कन्धे पर सुलावें तथा उसकी पीठ पर हल्के-हल्के हाथों की थपकी लगावें, इस प्रक्रिया से दूध पीने के साथ पेट में गई हवा निकल जाती है दाहिनी करवट से सुलाना चाहिए। एक बार में एक स्तन तथा दूसरी बार में दूसरा स्तन या एक ही बार में दोनों स्तनों का दुग्धपान कराना चाहिए। यदि फिर भी स्तन में दूध रहे तो हाथ से अथवा से दूध को निकाल देना चाहिए।

● **शिशु की विकास दर**—जन्म के समय वजन 3 किलोग्राम। 6 माह की आयु होने पर 6 किलोग्राम, 9 माह में 9 किलोग्राम एवं 1 वर्ष की आयु होने पर 10 किलोग्राम तथा फिर प्रतिवर्ष 1 से लेकर 2 किलोग्राम के औसत से बढ़ना उत्तम स्वास्थ्य का परिचायक होता है।

● शिशु की लम्बाई जन्म के समय 50 सेमी., 1 वर्ष की आयु होने पर 75 सेमी. तथा 2 से 14 वर्ष तक लम्बाई का सूत्र (आयु वर्षों में x 2.5 + 30 x 2.5 = लम्बाई सेमी.) है।

● शिशु के सिर की वृद्धि जन्मकाल में 35 सेमी. 1 वर्ष की आयु में 45 सेमी. हो जाता है। दो वर्ष की आयु होने पर 2 सेमी. 3 वर्ष की आयु होने पर 1 सेमी. और 5 वर्ष की आयु होने पर 5 सेमी. प्रतिवर्ष की वृद्धि होती है।

● **दन्तोद्भेद**—सर्वप्रथम शिशु के नीचे के बीच के 2 दाँत निकलते हैं। यह 5 माह की आयु में निकलने लगते हैं तथा 9 माह की आयु तक निकल आते हैं। एक वर्ष की आयु में 6 से 8 दाँत तक निकल आते हैं। (कभी-कभी दो ही रह जाते हैं) 6 वर्ष की आयु से नवीन दाँत आते हैं। बच्चे के दूध के दाँत 20 होते हैं जो उखड़-निकलकर युवावस्था में 30-32 हो जाते हैं।

● **शिशु के अन्य सामान्य लक्षण**—शिशु का तलुवा प्रथम 2-3 माह तक बढ़ता है फिर धीरे-धीरे घटता है और 9 माह से 18 माह के दौरान बन्द हो सकता है। पीछे का तलुआ तो 4 माह की आयु में बन्द हो जाता है।

5-6 माह की आयु का बच्चा पकड़कर तथा 7-8 माह का बच्चा बिना किसी सहारे के बैठना सीख जाता है। एक वर्ष का बच्चा हाथ पकड़कर चलता है और 3-4 शब्द भी बोलना सीख जाता है। पन्द्रह माह की आयु का बालक खुद बिना सहारे के चलना सीख जाता है और 2 वर्ष का बच्चा दौड़ने लगता है। तीन वर्ष का बच्चा पारिवारिक सदस्यों से बाल-सुलभ प्रश्न पूछने लगता है तथा दरवाजा आदि खोलने व बन्द करने का कार्य भी करने लगता है।

● **टीके लगवाने की आयु**—गर्भावस्था में गर्भिणी को 6, 7 व 8 वें माह में टिटनेस बैक्सीन या टिटनेस टाक्साइड का टीका लगवा लेना चाहिए। यदि उपयुर्क्त टीका न लगवाया हो तो बच्चा पैदा होने पर ए. टी. एस. 1500 का टीका जच्चा को तथा ए. टी. एस. 750 यूनिट का टीका बच्चे को किसी सुयोग्य चिकित्सक से लगवा देना चाहिए।

(नोट—ए.टी.एस. का टीका चर्म में टैस्ट करने के उपरान्त ही लगवायें)

● शिशु को 2 माह की आयु होने पर डिफ्थेरिया (गले में झिल्ली पैदा हो जाना) टेटनस और हूपिंग कफ (काली खाँसी) तीनों रोगों से बचाने वाला वैक्सीन का पहला इन्जेक्शन लगवाना चाहिए।

(नोट—इस टीका को लगवाने से पूर्व ओरल पोलियो मायटिस वैक्सीन की प्रथम मात्रा (खुराक) भी पिलाई जाती है।)

● जब बच्चे की आयु 3 माह की हो जाए तब उपयुर्क्त टीका तथा पिलाने वाली वैक्सीन की दूसरी मात्रा और जब बच्चा 4 महीने का हो जाए तो उपर्युक्त बैक्सीन का तीसरा टीका तथा पिलाने वाली वैक्सीन की तीसरी खुराक अवश्य पिलवायें।

● जब बच्चा डेढ़ वर्ष की आयु का हो जाए तब उपर्युक्त इन्जेक्शन वैक्सीन अन्तिम बार लगाया जाता है तथा इससे पूर्व अन्तिम बार पोलियो मायलायटिस वैक्सीन की अन्तिम मात्रा मुख द्वारा पिलाई जाती है। इन वैक्सीनों के प्रयोग से बच्चा पोलियो, काली खाँसी, टिटनेस और डिफ्थीरिया जैसे घातक रोगों से सुरक्षित हो जाता है और उसको यह रोग बड़ी आयु में भी नहीं हुआ करता है।

● बच्चा जब 1 वर्ष का होता है तब उसको खसरा से सुरक्षित रखने का इन्जेक्शन लगवा देना चाहिए तथा 2 वर्ष की आयु हो जाने पर चेचक से बचाव टीका लगवा देना चाहिए। यह टीका शिशुओं को 5 वर्ष की आयु तक लगवाया जा सकता है। किन्तु 2 वर्ष की आयु में लगवाना अधिक उचित रहता है। नौ वर्ष की आयु में उसको दुबारा यही इन्जेक्शन लगवादें।

● दस वर्ष की आयु के बालक को क्षय रोग से बचाव हेतु बी.सी.जी. का वैक्सीन इन्जेक्शन लगवाना चाहिए।

● आजकल 12 माह की आयु तक रोग प्रतिरक्षक सभी प्रकार के टीके भी राजकीय चिकित्सालयों में मुफ्त लगा दिए जाते हैं तथा विटामिन ए की 9 माह से 3 वर्ष की आयु तक 5 खुराकें प्रति 6 माह के अन्तर से पिलाई जाती है।

● अच्छे स्वास्थ्य की निरोगी सन्तान अपने देश में जन्म लें, इस हेतु याद रखें कि विवाह की आयु लड़की के लिए कम से कम 18 वर्ष के बाद तथा लड़के की आयु 21 वर्ष के ऊपर होनी चाहिए। इससे कम आयु की लड़की शारीरिक एवं मानसिक रूप से गर्भ धारण के लिए विकसित नहीं रहती है। अत: गर्भ में जटिलताऐं भी उत्पन्न होने की सम्भावनाऐं रहती हैं।

● प्रसव सदैव प्रशिक्षित व्यक्तियों/दाईयों अथवा राजकीय महिला स्वास्थ्यकर्मी नर्स अथवा सुयोग्य रजिस्टर्ड महिला चिकित्सक द्वारा ही करायें तथा ध्यान रखें कि स्वच्छ हाथ, स्वच्छ प्रसव स्थान, स्वच्छ नया ब्लेड, स्वच्छ नाल बन्धन होना चाहिए। जन्म के 1 घंटे के अन्दर माँ का दूध अवश्य ही पिलायें क्योंकि यह बच्चे के लिए अमृत समान होता है। जन्म के 4 माह तक बच्चे को मात्र माँ का दूध दें, बाहर की अन्य कोई चीज (पानी तक) कदापि न दें।

● पति-पत्नी में बाँझपन हेतु मात्र महिलाऐं ही नहीं, बल्कि पुरुष भी दोषी हो सकता है। किसी महिला को पुत्र होगा अथवा पुत्री इसके लिए पत्नी नहीं, बल्कि पति ही जिम्मेदार है।

● रोगों के उपचार हेतु औषधियाँ बड़ों की, बच्चों की, शिशुओं की, तथा स्त्री पुरुषों की एक ही होती है। किन्तु निर्बल, कमजोर रोगियों को, वृद्धों को, स्त्रियों को खुराक कम दी जाती है। इस ग्रन्थ (पुस्तक) में वयस्क (युवाओं) की खुराकें लिखी गई हैं, जहाँ बच्चों अथवा शिशुओं के योग लिखे है, वहाँ उसका उल्लेख कर दिया गया है।

● यदि गर्भिणी को गर्भपात की शिकायत हो गई हो तो निम्नलिखित में से किसी एक नुस्खे का प्रयोग करें—

● पीपल की छाल का चूर्ण 3 से 6 ग्राम तक शीतल जल के साथ सेवन कराने से गर्भवती की योनि से रक्त आना (गर्भपात) रुक जाता है।

● उत्तम लौह भस्म और त्रिफला चूर्ण इन दोनों को आवश्यकतानुसार मिलाकर देने से आशंकित गर्भपात की रक्षा हो जाती है।

● स्वर्ण गैरिक (सोना गेरू) तथा राल का चूर्ण मिलाकर सेवन कराने से गर्भपात का रक्तस्त्राव रुक जाता है तथा वेदना का भी निवारण होता है।

● सफेद राल का चूर्ण मिश्री मिलाकर पीने से रक्तस्त्राव रुक जाता है तथा गर्भ पुष्ट भी हो जाता है।

● पीपल की छाल और सन्तरे का छिलका समभाग लेकर पीसकर दिन में 3-4 बार (3-4 दिनों तक) पिलाने से गर्भपात में अवश्य लाभ हो जाता है और गर्भ गिरने से बच जाता है।

● बार-बार गर्भस्त्राव के कारण गर्भाशय में कमजोरी आ जाया करती है इसके फलस्वरूप गर्भ धारण की शक्ति प्राय: नष्ट हो जाती है। ऐसी स्थिति में त्रिबंग भस्म 120 मि.ग्रा., मुक्तापिष्टी 120 मि.ग्रा. च्यवनप्राश 12 ग्राम में मिलाकर गोदुग्ध के साथ सेवन कराना अतीव गुणकारी है।

● गूलर की जड़ की छाल 12 ग्राम लेकर 250 मि.ली. जल में काढ़ा बनायें। जब जल 30 मि.ली. शेष रहे, तब उतार छानकर गर्भपात की रोगिणी को पिलायें। इससे गर्भपात होना रुक जाता है तथा समय से शिशु जन्म लेता है।

● जवासा, सारिवा, पदमाख, रास्ना, मुलहठी, कमल के फूल प्रत्येक 2-2 ग्राम लेकर एक साथ गाय के दूध में पीसकर सुबह-शाम पिलाने से गर्भपात होना निश्चय ही रुक जाता है।

● गर्भावस्था के तीसरे महीने में शक्कर और नागकेशर 3-3 ग्राम की मात्रा में दूध के साथ पीसकर पिलाने से हारमोन्स की कमी दूर हो जाती है।

● आँवले के मुरब्बे का एक नग चाँदी के वर्क में लपेटकर गर्भवती को निरन्तर सेवन करते रहने से गर्भपात नहीं होता है।

● पति या पत्नी को सुजाक या उपदंश रोग होने पर गर्भिणी को बार-बार गर्भपात हो जाया करता है अथवा मृत शिशु पैदा होता है। ऐसी स्थिति में उक्त रोगों का समूल नष्ट होना अति आवश्यक है। इस हेतु स्वर्णक्षीरी को जड़ की छाल 12 ग्राम और गोल मिर्च के चार दानें पीसकर रखें और सुबह-शाम खिलायें। इसके सेवन से उपदंश के समस्त विकार दूर हो जाते हैं अथवा उपदंश कुठार वटी (सिद्ध प्रयोग संग्रह) 1 से 4 गोली तक सुबह-शाम ताजा जल से 7 दिनों तक सेवन करें। साथ ही लाजवन्ती की जड़, धाय के फूल, नीलकमल की जड़, मुलहठी और लोध सभी सममात्रा में लेकर चूर्ण तैयार कर लें या क्वाथ (काढ़ा) बनाकर 1 औंस की मात्रा में 250 मि.ली. गो दुग्ध के साथ सुबह-शाम 15 दिनों तक सेवन करायें। इससे गर्भपात नहीं होता है।

■■■

द्वितीय खण्ड

सर्वसुलभ पदार्थों एवं मसालों के संक्षिप्त गुण-धर्म एवं रोगोपचार सम्बन्धी कुछ सुगम योग

गेहूं—यह पौष्टिक खाद्य पदार्थ है जिसमें कैल्शियम और फास्फोरस अधिक मात्रा में होती है। गेहूँ 50 ग्राम में 1 ग्राम चर्बी, 6 ग्राम प्रोटीन और 40 ग्राम कार्बोज होता है। इसमें अन्य किसी विटामिन का कोई अंश नहीं पाया जाता है। गेहूँ के आटे में—मकई, जौ, बाजरा आदि खाद्यान्नों से अधिक मात्रा में प्रोटीन तथा कार्बोज पाया जाता है। यह हमारे शरीर के मांस, रक्त आदि को बढ़ाने तथा उसमें उष्णता कर शारीरिक शक्ति उत्पन्न करता है। इसके साथ अत्यधिक दालों का प्रयोग हानिकारक होता है। गेहूँ की रोटी के साथ लगभग डेढ़ छटांक दाल प्रतिदिन सेवन करना चाहिए। चावल की अपेक्षा गेहूं के आटे की रोटी खाने पर मल (पाखाना) अधिक होता है किन्तु चावल खाने वाले लोगों से गेहूँ खाने वाले लोग अपेक्षाकृत अधिक बलवान एवं हृष्ट-पुष्ट होते हैं। गेहूँ के अंकुरों में विटामिन 'ई' अधिक मात्रा में होता है जो सन्तान उत्पन्न करने हेतु आवश्यक है।

चावल—हाँलाकि यह दो सौ से अधिक किस्मों के रूप में मिलता है किन्तु रासायनिक विश्लेषणानुसार इसमें 10 प्रतिशत जल, 80 प्रतिशत कार्बोज, 6 प्रतिशत प्रोटीन और 3 प्रतिशत अन्य चीजें और इसके अतिरिक्त इसमें कैल्शियम और फास्फोरस भी अल्प मात्रा में पाया जाता है। नये चावलों की अपेक्षा पुराना चावल अधिक स्वादिष्ट तथा सुपाच्य होता है, क्योंकि इसमें जल का अंश कम होता है। यही कारण है कि पुराना चावल नये चावलों की अपेक्षा पकाते समय अधिक पानी ग्रहण करता है फलस्वरूप अधिक फूलता है और फूलकर आकार में बड़ा हो जाता है। यह हल्का, सुपाच्य किन्तु कब्ज करने वाला होता है। इसको अधिक मात्रा में सेवन करने वाले लोग दुबले-पतले रहते हैं, क्योंकि इसमें मांस बनाने वाले प्रोटीन की मात्रा कम होती है, इसीलिए चावलों के साथ अधिक मात्रा में दालों का सेवन करना अत्यन्त आवश्यक होता है। चावल को बिना मांड निकाले ही पकाना चाहिए क्योंकि मांड निकालने पर कार्बोज निकाल जाता है।

दालें—जैसाकि सर्वविदित है, गेहूं, चावल आदि खाद्यान्नों की ही भाँति दालों का भी जीवन में महत्व है। मांसाहारी जो शक्ति मांस से प्राप्त करते हैं, वही शाकाहारी लोग दालों से प्राप्त करते हैं। दाल की जितनी खपत अपने भारत देश में है, उतनी संसार के किसी अन्य देश में नहीं है। इसे गरीबों का मांस कह सकते हैं क्योंकि यह गरीबों के लिए गोश्त की शक्ति प्रदान करती है। दालों में प्रोटीन, लवण और कार्बोहाइड्रेट्स इत्यादि तत्व होते हैं। इसमें प्रोटीन लगभग मांस 'मीट' के बराबर होती है सर्वाधिक प्रोटीन अरहर व चना की दाल में होती है। छिलका सहित खाने से कभी कब्ज नहीं होता है। दालों में चूँकि गेहूं की अपेक्षा अधिक मात्रा में प्रोटीन होती है, इसलिए यह देर से पचती है इसीलिए इसे गेहूं की रोटी के साथ कम तथा चावलों के साथ अधिक मात्रा में सेवन करना चाहिए।

शक्कर—इसमें लगभग शत-प्रतिशत कार्बोज होता है। अत: शरीर में जाकर इसका कुछ हिस्सा ''वसा'' में बदल जाता है। यह हमारे शरीर में शक्ति उत्पन्न करने हेतु आवश्यक है। किन्तु आवश्यकता से अधिक शक्कर सेवन करने से मधुमेह 'डायबिटीज' रोग हो जाया करता है। कभी-कभी इसके सेवन से अजीर्ण, अफारा, खट्टी डकारें आने की शिकायत भी हो जाती है और इसके अतिरिक्त इससे दाँतों के खराब होने और सड़ने का रोग भी हो जाया करता है।

चटनी, अचार, मुरब्बे—इनमें किसी भी प्रकार के विटामिन्स नहीं हुआ करते हैं। मात्र स्वाद हेतु ही सेवन किये जाते हैं। इनके अधिक सेवन से पाचन-शक्ति बिगड़ जाती है। इसीलिए इनका कम सेवन करना चाहिए।

अरारूट—यह सुपाच्य एवं स्वास्थ्यप्रद खाद्य है। इसमें लगभग साढ़े 82 प्रतिशत स्टार्च होता है तथा अल्प मात्रा में मांस की भी शक्ति होती है।

मट्ठा—दही से मक्खन निकालने के बाद जो तरल पदार्थ बचता है उसे ही तक्र या मट्ठा कहा जाता है। इसमें बहुत ही कम मात्रा में मक्खन रहता है, इसके अतिरिक्त अन्य सभी तत्व उपलब्ध रहते हैं। जो रोगी वसा नहीं पचा सकते हैं उनके लिए तथा बच्चों और कृश रोगियों के लिए यह अत्यन्त ही हितकारी होता है। मट्ठा पुष्टिकारक, शवितबर्धक, हल्का, शीतल और कब्जकारक होता है।

मक्खन—यह दूध का चर्बीदार पदार्थ होता है। इसमें वसा 89 प्रतिशत, दुग्ध शर्करा आधा प्रतिशत, कैजीन आधा प्रतिशत और जल 10 प्रतिशत होता है। इसके अतिरिक्त विटामिन ए और डी विशेष मात्रा में रहता है। यह पुष्टिकारक, शक्तिदायक और शीघ्र पचने वाला होता है।

दूध—यह एकमात्र ऐसा पदार्थ है जो शरीर की समस्त आवश्यकताओं को लगभग पूर्ण कर देता है। इसमें प्रोटीन, वसा, कार्बोज, लवण, जल और थोड़ी बहुत मात्रा में अन्य सभी विटामिन उपलब्ध रहते हैं। विटामिन ए इसमें अधिक होता है किन्तु विटामिन ई और लोहा (आयरन) कम होता है। इसीलिए आयुर्वेदाचार्य दूध के साथ सन्तरे का रस भी देने की सिफारिश करते हैं।

घी—यह प्रत्येक दृष्टिकोणों से शरीर रक्षा हेतु सर्वोत्तम चर्बी है। पौष्टिक गुणों में यह सर्वोत्तम है। इसमें विटामिन ए और डी भरपूर मात्रा में होती है।

दही—यह दूध को जमाकर (अम्लीय बनाकर) तैयार किया जाता है। दूध के समस्त गुण इसमें मौजूद रहते हैं। यह दूध का सर्वोत्तम बदल (सब्सीटियूट) है। यह पाचक, कब्जकारक, बल तथा क्षुधाबर्धक, शीतल, अम्लीय और कफ बढ़ाने वाला होता है किन्तु दूध की अपेक्षा जल्दी हज्म हो जाता है।

मलाई—अत्यन्त बलबर्द्धक है। सूखी खाँसी में अत्यन्त लाभप्रद रहती है।

अण्डा—मानव शरीर की रचना हेतु जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, वे सभी तत्व अण्डे में विद्यमान हैं। इसकी सफेदी में विशुद्ध अल्ब्यूमिन और इसकी जर्दी में अधिक मात्रा में वसा और अल्यूब्यूमिन होती है। इसमें पानी और लवण कम होता है और निशास्ता तथा शक्कर बिल्कुल ही नहीं होती है फिर भी यह अत्यन्त ही पौष्टिक भोजन है। इसकी जर्दी अत्यन्त ही पुष्टिकारक होती है। कच्चे या कम उबले अण्डे की सफेदी भी शीघ्र सुपाच्य है किन्तु पूरी तरह से उबाले हुए अण्डे की सफेदी कठिनता से पचती है।

अजवाइन—गरम, खुश्क, दीपन, पाचन और चरपरी है। ज्वर, पेट के दर्द, अफारा, जिगर, तिल्ली, दस्त, हैजा में लाभप्रद है। रक्तशोधक है।

अनारदाना—भूख बढ़ाता है और मैदे को शक्ति प्रदान करता है किन्तु कब्जकारक है।

अदरक—खुश्क है। अफारा, पाचन-शक्ति की कमजोरी और कफ में लाभप्रद, भूख बढ़ाने वाली है। वात और गैस नाशक है।

अमचूर—भूख बढ़ाने वाला किन्तु रक्त और गले को हानि पहुँचाने वाला है।

इमली—ठण्डी, खुश्क और कब्ज खोलने वाला है। खून को खराब करती है। गर्मी के बुखार, पान्डु, (जान्डिस, पीलिया) में इसको जल में भिगोकर इसका पानी सेवन करना लाभप्रद है। यह कफ प्रकृति वालों के लिए हानिकारक है।

बड़ी इलायची—कुछ कब्जकारक और गरम होती है। कफ और पित्त को नष्ट करती है। भोजन पचाती है और भूख बढ़ाती है। पसीना लाने वाली स्फूर्तिदायक

है। फेफड़ों तथा गले के कफ को पतला करती है। सर्दी लग जाने में लाभप्रद है। सर्दी के रोगी को इसका पानी उबालकर देना लाभप्रद है। जुकाम में इसे चबाना अत्यन्त गुणकारी है।

छोटी इलायची—सौम्य अर्थात् ठण्डी होती है। मुख को सुगन्धित करती है। दमा, हिचकी और खाँसी नाशक है और फेफड़ों को शक्ति प्रदान करती है। पथरी व पेशाब के रोगियों के लिए अतीव गुणकारी है। यह हृदय, मस्तिष्क और आमाशय को बल देती है। रोचक है। गले को साफ रखती है।

काला जीरा—इसके दाने सफेद जीरा के दाने से बड़े होते हैं। यह अत्यन्त गरम, बादी और कफ नाशक है, पेट की रतूबत को कम करता है, भोजन पचाता है, भूख लगाता है। मूत्र तथा मासिक धर्म की रुकावट को दूर करता है। अफारा, वायुशूल, कै, दस्त, ज्वर, अजीर्ण को नाश करने वाला है। कनफेड़े होने पर इसे पीसकर लेप करना अतीव गुणकारी है।

सफेद जीरा—बादी और कफ नाशक तथा थोड़ा गरम है। कामशक्ति (सैक्स पावर) और स्त्रियों के दूध को बढ़ाने वाला तथा बलबर्द्धक है।

दालचीनी—यह अत्यन्त गरम और शक्तिबर्द्धक है। सिर के दर्द और वायु विकारों को नष्ट करने वाली, पेशाब अधिक व साफ लाने वाली है। मूत्र सम्बन्धी बीमारियों में अत्यन्त लाभप्रद है। बादी नाशक है। मुख में रखकर चूसने से उल्टी और जुकाम में लाभप्रद है। नमकीन तथा मीठे चावलों में डालने से बादी कम हो जाती है। इलायची, तुलसी के पत्ते, काली मिर्च और दालचीनी डालकर चाय बनाकर पीने से सर्दी नष्ट होकर सर्दी से रक्षा होती है।

काली मिर्च—पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली किन्तु कुछ गरम और खुश्क है। स्नायु संस्थान यकृत, मस्तिष्क और तिल्ली को शक्ति प्रदान करती है। खाँसी, दमा, अजीर्ण, जुकाम, नींद की अधिकता, अफारा, स्मरण-शक्ति की कमी को दूर कर गले को साफ रखती है।

धनिया—ठण्डा और खुश्क है। आमाशय की खुश्की दूर करके प्यास, मिटाता है, पाचन शक्ति बढ़ाता है, हृदय तथा मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। निद्राकारक है, वीर्यस्राव और स्वप्नदोष में हितकारी है। यह दो रूपों में मिलता है—हरा और सूखा धनिया। दोनों ही धनिये ठण्डे, खुश्क और सुगन्धित हैं। हरा धनिया विशेष रूप से पित्त नाशक, रुचिकारक और क्षुधाबर्धक होता है।

नमक (लवण)—यह 5 प्रकार का होता है। सौंचल, सांभर, सैंधा, समुद्री

और खारी। इनमें सैंधानमक सर्वोत्तम होता है। यह बादी नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। साँभर नमक कफ को नष्ट करने वाला और भोजन को शीघ्र पचाने वाला होता है। (सौंचल नमक को 'काला नमक' के नाम से भी जाना जाता है) यह नमक खून की ख़राबी को नष्ट करता है और भूख बढ़ाता है। खारी नमक वादी नष्ट करने वाला और क्षुधाकारक (भूख बढ़ाने वाला) होता है। प्राय: पांचों नमक खुश्क, कब्जहर, कफनाशक होते हैं और भोजन को पचाते हैं, भूख लगाते हैं। पेट दर्द, अफारा, खट्टी डकारें, आमाशय, यकृत और प्लीहा की दुर्बलता में लाभप्रद हैं। गर्मी और वीर्य के रोगों में हानिकारक होते हैं।

राई—गरम और मूत्रल है। उदर की वायु (गैस) नाशक है। भूख बढ़ाती है, भोजन पचाती है। गुर्दे के दर्द में लाभकारी है। जिगर, तिल्ली, जुकाम और उदर-शूल में भी अत्यन्त उपयोगी है।

लहसुन—गरम और खुश्क है। कफ रोगों, लकवा, दमा, खाँसी, सिरदर्द, जोड़ों के दर्द, अन्तड़ियों की निर्बलता में अत्यन्त लाभप्रद है। तपैदिक, पुराना ज्वर, फेफड़ों के घाव, हृदय की दुर्बलता, वायुशूल, अफारा, अजीर्ण और कुष्ठ रोग नाशक है। आँख तथा उदर के अनेक विकारों में उपयोगी है। थोड़ी कब्ज नाशक, पित्त बढ़ाने वाली किन्तु वायुनाशक है।

प्याज—यह गरम और कीटाणु नाशक है। इसमें अत्यधिक मात्रा में फास्फोरस होता है। हैजे में अत्यन्त लाभप्रद है। इसकी तीव्र गन्ध से लू (गरम हवा) से बुरा असर नहीं होता है। इसीलिए गरमियों में इसकी गाँठ जेब में डालकर घूमना लाभप्रद होता है। इसको खाने से दुर्गन्ध तो अवश्य आती है फिर भी इसे कच्चा खाना अत्यन्त लाभप्रद होता है। यह अपनी तीव्र गन्ध के ही कारण सस्ती बिकती है, अन्यथा यह इतनी गुणकारी है कि आम, अंगूर और सेब से भी अधिक मंहगी होती। इसके सेवन से पाचनशक्ति प्रदीप्त होती है, त्वचा विकार नष्ट होते हैं और सांड जैसी मर्दानगी आती है, व्याधियों का उद्वेग शान्त होकर सुखमय दीर्घायु प्राप्त होती है।

महिलाओं को यह सुन्दरता के सांचे में ढाल देता है। यह तीन प्रकार का होता है—सफेद, लाल और पीला। किन्तु औषधीय गुणों को दृष्टिगत रखते हुए सफेद प्याज अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और दैनिक जीवन में लाल प्याज। यह ताकतवर, भारी, कफ-पित्तनाशक, रुचिकर, वमननाशक, वीर्यवर्धक, उदर गैस नाशक, शारीरिक दर्द, वायुगोला, ज्वर, खाँसी—जिसमें बलगम एकत्र होता हो,

सूखी और तर खुजली, कर्णशूल, विषैले कीड़ों मकोड़ों के दंश में उपयोगी है। आवाज को सुरीला बनाता है।

लाल मिर्च—खून को सुखाने वाली, गरम और खुश्क होती है, किन्तु रक्त के कीटाणुओं को नष्ट करती है। कफनाशक है, त्वचा को लाल करती है। शरीर को गरमी प्रदान करती है। पित्त में हानिकारक है। इसके अधिक सेवन से बबासीर, कब्ज, वीर्य स्राव, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुंसकता, सुजाक, आतशक आदि रोग बढ़ जाते हैं। हरी मिर्च इतनी अधिक हानिकारक नहीं है। कुत्ते के काटने पर लाल मिर्च को पीसकर जख्म पर लेप करना अत्यन्त ही उपयोगी है।

लौंग (लवंग)—गरम और खुश्क होती है। भोजन को पचाकर भूख लगाती है, गले को शुद्ध व साफ करती है, मस्तिष्क को शक्ति देती हैं, कै, अफारा, प्यास, हिचकी, नेत्ररोग, आन्तरिक ज्वर, कफ, दमा, खाँसी, जुकाम, लकवा, मिरगी, उन्माद, उल्टी तथा नपुंसकता के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। सर्दी से उत्पन्न सिर दर्द को नष्ट करती है। इसका तैल दाँत-दर्द एवं छोटी-छोटी फुन्सियों को नष्ट करने के लिए उपयोगी है।

सौंठ—अदरक को सुखाकर तैयार की जाती है। अत: इसके गुण अदरक से ही मिलते-जुलते हैं। यह गरम और खुश्क होती है। मैदा, जिगर, मस्तिष्क तथा पाचन शक्ति में बल प्रदान करने वाली, खाँसी, जुकाम, मरोड़, दस्त, बादी, अन्तड़ियों की दुर्बलता, पेट का दर्द तथा कफ में लाभप्रद है। दूध के साथ सेवन करने से यह मस्तिष्क को बल प्रदान करती है। गुड़ के साथ मिलाकर खाने से पेट की अनेक बीमारियाँ नष्ट हो जाती हैं। वायु विकार, गैस और वात नाशक है।

सौंफ—कुछ गरम और खुश्क हैं। छाती, जिगर, तिल्ली, गुर्दा तथा मूत्र की रुकावट उदरगैस और पेटदर्द में उपयोगी है। पेशाब के रोगों को नष्ट कर साफ मूत्र लाती है, पुराने बुखार में भी उपयोगी है। पाचन शक्ति को ठीक करती है, कफ, खाँसी एवं हृदय की मामूली धड़कन को दूर करती है।

हल्दी—यह चमड़ी के रोगों, चोट, सूजन को हटाने और टूटी हड्डी को जोड़ने हेतु परम उपयोगी है, खुश्क, रक्तशोधक और कफ नाशक है। पान्डु, शोथ, खुजली, उदर कृमि, स्वप्नदोष, वीर्यस्राव तथा नेत्रों की कमजोरी में लाभप्रद है। फोड़े-फुन्सी तथा घाव पर तेल या घी में पिसी हुई हल्दी डालकर सेंक करके पट्टी बाँधना लाभप्रद है। हड्डी टूटने और भीतरी चोट लगने पर इसका उपयोग लाभप्रद रहता है। पुल्टिस में इसका प्रयोग होता है। दमा और तपेदिक रोग नाशक

है। अरुचि, आलस्य और बुढ़ापे दूर भगाने वाली है। यह खुद पीली है जबकि इसके सेवन से रक्त शुद्ध होकर सेवनकर्त्ता लाल सुर्ख हो जाता है। नजला, जुकाम, नकसीर, पीनस दूर कर दिमाग और फेफड़ों को रोगों से बचाये रखती है। घावनाशक है। इसका उबटन काया को कंचन बना देता है। मर्दों, बारातियों, पूजा, अनुष्ठानों, ब्रह्मचारियों, वैज्ञानिकों सभी को सिरमौर है हल्दी। किन्तु महिलाओं से इसकी खास हमदर्दी के कारण ही यह हट्ट-विलासिनी और गोरी के नाम से भी जानी जाती है।

हींग—इसमें तीव्र सुगन्ध होती है। पेट में वायु भर जाकर अफारा आ जाने पर इसको पानी में मिलाकर इसका फाहा नाभि पर रख लेने से लाभ होता है। यह गरम और खुश्क है। वात, कफ, अफारा, उदर कृमि, भूख, क्षय, लकवा, सूजन, यकृत, पान्डु और पेट दर्द में उपयोगी है। स्वाद में कड़वी, चिकनी, दस्तावर, अनपचे वायु और मल से होने वाली पेट की रुकावट और दर्द को दूर करती है। अर्द्धांग बाय, सिर के चक्कर, बहरापन, बच्चों को साँस लेने में कष्ट होना, सन्धिवात, आँखों के रोग, सूखी खाँसी, गले के रोगों को भी दूर करती है। यह दो प्रकार की होती है—काली और सफेद। सफेद हींग को ही हीरा हींग कहते हैं और यही सर्वोत्तम हींग मानी जाती है। (धोखेबाज व्यापारी हींग में कंकड़, बालू, मिट्टी, गोदन्ती, गोंद, आटा, पत्थर का चूरा इत्यादि मिलावट कर बेचते हैं। नकली हींग का सेवन हानिकारक होता है।

कचरी—यह बरसात (खरीफ की फसल) में खेतों में फैलती है। इसकी बेल ककड़ी की भाँति और फल परवल (सब्जी) की भाँति, जिसमें खीरे जैसे बीज होते हैं। यह कड़वी और मीठी जाति की होती है। लोग प्राय: सुगन्ध हेतु इसे अपने पास रखते हैं। यह मीठी, रूखी, भारी कफ और पित्त नाशक है। कच्ची कचरी किंचित अम्लीय होती है। सूखी कचरी रूखी, कफ, वात, अरुचि और दीपन होती है। मलावरोधक गुण भी इसमें होता है। यह कृमिनाशक और खुजली तथा ज्वर नाशक भी है। भूख बढ़ाती है। इसे मांस (मीट) में डालने से मीट बहुत शीघ्र गल जाता है। यह मस्तिष्क तथा हृदय को शक्ति प्रदान करती है। इसके कुछ सेवन करने से पथरी टूटकर निकल जाती है। यह इसमें बाजीकरण गुण भी है। वायुजन्य सिरदर्द में इसका (सूखे फल का) चूर्ण गरम जल के साथ परीक्षित योग है। यह अर्धांगवात अर्दित रोग और प्राय: कफजन्य बीमारियों में लाभप्रद है। बादी विकार को नष्ट करने वाली है। बबासीर में भी लाभप्रद है।

कलौंजी—इसमें एक विशेष प्रकार की नीबू की भांति प्रिय तीव्र गन्ध आती

है। इसका तैल भी औषधि के रूप में उपयोगी है। यह अपानवायु को निकालती है विकलांगता, कोढ़, वायु और मलावरोध नाशक है। इसको औटाकर पीने से मृत और जीवित शिशु उदर से बाहर निकल पड़ता है। यह मासिकधर्म और मूत्र का प्रवर्त्तन करती है। यह प्रसवकालीन, रक्त श्रुति (निफास का खून) एवं उससे उत्पन्न वेदना का निवारण करती है। यह सर्दी, खाँसी, पेटदर्द, जलोदर और वायुजन्य सिरदर्द में लाभकारी है। उदर कृमि नाशक है, इसका लेप सूजन उतार देता है। पागल कुत्ता के काटने पर साढ़े चार ग्राम से दस ग्राम तक पानी के साथ खिलाने से लाभ होता है। अतिसार नाशक और स्त्री के स्तनवृद्धि करने में उपयोगी है। यह फोड़ों को पकाती और साफ करती है, मूत्र वृद्धि करती है तथा सर्दी के विकारों को दूर करती है। इसको खाने से मुख से खट्टी डकारें आना बन्द होकर सुगन्ध आने लगती है। किन्तु इसको अधिक मात्रा में सेवन करने से खून निकल आता है और मूर्च्छा आने लगती है। गर्भवती को इसका सेवन वर्जित है।

कबाबचीनी (शीतलचीनी)—इसका कच्चा फल ही प्रायः औषधि के काम में आता है। इसको कुचलने से एक विशेष प्रकार की तीक्ष्ण गन्ध आती है। इसको खाने के बाद जीभ बहुत ठण्डी मालूम पड़ती है। इसका तैल भी औषधि के कामों में आता है। यह वायु प्रशामक, श्लेष्माहारी, अग्निवर्धक, मूत्रवृद्धिकर है। औपसर्गिक मेह, शुक्रमेह, श्वेतप्रदर, अर्श और मूत्रकृच्छ का नाश करती है। यह दीपन, पाचन, वक्षोदर अन्तरावयवों और मसूढ़ों को शक्ति देती है। यह तारल्य जनक, अवरोधोदारक वायु का अनुलोम करने वाली, मूत्रल और मूत्रमार्ग के क्षत आदि को स्वच्छ करने वाली है। अपस्मार, यकृत और प्लीहा के रोग, सुजाक और शैय्यामूत्र (बिस्तर पर मूतना) में भी उपयोगी है तथा मुख को सुवासित कर आमाशय को बल प्रदान करने वाली, मुखपाक विनाशक, अश्मरी-मेद हर और अतिसार को दूर करने वाली है। इसको मुख में रखने से स्वर शुद्ध होता है। इसीलिए गायक कलाकार इसका अधिक उपयोग करते हैं। यह स्त्रियों के योनिगत रोगों का भी नाश करती है। मासिकधर्म की रुकावट दूर करती है। वाजीकर तथा नपुंसकता नाशक भी है।

केसर—इसे उर्दू में जाफरान कहा जाता है। इसे यदि गर्म पानी में डाल दिया जाए तो पानी की रंगत शीघ्र ही पीली हो जाती है। चूंकि यह एक मूल्यवान वस्तु है, इसलिए व्यापारी इसमें अनेक प्रकार से मिलावट कर देते हैं। असली केसर लालिमायुक्त, पीली, तेज गन्धयुवत, वजन में हल्की, स्वाद में कड़वी होती

है। यदि एक चावल भर मुख में रखली जाए तो 15 मिनट में ही सिर में गर्मी महसूस होने लगती है। इसकी अन्य पहचान—असली केसर को पानी में भिगोकर एक सफेद रंग के कपड़े पर लगाने से तुरन्त ही पीला दाग पड़ता है। यदि केसर नकली होगी तो लाल होकर कपड़ा पीला होगा। इसे यदि पानी में घोलें तो पानी रंगदार नहीं होता है किन्तु यदि पानी में भिगोकर केसर को घिसा जाए तो रंग देती है। यह अपने रंग और खुश्बू के लिए ख्याति प्राप्त है। यह हृदय मस्तिष्क और आमाशय को शक्ति प्रदान करके नया रक्त उत्पन्न कर धातु को बढ़ाता है। पौरुष-शक्ति वृद्धि कर रुकावट बढ़ाता है। अन्डकोष और गुर्दों को शक्ति देता है। शादी से पूर्व तथा बाद की कमजोरी दूर करता है। खाँसी, जुकाम, निद्रा दूर करके प्रसन्नता देता है। नेत्र शक्तिबर्धक एवं स्फूर्ति और नवजीवन प्रदायक है।

खशखश—यह अफीम के बीज हैं—जो अत्यन्त शक्तिदायक और पौष्टिक होते हैं। जबकि इसके पौधे का दूध अफीम होता है जोकि अत्यन्त विषाक्त द्रव्य है, किन्तु इन बीजों अर्थात् खशखश में अफीम का कोई असर नहीं पाया जाता है। यह खाँसी, दमा, दस्त और पेचिश में परम उपयोगी है। इसको पानी में पीसकर माथे पर लगाने से गर्मी से होने वाला सिरदर्द नष्ट हो जाता है।

चिरौंजी—यह मीठी, भारी, स्निग्ध, मल को रोकने वाली, शीतल, धातुबर्धक, कफकारक, कामोद्दीपक, वातनाशक, पित्त, दाह, ज्वर, तृषा, क्षतरोग, रक्त विकार और क्षत-क्षय में अत्यन्त लाभप्रद होती है। शरीर को मोटा करने वाली, मुख-सौन्दर्य एवं वीर्यवृद्धि करती है। इसको पीसकर चेहरे और मुँहासों पर लगाने से मुंहासे ठीक होते हैं और चेहरे की त्वचा निखरकर रौनक आ जाती है। यह लेप स्नान के थोड़ी देर पहले करना चाहिए। इससे त्वचा चमकदार, चिकनी, स्वच्छ और उजली हो जाती है।

जायफल—यह एक सुगन्धित मसाला है शरीर की स्वाभाविक गर्मी की रक्षा कर कामशक्ति को बढ़ाने वाला तीक्ष्ण और गर्म प्रकृति का होता है, कफ और वात का भी शमन करता है। शोथहर, वेदनाहर, कीटनाशक होने से नर्वस सिस्टम के लिए रोचक, दीपक, पाचक, यकृत को सक्रिय करने वाला ग्राही उदर एवं पाचन संस्थान के लिए उपयोगी होता है। अनिद्रा, दर्द, अग्निमांद्य, खाँसी, श्वास, हिचकी, शीघ्रपतन, यौनशक्ति की कमी आदि के नष्ट करने में उपयोगी सिद्ध होता है। अधिक मात्रा में सेवन करना हानिकारक है। इसके चूर्ण की मात्रा डेढ़ से 1 ग्राम तक होती है।

जावित्री—जायफल के नीचे से लाल छिलके की तरह जावित्री निकाली जाती है। यह भी सुगन्धित मसाला है। यह शक्तिवर्धक औषधियों, पाकों, अवले हों, में प्रयुक्त होती है। दमा का दौरा होने पर जावित्री पान में रखकर खाने से आराम मिलता है। यह हल्की, चटपटी, कड़वी, सुगन्धित, स्वादिष्ट, रुचिकारक, सौन्दर्य बढ़ाने वाली, मुख को स्वच्छ करने वाली, अग्निवर्धक, कफ, खाँसी, वमन, श्वास और तृषा को नष्ट करने वाली है। क्षयरोग में भी लाभप्रद है। पुरुषार्थ बढ़ाने वाले योगों में डालने से उनके गुणों और स्वाद में वृद्धि कर देती है। अधिक मात्रा हानिकारक है। क्योंकि उस स्थिति में यह मूर्च्छा और नशा उत्पन्न करती है। इसे 3-4 ग्राम से अधिक नहीं देना चाहिए। यदि इसे अधिक मात्रा में सेवन करने से कुछ अनिष्ट हो जाए तो मक्खन में चन्दन और मिश्री मिलाकर चाटना लाभप्रद होता है। जायफल और जावित्री को कामोत्तेजना और वीर्य स्तम्भन वाले योगों में प्रयुक्त किया जाता है एवं हृदय रोगों में भी उपयोगी है। दर्द, अनिद्रा, आक्षेप आदि वातिक विकारों, अग्निमांद्य, अजीर्ण, यकृत विकार, कास-श्वास, अतिसार तथा कृमि रोगों में भी लाभप्रद है। (जायफल पकने और सूखने पर छिलका छोड़ देता है यह छिलका ही जावित्री या जाति पत्री कहलाता है। इसके सेवन से खाना हजम हो जाता है, पेट की वायु बिखर जाती है, सर्द मिजाज वालों की काम शक्ति बढ़ जाती है, लिंग पर इसकी मालिश करने से लिंग की सुस्ती दूर हो जाती है। यह आमाशय को उत्तेजना प्रदान कर आमाशय के पाचक रसों को बढ़ाती है। जिससे भूख खुलकर लगती है और खाया-पिया पच जाता है। इसका सहयोगी जायफल है।

तेजपात—गरम, खुश्क सुगन्धित एवं हृदय को मस्त करने वाला पत्ता है। वायुनाशक (उदर की गैस) आमाशय व आँतों की क्रिया को सुधारने वाला, शरीर को दृढ़ और मोटा करने वाला, विष नाशक, वात और खुजली में लाभप्रद है। बबासीर और गुदाद्वार तथा बड़ी आंत के अधोभाग के विकारों में लाभप्रद है। त्रिदोष, हृदय रोग, पीनस और अरुचिनाशक है। कफ और आम के रोगों में भी हितकारी है। अजीर्ण, उदरशूल, अतिसार, पाचन नलिका के रोग, गर्भाशय की शिथिलता और समस्त प्रकार के कफज रोगों में अत्यन्त लाभप्रद है। इसके निरन्तर सेवन से गर्भपात की आदत दूर हो जाती है। यह प्राणवायु रक्षक है, आँतों की वायु को फैलाता है, पेट, मूत्र, पसीना, दूध और मासिक धर्म को शुद्ध व साफ करता है। गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़कर निकाल देता है। पेट की खराबी

से होने वाली मुख की दुर्गन्ध को नष्ट करता है। पीलिया, जलोदर, यकृत व आँतों के रोगों में भी लाभप्रद है। भयजनित पागलपन में परम हितकारी है। इसकी धूनी देने से गर्भवती का बच्चा शीघ्र ही पैदा हो जाता है। इसको निरन्तर जीभ के नीचे रखने से हकलापन और तोतलापन नष्ट हो जाता है। इसको पीसकर सुरमें की भाँति आँखों में इस्तेमाल करने से जाला और धुन्ध नष्ट हो जाता है तथा नाखूना भी कट जाता है। इसे दाँतों पर मंजन की भाँति प्रयोग करने से दाँतों में कीड़ा नहीं लगता है और वे अत्यन्त मजबूत हो जाते हैं। इसको पीसकर अदरक की चाशनी में चाटने से दमा में लाभ होता है। इसका चूर्ण वमन नाशक है।

नीबू—यह खट्टा, वातनाशक, दीपक, पाचक, कृमिनाशक, पेट के रोगों को नष्ट करने वाला, तीक्ष्ण, हल्का, अरुचि, वात-पित्त और कफनाशक है। यह लगभग 6- प्रकार का होता है। ये किस्में इतनी अधिक मिलती-जुलती हैं कि भेद करना ही कठिन कार्य है। फिर भी कागजी नीबू को विद्वान आचार्यों ने सर्वोत्तम माना है। नीबू स्वाद में अम्लीय होने पर भी रक्त को क्षारीय बनाता है, यही इसकी सर्वोत्तम विशेषता है। इसका खाली पेट व्यवहार करना अति उत्तम है। इसका सेवन सम्पूर्ण शरीर में ताजगी उत्पन्न कर देता है और शरीर शोधन की क्रिया तुरन्त आरम्भ हो जाती है, रक्त और उदर के समस्त विषैले तत्व नष्ट हो जाते है। संक्षेप में यह शरीर के प्रत्येक अवयव (अंगों) को शक्ति प्रदान करता है। इसके रस में नमक मिलाकर स्नान करने से त्वचा का रंग निखरकर सौन्दर्य बढ़ जाता है। दाँतों से रक्तस्राव (पायोरिया) में एक गिलास ताजा पानी में 2-3 नीबूओं का रस निचोड़कर दिन में 3-4 बार कुल्ला करना अत्यन्त लाभप्रद है। स्कर्वी रोग (शरीर पर चकत्ते पड़ना) तथा समस्त शरीर की निर्बलता की यही एकमात्र औषधि है। मूत्र साफ लाकर हृदय की बढ़ी हुई धड़कन मिटाता है।

नारियल—यह मधुर, भारी, चिकना, पौष्टिक, रक्त-पित्त नाशक तथा पौरुष शक्तिवर्धक व शरीर को मोटा-ताजा करने वाला है। इसका सूखा फल गोला के नाम से प्रसिद्ध मेवा है—जिसको हलवा, मिठाइयों तथा शक्तिबर्धक योगों में प्रयुक्त किया जाता है। यह उदरस्थ शिशु को सुरक्षात्मक प्रभाव प्रदान करता है। यही कारण है कि इसे मिश्री के साथ खाने से शारीरिक दुर्बलता नष्ट होकर उनके स्वस्थ व सुन्दर बच्चा उत्पन्न होता है। खुश्क नारियल से तैल भी निकाला जाता है जो भोजन में घी के स्थान पर तथा अन्य रोग (विकारों) में प्रयुक्त होता है।

पोदीना—यह रूक्ष, लघु, कटु (विपाक में भी कटु) तीक्ष्ण, उष्ण वीर्य, रेचक, पाचक वमन विनाशक, कफ-पित्तशामक, कफ, निःसारक, वातानुलोमक, हृदयोत्तेजक,

कृमिघ्न, आक्षेपहर, मूत्रल, दुर्गन्ध नाशक, गर्भाशय संकोचक, व्रणरोपक, स्वेदल, ज्वरहर, विषघ्न तथा त्वचा के दोषनाशक गुणों से भरपूर हैं। इसकी भी अनेक जातियाँ (किस्में) होती हैं जो सभी एक से ही गुणों में भरपूर हैं, किन्तु आयुर्वेद आचार्यों ने पहाड़ी क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाला (पहाड़ी पुदीना) औषधि के रूप में उपयोग हेतु सर्वश्रेष्ठ बतलाया है। इसकी चाय सुबह-शाम पीने से हाजमा दुरुस्त होकर स्वास्थ्य सुधर जाता है। इसकी पत्तियों को छाया में सुखाकर 6 मास तक सुरक्षित रखकर उपयोग में लाया जा सकता है।

मखाना—यह प्रमेह, पेचिश, नष्टार्त्तव नाशक है। यह शारीरिक-शक्तिवर्धक है। रक्त के जोश को दूर करता है। वीयवर्धक है। इसके सेवन से रात में आने वाले भयानक सपने दीखने बन्द हो जाते हैं। इसके पत्ते गठिया नाशक होते हैं। इसके फूल, सफेद, चिकने, पौष्टिक और कामोद्दीपक होते हैं। यह मांस को स्वादिष्ट बना देता है। यह पीड़ा निवारक भी है।

मेथी—यह गरम वायु है। अरुचिनाशक, पेट की अग्नि को बढ़ाकर भोजन पचाने वाली है। स्वाद में कटु तथा चिपचिपी है। पित्त को बढ़ाती है। यह मांस व त्वचा की वृद्धि करती है। इसके बीज बादी और बलगमी रोग के रोगियों को विशेष रूप से लाभप्रद है तथा स्त्रियों के रजोरोध को दूरकर मासिकधर्म जारी करने वाले और मूत्र की रुकावट को दूर करने वाली हैं। इसका साग भी अत्यन्त पौष्टिक और ठण्डी प्रकृति के व्यक्तियों के लिए अमृत समान है।

बादाम—यह गरम तर है किन्तु यदि इसकी गिरी को पानी में भिगोकर छिलका उतार दिया जाए तो यह समानुकूल हो जाता है। यह समस्त ज्ञानेन्द्रियों के लिए परम हितकारी है। शारीरिक एवं मानसिक शक्ति बढ़ाता है। स्मरण शक्ति, मस्तिष्क और आँखों के लिए लाभप्रद है। सूखी खाँसी एवं अन्डकोषों के रोगों में विशेष लाभकारी है। रक्त और चर्बी बढ़ाता, शरीर को मोटा-ताजा कर वीर्य को गाढ़ा कर पौरुष शक्ति की वृद्धि करता है।

रतनजोत—शुगर व मूत्र सम्बन्धी रोग विनाशक है। मासिक जारी करने वाला, मूत्र लाने वाला, पथरी को तोड़-तोड़ कर निकालने वाला, पीलिया नाशक, छोटे जोड़ों के दर्द एवं पुराने ज्वरों को दूर करता है तथा मरहम के योगों के माध्यम से घाव-जख्मों को भरने वाला है। यह हाई ब्लडप्रेशर में छोटी चन्दन की भाँति गुणकारी है। रक्त के भयानक कैंसर (Leukemia) की सफल औषधि है। स्तन कैंन्सर, रक्त कैंसर तथा जलोदर नाशक है। अमेरिकी शोधार्थियों के मतानुसार

यह प्रत्येक प्रकार की रसूलियाँ (ट्यूमर) विशेषकर घातक रसूलियाँ (Malignent Tumors) जो बाद में फैल और फटकर कैन्सर बन जाती है की सफल औषधि है। हाजकिन रोग (जिसमें रोगी की लिम्फैटिक ग्लैन्डस में वृद्धि हो जाती है, ज्वर रहने लगता है, चर्म और कष्ट, रक्त अल्पता एवं अन्य भयानक कष्ट हो जाते हैं।

नोट—इस रोग को ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध चिकित्सक थामस हाजकिन ने 1978-1866 में खोजा था, इसलिए इस रोग का नाम उन्हीं के नाम पर (Hodgkings disease) रख दिया गया है। यह उसे भी नष्ट करने की क्षमता रखता है। इसकी तासीर ठण्डी है। मूत्र की जलन, खून आना आदि को नष्टकर खूब मात्रा में साफ मूत्र लाता है। जिन लोगों को गर्मी की वजह से हाथ-पांव जलते हों, सिर में आग सी लगती हो अथवा लू (गर्मियों में चलने वाली गरम हवा) लग गई हो उन्हें यह 10 ग्राम की मात्रा में 5 दानें कालीमिर्च के साथ पानी में ठण्डाई की भांति पीस-छान मिश्री मिलाकर पिलाने से सारी शिकायतें नष्ट हो जाती हैं। यह रक्तशोधक भी है, दिमाग के लिए हानिकारक है, सिरदर्द पैदा करता है।

सुपारी (छाली)—यह भारी, शीतल, रूखी, कसैली, कफ पित्त नाशक, दीपक, रुचिकारक तथा मुख, संकोचक, मूत्रल, हृदय को शक्ति देने वाली, स्त्रियों के मासिक नियामक, आँखों की सूजन, भ्रम, पुराने प्रमेह और पीप को नष्ट करने के गुणों से भरपूर है। यद्यपि इसकी गिनती मसालों में नहीं होती है फिर भी कभी-कभी इसे गोश्त आदि को गलाने के लिए (कचरी, पपीता, खरबूजे के छिलके की भाँति सब्जियों को गलाने हेतु) उपयोग किया जाता है। कच्ची सुपारी विष की भाँति हानिकारक तथा मध्यम सुपारी भेदक और दुष्पाच्य तथा सूखी हुई सुपारी अमृत के समान हितकारी तथा उत्तम रसायन है। यह सीने को खुरखरा करती है, पथरी (गुर्दे की) वालों, मसाने को हानिकारक है।

पपीता (हरा)—यह कोष्ठबद्धता में विशेष हितकारी है। यकृत और आँतों को शक्ति देता है। तिल्ली नाशक है। पाचक और सारक है। आवश्यकता पड़ने पर मांस को गलाने के लिए शोरबे या सब्जी में डालना लाभकारी है।

हरी मिर्च—यह विटामिन सी से भरपूर है। यही कारण है कि यह सर्दी और खाँसी से बचाकर शरीर की त्वचा को मुलायम रखती है तथा दांतों को रोगों से बचाये रखती है। फिर भी इसका अधिक सेवन हानिकारक है।

अशोक—श्वेतप्रदर, अतिरज:, दर्दयुक्त रज:स्राव, पुरुषों के मूत्र संस्थान के रोग, सभी प्रकार के वेदना युक्त रोग तेज, ज्वर नाशक एवं रक्तशोधक है।

अर्जुन—हृदय रोग, क्षय की कमजोरी, हृदय शोथ, हृदय घात, हृदय शूल, रक्तपित्त, क्षयरोग, कफ-पित्त व पेशाब की जलन, श्वेत प्रदर और चर्मरोग नाशक है

आँवला—हिचकी, उल्टी, रक्तपित्त, अम्लपित्त, यकृत की दुर्बलता, पीलिया, पाचन संस्थान के रोग, स्कर्वी रोग, त्रिदोष नाशक, पैत्रिक शिरोशूल, मूत्रावरोध, नेत्ररोग, बालों के रोग, लैंगिक (इन्द्रिय) दुर्बलता, बबासीर, हृदय रोग, खाँसी, श्वास रोग, महिलाओं के प्रमेह रोग, कुष्ठ व चर्मरोग नाशक है।

अडूसा (बांसा)—खाँसी, बच्चों की काली खाँसी, क्षय रोग, श्वास रोग, रक्त पित्त, पुराना जुकाम, ज्वर, नाड़ी शूल, कृमि रोग, चर्म रोग नाशक एवं रक्तस्राव रोधक है।

अश्वगन्धा—यह कृषकाय (कमजोर करने वाले) रोगों, सूखा रोग, यकृत में कोशिकाओं के अनाधिकार विस्तार से होने वाले कुपोषण, वृद्धावस्था की कमजोरी, मांसपेशियों की कमजोरी, क्षय रोग, कफ, वातनाशक, जोड़ों तथा थायराइड ग्रन्थि की वृद्धि, श्वास रोग तथा गर्भवती स्त्रियों की जीवनीय शक्ति में वृद्धि करने वाला है।

अपामार्ग—आधासीसी, बेहोशी, मृगी, नेत्ररोग, कर्णशूल, चर्मरोग, दूषित वर्ण, जहरीले जानवरों के काटने के घाव, कुत्ते के काटे घाव, सर्पदंश, बिच्छू दंश एवं वेदनायुक्त विकार नाशक है।

अनार—मल के साथ सूक्ष्म कीड़े निकलना, मल के न आने से ज्वर हो जाना, पेट में जलन तथा वायुनलिका के दाह को नष्ट करता है।

अकरकरा—बच्चों का चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, संवेदन, अतिसार उदर शूल, वमन एवं वीर्य सम्बन्धी कमजोरी के लिए अन्य योगों के साथ लाभकारी है।

अगस्त—यह पित्तशामक, गरमी नाशक, तृष्णा, कोढ़ और शोथ तथा योनिशूल नष्ट करने के गुणों से भरपूर है।

अमलताश—कुष्ठ, ज्वर, हृदय रोग, वात रक्त तथा कफ नाशक है।

अनन्तमूल (सारिवा)—यह अत्यन्त रक्तशोधक है। वात-पित्त-कफ तीनों दोषनाशक, रक्तविकार, ज्वर, कन्डू (खाज-खुजली) कुष्ठ, प्रमेह, शरीर की दुर्गन्ध, अरुचि, श्वास रोग, कास, आँव, विष और अतिसार नाशक है।

अंकोल—इसका रस वमन, विष विकार, कफ, वातशूल, कृमि, सूजन, रक्त विकार, कटिशूल आदि को नष्ट करता है। इसके बीज धातुबर्धक हैं।

अतीस—ग्रहणी रोग, कास, वमन, ज्वर, कृमि, प्रतिश्याय, अरुचि, दर्द और आमातिसार नाशक है।

आम—इसकी जड़ वात-कफ रोग शामक है। इसके वृक्ष की छाल मलावरोधक, कफ दोषों, रक्त स्राव का शमन करती है। इसके पत्ते मल को रोकने

वाले, कीटाणु नाशक, कुकुर खाँसी, हिचकी, वात, पित्त और कफ तीनों दोषों को नष्ट करते हैं। इसका बौर वातकारक, मलावरोधक अग्निदीपन, कफ, प्रमेह, प्रदर, नकसीर तथा अतिसार में उपयोगी है। कच्चा आम आमातिसार, मूत्ररोग, योनिगत विकारों में लाभप्रद होता है। इसका पका फल शरीर को नवजीवन प्रदान करने वाला उत्तम टॉनिक है। यह बालकों के विकास के लिए परम हितकारी है। यह वृद्धावस्था में शरीर की रक्षा करता है। वात संस्थान को उत्तेजित करता है। इसमें प्रोटीन, वसा, कार्बोज, लोहा, चूना, जल, विटामिन ए, बी, सी भी होता है।

इमली—दाहहर, पाचक और रेचक है। पित्त ज्वर व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है। भूख बढ़ाती है तथा भांग, धतूरे के नशे को कम करती है।

ईसबगोल—यह उष्णता, तृष्णा, ग्रीष्मकालीन ज्वर, रक्त पित्त बिबन्ध को नष्ट कर मल को सरलता के साथ निकालता है तथा वायुनाशक है।

एरन्ड—वात-पित्त, कफ, श्वास-कास, अश्मरी, गुल्म प्लीहा, उदर व सिर की पीड़ा, प्रमेह, ज्वर, रक्त विकार तथा शोथ नाशक है।

कुचला—वात नाड़ियों को बल प्रदान करता है। पक्षाघात, न्यूमोनिया में अतीव गुणकारी है। पाचनक्रिया को सुधारता है। अर्श व अतिसार नाशक है। जननांगों में रक्त संचार को बढ़ाकर ध्वजभंग व नपुंसकता को नष्ट करता है।

लाल कचनार—कफ, पित्त, वर्ण, कृमि, वात एवं रक्तपित्त नाशक है।

सफेद कचनार—श्वास, खाँसी, रक्त विकार, पित्त, प्रदर रोग नाशक है।

पीली कचनार—कफ, वात और मूत्रकृच्छ नाशक है।

मकोय (काकमाची)—कुष्ठ, अर्श, कफ, शोथ, कन्डूज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन, हृदय रोग, वात और रक्त नाशक है।

(मकोय और मधु मिलाने से विष बन जाता है। इसके सेवन से मृत्यु हो जाती है।)

कालमेघ—ज्वर नाशक विशेष गुण कुदरत से प्राप्त है। सिरदर्द, अजीर्ण, अतिसार, विषम ज्वर, यकृत के समस्त रोग, मल साफ लानेवाला, भूख बढ़ाने वाला, शरीर को ताजगी प्रदान करने वाला बच्चों को विशेष रूप से उपयोगी है।

कासनी—प्यास, सिरदर्द, नेत्ररोग, गले की जलन, यकृत वृद्धि, ज्वर व अतिसार में लाभकारी है। जोड़ों के दर्द में इसके पत्तों का लेप करना लाभप्रद है। इसकी जंगली जाति ऋतुस्राव नियमित करती है तथा कृमिनाशक है। यह आँतों को सिकोड़ने वाली, श्वास, पित्त और प्रदाह नाशक भी है। इसकी जड़ शीतल और शान्तिदायक तथा बीज पेट के अफारे को शान्त करके हृदय को बल प्रदान करते हैं। इसका क्वाथ मासिक धर्म प्रसारक होता है।

कीड़ामारी—दीपन, सारक, स्वेदज, शोथहर, कृमिघ्न, कासनाशक, ज्वर, दन्त कृमि और विष की पीड़ा को दूर करती है। गर्भाशय को उत्तेजना देती है तथा कष्टार्त्तव में उपयोगी है।

कलिहारी—वात-पित्त, कफ शामक है। विरेचक, शूल, गर्भ शल्यनाशक, व्रणनाशक, कुष्ठ शोथ, शूलनाशक, कृमिहर एवं गर्भ पालक है।

कन्टकारी (कटेरी-छोटी)—पाचक, कुष्ठ रोग, हिचकी निवारक, कासहर, शोथहर, शीत प्रशमक, श्वास, ज्वर, वात, पीनस, पार्श्वशूल, कृमि व हृदय रोग नाशक है।

कन्टकारी (बड़ी)—दीपन, पाचक, वात, कफ, ज्वर, कुष्ठ श्वास, खांसी नाशक है। भूख न लगना, मल आरोचक और शूल नाशक है।

कायफल—वात, पित्त, कफ, श्वास, ज्वर, मूत्र सम्बन्धी रोग, बबासीर, वायुनलियों में प्रदाह, गले के रोग, रक्त की कमी, जीर्ण आमातिसार में उपयोगी है।

कपूर—नेत्रों के लिए हितकारी है। अरुचि, पित्त, दाह, तृषा और दुर्गन्धनाशक है।

काकड़ा सिंगी—कृमिनाशक, कफ निस्सारक, श्वास, हिचकी, पेचिश, रक्त व पित्त के विकार, क्षय वमन, प्रदाह, मूर्च्छा, प्यास नाशक है। इसके क्वाथ सेवन से खाँसी का रोग नष्ट हो जाता है।

गुड़मार—मधुमेह नाशक विशेष गुण है। शोथहर, वेदना स्थापक, विषघ्न, हृदयोत्तेजक गर्भोत्तिजक रजोरोध नाशक और अश्मरीहर गुण भी विद्यमान है।

गुडूची—रक्तशोधक, दाह प्रशमक, ज्वर, वमन, वातरक्त, प्रमेह, पान्डुरोग, कामला और श्वेतप्रदर नाशक है।

गुलतुर्रा—आक्षेपहर, वात व्याधिनाशक, त्रिदोषहर, विषहर, गर्भाशय शामक, मासिकधर्म की कमी, शूल और अफारा में भी लाभप्रद है।

गोक्षुर—पथरी, सुजाक, मूत्र की जलन, प्रमेह, शुक्रमेह, नपुंसकता, मूत्राशय की पुरानी सूजन, नाड़ी दुर्बलता, बबासीर, खाँसी तथा गर्भपात नाशक है।

घृतकुमारी—इसके गूदे का लेप करने से पेट की गाँठें जल जाती हैं तथा आँतों में जमा मल बाहर आ जाता है। इसकी पुल्टिस सूजन, दाह और घावों में लाभप्रद है। जले स्थान, अर्बुद, स्तन्यशोथ और अर्श में रामबाण है। गर्भाशय, यकृत, मासिकधर्म के विकार, अन्डवृद्धि और गुल्म नाशक भी है।

गिलोय—कई दिनों तक आने वाला ज्वर, असाध्य एवं ऐसे ज्वर जिनके

कारणों का पता ही न हो, लम्बी वातव्याधि के बाद की कमजोरी, पीलिया, कुष्ठ, एलर्जी, विषाणु जन्य आन्त्र-शोथ, गृहणी, कृमि, यकृत विकार, अम्लपित्त, खाँसी, मधुमेह, हृदय की दुर्बलता, निम्नरक्त चाप और शुक्रहीनता में गुणकारी है।

चालमोगरा—वर्णशोधक, रोपक, रोग जन्तुघ्न, त्वचा कोषों का नवीनीकरण करने वाला, विचर्ची तथा समस्त चर्मरोग अतीव लाभकारी है।

चिरायता—पुराने ज्वर, जीर्ण ज्वर, शरीर में दाह, अपच, दुर्बलता निवारक, लीवर व प्लीहा पर विशेष प्रभावशाली है। कृमिनाशक, कुष्ठनाशक, त्रिदोषनाशक, रक्त विकार, उदर विकार, शोथ एवं ज्वर की दुर्बलता में उपयोगी है।

चित्रक (चीता)—शूल प्रशमक, वात, कफ, शोथ, गुदाशोथ, अर्श, गृहणी कृमि रोग और पान्डु में लाभकारी है।

चोबचीनी—इसका विशेष प्रभाव विसंक्रामक होता है। इसीलिए इसका विशेषकर उपयोग गुप्त रोगों उपदंश दृढ़ चकत्ते भगंदर इत्यादि रोगों में किया जाता है। इसके अतिरिक्त उन्माद और अपस्मार में भी लाभप्रद है।

जमालगोटा—यह विरेचक है। कफ, वात, कृमि, जलोदर और शोथ नाशक है। अफारा, उदर रोग, सिरदर्द, धनुस्तम्भ, उन्माद, खाँसी और आमवात नाशक है। इसके बीजों का तैल तीव्र विरेचक है।

जामुन—भूख रोकता है। वातवर्धक, कफ, पित्त, अफारा, यकृत, प्लीहादोष, नष्ट करके शरीर में नया रक्त उत्पन्न करता है। मसूढ़ों की व्याधियाँ नाशक है। इसकी गुठली मलावरोध और मधुमेह नाशक है। इसकी छाल मलों को शरीर के समस्त स्वाभाविक मार्गों से निकालती है। पित्त, दाह शान्त करने का भी गुण है। इसका सिरका उदर रोगों में अमृत तुल्य है।

जायफल—दीपन, गले के लिए हितकर, कफ, वात, तृष्णा, मुख की दुर्गन्ध, कृमि, खाँसी, वमन, श्वास, ज्वर, पीनस समस्त प्रकार के कुष्ठ रोग, अतिसार, प्रमेह और हृदयरोग नाशक है।

तिलपुष्पी (डिजिटेलिस)—यह अल्प मात्रा में ही स्नायविक अवसादक, हृदयगति सुधारक, ज्वर और शोथ निवारक है। अधिक मात्रा में तीव्र हृदय संकोचक, वमन, विरेचक तथा उग्रविष होने के कारण प्राण संहारक है।

तुलसी—खाँसी, गला बैठना, फेफड़ों की खड़खड़ाहट, हिचकी, श्वास रोग, जुकाम, ज्वर, कब्ज, मोतीझरा, वमन, पाचनशक्ति, अपच, यकृत और प्लीहा के रोग, बबासीर, अतिसार, प्रवाहिका, कृमि रोग, उदर शूल, संग्रहणी, कुष्ठ रोग,

दाद, छाजन, खाज, शिरोशूल, मूत्रकृच्छ, गठिया, धातु दौर्बल्य, प्रदररोग, मासिक धर्म की पीड़ा, सर्पविष, बिच्छू दंश, मुख रोग, दन्त शूल नाशक है। संक्षेप में तुलसी सारे शरीर का शोधन करती है।

थूहर (सेहुन्ड)—कफनाशक, ज्वरघ्न और रक्तशोधक है। यह कफ को पतला करके गुदा से मल द्वारा निकाल देता है। बच्चों का कफ, खाँसी में विशेष लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त पान्डु रोग, उदर-गुल्म, कुष्ठ, शोथ, मधुमेह और उन्माद में उपयोगी है।

दुद्धी—यह दो प्रकार की होती है। यह शुक्रमेह और बलवर्धक है। पुत्रोत्पादक है और अर्श, रतौंधी, सुजाक में लाभप्रद है।

द्रोणपुष्पी—वात, कफ, प्रशमक, कफहर, अग्निमांद्य, कामला ज्वर, खाँसी, पीलिया, प्रदाह, दमा तथा मूत्र सम्बन्धी रोगों में अतिशय लाभकारी है।

धतूरा—उन्माद रोग, कृमि, कर्णस्राव, श्लीपद, श्वासरोग नाशक है। पसीना रोकने के लिए गुणकारी है। चिपचिपा कफ निकाल कर फेफड़ों का खिंचाव, ऐंठन दूर करता है। पागल कुत्ते के विष को शान्त करता है।

धाय (धातकी)—प्रवाहिका, अतिसार और विसर्प है।

नरगिस—नेत्र रोग, चेहरे के रोग, पेट के रोग, पुरुष गुप्त रोग, स्त्रियों के समस्त रोग, चर्मरोग नाशक है। बाजीकारक भी है।

नीम—मधुमेह नाशक, रक्त शोधक, कुष्ठ रोग नाशक, मुख रोग, श्वेत कुष्ठ, विषम ज्वर, कृमिनाशक है। शोथहर, अतिसार, सर्पविष, बिच्छूदंश, उपदंश, रक्तस्राव, पान्डु रोग नाशक है। शीत पित्त व विशूचिका में अमृत समान है। पित्त गिराने में भी लाभप्रद है।

पाषाण भेद—यह मूल विरेचनीय, बस्ति शुद्धिकर, भेदन तथा वातादि तीनों दोष, शूल, मूत्रकृच्छ, हृदयरोग, प्लीहा के रोग, गुल्म, अर्श, योनि रोग, प्रमेह और व्रण नाशक है।

पुनर्नवा—हृदय रोग, शोथहर, श्वास एवं शूलनाशक है। कार्डियक अस्थमा (दमा), नेत्र रोग, अग्निमांद्य, वमन, पीलिया, स्त्रियों के रक्तप्रदर, मूत्र की जलन, मूत्र रोगों से उत्पन्न ज्वर, सर्पविष विरोधी (सफेद पुनर्नव) रसायन, बलवर्धक तथा महिलाओं के लिए पुष्टिकारक है।

बबूल—यह कसैला और गरम है। कफ, खाँसी, आम रक्तातिसार, पित्त, कुष्ठ, कृमि विषनाशक और अर्शनाशक है। स्वप्नदोष में भी लाभप्रद है।

वरुण (वरना)—वात, कफ, प्रशमन, दीपन, मूत्रकृच्छ, गुल्म, वात रक्त कृमिनाशक है। इसकी जड़ का क्वाथ शहद के साथ खिलाने से गन्डमाला और अपक्व विद्रधि का नाश हो जाता है। यह पथरी, बस्तिशूल, सुजाक नाशक है।

बहेड़ा—यह बाल काले करता है। रस, रक्त, मांस, उदर रोग, स्वर-भेद, पित्त के रोग, कृमि व खाँसी नाशक है।

बेल—बच्चों के हरे पीले दस्त, पुरानी पेचिश, संग्रहणी, कब्ज, हैजा, उदर शूल, नेत्र रोग, उन्माद, अनिद्रा और समस्त नाड़ी संस्थान को शक्ति प्रदायक है। कफ, वात प्रकोप शामक है।

ब्राह्मी—अनिद्रा, अपस्मार, स्मृति दौर्बल्य (इसके मालिश करने से मस्तिष्क की निर्बलता दूर होती है) यह बल्य व रसायन है। कुष्ठ रोग, चर्मरोग व क्षय अग्नि क्षीणता, रक्त विकार, सामान्य शोथ, हृदय घात, खाँसी, विभिन्न प्रकार के ज्वरों में अत्यन्त ही लाभप्रद है। सामान्यत: मानसिक रोगों में प्रयुक्त होता है।

भाँग—अग्निमांद्य, अजीर्ण, कामोत्तेजक, कफ, वातनाशक, वृक्कशूल, नपुंसकता, आक्षेप, स्त्रियों का सिरदर्द, हिस्टीरिया, रक्तप्रदर, रज:शूल तथा मानसिक निर्बलता नाशक है। इसके बीज दस्त रोकते हैं। यह हैजा में भी लाभकारी है। पागल कुत्ते के विष को उतारने में भी उपयोगी है।

भांगरा—इसका गुण रसायन है। यह कफ, वातहर, चर्म और दाँतों के लिए हितकर, कृमि, श्वास, कासशोथ हर, पान्डु, कुष्ठ, नेत्र और शिरोरोग में लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त कंठमाला, बालकों का श्वास-प्रकोप, चक्कर आना आदि में भी उपयोगी है।

मोथा (मस्तक)— यह त्रिदोषज ज्वर, ज्वरातिसार, अतिसार, ग्रहणी, अर्श, अग्निमांद्य, कृमिरोग, पान्डु, कामलाओं, रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, कास-श्वास, तृष्णा वातरक्त, आमवात में शूल रोग और प्रमेह आदि रोगों में अतिशय लाभकारी है।

रास्ना—स्वेद ग्रन्थियों को उत्तेजित करके पसीना लाता है। यह सर्वांग शोथ तथा जोड़ों में जमा कफ को निकालकर नष्ट कर देता है। गठियावात में लाभप्रद है। श्वसन संस्थान शुद्ध करके फुफ्फुस-शोथ दूर करता है।

रेवन्द चीनी—यह आन्तरिक प्रयोग से फेफड़ों से कफ निहरण अल्प परिमाण से खिलाने पर आन्त्र व आमाशय को शक्ति देती है। वायु का उत्सर्ग करती है। बाहरी प्रयोग से वेदना संस्थापक है।

लजालू (छुईमुई)—शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, अनियमित आर्तव, रक्त-प्रदर, योनि-भ्रंश, प्लेग आदि में लाभकारी है।

शंखपुष्पी—स्मरण-शक्ति की कमी, प्रलाप, ज्वर नाशक है तथा मस्तिष्क को शक्ति देता है । उन्माद, अपस्मार, शय्यामूत्र मनोविकार, उच्च रक्तचाप, कफवात शामक, चर्मरोग, केशवृद्धि, पाचक पेट में गर्भविष को निकालने में पेटदर्द, रक्तवमन, खांसी, गर्भाशय की दुर्बलता, ज्वर, दाह, मूत्र की जलन इत्यादि में रामबाण, बल्य व रसायन है ।

शतावरी—गर्भाशय, रक्तप्रदर, स्तन्य क्षय, स्तन्यवृद्धि, दूध की मात्रा बढ़ाने में उपयोगी है । क्षयरोग की दुर्बलता, दृष्टि मन्दता, स्वप्नदोष, अनिद्रा, शिरोमूल, वात-व्याधि, मृगी, हिस्टीरिया, मूर्च्छा, रक्तचाप, अम्लपित्त नाशक रसायन है ।

शोहतरा—पसीना लाकर दाह को शान्त करता है । तृष्णा का क्षार शमन होता है । मूत्र विरेचक है । श्वासनलिका के स्थान पर लेप किया जाता है । यकृत प्लीहा के रोगों में भी उपयोग होता है ।

सनाय—आन्त्र की आंकुचनी क्रिया को बढ़ाता है । पाचन क्रिया ठीक होकर बिबन्ध को दूर करके उदर विकार तथा मन्दाग्नि में लाभप्रद है । जलोदर नाशक और मस्तिष्क पीड़ाहर है । मूढ़ गर्भ पर भी प्रयोग किया जाता है ।

सत्यानाशी—यह अफीम से भी अधिक मादक है । पेट के मरोड़, श्वास, आमाशय और आन्त्र का शूल, चर्मरोग, खाज, खुजली, कृमि, कुष्ठ, मूत्रल, शोथहर है । उपदंश में भी लाभकारी है ।

सरपंखा—पित्त निःसारक, कफघ्न, विषहर क्रिया के प्रभाव से यकृत और प्लीहा के जमाव दूर होकर इसकी वृद्धि नष्ट होती है । मूत्रल तथा स्वेदजनक गुणों के कारण ज्वरदोष दूर हो जाते हैं । विषम ज्वर में भी लाभप्रद है । गुल्म, खाँसी, रक्तातिसार तथा कष्ट में भी लाभकारी है ।

सर्पगन्धा—उन्माद, अपस्मार, उच्च रक्तचाप, मस्तिष्क की उष्णता, वायुविकार, हिस्टीरिया नाशक है । गर्मी निकालती है । मूत्र साफ लाती है ।

हरड़—बुद्धि, आयु, उदराग्नि बर्धक, नेत्रों के लिए हितकारी, वायु शान्त करने वाली, हिचकी, व्रण, श्वास, कास, प्रमेह, बबासीर, शोथ, पथरी, स्वरभंग, कृमि, विबन्ध (मलावरोध) विषमज्वर, गुल्म, यकृत, प्लीहा व मूत्र सम्बन्धी रोग नाशक है ।

हरमल—बाजीकर, उदर कृमि नाशक, अपस्मार, श्वास कास, मस्तिष्क व्याधियाँ, उन्माद, गृधसी, कान का दर्द, दन्त शूल में लाभप्रद है ।

नकछिलनी—यह लता रक्तशोधक है । चर्मरोगों हेतु अमृत तुल्य है । मेदा

व आँतों के लिए बलदायक है । संग्रहणी, खूनी दस्तों को मिटाती है । गुदा, मूत्र के रोग तथा शुक्र व्याधियों में लाभकारी है । मधुमेह में इसको घोटकर पिलाया जाता है । आँखों के रोगों में भी लाभप्रद है ।

सहजना—आमाशय की रक्ताभिसरण क्रिया बढ़ाकर अग्निमांद्य दूर करता है । वायु को अनुमोलन कर गुल्म शूल को नष्ट करता है । रक्त के श्वेत कणों की वृद्धि करता है । अन्तर विद्रधि ठीक करता है । यकृत, प्लीहा, अनाह तथा आध्मान नाशक है ।

सूरजमुखी—स्त्री प्रजनन अंगों पर उत्तेजक तथा स्रावबाधक प्रभाव डालकर योनिशूल और गर्भ के कष्टों को दूर करता है ।

पीपल—कीटाणु नाशक है । प्लीहा वृद्धि, आमवात, कटिवात, ग्रहणी और रक्तातिसार में लाभप्रद है ।

नारंगी—सूखी खाँसी, श्वास रोग, हिचकी, शोथनाशक है । फेफड़ों की सूजन, प्रतिश्याय, अग्निमांद्य, वायु विकार, रक्त विकार में श्रेष्ठ है ।

यष्टिमधु—वमन नाशक, तृष्णाहर, वातपित्त शामक, आमाशय के व्रण, पेट की जलन, कास-श्वास, दमा, फेफड़ों के रोग, रक्त पित्त, अम्ल पित्त, यकृत की निर्बलता, पीलिया, पाचन संस्थान के रोग, बालों के रोग, इन्द्रिय दुर्बलता, बबासीर, हृदयरोग, प्रमेह, कुष्ठ चर्म रोगों में लाभप्रद है ।

निर्गुन्डी—सिरदर्द, सूजन, मांसपेशियों में झटका लगने से आयी सूजन, टेटनस, मुँह के छाले, गठिया, मूत्राघात, स्वप्नदोष, कुष्ठ में लाभप्रद है ।

करेला—यह दो प्रकार का होता है—छोटा और बड़ा । छोटे करेले को करैली भी कहते हैं । यह लघु, रूक्ष, तिक्त, विपाक में कटु तथा उष्ण वीर्य है। यह रुचिकर, दीपक, पाचक, पित्तसारक, मूत्रल, मृदुसारक, त्रिदोषनाशक, रक्तशोधक, शोथनाशक, व्रण शोधक, रोपण, दाह प्रशमक तथा नेत्रों को हितकारी है । वेदना स्थापक, आर्त्तव जनन, स्तन्य शोधक, मेद, गुल्म, प्लीहाशूल और कुष्ठ नाशक है । ज्वरपित्त, कफ, रक्त विकार, पान्डु रोग प्रमेह और कृमिनाशक है । तिक्त होते हुए भी साग बनाकर खाने में यह रुचिकारक हो जाता है ।

विविधा

प्रिय पाठकों ! अभी आपने उपर्युक्त 140 खाद्य-पदार्थ (खाद्यात्र) मसाले एवं जड़ी बूटियों के संक्षिप्त गुण-धर्म एवं रोगोपचार हेतु प्रयोग संकेतों को पढ़ा,

अब इन्हीं के द्वारा ''विविधा'' में विभिन्न रोगों के उपचार हेतु सरल, सुगम और अवश्य लाभप्रद तुरन्त फलदायी योगों को पढ़कर लाभ उठाइये—

करेला

● नित्यप्रति डेढ़ से दो तोला तक ताजे करेलों का रस पीते रहने से अथवा करेलों का छाया-शुष्क टुकड़ों का महीन चूर्ण 3 से 6 ग्राम तक ताजा जल से सेवन करने से मूत्र में शर्करा आना, मधुमेह रोग (डायबिटीज) धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है। गुड़मार के चूर्ण को करेला के रस की सात भावनाएं देकर सुखाकर सुरक्षित रखलें। प्रत:सायं 3 से 6 ग्राम की मात्रा में इसे सेवन करने से डेढ़ या दो माह में मधुमेह रोग नष्ट हो जाता है।

● दो तोला करेला का रस, 1 तोला ताजे आँवला का रस या 6 माशा आँवला का चूर्ण या कच्ची हल्दी का रस या हरी गिलोय 1 तोला मिलाकर नित्य सुबह-शाम सेवन करने से प्रमेह रोग नष्ट हो जाता है।

● दो तोला करेला के रस में 1 माशा कलमी शोरा मिलाकर पीने से तथा इसी रस में कपड़े की पट्टी भिगोकर पेडू पर रखने से मूत्राघात और मूत्रकृच्छ रोग में लाभ हो जाता है।

● यदि किसी भी कारण से मूत्र के साथ रक्तस्राव होता हो तो 1 छोटा करेला पीसकर उसका रस निकालकर प्रतिदिन दोपहर में तीन दिन पीने से मूत्र के साथ रक्त आना बन्द हो जाता है।

● पाँच तोला करेले के रस में 1-2 माशा यवक्षार अथवा कलमी शोरा मिलाकर पीते रहने से कुछ ही दिनों में साधारण पथरी विखण्डित होकर मूत्रमार्ग से निकल जाती है।

● ढाई से 3 तोला तक नित्य 8-10 दिन तक करेला के रस से सेवन करने से (पहले तो 2-4 दस्त होंगे फिर) पान्डु रोग नष्ट हो जाएगा। अथवा 6 माशे कुटकी का चूर्ण दो या ढाई तोला करेला के रस के साथ कुछ दिनों तक सेवन करने से पान्डुरोग अवश्य नष्ट हो जाता है।

● करेला के दो-ढाई तोला रस में 1 तोला नीबू का रस मिलाकर प्रतिदिन प्रात:काल कुछ दिनों तक सेवन करने से प्लीहा-वृद्धि दूर हो जाती है।

● करेले का रस दो-ढाई तोला नीबू का रस 1 तोला, लहसुन का रस 6 माशा मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से वायु गुल्म ठीक हो जाता है।

● करेला रस 5 तोला, मूली का रस 10 तोला, पालक का रस 10 तोला सभी को मिलाकर दिन में 3 बार अथवा करेले के 1 तोला रस में आँवले का रस अथवा चूर्ण 6 माशा मिलाकर सेवन करने से अम्लपित्त दूर हो जाता है।

● करेला 1 अदद, पीपल के हरे पत्ते 10 नग को बारीक पीस छानकर आधा पाव जल के साथ नित्य सबेरे सेवन करने से मात्र 1 सप्ताह में खूनी बवासीर ठीक हो जाती है।

● करेला का दो या ढाई तोल रस पीने से या करेला का रस और नीम की पत्तियाँ पीसकर पीने से अथवा करेला के रस में 6 माशा की मात्रा में लहसुन का रस मिलाकर अथवा करेला के रस में 3-4 माशा वायविडंग का चूर्ण डालकर पीने से उदर कृमि मरकर मल के साथ निकल जाते हैं।

● 6 माशा से 1 तोला तक करेला का रस पिलाने से तथा इसका रस ऊँगली से उसकी गुदा पर लगाने से बच्चा रोगमुक्त हो जाता है।

● करेला का रस 1 तोला, नीम की छाल या पत्तियां का रस 6 माशा, तुलसी की पत्तियों का रस 3 माशा तथा काली मिर्च का चूर्ण 1 माशा मिलाकर सुबह-शाम पिलाने से हर प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है।

● करंज की पत्तियों और करेला का रस 1-1 तोला, काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन सुबह-शाम सेवन करने से 2-4 दिनों में ही मलेरिया ज्वर नष्ट हो जाता है।

● करेला के रस दो या ढाई तोला को 300 ग्राम पानी में 50-60 ग्राम मिश्री मिलाकर कई बार पिलाने से (ज्वर, पित्त विकार, अधिक समय तक धूप या आग के समीप रहने अथवा अन्य किसी कारण से शरीर में भीतर या बाहर दाह जलन शान्त हो जाती है। दाह पीड़ित अंगों पर करेला का रस लगाना भी लाभकारी है।

● रात्रि जागरण अथवा गर्मी के कारण होने वाले सिर दर्द में ताजा करेला पीसकर कनपटी और मस्तक पर मोटा लेप करने से दर्द शान्त हो जाता है।

● सूर्योदय से पूर्व करेला के रस में सैंधा नमक और नौसादर मिलाकर नस्य लेने से 2-3 दिन में ही आधासीसी का दर्द नष्ट हो जाता है।

● 5 तोला करेला के रस में ढाई से 5 तोला तक गौमूत्र मिलाकर पीने से हर प्रकार की सूजन नष्ट हो जाती है अथवा करेला का रस 5 तोला मकोय की पत्तियों का रस 1 तोला मिलाकर नित्य सुबह-शाम पीने से हर प्रकार की सूजन

(शोथ) नष्ट हो जाती है । उपर्युक्त प्रयोग से पूर्व यदि 4-6 रत्ती मन्डूर भस्म शहद से चाट ली जाए तो यही योग सोने पर सुहागा हो जाता है । करेला के रस में 1-2 माशा सौंठ का चूर्ण मिलाकर पीने से भी सूजन नष्ट होती है । करेला और मकोय की पत्तियाँ पीसकर उसमें सौंठ का चूर्ण मिलाकर सूजन वाले अंग पर लेप करने से भी सूजन मिट जाती है ।

● करेला को पीसकर थोड़ा गरम करके गठिया की सूजन पर लेप करना अत्यन्त लाभप्रद है । इसके रस में राई का तैल मिलाकर मालिश करना भी गठिया में उपयोगी है । कड़वे तैल में करैला का रस और लहसुन (कुचलकर) पकाकर मालिश करने से भी गठिया वात की पीड़ा दूर हो जाती है ।

● मासिकधर्म में रक्त कम आने या मासिकधर्म बन्द हो जाने में करेला का रस दो से ढाई तोला तक पीना और इसकी सब्जी अधिक मात्रा में खाना लाभकारी है।

● सूखे करेलों को पीसकर सिरका में मिलाकर गरम करके लेप करने से गले की सूजन मिट जाती है।

● करेले के रस से कुल्ला करने से मुख के छाले ठीक हो जाते हैं।

● ताजे करेलों का 1-2 तोला नित्य रस पीने से रक्त शुद्ध हो जाता है ।

● कैसा भी पका और दूषित घाव हो, उसको सुबह-शाम नीम की पत्तियों के क्वाथ से धोकर फिर सुखाकर उस पर करेला पीसकर लगाते रहने से घाव में मवाद नहीं पड़ता है और घाव शीघ्र भर जाता है ।

● गर्मी के कारण गर्मी की ऋतु में निकलने घुमौरियों में करेला का रस डेढ़ तोला तक पीना लाभकारी है।

● दो से ढाई तोला करेले के रस में 4-6 रत्ती फिटकरी का चूर्ण मिलाकर स्वच्छ कपड़े से छानकर शीशी में सुरक्षित रखलें । दिन में 3-4 बार इसे 2-2 बूँद आँखों में डालने से नेत्रों की जलन, लाली ये विकार दूर हो जाते हैं ।

अजवायन

● अजवायन को सफेद प्याज के रस में 3 बार भिगो-सुखाकर सुरक्षित रखलें। यह 10 ग्राम अजवायन, इतना ही घी और 20 ग्राम शक्कर के साथ 21 दिन तक प्रयोग करें । यह योग अत्यन्त वीर्यवर्धक एवं बाजीकारक है ।

● अजवायन का महीन चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में नित्य सुबह-शाम गरम दूध के साथ सेवन करने से रुका हुआ मासिक धर्म खुलकर होता है । योनि की खुजली में इसका फव्वारा देना अतीव गुणकारी है ।

● अजवायन को हल्के गरम पानी में पीसकर दिन में 2 बार सुखोष्ण लेप लगाने से दाद, खाज, खुजली, कीड़ों वाले घाव, जले हुए जख्म ठीक हो जाते हैं । अजवायन को उबलते हुए जल में मिलाकर घावों को धोने, खुजली, खाज, दाद, फुन्सी, गीली खाज इत्यादि चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं । अग्नि पर अजवायन को डाल कर उसकी धूनी लगाने से भी खुजली नष्ट हो जाती है ।

● यदि शरीर के किसी स्थान पर रक्त जम जाए (गुठली सी बन जाए) तो पिसी हुई अजवायन शहद में मिलाकर लेप लगाने से रक्त पिघल जाता है । यदि आँख में रक्त जम जाए तो इसका पानी आँख में टपकाने से रक्त पिघल जाता है।

● 10 ग्राम अजवायन को 100 ग्राम पानी में पकाकर प्रत्येक 3 घंटे के अन्तराल से 15-15 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से मात्र 24 घंटे में इन्फ्लुऐंजा बुखार से छुटकारा मिल जाता है ।

● सन्धिवात या आमवात की पीड़ा में अजवायन के तैल की मालिश करना अतीव गुणकारी है । यदि सन्धि स्थान पर जकड़न हो तो अजवायन की पुल्टिस बाँधना लाभप्रद है ।

● देसी अजवायन 10 ग्राम, काला नमक 3 ग्राम, हींग 2 मि.ग्रा. सभी को बारीक पीसकर रखलें । आवश्यकतानुसार 4 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक गरम पानी से सेवन करने से आमाशय का दर्द शान्त होकर भूख चमक उठती है ।

● बिच्छू दंश स्थान पर अजवायन का लेप लगाना लाभप्रद है ।

● अजवायन को तिलों के तैल में पकाकर हल्का गुनगुना ही कान में टपकाने से कान दर्द मिट जाता है और यदि कान में फुन्सी हो तो इस प्रयोग से पककर फट जाती है ।

● 20 ग्राम अजवायन चूर्ण को 25 ग्राम दही में मिलाकर रात्रि को मुख पर लेपकर प्रातःकाल गरम पानी से धो डालने से (मात्र 1 सप्ताह में) झाँई, कील, मुँहासे नष्ट होकर मुख (चेहरे) पर 1 विशेष प्रकार का निखार आ जाता है ।

● बछड़े के मूत्र में भिगोकर शुष्क की हुई अजबायन को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सेवन करते रहने से जलोदर रोग ठीक हो जाता है ।

● सर्दी, जुकाम, प्रारम्भ होते ही एक साफ व महीन वस्त्र या रूमाल में 1 या डेढ़ तोला साफ स्वच्छ अजवायन की ढीली सी पोटली बांधकर सूँघने से जुकाम का पानी बहकर, नया पानी बनना रुक जाता है । खाँसी, ज्वर नहीं हो पाता है यदि खाँसी आ रही हो, कफ भी गिरता हो तो सत अजवायन और शहद व घी

(असामान्य मात्रा में) मिलाकर चाटें अथवा 1 ग्राम साफ अजवायन रात्रि को सोते समय पान में रखकर खायें। अतीव लाभकारी है।

●भोजनोपरान्त होने वाली छाती की जलन में अजवायन 1ग्राम और बादाम की भीगी हुई मींगी को चबा-चबाकर अथवा कूट पीसकर खाना अत्यन्त लाभप्रद है।

●प्रसवोपरान्त गुड़ और अजवायन मिलाकर नित्य प्रातःसायं सेवन करने से प्रसूता स्त्री का कटिशूल दूर होता है, वायु शान्त होती है, गर्भाशय शुद्ध हो जाता है। भूख बढ़ जाती है तथा कमजोरी नष्ट होकर शरीर बलवान हो जाता है।

●अजवायन 50 ग्राम, कलौंजी 25 ग्राम को कूट पीसकर 3-3 ग्राम दही में मिलाकर प्रातःकाल तदुपरान्त 6 घंटे बाद प्रतिदिन 2 मात्राऐं) सेवन करते रहने से मात्र 2-3 दिन में ही पेचिश ठीक हो जाती है।

●अजवायन 50 ग्राम, मिश्री 75 ग्राम पीसकर सुरक्षित रखलें। इसे 5-5 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करने से मूत्र की रूकावट दूर होकर मूत्र खुलकर आने लगता है।

●अजवायन चूर्ण 2 ग्राम में 2-3 ग्राम गुड़ मिलाकर प्रातःसायं सेवन करने से पित्ती उछलना रुक जाता है।

●कुछ दिनों तक नियमित रूप से अजवायन की फंकी लगाकर ताजा पानी पीने से मूत्राशय की पथरी गलकर बाहर निकल जाती है।

●प्रसवोपरान्त का मन्द ज्वर, हाथ-पैरों की जलन, उदरशूल, मन्दाग्नि, नजला, जुकाम, खाँसी, पेट में तनाव, सूजन, रक्त या धातु पदार्थ का मूत्रमार्ग से निकलना इत्यादि लक्षण होने पर अजवायन डालकर जलाये हुए सरसों के तैल की मालिश करना लाभप्रद है। इसका काढ़ा पीना तथा हरीरा खाना भी लाभकारी है।

●पिसी हुई अजवायन मट्ठा के साथ कुछ दिनों तक नियमित रूप से बच्चे को सेवन कराने से उसके पेट के समस्त कीड़े निकल जाते हैं।

●अजवायन खिलाते ही हृदय में होने वाला दर्द शान्त हो जाता है।

●अजवायन पीसकर माँ के दूध से शिशुओं को चटाने से कै, दस्त तुरन्त उसी क्षण रुक जाते हैं।

●मासिकधर्म के प्रारम्भ से नित्य 8 दिन तक अजवायन और मिश्री 25-25 ग्राम को 125 ग्राम पानी में रात्रि को मिट्टी के बर्तन में भिगोकर प्रातःकाल ठण्डाई की भाँति पीसकर पीने से तथा पंथ्य में बिना नमक की मूँग की दाल और रोटी खाने से अवश्य ही बाँझपन दूर होकर गर्भ धारण हो जाता है।

●25 ग्राम अजवायन को 125 ग्राम पानी में रात्रि में भिगोकर प्रातःकाल ठण्डाई की तरह पीसकर सेवन करने से स्त्रियों का रक्तप्रदर रोग भी नष्ट हो जाता है।

●चार पोटलियों में अजवायन बाँधकर चारपाई के चारों पायों में बाँध देने से खटमल और अजवायन (पिसी हुई) सरसों के तैल में मिलाकर उसमें गत्ते के टुकड़ों को तर करके कमरे के चारों कोनों में लटका देने से मच्छर भाग जाते हैं।

●50 ग्राम देसी अजवायन को तवे पर भूनकर 50 ग्राम शहद मिलाकर सुरक्षित रखलें। बच्चों को 1-1 ग्राम सुबह-शाम खिलाने से काली खाँसी नष्ट हो जाती है। यह योग दमा में भी लाभकारी है।

●देसी अजवायन, दालचीनी, काली मिर्च सभी समभाग लेकर (साफ करके) सुरमें की भाँति बारीक पीसकर कपड़छन कर सुबह-दोपहर शाम 1-1 सलाई से आँखों में लगाने से रतौंधी अवश्य ही दूर हो जाती है।

●अजवायन का हरीरा प्रसूता स्त्री को अमृत समान लाभकारी होता है। पिसी हुई अजवायन 6 ग्राम, 2 नग बादाम की छिली और पिसी हुई गिरियों की पीठी तथा 9 दानें काली मिर्च का बारीक चूर्ण 1 वर्ष पुराना घी और गुड़ 10-10 ग्राम तथा बकरी या गाय का दूध 250 ग्राम सभी को मिलाकर आग पर इतना पकायें कि 5-6 बार उफान आ जाए। तदुपरान्त उतारकर ठण्डा करके प्रसूता स्त्री को यह हरीरा सेवन करायें। इसे 1 पखवाड़े अथवा 1 माह तक निरन्तर सेवन से प्रसूत सम्बन्धी समस्त विकार मिटकर प्रसूता को नवजीवन और अपार शक्ति प्राप्त हो जाएगी। प्रसूति कक्ष में अजवायन की धूनी देना भी लाभप्रद है।

●अजवायन 1 चम्मच, काला नमक चौथाई चम्मच लें। दोनों को पीस व मिलाकर छाछ में मिलाकर सेवन कराने से वायुगोला का दर्द दूर हो जाता है।

●अजवायन चूर्ण 2 से 4 रत्ती तक नित्य माता के दूध से शिशु को सेवन कराने से कै, दस्त, कृमि विकार प्रथम दिन से ही शान्त होने लगते हैं और 10 दिन में बच्चा पूर्णतया ठीक हो जाता है। बड़े बच्चों को अजवायन चूर्ण 1 से 3 माशा तक समभाग शक्कर के साथ ताजे जल से सेवन कराने से कै, दस्त और कृमि रोग मिट जाते हैं।

अदरक, सौंठ

●अदरक को ही सुखाकर सौंठ बनाई जाती है। अदरक मलभेदक, भारी, तीक्ष्ण, गरम, उदराग्नि वर्धक, चरपरी, पाक में मधुर वात व कफ को नष्ट करने

वाली है । सौंठ हाजमा बर्धक है । वायु विकार नष्टकर के अरुचि दूर करती है। उदर रोग नाशक है । पीलिया और संग्रहणी में भी लाभकारी है ।

● सौंठ के साथ नमक, काली मिर्च पीसकर मट्ठे में मिलाकर पीने से आँव, दस्त, मरोड़ दूर होकर खाने में रुचि बढ़ती जाती है ।

● पिसी सौंठ 1 ग्राम खिलाकर बकरी का दूध पिलाने से गर्भवती स्त्री का विषम ज्वर नष्ट हो जाता है ।

● अदरक के रस की 2-2 बूँदें 2-2 घंटे पर नाक में डालने से आधे सिर का दर्द मिट जाता है । साधारण सिरदर्द में अदरक या सौंठ को पीसकर मस्तक पर लेप लगाना भी लाभकारी है ।

● 30 ग्राम सौंठ को 500 ग्राम पानी में आधा घन्टा तक खूब औटाने के बाद 30 ग्राम की मात्रा में पिलाने से अफारा और उदरशूल शान्त हो जाता है।

● अदरक का रस घी में मिलाकर पीने से कमर, जाँघ, पीठ का दर्द, गुल्म शूलादि नष्ट हो जाते है ।

● अदरक का रस 10 ग्राम, पुराना गुड़ 20 ग्राम मिलाकर नित्य सुबह-शाम गरम जल से सेवन करने से वायु-कफजनित सूजन में लाभ हो जाता है ।

● अदरक के रस में पुराना गुड़ मिलाकर पीने से शीत पित्त (छपाकी या पित्ती) तथा बदहज्मी दूर हो जाती है ।

● दाँत या मसूढ़े के दर्द में सौंठ का छोटा टुकड़ा उसी जगह दबाकर रखने से चैन मिल जाता है ।

● शहद के साथ सौंठ का चूर्ण चाटने से दमा और ब्रोंकाइटिस रोग में आराम मिलता है ।

● अदरक का रस न्यूमोनिया में छाती पर मलना लाभप्रद है ।

● अदरक के रस 250 ग्राम को 150 ग्राम तिल के तैल में मिलाकर गरम करें। जब तैल मात्र शेष रह जाए तब शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें । इसकी मालिश से गठिया और पेट का दर्द ठीक हो जाता है ।

नोट—जिन लोगों को गरम चीजों से हानि होती हो, वे अदरक का प्रयोग कदापि न करें। खुजली के रोगी, वृक्कों के रोग से पीड़ित रोगी, हाईपर एसिडिटी और मूत्र रुकावट के रोगियों को तथा ज्येष्ठ और क्वार माह में सामान्य व्यक्तियों को भी अदरक का प्रयोग हानिकारक होता है । इसके अतिरिक्त सेवन से हाजमा खराब होना, छाती जलने लगना, पित्त की अधिकता, मूत्र जलकर तथा लाल रंग का आना, रक्त में गर्मी उत्पन्न होकर विभिन्न प्रकार के रोग पैदा हो जाना आदि शिकायतें पैदा हो जाती हैं । कुष्ठ, पान्डु रोग, कृच्छ, रक्त पित्त, घाव, ज्वर दाह रोगों से ग्रसित रोगियों को अदरक का सेवन हानिकारक है ।

● अदरक का रस गुनगुना करके कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है । अदरक का रस 1 तोला, लहसुन का रस 1 तोला और प्याज का रस तथा शक्कर 1-1 तोला लें । सभी को मिलाकर 2-3 घंटे के अन्तर से हैजे के रोगी को सेवन कराना अतीव गुणकारी है ।

● अदरक रस 1 तोला, नीबू का आधा तोला, सौंचर नमक 1 माशा को मिलाकर पीने से भयंकर से भयंकर अजीर्ण शान्त हो जाता है । नित्य भोजनोपरान्त इसके सेवन से अजीर्ण कभी नहीं होता है ।

● अदरक की 4 अंगलु लम्बी गाँठ को आग में भूनकर सैंधा नमक के साथ कुतर-कुतर कर थोड़ा-थोड़ा दाँतों से कुचलकर नित्य प्रातः खाली पेट सेवन करने से मन्दाग्नि नष्ट होकर भूख चमक उठती है ।

● अदरक का रस और शहद 1-1 तोला मिलाकर दिन में 2 बार पीना दमा और खाँसी में गुणकारी है । बन्द गला खुल जाता है, जुकाम में भी लाभप्रद है।

● अदरक और प्याज का रस 2 चम्मच पिलाने से उल्टी बन्द हो जाती है।

● 3 माशा सौंठ प्रतिदिन 1 बार 4 दिन तक खाने से मसूढ़ों का फूलना और दाँत के दर्द में लाभकारी है ।

● सौंठ और अजवायन 2-2 तोला में नीबू का रस (इतना डालें कि यह सब भली प्रकार भीग जाए) तदुपरान्त छाया में सुखाकर बारीक पीसकर सुरक्षित रखलें । इस चूर्ण को भोजनोपरान्त थोड़ा-थोड़ा खाने से पेट दर्द मिटता है, गन्दी डकारें आना बन्द हो जाती है । खाना पचता है, मैदे को शक्ति प्राप्त होती है।

● सौंठ, सौंफ, घी में भुनी हरड़ 10-10 ग्राम एवं सिता 30 ग्राम का चूर्ण कर 3 ग्राम की मात्रा में दिन में 4 बार सेवन करने से आमातिसार, रक्तातिसार अवश्य ही मिट जाता है ।

● अदरक में छेद करके उसमें 1 रत्ती हींग भरकर कपड़े में लपेट कर भून लें । भुन जाने पर इसे निकालकर पीसकर मटर के आकार की गोलियाँ बनालें। दिन भर में 1-1 करके 8 गोलियाँ तक चूसने से स्वरभंग ठीक हो जाता है ।

● सौंठ 5 रत्ती, अजवायन 3 रत्ती, छोटी इलायची चूर्ण 15 रत्ती सभी को मिलाकर भोजनोपरान्त सेवन करने से अफारा और अजीर्ण नष्ट हो जाते हैं ।

● सौंठ और हरड़ का चूर्ण सेवन करना दमा में लाभकारी है ।

● सौंठ का काढ़ा पीते रहने से फीलपाँव धीरे-धीरे ठीक हो जाता है ।

● अदरक 3 माशा, काली मिर्च 5 नग, मिश्री 6 माशा को 3 छटाँक पानी में उबालें । चौथाई जल शेष रहने पर छानकर पीने से प्रतिश्याय में लाभ होता है।

●अदरक स्वरस में 1-2 वर्ष पुराना घृत और कर्पूर मिलाकर गरम करें। निमोनिया में इसे छाती पर लेप करना लाभप्रद है।

●अदरक को जलाकर इसकी राख को महीन पीसकर नेत्रों में लगाने से जाला कट जाता है तथा नेत्र स्राव में भी लाभकारी है।

●अदरक सेवन करने से वात प्रकोप दूर होता है तथा भांग का नशा शीघ्र ही कम हो जाता है।

●सन्निपात की दशा में जब शरीर ठण्डा पड़ जाए तब अदरक के रस में लहसुन का रस मिलाकर शरीर पर मालिश करने से शरीर गरम हो जाता है।

●अदरक रस में मिश्री मिलाकर सुबह-शाम पीने से बहुमूत्र रोग मिटता है।

●अदरक के रस में सैंधानमक या हींग मिलाकर मालिश करने से सिरदर्द और सन्धिशूल नष्ट हो जाता है।

●अदरक व अनार का 6-6 माशा रस मिलाकर पीना अम्लपित्त नाशक है।

●सौंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, काला नमक, जीरा और भुनी हुई हींग सभी सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 2-2 माशा की मात्रा में गरम पानी या नीबू के रस से सेवन करने से वायु खुलकर निकलती है। उदरशूल और हृदयशूल मिट जाती है। आध्मान नाशक योग है।

●सौंठ को बकरी के दूध में पीस छानकर नस्य देने से मस्तक शूल नष्ट हो जाता है।

●सौंठ और गिलोय का काढ़ा सेवन करने से पुराने से पुराना आमवात नष्ट हो जाता है।

●बकरी के गरम दूध से सौंठ चूर्ण खाने से हिचकी आना बन्द हो जाती है।

●5 तोला सौंठ को जौ कुटकर 40 तोला जल में पकायें। जब 10 तोला जल शेष रहे, तब उतार छानकर उनकी 3 मात्रायें बनाकर दिन भर में (सुबह, दोपहर, शाम) सेवन करने से अरुचि, अग्निमांद्य, पीनस, प्रतिश्याय, श्वास, कास, उदर रोग और जलदोष नष्ट होकर चित्त प्रसन्नता से खिल उठता है।

●सौंठ का चूर्ण घी में पकाकर उसमें बताशा मिलाकर चटाने से बच्चों का दूध डालना बन्द हो जाता है। प्रौढ़ लोगों की भी कै, उल्टी होना रुक जाती है।

●सौंठ, छोटी पीपल, बड़ी हर्र की बकली सभी सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर (2 माशा की मात्रा में) गुड़ में मिलाकर सेवन करने से अजीर्ण, अर्श, मलावरोध नष्ट हो जाता है।

●सौंठ को पानी में पीसकर किंचित उष्ण कर यकृत स्थान पर लगाने से यकृतशोथ नष्ट हो जाता है।

●अदरक या सौंठ को कूटकर 6 माशा की मात्रा में गरम पानी या दूध अथवा चाय से निरन्तर सेवन करना पक्षाघात में लाभप्रद है।

●शरीर का कोई अंग सुन्न हो जाए, तब अदरक का चूर्ण का सेवन करना लाभकारी है।

●शरीर का कोई अंग फड़कने लगे तो सौंठ 5 माशा शहद से चाटें।

●उदर में गैस होने पर सौंठ 5 माशा गरम पानी से सेवन करें।

●अदरक को कूटकर कुछ बूंदें आँख में डालें। रतौंधी नष्ट हो जाती है।

●मर्दाना कमजोरी में 5 माशा सौंठ को गरम दूध से सेवन करना गुणकारी है।

●सौंठ का मुरब्बा खाने से बाजीकरण शक्ति बढ़ती है।

●अदरक का रस, शहद, नमक समभाग मिलाकर रुई का फोहा भिगोकर कान में रखने से बहरापन नष्ट हो जाता है।

●अण्डकोष, वीर्य प्रणाली की शोथ पर 1 तोला सौंठ 5 तोला शराब में पीसकर लेप बनाकर पेडू पर लेप करना अतीव गुणकारी है।

अमचूर

●अमचूर को पानी में पीसकर (यदि शरीर पर कहीं मकड़ी मल गई हो तो) लेप करने से भी आराम हो जाता है।

●अमचूर और लहसुन समान मात्रा में पीसकर बिच्छू दंश के स्थान पर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

●शीतकाल में पैरों की बिवाई फटने पर आमों की चटनी अथवा अमचूर का लेप करना अत्यधिक लाभप्रद है।

●अमचूर को भिगोकर इसमें शहद मिलाकर शिशुओं को नित्य प्रति दो बार चटाने से सूखा रोग नष्ट हो जाता है।

अनार

यह एक सुप्रसिद्ध स्वादिष्ट, रसीला फल है। यह स्वादुनुसार तीन प्रकार का होता है—1. खट्टा, 2. मीठा, 3. खट्टा-मीठा। खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना ही अनारदाना कहलाता है। खट्टा अनार गुण में मीठे अनार से अधिक ताकतवर

होता है । यह पित्तकारी और वात-कफ नाशक होता है । यह छाती की जलन, आमाशय की गर्मी और यकृत की गर्मी का प्रशमन करता है। ज्वरातिसार और वमन में लाभप्रद है । पीलिया और सूखी खुजली में लाभप्रद है । खुमार और गर्मी की मूर्च्छा में भी लाभप्रद है। अनारदाना कब्जमारक, आमाशय को पुष्ट करने वाला और भूख बढ़ाने वाला क्षुधाकारक होता है। इसके सेवन से दाँत स्वस्थ रहते हैं । हिचकी नाशक गुण भी इसमें होता है । अनारदाना बतौर मसाला भी प्रयोग किया जाता है ।

● अनारदाना 50 ग्राम, सौंठ, जीरा सफेद, काला नमक प्रत्येक 10-10 ग्राम को कूटपीसकर चूर्ण बनालें। भोजनोपरान्त 6-6 माशा सेवन करने से खाना हज्म होता है और भूख बढ़ती है ।

● अनारदाना 50 ग्राम को एक मिट्टी के लोटे (पात्र) में 1 किलो पानी डालकर भिगोकर रखें और थोड़ा-थोड़ा निथारकर मिश्री मिलाकर ज्वर के रोगी को बार-बार पिलाने से प्यास की तीव्रता, कै, शान्त होती है और ज्वर भी लाभप्रद है ।

● अनार के फूल छाया में सुखाकर बारीक पीसकर मंजन करने से मसूढ़ों से खून आना बन्द हो जाता है और दाँत मजबूत हो जाते हैं ।

● अनार के दानों का रस 1 छटांक लोहे के बर्तन में रात्रि को छत पर रखदें। प्रतिदिन 20 दिन तक प्रातःकाल इसको सेवन करने से पीलिया, कमल बाय का रोग नष्ट हो जाता है ।

● मीठे अनार का छिलका 2 तोला, लाहौरी नमक 3 माशा को बारीक करके पानी की सहायता से 1-1 माशा की गोलियाँ बनाकर दिन में तीन बार 2-2 गोलियाँ चूसने से खाँसी नष्ट हो जाती है ।

● अनार का छिलका थोड़े दूध में उबालकर पीने से काली खाँसी मिट जाती है।

● अनार का छिलका बारीक पीसकर 4 माशे की मात्रा में दिन में 2 बार पानी से खाने से मात्र 10 दिनों में मसाने की गर्मी शान्त होकर पेशाब (मूत्र) बार-बार आना ठीक हो जाता है ।

● अनार का छिलका बारीक पीसकर 3 माशा की मात्रा में प्रातःकाल ताजे पानी के साथ 10 दिन तक खाने से स्वप्नदोष रोग में लाभ हो जाता है ।

● मीठे अनार का छिलका पानी में उबालकर गरारे करने से मुख की दुर्गन्ध (बदबू) दूर हो जाती है ।

इलायची

● गर्भवती स्त्री को अपनी कमर में छोटी इलायची की माला बनाकर पहने रहने से सुन्दर एवं लुभावनी गन्धयुक्त शिशु जन्म लेता है ।

● अनार के रस में छोटी इलायची का चूरा मिलाकर पीने से पुरुषों का खोया (नष्ट) हुआ पुरुषार्थ पुनः वापस आ जाता है । यदि 1 बादाम खाने से 1 दुश्मन परास्त किया जा सकता है तो 1 छोटी इलायची के सेवन से 1 स्त्री (पत्नी या प्रेमिका) को परास्त किया जा सकता है ।

● छोटी इलायची के दानें पीसकर दूध के साथ सेवन कर लेने से मूत्र खुलकर आता है तथा मूत्र-मार्ग की जलन शान्त हो जाती है ।

● छोटी इलायची का चूर्ण सूंघने से मस्तकपीड़ा दूर होती है। इसका काढ़ा पी लेने से तृषा, वमन और अरुचि दूर होती है । वमनेच्छा, हृदय की कमजोरी, मुख से दुर्गन्ध आना, हिचकी आना, सूखी खाँसी इत्यादि शिकायतों में छोटी इलायची मुख में डालकर धीरे-धीरे चबानी चाहिए। इसको बारीक पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तकपीड़ा (सिरदर्द) दूर हो जाती है ।

● छोटी इलायची के बीज, सौंठ, लौंग और जीरा सभी सम मात्रा में लेकर बारीक पीसकर चूर्ण बनाकर भोजनोपरान्त 2 ग्राम की मात्रा में सेवन कर लेने से भोजन पच जाता है ।

● छोटी इलायची के 2 तोला छिलकों को आधा किलो पानी में औटाकर 125 ग्राम पानी शेष रह जाने पर छानकर पीना हैजा में लाभप्रद है ।

● खीरे के बीज के साथ छोटी इलायची के दानें सेवन करते रहने से गुर्दे और मूत्राशय की पथरी का रोग नष्ट हो जाता है ।

● प्रतिदिन प्रातः निराहार 2 छोटी इलायची चबा-चबा कर खाने के बाद दूध या पानी पीने से रक्तपित्त का रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित योग है ।

● दो छोटी इलायची पीसकर शहद के साथ चाटने से पेट दर्द में लाभ हो जाता है ।

● दूध अधिक पी लेने के कारण अथवा केले अधिक खा लेने के कारण उत्पन्न अजीर्ण में छोटी इलायची के दाने खाने से आराम हो जाता है ।

● छोटी इलायची के अर्क को डेढ़ दो माशा की मात्रा में दिन में 7-8 बार पीने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

नोट—छोटी इलायची की अधिकतम मात्रा 5 माशा है । यह छाती, आँतों और फेफड़ों के लिए हानिकारक भी है ।

●दिल घबराने या मन अचकचा होने पर 1 बड़ी (सुर्ख) इलायची छीलकर दानों को नमक लगाकर खाने से आराम हो जाता है ।

●बड़ी इलायची का चूर्ण 3 ग्राम मक्खन के साथ चाटने से आँतों की ऐंठन व दर्द, बार-बार दस्तों की शंका, अतिसार तथा आमातिसार ठीक हो जाता है ।

●बड़ी इलायची के छिलके को कूटकर 125 ग्राम पानी में उबालकर पीने से हिचकियाँ बन्द हो जाती हैं ।

●बड़ी इलायची के छिलकों को ताजा पानी में पीसकर सिर पर लेप करने से अथवा इलायची के पिसे हुए बीजों में खान्ड मिलाकर फाँकने से सिरदर्द ठीक हो जाता है ।

●बड़ी इलायची का काढ़ा बनाकर कुल्ला करना, दाँतों और मसूढ़ों को लाभप्रद है । इसके छिलकों को बतौर मंजन प्रयोग करने से मसूढ़े दृढ़ होते हैं।

●बड़ी इलायची के छिलके 1 तोला, नौशादर 1 ग्राम को बारीक पीसकर आधे सिर का दर्द यदि दाहिनी ओर रहे तो बांये और के नथुने में और यदि बाँयी ओर के सिर में दर्द हो तो दाँयी ओर के नाक के नथुने में सूंघना उपयोगी है ।

●एक इलायची को थोड़ा जलाकर व पीसकर 3-4 घंटे के अन्दर 2-3 बार चाटने से वमन रुक जाती है ।

●इलायची का चूर्ण मिश्री के साथ चूसने से (धीरे-धीरे चूसें) वातज, पित्तज और कफज खाँसी में आराम होता है ।

इमली

●इमली के पत्ते 10 ग्राम और हल्दी की गाँठ चौथाई मात्रा में लेकर ठण्डे जल में पीसकर थोड़ी चीनी मिलाकर (जब चेचक का रोग फैला हुआ हो तब) प्रतिदिन सवेरे शरबत के रूप में पीते रहने से चेचक का संक्रमण नहीं होता है।

●इमली के बीज का मगज (गिरी) निकालकर पानी की सहायता से पीसकर लेप बनाकर गुहेरी पर लगाने से तुरन्त ठण्डक पड़कर शीघ्र आराम हो जाता है।

●इमली के बीज और काला जीरा पानी में पीसकर लेप लगाने से कुष्ठ के सफेद दाग का रोग नष्ट हो जाता है ।

●इमली की छाल पीसकर दही के साथ सुबह-शाम खाते रहने से बबासीर

का रोग दूर हो जाता है । इमली के फूलों को रगड़कर उनका रस बबासीर के मस्सों पर लगाने से बबासीर की जलन और पीड़ा दूर होकर मस्से सूख जाते हैं।

●पकी इमली 125 ग्राम लेकर आधा किलो ठण्डे पानी में भिगोकर 4-5 घंटे बाद इसी पानी में इमली को मसलकर और कपड़े से छानकर बाद में चीनी या गुड़ अपनी रुचि के अनुसार डालकर (यह इमली का पन्ना कहलाता है) इसका गर्मियों के दिनों में प्रतिदिन सेवन करते रहने से भोजन खूब भली प्रकार पचकर खूब भूख लगती है, मूत्र साफ आता है, शरीर में शीतलता रहती है, मलेरिया ज्वर के रोगी के प्यास लगने में भी गुणकारी है । इससे प्यास एकदम शान्त हो जाती है तथा ज्वर भी धीरे-धीरे उतरने लगता है । इस योग के सेवन से भाँग, शराब और धतूरे आदि का नशा भी उतर जाता है ।

●इमली के बीज का चूर्ण 3 से 6 माशा तक मट्ठे के साथ सेवन करने से आमातिसार और रक्तार्श मिट जाता है ।

●इमली का चूर्ण 3 माशा प्रतिदिन गौदुग्ध के साथ प्रात:सायं सेवन करते रहने से धातुक्षीणता दूर होकर मर्दाना शक्ति (पौरुष शक्ति) बढ़ जाती है।

●पकी इमली के गूदे को हाथ की हथेलियों और पैर के तलुवों में मलने से दाह और जलन शान्त हो जाती है ।

●भिलावे के तैल से उत्पन्न स्फोटों पर इमली के बीजों का शीतल लेप अत्यन्त ही लाभकारी है ।

●इमली के 5 से 10 बीज तक चूने के पानी में फुलाकर तदुपरान्त गौदुग्ध में पीसकर पिलाने से भिलावे का दर्द शान्त हो जाता है ।

●इमली के बीजों को रात में भिगोकर प्रात:काल इन्हें छील व पीसकर सम मात्रा में गुड़ मिलाकर 6-6 ग्राम की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें । सुबह-शाम नित्य 1-1 गोली सेवन करने से वीर्य की कमजोरी मिटकर पुरुषार्थ शक्ति बढ़ जाती है ।

नोट—कच्ची इमली का अधिक प्रयोग रक्त दूषित करता है तथा यह आँवकारक भी है ।

शीतलचीनी (कबाबचीनी)

●कबाबचीनी चूर्ण का मिश्री मिलाकर फंकी लगाने से मूत्र की रुकावट (मूत्रावरोध) दूर हो जाती है । दूध के साथ इस योग को सेवन करने से मूत्र की वृद्धि हो जाती है ।

●कबाबचीनी, बच, कुलंजन को नागरबेल व पान के रस में पीसकर गोली बनाकर, स्वरभंग आदि नष्ट होकर कण्ठ साफ हो जाता है।

●कबाबचीनी के 7-8 दानें पान के बीड़े में रखकर चबाने से मुख के छाले, कण्ठ विकार, मुख से दुर्गन्ध आना इत्यादि मुख रोग नष्ट हो जाते हैं।

●वृद्धावस्था की खाँसी में यदि कफ अधिक निकलता हो तो आधा ग्राम कबाबचीनी दिन में 3-4 बार सेवन करने से लाभ होता है।

●मूत्रकृच्छ और सुजाक आदि होने पर 4 ग्राम कबाबचीनी का दरदरा (कुटा हुआ) चूर्ण आधा गिलास खौलते हुए पानी में डालकर ढक्कन बन्द करके रखें। जब ठण्डा हो जाए तब इसे छानकर 5 बूँद सन्दल का तैल और स्वादानुसार मिश्री या चीनी मिलाकर दिन में दो बार पीने से मूत्र मार्ग साफ हो जाता है, मूत्र त्याग के समय होने वाली वेदना समाप्त हो जाती है। इसके बाद कबाबचीनी का चूर्ण 2 ग्राम और फिटकरी का चूर्ण चौथाई ग्राम (यह एक मात्रा है), ऐसी तीन मात्राऐं दिन भर में तीन बार दूध या पानी से सेवन करें। अथवा कबाबचीनी का चूर्ण आधा ग्राम और आधा ग्राम जवाखार मिलाकर ऐसी 1-1 मात्रा प्रातःसायं पानी के साथ सेवन करें। इन प्रयोगों से मूत्र खुलकर आने लगता है तथा मूत्रमार्ग की जलन शान्त हो जाती है।

नोट—कबाबचीनी का चूर्ण की मात्रा 4 माशा, काढ़े की मात्रा 9 माशा और तैल की मात्रा 5 से 20 बूँद तक होती है। कम मात्रा में लेने से यह पसीना लाने वाली और ताकत बढ़ाने वाली होती है और अधिक मात्रा में सेवन करने के फलस्वरूप हाजमा की क्रिया को बिगाड़कर आंतों और आमाशय में खराबी उत्पन्न करती है।

कलौंजी

●कलौंजी के 7 दाने स्त्री के दूध में पीसकर कामला से पीड़ित रोगी की नाक में टपकाना लाभप्रद है। इस रोग में आँखें पीली पड़ जाती हैं। यदि उल्टी में पीप आती हो, जी मिचलाता हो, तिल्ली बढ़ी हुई हो तब इससे लाभ होता है।

●कलौंजी को जलाकर मोम में मिलाकर सिर पर दीर्घकाल तक मालिश करते रहने से बाल उग आते हैं।

●सिरके में मिलाकर मस्सों पर लगाने से मस्से कट जाते हैं।

●इसको पीसकर सिरके में मिलाकर पेट पर लगाने से कद्दूदाने नष्ट हो जाते हैं। इसके धुएं से जहरीले कीड़े-मकोड़े भाग जाते हैं।

●कलौंजी को पीसकर छाछ में औटाकर नारू पर लेप करने से समस्त (चाहें टूट गये हों) नारू निकल जाते हैं।

●इसके पत्ते, डालियाँ और बीज पीसकर जननेन्द्रियों के क्षतों पर लगाने से आराम हो जाता है।

●इसको पानी में पीसकर शहद मिलाकर पीने से गुर्दे और मूत्राशय की पथरी निकल जाती है।

●इसको जलाकर व लगाने और पीने से बबासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं।

●कलौंजी के दाने ऊनी कपड़ों में रखने से कीड़े नहीं लगते हैं।

●इसे जैतून के तैल के साथ निहार-मुँह खाने से रंग लाल सुर्ख हो जाता है।

●इसको भूनकर कपड़े में बाँधकर सूँघने से सर्दी, जुकाम दूर हो जाता है। जुकाम जिसमें छींकें अधिक आती हों, नाक से पानी बहता हो तब जैतून के तैल में कलौंजी का चूर्ण मिलाकर 4 बूंद नाक में टपकाने से लाभ होता है। इस स्थिति में इसकी धूनी से लाभ होता है।

●तीन ग्राम कलौंजी चूर्ण तीन ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से हिचकियाँ आना बन्द हो जाती हैं।

●इसको पीसकर बालों में मलने से बालों का गिरना रुक जाता है और वे बढ़कर लम्बे हो जाते हैं।

●कलौंजी और जीरा का लेप लगाने से शीतजन्य सिरदर्द दूर हो जाता है।

●कलौंजी को शहद में मिलाकर लगाने से बन्दर का विष उतर जाता है।

●कलौंजी को गुड़ में मिलाकर खाने से एकतरा ज्वर नष्ट हो जाता है।

●इसका 10 ग्राम चूर्ण शहद के साथ बारी-बारी से दिन में चाटने से चौथैया ज्वर नष्ट हो जाता है।

●इसका हलुआ बनाकर सेवन करने से कुत्ते काटे का विष नष्ट हो जाता है। इस हलुए से पेट का वायुशूल पेट के कीड़े, पेट का अफारा और कफ रोग नष्ट हो जाते हैं।

●इसको सिरके में पीसकर रात्रि को मुख पर लगाकर इस लेप को प्रातःकाल धो डालने से चेहरे के मुँहासे दूर हो जाते हैं।

●इसके तैल को कान में टपकाने से बहरापन और कान की सूजन दूर हो जाती है। इसकी नस्य लेने से मृगी रोग में आराम आ जाता है। इसे सिर पर मलने से लघु मस्तिष्क के रोम खुलकर स्मरणशक्ति दोष दूर हो जाते हैं।

●डेढ़ ग्राम कलौंजी गाय या बकरी के दूध में भिगोकर दें। घंटे भर बाद छीलकर, सिल पर पीसलें और दूध में घोलकर, कपड़े से छानकर तदुपरान्त एक कड़ाही में एक चम्मच घी डालकर उपर्युक्त कलौंजी वाला दूध भी डाल दें और ऊपर से 60 ग्राम जल में 10 ग्राम कपड़े से छना हुआ चोकर का रस 10-15 ग्राम चीनी डालकर 4-6 उफान आने तक पकाकर इस हरीरा को प्रसूता को इसी क्रम से लगातार 1 मास तक पिलाने से (जिसके दूध कम हो) दूध का सूखना रुककर उसकी छाती से अधिक से अधिक दूध उतरने लगेगा।

●आँखों में छोटी मोटी बीमारियाँ हों तो कलौंजी का तैल 10 बूँद आधा किलो गाय के गरम दूध में डालकर सुबह-शाम लेना लाभप्रद है। इसके अलावा 1-1 बूँद तेल अंगुली के पोरे से नाक के दोनों छिद्रों में लगाना लाभप्रद है।

नोट—कलौंजी का तैल निकालने के लिए 250 ग्राम कलौंजी को कुचलकर ढाई किलो जल में डालकर मन्दी-मन्दी आग पर पकायें। जब एक किलो जल शेष रहे तब आंच खत्म कर दे। जल शीतल होने पर तैल को तलहँटी के सहारे कांछकर अलग पात्र में इकट्ठा करलें। फिर कपड़े से छानकर किसी साफ शीशी में सुरक्षित रखलें।

●4 ग्राम से 10 ग्राम तक कलौंजी को पानी में पीसकर पिलाने से पागल कुत्ते के जहर में लाभ हो जाता है।

काली मिर्च

●पिसी हुई काली मिर्च 1 ग्राम को चौथाई लीटर मट्ठा में मिलाकर सेवन करने से उदरकृमि मृत अथवा जीवित बाहर निकल जाते हैं।

●गुड़ और काली मिर्च दही में मिलाकर खाने से पीनस (जुकाम सड़कर नाक में कीड़े पड़ना) में लाभ होता है।

●काली मिर्च चूर्ण को शहद में मिलाकर चाटने से सर्दी व तरी से होने वाली खाँसी, दमा और छाती का दर्द दूर होकर फेफड़ों का कफ निकल जाता है।

●पिसी हुई काली मिर्च ताजा मक्खन में मिलाकर कुछ दिनों तक नियमित रूप से चाटते रहने से आँखों की पलकों की सूजन समाप्त होती है और नेत्रज्योति बढ़ जाती है। स्वादानुसार इसमें देशी खान्ड मिला सकते हैं।

●काली मिर्च का बारीक कपड़छन चूर्ण गाय के ताजा दही में घिसकर सुबह-शाम आँख में लगाने से रतौंधी दूर हो जाती है।

●5 ग्राम काली मिर्च 10 ग्राम जीरा लेकर पानी में भली-भांति पीसकर गरम करें। इस मिश्रण में आधा लीटर गरम पानी मिलाकर कुछ समय तक अन्डकोषों को धोने व मर्दन करने से अण्डकोष स्वाभाविक स्थिति में आ जाते हैं।

●काली मिर्च व घी मिलाकर पीने व उसकी शरीर पर धीरे-धीरे मालिश करने से पित्ती उछलने के रोग को आराम आ जाता है।

●दो ग्राम पिसी हुई काली मिर्च को फाँककर ऊपर से नीबू का रस मिले गरम जल को पानी से सायंकाल और रात को 10-12 दिन तक निरन्तर पियें। पेट में गैस बनने का रोग नष्ट हो जाता है।

●काली मिर्च के चूर्ण को पिघले हुए देशी घी में मिलाकर लिंग (इन्द्री) के मुख को ऊपर करके उस पर 2-3 बूंदें टपकाने से (मूत्रावरोध रोग) (रुक-रुक कर और दर्द के साथ मूत्र होना) मूत्र आने लगता है।

नोट—कभी-कभी यह क्रिया 2 से 4 बार तक करनी पड़ती है।

●बकरी का पित्त लेकर उसमें काली मिर्च भरदें। फिर इसी काली मिर्च को एक सप्ताह बाद निकाल कर बकरी के दूसरे पित्त में रखें। फिर निकालकर छाया में सुखाकर शुष्क करके सुरक्षित रखलें। वृक्क शूल (दर्द-गुर्दा) में 1 से 2 काली मिर्च गरम पानी से खिलायें। अद्भुत अतीव गुणकारी प्रयोग है।

●गरम दूध में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर अथवा काली मिर्च मिलाई हुई गरम चाय पीने से नया जुकाम ठीक हो जाता है।

●20 काली मिर्च गुलाब जल में पीसकर रात को चेहरे पर लगाकर प्रातःकाल गरम पानी से धोने से कील, मुँहासे, झुर्रियाँ साफ होकर चेहरा चमकने लगता है।

●30 ग्राम मक्खन से 8 काली मिर्च और शक्कर मिलाकर नित्य प्रति चाटने से स्मरणशक्ति बढ़ जाती है। मस्तिष्क में तरावट आती है तथा कमजोरी भी दूर होती है।

●1 काली मिर्च लेकर सुई में चुभोकर दीपक की लौ से जला लें इसका धुंआ सूँघने से अथवा 10-15 दानें काली मिर्च के नई चिलम में भरकर (हुक्का) पीने से हिचकी बन्द हो जाती है तथा वातजन्य शिरःशूल भी दूर हो जाती है।

●कालीमिर्च, पीपल, समुद्रफेन प्रत्येक 6-6 माशा, सैंधानमक 3 माशा, काला सुरमा 4 तोला सभी को भली प्रकार पीस व कपड़ छन कर सुरमें की भाँति प्रयोग करते रहने से नेत्र की खुजली, फूला व कीचड़ आना इत्यादि नष्ट हो जाते हैं।

●काली मिर्च 6 माशा, शुद्ध मैनसिल, 3 माशा डालकर काजल के समान घोटकर आँख में प्रयोग करने से ढलका रोग दूर हो जाता है।

●काली मिर्च, सैंधानमक, जीरा, सौंठ, सभी समभाग लेकर चूर्ण बनाकर मधु में मिलाकर 3 से 6 माशा तक दिन भर में 2-3 बार चाटने से संग्रहणी, अर्श, गुल्म इत्यादि समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—इस चूर्ण को शहद के स्थान पर गरम जल से ले सकते हैं।

●काली मिर्च 5-7 दानें, अजवायन 2 माशा, तुलसी के 1 तोला को पीसकर 10 तोला जल में क्वाथ बनाकर 5 तोला जल शेष रह जाने पर छानकर सुबह-शाम पीने से मलेरिया बुखार नष्ट हो जाता है।

जीरा (काला व सफेद)

●पिसा हुआ सफेद जीरा 3 ग्राम, 100 ग्राम खौलते हुए पानी में डालकर ढँक दें। इसमें 5 मिनट बाद दूध व चीनी इच्छानुसार मिलाकर प्रतिदिन सुबह-शाम पीते रहने से शरीर मोटा-ताजा हो जाता है।

●सफेद जीरे को पानी में उबालकर इस पानी से प्रतिदिन लगातार कुछ दिनों तक मुख धोते रहने से मुख की श्यामलता, झाँई, चकत्ते, मुँहासों के दाग आदि दूर होकर चेहरा सुन्दर हो जाता है।

●सफेद जीरा और शक्कर सम मात्रा में पीसकर सुबह-शाम 100 ग्राम खाने से और ऊपर से दूध पीने से स्त्रियों के स्तनों में दूध कम बनने की प्रक्रिया दूर होकर दूध बढ़ जाता है।

●सफेद जीरा को नीबू के रस में भिगोकर नमक लगाकर (खटाई का जीरा बनाकर) गर्भवती स्त्री के सेवन करने से उसका जी मिचलाना और उबकाई आना बन्द हो जाता है।

●सफेद जीरा और काली मिर्च को घोट पीस छानकर पिलाने से पागल कुत्ते का विष उतर जाता है। सौंठ और सफेद जीरा को पीसकर लगाने से मकड़ी का विष उतर जाता है। सफेद जीरा और नमक पीसकर घी और शहद में मिलाकर थोड़ा सा गरम करके बिच्छू के डंक स्थल पर लगाने से विष उतर जाता है।

●दुग्धपान कराने वाली स्त्री के स्तनों में गाँठ या फोड़ा हो जाने पर जीरा को पानी में पीसकर स्तन पर लगाना लाभप्रद है।

●एक चम्मच सफेद जीरा, चौथाई चम्मच काली मिर्च पीसकर 1 औंस (30 मि.ली.) शहद में मिलाकर रखें। यह औषधि 1 चम्मच नित्य दिन में 3 बार चाटने से दर्दयुक्त बबासीर ठीक हो जाती है।

●काला जीरा के काढ़े से कुल्ला करने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है।

●काला जीरा के सिरके के साथ सेवन करने से हिचकी रुक जाती है।

●यदि बबासीर के मस्से गुदा के बाहर आकर सूज गए हों तो काला जीरा

को पानी में उबालकर इससे सेंकने से लाभ होता है। गर्भाशय की सूजन से ग्रसित स्त्री को इस काढ़े में नंगा बिठाने से लाभ होता है।

नोट—सफेद जीरा अथवा काला जीरा की मात्रा 10 से 20 ग्रेन (6 ग्राम) है। सफेद जीरा के अधिक सेवन से गर्भ नष्ट होने का अन्देशा रहता है। अधिक मात्रा में सेवन के फलस्वरूप शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है। नाड़ी तीव्र हो जाती है तथा सर्व तरल निष्कासन में तीव्रता आ जाती है। काला जीरा का अधिक सेवन करने से फेफड़े तथा शरीर दुर्बल कमजोर और पीला हो जाता है।

●सफेद व स्याह जीरा काले तिल और सरसों सभी सम मात्रा में लेकर दूध में पीसकर लेप या उबटन करने से मुख की झाँई और कालिमा दूर हो जाती है।

●जीरा, छोटी इलायची और फिटकरी की खील पानी में घोलकर (मुख में छाले होने पर) कुल्ला करना अतीव गुणकारी है।

●गिलोय और गोखरू के साथ जीरा पीसकर सेवन करने से मूत्र खुलकर आने लगता है।

●स्त्रियों के गर्भाशय की कमजोरी के कारण यदि रजः शुद्धि न होती हो तो जीरा के सेवन से मासिक साफ आने लगता है और मूत्रशुद्धि भी हो जाती है।

●जीरा और मिश्री का सेवन चावल के धोवन से करना प्रदरनाशक है।

●जीरा और साठी चावल दूध में पकाकर खिलाना स्तनशोथ में लाभप्रद है।

●जीरा और मिश्री के सेवन से हरताल संखिया या मैनसिल का विषाक्त प्रभाव 1-2 सप्ताह में दूर हो जाता है।

●जीरा दही के साथ अतिसार में सेवन करना लाभकारी है।

●ज्वर की गर्मी (ज्वर मूतना) से होठों पर उत्पन्न फुन्सियों पर जीरा जल में पीसकर लेप करना हितकारी है।

●जीरा और धनिया भूना हुआ, सौंफ, काली मिर्च, सैंधा नमक, अजवायन, काला नमक, सौंठ, पीपल, अनारदाना, सभी सममात्रा में ले कूट पीसकर चूर्ण बनाकर 3-3 माशे सुबह-शाम सेवन करने से अजीर्ण, अग्निमांद्य और अरुचि का सफाया हो जाता है।

●सफेद जीरा 2 भाग, सैंधा नमक 1 भाग दोनों को बारीक पीसकर मंजन बनालें। इसे सुबह-शाम दाँतों पर मलने से मुख की बदबू, अरुचि, वमन, उबकाई आना आदि लक्षण नष्ट हो जाते हैं।

●20 ग्राम जीरा 250 ग्राम गौदुग्ध से 2 घंटे तक भिगोकर मन्दाग्नि पर पकाकर (खीर की भाँति गाढ़ा होने तक पकायें) फिर इसमें 20 ग्राम मिश्री मिलाकर शीतल होने पर (नोट—यह 1 मात्रा है) सुबह-शाम निरन्तर खायें। यह योग भूख बढ़ाता है। प्रदर एवं तज्जन्य हस्त, पाद, नेत्र एवं बस्तिगत दाह दूर करता है।

केसर

●मिष्ठान्नों, भोजनों, पूजा-अनुष्ठानों एवं यन्त्र (ताबीज) आदि बनाने (लिखने) में अपने देश में प्रचुरता से उपयोग होता है।

●25 ग्राम केसर को 4 औंस रैक्टीफाइड स्प्रिट में डालकर 5 दिनों तक ऐसा ही रखा रहने दें। तदुपरान्त इसमें नारियल या सरसों का तैल मिलाकर प्रतिदिन सुबह-शाम सिर में खूब रगड़-रगड़ कर मालिश करने तथा सप्ताह में 2 बार जामुन के पत्ते पीसकर पीने एवं हर्बल शैम्पू से सिर धोते रहने बाल सफेद होने का रोग दूर हो जाता है।

●केसर और हींग दोनों सम मात्रा में लेकर शहद के साथ चने के आकार की गोलियाँ बनालें। प्रसव कष्ट के समय 1 गोली अर्द्ध गर्म दूध से सेवन कराने से सुगमतापूर्वक (बिना कष्ट के) शिशु का जन्म हो जाता है।

●दालचीनी और केसर की गोली बनाकर सेवन करने से उदरशूल मिटता है।

●करेला के रस में केसर को घिसकर सेवन करने से यकृतवृद्धि मिटती है।

●केसर और कपूर 1-1 रत्ती की मात्रा में लेकर खरलकर दूध के साथ बच्चों को सेवन कराने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

नोट—केसर की मात्रा 1 से 3 ग्राम तक है। इसकी हानियाँ निम्नलिखित हैं—होश गँवाता है, भूख घटाता है, सिरदर्द पैदा करता है, खुजली, माँसपेशियों को हानिकारक है। शराब के साथ नशा करता है।

खशखश

●दो चम्मच खशखश पानी में डालकर पीसकर चौथाई कप दही में मिलाकर 6-6 घंटे पर प्रतिदिन 3 बार सेवन करने से दस्त, पेचिश और मरोड़ ठीक हो जाती है। खशखश की खीर बनाकर खाने से भी लाभ होता है।

●दो चम्मच खशखश रात्रि को पानी में भिगोयें तथा प्रातःकाल इसे पीसकर स्वादानुसार मिश्री मिलाकर पानी में घोलकर लस्सी बनाकर पीने से गर्मी की ऋतु में गर्मी नहीं सताती है और मस्तिष्क ठण्डा रहता है। खशखश का शर्बत पीना भी लाभप्रद है। खशखश की खीर खाने से शक्ति बढ़ती है।

●तुख्म खशखश 3 ग्राम, मगज बादाम गिरी 6 अदद को पानी में पीसकर छानकर पीने से दिमागी शक्ति बढ़ती है। खुश्की दूर होकर, शन्तिपूर्वक अनोखी निद्रा आती है।

●तुख्म खशखश को पानी में पीसकर, नीबू का रस मिलाकर शरीर पर मालिश करने से सूखी खुजली नष्ट हो जाती है।

●पोस्त के छिलके को पानी में औटाकर उसके गरम-गरम काढ़े में कपड़ा भिगोकर सेंकने से चोट, मोच, सूजन और नसों की पीड़ा दूर हो जाती है।

जायफल

●दो बड़े चम्मच नारियल के तैल में 2 बूँद जायफल का तैल मिलाकर रख लें। इसे त्वचा के सुन्न वाले अंग पर मालिश करने से सुन्नता नष्ट हो जाती है।

●जायफल को घिसकर कान की जड़ में लगाने से वहाँ की गाँठ मिटती है।

●जायफल का चूर्ण 1 ग्राम आधा कप पानी से सुबह-शाम सेवन करने से बार-बार पतले दस्त आना, पेट फूलना और पेटदर्द में आराम हो जाता है।

●पानी की सहायता से घिसा हुआ जायफल आधा चम्मच को एक गिलास पानी में घोलकर गरारे और कुल्ले करने से मुख के छाले ठीक हो जाते हैं तथा बैठा हुआ गला भी खुल जाता है।

●जायफल को दूध में घिसकर मुख पर लेप करने से चेहरे पर काले धब्बे या मुँहासे दूर होकर चेहरे पर दिव्य निखार आ जाता है।

●सर्दी लग जाने से उत्पन्न सिरदर्द में इसका लेप ललाट पर लगाना अतीव गुणकारी है।

●दूध पीते शिशुओं को सर्दी की ऋतु में (चिराग जलाने पर मिट्टी के दिए में) प्रतिदिन अल्प मात्रा में जायफल घिसकर माता के दूध के साथ सेवन कराने से सर्दी के समस्त विकारों से शिशु सुरक्षित रहता है।

नोट—जायफल की मात्रा 4 से 9 ग्राम है तथा इसका सेवन यकृत, फेफड़े तथा गरम स्वभाव वालों के लिए हानिकारक है। सिरदर्द भी उत्पन्न करता है। इसके दर्प को नष्ट करने हेतु धनियां, चन्दन, शहद व बनफशा देना लाभकारी होता है।

जावित्री

●कफ के कारण उत्पन्न हुए दमे में जावित्री को पान में रखकर खाना लाभकारी है। यह क्षय रोग में भी लाभप्रद है।

●जावित्री आधा से 1 ग्राम तक की मात्रा में सेवन करना कृश करने वाले आँतों के पुराने रोगों में लाभकारी है।

●जावित्री को आग पर सेंक करके सेवन करने से विशूचिका (हैजा) के दस्त आना रुक जाते हैं।

●जावित्री को सर्द मिजाज वाले लोगों द्वारा सेवन करने से उनकी कामशक्ति (सैक्स पावर) बढ़ जाती है तथा कामेन्द्रिय पर इसकी मालिश करने से लिंग की सुस्ती नष्ट होती है।

नोट—इसको चौथाई ग्राम से अधिक सेवन करना हानिकारक है। इसका अधिक सेवन करने से नशा, मूर्च्छा, सिरदर्द इत्यादि उत्पन्न हो जाता है। इसको अधिक मात्रा में सेवन कर लेने से यदि कुछ अनिष्ट हो जाए तो मक्खन में चन्दन और मिश्री मिलाकर चाटना लाभकारी है।

दालचीनी

●दालचीनी को पीसकर माथे पर लेप करने से सिरदर्द दूर हो जाता हैं।

●मुखशोथ अथवा तालुशोष रोग नया हो तो दालचीनी का कपड़छन चूर्ण दो आने भर 6 ग्राम शहद में मिलाकर चटाना उपयोगी है। (यह 1 मात्रा है) दिन में 3 बार प्रातःकाल, सायंकाल और सोते समय सेवन करें। इससे 4-5 दिनों में ही लाभ मिल जाता है। गुड़ के शर्बत में 3 ग्राम दालचीनी का महीन चूर्ण मिलाकर 4-5 मिनट तक मुख में रखकर गिरायें। यह क्रिया दिन में 2 बार करें। (आठ आने भर गुड़ में 60 ग्राम जल मिलाकर शर्बत तैयार करलें।)

●दालचीनी 5 ग्राम, लौंग 2 नग, सौंठ चौथाई चम्मच पीसकर एक किग्रा. जल में उबालें। जब जल 250 ग्राम शेष रह जाए तब उतार छानकर इस जल को 3 बार में दिन भर में सेवन करना इन्फ्लूऐंजा (बुखार) में लाभ होता है।

●दालचीनी और इलायची आधा-आधा ग्राम व सौंठ 12 रत्ती से आधा ग्राम तक पीसकर भोजन से पूर्व सेवन करने से कब्ज दूर होकर भूख बढ़ जाती है।

●पित्ताशय की गड़बड़ी उल्टी होने लग जाने में दालचीनी का बारीक चूर्ण शहद में मिलाकर (रोग की स्थिति के अनुसार) दिन में कई बार चाटना लाभप्रद है।

●दालचीनी की छाल 4 ग्राम में कत्था 10 ग्राम मिलाकर पीसकर इसमें 250 ग्राम खौलता हुआ पानी डालकर रखलें। दो घंटे के बाद इसको छानकर (दो खुराकें बनाकर) पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं। अथवा दालचीनी का चूर्ण आधा ग्राम और कत्था आधा ग्राम दोनों को पीसकर सेवन करने से भी दस्त रुक जाते हैं।

●आधा ग्राम दालचीनी को पानी के साथ खूब महीन पीसकर दाहिने हाथ

के अँगूठे से काग पर इसका लेप करके, मुख खोल कर लार टपकाने से (दो दिन) गले का कौआ बढ़ जाना दूर हो जाता है तथा खाँसी भी नष्ट हो जाती है।

●दालचीनी और हींग चौथाई चम्मच मिलाकर पीसें। फिर इसे एक गिलास पानी में मिलाकर उबालकर ठण्डा कर लें। तदुपरान्त यह औषधि 3-3 चम्मच दिन में 3 बार नित्य पीने से पेट का दर्द नष्ट हो जाता है।

नोट—इसकी मात्रा 3 से 6 ग्राम तक है। इसको अधिक मात्रा में सेवन करने से गरम प्रकृति के व्यक्तियों को सिरदर्द उत्पन्न हो जाता है तथा गुर्दा और मसाने को भी हानि पहुँचती है। इसके दर्दनाशक के रूप में कतीरा, सफेद चन्दन, मस्तगी इत्यादि लाभप्रद है।

तेजपात

●तेजपात और पीपल को पीसकर अदरक की चाश्नी में चाटने से दमा रोग में लाभ होता है।

●इसकी छाल को पीसकर फंकी लगाने से वायु गोला के दर्द में आराम हो जाता है। उबकाई आने में इसका चूर्ण लाभप्रद है।

●इसकी धूनी देने से गर्भवती के शीघ्र बच्चा पैदा हो जाता है।

●इसको सदैव जीभ के नीचे रखने से तोतलापन और हकलापन मिट जाता है।

●इसको पीसकर सुरमें की भाँति आँख में लगाने से धुन्ध और जाला दूर होता है तथा नाखूना भी कट जाता है।

●इसको पीसकर मंजन की भाँति प्रयोग करने से दाँत मजबूत होते हैं और दन्तकृमि (दाँतों का कीड़ा) नहीं लगता है।

●इसके निरन्तर सेवन से हृदय को शक्ति मिलती है और पागलपन में लाभ पहुँचता है।

●काँख (बगल) और जाँघ की दुर्गन्ध दूर करने के लिए तेजपात के बारीक चूर्ण को सिरके में मिलाकर लेप करना लाभप्रद है।

●वस्त्रों को सुवासित करने या कीड़ों से सुरक्षा हेतु कपड़ों में तेजपात रखना गुणकारी है तथा मुख की दुर्गन्ध निवारण हेतु इसे मुख में रखकर चूसना हितकारी है।

●सूखे तेजपात को बारीक पीसकर प्रत्येक तीसरे दिन (1 बार) मंजन करने से दाँत मोती की भाँति चमकने लगते हैं।

●मुँह, नाक, गुदा अथवा मूत्रमार्ग अर्थात् शरीर के किसी भी मार्ग से रक्त निकलने (रक्तस्राव होने) पर 1 गिलास ठण्डे पानी में 1 चम्मच पिसा हुआ तेजपात मिलाकर प्रत्येक 3-3 घंटे पर सेवन कराना अत्यन्त लाभकारी है।

● इसके पत्ते का हलुवा बनाकर खिलाने से सर्दी का पागलपन मिटता है।

● तेजपात का काढ़ा बनाकर सेवन करने से पसीना आ जाता है और आँतों की खराबी से पेट फूलना, दस्त लगना आदि में आराम आ जाता है।

● तेजपात की छाल का चूर्ण खिलाने से सांप और अफीम का विष (जहर) उतर जाता है।

● यदि जुकाम 4-5 दिनों का हो गया हो, छींकें अधिक आ रही हों, नाक बह रही हो अथवा सूखे जुकाम से नाक में जलन हो रही हो, सिर में भारीपन तथा जीभ बेस्वाद हो गई हो तो दिन में 4 बार (सुबह, दोपहर, शाम तथा रात्रि में सोते समय) तेजपात की चाय पीने से यह समस्त कष्ट दूर हो जाता है।

विधि—60 ग्राम तेजपात को कूटकर तवे पर रखदें। थोड़ा सा सेकें फिर डिब्बे में बन्द करके सुरक्षित रखलें। 1 बार में 6 ग्राम तेजपात चूर्ण को 180 ग्राम जल में उबालें जब पानी अधिक जल जाए तब इसमें 1 तोला शक्कर तथा दूध डालकर एक उफान आने पर छानकर सुहाता-सुहाता पियें। (यही तेजपात की चाय है) उसको पीते समय तेज हवा से बचें तथा कानों को कपड़े से ढँकलें।

धनिया (हरा व सूखा)

● हरे धनिया का अर्क निकालकर नित्य प्रति सिर पर लगाने से गंजापन दूर हो जाता है।

● यदि गर्मी से आँखें दूख रही हों (यह गर्मी के मौसम में दुखती है, आँखों से पानी भी निकलता है और आँखों में गर्मी सी महसूस होती है रोगी को आँखें जलती हुई सी अनुभव होती हैं) तो हरा धनिया 10 ग्राम, कपूर 1 ग्राम बारीक पीसकर मलमल के साफ कपड़े में पोटली बाँधकर आँखों पर फिरायें। यदि इस पानी की बूँदें आँखों के अन्दर भी चली जाऐं तब भी कोई हानि नहीं है, तुरन्त राहत प्राप्त होगी।

● गर्मी के कारण नाक से बहने वाला रक्त (नकसीर) में हरे धनिया का रस लेकर रोगी को सुँघाऐं तथा हरे पत्ते बारीक पीसकर माथे पर लेप करें। लाभप्रद योग है।

● हरे धनिया का रस निकालकर लगभग 20 ग्राम नित्य पीने से मात्र 3 दिन में क्षुधानाश दूर होकर खुलकर भूख लगने लगती है।

● हरे धनिये का पानी (रस) थोड़ी-थोड़ी देर के अन्तर से 1-1 घूँट पीने से (यदि अन्य किसी प्रकार उल्टी बन्द न होती हो) बन्द हो जाती है।

● हरे धनिये के रस में चीनी का मीठा पानी मिलाकर पीने से अनिद्रा रोग दूर होकर भरपूर नींद आती है तथा सिरदर्द दूर होता है।

● प्रायः गर्मी की ऋतु में गर्मी और मस्तिष्क दुर्बलता के कारण चलते-चलते अथवा अधिक देर तक खड़े या बैठे रहने से सिर घूमकर चक्कर आ जाता है। ऐसी स्थिति में प्रतिदिन हरे धनिये का रस 3 ग्राम और मिश्री मिलाकर पीने से 5-6 दिनों में ही पूर्ण लाभ हो जाता है। यदि हरे धनिये का मौसम न हो और किसी को उपयुर्वक्त उपद्रव हो जाए तो खुश्क धनिया 6 ग्राम को ठण्डाई की भाँति घोटकर मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ हो जाता है

● हरा धनिया अकेले या आँवले के साथ पीसकर खाने से आँखों की कमजोरी दूर होकर दृष्टि (ज्योति) बढ़ जाती है। दरे धनिया का रस सप्ताह में 2-3 बार आँखों में डालना भी इस हेतु गुणकारी है।

● लहसुन, प्याज आदि दुर्गन्ध वाली खाद्य सामग्री खाने के बाद हरा धनिया चबाने से मुख की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

नोट—हरे धनिया को 15 ग्राम से अधिक नहीं खाना चाए। सूखे धनिये की मात्रा 9 ग्राम है। धनिया वीर्य को कम करता है। इसके अधिक सेवन्न से काम शक्ति (सैक्स पावर) कम होती है। स्त्रियों का मासिकधर्म रुक जाता है तथा दमे के रोगियों को हानि पहुँचाता है। सूखे धनिये की अपेक्षा हरा धनिया अधिक शीत प्रकृति का होता है। जिन व्यक्तियों की मर्दाना शक्ति (काम शक्ति) कम है उन्हें धनियां सेवन नहीं करना चाहिए। यदि फिर भी इसका सेवन अधिक हो गया हो तो शहद का अधिक प्रयोग कर पुनः लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

● सूखा धनियां 40 ग्राम को 240 ग्राम पानी में रात्रि भर भिगोकर रखने के बाद प्रातःकाल छानकर पिलाने से मूत्रमार्ग, गुदामार्ग अथवा नाक के रास्ते आने (गिरने) वाले रक्त स्राव में खाली पेट पीने से लाभ मिलता है।

● साबुत (सूखा) धनिया धीरे-धीरे चूसने से मुख के छालों में लाभ होता है। सूखा धनिया गरम पानी में डालकर उबालकर तदुपरान्त ठण्डा कर (बिना छाने ही) 2-3 बार कुल्ला करने से जीभ (मुख के) छाले ठीक हो जाते हैं।

● सूखा धनिया 50 ग्राम, काली मिर्च 20 ग्राम, नमक 20 ग्राम सभी को बारीक पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। (जिस व्यक्ति के आमाशय में आहार बहुत कम ठहरता है अर्थात् बहुत ही शीघ्र मल के रास्ते निकल जाता हो अर्थात् अपचन का रोग हो तो इस चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में भोजनोपरान्त सेवन करें।

● यदि मूत्र जलन के साथ आता हो तो सूखा धनियां 6 ग्राम पानी में घोट-छानकर मिश्री और बकरी का दूध मिलाकर खूब पेटभर कर दिन में 2-3 बार सेवन करने से मात्र 2-3 दिन में ही आराम हो जाता है।

●यदि बबासीर का रक्त काले रंग का हो तो उसे बन्द करने की कदापि कोशिश न करें। रक्त यदि सुर्ख रंग का निकल रहा हो तो इसे अवश्य बन्द करना चाहिए अन्यथा बबासीर का रोगी अत्यन्त कमजोर होता चला जाएगा। इस हेतु धनिया का चूर्ण 6 ग्राम 125 ग्राम पानी में घोट छानकर 30 ग्राम मिश्री और 250 ग्राम बकरी का दूध बार-बार औटाकर (नीचे ऊपर करके) रोगी को पिलायें। इस योग के सेवन से बबासीर का रक्त बन्द हो जाता है तथा इसी योग से मूत्र जलकर आने की शिकायत भी दूर हो जाती है।

●यदि किसी भी कारण से खुश्की (प्यास की तीव्रता) हो गई हो तो खुश्क धनिया 20 ग्राम कूटकर मिट्टी के कोरे प्याले में डालकर रात भर भिगोने के बाद प्रातःकाल मलमल के कपड़े से छानकर मिश्री मिलाकर रोगी को बार-बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पिलाने से लाभ हो जाता है।

●यदि किसी ने भूलवश जमालगोटा खा लिया हो अथवा जमालगोटा की गोलियाँ खाने से दस्त आने लगे हों तो सूखा धनिया को कूट छानकर चूर्ण बनाकर 6 ग्राम मात्रा में लेकर 125 ग्राम दही में बिलोकर 2-3 बार सेवन कराने से दस्त बन्द हो जाते हैं तथा इससे उत्पन्न कमजोरी भी दूर हो जाती है।

●सूखा धनिया तथा कुँजा मिश्री या शक्कर समभाग लेकर दोनों को अलग-अलग कूट लें। तदुपरान्त मिलाकर रखलें। यह योग मूत्राशय की जलन, दृष्टिक्षीणता, गर्मी से उत्पन्न सिरदर्द, चक्कर, अनिद्रा, गर्मी से उत्पन्न ज्वर, प्रमेह तथा स्वप्नदोष में अत्यन्त गुणकारी है। इस से हाजमा भी तेज हो जाता है और कामेच्छा में भी कमी आ जाती है। इसे प्रातःकाल निहारमुँह रात्रि के (बासी) जल से 8 ग्राम की मात्रा में सेवन करें तथा इसके 1 घंटे बाद तक कुछ न खायें। इसी प्रकार 8 ग्राम शाम को (4 बजे के आस-पास) प्रातःकाल रखे हुए जल से सेवन करें। रात्रि भोजन इसके 2 घंटे बाद करें।

नोट—शौच यदि अधिक पतले दस्त के रूप में होता हो तो दूसरी मात्रा 4 बजे लेकर रात्रि को सोने से आधा घंटा पूर्व सेवन करें।

●250 ग्राम सूखा धनिया कूटकर आधा किलो पानी में उबालें। जब आधा पानी शेष रहे तब उतार छानकर 125 ग्राम मिश्री मिलाकर पुनः उबालें, जब पककर गाढ़ा हो जाए तब उतार लें। यह मधुर और स्वादिष्ट औषधि 8 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन चाटने से मिर्गी और दिमागी कमजोरी के कारण अकस्मात् आँखों के सामने अन्धेरा छा जाने में अत्यन्त लाभप्रद है।

●धनिया (सूखा हुआ) बारीक पीसकर मट्ठा या जल के साथ 8-8 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

●15 ग्राम सूखा धनिया ठण्डाई के रूप में पानी में घोटकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से एक ही दिन रक्तातिसार में लाभ हो जाता है।

●यदि मासिकधर्म अधिक मात्रा में आता हो तो 8 ग्राम सूखा धनिया आधा किलो पानी में उबालें। जब पानी आधा जल जाए तो उतारकर मिश्री मिलाकर गुनगुना पिलायें। इसकी 3-4 मात्राओं के सेवन से ही लाभ हो जाता है।

●शरीर के किसी भी भाग में यदि ऐसी सूजन हो जिसमें जलन (गर्मी) महसूस होती हो तो सूखा धनिया सिरके में पीसकर लेप करने से सूजन उतर जाती है।

●धनिया 3 ग्राम को पीसकर चावलों के धोवन के साथ सेवन कराने से गर्भवती स्त्री को आठवें माह में होने वाला गर्भशूल नष्ट होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है।

●गर्भिणी स्त्री को प्रारम्भिक महीनों में प्रायः प्रातः उठते ही वमन की शिकायत होती है। ऐसी स्थिति में धनिया लेकर 16 गुना पानी में छानकर प्यास लगने पर थोड़ा-थोड़ा पिलाते रहने से उत्तम लाभ मिलता है।

●हरा धनिया और त्रिफला साथ-साथ पीसकर खाने से आँखों की कमजोरी दूर होकर ज्योति बढ़ जाती है।

●मोतियाबिन्द में धनिया का अर्क आँखों में डालना लाभकारी है।

हरा पपीता

●कच्चे पपीते का ताजा दूध दाद, खाज और खुजली पर निरन्तर लगाते रहने से चर्मरोगों का जड़ से सफाया हो जाता है।

●15 दिनों तक निरन्तर कच्चे पपीता का रस बबासीर के मस्सों पर लगाने तथा नित्य दोपहर को पका हुआ आधा किलो पपीता खाने से बबासीर का रोग जड़ से नष्ट हो जाता है।

●कच्चे पपीता का रस (दूध) पानी में मिलाकर गरारे करने से बढ़े हुए टान्सिल ठीक हो जाते हैं।

●जूते की रगड़ से उत्पन्न छाले पर पपीते का सफेद दूध लगाना लाभप्रद है।

पोदीना

●पुदीना की चाय बनाकर सुबह-शाम पीने से हाजमा दुरुस्त हो जाता है तथा स्वास्थ्यवर्धक भी है। गर्मियों में इसको ठण्डाई या शर्बत में डालकर प्रयोग कर लाभान्वित हुआ जा सकता है।

● पोदीने का सत साबुन के पानी में घोललें । उसे सिर पर डालकर 15-20 मिनट तक सिर को खूब मसल कर धोने से (मात्र 2 या 3 बार यह क्रिया करने से) सिर की समस्त लीखें (जुएें) समाप्त हो जाती हैं तथा भविष्य में दुबारा बहुत लम्बे समय तक इनसे छुटकारा मिला रहता है ।

● तीव्र सिरदर्द में पोदीना की पत्तियों को मस्तक पर बाँधना ही गुणकारी है।

● एक पाव ताजा पोदीना का रस तथा कोल्ड क्रीम की शीशी की क्रीम निकालकर आपस में खूब भली प्रकार फेंट लें । जब झागदार क्रीम बन जाए तब इसे चेहरे पर लगाकर 5 मिनट तक लगा रहने दें तत्पश्चात् चेहरे को गरम पानी से धोकर ठण्डे पानी से फुहार लें । सप्ताह भर में यह क्रिया दो बार करते रहने से रंग निखरकर चेहरा अत्यन्त आकर्षक हो जाएगा ।

● हरा पुदीना पीसकर इसमें 2-3 बूँद नीबू रस की डाल कर चेहरे पर लगाकर कुछ देर तक बैठे रहें । यह क्रिया कुछ दिनों तक करने से चेहरे का समस्त मुंहासे नष्ट होकर चेहरे की कान्ति खिल उठेगी ।

● हैजा रोग में प्याज के रस में पुदीना का रस मिलाकर दस मिनट पर रोगी को पिलाने से अथवा पुदीना का रस और सौंफ का अर्क मिलाकर पिलाने से अत्यन्त लाभ होता है ।

● पुदीना के पत्ते अथवा नीबू का रस चूसने से हिचकियाँ तुरन्त बन्द हो जाती हैं । इससे मूत्र भी खुलकर आने लगता है ।

● बीमारी से उत्पन्न कमजोरी के कारण बढ़ी हुई दिल की धड़कन, अथवा मितली या उल्टी में पुदीना की चाय या पोदीना सूखी पत्तियों का चूर्ण सेवन करना अत्यन्त लाभप्रद है ।

● पुदीना के रस में शक्कर मिलाकर पीने से तृषा, दाह, अजीर्ण, यकृत विकार और कामला रोग ठीक हो जाते हैं ।

● पोदीना के रस में महीन मलमल का छोटा सा टुकड़ा भिगोकर इसका पिच गर्भाशय के मुख के पास रखने से नि:सन्देह ही गर्भ गिर जाता है ।

● पुदीना के पत्तों की लुगदी मूषक दंश पर बाँधने से (प्रति घंटे ताजे पानी की लुगदी बाँधें और बदलते रहें) 72 घंटे में मूषक दंश का विष मिट जाता है।

● पोदीना का रस 1 तोला में शक्कर मिलाकर बार-बार पिलाने से वमन और तृषा मिट जाती है ।

नोट—पुदीना की मात्रा 5 ग्राम है । यह आंतों, गुर्दों और कामशक्ति के लिए हानिकारक है । इसका दर्पनाशक रब्बेसूस या मुलहठी का सत और कतीरा है ।

मेथी

● 60 ग्राम मेथीदाना बारीक पीसकर एक गिलास पानी में डालें । 12 घंटे के बाद छानकर नित्य सुबह-शाम दिन में दो बार 6 सप्ताह तक पीते रहने से मधुमेह (डायबिटीज) रोग ठीक हो जाता है ।

नोट—इस प्रयोग के साथ यदि इसके हरे पत्तों की सब्जी भी खाई जाए तो अधिक व शीघ्र लाभ होता है ।

● आग से जलने पर मेथीदाना को पानी में पीसकर लेप करने से जलन दूर हो जाती है तथा फफोले नहीं पड़ते हैं ।

● मेथी और जौ के आटे को सिरके के साथ पीसकर गालों पर लेप करने से गालों की सूजन उतर जाती है ।

● यदि सर्दी के कारण मूत्र बूँद-बूँद टपकता रहता हो तो 6 ग्राम मैथी के बीजों को पानी से धोकर खूब खुश्क करके पीस लें और 10 ग्राम शहद मिलाकर रात के समय चाट लिया करें, कुछ दिनों के प्रयोग से यह शिकायत दूर होगी।

● मेथी के बीज 6 ग्राम को पानी में जोश देकर छान लें । फिर 20 ग्राम शहद मिलाकर पीने से बलगमी खाँसी और दमा में लाभ होता है ।

● मेथीबीज के ढाई तोला काढ़े में शहद मिलाकर सुखोष्ण पीने से छाती की पीड़ा तुरन्त शान्त हो जाती है ।

● धुली हुई छिलका रहित मैथी का चूर्ण 3 माशा गुड़ और घृत 1-1 तोला मिलाकर चाटने से गंठिया रोग की पीड़ा तथा प्रसूता स्त्री की सर्वांग वातपीड़ा अवश्य ही नष्ट हो जाती है ।

● पित्त ज्वर या तीव्र ज्वर में मेथीपत्र (मैथा का शाक) का स्वरस ढाई तोला में मिश्री 1-1 घंटे के अन्तर से 2-3 बार पिलाने से ज्वर का वेग शान्त होता है।

नोट—मैथी (बीज या दाना) की मात्रा 5 ग्राम है । गर्म प्रकृति वालों के लिए यह हानिकारक है । इसका दर्प नाशक घी, सिकन्जबीज, अनीमून, अनार, मैखुश और कासनी की पत्ती है । उसकी बदल (सब्सीटियूट) अलसी या हरी मैथी है ।

चिरौंजी

● चिरौंजी को पीसकर स्नान के थोड़ी देर पहले चेहरे पर लेप लगाने से मुँहासे इत्यादि मुखविकार नष्ट होकर चेहरे की त्वचा चिकनी, चमकदार, स्वच्छ, उजली होकर रौनक बढ़ जाती है ।

●100 ग्राम बारीक पिसी चिरौंजी में 15 ग्राम कच्चा सुहागा मिलालें, फिर पीसकर एकजान कर लें। तदुपरान्त इस चूर्ण को गुलाब जब में डालकर साफ खरल में खूब रेगड़ने के बाद खुजली वाले अंगों पर दिन में 4 बार लगाने से गीली खुजली दूर हो जाती है।

●20 ग्राम चिरौंजी मुख में डालकर खूब चबा-चबा करके खाने मात्र से छपाकी (शीत पित्त) नष्ट हो जाती है।

●चिरौंजी को तिल और भैंस के दूध के साथ पीसकर खाने से भिलावे की सूजन नष्ट हो जाती है।

●चिरौंजी को तैल के साथ पीसकर मालिश करने से मकड़ी का विष दूर हो जाता है।

●गाय के ताजे दूध में चिरौंजी को पीसकर सारे शरीर में नित्य मालिश करने से शरीर की त्वचा साफ, सुन्दर रहती है। इस प्रयोग से त्वचा का काला रंग साँवला और साँवला रँग गेहुँआ हो जाता है। वृद्धावस्था में झुर्रियाँ नहीं पड़ती हैं त्वचा तनी हुई स्निग्ध और मुलायम बनी रहती है।

●चिरौंजी को जल से महीन (बारीक) पीसकर और कपड़े से छानकर मिश्री युक्त शर्बत पी लेने से बढ़ता हुआ ज्वर रुक जाता है और चढ़ा हुआ ज्वर धीरे-धीरे उतरने लगता है। यह ज्वर शामक और शरीर को भी लाभप्रद है।

नोट—चिरौंजी की मात्रा 11 ग्राम तक है। यह गरिष्ठ है और देर से हज्म होती है। इसका बदल पिस्ता है तथा सिकन्जबीन और शहद इसके लिए दर्पनाशक है।

बादाम

●रात को पानी में भिगोयी हुई बादाम गिरियों को सुबह छीलकर दूध के साथ खाने से (आँखों से पानी बहना, आँखों की कमजोरी, आँखों का थकना आदि कष्ट दूर हो जाते हैं)

●मींगी-बादाम छिली हुई 50 ग्राम, वर्क चाँदी 10 ग्राम, दालचीनी और लौंग 10-10 ग्राम, मगज पिस्ता 20 ग्राम, केसर एक ग्राम, शहद 150 ग्राम लें। सभी औषधियों को बारीक पीसलें। फिर शहद में भली भाँति मिलाकर 4 से 6 ग्राम तक दूध से सेवन करने से (1 मास के प्रयोग से) तोतलापन शर्तिया नष्ट हो जाता है। कमजोरी, शक्तिहीनता तथा मूत्र अधिकता तथा जो बच्चे छोटी अवस्था में उच्चारण ठीक नहीं कर पाते हैं, उन्हें भी अमृततुल्य योग है।

●बादाम की मींगी 7 अदद, सौंफ और मिश्री 6-6 ग्राम लें। सौंफ और मिश्री का चूर्ण बनालें और मगज बादाम को छीलकर अधकुटा करके मिला करके रात्रि को सोते समय दूध के साथ सेवन करें। इसके सेवनोपरान्त पानी कदापि न पियें। मात्र 40 दिनों के प्रयोग से आँखों की दृष्टि इतनी अधिक तीव्र हो जाती है कि आँखों का नजर का चश्मा उतारकर फेंक देना पड़ता है। दिमागी कमजोरी भी दूर हो जाती है। चश्मा छुड़ाने के लिए रामबाण योग है।

●10 अदद बादाम को रात्रि में पानी में भिगोकर सुबह को छिलका उतारकर बारीक पीसकर तथा मक्खन व मिश्री 1-1 तोला मिलाकर 1 महीना तक खाने से दिमागी कमजोरी दूर हो जाती है।

नोट—बादाम की मात्रा 15 ग्राम है। यह गरिष्ठ, देर से हज्म होने वाला और आँतों को हानिकारक है। इसकी बदल चिलगोजा और अखरोट है। शक्कर, मिश्री, मस्तंगीरूमी इत्यादि इसके दर्प को नाश करने वाले हैं।

नमक

●गरम पानी में 60 ग्राम नमक को गाढ़ा पीसकर बद (वक्षण ग्रन्थि) जो जाँघों में निकलती है पर 3 बार गरम-गरम लेप करने से बैठ जाती है।

●लाहौरी नमक को गन्ने के सिरके में घिसकर स्त्री या पुरुष जिसके कपोलों पर श्यामलता लिए हुए धब्बे पड़े हुए हों, नित्यप्रति रात्रि को 1 मास तक लेप करें, तो यह रोग जड़ से दूर हो जाता है।

●40 ग्राम शुद्ध देशी मोम पिघलाकर इसमें 10 ग्राम पिसा हुआ नमक डालकर खूब घोटकर मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे आवश्यकता पड़ने पर फटी बिबाई में भर दिया करें तो बिबाई शीघ्र ठीक हो जाती है।

●खाने वाला नमक 60 ग्राम को 10 किलो पानी में औटा कर 8 दिन लगातार स्नान करने से खारिश खत्म हो जाती है।

●खाने वाला नमक 1 ग्राम असली गुलाब जल 50 ग्राम लें। पहले नमक को बारीक पीसक गुलाबजल में घोलकर कार्क (ढक्कन) युक्त शीशी में सुरक्षित रखलें। इसे 2-2 बूंद नेत्रों में डालने से नेत्रों की लाली, धुन्ध जाला नेत्रस्राव, आँखें आना तथा साधारण फूला कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

●सुरमें की भांति पिसा हुआ बारीक नमक 3 ग्राम को गाय की ताजा छाछ में खाने से आठ दिन में पेट के कीड़े मर जाते हैं।

●हाथ व बाँहों को गीला करके एक मुट्ठी नमक लेकर गोलाकार गति से मालिश करने से त्वचा में कोमलता आकर सुन्दरता बढ़ जाती है।

●त्वचा रूखी, सूखी खुश्क हो अथवा हाथ-पैरों में बिवाई फटती हो तो गरम पानी में नमक मिलाकर आक्रान्त त्वचा को धोवें । यह प्रयोग सप्ताह में एक बार करें । त्वचा में कोमलता आ जायेगी ।

●गरम पानी में नमक डालकर पैरों को धोने से वे सुन्दर और मुलायम हो जाते हैं ।

●1 जग में गरम जल भरकर डेढ़ चम्मच नमक घोलकर सुबह-शाम मुख धोने से मुँहासे नष्ट हो जाते हैं ।

नोट—आँखें बन्द रखें । क्योंकि तेज नमक आँखों के लिए हानिकारक है तथा मुख धो चुकने के बाद मुख को रगड़ते हुए कदापि न पोंछे बल्कि तौलिया या ब्लाटिंग पेपर से नमी सुखा दें । तदुपरान्त कोई तैल या अच्छी क्रीम की हल्की सी परत चुपड़ दें । मात्र एक सप्ताह के प्रयोग से ही मुँहासे नष्ट हो जायेंगे ।

●नमक को तैल में भूनकर दर्द वाले (मांसपेशियों के दर्द) मालिश करने तथा गुनगुने पानी का आधा कप में चुटकी भर नमक घोलकर पिलाने से तनाव जाता रहता है ।

●गर्दन ऐंठ गई हो अथवा मांसपेशियों में दर्द हो तो नमक और हल्दी की पोटली बाँधकर गुनगुने तैल में भिगोकर सेंक करने से लाभ होता है ।

●यदि दाँत में कीड़ा लगा हो तो आधा गिलास गरम पानी में आधा चम्मच नमक घोलकर उसका घूंट भरकर मुख बन्द करके कुल्ला करने से कीड़ा, टीस सभी ठण्डे पड़ जाऐंगे । यदि ठण्डा पानी दाँतों में लगता हो तो सरसों के तैल की 2-4 बूँदें नमक की चुटकी में डालकर सुबह-शाम दाँतों के अन्दर और बाहर मलें । यदि दाँत हिलते हों तो नमक और बड़ी पीपल पीस कर उसमें तिगुना शहद मिलाकर दाँतों और मसूढ़ों पर मुलायम उँगली से मालिश सी करें । नमक के किसी भी मंजन को लगा करके मुख को ढीला छोड़ देना चाहिए ताकि गन्दा विषैला पानी (राल) बह जाए दन्तशूल में 1 ग्राम बारीक पिसा नमक तीन ग्राम गन्ने के सिरके में मिलाकर एक पानी के भरे गिलास में घोलकर कुल्ला करें ।

●एक चुटकी नमक जीभ पर रखने के 10 मिनट बाद एक गिलास ठण्डा पानी पी लेने से सिर का दर्द दूर हो जाता है ।

●पिसा हुआ नमक, शहद में गूंधकर कपड़े में लपेटकर ऊपर से मिट्टी लगाकर आग पर रखें, जब मिट्टी खूब सुर्ख हो जाए तो नमक को अन्दर से निकालकर पीसकर रखलें । एक ग्राम की मात्रा में इस नमक को प्रतिदिन भोजनोपरान्त थोड़े से पानी से खाने से नजला, जुकाम, गैस और जोड़ों का दर्द नष्ट हो जाता है ।

●बिच्छू, जहरीली मक्खी तथा बर्र आदि के काटने (डंक मारने) पर जरा सा पानी लगाकर बारीक पिसा हुआ नमक रगड़ने से दर्द और जलन बन्द हो जाती है तथा सूजन नहीं चढ़ती है ।

●यदि किसी ने भूलवश धतूरा खा लिया हो तो एक कप पानी में एक चम्मच भर नमक घोलकर पिलाने से (जब तक वमन न हो, तब तक) प्रत्येक 5-7 मिनट बाद उक्त घोल तैयार करके पिलाते रहें । वमन होकर जहर का असर निकल जाएगा।

●गरम पानी में नमक डालकर पैरों को धोने से पैरों की सूजन नष्ट हो जाती है । इस प्रयोग से पैर सुन्दर और मुलायम भी हो जाते हैं । रात्रि को सोते समय नमक मिलाये हुए गरम पानी में थोड़ी देर पैर डाले रखना और फिर मोटे कपड़े से पोंछकर सोने से दिनभर की समस्त थकान उतर जाती है फलस्वरूप गहरी और सुखदायी नींद आती है ।

●नमक मिलाए हुए गरम पानी के गरारे करने से गले की सूजन और दर्द मिट जाता है ।

●बलगमी खाँसी में नमक की डली मुख में रखने से खाँसी के दौरे कम पड़ जाते हैं तथा बलगम पतला पड़कर सरलतापूर्वक बाहर निकल जाता है । गले की खराश या गला बैठ जाने पर नमक मिले गरम जल से गरारे करना अत्यन्त ही लाभप्रद है । नजला व जुकाम में नमकीन गरम पानी पीने से बहुत ही जल्द आराम मिलता है । पुराने नजला व जुकाम में नित्यप्रति नमक के पानी से गरारे करने और इसी पानी से नाक को अन्दर से धोने से बहुत लाभ मिलता है । यदि कौआ लटक गया हो तो ठण्डे नमकीन पानी से गरारे करने से आराम मिलता है । यदि सर्दी के कारण आवाज बैठ गई हो तो थोड़े से गरम पानी में नमक मिलाकर गरारें करने से आवाज खुल जाती है ।

●यदि आमाशय में भोजन सड़ जाए तो एक गिलास गुनगुने पानी में 12-13 ग्राम नमक घोल (मिला) कर पिलाने से कै आ जाती है तथा मैदे का खराब भोजन अथवा विष बाहर निकल जाता है ।

●रोग रहित हो जाने पर गरम पानी में नमक मिलाकर नहाने से रोगी की शारीरिक शक्ति अतिशीघ्र लौट आती है ।

●अंगुलबेड़ा होने पर जब लगातार दर्द हो रहा हो तो नमक के पानी में अँगूठा या ऊँगली डुबोय रखने पर दर्द घट जाता है ।

●प्रत्येक घंटे पर नमक को पानी में घोलकर लेप करने से एक सप्ताह में ही दाद नष्ट हो जाता है ।

●बात करते-करते राल टपकती हो तो दिन में 3-4 बार नमकीन पानी या नमकीन सिकन्जी देने से मात्र एक सप्ताह में यह विकार नष्ट हो जाता है ।

●गर्मी का असर हो तो नमकीन शिकन्जबीन पीना लाभप्रद है । यदि अजीर्ण से जलन हो तो 10 ग्राम नमक ताजा पानी डेढ़ दो गिलास में घोलकर पीना चाहिए ताकि वमन होकर छाती सही हो जाए अथवा पोदीना घोटकर नमकीन करलें और नीबू रस की 5 बूंदें पड़े हुए जल को पियें ।

●दस्तों की शिकायत होने पर पानी की कमी (डिहाईड्रेशन) हो जाती है। ऐसी स्थिति में ग्लूकोज और नमक पानी में घोलकर बार-बार पिलाते रहने से शरीर में पानी की कमी नहीं हो पाती है फलस्वरूप खुश्की नहीं आती है । बच्चों को उल्टी, दस्त होने पर (पानी की कमी हो जाने पर) एक लीटर पानी को उबालकर ठण्डा करे तदुपरान्त इसमें एक चाय के चम्मच भर नमक और आठ चम्मच चीनी मिलाकर बार-बार यही पानी पिलायें ताकि उसके रोगी बच्चे के शरीर में पानी की कमी न हो सके ।

●एक कि.ग्रा. गरम पानी में चार चम्मच नमक डालकर सेंक करने से गठिया में अत्यन्त लाभ होता है ।

●मोच व चोट में नमक को तवे पर सेंककर इसे गरम-गरम ही मोटे कपड़े में बाँधकर आक्रान्त अंग को सेंकना अत्यन्त लाभकारी है ।

नोट—संतृप्त घोल बनाने की विधि पानी में नमक को डालते जाऐं और हिलाते जाऐं जब नमक डालते-डालते घुलन बन्द हो जाए तो यही संतृप्त घोल बन जाता है)

●बिच्छू ने दाँये पैर में काटा हो तो बाँये कान में उक्त संतृप्त घोल को 4 बूँद डाल दें तथा इसी घोल को बिच्छू दंश करने के स्थान पर लगायें और एक घूँट पीलें । निश्चित आराम मिलेगा ।

●1 भाग नमक 5 भाग पानी में मिलाकर काजल की भाँति आँख में लगा देने से बिच्छू का जहर तुरन्त उतर जाता है । उपयुर्क्त सन्तृप्त घोल के लगाने से अन्य कीड़ों-मकोड़ों का काटा हुआ भी ठीक हो जाता है ।

●बारीक पिसा हुआ नमक सरसों के तैल में मिलाकर दाँतों पर मलने से दाँत मोती की भाँति चमकदार और सफेद हो जाते हैं । कीड़ा भी नहीं लगता है तथा मसूढ़ों से पीप और रक्त आना तथा मुख से दुर्गन्ध आना बन्द हो जाता है।

●नमक और प्याज को बारीक करके फोड़े पर बाँधने से फोड़ा जल्द ही पककर फूट जाता है ।

●आधा किलो नमक 15 किलो गरम पानी में मिलाकर गठिया के रोगी को निरन्तर कुछ दिनों तक स्नान करने से लाभ होता है ।

●नमक और सिरका मिलाकर सिर की गंज और दाद में लगाना लाभप्रद है।

●पिसा हुआ नमक सरसों के तैल में मिलाकर शरीर में मालिश करने से खुश्की दूर होकर रोमछिद्र खुलकर गन्दगी दूर हो जाती है ।

●पिसा नमक 1 भाग एवं पुराना सिरका 3 भाग को मिलाकर गरारें करने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है ।

●नमक 1 भाग तथा सरसों का तैल 3 भाग को मिलाकर या मसूढ़ों पर मालिश करने से उनका वरम और टीस दूर हो जाती है तथा वादी का गंदा पानी और रक्त निकल जाता है ।

●यदि शरीर का कोई भाग जल गया हो तो उस पर नमक छिड़क देने से छाला नहीं पड़ता है ।

●गाय के घी में नमक मिलाकर खाने से विष नष्ट हो जाता है ।

●आधा-आधा चम्मच नमक और शहद मिलाकर खाने से आधासीसी (आधे सिर का दर्द) बन्द हो जाता है ।

●5 ग्राम नमक की कंकड़ी को अग्नि में गरम करके 10 मि.ली. पानी में बुझा करके (यह एक मात्रा है) इसी जल को खाँसी के रोगी को प्रतिदिन तीन बार पिलायें । लाभप्रद योग है ।

●मिट्टी की चिलम में कंकड़ी के स्थान पर नमक की डली रखकर और ऊपर से तम्बाकू रखकर लगभग छः मास तक श्वास रोगी को चिलम पीता रहे। तदुपरान्त चिलम में प्रयुक्त की गई कंकड़ी प्रति दिन सूक्ष्म कर 1-2 डेसीग्राम की मात्रा में गरम पानी से सेवन भी करें तो श्वास रोग में अचूक लाभ होता है।

●नमक के चूर्ण का सूक्ष्म नस्य लेने से हिचकी तुरन्त दूर हो जाती है ।

●2 डेसीग्राम नमक शीतल जल से सेवन करने से सिरदर्द मिट जाता है।

●नमक चूर्ण की पोटली बनाकर सरसों के तैल में भिगोकर गरम करके धीरे-धीरे पसलियों को सेंक करने से पार्श्वशूल नष्ट हो जाता है । यदि 1 ग्राम नमक चूर्ण को गरम जल से सेवन करें, तो भी दर्द शान्त हो जाता है

●किसी भी कारण से मूच्छित रोगी को 1 डेसीग्राम नमक को 3 मि.ली. जल में घोलकर नासाछिद्रों में बूंद-बूंद करके टपका देने से तुरन्त चेतना आ जाती है।

●अपस्मार का दौरा पड़ने पर रोगी के हाथों का हथेलियों में थोड़ा सा नमक रख देने से तुरन्त दौरा शान्त हो जाता है । यह चमत्कारिक प्रयोग है ।

●भोजनोपरान्त 1 ग्राम नमक चूर्ण को जल से सेवन करने से भोजन पचता है।

●नमक चूर्ण 50 ग्राम एवं शुद्ध घी 250 ग्राम को खरल में डालकर खूब मर्दन कर रखलें। प्रतिदिन सोते समय 10 ग्राम नमक चूर्ण 50 मि.ली. गरम जल से सेवन कर लेने से कोष्ठवद्धता (कब्ज) दूर हो जाती है।

●नमक चूर्ण 30 ग्राम को गाय के मट्ठे के साथ प्रातःकाल निराहार 3 दिन लेने से उदर कृमि मर जाते हैं।

●नमक चूर्ण 50 ग्राम को कड़ाही में मन्दाग्नि में भूनें। जब इस चूर्ण का रंग श्वेत हो जाए तब उतारकर सुरक्षित रखलें। विषम ज्वर के रोगी को डेढ़ ग्राम नमक आधा लीटर गरम पानी में घोलकर प्रातःकाल निहारमुंह ज्वर आने से पूर्व पिलादें। ज्वर घट जाने पर पुनः पिलादें। तुरन्त लाभ मिलता है।

●नमक चूर्ण 40 ग्राम, को 5 मि.ली. जल में मिलाकर पीसलें और इसी में 100 मि.ली. तिल का तैल मिलाकर मन्दाग्नि पर पाक कर लें। पानी जल जाने और तैल मात्र शेष रह जाने पर तीन दिन रखकर तदुपरान्त निथार कर साफ शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें। इस तैल को कान में गुनगुना करके डालने से कर्णशूल, बधिरपन, कर्णस्राव आदि विकार दूर हो जाते हैं।

●नमक को भूनकर पीसकर मंजन करने से, दन्त शूल शान्त हो जाता है।

●नमक को धतूरे की मूल के साथ पीसकर व्रणशोथ पर लगाने से शोथ और वेदना दोनों ही शान्त हो जाती हैं।

●नमक के घोल से व्रण (जख्म) धोने से गन्दगी भी दूर हो जाती है जिससे घाव जल्द व आसानी से भरता है।

●नमक का गाढ़ा लेप कर ऊपर से गरम करके बेर के पत्ते बाँधने से फोड़ा पककर शीघ्र ही फूट जाता है।

●नमक की डली को नियमित रूप से घिसकर सफेद दागों पर लगाना लाभप्रद है।

●नमक को बबूल के गोंद के साथ बारीक पीसकर पानी में मिलाकर कपड़े में रखकर कण्ठमाला में लगाना अत्यधिक हितकारी है।

●नमक को तिल के तेल के साथ मालिश करने से आमवात की पीड़ा शान्त हो जाती है।

●सर्प विष के रोगी को नमक मिश्रित जल बार-बार पिलाकर (जब तक सम्पूर्ण विष न उतर जाए तब तक लगातार) बार-बार वमन कराते रहना अतीव गुणकारी है। यही योग धतूरे के विष में भी उपयोगी है।

नोट—नमक की मात्रा 1 से 7 ग्राम तक है। यह दिमाग और फेफड़ों के कमजोर रोगी को हानिकारक है। इसके दर्प को नष्ट करने हेतु तर और चिकने पदार्थ का उपयोग होता है। इसका बदल लाहौरी नमक है। हिस्टीरिया, मृगी, अतिरक्तदाब, जलोदर, सूजन, गुर्दे के रोग, खुजली, दाद और गठिया आदि रोगों से पीड़ित रोगी को नमक सेवन करना निषेध है।

नमक के अन्य विभिन्न प्रयोग

●बरसात की ऋतु में कुटी हुई लाल मिर्च को खराब होने से बचाने हेतु उसमें थोड़ा सा नमक मिलाकर रखना चाहिए।

●भिन्डी, कटहल, लसोड़ा जैसी चेंपदार सब्जियों को काटते समय नमक हाथ में लगा लेना चाहिए। यदि चेंप लग ही गया हो तो भी नमक लगाकर हाथ रगड़कर पानी से साफ कर लें।

●प्याज को काटने की गन्ध यदि चाकू या छुरी से नहीं जा रही हो तो उस पर नमक रगड़ देना चाहिए।

●कढ़े दूध में नमक मिला देने से मक्खन शीघ्र निकल आता है।

●गैस चूल्हा या स्टोव पर विभिन्न तरल पदार्थ गिरने से उत्पन्न हुई गंध व गन्दगी साफ करने हेतु बारीक पिसा हुआ नमक से घिसकर साफ करने से गन्ध, गन्दगी दूर होकर स्टोव अथवा गैस चूल्हा चमक उठता है।

●कढ़ी जब अधिक फुदकने लगे तो नमक डाल दें। कढ़ी फुदकना बन्द हो जाएगी।

●अचार डालते अथवा परोसते समय यदि हाथ तैल की चिकनाई में सन गये हों तो बारीक पिसा नमक हाथों पर लगाकर मलकर साफ करलें।

●काफी उबालने से पहले उसमें चुटकी भर नमक डाल देने से काफी की गन्ध तेज (तीव्र) हो जाती है।

●पिलपिले टमाटरों को सख्त करने के लिए उन्हें बरफ के पानी में नमक डाल कर 10 मिनट तक डुबोयें। टमाटर सख्त हो जाऐंगे।

●जले हुए बरतनों को नमक डालकर माँजने से शीघ्र व अधिक साफ हो जाते हैं। कोयला या राख में नमक पीसकर मिलाकर बरतन माँजने से अधिक साफ-स्वच्छ व चमकदार हो जाते हैं।

●लालटेन को टंकी (मिट्टी के तैल) में नमक डाल देने से रोशनी अधिक चमकीली हो जाती है।

●गरम पानी में नमक डालकर उसमें कुछ देर तक झाड़ू रख देने से झाड़ू की नोंक कड़ी होकर अधिक दिनों तक चलती है।

●फर्नीचर पर लगे स्याही इत्यादि के दाग धब्बे नमक मिले जल में कपड़ा भिगोकर मलने से सरलता से छूट जाते हैं।

●यदि कपड़े (रेशमी अथवा सूती) रंग छोड़ते हों तो नमक मिले जल में आधा घंटे तक भिगोयें रखने के पश्चात् धोकर सुखाने से कभी रंग नहीं छोड़ता है।

●यदि कान में मच्छर अथवा कोई कीड़ा घुस गया हो तो गरम पानी में जरा सा नमक मिलाकर उसकी बूंदें कान में टपकाने से कीड़ा बाहर आ जाता है।

●कपड़े-तौलिया आदि हल्के रोयेंदार बने रहें इस हेतु धुलाई के पश्चात् उनको कुछ देर तक नमक मिले जल में पड़ा रहने दें, तदुपरान्त धोकर सुखा लें। तौलिया सदैव तेज धूप में सुखानी चाहिए। इससे उसकी चमक बरकरार रहेगी। गरम पानी में नमक मिलाकर कपड़े धोने से शीघ्र तथा अधिक साफ हो जाते हैं।

●सर्दियों में नहाने के पानी में 1 चम्मच नमक डालकर स्नान करने से त्वचा कान्तिमय बनी रहती है।

●चेहरे पर झाँइयाँ हो तो सिरके में नमक व शहद मिलाकर (पेस्ट बनाकर) लेप करना अतीव गुणकारी है।

नारियल

●नारियल खाने से चेचक नहीं निकलती है। यदि इस रोग के फैलने के समय दुग्धपान कराने वाली माँ नित्य 20 से 40 ग्राम तक नारियल खाये तथा यदि शिशु ने दुग्धपान करना छोड़ दिया हो तो उस बच्चे को 6 से 10 ग्राम तक नारियल खिलाये तो बच्चा चेचक की बीमारी से सुरक्षित रहता है।

●यदि पान खाने से जीभ फट गई हो तो सूखे नारियल की गिरी (गोला) और मिश्री मिलाकर चबाना अत्यन्त लाभप्रद है।

●नारियल के तैल में पानी मिलाकर और खूब भली प्रकार मथकर सिर व पैर के तलुवों पर मालिश करने से शरीर की गर्मी शान्त हो जाती है।

●नारियल के तैल की नाखूनों पर मालिश करने से उनकी (नाखूनों की) आयु तथा चमक बढ़ जाती है।

●नारियल की सूखी पुरानी गिरी (गोला) 1 भाग और हल्दी चौथाई भाग दोनों को बारीक कूटकर पोटली में बाँधकर हल्का गरम करके चोट, सूजन तथा दर्द वाले स्थान पर बाँधने से सूजन का दर्द दूर हो जाता है।

●हरे नारियल के पानी पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। नारियल का तैल पिलाने से भी पेट के कीड़े मर जाते हैं।

नोट—नारियल सुद्दा लाता है तथा देर से हजम होता है। इसके दर्प को नष्ट करने हेतु शक्कर, मिश्री व खट्टे मेवे खायें। इसका बदल पिस्ता, बादाम और चिलगोजा है।

नीबू

●नीबू का रस और नमक मिलाकर स्नान करने से त्वचा का रंग निखरकर सौन्दर्य बढ़ जाता है।

●दाँतों से रक्त बहना (पायोरिया) में 1 गिलास ताजा पानी में 2-3 नीबूओं का रस निचोड़कर दिन में 3-4 बार कुल्ला करना अत्यन्त लाभप्रद है।

●नीबू के सेवन से स्कर्वी रोग (शरीर पर चकत्ते पड़ जाना, तथा समस्त शरीर निर्बल हो जाना ठीक हो जाता है।

●चाय, काफी के स्थान पर नीबू की चाय पीने से स्वास्थ्य में सुधार हो जाता है।

●नीबू खाते रहने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं, इसका शरबत पीते रहने से दाह शान्त होकर, दिल की धड़कन मिटती है, मल-मूत्र साफ आता है।

●प्रात:काल पाखाना के बाद तथा भोजनोपरान्त नीबू का रस निचोड़ कर पीने से कुछ ही दिनों में पुरानी से पुरानी कब्ज नष्ट हो जाती है।

●नीबू के प्रयोग से हैजा, टायफाइड, प्लेग, संग्रहणी इत्यादि के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। नीबू संक्रामक रोगों का शमन करता है तथा शरीर में प्रतिरोधात्मक क्षमता (बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति) बढ़ाता है। क्योंकि इसमें विटामिन 'सी' और 'बी' पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है तथा अन्य विटामिनों से भी भरपूर है।

●लगभग डेढ़ पाव उबाले हुए गरम पानी में दो नीबूओं का रस निचोड़कर अपनी इच्छानुसार शुद्ध शहद मिलाकर रात्रि के सोते समय सेवन करने से जुकाम का तेज से तेज प्रकोप भी शान्त हो जाता है।

●नीबू में पिसी हुई काली मिर्च छिड़ककर जरा सा गरम करके चूसना मलेरिया ज्वर में अत्यधिक लाभप्रद है।

●हैजा में नीबू के रस में चीनी मिलाकर बार-बार सेवन करने से तत्काल लाभ पहुँचता है।

●30 ग्राम शुद्ध शहद में 1 नीबू का रस मिलाकर सिकन्जबीन बनाकर पीने से कुछ ही महीनों में मोटापा दूर हो जाता है।

●नीबू का रस सिर में लगाने से रूसी (फियास) नष्ट हो जाती है।

●नीबू के रस में आँवले पीसकर बालों की जड़ों में मलने से बाल घने, मुलायम, लम्बे और चमकदार हो जाते हैं ।

●लकवा द्वारा पीड़ित किसी भी अंग पर 20-25 नीबूओं को आग पर गरम कर उसकी भाप से पीड़ित अंग का सेंक करने से पीड़ा शान्त हो जाती है।

●यकृत की गड़बड़ी और आँखों में चकाचौंध होने पर गरम पानी में नीबू के रस को मिलाकर पीना लाभप्रद है ।

●नौसादर को नीबू के रस में पीसकर लगाने से दाद नष्ट हो जाता है ।

●**खूनी बवासीर में**—कागजी नीबू काटकर 6 ग्राम कत्था पीसकर लगाकर रात को छत पर (ओस में) रखदें । प्रात:काल उक्त नीबू के दोनों टुकड़ों को चूसलें। मात्र 5 दिनों के प्रयोग से आराम मिल जाता है ।

●आधा पाव ताजा पानी में नीबू निचोड़कर दिन में 3 बार पीने से पेचिश में लाभ मिलता है ।

●आधे नीबू का रस, पानी 30 ग्राम, जीरा और छोटी इलायची दाना (पिसा हुआ) 1-1 ग्राम सभी को मिलाकर पीने से उल्टियाँ रुक जाती हैं । आवश्यकता पड़ने पर यह प्रयोग 2-2 घंटे पर किया जा सकता है ।

●नीबू को काटकर शक्कर छिड़ककर अंगारों पर रखकर गरम करें । जब शक्कर शोषित हो जाए तब उसे शीतल हो जाने पर चूसने से ज्वर की तृष्णा और दाह शान्त हो जाती है ।

●नीबू का रस और शुद्ध मधु 1-1 तोला नित्य पीने से दमा की बीमारी नष्ट हो जाती है ।

●नीबू का रस 20 तोला, शक्कर 100 तोला को मिलाकर एक काँच की बरनी में रखकर 15 दिन तक धूप में रखें । जब शक्कर और रस खूब घुल मिलकर एक हो जाए तो सुरक्षित रखलें । इसे नित्य भोजन के साथ 1 तोला की मात्रा में सेवन करने से मन्दाग्नि, अरुचि और अजीर्ण रोग दूर हो जाता है तथा कभी नहीं होते हैं ।

●बगैर दूध की चाय बनाकर इसमें दूध के स्थान पर नीबू का रस मिलाकर गरम-गरम पीने से तत्काल उसी समय सिर का दर्द समाप्त हो जाता है ।

●नीबू के छिलकों को बारीक पीसकर माथे पर लेप लगाने से आधाशीशी का दर्द नष्ट हो जाता है ।

●छाया-शुष्क नीबू का छिलका 10 ग्राम को रात्रि में 500 ग्राम पानी में भिगोकर फिर उसमें 20 ग्राम मिश्री मिलाकर पीने से उन्माद रोग में लाभ होता है।

●आवश्यकतानुसार नीबू के बीजों को पीसकर सिर के बालों के गंज रोग में लेप लगाने से बाल पुन: उग आते हैं ।

●ताजा नीबू का रस 50 ग्राम गुनगुने पानी में मिलाकर गरारे करने से मुख के छालों में तुरन्त आराम हो जाता है ।

●नीबू का रस निकाल लें । उसे एक चीनी मिट्टी की प्याली में रखकर टूथ ब्रुश से दैनिक रूप से मंजन की भाँति दाँतों की सफाई करने से दाँत मोतियों की भाँति चमक उठते है तथा मुख की दुर्गन्ध और पायोरिया का समूल नाश हो जाता है ।

●दाद में दिन में 2-3 बार खुजलाकर उस पर नीबू का रस मलने से अत्यधिक लाभ होता है ।

●हृदय का दर्द होने पर एक गिलास गरम पानी में 1 बड़ा कागजी नीबू का रस निचोड़ कर पी लेने से आराम मिलता है । 15 दिन लगातार यह क्रिया करने से कलेजे का दर्द मिट जाता है ।

●नीबू के रस में सज्जीखार डालकर मिलाकर सुरक्षित रखलें । प्रतिदिन सुबह-शाम 1-1 बूँद यह दवा डालने से कान दर्द तुरन्त शान्त हो जाता है ।

●शहद और नीबू का रस 25-25 ग्राम की मात्रा में दिन भर में प्रतिदिन तीन बार पीने से कुछ ही दिनों में मोटापा कम हो जाता है ।

●डेढ़ पाव पानी में एक नीबू का रस डालकर पीने से (दिन भर में 5-7 बार पियें । यह 1 मात्रा है, इस प्रयोग से पतले दस्त आना बन्द हो जाते हैं ।

●100 नीबूओं का रस, आधा सेर पानी तथा 1 सेर मिश्री लें । पहले मिश्री पानी में मिलाकर चाशनी गाढ़ी हो जाए तब नीबूओं का रस मिलादें तथा 2-3 उबाल आ जाने पर उतारकर सुरक्षित रखलें । यह नीबू का शर्बत तैयार हो गया। यह पाचन शक्ति बढ़ाता है तथा सिरदर्द नाशक है ।

●इमली का गूदा 10 ग्राम, अनारदाना 4 ग्राम, भुनी हींग डेढ़ ग्राम, जीरा और धनियां 2-2 ग्राम, गुड़ 15 ग्राम, अमरबेल 4 ग्राम, काली मिर्च 1 ग्राम, सैंधा नमक 3 ग्राम, नीबू का सत 2 ग्राम । सभी औषधियों को घोटकर सुरक्षित रखलें । इन रोचक गोलियों (2-2 गोली की मात्रा में) दिन में 3 बार लेने से गैस-ट्रबल, अफारा, वमन की इच्छा, अरुचि आदि नष्ट हो जाती है । यह गोलियाँ अत्यन्त ही स्वादिष्ट होती हैं ।

●सौंफ, भुना जीरा, सौंठ 10-10 ग्राम, भुना धनिया, मिश्री 20-20 ग्राम

नीबू का सत (टाटरी) 5 ग्राम पिपरमेन्ट 2 ग्राम, सेंन्धा नमक 15 ग्राम सभी को कूटपीसकर तैयार कर लें। अन्त में टाटरी और पिपरमेन्ट मिलाकर घोट लें। यह अत्यन्त स्वादिष्ट चूर्ण है तथा अग्निवर्धक, अग्नि दीपक तथा स्वादिष्ट पाचक है।

●50 नीबूओं को किसी खुरदरी वस्तु से रगड़ें। तदुपरान्त गोदनी से गोदकर फिर 50 नीबूओं का रस किसी बर्तन में रख लें। ऊपर से डालें तत्पश्चात् उसमें नमक, काली मिर्च, काला नमक, गरम मसाला इत्यादि उचित मात्रा में डालकर 10 दिनों तक धूप में तथा इसके बाद 10 दिनों तक छाया में रखें। उसके बाद सेवन करें यह अत्यन्त ही स्वादिष्ट नीबू का अचार है।

●100 पके हुए कागजी नीबूओं को लेकर उनके चार-चार टुकड़े करलें। (किन्तु यह टुकड़े अलग-अलग न होकर नीबू में ही लगे या जुड़े रहना चाहिए) फिर इनको किसी स्टील के बर्तन में हल्की आग पर उबालें जब ये नीबू उबलकर कुछ-कुछ गल जाए तब अजवायन 1 पाव, जीरा और सैंधानमक 50-50 ग्राम, सौंठ 10 ग्राम, काली मिर्च 25 ग्राम शक्कर डेढ़ किलोग्राम उक्त नीबूओं को किसी काँच की बरनी (मर्तवान) में प्रतिदिन बर्तन को हिला-डुलाकर मसाले को खूब मिला लें। उसके बाद इस मीठे अचार को उपयोग में लें। इसके सेवन से पेट साफ रहता है, कब्ज मिट जाती है, वमन दूर होती है तथा यह अचार अत्यन्त ही स्वादिष्ट और पाचक है।

नोट—यह अचार जितना अधिक पुराना होगा उतना ही अधिक गुणकारी होगा।

●नीबू का पतला छिलका उतार लें। अन्दर की सफेदी छिलके के साथ नहीं आने पाए, तदुपरान्त नीबू के छिलके और रस के बीज सहित गिलास में रखकर शीतल जल भरकर रात्रि को ओस में रखदें तथा प्रात:काल छानकर पीलें। इस प्रयोग से कोष्ठबद्धता दूर हो जाती है।

●गरम पानी में कागजी नीबू का रस तथा थोड़ी सी चीनी मिलाकर प्रात:काल सेवन करने से भी कोष्ठबद्धता दूर हो जाती है।

●मुर्दासंख को नीबू के रस में घर्षणकर मुख पर लेप करने से मुखमण्डल के चेचक दाग (गड्ढे) दूर हो जाते हैं।

●प्रतिदिन प्रात:काल 1 कागजी नीबू का रस शीतल या उष्ण जल में सेवन करने से त्वचा निखर उठती है। फलस्वरूप झाँई, कील और मुँहासे इत्यादि दूर होकर सौन्दर्य में चार चाँद लग जाते हैं।

●दूध में खड़ी (साबुत) मसूर पीसकर इसमें कागजी नीबू का रस मिलाकर इस उबटन का लेप करने से मुखमण्डल की झाँइया दूर हो जाती हैं।

●यदि प्रसव (बच्चा पैदा होने) में विलम्ब हो रहा हो और जच्चा परेशान हो तो बिजौरा नीबू की जड़ प्रसूता की कमर में बाँध देने से प्रसव शीघ्र हो जाता है। प्रसवोपरान्त इसे खोलकर फेंक दें।

●बिच्छू-दंश में नीबू का बीज पीसकर सैंधा नमक मिलाकर पीना अत्यन्त ही लाभप्रद है अथवा दंश स्थान पर बाह्य प्रयोगार्थ भी उपरोक्त औषधि अत्यन्त लाभकारी है। यही योग ततैया एवं मधुमक्खी इत्यादि के काटने पर भी आशु गुणकारी है।

●जामुन के पत्तों का रस, नीबू रस में मिलाकर सेवन करने से भाँग का नशा दूर हो जाता है।

●नीबू के सूखे हुए छिलकों के साथ गन्धक मिलाकर धूनी देने से खटमल भाग जाते हैं।

●अजीर्ण होने पर भोजन के पूर्व, अदरक, सैंधानमक और नीबू का सेवन अत्यन्त ही लाभप्रद होता है अथवा नीबू को काटकर सौंठ और सेंधानमक मिलाकर आग पर गरम करके चूसना चाहिए।

●नित्यप्रति भोजन के साथ दो नीबूओं को सेवन करते रहने से विशूचिका (हैजा) का भय समाप्त हो जाता है।

●बिजौरा नीबू के 15 बीज लें। इन्हें दो तोला पानी में पीसकर पिलाने से हैजा में लाभ होता है।

●नीबू का रस पानी के साथ सेवन करने से वमन शान्त हो जाती है।

●नीबू का रस तेज कहवा में बिना दूध मिलाये सेवन करना मलेरिया ज्वर में अत्यधिक लाभप्रद है।

●बिजौरा नीबू के शुष्क छिलकों का क्वाथ बनाकर पीने से उदरकृमि नष्ट होकर मल के रास्ते बाहर निकल जाते हैं।

●नीबू के पत्तों का रस 4 तोला, बच, असगन्ध, पीपरी (प्रत्येक 3-3 तोला) सभी को खरल कर रस मिलाकर भैंस के मक्खन में घोटकर 21 दिन तक प्रयोग करने से कुच कठोर हो जाते हैं।

●नीबू के एक चौथाई तोला रस में मिश्री मिलाकर जल के साथ सेवन करने से आवेशजनित रोग मिटकर हृदय की बढ़ी हुई धड़कन नियमित हो जाती है।

●चार नीबूओं के रस में एक गिलास शीतल जल मिलाकर सेवन करने से हिस्टीरियाजन्य हृदय की धड़कन ठीक हो जाती है।

●रतौंधी में नित्य नीबू के रस की दो बूंदें आँखों में डालने से लाभ होता है।

●निमोनिया में, दिन में 4-5 बार 2-2 तोला नीबू का रस 250 ग्राम जल के साथ सेवन करना लाभप्रद है।

●रक्तस्राव में आधा से 1 छटांक तक नीबू का रस शीतल जल के साथ सेवन करना अत्यधिक लाभप्रद है।

●अधिक घी खा लेने पर 5 नीबूओं का रस शीतल जल में मिलाकर सेवन करने से अजीर्ण होने की सम्भावना दूर हो जाती है।

●सर्पदंशित स्थान पर तेजधार युक्त विसंक्रमित चाकू से काटकर दूषित रक्त निकालने के बाद पिसा हुआ जमालगोटा भरदें और ऊपर से नीबू का रस निचोड़ दें तथा बन्धनों का प्रयोग अवश्य करें। अथवा नीबू के बीज 9 माशे की मात्रा में खाने से समस्त प्रकार के सर्पों का विष नष्ट हो जाता है अथवा तीन कागजी नीबूओं का शुद्ध रस, काली मिर्च और जमालगोटा प्रत्येक 6-6 माशा लेकर सभी को मिलाकर एक रस करके काली मिर्च के आकार की गोलियाँ बनाकर सर्प दंशित व्यक्ति को 2-3 गोलियाँ खिलाने से तथा आँख में घिसकर लगाने से शर्तिया लाभ होता है।

पुत्ररत्न प्राप्ति हेतु—(जिस किसी स्त्री के कन्या में ही जन्मती हो, पुत्र नहीं होता हो तो वह) स्त्री रजःस्वला होने के बाद (स्नान करने के बाद नीबू की जड़ का एक तोला रस और चावल के धोवन का 250 ग्राम पानी मिलाकर (लगातार इसी प्रकार तीन दिन तक) पियें तथा 8वें या 10वें दिन अपने पति से सम्भोग करायें (यदि शुक्ल पक्ष हो तो और भी अधिक उत्तम है) इस योग से शर्तिया गर्भ स्थित होकर पुत्र ही जन्म लेता है।

●नीबू रस को हल्की नीली बोतल में डालकर 4-5 दिनों तक धूप में रखें (इसमें थोड़ा सा तिल का तैल भी मिलालें) इसे कान में 2-2 बूँद दिन में 3-4 बार डालने से कर्णस्राव बन्द हो जाता है।

●समुद्रफेन का 1 रत्ती चूर्ण दिन में 4-5 बार कान में डालकर ऊपर से नीबू रस की 5 बूंदें छोड़ देने से 4-5 दिनों में ही कर्णस्राव मिट जाता है।

नोट—नीबू की मात्रा 1 अदद है तथा आवश्यकतानुसार अधिक भी सेवन किया जा सकता है। यह पट्ठों, सीना और पौरुष शक्ति को हानि पहुँचाता है। शीत प्रकृति वाले व्यक्तियों को हानिकारक है। इसका बदल नारंगी है और इसकी दर्पनाश हेतु उन्नाव, शक्कर (सफेद) और शुद्ध शहद का सेवन लाभप्रद है।

राई

●राई दस्तावर और पाचक गुणों से भरपूर होती है। बेहोशी में लाभप्रद है। यह गर्म है। इसको पीसकर लेप करने से छाला पड़ जाता है। इसीलिए पसली का दर्द, न्यूमोनिया, गठिया, आमाशय, यकृत और तिल्ली में इसका लेप अथवा पुल्टिस लगाया जाता है। यह स्वाद में कड़वी और तेज होती है। इसका पौधा सरसों की भाँति होता है।

●दर्द वाली जगह पर राई 6 ग्राम की मात्रा में लेकर बारीक पीसकर हल्की गरम करके छिड़क कर बाँधना अत्यन्त लाभप्रद है। यदि इस प्रयोग से जलन पड़ने लगे तो तुरन्त राई को उतार कर फेंक दें और रुई गरम करके बाँध दें। इस क्रिया से दर्द बन्द हो जाता है।

●1 गिलास में 3-4 चम्मच राई मिलाकर पानी पिलाने से वमन (कै) शुरू हो जाती है और इस प्रकार प्रारम्भ हुई वमन से कमजोरी भी नहीं आती है। अफीम का नशा उतारने के लिए यह एक उत्तम और निरापद प्रयोग है।

●आमाशय में बलगम एकत्र हो जाने पर 10 ग्राम राई को पीसकर गरम पानी में मिलाकर पिलाने से कै प्रारम्भ होकर बलगम निकल जाता है। इसे पिलाने से यदि कै नहीं आये तो अपनी ऊँगली गले में डालकर उल्टी करें।

●1 चुटकी राई को सब्जी में डालकर खाते रहने से खाना अच्छी तरह हजम हो जाता है तथा भूख खुलकर लगने लगती है।

●अरन्डी के पत्तों पर राई का तैल चुपड़कर इनको गरम करके बाँधने से शरीर में किसी अंग विशेष में किसी कारण से जमा रक्त बिखर जाता है।

●पिसी हुई राई को सुँघाने से मृगी की मूर्च्छा दूर हो जाती है।

●राई को शहद में मिलाकर सुंघाने से जुकाम दूर हो जाता है।

●गठिया की सूजन में राई का लेप करना अत्यन्त लाभप्रद है।

●राई को गोमूत्र में पीसकर (पीसते समय 1-2 चुटकी हल्दी चूर्ण मिलालें) चटनी की तरह पिसने पर कड़ुवा तैल मिलाकर शरीर में सूखी खुजली वाले स्थान पर मालिश करें तथा एक घंटा बाद चिकनी मिट्टी लगाकर स्नान कर लें। स्नानोपरान्त शरीर पर कपूर मिला राई अथवा सरसों का तैल की मालिश करें। यह प्रयोग 1 सप्ताह करने से सूखी खुजली नष्ट हो जाती है।

●4-6 रत्ती राई को 1 माशा शक्कर में मिलाकर जल के साथ खाने से प्रतिश्याय नष्ट हो जाता है।

●राई का चूर्ण 2 माशा थोड़ी सी शक्कर के साथ खाकर ऊपर से 50 ग्राम जल पीने से अपचन और उदर शूल नष्ट हो जाता है ।

●नेत्रों में फूला पड़ने पर राई का अंजन के रूप में उपयोग लाभकारी है।

●विष भक्षण में 2 माशा राई चूर्ण को 60 तोला शीतल जल में मिलाकर पिला देने से वमन होकर विष निकल जाता है ।

●सन्निपात के भ्रम में गले पर राई का लेप करें । त्वचा लाल हो जाने पर लेप को हटाकर घी अथवा तैल लगादें । लाभप्रद है ।

●1 तोला राई को जल के साथ पीसकर इसे जम्बीरी के रस के साथ घोलकर पतला कर लें । इसमें दो आने भर सोहागे का पिसा हुआ लावा तथा 4 आने भर सेंधा नमक मिलाकर रखलें । (यह एक खुराक है) । इस चटनी को भोजन के साथ व्यवहार करने से मात्र 1-2 सप्ताह में ही मासिकधर्म खुलकर होगा । यदि राई की पट्टी को पेडू पर भी बाँध लिया जाए तो और भी अधिक लाभप्रद है । यदि रजोदर्शन में गड़बड़ी हो जाए तो नियत समय पर न आता हो अथवा पेडू में दर्द, नेत्रों में जलन, मस्तिष्क में चक्कर, भूख में कमी आदि लक्षणों के साथ मासिक है तो इस चटनी का सेवन अत्यधिक लाभप्रद साबित होता है ।

राई की पट्टी बनाने की विधि—दो तोला राई को घृतकुमारी (घी कुआर) के रस के साथ पीस, तलहथी के समान चौड़े और दो बालिस्त लम्बे तथा स्वच्छ कपड़े के आधे हिस्से पर फैला दें तथा शेष खाली कपड़ा को ऊपर से ढँक दें और कड़ुवा तैल चुपड़कर पट्टी चिपका दें । दो घंटे बाद इसे हटा दें । प्रतिदिन एक पट्टी 1-2 सप्ताह तक मासिकधर्म खोलने के लिए पेडू पर इसी प्रकार बाँधें । यह उपयुर्वक्त योग की सहायक औषधि है ।

●शरीर में वात वृद्धि होने पर राई के तेल में पूड़ी आदि तलकर खायें तथा राई और सरसों का तैल मिलाकर शरीर पर मालिश करें ।

(नोट—मस्तिष्क आदि कोमल स्थानों और नेत्रों पर तेल न लगावें अन्यथा तीव्र जलन होगी)

●सन्धिशूल व अर्धांगवात में आमवात या पूयमेह के कारण अथवा किसी भी अन्य कारणों से जोड़ों पर सूजन आ गई हो और उसमें वेदना होती हो अथवा अर्धांगवात से अंग शून्य (सुन्न) हो गया हो तो कर्पूर मिले हुए राई के तैल की मालिश करने से रक्त संचालन क्रिया बलवान होकर रोग उत्पन्न होने के दोष मिट जाते हैं । सन्धिशूल में त्वचा के नीचे जल एकत्रित हुआ हो तो तैल मालिश न करके उसपर सेंक और लेप आदि का उपचार करना लाभप्रद रहता है ।

●नेत्रों के पलकों पर निकलने वाली फुड़िया (अंजनी या गुहैरी) पर राई के चूर्ण को घृत में मिलाकर लेप करना लाभप्रद है ।

●अर्श (बबासीर) रोग में यदि कफ प्रधान मस्से हों, खुजली होती हो, खुजलाने में आनन्द आता हो तो ऐसे मस्सों पर राई का तैल लगाते रहने से मस्से मुरझा जाते हैं ।

●काँच या काँटा चुभकर यदि चर्म में चला जाए और निकालने पर सरलता से नहीं निकले तो उस पर राई, घृत और शहद मिलाकर लेप कर देने से विजातीय द्रव्य ऊपर आ जाता है और स्पष्ट रूप से दिखलायी देने लगता है । तब उसे पकड़कर बाहर निकाल दें ।

●अपस्मार की बेहोशी में राई के चूर्ण की नस्य देना हितकारी है ।

●राई को गरम जल में मिलाकर कुल्ला करने से दन्तशूल नष्ट हो जाता है।

●राई के आटे को आठगुने पुराने गोघृत में मिलाकर लेप करते रहने से कुछ ही दिनों में उस स्थान की रक्तसंचालन क्रिया बलवान होकर श्वेत कुष्ठ (सफेद दाग) दूर हो जाते हैं ।

●कखौरी (काँख में गाँठ) को शीघ्र पकाने के लिए गुड़, गुग्गुल और राई को मिलाकर कपड़े की पट्टी लगाकर गरम करके चिपका दें । यदि पक गई हो तो राई और लहसुन को पीसकर पुल्टिस बनावें । पुन: कखौरी पर रेडी का तैल या घी वाला हाथ लगाकर पुल्टिस बाँध देने से शीघ्र ही फूट जाती है ।

●राई का आटा 4-4 रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम शहद के साथ चाटते रहने से कफ प्रकोप से उत्पन्न (कफ ज्वर) ज्वर नष्ट हो जाता है ।

●राई आधा माशे को घृत और शहद की असामान्य मात्रा में मिलाकर सुबह-शाम चाटते रहने से कफ प्रकोप से उत्पन्न श्वास रोग का शमन हो जाता है ।

●हाथ पाँव मुड़ जाने पर या अन्य किसी कारण से सूजन आ जाने पर एरन्ड पत्र पर राई का तैल लगाकर गरम करके बाँध देने से शोथ दूर हो जाता है । इस प्रकार नमक को जल के साथ पीसकर लेप भी किया जाता है ।

●राई के 3 माशा आटा और भुनी हींग 4 रत्ती को थोड़ी सी कांजी में पीसकर पिला देने से मृत गर्भ बाहर निकल आता है ।

●उदर में सूत्र-कृमि या धान्यांकुर के समान मुड़े हुए कृमि हो जाने पर राई का आटा 1 माशा 10 तोला गोमूत्र के साथ प्रात:काल को कुछ समय तक निरन्तर पीते रहने से कृमि निकल जाते हैं तथा भविष्य में उनकी उत्पत्ति बन्द हो जाती है।

● खल्वाट (गंजापन) में राई के फान्ट से सिर धोते रहने से बाल आ जाते हैं। सिर पर छोटी-छोटी फुन्सियाँ व खुजली होना दूर हो जाता है तथा जुऐं भी मर जाती हैं।

● ज्वर और हैजा में रोगी कभी-कभी एकदम शीतल और अचेत हो जाता है। ऐसी अवस्था में उसे उत्तेजना देने के लिए काँख और छाती पर राई का लेप करना अत्यन्त ही लाभप्रद होता है।

● हृदय कम्प, वेदना, निर्बलता, व्यग्रता ज्ञात हो तो हाथ-पैरों पर राई का मर्दन करने से रक्तसंचालन क्रिया शक्तिशाली होकर मानसिक उत्साह और हृदय की गति में उत्तेजना आ जाता है।

● शरीर के किसी भी स्थान पर गाँठ निकल आई हों और वह बढ़ रही हों तो उस पर राई और काली मिर्च के चूर्ण को घृत में मिलाकर लेप करने से वृद्धि रुक जाती है। रसौली और अर्बुदों की वृद्धि रोकने के लिए राई के चूर्ण को घृत और मधु में मिलाकर लेप कर देने से कृमि मर जाते हैं।

● राई का चूर्ण 3 माशा ठण्डे पानी से भोजन के बाद दें। यह बच्चों के शैय्या (बिस्तर) पर मूत्र करना में अत्यन्त गुणकारी योग है।

नोट—राई की मात्रा 6 ग्राम है। यह नशा लाती है और त्वचा में जख्म डालती है। गरम प्रकृति वालों के लिए हानिकारक है। प्यास बढ़ाती है। इसकी बदल शलजम और राल है। इसके दर्प को नाश करने हेतु कासनी और रोगन बादाम, सिरका, बूरा अरमनी का सेवन करना चाहिए

रतनजोत

● इस बूटी की तासीर ठण्डी है। अत: इसके सेवन से मूत्र खूब और साफ होकर आता है। जिन लोगों को मूत्र जलन के साथ आता हो, मूत्र में रक्त आता हो या गर्मी के कारण हाथ की हथेलियों और पैर के तलुवों में जलन होती हो (आग सी निकलती हो), यही शिकायत सिर में हो अथवा गर्मी के मौसम में चलने वाली गरम हवा लग गई हो तो 10 ग्राम की मात्रा में यह बूटी लेकर तथा 5 काली मिर्च के साथ पानी में ठण्डाई की भाँति पीस-छानकर मिश्री से स्वादानुसार मीठा करके पिलाने से उपरोक्त समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं। यह बूटी रक्त शोधक भी है।

नोट—इसकी मात्रा 7 ग्राम है। यह दिमाग के लिए हानिकारक है। सिरदर्द पैदा करता है। इसके दर्प को नष्ट करने हेतु रोगन गुलबनफ्शा, मगजकद्दू, रोगन तुखमकद्दू सेवन करें।

लहसुन

आयुर्वेद के अनुसार लहसुन शरीर को गर्म रखने वाला कफ, गैस, अपच, बदहज्मी दूर करने वाला, जोड़ों के दर्द और लकवा में लाभ पहुँचाने वाला और हृदय रोगों को रोकने वाला है। लहसुन में एन्टी बैक्टीरियल स्क्रेलिन होता है जिसके फलस्वरूप लहसुन को रगड़कर घाव पर लगा देने से घाव का विष नष्ट होकर उसके जल्द भरने में मदद मिलती है। दाद, खाज, खुजली में लहसुन या इसके पत्तों को पीसकर लगाना इसी कारण लाभप्रद होता है। यदि फोड़ा दुख रहा हो तो लहसुन को पीसकर बाँधने से फोड़ा पककर फूटकर आराम मिल जाता है।

● आयुर्वेद शास्त्रानुसार लहसुन की जड़ में चटपटा, पत्तों में कड़वा, नाल में कसैला, नाल के अगले भाग में नमकीन तथा बीजों में मीठा रस रहता है।

● लहसुन कामशक्तिबर्धक, वीर्यवर्धक, तर-गरम और पाचक, कब्ज निवारक, तेज और मीठा है। टूटी हड्डियों को जोड़ने वाला, गले को लाभप्रद, रक्तबर्धक, शरीर की रंगत को चमकाने वाला, बुद्धिबर्धक, बुढ़ापानाशक, बलगमी और रियाही रोगों को जड़-मूल से नष्ट करने वाला, दिल को ताकत देने वाला, बदहज्मी, बुखार और पसलियों के दर्द को दूर करने वाला, स्थायी कब्ज को नष्ट करने वाला, वायुगोला नाशक, क्षुधाबर्धक, खाँसी, सूजन, बबासीर और कोढ़ नाशक, उदर कृमि नाशक, उदर गैस नाशक, बलगम को शरीर से निष्कासित करने वाला है। लहसुन के अन्दर न्यूमोनिया तो क्या, तपेदिक तक को नष्ट करने की शक्ति विद्यमान है।

● दाढ़, दाँत दर्द में लहसुन रस को गरम करके इसका फाहा लगाने से तुरन्त आराम होता है।

● कान और नाक के दर्द में लहसुन रस को सरसों के तैल में मिलाकर गुनगुना करके डालना अत्यधिक लाभप्रद है।

● लहसुन का रस भैंस के दूध के साथ सेवन करने से भूख बढ़ जाती है तथा गठिया और टी. बी. के रोगी के लिए तो अत्यन्त लाभप्रद और शवितबर्धक है।

● कीड़ों मकोड़ों के काटने या डंक मारने पर लहसुन का रस लगाने से जलन नष्ट हो जाती है।

● गरीबों के लिए सबसे अधिक सस्ता एन्टीबायोटिक और हानि रहित औषधि मात्र लहसुन है। यह पैर के अँगूठे से सिर के बाल तक शरीर के प्रत्येक भाग

व अवयवों पर अपना रोगनाशक व स्वास्थ्य रक्षक प्रभाव डालता है । जिन लोगों को दिल का एकाध दौरा पड़ चुका हो, वे यदि लहसुन का इस्तेमाल न करते हों तो तुरन्त ही लहसुन का इस्तेमाल प्रारम्भ कर निश्चिन्त हो जायें ।

● नोट—आमतौर पर लोग नासमझी में लहसुन को गर्म प्रकृति होने के कारण गर्मी की ऋतु में इस्तेमाल बन्द अथवा कम कर देते हैं, जबकि गेहूँ एवं दालें भी तो गरम प्रकृति की हैं इनका सेवन क्यों करते हैं ? जबकि सत्यता यह है कि जीवन को सुरक्षित रखने हेतु एक विशेष श्रेणी तक गर्मी पाना अति आवश्यक है । गेहूं या दालों की भांति लहसुन की गर्मी भी कोई हानि नहीं पहुँचाती है । लहसुन का सही और पूर्णरूपेण लाभ इसे कच्चा खाकर ही उठाया जा सकता है । प्रातःकाल निहार मुँह लहसुन की 1 कली (जवा) चबाकर पानी के साथ खायें । धीरे-धीरे इनकी संख्या बढ़ाते जायें । बच्चों को भी इसका रस दिया जा सकता है । चाहें तो इसमें शहद मिलालें । बच्चों के लिए खाँसी विशेष रूप से काली खाँसी में लहसुन का अर्क और शहद एक अति उत्तम योग है । रक्त की कमी हेतु तो यह सभी टानिकों का बाप है । लहसुन शरीर के कोले स्टेरोल स्तर को कम करती है । मेनिजाईटिस (मस्तिष्कावरण शोथ) में दिल की बीमारी में वृद्धावस्था के रोगों में स्त्रियों के मासिक धर्म सम्बन्धी विकारों में तथा मधुमेह में लाभप्रद है । यह उच्च रक्तचाप घटाकर रक्त में बढ़ी हुई शर्करा को कम करता है तथा हृदय की कोशिकाओं को नरम (मुलायम) बनाये रखता है । लहसुन एक्टीबायोटिक गुणों के अतिरिक्त आँतों के लिए एन्टीसैप्टिक भी है । लहसुन कई प्रकार की कैन्सर की रसूलियों को ठीक करने की क्षमता रखता है ।

● लहसुन के अन्दर रोम-छिद्रों के द्वारा शरीर में शोषित होने का गुण विद्यमान है । अतः न्यूमोनिया में इसका प्रयोग छाती पर बतौर पुल्टिस के करने से लाभ होता है । न्यूमोनिया में बच्चों को लहसुन की चन्द कलियाँ छीलकर धागे में पिरोकर हार की भाँति गले में पहनाना लाभप्रद है ।

● गाय के 100 ग्राम घी में लहसुन की तीन कलियाँ जलाएँ, जब खूब जल जाएँ तो लहसुन को निकालकर फेंक दें तथा घी को शीशी में सुरक्षित रखलें। आवश्यकता के समय कानों में 2-3 बूंदें डालें । इस योग से कान का दर्द तुरन्त मिट जाता है, कान से पीप बहना भी रुक जाता है । परीक्षित योग है ।

● पेट के कीड़ों को मारने हेतु लहसुन रामबाण का कार्य करता है । लहसुन को मुनक्का या शहद के साथ दिन में तीन बार प्रयोग करें । (लहसुन की 5 कलियां

(जवा) छीलकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर 15-20 मुनक्का के दानों अथवा शहद के साथ खायें ।

नोट—इसी योग को यदि बिना नागा 2-3 मास सेवन कर लिया जाए तो सेवनकर्ता अपने सुधरे हुए स्वास्थ्य को देखकर दंग रह जाएगा ।

● लहसुन रस की 20-25 बंदें बाल्टी भर पानी में डालकर स्नान करने से बुढ़ापा आने पर शरीर के अन्दर की मृत कोशिकाओं की दुर्गन्ध दबकर रोग पास नहीं आते हैं तथा आहार में लहसुन की चटनी के प्रयोग से रक्त संचार में तीव्रता आकर नवीन कोशिकाओं का निर्माण हो जाता है । रात्रि में 250 ग्राम दूध में लहसुन की 5 कलियाँ छोटी-छोटी काटकर, धीमी-धीमी आग पर उबालकर इसमें मिश्री मिलाकर पीने से दुर्बलता, गठिया, जोड़ों के दर्द एवं कम्पन जैसे वृद्धावस्था के रोग नष्ट होकर शरीर में पुनः नये सिरे से बल का विकास होने लग जाता है।

● शरीर सूखा-सूखा सा हो जाए तो लहसुन का मुरब्बा सेवन करें । 1 किलोग्राम की मात्रा में 1 पोथिया लहसुन छीलकर धूप में सुखा लें । पानी नहीं रहे, अन्यथा मुरब्बा खराब हो जाएगा । तदुपरान्त कांच के मर्तवान में डालकर ऊपर से इतना शहद डालें कि समस्त कलियाँ डूब जायें । फिर 10-12 दिनों तक इसे धूप में रखें। यही लहसुन का मुरब्बा है । नित्य प्रति 1 कली को दुग्ध के साथ चबायें । सूखे शरीर पर यौवन रूपी पुनः बहार आ जाएगी ।

● लहसुन की 5 कलियाँ (जंवा) छीलकर 50 मि.ग्रा. जल में पीसलें । इसके बाद इसे छानकर 10 ग्राम शहद घोलकर पीने से पूलित रोग (सिर के बालों का पकना) नष्ट हो जाता है । यह योग बालों को काला रखता है तथा अत्यन्त शक्तिवर्धक पौष्टिक रसायन है ।

● लहसुन के 5 जवे छीलकर नित्य प्रति (जाड़ों में) चबाने से तथा साथ में घी, मक्खन, दही, दूध पीने से ढाई, 3 महीनों में ही खून की कमी नष्ट होकर शरीर की रंगत काबुली पठान की तरह लाल सुर्ख हो जाएगी । दूध में लहसुन को खीर की भाँति पकाकर खायें तथा घी, दही, मक्खन में लहसुन का रस मिलाकर चाटें।

नोट—लहसुन के साथ दूसरे पदार्थ चौगुनी मात्रा में सेवन करें ।

लहसुन की खीर—लहसुन की छिली और सूखी गिरियों का चूर्ण 160 ग्राम, गाय का दूध 850 ग्राम और पानी 800 ग्राम मिलाकर पकालें । जब पानी सूख जाए और मात्र दूध शेष रहे तब ठण्डा कर लें । सुबह से रात तक 5-6 बार में इस खीर को खाने से गुल्म रोग ठीक हो जाता है । गुल्म के साथ-साथ उदावर्त नामक रोग, गृध्रसी, वायु, विषम ज्वर, जिगर के रोग विद्रधि और सूजन इत्यादि में भी यह खीर अत्यधिक लाभप्रद है ।

दन्त रोग मसूढ़ों में सूजन, दर्द, दुर्गन्ध और रक्तस्राव में—सुबह-शाम 1 तोला शहद में 15-20 बूँदें लहसुन का रस भली प्रकार मिलाकर चाटें तथा साथ ही 60 ग्राम सरसों के तैल में छिली हुई लहसुन की गिरियों की पीठी डालकर पकायें। जब लहसुन जल जाए तो तेल को कपड़े से छानकर इसमें 20 ग्राम अजवायन को जलाकर तैयार की हुई भस्म और 10 ग्राम बारीक पिसा हुआ सैंधा नमक मिलाकर प्रतिदिन सुबह-शाम दाँतों पर मंजन की भांति मलने से पायोरिया के कीड़े, सूजन, दुर्गन्ध, दर्द, खून व पीप गिरना बन्द हो जाता है। लगातार दो मास तक उपरोक्त दोनो प्रयोगों के करने से उक्त रोग जड़ से नष्ट हो जाते हैं।

रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) की बीमारी में छिली हुई लहसुन की गिरी की पीठी 10 ग्राम, 250 ग्राम बकरी के दूध में मिलाकर तथा 10 ग्राम शहद से मीठा करके पीना लाभप्रद है। दौरा खत्म होने पर लहसुन की पीठी को (आठ आने भर की खुराक में) लेकर इतने ही दूध और शहद के साथ जलपान के रूप में सेवन करते रहना चाहिए।

● यदि जीभ का रसज्ञान लुप्त हो जाए अर्थात् स्वाद मर जाए तो लहसुन की छिली कली मुख में रखकर खूब चबाऐं और जब लुगदी सी बन जाए तो जीभ पर रखकर मुख में खूब घुमायें तत्पश्चात् निगल जायें (इसी प्रकार तीन कलियाँ चबाकर निगलें) तदुपरान्त अपनी इच्छानुसार थोड़ा-बहुत पानी पी लें।

● अत्यधिक धूम्रपान करने से अथवा भांग आदि का नशा करने वाले (नशेड़ियों) में घ्राणशक्ति का ह्रास हो जाता है अर्थात् उनके सूंघने की शक्ति कम हो जाती है उन्हें अच्छी बुरी गन्ध नहीं आती है। ऐसी स्थिति में लहसुन का रस सूँघना लाभप्रद है। एक बूंद लहसुन रस में दो बूंद पानी मिलाकर नथुनों में टपकाने से तुरन्त लाभ होता है। इस प्रयोग से सिरदर्द भी नष्ट हो जाता है और गन्धग्राही स्नायु चैतन्य हो जाते हैं।

डिप्थीरिया (यह रोग बच्चों को होता है इस रोग में कण्ठ में एक झिल्ली सी पैदा हो जाती है। रोगी की बहुत जल्दी मृत्यु हो जाती है। लहसुन की एक कली मुख में रखवाकर चुसवाना लाभप्रद है। जब तक बच्चा चिकित्सक अथवा राजकीय अस्पताल न पहुँच जाए तब तक यह उपचार अवश्य करें। लाभप्रद है।

प्लूरिसी फेफड़े के आवरण में पानी पड़ जाना तथा इसके कारण सीने में दर्द और ज्वर होना प्लुरिसी कहा जाता है। इस रोग में (फेफड़ों में रुकावट उत्पन्न

होती है तथा साँस रुक-रुककर आता है। लहसुन को छीलकर सिल पर पीसकर इसकी गरम-गरम पुल्टिस छाती पर बांधना लाभकारी है।

● लहसुन को कूटकर कपड़े से रस छानकर दमा के रोगी को प्रत्येक 3-3 घंटे पर (आवश्यकतानुसार अधिक मात्रा में भी दिया जा सकता है) देना लाभप्रद है। इसके सेवन से खून, बलगम खारिज होकर तथा रक्तचाप सामान्य होकर दमा के रोगी को आराम आ जाता है। यह उच्च कोटि की एन्टीसैप्टिक दवा है। पेटदर्द, पाचन विकार में भी उपयोगी है।

नोट—कब्ज होते ही दमे का दौरा जागता है अतः कब्ज हरगिज न रहने दें दमा के रोगियों को सुरापान अत्यन्त हानिकारक है, अतः इसका सेवन न करें।

● मिट्टी की एक ढक्कनदार हांडी में एकपुतिया लहसुन की छिली हुई कलियाँ डालकर व शहद में डुबोदें। फिर ढक्कन लगाकर ऊपर से कपड़ा बाँध दें। गीली मिट्टी चढ़ाकर, जमीन में गाढ़कर उसी स्थल पर चूल्हा बनाकर 40 दिनों तक सुबह-शाम खाना बनायें तदुपरान्त हाँड़ी को निकाल लें। सन्तान की चाहत रखने वाले पति-पत्नी दोनों नित्य प्रति चबाकर ऊपर से दूध पियें। नियमपूर्वक पूर्णरूपेण ब्रह्मचर्य के साथ 40 दिन तक इस योग का सेवन कर लेने से उनके प्रजनन अंगों में इतनी अधिक शक्ति भर जाती है कि मात्र 1-2 बार के सहवास (संभोग क्रिया) से ही गर्भाधान हो जाता है। इस योग के सेवन के फलस्वरूप शत-प्रतिशत पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है तथा यह योग स्त्री के गर्भाशय की शुद्धि और गर्भ स्थापन में सहायक है।

● गंजे लोग प्रतिदिन लगातार कुछ सप्ताह तक दिन में तीन बार लहसुन का रस लगाकर सूखने दिया करें अतिशय लाभकारी योग है।

● घाव में कीड़े पड़ जाने पर लहसुन की 10 कली, चौथाई चम्मच नमक दोनों को पीसकर देशी घी में सेंककर घाव पर बांधते ही कीड़े मर जाते हैं तथा घाव भी शीघ्र भर जाता है।

● लहसुन की छिली हुई 1 से 2 तोला तक कलियाँ गोघृत में थोड़ा पकाकर धारोष्ण गोदुग्ध के साथ नित्य सुबह-शाम सेवन करने से निःसन्देह ही नपुंसकता दूर होकर पुंसत्वशक्ति बढ़ जाती है।

● लहसुन का रस तथा सरसों का तैल 20-20 तोला को किसी 1 पात्र में डालकर इतना पकायें कि तेल मात्र शेष रह जाए। इस तैल को वात पीड़ित तथा पोलियो पीड़ित अंग में नित्य मालिश करने से धीरे-धीरे वातपीड़ा और अंग शिथिलता मिट जाती है।

●जिधर आधाशीशी का दर्द होता हो, उधर की कनपटी में लहसुन को पीसकर बाँधने से आधाशीशी का दर्द मिट जाता है।

●अन्तर्जिह्वा निकाला हुआ लहसुन 1 तोला, जीरा 1 माशा, अदरक 1 माशा, काली मिर्च 1 माशा की चटनी बनाकर नित्य प्रति भोजन के साथ सेवन करने से मन्दाग्नि; अम्लपित्त, आध्मान, कृमि, यकृत विकार नष्ट हो जाते हैं।

●लहसुन की गाँठ की लम्बी नाल को जलाकर उसकी राख को ताजे मट्ठे से नित्य सेवन करने से खूनी और बादी बबासीर के कष्ट शान्त हो जाते हैं।

नोट—लाल व हरी मिर्च का सेवन न करें।

●लहसुन की गाँठ की नाल की भस्म 1 माशा की मात्रा में नित्य प्रातः सायं शहद के साथ चाटने से खाँसी नष्ट हो जाती है, उदर कृमि भी नष्ट हो जाते हैं।

●एक गाँठ लहसुन की छीलकर बारीक पीसकर तथा 10 तोला पानी में घोलकर मधु के साथ बार-बार पिलाने से हैजा के रोगी को पेशाब होता है और रोगी मरते-मरते बच जाता है।

●छिलका रहित लहसुन 250 ग्राम, बकरी का दूध 1 किलो, गाय का घी ढाई किलो, जल 10 किलो लें। लहसुन को यवकुट कर जल में चतुर्थांश शेष रहने तक पकाकर उसमें घृत तथा दूध डालकर घृत सिद्ध होने तक पकायें। इस घृत के पात्र को धान्य राशि में 1 माह तक रखने के पश्चात् 5 से 10 ग्राम की मात्रा में नित्य सुबह-शाम सेवन करने से राजयक्ष्मा (टी.बी.) निश्चय ही नष्ट हो जाती है तथा इस योग से (घृत) के प्रभाव से बन्ध्या स्त्री, नपुंसक और वृद्ध पुरुषों में भी अपार शवित का संचार होकर कामशवित बढ़ जाती है।

●लहसुन और मधु 5-5 ग्राम तथा घृत 10 ग्राम को खूब आपस में मिलाकर (अवलेह जैसा बनाकर) **(नोट—यह एक मात्रा है)** ऐसी 1-1 खुराक नित्य सुबह-शाम सेवन करते रहने से तथा भोजन में दूध और चावल का प्रयोग करते रहने से क्षय रोग नष्ट होकर रोगी दीर्घायु हो जाता है।

●लहसुन का 20 से 30 बूंद तक ताजा रस शहद या शर्बत के साथ प्रत्येक 4-4 घंटे पर देते रहने से नन्हें शिशुओं और छोटे बच्चों की काली खांसी (हूपिंग कफ) निःसन्देह ठीक हो जाती है। जो बच्चे इस योग का सेवन न कर सकें उन्हें लहसुन की कलियों को छीलकर तथा धागे में पिरोकर हार की भांति गले में माला पहना देना लाभप्रद है।

●लहसुन का रस गुनगुना करके 2-3 बूंद कानों में डालने से सर्दी के कारण

होने वाला कर्णशूल (Otalgia) तुरन्त ही बन्द हो जाती है। यदि कान में फुन्सी इत्यादि हो तो वह भी नष्ट हो जाती है।

●लहसुन की 10 ग्राम कलियों को 30 ग्राम सरसों के तैल में (इसमें यदि 1 ग्राम अफीम मिलालें तो और भी अधिक उत्तम है) पकाकर शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें। इस तैल की 2-3 बूंदें कान में डालने से भी तुरन्त कर्णशूल बन्द हो जाता है तथा ऊपर वाले योग से भी अधिक प्रभावकारी है।

●लहसुन, आँवला, हरताल प्रत्येक 10-10 ग्राम लेकर कल्क बनाकर 250 ग्राम तिल का तैल और 1 कि.ग्रा. गाय का दूध में मिलाकर धीमी आग पर पकायें। जब दूध जल जाए तब उतार छानकर तैल को सुरक्षित रखलें। इस तैल को नियमित रूप से कान में डालने से कर्णपाक कर्णस्राव और बधिरता मिटती है।

●20 ग्राम घी में लहसुन के छिले हुए 5 जवे पीसकर भूनलें तथा इसमें 10 ग्राम शहद मिलाकर कफजनित श्वास रोगी को चटायें। अत्यन्त लाभप्रद योग है। इसके सेवन से श्वासकास नष्ट हो जाता है।

●लहसुन का स्वरस 20 से 30 बूँद तक शहद के साथ दिन में 3-4 बार सेवन करने से फुफ्फुस के विभिन्न रोग जैसे—श्वास कास श्वासनिका विस्तीर्णता, श्वासनिका प्रदाह, श्वास कृच्छता, फुफ्फुस शोथ, वात श्लेष्मिक ज्वर, फुफ्फुसपाक आदि नष्ट हो जाते हैं।

●लहसुन स्वरस 10 ग्राम को सरसों का तैल 250 ग्राम में मिलाकर रखलें। इस तैल की प्रतिदिन मालिश करके एक घंटा धूप में बैठने के बाद उष्ण जल से स्नान करने से खाज खुजली नष्ट हो जाती है।

●लहसुन को शहद के साथ पीसकर प्रतिदिन सुबह-शाम लेप लगाने से चम्बल (सोरायसिस) और दाद (रिंगवार्म) शर्तिया दूर हो जाता है।

●लहसुन को बारीक पीसकर व्रण पर लगाने से घाव (Wound) भर जाता है तथा पका हुआ व्रण चाहें वह कृमियुक्त ही क्यों न हो, इस लेप (योग से अवश्य ठीक हो जाता है।

●लहसुन, राल और हींग का धुंआ (धूनी) देने से शीतला जन्य व्रण भर जाते हैं और उनमें खुजली नहीं पड़ती है।

●लहसुन, राई, चित्रकमूल को पीसकर उसकी पुल्टिस नारू (Guine warm) के स्थान पर लगाने से वह जल्द ही बाहर आ जाता है।

नोट—पुल्टिस 1 घंटे से अधिक देर तक कदापि न लगावें। जब नारू बाहर आ जाए तब उस स्थान पर घी लगा देने से व्रण व बेदना नष्ट हो जाती है।

●लहसुन स्वरस 10 ग्राम, हींग 1 ग्राम को खरल में घोटकर शीशी में सुरक्षित रखलें। यह कफजन्य आधा शीशी (Migrane) में अत्यन्त ही लाभप्रद है। जिस ओर सिर में दर्द हो उस ओर के नथुने में 2-3 बूँदें डालें। तुरन्त लाभ होगा।

●लहसुन को शहद के साथ घोटकर लेप बनाकर जिस ओर सिर में आधा शीशी का दर्द हो उस ओर के भाग में लगाना अत्यन्त लाभकारी है।

●लहसुन का रस और शुद्ध मधु 30-30 ग्राम मिलाकर एक ही मात्रा में चाटने से बिच्छू का विष उतर जाता है। इस योग का पुन: एक घंटे बाद प्रयोग किया जा सकता है।

●नमक और लहसुन को पीसकर वृश्चिक दंश के स्थान पर लेप करने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है।

●लहसुन व थोड़ी सी हींग दोनों का लेप बिच्छू दंश के स्थान पर लगाने से तथा उस पर कन्डे (उपले) की आग से सेंक करने पर लेप के शुष्क होते-होते ही बिच्छू का विष उतर जाता है।

●हड्डी पर चोट लगने से दर्द होता हो अथवा अस्थि भंग (Fracture) हो गया हो तो—लहसुन 5 ग्राम, शुद्ध लाख 2 ग्राम और शहद 10 ग्राम की एक मात्रा बनाकर सुबह-शाम चाटने से तथा हड्डी पर लहसुन, हल्दी व घी का मिश्रण बनाकर लेप करने से दर्द दूर होकर हड्डी पुन: जुड़ जाती है।

●लहसुन और दूध क्रमश: 250 और 500 ग्राम को लेकर मन्द अग्नि पर पाक करें। जब लहसुन और दूध मिलकर एकजान हो जाएँ तो खूब भली प्रकार मलकर छानकर पुन: छने हुए दूध को आग पर पकाकर खोवा बनालें। तदुपरान्त इस खोआ में 500 ग्राम खान्ड मिलाकर 10-10 ग्राम के पेड़े बनाकर रखलें। इनमें से सुबह-शाम 1 से 2 पेड़े तक खिलाने से अर्धांग, वातरोग एवं अर्दित (Facial Paralysis) इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं।

●लहसुन, पोदीना, धनिया, जीरा, काली मिर्च, सैंधानमक को मिलाकर चटनी बनाकर सेवन करने से रक्तदाब वृद्धि (Hypertension) रोग नष्ट हो जाता है।

●लहसुन और प्याज का रस समभाग मिलाकर सुंघाने से अथवा नाक में 2-3 बूँद टपकाने से अपस्मार और अपन्त्रक की बेहोशी तुरन्त ही दूर हो जाती है।

●लहसुन, जीरा, सैंधानमक, काला नमक, सौंठ, मिर्च, पीपल और हींग

समस्त सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर नीबू के रस के साथ सेवन करने से हैजा का रोगी तुरन्त अच्छा हो जाता है।

नोट—लहसुन की मात्रा 3 ग्राम अर्थात् 7-8 जवे या कलियाँ है। गर्म प्रकृति वालों को यह हानिकारक है। सिरदर्द पैदा करता है, खून जलाता है, फेफड़ों तथा गर्भवती स्त्रियों को हानिकारक है। गर्म प्रकृति के लोगों को आवश्यकता पड़ने पर अल्प मात्रा में सेवन करें। स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते देखकर तुरन्त इसका सेवन बन्द कर दें। गरम वस्तु खाने से जिनका पित्त बढ़ जाता हो, उन्हें भी इसका सेवन नहीं करना चाहिए। लहसुन को कच्चा तथा चबाकर खावें। बाह्य प्रयोग करते समय कृपया ध्यान रखें कि यह एक तीव्र जलन करने वाली चर्मदाहक वस्तु है अत: लेप को अधिक समय तक शरीर पर रखने से छाला उठ सकता है जिसमें काफी वेदना होती है, इसलिए कोमल प्रकृति के लोगों पर इसका लेप पूर्णत: सावधानीपूर्वक करें। इसका बदल जंगली लहसुन और प्याज है। इसके दर्पनाशक कतीरा, धनिया, रोगन बादाम, सिकन्जबीन, खट्टे मीठे अनार का रस और नमक पानी में पका लेना है।

प्याज

●रंग भेदानुसार प्याज प्राय: तीन रंगों में प्रकृति से हमें प्राप्त अनमोल तोहफा है। सफेद, लाल और पीली प्याज। गुणों की दृष्टि में इनमें कोई विशेष अन्तर नहीं है। किन्तु औषधियों गुणों को मद्देनजर रखते हुए सफेद प्याज को हमारे आयुर्वेद मनीषियों ने अधिक महत्व दिया है, किन्तु दैनिक खानपान में लाल प्याज का अधिक उपयोग किया जाता है।

●सफेद प्याज कड़ुवी, ताकतवर, भारी, कफ, पित्त नाशक, स्वास्थ्य वर्धक, रुचिकर, चिकनी और वमनरोधक है। पचने पर यह स्वादिष्ट डकार वाली, मामूली शीतल, रसवाली, किंचित कफकारक और थोड़ी पित्तबर्द्धक भी है। इससे वायु का हरण होता है तथा यह वीर्यवर्धक है। इसके सेवन से पेट और शरीर के किसी भी भाग का दर्द दूर हो जाता है। वायुगोला का दर्द में भी गुणकारी है। ज्वर, उदर, खाँसी, जिसमें बलगम एकत्र होता रहता है सूखी और तर खुजली, कर्णशूल तथा कीट-पतंग मधुमक्खी आदि के डंक मारने में लाभप्रद है।

●लाल प्याज पेट की आग को तेज करने वाली और निद्राकारक है। यह क्षारयुक्त, तीक्ष्ण, मधुर, अत्यन्त ताकतवर, गला सूखने में लाभप्रद है और जठराग्नि वर्धक है। एक प्याज की गांठ के अन्दर दे अण्डों के बराबर लाभप्रद शक्ति समाहित रहती है। प्याज की तीखी दुर्गन्ध के ही कारण यह सस्ती वस्तु है अन्यथा इसमें इतने अधिक गुण हैं कि सेब, आम, अंगूर जैसी यदि इसमें गन्ध होती तो यह इन सभी की नानी होती, क्योंकि गुणों की दृष्टि से यह अनुपम वस्तु है।

● प्याज के अन्दर प्रोटीन, वसा, खनिज लवण, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, विटामिन्स और कैलरीज सभी कुछ हैं। प्याज में उड़नशील इत्र भी हैं जिसमें गन्धक, एल्युमिना, चूने के सिट्रेट और प्रस्फुटक अम्ल इत्यादि मौजूद हैं।

● प्राचीनतम आयुर्वेदीय ग्रन्थकारों के अनुसार प्याज के अभ्यासपूर्ण सेवन से रूखे-सूखे अंग स्निग्ध हो जाते हैं। रंग और कान्ति में चार चाँद लग जाते हैं। पाचन शक्ति प्रदीप हो जाती है। त्वचा के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं। वृषत्व (सांड जैसी मर्दानगी) आ जाती है। व्याधियों के उद्वेग शान्त होकर सुखमय जीवन और दीर्घायु प्राप्त होती है। महिलाओं को तो प्याज सुन्दरता के ढांचे में ढाल देता है उनकी गोराई, ललाई, भरे-भरे अंग और अनिंद्य सौन्दर्य का रहस्य ही प्याज है। यह चिकनी, स्वाद में मीठी, तीखी, चटपटी और तासीर में गरम होती है। नाड़ी संस्थान की यह विशेष रूप से प्रभावित करती है। कुल मिलाकर प्याज बल-वीर्य, आयु और जीवन वर्धक है। यह रक्त का शोधन कर, उसकी कमी को दूर करती है। ब्लडप्रेशर के लिए तो यह अद्भुत वरदान है। सिर ठण्डा, पेट नरम, पाँव गरम उत्तम स्वास्थ्य की निशानी होती है, जो प्याज सेवन करने से आसानी से प्राप्त हो जाती है।

● प्याज अपने सेवनकर्त्ता को ओज और वीर्य से भरकर लबालब कर देती है। इसके सेवन से वीर्य की थैलियां कभी खाली नहीं होती हैं। सम्भोग में नर और नारी को पूर्ण तृप्ति की अवस्था तक कामकेलि की स्तम्भन शक्ति प्रदान करता है। महिलाओं के मासिकधर्म और पुरुषों के शुक्र दोषों को दूर कर देता है। खाँसी, हैजा में लाभप्रद है। दाँत पैने और उजले रखता है। मल-मूत्र के रास्ते शरीर के समस्त विकारों को निकाल बाहर फेंकता है। शरीर के अन्दरूनी घाव भर देता है। सूजन नष्ट करता है। खून को साफ करता है कफ का जानी दुश्मन है। शरीर से दूषित गर्मी को निकालकर संजीवनी ऊष्मा प्रदान करता है। यदि संक्षेप में कहा जाए कि प्याज के सही विधि से सेवन से रोगी मृत्यु के द्वार से भी वापस आ जाता है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

● प्लेग या हैजा फैलने के समय कच्चे प्याज का रस पीने से और इसे हमेशा अपने पास रखने से इन बीमारियों के आक्रमण का भय नहीं रहता है।

● भूख की कमी में प्याज को सिरके के साथ खाना अत्यन्त लाभप्रद है।

● प्याज के रस में घी मिलाकर पीने से अत्यन्त ताकत प्राप्त होती है।

● प्याज का ताजा रस शरीर में मलने से (लू) गर्मी की ऋतु में चलने वाली गर्म हवा का असर तुरन्त खत्म हो जाता है।

● प्याज सेवन करने वालों को लू नहीं लगती है।

● प्याज कीटाणु नाशक भी है। छूत के रोगों के फैलने के समय इसे घर में रखने से रोगों से बचाव होता है। ताजा रंगे हुए कमरे की दुर्गन्ध को दूर करने के लिए थोड़ा-सा प्याज काटकर कमरे में रखना चाहिए।

● सफेद प्याज घर के अन्दर रखने से घर में साँप प्रवेश नहीं करता है।

● प्याज काटकर बल्व अथवा लालटेन के पास टांग देने से कीड़े-मकोड़े नहीं आते हैं।

● कच्चे प्याज के खाने से टायफाइड बुखार के कीटाणु मर जाते हैं। इसका सेवन क्षय जैसी भयंकर बीमारी में भी लाभप्रद है।

● प्याज प्यास को कम करता है और दाँतों को मजबूत करता है। प्याज का पूर्ण लाभ प्याज को कच्चा खाने से ही होता है। प्याज खाने के बाद खुश्क धनिया, पान, इलायची, लौंग, सौंफ इत्यादि खाने से प्याज की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

● यदि आप कमजोरी महसूस करते हों और शरीर दुर्बल हो गया हो तो प्रतिदिन प्रातःकाल कच्ची प्याज को शहद के साथ खायें। कुछ ही दिनों में कमजोरी दूर होकर शरीर स्वस्थ सुन्दर, और स्फूतिवान हो जायेगा।

● प्याज का रस सिर पर 1 मास तक निरन्तर मलने से बालों का झड़ना रुक जाता है।

● प्याज के सेवन से रक्त साफ रहता है, इसके फलस्वरूप शरीर में कोई रोग नजदीक ही नहीं आता है।

● वायुमण्डल में फैलने वाले संक्रामक रोगों से बचाव हेतु प्याज की मालाऐं बनाकर घर के आंगन में लटकाना अत्यन्त ही लाभप्रद है।

● सम्भोग से पूर्व लिगेन्द्रिय अथवा स्त्री की योनि में प्याज का रस लगाकर सम्भोग करने से गर्भ धारण की सम्भावना नष्ट हो जाती है।

● प्याज पीसकर बालों पर लेप करने से बाल काले रंग के उगने शुरू हो जाते हैं। प्याज का रस शहद में मिलाकर गंजे स्थान पर लगाते रहने से बाल पुनः उग आते है तथा सफेद बाल काले हो जाते हैं।

● काले दागों पर प्याज का रस लगाते रहने से कालापन दूर हो जाता है।

● लू लगने के उपरान्त सिर के दर्द में प्याज को बारीक पीसकर पैर के तलुवों पर लेप करना अत्यन्त लाभप्रद है।

● प्याज के बीजों को दूध में पीसकर सिर पर लेप करने से बाल झड़ना बन्द हो जाते हैं तथा कमजोर बाल मजबूत हो जाते हैं।

●प्याज का रस शुद्ध शहद 250-250 ग्राम खाने का सोड़ा 50 ग्राम तीनों को मिलाकर रखलें। यह अक्सीर-ए-दमा तैयार हो गया। दमा के रोगी सुबह-शाम 1-1 चम्मच प्रयोग कर ईश्वर के गुण गायें।

●प्याज का रस 10 ग्राम और इतना ही शुद्ध शहद तथा भीमसैनी कपूर के ढाई ग्राम मिलाकर रात को सोते समय 2-2 सलाई आँखों में लगाते रहने से उतरता हुआ मोतियाबिन्द ही नहीं, बल्कि उतरा हुआ मोतियाबिन्द भी साफ हो जाता है।

●60 ग्राम प्याज बारीक करके आधा किलो पानी में जोश दें। जब आधा शेष रह जाए तो छानकर ठण्डा होने पर पीने से मूत्र की जलन दूर हो जाती है।

●प्याज को भूभल में दबाकर नरम कर निचोड़कर रस (पानी) निकालकर पुनः गुनगुना करके बच्चों के कान दर्द में 2-3 बूंद डालने से तुरन्त दर्द बन्द हो जाता है।

●बच्चों की आँखें दुखने पर प्याज का रस और शहद 1-1 भाग अर्क गुलाब 2 भाग में मिलाकर 1-1 बूंद दोनों समय आँखों में डालें। तुरन्त लाभ होगा। नोट—इस औषधि को नित्य ताजा बनाकर प्रयोग करें।

●प्याज का रस और नौशादर 1-1 तोला खरल में डालकर खूब खरल करें जब दोनों औषधियाँ खूब मिल-जुलकर एकजान हो जाएें तो किसी साफ शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें। यह विषहर लोशन तैयार हो गया। बिच्छू, बर्र, शहद की मक्खी, मच्छर, कुत्ता के कांट लेने पर इसकी कुछ बूँदें डालकर मल दें। तुरन्त ठण्डक पड़कर लाभ होगा।

●प्याज का रस 20 से 30 ग्राम तक प्रत्येक आधा घन्टे के अन्तर पर हैजे में पिलाना लाभप्रद है।

●प्याज और पोदीना का रस 20-20 ग्राम प्रत्येक आधा घन्टे पर पिलाने से हैजा ठीक हो जाता है।

●प्याज का रस 15 ग्राम, काली मिर्च 7 दानें दोनों को पत्थर के खरल या कूड़ी में खूब घोटकर इसमें 10-15 ग्राम मिश्री जलाकर पिलाने से कै, दस्त और हैजा की प्याज और बेचैनी दूर होकर हैजा अच्छा हो जाता है।

●हैजा के संक्रमण के समय रात्रि को भोजन से पूर्व 20 ग्राम प्याज के रस में 1 मि.ग्रा भुनी हींग, सौफ और धनिया 1-1 ग्राम (सभी को मिलाकर) खाते रहने से हैजा के आक्रमण का खतरा समाप्त हो जाता है।

●सफेद प्याज का रस, अदरक का रस 5-5 ग्राम गाय का घी 1 चम्मच भर सभी को मिलाकर चाटते रहने से स्मरणशक्तिहीनता नष्ट होकर याददाश्त इतनी अधिक तीव्र हो जाती है कि पुरानी यादों के सारे अध्याय खुल जाते हैं।

●मुख पर झांई, मुँहासे, दाग, विवर्णता इत्यादि होने की स्थिति में ताजा प्याज के टुकड़े मुख पर मलने से खूब लाभ प्राप्त होता है।

●मुँहासों में प्याज के रस में शहद मिलाकर लगाना या कच्चा प्याज का रस और बादाम पीसकर लगाना भी अति लाभकारी है।

●मुखमण्डल की झाइयों में प्याज के बीजों को जल के साथ पीसकर शहद के साथ अथवा दूध मलाई के साथ लगाना भी अत्यन्त हितकर है।

●नकसीर में प्याज का रस सूंघना लाभप्रद है। प्याज का नियमित सेवन इस रोग में अतीव गुणकारी है। कच्ची प्याज खाने से नाक के गिरने वाला रक्त रुक जाता है। प्याज को पीसकर गले में बांधने से नकसीर में लाभ होता है। यह प्रयोग कण्ठ विकार और जुकाम में भी लाभप्रद है।

●कण्ठ विकार के कारण गले में खराश हो जाने पर (जिसमें काँटे से पड़ जाते हैं और पानी पीना तक कठिन हो जाता है।) प्याज के रस में शहद मिलाकर इसको फुरैरी से लगाना अत्यन्त लाभप्रद है। प्याज को सिरके के साथ खाना भी लाभकारी है।

●सिर के भारीपन में प्याज के रस को गाय अथवा भैंस आदि के सामान्य देशी घी में मिलाकर देते रहने से धीरे-धीरे लाभ हो जाता है। प्याज को काटकर सूंघना या प्याज को बारीक पीसकर पैर के तलुवों पर लेप लगाना भी उपयोगी है।

●भोजन के साथ कच्चा प्याज खाते रहने से दुग्धपान कराने वाली स्त्री के स्तनों में भरपूर दूध उतरने लगता है। धीरे-धीरे इस प्रयोग से स्तन भरे-भरे दिखाई देने लगते हैं तथा शिशु के दुग्धपान छोड़ देने के बाद भी स्तन पिलपिले या लम्बोतरे नहीं होते हैं फलस्वरूप ऐसी स्त्री वृद्धावस्था में भी युवा स्त्री की भांति सौन्दर्यवान दीखती है।

●रक्तस्राव होने, चोट आदि लग जाने अथवा खून में उबाल आने या शरीर में पित्त का प्रकोप हो जाने इत्यादि कारणों से रक्त बहना बन्द न हो तो सफेद प्याज को शाक-भाजी की भांति मट्ठे में पकाकर खाना अत्यधिक लाभप्रद है। यह 'चरक' का अनुभूत योग है।

●10 ग्राम प्याज के रस में 20 ग्राम शहद मिलाकर हल्की आग पर काढ़ा

सा बनाकर भोजनोपरान्त चाटने से तेजहीन चेहरों पर कान्ति आकर वे दमक उठते हैं। पूरा परिवार सेवन कर सकता है। एक मास में ही चमत्कार दृष्टिगोचर होगा। युवा स्त्री व पुरुष 25 ग्राम प्याज का रस 50 ग्राम शहद में चाटें।

● बुखार, खांसी, आँखों में जलन और जोड़ों में दर्द ये सब फ्लू (इन्फ्लूएन्जा) ज्वर के लक्षण हैं। ऐसी स्थिति में एक चम्मच प्याज का रस और दो चम्मच शहद मिलाकर दिन में 3-4 बार चाटने से एक ही दिन में तबियत सँभल जाती है।

नोट—प्याज और शहद गरम हैं अतः गर्भवती स्त्री को मात्र प्याज का रस ही दें।

● यदि शरीर में बार-बार ऐंठन होती हो, चमक सी उठती हो तो प्याज का रस थोड़ा सा गरम करके रोगी के पैरों के तलुवों में मालिश करायें।

नोट—इस योग से महिलाओं को तुरन्त आराम होता है क्योंकि पुरुषों की तुलना में स्त्रियों के तलुवे अधिक संवेदनशील और सुकोमल होते हैं।

● पेट में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी जैसे अफारा, अपचन, अग्निमांद्य, पेट दर्द, आध्मान इत्यादि की शिकायत उत्पन्न हो जाए तो प्याज, अदरक और लहसुन का रस 1-1 चम्मच तथा शहद तीन चम्मच मिलाकर भोजन से पूर्व चाटने से अत्यन्त लाभ होता है। सिरके के साथ प्याज खाना भी लाभकारी है। इसमें यदि अदरक का रस और कुछ काला नमक भी डाल लिया जाए तो और भी अधिक उपयोगी है। अग्निमांद्य और अपचन में यह योग अत्यन्त ही लाभकारी है।

● कच्ची लाल प्याज या पकाई हुई प्याज़ अथवा गरम राख में प्याज पकाकर इसका 4 चम्मच रस पीने से अनिद्रा दूर होकर गहरी शान्तिपूर्वक नींद आती है।

● आँख में जाला होने पर (आँखों की पुतली पर सफेदी उत्पन्न हो जाना ही जाला कहलाता है) रुई की बत्ती प्याज के रस में भिगोकर सुखा लें। तदुपरान्त इस बत्ती को तिल के तैल में जलाकर काजल बनाकर प्रयोग करें। इस योग के प्रयोग करने से जाला दूर हो जाता है।

मूत्र सम्बन्धी रोग—1 कि.ग्रा. पानी में 45 ग्राम प्याज काटकर उबाल लें। तदुपरान्त इसे छानकर शहद मिलाकर प्रतिदिन तीन बार पिलाने से मूत्र खुलकर बगैर कष्ट के आता है। इस योग के सेवन से बार-बार मूत्र आना बन्द हो जाता है तथा बन्द हुआ मूत्र आने लगता है। मूत्र की रूकावट दूर हो जाती है।

● जिनके हृदय की धड़कन बढ़ गई हो और वे हृदय सम्बन्धी रोगों से बचाव चाहते हों तो नित्य प्रति एक गाँठ प्याज की खाना खाते समय खायें। प्याज का रस शरीर में उचित मात्रा में पहुँचते रहने से रक्त प्रवाह सुचारू रूप से होने लग जाता है, फलस्वरूप हृदय सम्बन्धी बीमारियों से सुरक्षा प्राप्त हो जाती है।

● रक्ताल्पता के रोगियों को प्याज का रस अथवा कच्चा प्याज अवश्य ही सेवन करते रहना चाहिए। प्याज में लोहा काफी मात्रा में होता है तथा विटामिन सी, गन्धक, तांबा, प्रोटीन, कैरोटिन, विटामिन बी, नायसिन, थायमिन, प्राकृतिक लवण, फ़ास्फोरस, कैल्शियम, शर्करा, जल, ऊष्मांक आदि बहुमूल्य खनिज पर्याप्त मात्रा में होते है। फलस्वरूप प्याज पाचनांगों में उत्तेजना पैदा करके रक्तवृद्धि कर शारीरिक शक्ति बढ़ा देता है।

● खूनी बबासीर में 100 ग्राम प्याज का रस और 50 ग्राम शक्कर मिलाकर पीने से लाभ होता है। गुदा द्वार पर बबासीर मस्सों के फूल जाने और उनमें दर्द होने पर दो प्याज गरम राख में भूनकर पीसकर उसे घी में सेंक कर गरम लुगदी से मस्सों को सेंक करके इसी लुगदी को मस्सों पर बांध दें। मस्सों का दर्द दूर हो जाएगा।

हार्टअटैक—प्रात:काल नाश्ते में एक प्लेट में टुकड़े-टुकड़े करके प्याज को तलकर या उबालकर नित्य प्रति सेवन करते रहने से मनुष्य को दिल के दौरे नहीं पड़ते हैं। रायल विक्टोरिया इन्फमरी संस्था ब्रिटेन के अनुसार प्याज से हृदय धमनियों (कोरोनरी आर्ट्रीज) में रक्त के थक्के नहीं बनते हैं फलस्वरूप हृदय सम्भावित क्षति से बचा रहता है।

● नाड़ी शूल में प्याज पीसकर फिर इसे तैल में भूनकर (स्नायुरोग में) बाँधने से आराम मिलता है। प्याज के रस को राई के तैल में मिलाकर मालिश करने से गठिया में आराम होता है। प्याज के रस को सरसों के तैल में मिलाकर गरम करके वात रोग से होने वाले दर्दों में लगाने (मालिश करने) से लाभ होता है।

● सफेद प्याज का रस मृगी से पीड़ित रोगी की नाक में डालने से व आँख में लगाने से मृगी के रोगी को आराम मिलता है।

● 500 ग्राम प्याज को कूटकर 50 ग्राम शहद और 400 ग्राम शक्कर तथा एक लीटर पानी मिलाकर मन्दाग्नि पर उबालकर ठण्डा होने पर छानकर एक साफ स्वच्छ बोतल में भरकर रखलें। कष्टदायक खाँसी (जो काफी दवा कराने पर भी दूर न हुई हो) दिन में 4-5 बार एक बड़ा चम्मच भर पिलाते रहने से दूर हो जाती है। कफ की खाँसी में प्याज का रस शहद के साथ देने से कफ आसानी से निकल जाता है। गले की खरखराहट व जुकाम में प्याज को भूनकर खाने से आराम मिलता है।

● जुकाम में प्याज काटकर सूँघना अत्यन्त हितकर है। जुकाम में एक आध

प्याज की गाँठ खा लेने से भी लाभ मिलता है। रात्रि को सोते समय प्याज की 1 गाँठ खा लेने से जुकाम में बहुत लाभ होता है।

● आँवले के आकार वाली प्याज की गांठें लेकर आवश्यकतानुसार कम या अधिक गाँठें ले लें। इनके 4 ऐसे टुकड़े (प्रत्येक गाँठ के) करें कि टुकड़े सभी आपस में जुड़े रहें। तदुपरान्त इन्हें किसी कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में रखकर ऊपर से इतना सिरका डालें कि प्याज खूब भली भांति डूब जाए उसके बाद सिरके में थोड़ा सा नमक और काली मिर्च पीसकर मिलादें। इसे प्रतिदिन सुबह-शाम को खाते रहने से पीलिया (पान्डु रोग) होने का भय नहीं रहता है तथा पाचन शक्ति भी ठीक बनी रहती है।

● पान्डु रोग से पीड़ित व्यक्ति को प्याज का रस व शहद सममात्रा में मिलाकर 2-3 चम्मच प्रातःकाल सेवन करना अत्यन्त लाभकारी है।

● प्याज में सिरका मिलाकर खाने से बढ़ी हुई तिल्ली में लाभ होता है।

● प्याज के बीजों को सिरके में पीसकर दाद पर लगाने से जल्दी ही दाद नष्ट हो जाता है।

● खुजली के स्थान पर प्याज का रस लगाना लाभकारी है।

● शरीर में कहीं भी जलन होने पर प्याज काटकर रगड़ने से लाभ होता है।

● प्याज पर चूना लगाकर मस्से पर रगड़ने से तुरन्त जलकर निकल जाता है।

● प्याज को कुचलकर बिबाई पर कुछ दिनों तक लगातार लगाते रहने से लाभ हो जाता है।

● जब स्त्री के स्तनों का वरम फूटकर घाव बन जाए तो 100 ग्राम मीठा तैल लेकर 15 ग्राम प्याज और फिर नीम के पत्ते जला लें। तदुपरान्त थोड़ा सा मोम मिलाकर मरहम बनालें। इस मरहम को रोगिणी अपने स्तनों के घाव पर लगाये। अत्यन्त असरकारक और शीघ्र फलदायी मरहम है।

गूंगापन—प्याज के रस को थोड़े से पानी में मिलाकर बच्चों को पिलाते रहने से उनके बोलने की शक्ति में वृद्धि हो जाती है। इसमें यदि अल्पमात्रा में अकरकरा का चूर्ण और मिला लिया जाए तो अधिक लाभप्रद बन जाता है।

● बच्चों को दस्त या हैजा हो जाने पर 5 से 15 ग्राम तक प्याज का रस चूने के निथरे और छने हुए पानी के साथ सेवन कराने से तुरन्त लाभ होता है।

● 4-6 बूंद प्याज का रस चटा देने से बच्चों की बदहज्मी दूर हो जाती है। आवश्यकतानुसार इसे कई बार चटाया जा सकता है।

● प्याज के रस की 2-4 बूँदें शहद के साथ मिलाकर बच्चों को चटाने से पेटदर्द दूर हो जाता है।

● छोटे बच्चों को प्याज का रस शक्कर में मिलाकर चटाने से वात-पित्त और कफ तीनों ही प्रकार के विकार नष्ट हो जाते है।

● यदि बालक को शीघ्र बढ़ाना हो तो प्याज और गुड़ मिलाकर कुछ दिनों तक खिलाने से लाभ होता है।

● शिशुओं के दाँत निकलते समय दस्त लग जाते हैं, आँखें आ जाती हैं उनका शारीरिक विकास रुक जाता है। प्याज का रस सेवन कराते रहने से समस्त प्रकार के विकार नष्ट होकर कैल्शियम की भरपूर पूर्ति हो जाती है।

● बच्चों के पेट में कीड़े होने पर एक चम्मच प्याज का रस में आधा चम्मच पानी मिलाकर पिलाना अत्यधिक लाभप्रद है।

● प्याज के आधा किलो रस में 50 ग्राम रैक्टीफाइड स्प्रिट मिलाकर 15 दिनों तक रखा रहने दें तदुपरान्त इस अर्क को छानकर किसी दूसरी बोतल में सुरक्षित रखलें। आयु व अवस्थानुसार 5 से 15 ग्राम तक यह दवा दिन में 2-3 बार सेवन कराने से बच्चों का सूखा रोग नष्ट हो जाता है।

● थोड़ा-सा सफेद प्याज का रस, सरसों के तैल में पका करके बच्चों की छाती पर मलने से सर्दी, जुकाम और खाँसी (छाती पर जमा हुआ कफ निकल कर) नष्ट हो जाती है। सरसों के तेल के स्थान पर पुराना घी प्रयोग कर सकते हैं।

● बच्चों के तालुकन्टक रोग में (इस रोग में बच्चे के सिर में तालु का भाग नीचा हो जाता है और उसमें गड्ढा सा हो जाता है।) सफेद प्याज को आग में पकाकर बारीक पीसकर उसमें थोड़ा सा गाय का घी मिलाकर टिकिया बनाकर बालक के तालु पर रखकर उस पर रेंडी का पत्ता नरम करके रखकर ऊपर से (प्रतिदिन प्रातःकाल पट्टी बाँधें तथा सन्ध्या समय पट्टी खोलकर सिर को धो-पोंछकर तालु पर गोघृत लगाये। साथ ही सफेद प्याज के रस में 1 ग्राम सफेद जीरा का चूर्ण तथा खान्ड मिलाकर बालक को पिलायें। मात्र 3-4 दिन के इस प्रयोग से बच्चों का तालु कन्टक रोग ठीक हो जाता है।

● 7 छोटी-छोटी प्याज की गाठों की माला बनाकर बालक के गले में पहिना देने से गर्मियों की गरम हवा 'लू' नहीं लगती है। यदि बच्चे को लू लग गई हो तो 5-10 बूँद प्याज का रस पानी में मिलाकर थोड़ी-थोड़ी देर में पिलाने से तथा प्याज का रस शरीर पर मलने से लू का असर नष्ट हो जाता है।

●प्याज के रस में रूई की फुरैरी डुबोकर कीड़ा लगे दांत में रखना लाभप्रद है अथवा कच्चे प्याज के टुकड़ों को दाँतों से दाबें या चबायें।

●कच्चा प्याज बार-बार खाने से मूत्र अधिक होता है। अत: जलोदर के लिए यह लाभप्रद है।

●किसी भी प्रकार का नशा किए हुए व्यक्ति को 1 कप भर प्याज का रस पिला देने से नशा शर्तिया कम अथवा नष्ट हो जाता है।

●यदि 40 दिनों तक निरन्तर प्रात:काल में दो चम्मच सफेद प्याज के रस में समभाग शहद मिलाकर सेवन कर लिया जाए तो पुश्तैनी दमा (मां-बाप से विरासत में मिला) भी नष्ट हो जाता है। इस योग से पुरानी कहावत दमा दम के साथ जाता है भी शर्तिया फेल हो जाती है। अनुभूत है।

●दो प्याज की गाँठों का रस शहद में मिलाकर प्रात:काल (नित्यकर्मों से निवृत होकर) चाटते रहने से मात्र एक सप्ताह में ही रक्त बढ़ने के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

●पाखाने के साथ आँवों मिला हो तो 60 ग्राम प्याज को छीलकर महीन कूटकर इसे 5-6 बार जल से धोकर 250 ग्राम गाय के ताजा दही के साथ खायें। **(नोट—यह 1 खुराक है।)** ऐसी दिन में तीन खुराकें (सुबह, दोपहर, शाम) सेवन करने से मात्र 2-3 दिन में ही लाभ हो जाता है।

●प्याज का रस सिर में मलने से जुएं (लीखें या डींगर) नष्ट हो जाते हैं।

●प्याज का रस 1 भाग शहद दो भाग में मिलाकर पकाकर 10 ग्राम की मात्रा में नित्य सेवन करने से कामेन्द्रिय में उत्तेजना पैदा हो जाती है तथा सेवन कर्ता की अपार काम शक्ति बढ़ जाती है।

●सफेद प्याज का रस और अदरक तथा शहद 5-5 ग्राम खूब भली प्रकार मिलाकर नित्य प्रात:काल 40 दिन तक सेवन करने से नामर्द भी मर्द बनता है।

●प्याज के रस में आटा गूंथकर बाटी सेंककर प्याज की ही सब्जी से महीना 20 दिन खाने से खोई हुई मर्दानगी वापस आने लगती है।

●मसूढ़ों की सूजन में कच्ची प्याज को नमक के साथ खाना लाभप्रद है।

●गुदा भ्रंश नामक रोग में प्याज का ताजा रस आधा से 1 औंस तक खान्ड में मिलाकर दिन में दो बार पिलाना अत्यधिक लाभप्रद है।

●गाँठ, फोड़ा, बद एवं व्रण में प्याज को भूनकर पुल्टिस के रूप में प्रभावित अंग पर लगाना (रखना) लाभप्रद है।

नोट—पुल्टिस को क्रमश: प्रति 3-4 घंटे पर बदलते रहना चाहिए जिससे स्थान गरम बना रहे। पुल्टिस बनाने हेतु प्याज को घी में भूनना चाहिए। इस प्रयोग से जो गांठ न बैठती हो और न पकती हो वह कुछ ही दिनों में पक जाती है पुल्टिस में यदि हल्दी मिला ली जाए तो योग और भी अधिक लाभकारी हो जाता है।

●दाद में प्याज को सिरके में पीसकर लगाना लाभप्रद है।

●प्याज के बीजों को पीसकर दाँतों पर मलने सें दन्तकृमि नष्ट हो जाते हैं।

●प्याज के रस को रसौत मिलाकर 1 औंस की मात्रा में सुबह-शाम भोजन के बाद सेवन करते रहने से कुछ ही दिनों में स्त्रियों का मासिक धर्म नियमित होने लगता है तथा कष्टार्त्तव की स्थिति नष्ट हो जाती है।

●अम्लपित्त रोग में (जब रोगी को खाया हुआ भोजन नहीं पचता है, बार-बार खट्टी डकारें आती हैं) 50 ग्राम प्याज को काटकर गाय के ताजे दही में मिलाकर सेवन करना अत्यधिक लाभप्रद है।

●यदि अधिक सम्भोग करते रहने के कारण कामशक्ति घट गई हो तो प्याज के कटे टुकड़े और गोघृत 50-50 ग्राम 250 मि.ली. गाय के दूध में एकत्र कर पकायें। जब गाढ़ा हो जाए तब उतारकर मिश्री मिलाकर (शीतल होने पर सेवन करें। दो माह तक सेवन जारी रखें तथा लाल प्याज का ही प्रयोग करें।

●प्याज का रस, अदरक का रस तथा शहद तीनों को मिलाकर 40 दिनों तक सेवन करने से गई हुई जवानी पुन: वापस आ जाती है।

नोट—प्याज की मात्रा 10-15 ग्राम तक है किन्तु आवश्यकतानुसार अधिक मात्रा में भी सेवन किया जा सकता है। गरम प्रकृति के व्यक्ति को प्याज का अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्याज प्यास उत्पन्न करता है तथा पसीना अधिक लाता है। स्मरण शक्ति को हानि पहुँचाता है। स्नायु को उत्तेजित करता है तथा काम को बढ़ाता है। कच्चा प्याज अधिक उत्तेजक है। जिनके रक्त में यूरिक एसिड की मात्रा अधिक हो, उन्हें प्याज का प्रयोग करना हानिकारक है। प्याज दिमाग और गले को भी हानिकारक है। गरम प्रकृति (स्वभाव) वाले व्यक्ति को अधिक प्याज खाने से नजला पैदा हो जाता है। रात्रि को भोजन में बतौर सलाद कच्चा प्याज हर्गिज सेवन न करें। इसके सूंघने से भी गरम प्रकृति के व्यक्ति के सिर में दर्द होने लगता है।

●प्याज को खाने के कुछ देर बाद दही या मट्ठा पी लेने से इसका दर्प नष्ट हो जाता है। कासनी और शहद भी प्याज का दर्प नाशक है। प्याज को पकाकर खाने से हानि कम होती है और प्याज़ को जितना अधिक पकाया जाएगा, हानि भी उतनी ही कम होगी। सिरका और काला नमक भी प्याज के दर्पनाशक है।

हींग

●कीड़ा खाये खोखले दांत दर्द में हींग भरने से तुरन्त लाभ होता है।

●दाँत या दाढ़ के खोखले भाग में अफीम और नौसादर 1-1 मि.ग्रा. को आपस में खूब मिलाकर गोली बनाकर छिद्र में रखकर दबालें । इस प्रयोग से खोखला छेद भर जाएगा, जीवन भर को आराम हो जाएगा ।

●हींग को गरम करके दाढ़ के नीचे दबा लेने से कृमि (कीड़ा) के कारण होने वाला दर्द शीघ्र ही शान्त हो जाता है ।

पेचिश में—थोड़ी सी हींग दही में लपेटकर प्रयोग करें ।

●हस्तमैथुन क्रिया आदि करने के कारण लिंग में विकार आ जाने पर रात्रि को सोते समय तीन ग्राम हींग को पानी में पीसकर लिंग पर 15-20 दिनों तक लेप करते रहने से तथा प्रातःकाल को गरम पानी से लिंग धो डालने से अत्यन्त लाभ होता है । हानिरहित अमूल्य योग है ।

●हींग को पानी में पीसकर घुटनों पर लेप करने से घुटनों का दर्द रफू चक्कर हो जाता है ।

●हींग को गरम पानी में घोलकर नाभि के आस-पास लेपकर तथा थोड़ी सी हींग भूनकर शहद के साथ चाट लेने से डकारें आना बन्द हो जाती हैं तथा भूख बढ़ जाती है ।

●दाँत दर्द में गरम पानी में हींग घोलकर कुल्ला करना उपयोगी है ।

●आक के दूध में हींग को घिसकर लेप करें । बिच्छू का विष नष्ट होगा।

●हींग का चूर्ण 4 माशा 20 तोला दही में मिलाकर प्रातःकाल पीने से तथा दोपहर में दही-भात खाने से (यह क्रिया तीन दिन करें) नारू रोग इस प्रयोग से जड़ से नष्ट हो जाता है ।

●यदि अफीम खाये अधिक समय न हुआ हो तो पहले राई या रीठे का जल पिलाकर वमन कराये और यदि अधिक समय हो गया हो तो हींग को मट्ठे में मिलाकर पिलायें । शर्तिया इलाज है ।

●घाव में कीड़े पड़ जाने और अत्यधिक दुर्गन्ध उत्पन्न हो जाने पर नीम के ताजे पत्ते दो तोला और हींग 1 माशा मिलाकर घी के साथ पीसकर पुल्टिस बनाकर घाव पर बांधने से कृमि भर जाते है तथा घाव शुद्ध हो जाता है ।

●अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) रोग में कच्ची हींग और एलुआ समभाग मिलाकर जल के साथ खरलकर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें । 1-1 गोली दिन में 2-3 बार सेवन करते रहने से थोड़े ही दिनों में हिस्टीरिया रोग पीछा छोड़ देता है ।

●अतिसार होने पर हींग, कालीमिर्च, कपूर 4-4 तोला और अफीम 1 तोरला मिलाकर अदरक के रस में 6 घंटे तक खरल करके 1-1 रत्ती की गोलियां बनाकर सुरक्षित रखलें । मात्रा 1 से 2 गोली तक दिन में तीन बार प्रयोग करायें।

●यदि मलेरिया ज्वर पीछा नहीं छोड़ रहा हो तो ज्वर आने से दो घंटा पहले 4 आना भर शुद्ध हींग 1 तोला लेकर जल में खौलाकर गाढ़ा (गरम करके) हाथ-पैर के सभी नाखूनों पर लेप चढ़ा दें । तीन दिन बाद यह क्रिया करने से मलेरिया ज्वर भाग जाता है ।

●पित्ती उछलने पर हींग को घी में मिलाकर मालिश करना अत्यन्त उपयोगी है ।

●हींग को पानी में घोलकर एनिमा करने से उदरकृमि निकल जाते हैं ।

●भुनी हुई हीरा हींग 1 ग्राम, नीम की छाया शुष्क अथवा ताजी पत्तियाँ 15 ग्राम, भुना जीरा और कपूर 1-1 ग्राम को पानी के साथ खूब बारीक घोट लें तदुपरान्त चने के आकार की गोलियाँ बनालें । रात्रि को सोते समय 1 से 4 गोलियाँ तक सेवन करने से पेट के रोग दूर होकर अर्श (बबासीर) का रोग नष्ट हो जाता है ।

●अफीम और हीरा हींग 5-5 ग्राम लेकर 50 ग्राम तिल के तैल में खूब पीसकर मिलालें । इस तैल को शौच क्रिया करने से पूर्व तथा रात्रि को सोते समय बवासीर के मस्सों पर लगाते रहने से मस्से गिर जाते हैं ।

●100 ग्राम जैतून का तैल (आलिव आयल) में 10 ग्राम हींग उबालकर सुरक्षित रखलें । इस तैल को ड्रापर द्वारा कान में टपकाने से कान के समस्त प्रकार के रोगों में लाभ होता है ।

●फोड़े-फुन्सी होने पर 500 ग्राम सरसों का तैल लेकर खूब गरम कर लें। तदुपरान्त इसमें हीरा हींग 1 ग्राम, नमक 20 ग्राम, कार्बोलिक एसिड 20 ग्राम डालकर ठण्डा होने पर किसी साफ (डाटयुक्त बोतल में भरकर सुरक्षित रखलें। इस तैल को फोड़े-फुन्सियों पर दिन में कई बार लगाने से शीघ्र ही आराम हो जाता है) ।

●सिर दर्द में हीरा हींग पीसकर लेप करना उपयोगी है । हीरा हींग की 1 छोटी सी डली जल में घिसकर नाक के द्वारा सूंघने से आधासीसी रोग में आराम हो जाता है ।

●डिब्बा रोग बच्चों को डिब्बा रोग होने पर (पसली चलने पर) आधा रत्ती हींग पानी में घोलकर देने से शीघ्र ही लाभ होता है ।

●तिजारी व चौथिया ज्वर में हींग को पुराने घी में मिलाकर नस्य देने से ज्वर रुक जाता है।

वत्सनाभ का विष—हींग आधा ग्राम को 100 ग्राम गोघृत में मिलाकर बार-बार पिलाने से वत्सनाभ का विष उतर जाता है।

●हींग को स्त्री के दूध में मिलाकर थोड़ा सा गरम करके बिच्छू दंश के स्थान पर लगा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

नोट—बिच्छू दंशित व्यक्ति को गरम-गरम दुग्धपान कराना अतीव गुणकारी है।

●हींग 245 मि.ग्रा. और छोटी इलायची का चूर्ण आधा ग्राम को 1-1 घंटे पर जल के साथ 3-4 बार सेवन करने से पेशाब साफ और खुलकर आ जाता है।

●हिस्टीरिया के दौरा से बेहोश होने पर हींग को पानी में घोलकर नस्य देने से होश आ जाता है।

●मक्कल शूल (प्रसवोपरान्त जच्चा का अशुद्ध रक्त गिरना बन्द होना तथा पेट फूलने के कारण उदर और गर्भाशय प्रदेश में दर्द होना) हींग को पानी में मिलाकर थोड़ा गरम करके नाभि प्रदेश पर लेप करें तथा आधा ग्राम शुद्ध हींग को 25 ग्राम घी के साथ सेवन करायें। उपयोगी योग है।

●उदर शूल (पेट दर्द में) पेट में गैस भर गई हो, पाखाना नहीं हुआ हो, पेट में असहनीय पीड़ा हो तो हींग को पानी में घोटकर थोड़ा सा गरम करके नाभि प्रदेश पर लेप करें तथा हींग को घी में भूनकर (245 मि.ग्रा.) सेवन कराने से दर्द शान्त हो जाता है। मलत्याग होकर अपानवायु छूट जाता है। अथवा 6 ग्राम हींग पानी में घोलकर गुदा मार्ग द्वारा पिचकारी देने से दर्द शान्त हो जाता है। अथवा घोड़े की लीद का रस 12 ग्राम में आधा ग्राम शुद्ध हींग मिलाकर 2-3 बार देने से उदरशूल मिट जाता है।

●हींग और अफीम सममात्रा में पीसकर कीड़ा खाए दन्त के गड्डे (खोखले भाग) में भरकर ऊपर से रूई रखकर दबा देने से कृमि दन्तशूल नष्ट हो जाता है।

नोट—हींग अल्प मात्रा में ही सेवन करें। इसकी मात्रा चौथाई से पौन ग्राम तक है। प्रतिदिन लम्बे समय तक सेवन न करें। स्त्रियों को मासिक धर्म (रज:स्राव) अधिक होता हो तो हींग का सेवन बन्द कर दें। गर्भवती महिलायें इसका अल्प मात्रा में ही सेवन करें। पित्त प्रकृति के लोग हींग का औषधि के रूप में ही प्रयोग करें। शिशु को गरमी का विकार हो तो दुग्धपान करानेवाली माता हींग का सेवन न करें। अधिक समय तक हींग का सेवन करते रहने से कमजोरी आ जाती है। छाती और मूत्र-मार्ग में जलन होती है। अफारा हो जाता है, हाजमा बिगड़ जाता है। मूत्र और पसीना दुर्गन्धित हो जाता है। हींग दिमाग को तथा यकृत को हानि पहुँचती है। कतीरा, बनफ्शा, नीलोफर, सेब, सन्दल हींग के दर्पनाशक है। सिकन्जबीन हींग की पूरक है।

अमचूर

●चुटकी भर अमचूर पीसकर सब्जी में डाल देने से सब्जी स्वादिष्ट हो जाती है तथा अमचूर पड़ी हुई सब्जी हज्म भी शीघ्र हो जाती है।

●अमचूर को पानी में पीसकर (शरीर पर मकड़ी मली गई हो जाने पर) लेप करना अत्यन्त ही उपयोगी है।

●अमचूर और लहसुन सममात्रा में ले-पीसकर बिच्छू दश के स्थान पर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

●शीत ऋतु में पैरों में बिवाई फटने पर आमों की चटनी या अमचूर का प्रलेप करने से लाभ होता है।

●अमचूर को भिगोकर शहद मिलाकर बच्चे को नित्य प्रति दो बार चटाने से सूखा रोग ठीक हो जाता है।

नोट—इसका नित्य प्रति साग सब्जी या चटनी के रूप में प्रयोग करने से धातु दौर्बल्य होकर नपुंसकता आ जाती है। अमचूर का पूरक अनारदाना है।

कचरी

●कचरी को मांस पकते समय डालने से माँस बहुत शीघ्र गल जाता है।

●आमाशय को शक्ति प्रदान करने वाले दीपन-पाचन चूर्णों में कचरी को मिला देने से उपयोगिता अधिक बढ़ जाती है।

●कच्ची तथा पकी (दोनों ही प्रकार की) कचरी में मूत्रल गुण है। इसके लगातार कुछ दिनों तक सेवन करने से पथरी टूट-फूट कर निकल जाती है

●सुखायी हुई कचरी की धूनी अर्श रोग में देना अत्यन्त उपयोगी है।

●वायुजन्य सिरदर्द में कचरी चूर्ण का ऊष्ण जल से सेवन अत्यन्त उपयोगी तथा परीक्षित है।

●बादी के कारण होने वाले पेट दर्द को कचरी दूर कर देती है।

●कचरी के सेवन से अर्श, अर्धांग, पक्षाघात और अर्दित आदि वायुरोग तथा कफ के रोगों में लाभ मिलता है।

नोट—इसकी मात्रा 4 ग्राम है। यह गरम प्रकृति के लोगों को हानिप्रद है। सिरदर्द उत्पन्न करती है। इसके दर्प को नाश करने हेतु धनिया या अंजीर का सेवन करें।

गुलाब

यह सच है कि हर किसी को गुलाब की खूबसूरती और खुश्बू मंत्र मुग्ध कर देती है। गुलाब को पुष्पों का राजा कहा जाता है। हमारे आयुर्वेद के प्राचीनतम ग्रन्थों में गुलाब के फूलों की विस्तृत चर्चा उपलब्ध है। गुलाब वात और पित्त नाशक है, जलन व खुश्की प्यास नष्ट करता है तथा कब्जनाशक भी है। इसमें विटामिन सी भी भरपूर मात्रा में है।

● गरमी के दिनों में इसका गुलकन्द तथा इसकी ठण्डाई के साथ मिलाकर सेवन करने से मस्तिष्क ठण्डा रहता है।

● एक कप गुलाब और सन्तरे का रस पीने से सीने की जलन, गले की जलन तथा जी मिचलाना आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

● गुलाब के फूलों को पीसकर पानी में घोलकर पूरे शरीर में लेप करने के उपरान्त स्नान करने से शरीर में पसीने की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

● गुलाब का एक फूल प्रतिदिन कुचलकर खाने से मसूढ़े मजबूत हो जाते हैं तथा मसूढ़ों से खून व मवाद आना बन्द हो जाता है।

● गुलाब की पंखुड़ियों को एकत्रित करके पानी में उबालकर फिर इसे ठण्डा कर दिन भर में 4 बार गरारे करने से मुख के छाले ठीक हो जाते हैं।

● गुलाब के फूलों से बना गुलकन्द दो-दो चम्मच सुबह-शाम सेवन करते रहने से कब्ज की शिकायत दूर हो जाती है तथा मस्तिष्क भी ठण्डा रहता है।

● 10 ग्राम गुलाब की पत्तियों के साथ 1 चम्मच पिसी हुई मिश्री और दो नग इलायची के पीसकर प्रात:काल बासी मुंह सेवन करते रहने से पुराने से पुराना सिरदर्द धीरे-धीरे दूर हो जाता है।

● यदि शरीर में अथवा हाथ की हथेलियों पैरों के तलुवों में जलन होती हो तो चन्दन में गुलाब जल मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

● गुलाब की 10 ग्राम पत्तियों को पीसकर मिश्री मिलाकर दिन में 2-3 बार सेवन करते रहने से स्त्रियों का श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) रोग दूर हो जाता है।

● दो बड़े चम्मच भर गुलकन्द, मुनक्का 4 नग और आधा चम्मच सौंफ को उबालकर (जब आधा पानी शेष बचे) तब रात्रि में सोते समय (जाड़े में गरम तथा गरमी में ठण्डे) पानी से सेवन करने से पुराने से पुराना कब्ज दूर हो जाता है।

जामुन

जामुन को यदि अमृत कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं है। इस मामूली से नजर आने वाले फल में विधाता ने जल, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज, लवण, वसा, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, विटामिन ए, बी, सी, गैलिक एसिड आदि सभी कुछ तो भर दिया है। जामुन के प्रति 100 ग्राम गूदे से 83 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। जामुन की गुठली में जम्बोलीन नामक ''ग्लूकोसाइट'' पदार्थ है, जो शरीर के स्टार्च को शक्कर के रूप में परिवर्तित होने देता है, इसीलिए यह मधुमेह के रोगियों के लिए अमृत के समान है।

● जामुन के गुठली का चूर्ण सेवन करने से मधुमेह के रोगी के मूत्र में चीनी की मात्रा हमेशा के लिए कम हो जाती है।

● जामुन पाचनक्रिया को सुधारकर खून की कमी (एनीमिया) और पीलिया (जान्डिस) को दूर करने में अत्यधिक उपयोगी है।

● जामुन के सेवन से यकृत (लीवर) की बिगड़ी हुई क्रिया सुधर जाती है।

मिर्च (हरी व लाल)

● हरी मिर्च में विटामिन 'सी' अधिक होता है। सस्ती होने के कारण गरीब व अमीर सभी बोलते हैं। फिर अधिक मात्रा में इसे खाना हानिकारक है।

● हरी मिर्च के सेवन से मुँह की लार अधिक उत्पन्न होती है जो आमाशय के लिए पौष्टिक तथा वायु की निकासी करने वाली होती है। यह लार हृदय प्रतिकारक भी है तथा मल-मूत्र विसर्जक और पौरुष शक्ति के लिए भी पौष्टिक होती है।

● जलवायु के परिवर्तन से आमाशय पर जो घातक प्रभाव पड़ते हैं मिर्चों के सेवन से दूर हो जाते हैं।

● मदिरापान की अधिकता में मिर्चों का सेवन शराब की इच्छा को कम करके मैदे की क्रिया को शक्ति प्रदान कर देता है।

● कुत्ता काटे जख्म पर मिर्चों को पानी में पीसकर लगाने से घाव का विष निकल जाता है, पीप नहीं पड़ती है, घाव शुष्क होकर शीघ्र अच्छा हो जाता है।

नोट—पुरुषों की अपेक्षा (हमारे देश की) स्त्रियां मिर्चों का चटपटापन अधिक पसन्द करती हैं और यही कारण है कि उनकी दृष्टि निर्बलता होकर धुंधला दिखलाई देने लगता है और उन्हें योनि की खुजली तथा श्वेत प्रदर जैसे घातक रोग हो जाते हैं। दुग्धपान कराने वाली स्त्रियों के अधिक मिर्च सेवन करने के के कारण उनके बच्चे को मैला आने लगता है और प्राय: आँखें दुखने

लगती हैं । पेचिश की भी शिकायत आमतौर पर हो जाती है । यूँ तो लाल मिर्च की हानियों की लिस्ट तो बहुत ही लम्बी है ।

● इसके घातक प्रभाव सर्वप्रथम आहार की उस नलिका पर पड़ते हैं जो आमाशय से प्रारम्भ होकर गुदा तक गई है । जीभ सर्वप्रथम इसकी तेजी से झन-झनाकर इसके अधिक सेवन का विरोध प्रदर्शित करती है । तदुपरान्त इसके अधिक सेवन से पाचन दुषित होता है, भूख कम लगती है, आमाशय निर्बलता को प्राप्त होता चला जाता है और कैन्सर होने के द्वार स्वत: खुल जाते हैं । इसके अधिक सेवन से आँखे चुंधियाने लगती हैं, उनमें कीचड़ आने लगता है । पपोटों में रोहे उत्पन्न हो जाते हैं, इसके सेवन के अभाव में दृष्टि निर्बल हो जाती है । यकृत प्रभावित होकर विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं । अन्डकोष, गुर्दे, आँखें, मल-मूत्र तक मिर्चों की अधिकता के प्रभाव से क्षीण हो जाते हैं । जिस दिन मिर्चों का सेवन अधिक हो जाता है उसी दिन मूत्र गहरा पीला और जलकर आने लगता है । वीर्य पतला पड़ जाता है जिसके फलस्वरूप शीघ्रपतन रोग हो जाता है, स्वप्नदोष होने लगता है । मर्दाना शक्ति में कमी हो जाती है ।

● मिर्च का अधिक प्रयोग नवयुवकों के लिए भी घातक है । इसके सेवन से उनकी प्रजनेन्द्रियों में उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है जिसके फलस्वरूप नवयुवक विवश होकर हस्तमैथुन के अभ्यस्त हो जाते हैं । मिर्चों के अधिक सेवन से ही नवयुवकों में प्रमेह विकार, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन आदि रोग प्रमुखता से पाए जाते हैं । किन्तु संसार में विधाता ने मात्र हानिप्रद (ही कोई भी वस्तु उत्पन्न नहीं की है, यदि किसी वस्तु से हानि है तो उससे लाभ भी अवश्य है । उनकी मात्रा कम व अधिक हो सकती है । लाभ-हानि एक ही सिक्के के दो पहलू है ।

● हैजा में लाल मिर्च के बीज निकालकर उसके छिलकों को बारीक पीसकर कपड़े से छानकर (इस चूर्ण को) शहद के साथ घोटकर चौथाई ग्राम की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखाकर सुरक्षित रखलें । हैजे के रोगी को बगैर किसी अनुपान के 1 गोली ऐसे ही (बिना चाय, पानी का सहारा लिए) निगलवा देने से जिस रोगी का शरीर ठण्डा पड़ गया हो, नाड़ी की गति डूबती जा रही हो, ठण्डा पसीना चल रहा हो, ठीक हो जाता है । मात्र 10 मिनट में ही ठण्डा पसीना बन्द होकर गरमी पैदा होने लगती है और नाड़ी नियमित रूप से चलने लगती है ।

● यदि दाँत में कोचर पड़ने से दाढ़ में बहुत अधिक दर्द हो रहा हो तथा

किसी उपचार से लाभ प्राप्त न हो रहा हों तो एक अच्छी पकी हुई लाल मिर्च लेकर (उसके ऊपर का डन्ठल और भीतर के बीज निकालकर) शेष बचे भाग को पानी के साथ पीसकर कपड़े से रस निकाल कर (जिस ओर की दाढ़ दुख रही हो उसी ओर के) कान में 2-3 बूँद रस टपकाने से दर्द तुरन्त दूर हो जाता है।

नोट—रस टपकाने से कुछ देर तक कान में जलन होती है । यह जलन यदि जल्द ही शान्त न हो तो—थोड़ी सी शक्कर पानी में डालकर उसकी 2-3 बूँदें कान में टपकाने से जलन शान्त हो जाती है ।

● त्वचा पर वर्षा ऋतु में होने वाली फुन्सियां, सूजन, शोथ व किसी प्रकार की खाज, खारिश, खुजली इत्यादि में लाल मिर्च डालकर पकाया हुआ सरसों का तैल लगाना उपयोगी है ।

● लाल मिर्च को पानी में पीसकर वृश्चिक-दंश पर लेप करने से तत्काल ही पीड़ा कम होकर रोगी को लाभ पहुँचता है ।

● 1 मिर्च को पानी में महीन (बारीक) पीसकर कपड़े से छानकर इसका जल पिलाने से सन्निपात ज्वर की मूर्च्छा दूर हो जाती है ।

नोट—मिर्च की मात्रा 1 ग्राम से भी कम है । यह मसाना, फेफड़े, आमाशय और गरम स्वभाव के व्यक्तियों के लिए हानिकारक है । इसके अत्यधिक सेवन से बवासीर हो जाती है, गला खराब हो जाता है । जिगर में गर्मी बढ़ जाती है । आयुर्वेद मनीषियों के मतानुसार लाल मिर्च का अधिक सेवन से संखिया के विष की भांति घातक है । मूत्र में रुकावट पैदा करती है और खून में खराबी भी उत्पन्न करती है । इसके दर्पनाश हेतु घी, दूध व शहद आदि प्रयोग करें । लाल मिर्च की पूरक काली मिर्च है ।

लौंग

● यह सुगन्धित, गरम और खुश्क (शुष्क) है । क्षुधाबर्धक है, भोजन पचाती है । कै, मितली, वायु, प्यास, कफ, खांसी, दमा, नजला, नपुंसकतानाशक है तथा दिमाग को शक्ति प्रदान करती है । लौंग को देवपुष्प और देवकुसुम के नाम से पुकार कर हमारे पूर्वज आयुर्वेद मनीषियों ने सम्मान प्रदर्शित किया है ।

● यह शीतल, तिक्त, आँखों के लिए हितकर आहार में रुचि उत्पन्न करने वाली, त्रिदोष, (वात, पित्त, कफ) नाशक है । तीक्ष्ण (तेज) है और सिर के रोगों का हरण करने वाली है । यह कटु, हल्की, कफ, मुख के विकृत स्वाद, वमन, पेट का तनाव तथा उदर-शूल नाशक भी है । पित्त के विकार, मन्दाग्नि, पाचन क्रिया की गड़बड़ी तथा मुख की दुर्गन्ध को दूर करती है । वैद्यक विधि से निर्मित होने वाली सैकड़ों तरह की औषधियों में प्रयुक्त होती है । भोजन (साग-सब्जी)

में इसका उपयोग करने से पाचनक्रिया तीव्र होकर भोजन में रुचि उत्पन्न होकर भूख बढ़ जाती है । इसका तैल दाँतों के दर्द में अत्यन्त ही लाभप्रद है । लौंग के उपयोग से शरीर में रोगनाशक शक्ति का विकास होता है । (यह रक्त के श्वेत कणों की वृद्धि करती है और यही कण विभिन्न रोगों के जीवाणुओं को नष्ट करते है । लौंग में एक विशेष प्रकार का विष रहता है जो कीटाणु नाशक है ।

●लालची, व्यवसायी लौंग में अर्क निकाली हुई लौंग मिलाकर बाजार में बेच देते हैं । यदि लौंग में झुर्रियाँ पड़ी हों तो निश्चित समझ लें कि यह अर्क निकाली हुई लौंग है । अच्छी लौंग में कभी भी झुर्रियाँ नहीं हुआ करती हैं ।

●लौंग को पीसकर माथे पर लगाने से सिरदर्द नष्ट हो जाता है ।

●लौंग मुख में रखकर चूसने और दुखते हुए दांत पर इसका जरा सा तैल (यह तैल उड़नशील होता है, अत: सावधानी से बन्द करके रखें) फुरैरी से लगाने से दांत का दर्द बन्द हो जाता है । दाँत हिल रहे हों अथवा उनमें दर्द हो तो लौंग बारीक पीसकर दाँतों के भीतर रखें । थोड़ी देर में कष्टों से छुटकारा मिल जाएगा

●लौंग और हल्दी समान मात्रा में पीसकर नासूर पर लगाने से, नासूर कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है ।

●हिचकियाँ आने पर (दो लौंग मुख में डालकर इसका रस चूसें) । रस चूसते ही हिचकियाँ बन्द हो जायेंगी । छोटी इलायची तीन माशा, लौंग 5 नग दोनों को थोड़े से पानी में पीसकर, छानकर एक तोला मिश्री डालकर पीने से हिचकियां शर्तिया बन्द हो जाती हैं ।

●प्यास की अधिकता में पानी को उबालें तथा पानी उबलते समय पानी में कुछ लौंग डाल दें । तदुपरान्त तांबे के बर्तन में पानी रखकर ठण्डा करके रोगी को पिलायें । जब तक आराम न हो, पिलाते रहें । बहुत ही जल्द आराम हो जाएगा।

●किसी भी कारण से जी मिचला रहा हो, 6 लौंग चबा जायें, तुरन्त आराम मिलेगा ।

●खसरा निकलने पर लौंग को घिसकर शहद के साथ चाटना उपयोगी है।

●श्वास, कास, दमा में 8-10 लौंग भूनकर खाने से लाभ होता है । लौंग बलगम को हटाती है और श्वास की शिकायत दूर करती है ।

पेट फूलना—आमाशय में जब हवा (वायु) जमा होकर पेट फूलने लगे तो लौंग का अर्क तैयार कर सेवन करें । अत्यन्त ही लाभप्रद है । लौंग का चूर्ण डेढ़ ग्राम, खौलता हुआ पानी आधा किलो में जब पूरी तरह भीग जाए तब छानकर

25-25 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार प्रयोग करें । रोग समूल नष्ट हो जाएगा।

नोट—लौंग की मात्रा 1 से 4 ग्राम तक है । यह गुर्दा और आंतों के लिए हानिकारक है। दालचीनी और जावित्री इसकी पूरक है तथा बबूल का गोंद और तर वस्तुऐं इसकी दर्पनाशक हैं।

सुपारी (छाली)

●कचरी, पपीता, खरबूजा के बीजों की भाँति सुपारी को भी गोश्त आदि के शीघ्र न गलने पर गलावट के अभिप्राय से प्रयोग किया जाता है ।

●आयुर्वेद मतानुसार सुपारी भारी, शीतल, रूखी, कसैली, कफ-पित्तनाशक मोहकारक, दीपन, रूचिकारक, संकोचक, मूत्रल, मुख शुद्ध करने वाली हृदय को शक्ति प्रदान करने वाली, ऋतुस्राव नियामक, आँखों की सूजन भ्राम, पुराना प्रमेह और पीप को नष्ट करने के गुणों से भरपूर होती है ।

नोट—सुपारी कच्ची अवस्था में विष से भी अधिक हानिकारक होती है तथा मध्यम अवस्था की सुपारी भेदक और दुष्पाच्य और सूखी हुई सुपारी अमृत के समान उपकारी तथा रसायन गुणों से भरपूर होती है । औटाकर तैयार की हुई सुपारी जिसका मध्य भाग दृढ़ हो वह अत्यन्त उत्तम और त्रिदोष नाशक होती है ।

●मासिकधर्म में विशेष स्राव होता हो और इसके कारण रुग्णा को निर्बलता बढ़ रही हो तो चिकनी सुपारी का चूर्ण और नागकेशर का चूर्ण समभाग में एकत्र कर समभाग घृत में भूनकर दुगुनी मिश्री की चाशनी में पाक करके रखलें । 2 से 4 तोला तक सुबह-शाम गरम दूध से सेवन करें । अतीव गुणकारी योग है।

●कच्ची सुपारी को नीबू के रस में खूब घोटकर चन्दन निकलने पर पीने से आन्त्र के समस्त प्रकार के कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

●कच्ची सुपारी की भस्म को मिट्टी के तैल में घोटकर लगाने से दाद खाज और खुजली नष्ट हो जाती है ।

●चाहें जैसा भी जख्म (व्रण) हो सुपारी को जलाकर इस भस्म को खूब बारीक पीस और छानकर घाव पर बुरक कर सरसों का तैल चुपड़ देने से घाव शीघ्र ही अच्छा हो जाता है ।

●सन्धिवात में अच्छी बड़ी-बड़ी सुपारी का चूर्ण कर रात्रि के समय जल में भिगो दें । इसमें से 1 तोला की मात्रा में प्रात:काल निकालकर सूखी इमली की लुगदी में रखकर निगल लेने से तथा ऊपर से गरम जल के कुछ घूंट पी लेने से, उत्तम साफ दस्त होकर सन्धिवात में जकड़न दूर हो जाती है ।

●अच्छी पकी सुपारी का चूर्ण 8 माशा तथा इतना ही छोटी हरड़ और बबूल की पत्ती का चूर्ण लें । तीनों को मिट्टी के पात्र में 1 पाव जल मिलाकर आग पर

पकावें, 5 तोला शेष रहने पर छान लें। इसे जितनी बार छानकर पिया जायेगा उतनी ही बार दस्त होंगे। विरेचनार्थ अति उत्तम प्रयोग है।

● उत्तम सुपारी का चूर्ण 40 तोला, लवंग, सफेद कत्था, इलायची, जावित्री और जायफल (प्रत्येक का चूर्ण 6 माशा) दालचीनी, नागकेशर और वच (प्रत्येक का चूर्ण 3-3 माशा) सभी को लेकर एकत्र कर सुरक्षित रखलें। इस चूर्ण को पान के बीड़े में रखकर दोनों समय खाने से वात सम्बन्धी समस्त विकारों का शमन होता है। यह योग अरुचि नाशक भी है।

वैद्य मनोरमा ग्रन्थानुसार—सुपारी के टुकड़े कर घृत से चिकने किये हुए मिट्टी के मटके में डालकर ऊपर से सेंमर (शाल्मली) का स्वरस डाल दें। इसे 24 घंटे बाद प्रातःकाल और सम्भोग के समय कुछ टुकड़े को खाने से वृद्ध पुरुष भी अच्छी तरह सम्भोग कर सकता है।

● सुपारी और नागकेशर को बराबर-बराबर लेकर पीस-छानकर सुरक्षित रखलें। इसमें से 2-3 माशा चूर्ण मासिक धर्म के बाद 16 दिनों तक ताजा जल से सेवन करने से अवश्य ही गर्भ धारण हो जाता है तथा होने वाली सन्तान पुत्र ही होता है। अनुभूत योग है।

उपदंश के घावों का मलहम—1 नग सुपारी की राख, 1 नग पीली कौड़ी की राख, कत्था 2 माशा, सैलखड़ी 2 माशा, नीलाथोथा 1 रत्ती लें। सभी को कूट पीसकर कपड़छन कर (2 तोला गाय का घी या मक्खन को 108 बार कांसे की थाली में धोकर) धुले हुए घी में उपरोक्त औषधियाँ मिलाकर 1 बरतन में सुरक्षित रखलें। इस मलहम को लगाने से गर्मी के घाव अवश्य ही मिट जाते हैं।

स्त्री गुप्तरोग नाशक सुपारी पाक—चिकनी सुपारी के चूर्ण 1 पाव को 1 सेर गोदुग्ध में औटाकर खोवा बनालें। इसमें छोटी इलायची 4 तोला, केसर 1 तोला, ढाक के गोंद 5 तोला का महीन चूर्ण कर मिलालें तदुपरान्त आधा सेर मिश्री की दोतारी चाशनी बनाकर इसमें उपयुर्क्त मिश्रण को मिलाकर पाक बनाकर रखलें। इसे 1 तोला तक की मात्रा में सेवन करने से श्वेत तथा रक्तप्रदर, बहुमूत्र, प्रमेह, सन्धिवात नष्ट हो जाता है। निर्बल स्त्रियों को अपूर्व बलकारक योग है।

नोट—सुपारी की मात्रा 2 से 4 ग्राम तक है। यह सीने को खुरखुरा करती है। गुर्दे की पथरी वाले रोगी को तथा मसाने को हानिकारक है। कौलन्ज पैदा करती है। कतीरा, इलायची तथा गरम और तर वस्तुऐं इसका विकल्प हैं।

सौंफ

● विश्व के लगभग सभी देशों के औषधिकोश में सौंफ को गौरवशाली स्थान प्राप्त है। यह मूत्र लाने वाली, वायु को निकालने वाली, कमजोरी दूर करने वाली आँखों की ज्योति के लिए अत्यन्त ही लाभकारी है। इसका स्वाद भी मधुर है।

● भोजनोपरान्त थोड़ी सी सौंफ चबाने से मुख के छाले नष्ट हो जाते हैं।

● सौंफ का चूर्ण 6-6 ग्राम सुबह शाम सेवन करने से आमाशय शक्तिशाली हो जाता है तथा नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है।

● गर्भवती सौंफ का अर्क यदि सेवन करती रहे तो उसका गर्भ स्थिर रहता है।

● गर्भवती स्त्री प्रतिदिन पान-सुपारी की भाँति यदि सौंफ चबाती रहे तो उसकी जन्म लेने वाली सन्तान गोरी (गौर वर्ण) की होती है।

● 6 ग्राम सौंफ आधा किलो पानी में उबालें, जब पानी 200 ग्राम तक शेष बचे तो इसे छानकर 10 ग्राम मिश्री 250 ग्राम गाय का दूध मिलाकर सुबह-शाम नित्य प्रति पीते रहने से तोतलापन दूर हो जाता है।

● सौंफ को हल्की-हल्की चोट करके कूटलें ताकि इसका छिलका उतर जाए। रात्रि के समय 20 ग्राम (नाजुक प्रकृति के लोग 10 ग्राम) साबुत ही दूध या पानी के साथ निरन्तर सेवन करते रहें तो नेत्रों की ज्योति तेज हो जाती है।

● सौंफ चूर्ण 6 माशा में 6 माशा खान्ड मिलाकर सेवन करने से कुछ समय में ही सिर चकराना बन्द हो जाता है।

● 6 माशा सौंफ का 40 तोला पानी में क्वाथ करें। जब पानी 10 तोला शेष बचे तब उसमें 250 ग्राम गाय का दूध और 1 तोला गाय का घी मिलाकर पीने से अनिद्रा रोग (नींद न आना) दूर हो जाता है।

● सौंफ यवकूटकर 6 माशा लेकर 40 तोला पानी में क्वाथ करें। चौथाई (10 तोला) पानी शेष रहने पर नमक मिलाकर सुबह-शाम पीने से अधिक निद्रा (नींद अधिक आना) दूर होकर अवस्थानुसार प्राकृतिक रूप से नींद आती है।

● सौंफ 6 माशा को यवकूटकर 1 पाव पानी में औटावें। चौथाई पानी शेष रहने पर गाय का दूध 1 पाव, घी 1 तोला और थोड़ी सी खान्ड मिलाकर चाय की भांति सुबह-शाम पीने से दिमाग में ताकत आकर बहरापन नष्ट हो जाता है।

● 1 तोला सौंफ यवकूट कर आधा सेर पानी में औटावें। जब आध पाव पानी शेष रह जाए तब मिश्री मिलाकर पीने से स्वरभंग खुल जाता है।

आमाशय का भारीपन—सौंफ यवकूट कर 1 हथेली भर सुबह-शाम पानी से लेना हितकारी है । अथवा सौंफ का चूर्ण 5 तोला तथा गुलकन्द 15 तोला को मिलाकर रखलें । साढ़े पांच ग्राम तक सुबह-शाम सेवन करें । आमाशय का भारीपन तथा कब्ज में लाभकारी है ।

● सौंफ 2 तोला को 1 सेर पानी में औटावें । चौथाई पानी शेष रहने पर इसमें सैंधानमक और कालानमक 2-2 माशा मिलाकर कुछ दिनों सेवन करने से अफारा रोग दूर हो जाता है ।

● सौंफ आधा तोला को कूट छानकर 1 पाव दूध में मिश्री मिलाकर दिन में 2-3 बार पीने से दस्त आना बन्द हो जाता है ।

● 1 तोला सौंफ को 40 तोला पानी में ठण्डाई की तरह घोटकर मिश्री मिलाकर तथा 1 माशा शोरा मिलाकर पीने से पेशाब साफ होता है ।

● सौंफ चूर्ण और खान्ड सममात्रा में मिलाकर सुरक्षित रखलें । इसे 1-1 तोला की मात्रा में सुबह-शाम नियमित रूप से 40 दिनों तक सेवन करने से किसी भी कारण से बन्द मासिकधर्म अवश्य ही खुल जाता है ।

● सौंफ चूर्ण 1 तोला, गुलकन्द 5 तोला को गाय के दूध से 40 दिन तक निरन्तर सेवन करने से बांझपन दूर होकर स्त्री पुत्रवती हो जाती है ।

● दो तोला सौंफ यवकूटकर 1 पाव पानी में क्वाथ करें । जब पानी आधा पाव रह जाए तो इसमें 2 तोला मिश्री एवं 1 तोला गाय का घी मिलाकर मन्दोष्ण पिलाने से (आवश्यकता पड़ने पर 2-3 बार पिलायें) प्रसव विलम्ब दूर होकर प्रसव सुखपूर्वक हो जाता है ।

● 1 सेर सौंफ को 7 भाग करें । 1 भाग को प्रत्येक रात्रि के समय 1 कुल्लड़ में भिगोदें तथा प्रातःकाल घोट-छानकर पियें (यह प्रयोग नियमित रूप से 7 दिन करें) नमक कम खायें तथा बादी चीजों का परहेज रखें । इस योग के सेवन से अत्यार्त्तव (मासिकधर्म अधिक होना) रोग नष्ट हो जाता है ।

गर्भवती की कब्ज में—10 तोला सौंफ को 20 तोला गुलकन्द में मिलाकर रखलें । इसे डेढ़ तोला लेकर 250 ग्राम गरम दूध से सेवन करायें । गर्भवती स्त्री की कब्ज की शिकायत में गुणकारी है ।

● 6 माशा सौंफ की पोटली बनाकर आधा सेर दूध में औटा लें । तीन उफान आने पर नीचे उतारकर थोड़ी सी मिश्री मिलाकर पीने से गर्भवती स्त्री की उल्टी बन्द हो जाती है ।

● दो तोला सौंफ कड़ाही में कच्ची पक्की भूनलें । उसमें 1 तोला खान्ड मिलाकर चूर्ण बनालें । ज्वर के रोगी को उसी समय सेवन करवाकर गरम पानी पिलादें और कपड़ा ओढ़ाकर सुलादें । पसीना आकर ज्वर उतर जाएगा ।

● 5 तोला सौंफ यवकुट कर रात को पानी में भिगो दें । प्रातःकाल इसी से स्नान करने से गरमी के मौसम में निकलने वाली फुन्सियाँ नहीं निकलती हैं।

● सौंफ और मिश्री 6-6 माशा, बादाम मग्ज 7 नग बारीक पीसकर रात्रि को सोते समय सेवन करने से दिमाग (मस्तिष्क) के बल में वृद्धि हो जाती है ।

● सौंफ और छोटी हरड़ (भुनी हुई) 5-5 तोला का चूर्ण कर 10 तोला खान्ड मिलाकर डेढ़ तोला की मात्रा में पानी या चावल के माँड़ से सेवन करने से पेचिश मिट जाती है ।

● सौंफ और पीपल की जटा 20-20 तोला तथा खान्ड भी 20 तोला का बारीक चूर्ण बनाकर रखलें । स्त्री-पुरुष डेढ़ तोला की मात्रा में दोनों समय दूध से दस दिन तक सेवन करें तथा 11वें दिन सम्भोग करें । इस प्रयोग से अवश्य ही गर्भ ठहर जाता है ।

● सौंफ और धनियाँ 1-1 पाव बारीक पीसकर इसमें तीन पाव घी और 1 सेर मिश्री मिलाकर रखलें । सुबह-शाम 5-5 तोला की मात्रा में सेवन करने से प्रत्येक प्रकार की खाज, खारिश, खुजली में लाभ हो जाता है ।

● सौंफ 9 माशा, सौंठ 3 माशा, मिश्री 1 तोला लें । सभी को बारीक पीसकर रख लें । दिन में 3 बार गरम से सेवन करने से प्रत्येक प्रकार की बदहज्मी शान्त हो जाती है ।

● सौंफ, गुड़ और घी आधा-आधा सेर लें । पहले गुड़ और घी को लेकर यथाविधि पाक कर ले । तदुपरान्त इसमें बारीक पिसी हुई सौंफ मिलाकर छटांक भरके लड्डू बनालें । मात्रा 1 से 2 लड्डू तक प्रतिदिन खायें । इस योग के सेवन से फोते में पानी उतर आना अथवा दर्द हो जाना या खुजली हो जाना आदि विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● 6 माशे भुनी सौंफ और 6 माशा मिश्री चूर्ण दोनों को मिलाकर सुबह-शाम फंकी लगाकर पानी पीने से कुछ ही दिनों में यकृत विकार नष्ट हो जाते हैं और अमेविक डिसेन्ट्री तो जड़ से नष्ट हो जाती है ।

नोट—सौंफ की मात्रा 9 ग्राम तक है । गरम प्रकृति वालों को हानिकारक है तथा देर से हजम होती है । इसकी बदल तुख्म करकस है । इसके दर्प नाश हेतु सफेद सन्दल कपूर व सिकन्जबीन या धनिया सेवन करें ।

हल्दी

हल्दी मात्र मसाला अथवा औषधि ही नहीं, बल्कि धार्मिक, आर्थिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इसका सर्वप्रथम स्थान है। मांगलिक कार्यों, तान्त्रिक प्रयोगों (देवपूजन, हवन, यज्ञ, अनुष्ठान आदि धार्मिक शुभ कार्यों) में भी इसे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त है। आयुर्वेद के प्राचीनतम ग्रन्थों में इसके महत्व की अपार महिमा का वर्णन उपलब्ध है। ये 4 प्रकार की होती हैं—1. हल्दी, 2. दारू हल्दी, 3. आंवा हल्दी, 4. काली हल्दी। जो दैनिक व्यवहार में हल्दी आती है वही हल्दी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है तथा यहाँ पर भी इसके गुणों का वर्णन है।

● हल्दी चटपटी, कड़वी, शरीर की रंगत को निखारने वाली, गरम, खुश्क, कब्ज और वायु (गैस) निवारक, स्त्रियों को विशेष सौन्दर्य प्रदान करने वाली, कफ, वायु और रक्त की खराबियों को दूर करने वाली, जिगर सुधारक, त्वचा रोग, फोड़ा फुन्सी और शोथ को नष्ट करने वाली, कोढ़ (कुष्ठ रोग), खुजली, प्रमेह, पीलिया, नजला-जुकाम, कण्ठमाला को नष्ट करने वाली, आँखों को ज्योति प्रदान करने वाली, जवानी को सदाबहार बनाये रखने वाली, सुखपूर्वक निद्रा प्रदान करने वाली, प्रत्येक प्रकार के रोगों के कीड़ों को मारने वाली, पेशाब के प्रत्येक रोग को दूर करने वाली, असाध्य जख्मों को भरने वाली, छूत के रोगों से बचाने वाली, असाध्य रोगियों को मौत से बचा लेने वाली, किचन क्वीन (रसोई की रानी) गौरी आदि उपाधियों से विभूषित स्त्री यौनांगों के विकारों को हरने वाली सुवर्ण सुन्दरी है।

● विश्व के प्रत्येक देशों की अपेक्षा यदि अपने प्राणप्रिय देश भारत में कुष्ठ रोग से पीड़ित रोगी (कोढ़ियों) की संख्या कम है तो इसका 1 मात्र श्रेय सिर्फ हल्दी को है। इसका सेवन राजा और रंक में समान रूप से है और होगा।

● 1 किलो हल्दी और बगैर बुझाया हुआ चूना 2 किलो लें। उन्हें 1 हांडी में भर दें। उसमें ताजा पानी भरकर बन्द करके रखदें। दो मास के बाद हल्दी निकालकर सुखालें। तदुपरान्त हल्दी को बारीक पीसकर कपड़छन करके रखलें। इसे 3-3 ग्राम की मात्रा में 10-10 ग्राम शहद मिलाकर खाने से 4 मास में शरीर हष्ट-पुष्ट होकर चेहरा दमक उठेगा, सफेद बाल काले हो जायेंगे। बुढ़ापा दूर होकर यौवन आ जाएगा।

● हल्दी 1 भाग, चूना आधा भाग को आपस में भली भांति मिला करके, पानी से तरकर के चोट की सूजन पर लेप करने से सूजन, जलन दूर हो जाती है।

नोट—यदि चोट लगने से घाव हो गया हो तो इस योग का कदापि प्रयोग न करें।

● यदि चोट बन्द (गुम) हो तो गुनगुने दूध में 2 से 4 ग्राम तक हल्दी चूर्ण मिलाकर पीना अतीव गुणकारी है।

● बिच्छू दंश में हल्दी बारीक पीसकर लेप करते रहना परम लाभकारी एवं अनुभूत योग है।

● सर्दी के जमे हुए जुकाम को दूर करने के लिए हल्दी चूर्ण आग के कोयलों पर डालकर नाक के रास्ते धुंआ लेने से जमा हुआ बलगम निकलकर जुकाम दूर हो जाता है।

● हल्दी चूर्ण 1 से 2 माशा तक शहद के साथ चाटने से बलगमी खांसी दूर हो जाती है।

● हल्दी का चूर्ण और काले तिल बराबर मात्रा में पानी में पीसकर चेहरे पर लेप करते रहने से चेहरे की झांइयां दूर हो जाती हैं।

● हल्दी का शुष्क चूर्ण जोंक के डंक लगे स्थान पर छिड़कने से खून बहना बन्द हो जाता है।

● पिसी हल्दी और नमक 1-1 ग्राम मिलाकर गरम पानी से फंकी लगाते ही 2-3 मिनट में हवा (वायु) खारिज होकर अफारा मिट जाता है। आवश्यकतानुसार आधा-आधा घंटे पर 4-5 खुराकें ली जा सकती हैं।

● आँखें दुखने पर हल्दी पानी की टकोर कर उससे ही धुलाई करें। यह क्रिया रात्रि को सोते समय करें। तदुपरान्त हल्दी पानी में भीगी कपड़े की पट्टी आँखों पर रखकर सो जायें। सुबह तक आँखें निरोगी हो जायेंगी।

● आँख में घाव होने पर हल्दी गाँठ को साफ पत्थर की सिल पर घिसकर सलाई से आँखों के लगाये आधा घन्टे बाद गुनगुने पानी से धो डालें। तदुपरान्त हल्दी उबालें पानी में पट्टी भिगोकर आँखों की टकोर पर सेंक करें और अन्त में पुनः चन्दन की भांति घिसी हल्दी सलाई से लगाकर सो जायें। इस क्रिया से आँख का घाव बहुत जल्द ठीक हो जाता है।

● आँखों में जाला होने पर आधा किलो पानी में जरा सी फिटकरी और आधा चम्मच हल्दी चूर्ण डालकर 13 उबाल आने तक खौलायें। तदुपरान्त ठण्डा करलें। पहले इस पानी से पट्टी तर करके आँखों पर फेरते रहें। (सेंक करते रहें) जब पानी बिल्कुल ही ठण्डा हो जाए तब सिर पीछे को झुकाकर उक्त पानी धार बाँधकर आँखों में बारी-बारी से निचोड़ें। प्रतिदिन सुबह-शाम 10-12 दिन के इस प्रयोग से आँखों का जाला कट जाएगा और धुन्ध छूट जाएगी।

●आधासीसी में निर्धूम किन्तु सुलगता हुआ उपला आंगन में रखकर उस पर पिसी हुई हल्दी डालकर नाक से उसका पहरो धुंआ खीचें ताकि नजला, जुकाम के बिगड़ जाने से जो गन्दा मवाद जमकर सिर को पथरा रहा है, छीकें आने से कफ बाहर निकलकर पथराया हुआ सिर हल्का कर दें। तदुपरान्त हल्दी घिसकर चम्मच में भरकर आग पर तपा कर **(नोट—हल्दी का पानी इतना ही गुनगुना हो कि आप उसमें आसानी से ऊँगली डुबो सकें)** फिर उल्टे कान अर्थात् दांये ओर सिर में आधासीसी का दर्द हो तो बांये कान में डालें। मात्र 5 बार के प्रयोग से आधासीसी से जीवन भर को निजात मिल जायेगी।

नोट—ठण्डा रस कान में कदापि न डालें।

●घाव को धोकर हल्दी चूर्ण बुरक देने से घाव के कीड़े मर जाते हैं।

●हल्दी और अलसी मिलाकर पीसकर कुछ गरम कर फोड़े में बाँधने से फोड़ा शीघ्र फूट जाता है।

●आँखों में लालिमा होने पर हल्दी का आंख के ऊपर लेप करें।

●दाँत दर्द में पिसी हल्दी को कपड़े में रखकर दांत के नीचे रखें।

●आधा से 1 तोला हल्दी दही में मिलाकर खाने से कामला (जान्डिस) रोग ठीक हो जाता है।

●बासी मुँह हल्दी और काली मिर्च का चूर्ण गुनगुने जल से खाने से ज्वर और जुकाम नष्ट हो जाता है।

●हल्दी, आँवले का रस मधु मिलाकर खाने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

●हल्दी चूर्ण फाँककर भैंस का दूध पीने से आमवात दूर हो जाता है।

●हल्दी, दारू हल्दी, आँवला, बहेड़ा, कुटकी प्रत्येक 2-2 तोला, लौह भस्म 6 तोला मिलाकर रखलें। इसे 2-2 रत्ती की मात्रा में मधु में चाटने से पान्डु, कामला, हलीमक रोग नष्ट हो जाता है।

●हल्दी चूर्ण 2 माशा में शहद आधा तोला मिलाकर दिन में 3 बार खाना कुष्ठ रोग में लाभकारी है।

●हल्दी चूर्ण 6 रत्ती, काला नमक 6 रत्ती, ग्वारपाठे का रस 1 तोला मिलाकर सुबह-शाम खाने से यकृत, प्लीहा विकार नष्ट हो जाते हैं।

●हल्दी, कुटकी, गन्धक और सुहागा पीसकर तैल में मिलाकर लेप करने से कन्डू ठीक हो जाती है।

●हल्दी बारीक पीसकर नीबू के रस में 12 घंटे खरल करके आंख में सलाई

से सुरमें की भांति लगाते रहने से फूला, जांला इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं।

●हल्दी जलाकर इसकी राख कड़वे तैल में मिलाकर घावों में लगाने से घाव जल्दी भर जाते हैं।

●हल्दी और बाकुची को नीबू के रस में घोटकर बेर के समान गोलियां बनाकर सुरक्षित रखलें। 1-1 गोली जल से खाने तथा जल में घिसकर लगाने से सफेद दाग नष्ट हो जाते हैं।

●हल्दी, मैथी, आँवला और छोटी हरड़ को सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर रखलें। 10 ग्राम सुबह-शाम पानी से सेवन करते रहने से मधुमेह रोगी का जीवन आराम से गुजर जाता है।

●5-5 ग्राम हल्दी चूर्ण दिन में तीन बार शहद के साथ चाटने से शीतपित्त रोग ठीक हो जाता है।

●गोमूत्र भावित हल्दी का चूर्ण 2 से 4 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ लेने से सर्दी, दमा, खाँसी में लाभ होता है। यदि इसमें काली मिर्च और त्रिकटु का चूर्ण भी मिला लिया जाए तो अधिक लाभप्रद हो जाता है।

●अर्श (बबासीर) में मस्से सूजने पर हल्दी को घी में घिसकर लेप करें।

●हल्दी के चूर्ण में थूहर का दूध मिलाकर उसमें सूत का डोरा भिगोकर अर्श के मस्सों पर 5-7 बार बांधने से मस्से कटकर गिर जाते हैं।

●हल्दी का बारीक चूर्ण दबाकर ऊपर से सख्त पट्टी बांध देने से घाव का रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

●हल्दी, सौंठ, घी को दूध में मिलाकर काढ़ा बनालें। इसे पीने से गुम चोट ठीक हो जाती है।

●मट्ठा में 1 गाँठ पिसी हल्दी मिलाकर खाने से उदर-शूल शान्त हो जाता है।

●एक्जिमा स्वमूत्र पर लगाते रहने और ताजा पिसी हल्दी में शहद मिलाकर मटर बरांबर गोलियाँ बनाकर सुबह-शाम 2-2 गोली चूसते रहने से चम्बल (सोरायसिस) और एगजीमा नष्ट हो जाता है।

●हल्दी और उड़द की दाल 5-5 ग्राम जौ कुट करके हुक्का या चिलम में रखकर (उपले की आग चिलम में रखें) पीने से हिचकी बन्द हो जाती है। परीक्षित योग है।

●हल्दी चूर्ण में बराबर शहद मिलाकर गोलियाँ बनाकर चूसने से खाँसी नष्ट हो जाती है।

●अकेली हल्दी की छोटी सी गाँठ चूसते रहने से मुख के छाले, खराश, दाने, जलन और खाँसी आदि विकार दूर हो जाते हैं।

●10-10 पिसी हल्दी की फँकी दिन में 3 बार पानी से लेते रहने से हफ्तों में ही सुजाक जैसा कोढ़ जड़ से नष्ट हो जाता है।

●दारूहल्दी, रसौत, नीमपत्र और कपूर 25-25 ग्राम लेकर कूट-पीसकर छानकर गाय के गोबर के रस में खरल करके (सुरमें की तरह बारीक) शीशी में रखलें। यह सुरमा आंखों में डालते रहने से रतौंधी दूर हो जाती है।

●कण्ठमाला में 1 छोटा चम्मच हल्दी चूर्ण को तिल के तैल में भूनकर रुई का फाहा तर करलें और गिल्टियों पर रखते हुए रूमाल सा गले के चारों ओर बाँधलें। 1-2 दिन में ही कण्ठमाला के सारे मनके मुरझाकर बिखर जायेंगे। साथ ही 1 चम्मच हल्दी चन्दन की भांति घिसकर आधा चम्मच का गिल्टियों पर लेप करलें और आधा-आधा चम्मच 250 ग्राम पानी में उबालकर दूध की तरह फेंटकर जब झाग बन जायें तब गुनगुना ही घूंट भरकर 15 मिनट तक गरारें कर लिया करें।

●हल्दी और नीम के अंकुर बराबर मात्रा में पीसलें। इसे पीपल के दूध में 5 दिन खरल करें (पीपल का दूध प्रतिदिन ताजा डालें) सातवें दिन से इसे सुरमें की भाँति आँखों में सलाई से लगाये। मात्र 4 सप्ताह के प्रयोग से दृष्टि तीव्र होकर पुतलियाँ स्वच्छ और निर्मल हो जायेंगी और चश्मा (नजर का) उतारकर फेंकने को मजबूर हो जाएँगे।

●ताजा हल्दी की 2 गाँठें पीसकर सरसों के तैल में भून लें। फिर यह तैल निथारकर शीशी में सुरक्षित रखलें। इसे चाहें तो रुई की बत्ती से कान में लगायें या 2-2 बूंद गरम करके कानों में टपकायें। (हल्दी तेल जब भी कानों में डालें तो गरम करके गुनगुना ही डालें ठण्डा कदापि न डालें) कान बहने, मवाद आने का यह शर्तिया सस्ता इलाज है। 10-15 दिनों में घाव भरकर मवाद सूखकर कान निरोगी हो जायेंगे।

पिसी हल्दी तीन ग्राम फंकी मारकर गाय के दूध के दही की बनी छाछ आधा किलो पीलें। गर्मी के मौसम में स्नान के लिए पानी को कुछ देर धूप में रखें तथा सर्दियों में पानी गरम करके स्नानोपरान्त गीले तौलिया से बदन को मलकर पोंछें, ताकि शरीर के रोयें में खुलकर रोग जल्दी ही दूर हो जाए। तेल, खटाई, मिठाई, मिर्च-मसालों का सेवन छोड़ दें। अथवा हल्दी और दारु हल्दी पीसकर शीशी में रखें। इसकी दो-दो सलाई सुबह-शाम आँखों में लगायें। यह कामला का सौ

प्रतिशत सफल टोटका टाइप इलाज है। अथवा जब तक पूर्णरूपेण कामला नष्ट न हो जाए तब तक प्रतिदिन प्रातःकाल में निराहार दो ग्राम हल्दी 25 ग्राम ताजा मक्खन के साथ निगलकर 1 गिलास छाछ पिया करें। गुणकारी योग है।

●भुनी हल्दी 1 ग्राम शहद में मिलाकर दिन में 4 बार चाटें अथवा सितोपलादि चूर्ण सममात्रा में हल्दी चूर्ण मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 1-1 ग्राम की मात्रा में मिलाकर चाटते रहने से काली खांसी छू मन्तर हो जाती है। पान खाने के शौकीन पान में मुलहठी के स्थान पर भुनी हल्दी का चूर्ण रखकर दिन में 4 बार पान खाकर काली खाँसी से आसानी से निजात पा सकते हैं।

● में कोढ़ फूटते ही तत्काल हल्दी का तैल लगायें (हल्दी और सरसों बराबर मात्रा में लेकर देशी कोल्हू से तैल निकलवालें, यही हल्दी तैल है। अथवा हल्दी टिंचर व्यवहार में लायें। (1 बोतल मेंथेलिटेड स्पिरिट लेकर इसमें 125 ग्राम हल्दी चूर्ण डाल दें तथा ढाक्वन लगाकर बन्द करके 3-4 दिनों तक धूप में रखें, यही हल्दी का टिंचर है। यह तुरन्त सूख भी जाता है, अतः कपड़ों पर दाग नहीं लगते हैं।

● हल्दी पीसकर शहद मिलाकर जंगली बेर (झाऊ बेर) के समान गोलियां बनाकर सुरक्षित रखलें। 2-2 गोली सुबह-शाम चूसने से रक्त विकार नष्ट होकर खाज-खुजली नष्ट हो जाती है।

●प्रति सप्ताह अथवा महीने में 1 बार हल्दी और बेसन को सरसों के तैल में गूँथकर शरीर पर मलते रहने से खाज-खुजली कभी नहीं होती है।

खाँसी में 1-1 ग्राम के हल्दी के टुकड़े दिन भर चूसें तथा सोते समय भी मुख में रखे हुए ही सो जायें। यदि गले में खराश के साथ खाँसी के ठसके उठ रहे हों तो हल्दी की गांठ गरम राख में दबाकर भूनलें। इसे ढाई, तीन ग्राम की मात्रा में भोजन के बाद दोपहर और शाम को चम्मच भर शहद में घोलकर अंगुली के पोर से चाटें। मात्र दो दिन के प्रयोग से चंगे हो जायेंगे।

●खूनी बबासीर में बकरी के दूध की लस्सी के साथ अथवा ताजा पानी से तीन ग्राम हल्दी की फँकी सुबह-शाम 2-3 सप्ताह मारकर चमत्कार खुद देखें।

●गठिया में 1 किलो हल्दी की गर्म राख (भूभल) में भूनकर साफ कर पीसलें। इसमें सूखा गोला और 1 किलो गुड़ तथा रोगी के दाँत हों और चबा सकता हो तो 250 ग्राम काजू या मूँगफली के दाने डालकर लड्डू बनाकर रखलें। यह 1-1 लड्डू सुबह-शाम खाकर आयुर्वेदिक चाय पियें।

● बन्द चोट की पीड़ा में 2 चम्मच तिल या नारियल का तैल गरम करके (एक कपड़े में हल्दी रखकर पोटली भी बनालें) इसी पोटली को उक्त गरम तैल में डुबोकर टकोर करें। तत्पश्चात् तैल में आटा और हल्दी भूनकर पुल्टिस बनाकर बाँध लें।

● ग्रधृसी रोग में 10 ग्राम हल्दी 100 ग्राम गोमूत्र में पीसकर 25 ग्राम एरन्ड तैल में मिलाकर पीने से ऐंठन और वायु शान्त हो जाती है।

● गर्मी के दाने (घमौरियों के निकलने पर) हल्दी का कोल्ड जूस इस्तेमाल करें। कच्ची हल्दी 1 किलो लेकर पीसकर रस निकालकर 1 उबाल देकर ठण्डा करके 300 ग्राम शहद मिलाकर अमृतबान में भरकर सुरक्षित रखलें। 2 सप्ताह रखे रहने के बाद यही हल्दी का कोल्ड जूस बन जाएगा। अनार, गाबजवा या फालसे के शरबत में हल्दी जूस के दो चम्मच डालकर (स्वेच्छानुसार चाहें दिन में 10 बार) पियें। इसे गुलाब या केवड़े के इत्र से सुगन्धित भी कर सकते हैं। इसके सेवन से शरीर की सारी गर्मी पेशाब और पसीने के रास्ते से बाहर निकल जायेगी।

● मामूली घाव में हल्दी की गांठ पानी में रगड़कर गाढ़ा-गाढ़ा घाव के किनारों तक लेप करें। यदि घाव गहरा हो पिसी हुई हल्दी छानकर तिल के तैल में धीमी आग पर भूनलें। पहले नीम के पत्ते उबालकर नीम के पानी (क्वाथ) से (गुनगुने से ही) धोकर साफ करके हल्दी वाले तैल से रुई का फ़ाहा तर करके घाव पर रखकर ऊपर से पट्टी बाँध दिया करें। घाव का शर्तिया इलाज है।

● चश्मा (ऐनक) का नम्बर बदलते रहने पर तामचीनी या कांच के बर्तन में 2-4 हल्दी की गाँठ रखकर नीबू का रस डालकर खूब तर करते रहें। जब रस हल्दी के कण-कण में व्याप्त हो जाऐं और हल्दी फूल जाए तब इसे छाया में ही सुखाकर कूट पीस और कपड़छन करके रखलें और सुरमें की भांति इस्तेमाल करें। जिनके हर 6 महीने पर चश्मे के नम्बर बदल जाते हों, उन्हें चश्मा लगाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

● चेचक से बचाव (सुरक्षा) हेतु हल्दी और ओंधा (अपामार्ग या चिरचिटा) सममात्रा में लेकर चन्दन की भांति पीसकर खास शारीरिक अंग (माथा, पलकें, जिव्हा, पेट, गालों, हाथ, पैरों के नाखूनों) इत्यादि पर लेप लगाने से संक्रामक रूप से चेचक का रोग फैलने पर चेचक से बचाव रहता है।

● किसी भी तरह से चोट लग जाने से रक्तस्राव होने पर अथवा नस चटक

जाने पर हल्दी चूर्ण और घी 2-2 चम्मच दूध में मिलाकर उबालकर पीना अति उपयोगी है।

● छपाकी में हल्दी और गेरू 2-2 ग्राम शहद के साथ चाटना परम लाभकारी है। अथवा निराहार मुख 2 या ढाई ग्राम हल्दी सुबह-शाम गुनगुने दूध से सेवन करें या पिसी हल्दी और गेहूं का आटा 10-10 ग्राम गाय के घी में भूनकर 20 ग्राम बूरा की चाशनी (1 तार वाली) में हलुआ बनाकर चाटना भी लाभप्रद है।

● हल्दी की गाँठ रगड़कर छाजनग्रस्त त्वचा पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करें।

● जिगर की खराबी में 5 ग्राम हल्दी का चूर्ण गाय के मट्ठा या दही के साथ प्रतिदिन प्रातःकाल में निराहार मुख सेवन करने से 1 हफ्ते में आराम मिलना शुरू हो जाता है और सवा महीने में जिगर रोगरहित हो जाता है।

● टान्सिल में 10 ग्राम पिसी हल्दी वड़वे तेल में भूनकर फाहे पर रखकर गरम-गरम ही टान्सिल पर रखकर पट्टी बाँधें। 1-2 बार के प्रयोग से ही लाभ होगा।

● तपेदिक (टी. बी. या क्षय रोग में 100 ग्राम हल्दी कूट पीस छानकर 10 ग्राम आक का दूध डालकर (यदि खून की उल्टियाँ होती हों तो बड़ या पीपल का दूध डालें) खूब मिलाकर 2-2 रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम शहद से सेवन करें। शर्तिया लाभ होगा।

● दमा में 5 ग्राम हल्दी को गरम पानी से फंकी लें अथवा दो गाँठें हल्दी की लेकर गरम राख में भूनें और बांस के 1 किलो सूखे पत्ते लेकर 10 ग्राम काली मिर्च के साथ पीसकर 50 ग्राम सेंधा नमक और थोड़ी कीकर (बबूल) की गोंद मिलाकर मटर के आकार की गोलियाँ बनाकर दिन भर में 4-5 बार चूसा करें। सांस सम्बन्दी समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं।

● दाढ़ दुखने पर हल्दी तीन ग्राम, लौंग तीन नग और अमरूद के सूखे पत्ते तीन लेकर पीस कर 250 ग्राम पानी में उबालकर 10-15 मिनट कुल्ले कर डालें। तुरन्त आराम होगा। अथवा हल्दी की गाँठ गरम राख में भूनकर पीसकर दुखते दाँत या दाढ़ के इर्द गिर्द हल्के हाथ से मलकर मुख को ढीला छोड़कर राल बहने दें। या हल्दी चूर्ण में अजवायन और लौंग पीसकर छोटी पोटली बनाकर दुखते दाँत या दाढ़ के ऊपर रखकर ऊपर के दाँत से दबाकर लेट जायें।

● दाँत हिलता हो तो हल्दी जलाकर इसकी भस्म में अजवाइन भी पीसकर सुबह-शाम निरन्तर मंजन करें तथा मुख खुला छोड़कर राल बहने दें।

दाद में—हल्दी की गांठ को पानी में घिसकर दाद पर लेप करते रहने से लाभ हो जाता है।

नकसीर में 1 गाँठ हल्दी की लेकर आधा किलो बाँस के पत्तों के साथ पीसलें। इसमें 25 ग्राम सैंधा नमक मिलाकर काढ़ा बनालें। इसे थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पीने से खून की गर्मी पेशाब पसीने से निकल जायेगी। यह योग नकसीर में अत्यन्त ही अक्सीर है।

पीनस (नाक बन्द रहना) में 1 चम्मच हल्दी 250 ग्राम पानी में उबालकर सुहाते गरम पानी से 10 मिनट गरारें करें। जब गला गरम हो जाए तब नाक से सांसें फुहार की भांति छोड़ें तथा मुंह में गरम पानी भरकर नाक से निकालने का प्रयास करें। और चुल्लू भर पानी लेकर नथुनों से खींचकर छोड़ें। इस प्रयोग से सूखा हुआ कफ नाक से बाहर निकल जाएगा। यह क्रिया सुबह-शाम करने से पीनस रोग दूर हो जाता है।

नासूर में—प्रतिदिन नीम के पत्तों के काढ़ों से नासूर का मवाद भली प्रकार धोकर हल्दी के तैल में स्वच्छ कपड़े की बत्ती भिगोकर नासूर में नासूर का शर्तिया इलाज है। तेल चाहें कोल्हू से पेरकर निकलवायें चाहें पाताल यन्त्र विधि से निकालें अथवा तली में बारीक छेदों वाली मिट्टी की हंडिया लेकर (पहले गड्डा खोदकर एक ऐसा पात्र रखदें जिसमें इस छेदों वाली हंडिया से तैल निकलकर उसमें एकत्र होता रहे) हन्डिया में दो किलो हल्दी और एक किलो दूध डालकर ढक्कन लगाकर गीली मिट्टी से लेप कर दें। सूख जाने पर हन्डिया के ईर्द-गिर्द ऊपलों का अलख जलाकर आंच में तपाकर हल्दी का तैल निकालकर प्रयोग में लें। अथवा दारू हल्दी पीसकर आक और थूहर के दूध में पतला लेप बनाकर एक साफ कपड़े की बत्ती इसमें तर करके नासूर में रखते रहने से भी नासूर शर्तिया ठीक हो जाता है।

● हल्दी को गरम पानी में घोलकर पसली के दर्द में जहाँ दर्द हो, वहाँ लेप लगाना अतीव गुणकारी है। अथवा हल्दी को आक के दूध में घोलकर लेप लगाने से भी तुरन्त ही पसलियों की पीड़ा दूर हो जाती है।

● कच्ची हल्दी का रस और शहद 10-10 ग्राम बकरी के दूध के साथ सेवन करना प्रमेह का अक्सीर उपचार है। यदि कच्ची हल्दी प्राप्त न हो ते सूखी हल्दी को पीसकर तीन ग्राम शहद के साथ चाटकर ऊपर से बकरी का दूध पियें और यदि बकरी का दूध भी उपल्ब्ध न हो तो गाय के दूध में हल्दी और शहद मिलाकर एक उबाल देकर पीना भी उपयोगी है।

● प्रदर (श्वेत-प्रदर अथवा रक्त प्रदर) में 10 ग्राम हल्दी पीसकर 100 ग्राम पानी में उबालकर ठण्डा होने पर दिन में 3 बार रोगिणी अपने यौनांगों को खूब भली प्रकार धोवे और सूर्योदय से पूर्व बताशे में बरगद के दूध की 8-10 बूदें प्रतिदिन निगलें तथा सहवास न कराये। जल्द ही इस योग एवं क्रिया से रोगिणी रोग-मुक्त हो जाएगी। साथ ही सुपाच्य एवं पौष्टिक भोजन सेवन करे तो स्वास्थ भी अच्छा हो जावेगा।

● प्रसव समय की वेदना से बचने हेतु जब प्रसव में दस दिन का समय शेष रह जाए तो 5 ग्राम की मात्रा में हल्दी का चूर्ण गरम दूध में मिलाकर सुबह-शाम सेवन करते रहने से प्रसव बगैर कष्ट के आसानी से हो जाता है।

● पीलिया में प्रतिदिन प्रात:काल में तीन ग्राम हल्दी चूर्ण की फंकी मारकर गाय का दूध, दही या मट्ठा पीते रहने से पीलिया रोग दूर हो जाता है।

● जिगर की खराबी या पीलिया या कामला के कारण आंखें पीली-पीली हो तो हल्दी घिसकर आँखों में सलाई से काजल की भाँति लगाते रहना लाभप्रद है।

● 3-3 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार हल्दी चूर्ण पानी से सेवन करने से पुरानी से पुरानी खाँसी कुछ ही दिनों में भाग जाती है।

● 5 ग्राम हल्दी का चूर्ण और 1 ग्राम वायविडंग का चूर्ण 1चम्मच शहद में घोलकर चाटते रहने से 10-12 दिनों में आंतें व आमाशय पूर्णरूपेण साफ होकर उदरकृमि भी नष्ट हो जाते हैं।

● हल्दीचूर्ण और नमक 5-5 ग्राम फाँककर गरम पानी पीने से गुब्बारे की भाँति गैस से फूला पेट मिनटों में पिचक कर रोगी को स्वस्थ कर देता है।

पेशाब में धातु स्राव—आधा किलो हल्दी की गाँठ लें। कूट पीसकर कपड़छन कर लें। इसे 3-4 लीटर पानी में उबालें (किन्तु प्रथम उबाल आने पर ही उतार लें) इसमें डेढ़ बोतल शहद मिलाकर किसी साफ स्वच्छ अमृतवान में भरकर ढक्कन बन्द करात रख दें। मात्र दो सप्ताह में यह हल्दी का आसव तैयार हो जाएगा। इसे छानकर बोतलों में भरकर सुरक्षित रखकर 10 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करते रहने से पेशाब में धातुस्राव होना बन्द होकर मूत्राशय और मसाने (आमाशय) की गर्मी धुलकर वीर्य पुष्ट और रोगी स्वस्थ होगा।

● फुलबहरी रोग में हल्दी का चूर्ण गाय के दूध में मिलाकर अथवा अलग से फँकी लगाकर दूध पीने से दूर हो जाता है। सफेद दागों पर हल्दी को दूध में घोलकर लगाना चाहिए। यह प्रयोग जब तक पूर्ण लाभ न हो तब तक साल-

6 महीने लगातार जारी रखना चाहिए। धैर्यपूर्ण इस उपचार से फुलबहरी रोग अवश्य नष्ट हो जाता है।

● गर्भ निरोध हेतु मासिकधर्म के दिनों में 5 ग्राम छना हुआ हल्दीचूर्ण फाँकने से 1 महीने का गर्भ निरोध हो जाता है।

● हल्दी का आसव बनाने की सरल विधि पहले लिखी जा चुकी है। बबासीर रोग में यही (हल्दी आसव) का सेवन करते रहने तथा स्वमूत्र से मस्सों को धोते रहने से यह नामुराद रोग ज़ड़ से नष्ट हो जाता है।

● सुबह-शाम 5-5 ग्राम हल्दी की फंकी पानी से लेने से बार-बार मूत्र आने का रोग दूर हो जाता है।

● हल्दी 100 ग्राम, काले तिल 250 ग्राम और पुराना गुड़ 300 ग्राम लें। पहले तिलों को भूनें। हल्दी गाय के घी में भूनें। तदुपरान्त तीनों को मिलाकर कूट-पीस डालें (जब एकजान हो जायें) तब इसे चाहें ऐसा ही चूरा रहने दें अथवा छोटे-छोटे लड्डू बनाकर सुरक्षित रखलें। बच्चे बिस्तर पर मूत्र करते हों चाहें बड़ी आयु के (वयस्क) व्यक्ति सर्दी के कारण बार-बार मूत्र त्याग करते हों वे (बच्चे 50 ग्राम और वयस्क 100 ग्राम तक) खायें।

नोट—अधिक मात्रा में सेवन करने से खांसी आ सकती है तथा इस योग के सेवन के पश्चात् आधा-पौना घंटे बाद ही पियें अथवा पहले ही पीलें)

● 3 ग्राम हल्दी का बारीक चूर्ण में 12 ग्राम शहद मिलाकर प्रतिदिन चाटते रहने से मधुमेह रोग (पेशाब में शक्कर आना) में अचूक योग साबित हुआ है।

फोड़े-फुन्सियाँ तथा रक्त विकार में—प्रमेह रोग (धातु स्राव हल्दी आसव भोजनोपरान्त (आधा घंटे बाद) 10-15 ग्राम की मात्रा में पीने से खून (रक्त) साफ करके चर्म रोगों को जड़ से उखाड़ फेंकता है। साथ ही नीम के पत्तों का काढ़ा बनाकर रुई से फोड़े-फुन्सियों को साफ करते रहना चाहिए तदुपरान्त हल्दी का तैल फोड़े-फुन्सियों पर लगाना चाहिए। परम लाभकारी योग है।

● 10 ग्राम पिसी हल्दी 1 लीटर पानी में उबालकर इसे गुनगुना ही लेकर कुल्ला करने से (मात्र 4-5 बार के प्रयोग से) मुख और तालु के छाले नष्ट हो जाते हैं।

मोच में—गेहूँ का आटा या बेसन 2-3 चुटकी और इसकी आधी मात्रा में हल्दी मिलाकर तिल या अलसी या सरसों अथवा अन्य कोई गरम तैल में मिलाकर भूनकर तर गरम करके कपड़े की पोटली में बाँधकर मोच वाली जगह पर 10

मिनट तक टकोर करें और दो सौ ग्राम दूध में 10-12 ग्राम हल्दी उबाल कर पियें। अथवा आंक के पत्ते सीधी ओर (मुलायम वाले पहलू की ओर से) हल्दी तैल में सानकर कुछ देर सिकाई करें तथा बाँधें।

मोतियाबिन्दु में—1-2 गांठ हल्दी की लेकर अमृतधारा में 7 दिन तक डालें रखें। तदुपरान्त इन हल्दी की गांठों को चन्दन की भांति घिसकर सुबह-शाम आँखों में लगायें। मोतिया बिन्दु की झिल्ली कट-कटकर निकल जाती है।

(नोट—चन्दन घिसकर माथे पर लगाना अत्यन्त ही गुणकारी है। चन्दन का तिलक माथे पर लगाते रहने से मोतियाबिन्द कदापि नहीं होता है।)

नोट—कच्ची हल्दी के रस सेवन की मात्रा 10 से 25 ग्राम तक (बच्चों को 5 ग्राम तक) तथा सूखी हल्दी (चूर्ण) की मात्रा अधिकतम् 10 ग्राम तक दें बच्चों को आधा ग्राम तक दे सकते हैं। एक ग्राम से अधिक कदापि नदें। भुनी हल्दी भस्म बन जाती है, इसकी मात्रा बड़ों को भी रत्तियों में प्रयुक्त होती है। लेप में मात्रा हल्दी की अधिक रखी जा सकती है।

अंगूर (द्राक्ष)

अंगूर सर्वविदित और सर्वप्रथम सुन्दर मीठा फल है, जो गुच्छों के रूप में प्राप्त है। सूखे हुए अंगूर जिसमें बीज होते हैं द्राक्ष कहलाते हैं और जिनमें बीज नहीं होते हैं उन्हें किशमिश के नाम से जाना जाता है।

बीज सहित सूखे द्राक्ष 5 तोला लें। उन्हें 1 पाव जल में किसी कूड़ी (चीनी पत्थर का कटोरा) में रात भर भिगोकर प्रातःकाल चटनी के समान पीसलें और उसी पानी में घोल-छानकर (यह द्राक्ष का हिम कहलाता है) नित्य प्रति पीने से मूत्रकृच्छ और मलावरोध रोग नष्ट हो जाता है। इसके सेवन से उदर में गैस नहीं बनती तथा पेट का भेद भी कम हो जाता है। हृदपीड़ा, अन्तर्दाह, हाथ की हथेलियों और पैर के तलुवों की जलन भी मिट जाती है। सम्पूर्ण शरीर का तर्पण हो जाता है।

प्रातःकाल उठकर अंगूर का रस सेवन करने से भी उपर्युक्त लाभ हुआ करता है। ग्रीष्म ऋतु में अंगूर का रस तृष्णा और दाह को शान्त करता है। अंगूर का रस और द्राक्ष का हिम वायु का अनुलोमन करता है। पित्त को शान्त करता है। सूखी खाँसी के वेग को कम करता है।

● बड़े मीठे बीजरहित द्राक्ष को मिश्री डली के साथ मुख में रखकर धीरे-धीरे चूसने से हृदस्पन्दन वृद्धि, घबराहट तथा खाँसी के वेग में तुरन्त लाभ होता है।

अन्जीर

●सर्वविदित मेवा है । इसके सेवन से यकृत वृद्धि और प्लीहा वृद्धि में अत्यन्त लाभ होता है । इसे सुखाकर बहुत दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है ।

●2 से 4 नग तक अन्जीर गाय के दूध में उबालकर रात्रि को इसी दूध के साथ सेवन करने से मलावरोध तथा बबासीर को दूर होती है ।

अनन्नास

●यह भी सर्वविदित फल है—जो लम्बा, सुगन्धित, गोलाकार, ठोस, वजनदार होता है । इस फल का स्वाद मधुराम्ल होता है ।

●अनन्नास के रस को शक्कर के साथ मिलाकर पीने से (धीरे-धीरे पियें) हिचकी का रोग दूर हो जाता है ।

●अनन्नास का रस 10 तोला तक प्रातःसायं पीने से मूत्र खुलकर आता है।

●अनन्नास के रस का प्रातःसायं सेवन करने से स्त्रियों का (मासिक धर्म) कम होना दूर होकर मासिकधर्म खुलकर होता है ।

●अनन्नास का रस लू लगने पर ज्वर और लू की दाह को तत्काल शान्त कर देता है ।

अमरूद (जाम)

●यह भी बहुबीज युक्त गूदे वाला स्वादिष्ट और मीठा फल होता है । आम के बाद लोकप्रियता में इसे द्वितीय स्थान जन-समाज में प्राप्त है ।

●अमरूद के पत्तों का रस ढाई से 5 तोला तक पिलाने से भांग का नशा तुरन्त शान्त हो जाता है ।

●अमरूद के पत्तों का रस चौथाई से ढाई तोला तक प्रत्येक 4-4 घंटे पर सेवन करने से अतिसार और हैजा का वेग थम जाता है ।

●अमरूद के पत्तों का रस शहद के साथ सेवन करने से अमरूद खाने से उत्पन्न हुई खाँसी नष्ट हो जाती है ।

●अमरूद के पत्तों का कल्क दाँतों पर मलने से दन्तपीड़ा शान्त होती है।

●अमरूद का फल (बीजरहित करके) खाकर ऊपर से सुखोष्ण (दुग्धपान करने से मार्ग चलने की थकावट दूर हो जाती है, क्षुधा शान्त होती है ।

नोट—अमरूद खाकर जल नहीं पीना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से कफ बढ़कर सर्दी, खांसी की शिकायत उत्पन्न हो जाती है ।

अरहर

●यह सम्पूर्ण हिन्दुस्तान देशवासियों का प्रिय खाद्यान्न है, इसकी दाल को चावल के साथ खाने का अपना एक अलग ही आनन्द है ।

●अरहर की दाल के पानी से या अरहर की पत्तियों के स्वरस से कुल्ला करने से मुखपाक (मुंह के छाले) अवश्य मिट जाते हैं ।

●अरहर के पत्तों के स्वरस में थोड़ा सा दूध मिलाकर नाक में सुड़कने से आधा सीसी (आधे सिर का दर्द) की पीड़ा मिट जाती है ।

रीठा

●यह भी एक फल है, इसके छिलके को पानी में मलने से झाग उत्पन्न होते हैं जिनसे स्त्रियाँ अपने बालों को धोती हैं । इससे बाल धोने से वे मल रहित और मुलायम हो जाते हैं तथा बालों में कृमि नहीं हो पाते है । इसके झागों से रेशमी वस्त्र भी धोये जाते हैं ।

●इसके फल के बुक्कल के चूर्ण को पानी में घोलकर इसका निथरा हुआ पानी (24 घंटे में सिर्फ 1 बार) 4-4 बूंद आँखों में टपकाने से अभिष्यन्द (आँख आना) शर्तिया ठीक हो जाता है तथा अनन्तवायु मस्तिष्क शून्यता तथा मस्तिष्क के वायु विकार भी कुछ दिनों में ही शान्त हो जाता है ।

●रीठे के फल के बुक्कल के चूर्ण को पानी में बना और छना हुआ घोल नाक में सुड़कने से आधाशीशी का दर्द मिट जाता है ।

●रीठे के छिलके के चूर्ण को पानी में घोलकर इसी पानी से कुल्ला करने से मुख (मुँह) का गया हुआ जायका वापस आ जाता है ।

अलसी

●इसका तैल गरीब लोग खाने व शरीर में लगाने के काम में लेते हैं ।

●अलसी के चूर्ण को पानी में पकाकर गरम-गरम सन्धिवात् से आक्रान्त अंग पर 1 अंगुल मोटा लेप लगाकर उस पर एरन्ड का पत्ता रखकर फलालैन कपड़े की पट्टी सुबह-शाम बांधने से सन्धिवात की पीड़ा दूर हो जाती है तथा चिंगुड़े हुए हाथ-पैर खुल जाते हैं और रोगी आराम से चलने-फिरने लगता है ।

●अलसी बीज का चूर्ण 1 तोला और पानी 16 तोला लेकर क्वाथ बनायें। जब पानी जलकर अष्टमांश शेष बचे तब इसको पिलायें । यह क्रिया सुबह-शाम

करने से सुजाक और उष्णवात की दाह और मूत्रकृच्छ दूर हो जाता है। इस योग के सेवन से गले की खराश भी मिट जाती है तथा इसको सुखोष्ण पीने से इसमें थोड़ी हल्दी और गुड़ भी क्वाथ बनाते समय डाल लें) गले और सुजाक में इसके काढ़े को ठण्डा करके ही पियें।

●अलसी के बीजों के चूर्ण को पानी में पकाकर हलुवा जैसा बनाकर गरम-गरम ही (मात्र 1-2 बार रात-दिन में) 24 घंटे व्रण पर बांधने से व्रण शोथ फूट जाता है।

नोट—मोटे व्रण में 2-3 दिन लगा सकते हैं किन्तु लगाते ही पीड़ा कम हो जाती है।

●अलसी के बीजों के चूर्ण को पकाकर हलुवा जैसा बनाकर गरम-गरम फुलालैन के कपड़े में फैलाकर (इस लेप युक्त कपड़े को) छाती और पीठ पर बाँधने से निमोमियाजन्य फुफ्फुसशोथ और उरक्षतजन्य उर:शोथ मिट जाता है।

●अलसी के फूलयुक्त सम्पूर्ण पौधे को सुखाकर जलालें। इसकी राख को अलसी के तैल में मिलाकर बच्चों के गुदपाक पर लगाना अत्यन्त लाभकारी है। इसके लगाने से दुष्ट किस्म के व्रण भी ठीक हो जाते हैं।

●अलसी का तैल और चूने का निथरा हुआ जल (Lime Water) समभाग एक पात्र में मिलाकर और खूब फेंटकर गाढ़ा-गाढ़ा मलहम जैसा बनाकर आग से जले जख्म पर लगाने से मिटकर घाव भरकर सूख जाता है।

आम

●आम का बौर डेढ़ से तीन माशा जल में पीसकर पीने से अथवा इसके चूर्ण को जल के साथ सेवन करने से प्रमेह, प्रदर, अतिसार के वेग कम हो जाते हैं तथा कुछ दिन तक निरन्तर सेवन करने से सम्पूर्ण लाभ हो जाता है।

●आम के पत्तों का क्वाथ ढाई तोला की मात्रा में सेवन करने से सन्निपात ज्वर में बढ़े हुए (वात-पित्त-कफ) दोष दूर हो जाते हैं। चढ़े बुखार में इसका सेवन करने से बुखार का वेग शनै:-शनै: कम हो जाता है।

●आम की गुठली प्रतिदिन चावल के धोवन (पानी) के साथ पीसकर पीने से प्रदर रोग और अतिसार शर्तिया मिट जाते हैं।

●आम के सूखे पत्तों के चूर्ण को चिलम में भरकर पीने से बढ़ी हुई खाँसी और हिचकी शान्त हो जाती है।

●बर्र, चींटी, मक्खी, बिच्छू दंश में आम की मींगी का शीतल लेप करना लाभकारी है।

●मीठे आम का रस गौदुग्ध के साथ नित्य सेवन करने से संग्रहणी में लाभ हो जाता है। आमाशय और पक्वाशय के रोगियों को पके आम का मधुर रस अत्यन्त ही हितकारी है।

●आम की मींगी को जल में पीसकर नाक में 2-3 बार सुड़कने से नकसीर (नाक से खून टपकना) रुक जाता है।

●आम के पत्तों का रस गुनगुना करके कान में डालने से कर्णपीड़ा मिटती है।

●आम के पत्तों के रस में शक्कर मिलाकर पीने से खूनी बबासीर का रक्त-स्राव रुक जाता है।

●आम की मींगी जल में पीसकर जले स्थान पर लगायें। जलन शान्त होगी।

●कच्चे आम को आग में भूनकर इसके रस को गुड़ मिलाकर पीने से लू लगे रोगी को शान्ति मिलती है तथा गर्मी के मौसम में इसके नित्य सेवन से लू लगने का खतरा मिट जाता है।

●लू लग जाने पर (जब सर्वांग में दाह, जलन और ज्वर हो) तो आम की मींगी को पानी में पीसकर हाथ-पैर के हथेली और तलुवों और समस्त शरीर के अंगों पर बार-बार लेप करने से लू के कारण होने वाली जलन और बेचैनी तत्काल दूर हो जाती है तथा लू के कारण प्राणघात का खतरा टल जाता है।

आलू

●कच्चे आलू को काटकर मुख, कपोल (गाल) पर नित्य प्रति कुछ दिनों तक लगातार मलते रहने से कालेदाग धब्बे मिट जाते हैं।

●आलू को खूब महीन पीसकर जले अंग पर लेप लगाना लाभकारी है।

●प्रतिदिन एक आलू खाने से एक माह में ही मोटापा बहुत कम हो जाता है।

आँवला

आँवला आयुर्वेदिक चिकित्सा क्षेत्र में मानव हितकारी फल है। यह दो प्रकार का होता है—1. वन्य आँवला, 2. ग्राम्य आँवला। वन्य आँवला जो जंगल में उत्पन्न होता है—के फल एकदम छोटे-छोटे और कठोर होते हैं जबकि ग्राम्य आँवला जो घर, आंगन में उत्पन्न होता है—के फल बड़े-बड़े मृदु और मांसल होते हैं। आँवले के पत्ते, जड़, छाल और फल सभी प्रयोग में आते हैं। इनमें टैनिक एसिड, गैलिक एसिड, शर्करा, सैल्युलौज खनिज मुख्यत: कैल्शियम होते हैं। इसमें

सर्वाधिक मात्रा में विटामिन 'सी' पाई जाती है और इस फल की यह विशेषता है कि इसके सूखने पर भी विटामिन सी कम नहीं होती है। आयुर्वेद मतानुसार आँवले में लवण रस को छोड़कर शेष पांचों रस (मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त और कषाय रस) विद्यमान रहते हैं। इसमें अम्लरस विशेष रूप से पाया जाता है। यह गुण में लघु रूक्ष, मधुर, विपाक और वीर्य में शीत होता है। आँवले के फल वजन में 2 से 6 तोला तक होती हैं।

आँवला नाड़ी बल्य, दीपन, अनुलोमक, यकृतोत्तेजक, हृत, गर्भ स्थापक, कुष्ठघ्न, दाह प्रशमक, मूत्रल, वात पित्त कफ तीनों दोषों से उत्पन्न विकार नाशक है। मुख्यत: पित्तज विकारों (मस्तिष्क-दौर्बल्य, दृष्टिमान्द्य, इन्द्रियों की दुर्बलता, अरुचि, अग्निमांद्य, विबन्ध, यकृत विकार, अम्लपित्त, परिणामशूल, अर्श, उदावर्त्त आदि उदर रोग तथा हृद रोग, रक्त पित्त, रक्त विकार, श्वास-कास, यक्ष्मा, दाह, दौबर्ल्य, क्षय, शोष, आदि में लाभकारी और उपयोगी है।

●आँवला से निर्मित च्यवनप्राश को सेवन करने वाले व्यक्ति की मेधा, स्मरण-शक्ति, शरीर की कान्ति, आरोग्य, आयु वृद्धि, इन्द्रियों में बल, मैथुन करने की शक्ति, जठराग्नि की वृद्धि होती है। शरीर वर्ण की स्वच्छता और वायु का अनुलोमन होता है।

●ताजे आँवले को पीसकर उसकी लुगदी से नाभि के आसपास गोल क्यारी बनाकर उसमें अदरक स्वरस भरकर 3-4 घंटे उसी प्रकार रहने दें नित्य प्रति इस प्रयोग के करने से श्वेत प्रदर अवश्य मिट जाता है।

नोट—रोगिणी लाल व हरी मिर्च कदापि न खाये। मात्र काली मिर्च ही खाये।

●आँवले के रस में शक्कर मिलाकर पीने से योनिदाह, सुजाक की जलन, पित्ती, रक्त प्रमेह, रक्तातिसार, कामला रोग ठीक हो जाता है।

नोट—इसकी मात्रा 5 से 10 तोला तक (सुबह-शाम) है। बच्चों को 1 तोला से 2 तोला तक मधु मिलाकर सेवन कराया जा सकता है।

●आँवला स्वरस, पका हुआ केला, मधु और मिश्री समभाग मिलाकर सुबह-शाम कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन से महिलाओं का सोम रोग नष्ट हो जाता है।

●आँवले की गुठली की गिरी पानी के साथ पीस छानकर (इसी जल में) मधु और मिश्री मिलाकर सेवन करने से स्त्रियों का श्वेत प्रदर शर्तिया दूर हो जाता है।

●हरे आँवले को मन्दाग्नि में भूनकर सेवन करने से भोजन का परिपाक होता है और मस्तिष्क को स्फूर्ति प्राप्त होती है।

●मूत्रावरोध तथा मूत्रकृच्छ में आँवले का लेप बस्तिप्रदेश पर करें।

●आँवले की गुठली की गिरी कूटकर गरम जल में उबालें। छानकर इस जल से नेत्रों को धोने से दुखती आंखें शर्तिया ठीक हो जाती हैं।

●आँवलों के पत्तों के काढ़े से कुल्ला करने से मुख के छाले और घाव ठीक हो जाते हैं।

●भोजनोपरान्त जिन्हें एकदम शौच (पाखाना) जाने की शिकायत रहती हो वे 2 से 6 माशा तक सूखे आंवलों का महीन चूर्ण बराबर खान्ड मिलाकर ताजे जल से भोजन के बाद सेवन करें।

गन्ना–स्वरस, गुड़ व शक्कर

●ईख (गन्ना) का स्वरस पीना कामला रोग में अत्यधिक लाभप्रद है।

●ईख कफकारक और गुड़ वात और कफ नाशक है। गुड़ खाकर जल पीने से पित्त शान्त होता है।

●गुड़ से बना शरबत पीने से लू की बेचैनी शान्त हो जाती है।

●तीव्र ज्वर में गुड़ के साथ ताजा तक्र पीने से ज्वर का वेग धीरे-धीरे शान्त हो जाता है। इस प्रयोग से रोगी ज्वर रहित हो जाता है।

●प्रसूता स्त्री को गुड़ 5 तोला और सौंठ 1 माशा नित्य घृत के साथ खिलाकर गरम दूध पिलाने से गर्भाशय का दूषित स्राव खुलकर बाहर निकल जाता है। 40 दिनों के नियमित प्रयोग से गर्भाशय पूर्णत: स्वच्छ व शुद्ध हो जाता है।

●गुड़ 5 तोला, हल्दी 1 माशा, सौंठ 1 माशा, जल 20 तोला का गरम पेय बनाकर पीने से उर:क्षत, वातज, पित्तज, कफज कास नष्ट हो जाते हैं।

●गुड़ और चना सममात्रा में पीसलें। इसका लेप करने से मुलगन्ड और कर्णमूल शोथ (कनफेड़े) में लाभ होता है।

●गुड़ 5 तोला और हरड़ डेढ़ माशा को सोते समय नित्य प्रति (रात्रि को) गरम जल से सेवन करने से गैस का विकार दूर होकर वायु अनुलोम होती है।

●हल्दी व गुड़ गरम दूध में घोलकर पीने से चोट का दर्द और सूजन मिट जाती है।

●आँखों में लाली और दर्द होने पर गुड़ और खाने वाला गीला चूना मिलाकर आँखों के पास (कनपटी पर) लगाना अत्यन्त लाभकारी है।

●गुड़ और तिल के लड्डू खिलाने से बच्चों का बहुमूत्र रोग और सोते हुए बिस्तर पर ही मूत्र करने की आदत मिट जाती है।

नोट—गुड़ बलवीर्य वर्धक, भारी, स्निग्ध, वात नाशक, मूत्र शोधक, पित्त नाशक, मेद, कफ, कृमि नाशक और बल बढ़ाने के गुणों से भरपूर होता है। पुराना गुड़ हल्का पथ्य, अनभिष्यन्द, अग्नि प्रदीप्त करने वाला, पित्त नाशक, मधुर, पोषक, वातनाशक और रक्तशोधक होता है। नया गुड़ कफ, श्वास, खाँसी, कृमि और अग्नि बढ़ाने वाला होता है। नया गुड़ सेवन योग्य नहीं होता है। पुराना गुड़ (कम से कम एक साल पुराना) ही सेवनीय होता है।

● अदरक के साथ गुड़ खाने से कफ और खांसी का नाश हो जाता है।

● हरड़ के साथ गुड़ खाने से पित्त का शमन हो जाता है।

● सौंठ के साथ गुड़ खाने से समस्त वात रोगों को नष्ट होता है।

● भोजन के साथ थोड़ा सा गुड़ खाने से आहार में पित्त कारक तत्व नष्ट हो जाते हैं। श्वास-कास, हृदय रोग, अजीर्ण, रक्तविकार, मिटते हैं। कामला, जीर्ण ज्वर में पुराना गुड़ उत्तम पथ्य और सुखावह औषधि है। गरम जल, ताजी जल, गरम दूध, फलों के रस तक्र के साथ गुड़ का सेवन करना उचित है।

● सूखी खाँसी, विकलता, हृदस्पंदन वृद्धि, मुखशोष और गले की खराश में मिश्री मुख में रखकर चूसना अत्यन्त लाभकारी है।

● धूप की विकलता और मार्ग चलने की थकान शक्कर का शीतल शरबत पीने से तत्काल मिट जाती है।

ककड़ी

● कच्ची ककड़ी का सेवन करने से तृष्णा, मुखशोष मिट जाता है।

● कच्ची ककड़ी का रस पीने से मन्दाग्नि दूर होकर पाचनशक्ति बढ़ती है।

नोट—कच्ची ककड़ी खाकर दो घंटे बाद तक जल नहीं पीना चाहिए अन्यथा खांसी और जुकाम की शिकायत उत्पन्न हो जाती है।

● ककड़ी के बीज तीन माशा जल से पीसकर नित्य पीने से मूत्रकृच्छ और मूत्रदाह दूर हो जाता है।

कत्था

● कत्था को गरम पानी में घोलकर कुल्ला करने से मुखपाक और गले का प्रदाह तथा खाँसी मिट जाती है।

● कत्थे का चूर्ण कान में बुरकने से कर्णस्राव मिट जाता है।

● कत्थे का चूर्ण घाव व कटे स्थान पर बुरकने से वे सूखकर मिट जाते हैं।

● 1 से 2 तोला तक कत्था पानी में घोलकर पिलाने से संखिया (आर्सेनिक) का विष नष्ट हो जाता है।

नोट—कत्था अधिक मात्रा में सेवन करना हानिप्रद है। इससे नपुंसकता आती है।

कपास

● कपास की मींगी पानी में पीसकर अग्निदग्ध में लगाने से जलन मिटती है।

● कपास की मींगी पानी में घिसकर लगाने से अन्डवृद्धि में लाभ होता है।

कपूर

● देवपूजन, हवन, यज्ञ, अनुष्ठान, आरती में प्रमुखता से कार्य में आता है।

● कपूर को मद्यसार (स्प्रिट) में घोलकर रुई का फोहा लगाने से बृश्चिक-दंश में तुरन्त लाभ होता है।

● कपूर को खोपरे के तैल में लगाने से शीत पित्त नष्ट हो जाती है

● कपूर को दांत में दबाने से दन्तपीड़ा दूर हो जाती है।

● कपूर 2 रत्ती, मुलहठी दो माशा मिलाकर सुबह-शाम मधु से चाटने से गले की खराश और खाँसी तुरन्त कम होकर 3-3 दिन में जड़ से नष्ट हो जाती है।

● कपूर 1 रत्ती और कच्चे बिल्व (बेल) का चूर्ण तीन माशा सुबह-शाम तक्र के साथ सेवन करने से अतिसार 24 घंटे में ही थम जाता है।

● हींग और कपूर 2-2 रत्ती मिलाकर शहद के साथ चाटने से श्वास, मूर्च्छा और उदर विकार दूर हो जाते हैं।

● सरसों के तैल में कपूर घोटकर छाती पर मालिश करने से निमोनिया और छाती का दर्द शान्त हो जाता है।

● 24 औंस शुद्ध मद्य-सार स्प्रिट में 4 औंस कपूर मिलाने पर कपूर अर्क बन जाता है। इस अर्क की 10 से 20 बूंद तक बताशे में टपकाकर अथवा जल में मिलाकर रोगी को सेवन कराने से वमन, अजीर्ण, विशूचिका, आँव दस्त और पेट की मरोड़ निःसन्देह मिट जाते हैं।

● प्रसवोत्तर एवं प्रसवकालीन वेदनाधिक्य में डेली वाला कपूर 250 से 750 मि.ग्रा. तक पान में रखकर खिलाना लाभप्रद है।

● गर्भाशय शूल एवं कष्टार्त्तव में 250 से 500 मि.ग्रा. तक कपूर और काला जीरा 1 ग्राम का मिश्रण दिन में 2-3 बार शहद से चटाना लाभकारी है।

● स्त्रियों की कामवासना की अधिकता में कपूर 250 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में 2-3 बार कदली (केला) स्वरस आधा औंस के अनुपान से देना अतीव गुणकारी है।

● प्रसव के बाद होने वाले उन्माद रोग में कपूर 250 मि.ग्रा. की दिन में 4 मात्राऐं शंखपुष्पी स्वरस या सारस्वातारिष्ट आधी से 1 औंस के अनुपान से सेवन कराने से लाभ होता है।

● कपूर को जल में घिसकर स्त्री के स्तनों पर लेप करने से स्तनों का दूध सूख जाता है। इस प्रयोग को दुग्धपान करने वाले शिशु की मृत्यु हो जाने पर अक्सर महिलायें करती हैं और लाभान्वित होती हैं।

● कपूर को रूमाल में बांधकर सूंघते रहने से जुकाम दूर हो जाता है।

● कपूर और श्वेत चन्दन को तुलसी पत्र के स्वरस में पीसकर ललाट प्रदेश में लेप करने से शिरःशूल (सिर की पीड़ा) मिट जाती है।

● कपूर को चतुर्गुण तिल या एरन्ड के तैल में खूब भली प्रकार खरल करके दर्द के स्थान पर धीरे-धीरे मालिश करने से सन्धिशूल, कटिशूल और नाड़ीशूल नष्ट हो जाता है।

● कपूर और हींग सममात्रा में लेकर मधु के साथ खरल करके 250 से 500 मि.ग्रा. की गोलियाँ बनाकर अदरक के स्वरस के साथ 4-4 घंटे पर सेवन करने से तमकश्वास और जीर्ण कास के दौरों में शीघ्र लाभ होता है।

● गाय, बैल, भैंस, बकरी इत्यादि पालतू जानवरों के घावों में कृमि पड़ने पर कपूर का बारीक चूर्ण बनाकर भर देने से व्रणगत कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● डेली वाला कपूर 3 ग्राम, जल 750 मि.ली. लें। 2 साफ-स्वच्छ खाली बोतलों में कपूर की स्वच्छ रेशमी वस्त्र में पोटली बाँधकर जल से भरी बोतल में डाल दें। एक घंटे बाद यह सभी प्रकार के ज्वरों में लाभ पहुँचाने वाला कपूर पेय तैयार हो जाता है। आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा पिलाते रहें। यह पेय समस्त प्रकार के ज्वरों को दूर करता है। यह पेय अति सौम्य, हृदय को बल देने वाला, शीतल, एन्टीसैप्टिक, दीपक, पाचक और ज्वरों से उत्पन्न तृषा को नष्ट करने वाला है। आन्त्रिक ज्वर में यदि इसका प्रारम्भ से ही सेवन कराया जाए तो टाक्सीमिया जैसी स्थिति नहीं बनने पाती है और रोगी शीघ्र रोगमुक्त हो जाता है।

नोट—कपूर की मात्रा वयस्कों में अधिकतम 10 ग्राम तक और बच्चों में डेढ़ ग्राम तक है। साधारण गृहस्थ उक्त मात्रा से अधिक मात्रा में सेवन कदापि न करें अन्यथा हानि होगी क्योंकि अधिक मात्रा में कपूर सेवन करना जहर सेवन करना है। यदि आवश्यक हो तो अपने पारिवारिक सुयोग्य रजिस्टर्ड वैद्य (चिकित्सक) से परामर्शानुसार ही सेवन करें।

करौंदा

● करौंदा भी सर्वविदित फल है। यह चटनी, अचार, सब्जी और रायता बनाकर भोजन के रूप में खाया जाता है।

● करौंदा के दो तोला पत्तों को 10 तोला दही के निथरे हुए जल में पीसकर रोगी को पिलाने से मृगी का दौरा रुक जाता है। बार-बार दौरा नहीं आता है।

● करौंदा के पत्तों का स्वरस प्रथम तोला, दूसरे दिन 2 तोला, तीसरे दिन 3 तोला इसी प्रकार प्रतिदिन 1 तोला बढ़ाते हुए दसवें दिन 10 तोला तक पीकर 11 वें दिन से 1-1 तोला कम करते हुए 1 तोला (अन्त में) पीकर सेवन बन्द कर देने से जलोदर रोग जड़ मूल से दूर हो जाता है।

कबीत

● यह स्वाद में कसैला, मधुराम्ल होता है। चटनी के रूप में सेवन किया जाता है।

● कबीट के गूदे का चूर्ण 6 माशा शहद के साथ नित्य प्रति चाटने से बढ़ी हुई हिचकी और बढ़ा हुआ श्वास शान्त हो जाता है। रक्तष्ठीवन और कफष्ठीपन भी नष्ट हो जाता है।

● कबीट की चटनी बनाकर शहद मिलाकर नित्य सेवन करने से अरुचि दूर होती है और क्षुधा बढ़ती है।

केला

● सर्वविदित गूदेदार अत्यन्त मीठा, सुस्वाद और पौष्टिक सर्वप्रिय फल है।

● केले के वृक्ष को सुखाकर, जलाकर इसकी भस्म बनाकर सुरक्षित रखलें। यह भस्म 4 से 8 रत्ती तक मधु से चाटने से कुकरकास (कुत्ता खांसी या काली खांसी) जड़मूल से नष्ट हो जाती है।

● केले की भस्म को पानी में घोलकर जल को निथारकर (इस जल को) चौथाई से ढाई तोला तक की मात्रा में नित्य पीने से मूत्राशमरी और मूत्रकृच्छ रोग दूर हो जाते हैं और पेशाब खुलकर आता है, क्योंकि यह मूत्रल है।

● केले को पत्तों को सुखाकर कैंची से बारीक काटकर चिलम में भरकर नित्य पीने से क्षयज कास, जीर्ण कास, शर्तिया थम जाती है। प्रथम दिन के प्रयोग से ही लाभ मिलता है तथा कुछ दिनों के स्थायी प्रयोग से पूर्ण लाभ हो जाता है।

● जंगली केले के वृक्ष के पके फलों के गूदे में राई और साबूदाना आकार के सांवले बीज निकलते हैं। ये बीज मसूरिका, रोमान्तिका रोग की अमोघ औषधि है। इन बीजों को 4 से 8 रत्ती तक की मात्रा में छोटे बच्चों को 1 से डेढ़ माशा तक और बड़े बच्चों को 2 से 3 माशा तक खिलाने से मसूरिका (स्माल पाक्स) का आक्रमण नहीं होता है। यदि हो गई हो तो इस प्रयोग से धीरे-धीरे अवश्य ही शान्त हो जाती है।

● पके केले के साथ इमली और नमक मिलाकर खाने से संग्रहणी में लाभ होता है।

● केले को सुखाकर आटा तैया कर इसकी बनाई गई रोटियां अत्यधिक स्वादिष्ट और पौष्टिक होती है। कमजोर हाजमा वालों के लिए अत्यन्त हितकर हैं।

● स्कर्वी रोग से ग्रसित रोगी को केला रोगमुक्त कर उसका वजन व शक्ति बढ़ा देता है।

● केला के सेवन से अन्तड़ियों में भोजन से विजातीय द्रव्यों की सड़न क्रिया पर पूर्णरूपेण प्रतिबन्ध लग जाता है।

● छोटे बच्चों को केला का चूर्ण बनाकर लगातार 6 मास तक सेवन करने से वे हृष्ट-पुष्ट, फुर्तीले और स्वस्थ हो जाते हैं और चेहरे रक्त की लालिमा से दमक उठते हैं।

● गुर्दे की बीमारी में केले का सेवन करना अत्यन्त ही हितकारी है।

नोट—कच्चा केला दुष्पाच्य होता है अत: कच्चे केले की सब्जी ही बनाकर खायें। पका केला शर्करा से भरपूर होता है इसमें 5 भाग शर्करा और 1 भाग स्टार्च होता है। एक केला में 100 कैलोरीज शक्ति होती है। यह शरीर में शीघ्र भेदकर तुरन्त शक्ति प्रदान करता है। थकावट दूर कर फुर्तीला बनाता है। केले में कैल्शियम (चूना) मैग्नेशियम फास्फोरस, तेजाब सल्फर (गन्धक) लोहा और तांबा के तत्व हैं तथा आयोडीन भी होती है। केले में प्रोटीन और चर्बी की मात्रा कुछ कम होती है किन्तु जब इसे दूध के साथ सेवन किया जता है तब यह एक सम्पूर्ण भोजन बन जाता है। केले में विटामिन ए, बी, सी, जी और ई भरपूर मात्रा में होता है। केला कब्ज नहीं करता है (जैसा कि आम जनमानस में धारणा है) बल्कि केला कब्ज को दूर करने में सहायक है। कच्चे केले में स्टार्च अधिक होता है इसीलिए इसे पके केले की भांति नहीं खाना चाहिए (क्योंकि यह जल्दी नहीं पचेगा) इसका शाक के तौर पर पकाकर खाना ही श्रेष्ठ है। केला कभी सड़ता नहीं है (जैसाकि आम धारणा है कि केले पर कालिमा आना उसके सड़ने की निशानी है, यह धारणा एकदम गलत है, बल्कि केले के खाने का यही समय होता है।) कच्चे केले की सब्जी भी पौष्टिक और विटामिनों से भरपूर होती है।

मूली

● मूली के स्वरस में शक्कर मिलाकर पिलाने से कामला रोग शर्तिया ठीक हो जाता है। इसका सेवन 15 दिनों से 1 माह तक (रोगमुक्त होने तक) करना चाहिए। अन्य किसी औषधि की आवश्यकता नहीं पड़ती है। मात्रा—बच्चों को 6 माशा से 1 तोला तक और बड़ों को ढाई तोला से 5 तोला तक सुबह-शाम सेवन करायें।

● मूली के बीजों का चूर्ण 3 माशा सुबह-शाम ताजा जल से सेवन करने से मासिक धर्म (माहवारी) खुलकर होने लगता है।

● मूली बीजों का चूर्ण 3 माशा फटे हुए दूध के जल से सुबह शाम सेवन करने से मूत्रकृच्छ रोग मिट जाता है।

● मूली के कन्द को नित्य खाते रहने से बबासीर शान्त रहती है।

● मूली के पत्तों का स्वरस ढाई तोला तक नित्य पीने से अर्श (बबासीर) की पीड़ा शान्त रहती है।

● मूली के पत्तों का महीन चूर्ण तक्र के साथ सेवन करने से अर्श (बबासीर) के सभी कष्ट अति शीघ्र मिट जाते हैं।

● मूली के बीजों को बारीक पीसकर सरसों के तैल में मिलाकर लिंग पर लेप करने से लिंग की शिथिलता नष्ट होकर लिंग दृढ़ हो जाता है।

● मूली के कन्द के टुकड़ों को काटकर उसके मुख पर सैंधा नमक लगाकर वृश्चिक दंश पर रखते ही बिच्छू दंश की पीड़ा शान्त हो जाती है। इस क्रिया को बार-बार कुछ समय तक करते रहने से वृश्चिक दंश में स्थायी रूप से लाभ हो जाता है।

मेहन्दी

● मेहदी का स्वरस और तिल का तैल 20-20 तोला लेकर परिपाक करलें। जब रस जलकर तेल मात्र शेष रह जाए तब इसे छानकर सुरक्षित रखलें। इस तैल की मालिश करने से सन्धिवात (गठिया) पीड़ा में निःसन्देह लाभ होता है।

● मेहन्दी के पत्तों को खूब बारीक पीसकर मस्तक पर लेप लगाने से आधा सीसी का दर्द थम जाता है।

● मेहन्दी के पत्तों का रस दो तोला नित्य सबेरे मधु के साथ मिलाकर पीने से (40 दिन में) क्षुद्र कुष्ठ, चर्म रोग, एक्जिमा के कष्ट शान्त हो जाते हैं तथा रक्त शुद्ध हो जाता है।

●मेहन्दी के पत्तों के काढ़े से कुल्ला करने से दाँत और मसूढ़ों के रोग शान्त हो जाते हैं। मुख के छाले भी मिट जाते हैं। इससे व्रण धोना भी लाभप्रद है।

●मेहन्दी के पत्तों को पीसकर ग्रन्थिशोथ व्रणशोथ (अपक्व) पर बांधने से वह बिना पके ही बैठ जाते हैं।

●मेहन्दी और साबुन सममात्रा में ले पीसकर लगाने से शरीर के काले दाग अवश्य मिट जाते हैं।

जल सीप

●जलसीप (सीपी) को आग में जलाकर सांवली भस्म बनाकर, रखलें। कर्ण स्राव युक्त कान को साफ स्वच्छ रूई से भली प्रकार पोंछकर इस भस्म को 1 या 2 बार बुरकने से ही कर्णस्राव मवाद थम जाता है।

रूद्राक्ष

●हिमालय पर्वतराज के ऊपर तीनों लोकों में विचरण करने वाले महाबली त्रिपुरासुर का वध करने के लिए भगवान शिव को उन असुरों के साथ वर्षों तक युद्ध करना पड़ा था। इसलिए उनकी आँख में वेदना होने से अश्रुपात होने लगा था, उन अश्रु-बिन्दुओं को निष्फल न जाने देने के उद्देश्य से सृष्टि रचियता ब्रह्मा ने एक वृक्ष की। उत्पत्ति की यही रूद्राक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

●मोती, मूंगा आदि रत्नों की भांति रुद्राक्ष का भी शरीर पर वैद्युत और चुम्बकीय प्रभाव युक्त होता है। यह मस्तिष्क और हृदय को बल प्रदान करता है। रुद्राक्ष विविध वात और कफ रोग नाशक, कृमि, शिरोरोग, भूतबाधा या भूतग्रह शामक, विष नाशक और रूचिकारक होता है। समस्त विश्व में इसकी जातियाँ 90 प्रकार की हैं। भारत में 19 जातियाँ प्राप्य हैं।

●रुद्राक्ष का फल स्वाद में अम्ल (खट्टा) होता है। निकटवर्ती देश नेपाल में इसका अचार बनाकर खाया जाता है। इसका बीज 1 मुखी से लेकर 14 मुखी तक का होता है जिसका धार्मिक दृष्टि से सभी का महत्व अलग-अलग है। लालची व्यवसायी बाजार में नकली (आर्टीफीशियल) रुद्राक्ष बेचते है। असली रुद्राक्ष वजनदार, स्पष्ट रेखायुक्त लाल व काले (मिश्रित) रंग में निहित होता है। रुद्राक्ष शैव, शाक्त, वैष्णव प्रभृति सभी सम्प्रदायों के लोग धारण करते है। माला के रूप में गठित कर मन्त्र जाप तथा यन्त्र-मन्त्र के द्वारा मनोवैज्ञानिक लाभ अर्जित

करते हैं। रुद्राक्ष में धार्मिक सम्बल के साथ ही साथ रोग निवारण की भी अद्भुत क्षमता है।

●रुद्राक्ष का स्वरस अपस्मार (मृगी) रोग नाशक है। किसी भी प्रकार की दिमागी शिकायत इसके काढ़े, हिम, फान्ट चूर्ण या वटिका के रूप में प्रयुक्त कर दूर की जा सकती है।

●संक्रामक रोग (शीतला प्रभेदों के रोग) प्रतिषेधक के रूप में बहुत लोग इसे धारण करते हैं।

●शीत-पित्त रोग में रुद्राक्ष की माला धारण करने से रोग शमन हो जाता है तथा ग्रह तथा भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

●इसे जल में घिसकर (चन्दन की भांति) लेप करने से चेचक के घाव की जलन और खुजली दूर होकर घाव सूख जाता है और दाग मिट जाता है।

●श्लेष्मायुक्त रोग जैसे—श्वसनक रोग (निमोनिया बुखार) जुकाम, डब्बा रोग (पसली चलना), पीनस, प्रतिश्याय आदि में रुद्राक्ष को तुलसी स्वरस में घिसकर या अदरक रस में मधु के साथ चटाने से रोग शान्त होता है।

●जब रोगी भयानक रोग की चपेट में आ जाता है तो उसकी नाड़ी (नब्ज) क्षीण हो जाती है, हाथ-पैर ठण्डे पड़ जाते हैं उस अवस्था में मकरध्वज खरल किया हुआ 1 रत्ती और रुद्राक्ष पान या अदरक के स्वरस में घिसकर 1 मात्रा को मधु के साथ मिलाकर 1 से 2 बार तक चटाने से ही शरीर में गरमी आ जाती है और हृदय सबल हो जाता है।

नोट—यदि मकरध्वज प्राप्त न हो तो मात्र उपयुर्क्त स्वरस में दो माशा रुद्राक्ष के कल्क को जरा सा गरम करके मधु के साथ सेवन कराना भी लाभप्रद है।

●रुद्राक्ष को पानी में घिसकर दो से चार रत्ती तक शहद में मिलाकर चटाने से मसूरिका का निवारण सुखपूर्वक हो जाता है।

●रुद्राक्ष को गले में धारण करने से हृदयावसाद और रक्तचाप वृद्धि का भय नहीं होता है।

लौहवान

●लौहवान घर में धूप देने के काम में आता है। प्रमुखत: मुस्लिम वर्ग अपने घरों में लौहवान की धूप देना अधिक पसन्द करता है।

●लौहवान की सुगन्ध से (धूप देने से) घर में भूत-प्रेत बाधाऐं आक्रमण नहीं करती हैं। इस हेतु प्रतिदिन सुबह-शाम घर में धूप देना उपयोगी है।

●कौड़िया लौहवान को अग्नि में छोड़ने से सारे घर में इसकी सुगन्ध फैलती है। इसकी धूप से रोगाणुओं और कीटाणुओं का नाश हो जाता है। वायव्य सूक्ष्म प्राणी (जो मानव के लिए भयावह होते हैं) वह लौहवान की धूप से भाग जाते हैं।

●लौहवान के बारीक चूर्ण को कान में बुरकने से कर्णस्राव मिट जाता है। यह योग पूतिकर्ण में भी उपयोगी है।

●लौहवान चूर्ण 1 माशा शहद के साथ सुबह-शाम चाटने से वेगवती खांसी थम जाती है। मर्दाना ताकत में भी वृद्धि होती है।

लाक्ष (लाख)

●धोयी हुई लाख का चूर्ण 1 माशा मधु के साथ चाटने से रक्तष्ठीवन रुक जाता है। रक्तपित्त, रक्तार्श, रक्त प्रमेह भी इस योग से नष्ट हो जाते हैं। यदि इसमें दो रत्ती की मात्रा में फिटकरी भी मिला दी जाए तो इसके गुणों में वृद्धि हो जाती है।

●धोयी हुई लाख का चूर्ण 4 से 8 रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम शहद के साथ चाटते रहने से क्षयज कास मिट जाती है।

●लाख का महीन चूर्ण कान में बुरकने से कर्णस्राव तुरन्त थम जाता है।

●लाख को दूध में पीसकर नाक में सुड़कने से हिचकी तुरन्त थम जाती है।

●लाख के महीन चूर्ण को शहद में फेंटकर लगाने से दुष्ट व्रण शीघ्र ही भर जाते हैं। व्रणरोपण हेतु व्रण को निम्ब तैल से साफ करके लाख का महीन चूर्ण सूखा बुरकें अथवा शहद के साथ मिलाकर लगायें।

मिट्टी का तैल

●तुरन्त के कटे छिले घाव पर मिट्टी के तैल का फोहा रखने से रक्त का प्रवाह तुरन्त बन्द हो जाता है तथा पीड़ा भी तत्काल शान्त हो जाती है। इसे नित्य बांधने से आघातज व्रण अपने आप भरकर सूख जाते हैं। बशर्ते उस व्रण में मिट्टी तैल के अतिरिक्त धूल और पानी न लगने पाये।

●कटे, छिले या छिदे घाव पर तुरन्त मिट्टी का तैल मलने से पीड़ा में राहत मिलती है।

●बर्र दंश, पिपीलिका दंश, मूषक दंश, कीटदंश की पीड़ा, दाह और खुजली मिट्टी का तैल लगाने से दूर हो जाती है।

●एक छोटी (चाय वाली चम्मच) कुछ दिनों तक लालटेन या लैम्प में जलने के पश्चात् बचा हुआ तैल सुबह-शाम कुछ दिन सेवन करने से श्वास रोग (दमा) में आराम होता है।

नोट—तैल पीने के उपरान्त अडुसे के पत्तों का रस दो चम्मच अवश्य सेवन करलें।

●जला हुआ मिट्टी का तैल, नहाने वाला साबुन, खाने वाला नमक सभी 1-1 तोला और शुद्ध सरसों का तैल 5 तोला लें। पहले खरल में नमक और साबुन डालकर भली प्रकार पीसें तदुपरान्त सरसों का तैल मिलाकर रखलें। यह तैल मोच, पसलियों का दर्द, अर्कुलनिशा (साईटिका) आदि वात रोगों पर अचूक कार्य करता है।

●मिट्टी का तैल, गन्धक, कपूर तीनों को सममात्रा में लेकर पीसकर मिलाकर दाद को भली प्रकार खुजलाकर प्रतिदिन लगाने से दाद जड़मूल से मिटता है।

●गाय के गोबर का रस (गोबर कड़े कपड़े में रखकर निचोड़ें) और मिट्टी का तेल 1-1 तोला लेकर मिलालें। दाद, चम्बल को पैसे से खुजलाकर दिन में तीन बार लगायें। कुछ ही दिनों में शर्तिया नष्ट हो जाता है।

●कपूर और गन्धक 1-1 माशा लेकर मिट्टी के तैल में खरल करें। मरहम बनाकर दाद को साफ करके ऊँगली से मलने से दाद नष्ट हो जाता है।

●मिट्टी का तैल दो बूँद बताशे में रखकर नित्य खाने से शीत पित्त ठीक हो जाता है।

●मिट्टी का तैल और सैंधानमक मिलाकर रगड़ने से बिच्छू का जहर तुरन्त उतर जाता है और रोता हुआ रोगी खिलखिलाकर हँस पड़ता है।

●अग्निदाह और तरल दाह पर मिट्टी का तैल लगायें। इसके सामने बरनौल आयन्टमेन्ट इत्यादि का प्रयोग भी अति तुच्छ है।

●मिट्टी का तैल 40 ग्राम, पिसा हुआ कपूर 10 ग्राम दोनों को शीशी में डालकर मजबूत कार्क लगाकर आधा घण्टा धूप में रखदें। फिर शीशी को खूब हिलाकर दोनों को मिलालें। शरीर में जहाँ कहीं भी वात का दर्द हो वहाँ इसकी मालिश करके सिंकाई कर दें। दर्द ठीक हो जाएगा।

नोट—गन्धक, सुहागा, चूना, चीनी और कपूर 1-1 छटांक लेकर 10 सेर मिट्टी के तैल में पीसकर मिलाकर रखदें। कुछ समय पश्चात् दुर्गन्ध बिल्कुल ही समाप्त हो जाएगी। इस प्रकार का तैल कई प्रकार की औषधियों के काम में ले सकते हैं।

काली मिट्टी

●मिट्टी कई प्रकार की होती है। स्लेटी मृदु मिट्टी से ग्रामीणांचल की स्त्रियां

चूल्हा बनाती हैं और चौका (रसोई) को साफकर पोतना लगाती हैं। पीली मृदु मिट्टी से कच्चे मकानों की दीवारों और आंगन को लीप-पोत कर स्वच्छ करती हैं और काली मृदु मिट्टी से अपने सिर के बालों को धोकर साफ करती हैं। यहाँ हम काली मिट्टी और पीली मिट्टी के कुछ प्रमुख घरेलू योग लिख रहे हैं—

● पीली मिट्टी को शरीर में लेपकर नित्य शीतल जल से स्नान करने से कन्डू रोग मिट जाता है और चर्म रोगों की चपेट में आने से शरीर बचा रहता है।

● काली या पीली मिट्टी को सरसों के तैल में मिलाकर नित्य प्रति दांतों पर मंजन करने से मसूढ़ों के रोग नष्ट हो जाते हैं और दांत मजबूत होते हैं तथा दांतों में शूल, कृमि, मवाद (पूय) आदि विकार नहीं होते हैं।

● बिजली के आघात अथवा सर्पदंश से पीड़ित रोगी को जमीन में 1 फुट गहरा तीन फुट चौड़ा और 6 फुट लम्बा गड्डा खोदकर सुलादें। रोगी का मुंह और सिर छोड़कर उससे शेष सारे शरीर को काली या पीली (गीली) मिट्टी से ढंक दें तथा निरन्तर मिट्टी को शीतल जल धारा से तर बनाये रखें। रोगी के प्राण बच सकते हैं।

● व्रण शोथ की भयंकर पीड़ा पीली मिट्टी का शीतल लेप लगाते ही शान्त हो जाती है।

● काली मिट्टी के शीतल घोल की पट्टी घावों पर निरन्तर रखने से घाव भरकर सूख जाते हैं।

● आँखों पर काली मिट्टी या पीली मिट्टी का लेप करने से नेत्रदाह और अभिष्यन्द (आँख आना) मिट जाता है।

● काली या पीली मिट्टी की शीतल पट्टी पेडू पर रखने से मूत्र खुलकर होता है। इसी प्रयोग से तीव्र ज्वर 1 से 2 घंटे के अन्दर शर्तिया शान्त हो जाता है। काली मिर्च को पानी में घोलें। उसमें कपड़े को भिगोकर पट्टी मूषक-दंश पर बार-बार रखने से 24 घंटे में मूषकदंश का विष शान्त हो जाता है। मूषकदंश से उत्पन्न तीव्र ज्वर और सनिपातिक प्रलाप, मूर्च्छा आदि दूर हो जाते हैं।

गाजर

● गाजर मूल का स्वरस ढाई तोला तक थोड़ी सी शक्कर मिलाकर नित्य पीने से हृद-स्पन्दन और घबराहट तत्काल मिट जाती है।

● कच्ची गाजर को तत्काल पीसकर जले अंग पर लेप करने से दाह शान्त हो जाती है।

● गाजर के बीज का चूर्ण 6 माशा नित्यप्रति गरम जल से 1 माह तक लेते रहने से रुका हुआ (बन्द) मासिकधर्म खुलकर होने लगता है।

गेरू

● यह भी सर्वविदित लाल रंग की खनिज मृत्तिका है—जो पानी में घुलकर पानी को लाल रंग प्रदान करती है। होली, दीवाली पर मकानों पर स्त्रियां इससे विभिन्न प्रकार की चित्रकारी अंकित कर घरों को सजाती हैं। आयुर्वेद में इसके मिश्रण से हजारों योग भरे पड़े हैं। मंजनों में तो इसका बहुतायत से व्यवहार किया जाता है।

● दो रत्ती गेरू को गाय के ताजा दूध में घोलकर कान में टपकाने से बधिरता (कान का बहरापन) नष्ट हो जाता है।

● दो रत्ती गेरू बच्चों को शहद से चटाने से हिचकियाँ बन्द हो जाती हैं।

● गेरू को बारीक पीसकर सरसों के तैल में फेंटकर नित्य सबेरे दाँतों पर मंजन करने से दाँत और मसूढ़ों के विकार नष्ट होकर दाँत मजबूत हो जाते हैं।

गेहूँ

● 5 तोला गेहूँ को लोहे के तवे पर डालकर धीमी आग पर (काला होने तक) भूनकर, पीसें, शहद में मिलाकर लेप करने से एक्जिमा पामा, कन्डयुक्त चर्म रोग शर्तिया नष्ट हो जाते हैं।

● ढाई तोला सेंकें हुए गेहूंओं को 40 तोला पानी के साथ उबालें। जब पानी 5 तोला शेष रहे तब छानकर तुरन्त 1 माशा सैंधा नमक मिलाकर सुखोष्ण पीने से सर्दी, खाँसी में तुरन्त राहत मिलती है। 3-4 दिनों के इस प्रयोग से पूर्ण लाभ हो जाता है।

● गेहूँ के चोकर को थोड़ा सा नमक थोड़े से तैल में मिलाकर लोहे की कड़ाही में भूनलें। तदुपरान्त थोड़ा सा जल मिलाकर (हलुवा जैसा बनाकर) गरम-गरम ही व्रण शोथ पर बाँधने से रात भर में ही व्रण शोथ फूटकर बहने लगता है।

गोभी (बन्द गोभी या पत्ता गोभी)

● 10 तोला गोभी के पत्तों को खूब कुचलकर 40 तोला पानी में उबालें।

जब पानी 5 तोला शेष बचे तब छानकर इसमें थोड़ी सी शक्कर मिलाकर रखलें। इसे धीरे-धीरे पीने से स्वर भंग 72 घंटे में मिटने लगता है तथा 7 दिनों में पूर्ण आराम हो जाता है ।

● गोभी के पत्तों का चूर्ण 1 तोला को मट्ठा में घोलकर पीने से खूनी आर बादी बबासीर के कष्ट मिटते हैं । गोभी के पत्तों की उबाली हुई शाक (सब्जी) मट्ठा और सैंधा नमक के साथ खाने से भी बबासीर के कष्ट थमे रहते हैं । बबासीर के रोगी लाल और हरी मिर्च न खाकर काली मिर्चों का ही सेवन करें ।

घृत

● दो तोला गाय का घी (सुखोष्ण) धीरे-धीरे पीने से हिचकी थम जाती है।

● दो तोला गाय का घी, 1 तोला मिश्री और 10 नग काली मिर्च का चूर्ण को मिलाकर नित्य सवेरे चाटने से स्वरभंग दूर होता है । कण्ठ प्रदाह मिटता है तथा नित्य प्रति सेवन से गले के रोग नहीं होते हैं ।

● गाय का गुनगुना घी नाक में सुड़कने से नासाशोष मिट जाता है । नाक की श्वास-प्रश्वास का कष्ट दूर हो जाता है तथा बार-बार छींकें नहीं आती हैं ।

● हाथ-पैर के तलुवों में दाह और सन्ताप होने पर सात बार जल से धोया हुआ गाय का घी मलने से अत्यधिक लाभ होता है । तीव्र ज्वर में इस योग का प्रयोग करने से ज्वर का वेग कम होता है और सन्ताप में कमी आती है । लू लगने पर इसी योग में देशी कपूर मिलाकर हाथ-पैर के तलुवों तथा समस्त शरीर में मालिश करने से लू-जनित ज्वर और सन्ताप में लाभ होता है ।

फिटकरी

● फिटकरी से जल स्वच्छ किया जाता है । दाढ़ी बनाने के बाद गालों पर चर्म रोगों से बचाव हेतु मला जाता है । कट जाने या छिल जाने पर इसके चूर्ण को लगाया जाता है । घीकुमार और करैलों को फिटकरी के पानी से धोकर उसकी कटुता मिटाई जाती है । आँवले का मुरब्बा बनाने हेतु हरे आँवलों की अम्लता कम करने के लिए आंवलों में छेदकर फिटकरी के पानी में रात भर भिगो (डुबो) कर रखा जाता है ।

● कच्ची फिटकरी को पानी में घोलकर कुल्ला करने से मुखपाक, गलग्रन्थि-प्रदाह, गले की खराश दूर हो जाती है ।

● कच्ची फिटकरी 4 रत्ती मधु के साथ दिन में 2-3 बार चाटने से ऊर्ध्वगामी और अधोगामी रक्तपित्त रुक जाता है ।

● फिटकरी भस्म 4 रत्ती, धुली हुई पीपल दो रत्ती को मधु से 24 घंटे में 2-3 बार चटाने से रक्तवमन, रक्तातिसार, रक्त प्रमेह रुक जाता है ।

● दो रत्ती फिटकरी को 5 तोला आकाश जल या परिश्रुत जल (जल को उबालकर छाने हुए) में घोलकर आँखों में सुबह-शाम 2-2 बूँद डालने से आँख आने का रोग दूर हो जाता है ।

● सर्प दंशित रोगी को बेहोश होने से पूर्व 3 माशा फिटकरी का चूर्ण गुनगुने पिघले हुए गोघृत में घोलकर 2-2 घन्टे के अन्तर अथवा बार-बार 5-6 बार पिलाने से सांप का विष उतर जाता है और रोगी बेहोश भी नहीं हो पाता है ।

● 1 तोला फिटकरी को 5 तोला जल में घोलकर उसका फोहा वृश्चिक दंश पर लगाने से और 2-2 बूँद आँखों में डालने से वृश्चिक दंश पीड़ा शान्त हो जाती है ।

● फिटकरी के महीन चूर्ण को खोपरे (नारियल) के तैल में मिलाकर चर्म रोगों पर लगाने से उनकी खुजली मिट जाती है और व्रण ठीक हो जाते हैं ।

● कच्ची फिटकरी को जल में घोलकर योनि में पिचकारी लगाने से योनि-स्राव रुक जाता है और योनि के व्रण नष्ट हो जाते हैं ।

● फिटकरी की भस्म को 4 रत्ती की मात्रा में चाटने से खाँसी और श्वास के वेग रुक जाते हैं । रक्तार्श का रक्त स्राव, रक्त प्रदर, रक्त प्रमेह, सुजाक, श्वेत प्रदर, योनि स्राव इसके सेवन से रुक जाते हैं और पूर्णत: नष्ट हो जाते हैं। यह योग मलेरिया ज्वर में भी गुणकारी है ।

● फिटकरी की भस्म को दाँतों पर नित्य मलने से पायोरिया मिट जाती है। दाँतों और मसूढ़ों के रोग थमे रहते हैं तथा लगातार प्रयोग से पूर्णरूपेण ठीक हो जाते हैं और कष्टों से छुटकारा मिल जाता है ।

● फिटकरी भस्म 4 रत्ती को दही के तोड़ या दूध के फाड़े हुए पानी से सेवन कराने से घन्टों या 2-3 दिनों का रुका हुआ मूत्र खुलकर होता है । यह प्रयोग मूत्रावरोध में तत्काल लाभप्रद है ।

● दाँत उखाड़ने के पश्चात् इसके घोल से कुल्ला करने से रक्तस्राव, सूजन और दर्द में तुरन्त लाभ होता है ।

● 1 या 2 प्रतिशत का फिटकरी घोल आंखों (आंख आने पर या दुखने पर) डालना लाभप्रद है ।

● फिटकरी का फूला सूक्ष्म पीसकर मलाई में मिलाकर नेत्रों पर बांधना भी लाभप्रद है।

● फिटकरी की खील 1 ग्राम शहद 8 ग्राम भली प्रकार मिलाकर काजल की भांति लगाना लाभप्रद है।

● 1 ग्राम फिटकरी की खील का कपड़छन चूर्ण 30 मि.ली. वाष्पजल (उबाला हुआ जल) या गुलबजल में मिलाकर नेत्रों में डालना अतिशय लाभकारी है।

● कच्ची फिटकरी 1 ग्राम, उबाला हुआ जल 100 मि.ली. मिलाकर नेत्र स्राव में डालना अत्यधिक उपयोगी है।

● अत्यावर्त्तव में फिटकरी भस्म, स्वर्णगैरिक, संग जराहत सभी समभाग मिश्री मिलाकर चूर्ण करके कपड़छन कर लें। 2-2 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार गुलाब जल (वाष्पित अर्क) से पिलायें। अतिशय लाभकारी है।

● श्वेत प्रदर में 2 प्रतिशत फिटकरी के घोल से योनि डूश (सफाई, धोना) तथा आधा-आधा ग्राम फिटकरी भस्म जल से सेवन करना अतीव गुणकारी है।

● योनि संकोचनार्थ (तंग करने हेतु) फिटकरी के घोल से धोकर 1 फाया भिगोकर योनि के अन्दर रखें।

● फिटकरी भस्म 1-1 ग्राम जल से सुबह-शाम उपदंश रोग में खाना लाभप्रद है तथा उपदंश के घावों पर फिटकरी के घोल की पट्टी रखना भी लाभकारी है।

● खुजली रोग में फिटकरी पीसकर सरसों के तैल मिलालें, साथ में कपूर भी डालें और फिर मालिश करें।

● दाद में फिटकरी टंकण, आमलासार गन्धक और कपूर मिलाकर लगाना अतिशय उपयोगी है।

● कुकुरकास में फिटकरी भस्म 1 रत्ती, प्रवालपिष्टी आधी रत्ती, काकड़ासिंगी 2 रत्ती को मिलाकर मधु से चटाना उपयोगी है।

● शैय्या क्षत में 1 प्रतिशत घोल का लेप व व्रण बन्धन करना परम लाभप्रद है।

● अतिसार और प्रवाहिका में दो ग्राम फिटकरी चूर्ण 500 मि.ली. दूध से सेवन करना अत्यन्त उपयोगी है।

● शिर:शूल में फिटकरी भस्म 1 ग्राम तथा छोटी इलायची का चूर्ण 1 ग्राम गरम जल से सेवन करना लाभकारी है।

● प्रतिश्याय में धतूरे के पत्ते के रस की भावना देकर फिटकरी की भस्म बनाकर 2-2 रत्ती की मात्रा में उष्ण जल से सेवन करना लाभप्रद है।

● विषम ज्वर और सामान्य ज्वर में आक दुग्ध की भावना देकर फिटकरी की भस्म बनाकर 2-2 रत्ती की मात्रा में गरम जल से लेना उपयोगी है।

● 2 प्रतिशत फिटकरी के घोल में रोगी को नंगा करके बिठाने से (गुदा के रास्ते) कांच निकलने के रोग में लाभ हो जाता है।

● खूनी बबासीर में 1-1 ग्राम भस्म जल से सुबह-शाम जल से सेवन करें।

● पूयमेह में फिटकरी की भस्म तथा स्वर्ण गैरिक मिलाकर डेढ़-डेढ़ ग्राम की मात्रा में जल से सेवन करना लाभप्रद है।

● उदरशूल में 1 ग्राम फिटकरी मट्ठा या शरबत से लेना उपयोगी है।

● पान्डु और कामला रोग में फिटकरी भस्म 4-4 रत्ती मट्ठा या दही के तोड़ के साथ सेवन करना अतिशय लाभकारी है।

● निमोनिया में फिटकरी भस्म और टंकण भस्म मिलाकर मिश्री मिलाकर गरम जल से सेवन कराना उपयोगी है।

● उर:क्षत में शुभ्रा भस्म 4 रत्ती मक्खन के साथ सेवन करना लाभप्रद है।

● रक्त वमन और खांसी में रक्त आने पर फिटकरी भस्म 1 ग्राम गाय या बकरी के दूध से सेवन करना लाभकारी है।

● कासरोग में फिटकरी भस्म को गुड़ में मिलाकर चूसना लाभप्रद है। या बलगमी खाँसी में उष्ण जल से और सूखी खांसी में गुनगुने दूध से सेवन करना लाभप्रद है।

● श्वेत कुष्ठ में 5 प्रतिशत फिटकरी का घोल का लेप करना और 1-1 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम खाना लाभप्रद है।

● विष सेवन कर लेने पर फिटकरी को 5 ग्राम की मात्रा में लेकर जल में घोलकर रोगी को पिलायें। इस योग से वमन बन्द हो जाती है।

● विषैले कीट पतंग या जानवरों के डंक मारने या काट लेने पर पीड़ित स्थान पर फिटकरी का घोल लगाना लाभप्रद है।

बबूल का गोंद

● बबूल के गोंद का 1 तोला पानी पिलाना रक्तातिसार में लाभप्रद है।

● बबूल का 3 माशा पका गोंद नित्य धारोष्ण दुग्ध से सेवन करने से धातु क्षीणता दूर होकर वीर्य वर्धन होता है। क्षय रोगी के लिए भी लाभ पहुँचाता है।

● बबूल के गोंद के छोटे-छोटे टुकड़े करके गोघृत में भूनलें (घृत में पक्व

होने पर यह लाई की भांति फूलकर हल्का हो जाता है) फिर इसका चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को डेढ़ से तीन माशा तक की मात्रा में दिन में 3-4 बार मधु से चाटने से (बच्चों की मात्रा आधा से एक माशा तक है) क्षयज कास, कुकुर कास में शर्तिया लाभ होता है।

बरफ

● बरफ को 1 बरतन अथवा रबर की थैली में भरकर नाभि के नीचे पेड़ू पर रखने से तीव्र और न उतरने वाला ज्वर बिना किसी हानि के उतर जाता है।

● रक्तज सिरदर्द में (इसमें आँखें लाल हो जाती हैं) एक कपड़े की थैली में बरफ रखकर उस थैली को धीरे-धीरे सिर पर घुमाने से सिर की पीड़ा (शिर:शूल) थम जाता है। यह योग नकसीर में भी लाभप्रद है।

● हार्निया रोग में रोगी की आंतें अन्डकोष में उतर आने और इस कारण से असहनीय दर्द होने पर अन्डकोष को बरफ भरी थैली में डाल देने से चन्द मिनटों में ही आँतें अन्डकोष छोड़कर ऊपर पेट में चली जाती हैं और रोगी को तुरन्त ही राहत मिल जाती है।

● गर्मी के कारण मूत्रावरोध होने पर बरफ का पानी धार के रूप में लिंग पर (छिद्र के आसपास) डालने से पेशाब आ जाता है। यदि बरफ उपलब्ध न हो तो पिसा हुआ कपूर रुई के फोहा में रखकर पांनी से तर करके मूत्रेन्द्रियों के छिद्र पर रखें। इससे भी मूत्र की रुकावट दूर होकर शीघ्र ही मूत्र खुलकर आता है और रोगी को चैन मिल जाता है।

बाजरा

● बाजरा को कपड़े की पोटली में बाँधकर (इस पोटली को लोहे के गरम तवे पर रखकर गरम करके) चोट, मोच, सन्धिवात, आमवात की पीड़ा वाले अंग पर सेंकने से तुरन्त पीड़ा कम हो जाती है और सूजन भी मिटती है।

● बबासीर के दर्द व कांच निकलने की बीमारी में, आध्मान (पेट फूलना) में भी उक्त बाजरे की पोटली से सेंक करना परम लाभकारी है।

● बाजरे का फूल 1 माशा गुड़ मिलाकर 11 दिन तक खाली पेट सेवन करने से पागल कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है। पागल कुत्ते के काटते ही इसका सेवन प्रारम्भ कर दें।

बालू रेत

● बालू को ठण्डे पानी में गीला करके हाथ-पैर के तलुवों पर मलने से लू का ज्वर, दाह, तीव्र ज्वर और सन्ताप तत्काल मिटता है।

● बालू को लोहे की कड़ाही में गरम करके मोटे कपड़े में पोटली के रूप में बाँधकर चोट, मोच, आघात पर सेंक करने से पीड़ा और सूजन मिटती है। लकवा, पक्षाघात, अर्धांग, (फालिज) इत्यादि में महा नारायण तैल महामाष तैल आदि की मालिश के उपरान्त प्रभावित अंग पर इसकी सेंक करना अत्यधिक लाभप्रद है।

बेल

● कच्चे बेल का चूर्ण 1 तोला की मात्रा में सुबह-शाम मट्ठा से सेवन करने से अतिसार और संग्रहणी में कुछ दिनों के प्रयोग से से लाभ हो जाता है।

● बेल के पत्तों को मोटे कपड़े में बांधकर लोहे के गरम तवे पर गरम कर के सेंकने से चोट, मोच और सन्धिवात की पीड़ा मिट जाती है।

● बिल्व पत्र स्वरस ढाई तोला को मधु के साथ सूर्योदय से पूर्व नित्य पीने से मधुमेह रोग में पेशाब में जाने वाली शर्करा रुक जाती है। 15 दिनों के लगातार सेवन से पेशाब में शर्करा निरस्त हो जाती है।

● बिल्वपत्र को पीसकर बिना पके हुए व्रण शोथ पर बाँधने से व्रण शोथ बिना पके ही बैठ जाता है।

● बिल्व की छाल का काढ़ा ढाई तोला नित्य पीने से हृदय की अस्वाभाविक बढ़ी हुई धड़कन शान्त हो जाती है।

● बिल्व पत्र कल्क की शीतल पुल्टिस आंखों की पलकों पर बाँधने से आंखों की पीड़ा और लालिमा तुरन्त मिट जाती है।

● कच्चे बेल को आग में भूनकर उसके गूदे को शक्कर के साथ खाने से 72 घंटे में संग्रहणी और अतिसार के वेग थम जाते हैं। कुछ दिनों के नियमित सेवन से यह दोनों रोग जड़मूल से नष्ट हो जाते हैं।

नोट—बिल्व पत्र का स्वरस मात्र अषाढ़ और सावन के महीनों में ही थोड़ा-थोड़ा निकलता है। अन्य महीनों में रस बिल्कुल ही नहीं निकलता है। अन्य दिनों में बिल्व पत्र की आवश्यकता होने पर निम्न विधि से बिल्व रस प्राप्त करें—बिल्व पत्रों को कुचलकर उसका एक बड़ा गोला बनालें और उस गोले पर बड़ वृक्ष के पत्तों में लपेट दें अथवा बड़ के दोनों सम्पुट बन्द कर उस पर एक अंगुल मोटी कपड़ मिट्टी चढ़ाकर धूप में सुखाकर तदुपरान्त इस गोले को आग के बीच में रखकर इतना पकालें कि वह लाल हो जाए और फिर आग से निकालकर स्वांग शीतल कर तुरन्त ही इस गोले को निचोड़ें, इस क्रिया से रस निकल आयेगा। यह रस मधुमेह में अत्यन्त ही हितकर है।

बैंगन

● 1 बैंगन को टुकड़ों में काटकर पानी में डालकर खूब मलकर इस पानी को बार-बार धतूरा खाये रोगी को पिलाने से धतूरे का विष उतर जाता है ।

● बैंगन के ताजे स्वरस में शक्कर मिलाकर पीने से उदरकृमि नष्ट होते हैं।

● बैंगन के पत्तों के रस में शक्कर मिलाकर दाद-खाज पर लगावें ।

● बैंगन काटकर नमक मिले जल में (पिलपिलाने की अवस्था तक) गरम करें । पहले पानी से सेंक करते रहें तदुपरान्त गुनगुने बैंगन को चोट, मोच, आघात व शोथ से पीड़ित अंग पर रात्रि में बाँधकर सो जायें । लाभकारी योग है ।

बेर

● बेर की मींगी का चूर्ण 3 माशा धारोष्ण दूध से नित्य प्रति सेवन करने से धातु क्षीणता, नपुंसकता दूर होकर वीर्य की वृद्धि हो जाती है ।

● बेर की मींगी का चूर्ण 1 से 3 माशा तक शहद से चाटने से श्वास, कास, वमन, तृषा और दाह तुरन्त शान्त हो जाते हैं ।

● बेर के पत्तों को पीसकर घी में तलकर इसका 3 माशा चूर्ण सैंधा नमक और शहद के साथ चाटने से भयंकर खाँसी में प्रथम दिन से ही लाभ होता है।

● बेर के पत्तों को दही के पानी में पीसकर अग्निदग्ध व्रणों पर लगाते ही तुरन्त जलन और पीड़ा शान्त हो जाती है ।

● बेर के पत्तों को पीसकर पेडू पर शीतल लेप करने से 1 घंटे में मूत्रावरोध मिट जाता है ।

● बेर की छाल का महीन चूर्ण बुरकने से घाव भरकर सूख जाते हैं ।

मकई के भुट्टे

● मकई के रेशमी बालों का काढ़ा ढाई तोला की मात्रा में पीने से मूत्रकृच्छ रोग मिट जाता है ।

● ताजे कच्चे मकई के भुट्टों के दानों को दूध में खूब महीन पीस छानकर पीने से शारीरिक बल में वृद्धि हो जाती है ।

● भुट्टे खाकर छाछ पीने से यह जल्दी हजम हो जाता है ।

● मक्खन या शुद्ध घी के साथ भुट्टे खाने से इसका रूखापन और वातकारक प्रभाव सन्तुलित हो जाता है ।

नोट—नियमित रूप से तो नहीं किन्तु कभी-कभी भुट्टे सेंक कर खाना उचित और व्यावहारिक है । भुट्टे को सेंककर इस पर घी और सैंधा नमक लगाकर खाने से इसकी रूक्षता और वातकारी असर नष्ट हो जाता है ।

● भुट्टा रूखा, पौष्टिक, मधुर रस युक्त, वातकारक, कफ, पित्त शामक और तृप्तिकारक अन्न है । इसके पौधे में शक्कर होती है जिससे ग्लूकोज निकाला जाता है । ग्रामीण जन इसकी रोटियां खाते हैं । इसमें विटामिन की तो मात्रा कम होती है किन्तु कार्बोहाइड्रेटस अधिक मात्रा में रहता है ।

तक्र (मट्ठा)

● नित्य प्रति ताजा तक्र पीने से अतिसार, संग्रहणी और बबासीर के कष्ट शान्त रहते हैं ।

● काँच (शीशा) खा लेने पर केवल मट्ठा नित्य पिलाते रहने से वह आंतों को बिना कोई हानि पहुँचाये शरीर से बाहर निकल जाता है ।

मधु (शहद)

● ढाई तोला शहद को 10 तोला जल में मिलाकर नित्य प्रति पीने से मोटापा दूर होकर रक्त शुद्ध व साफ हो जाता है ।

● मधु को नित्य रात्रि को आँख में डालने से नेत्रज्योति बढ़ती है ।

● 1 तोला शहद और 2 तोला मवखन (ताजा) को मिलाकर खाने से शरीर पुष्ट होता है और धातुक्षय नष्ट होता है ।

● असली शहद वृश्चिक दंश पर लगाकर मलना अत्यन्त उपयोगी है ।

● सर्पदंश को छोड़कर प्रत्येक प्रकार का कीटदंश की पीड़ा शहद लगाने से मिट जाती है ।

● घाव पर शहद का फाया लगाते रहने से घाव ही शीघ्र भर जाता है ।

● शहद को बार-बार चाटते रहने से खाँसी का वेग कम हो जाता है ।

● शहद को पानी में घोलकर कान में टपकाने से कर्णनाद बन्द हो जाता है।

● टूटी हुई हड्डी को तत्काल जोड़कर शहद से तर किया हुआ कपड़ा हड्डी पर लपेटना का प्रथम उपचार हेतु अतिशय उपयोगी है ।

● 2-2 या 3-3 चम्मच शहद दिन भर में 3-4 बार प्रतिदिन खाते रहने से लम्बी आयु होती है । बुढ़ापों में भी जवानी का आनन्द लिया जा सकता है।

● 2-3 चम्मच शहद प्रतिदिन दिन में 3-4 बार सेवन करते रहने से हार्टफेल होने का भय दूर हो जाता है ।

● मधु का नियमित सेवन करने से नामर्द भी मर्द बन जाता है। शहद में दूध से 6 गुना अधिक शक्ति होती है और इसमें 1 मुर्गी के अण्डे के बराबर शक्ति होती है।

● सर्दी की ऋतु में 1 पाव दूध में 1 मुर्गी के अण्डे की जर्दी और शहद मिलाकर कम से कम 21 या 40 दिन नियमित सेवन करने से शरीर हृष्ट-पुष्ट मजबूत हो जाता है।

● शहद को सेवन करते रहने से श्वासा-साधनाशक्ति बढ़ जाती है।

● शहद प्रतिदिन सेवन करने से आमाशय व आन्त्र के व्रण ठीक होते हैं।

● शहद सेवन करने से न्यूमोक्स सैप्टिक, व्रण, एमीबा, टाइकोसस इत्यादि बीमारी उत्पन्न करने वाले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

● पुराने घाव और कैन्सर भी मधु खाने और लगाने से ठीक हो जाते हैं।

● अग्निदग्ध स्थान पर शहद की पट्टी रखने से दर्द और जलन तुरन्त शान्त हो जाती है एवं व्रण भी ठीक हो जाता है।

● छोटे बच्चों को शहद जनरल टानिक के स्थान पर सेवन करवाकर उन्हें हृष्ट-पुष्ट और निरोग रखा जा सकता है।

● 12 वर्ष तक आयु के बच्चों को सोते समय 1-2 चम्मच शहद निरन्तर सेवन करवाते रहने से उनका बिस्तर पर मूतना बन्द हो जाता है।

● खिलाड़ियों को नित्य शहद सेवन करने से थकावट नहीं आती है।

● जब-जब सुरापान की इच्छा हो, तब-तब (2-4 चम्मच शहद) पीने से शराब पीने की लत छूट जाती है।

● पक्षाघात, लकवा, ऐंठन और स्नायुरोग 2-4 चम्मच दिन में 2-4 बार सेवन करते रहने से ठीक हो जाते हैं। शहद कैल्शियम की मात्रा की पूर्ति करता है।

● टायफाइड ज्वर की कमजोरी में मधु सेवन अंग्रेजी टॉनिक जैसा काम करता है।

● जोड़ों के दर्द और शोथ में मधु सेवन करते रहने से पोटाशियम की पूर्ति होकर रोग शान्त हो जाता है।

● 1-2 चम्मच शहद प्रतिदिन 1-2 बार निरन्तर 1-2 सप्ताह तक सेवन करते रहने से ही आँखें बार-बार झपकाने का रोग ठीक हो जाता है।

● 1-2 चम्मच शहद दिन में 3-4 बार खाने से आधासीसी का दर्द ठीक हो जाता है।

● 2-3 चम्मच शहद दिन में 1-2 बार तथा रात्रि को सोते समय सेवन करने से अनिद्रा रोग दूर होकर गाढ़ा (गहरी) निद्रा आने लगती है।

● एक पके नीबू को 10 मिनट पानी में उबालकर तदुपरान्त इसका रस निकालकर इसमें दो चम्मच ग्लैसरीन और 4 औंस शहद मिलाकर रखलें। इसे 1-2 चम्मच की मात्रा में दिन में 3-4 बार चाटने से प्रत्येक प्रकार की खांसी नष्ट हो जाती है।

● शरीर में झटके लगना, दांतों और अस्थियों के रोग, निर्बलता, सुस्ती, थकावट, चिन्ता, वजन गिर जाना (कमजोरी होना), गले के रोग, साहस की कमी, कुरूपता, कैन्सर, जल्द बुढ़ापा आ जाना, क्षय रोग और मधुमेह इत्यादि में मधु सेवन अमृत की भांति लाभ प्रदान करता है।

● जिस प्रकार अंग्रेजी (ऐलोपैथी) चिकित्सा में विटामिन बी काम्पलैक्स और विटामिन सी की गोलियाँ पेयो या इन्जेक्शनों को महत्वपूर्ण माना जाता है, उसी प्रकार आयुर्वेद मनीषियों ने सदियों पूर्व से ही शहद को महत्व प्रदान किया है।

● मधु में सर्वाधिक मात्रा में ग्लूकोज है जो तुरन्त ही शक्ति प्रदान करता है।

● मोटापे में 1 गिलास ताजा पानी में आधा नीबू निचोड़कर चम्मच शहद मिलाकर सुबह-शाम पीने से लाभ होता है।

● 1 गिलास पानी में 6 रत्ती (पान में खाने वाला) चूना और तीन चम्मच शहद मिलाकर सुबह-साम पीने से मोटापा कम हो जाता है। चर्बी, रक्त व अन्य धातुऐं शुद्ध हो जाती हैं। तीन मास तक निरन्तर सेवन करें।

● पित्त तथा रक्त विकार में शहद को दूध में मिलाकर सेवन करें।

● आधासीसी के दर्द में सिर दर्द के विपरीत ओर की नासिका में शहद 1-2 बूँद डालने से आराम मिलता है।

● प्रतिश्याय में आधा नीबू का रस और 2-3 चम्मच शहद दिन में 2-3 बार सेवन करने से लाभ होता है अथवा 1 चम्मच अदरक को शहद के साथ सेवन करना भी लाभकारी है।

● मुखपाक में मधु को मुख में धारण करने पर मुखपाक में लाभ होता है अथवा मधु को शुद्ध सुहागे में मिलाकर मुख के अन्दर घावों पर लगाना अत्यन्त गुणकारी है। इससे घाव शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

● कृमिदन्त में दाँत में दर्द होने पर दर्द वाले स्थान में रुई के फाहे में मधु को रखने से दाँत का दर्द मिट जाता है।

● मधु को प्रतिदिन मंजन की भाँति मलने से दाँत साफ हो जाते हैं। मसूढ़े मजबूत हो जाते हैं। मुख के अन्दर के घाव में भी आराम हो जाता है।

● बच्चों के दाँत निकलने के समय मधु और शुद्ध फिटकरी को मिलाकर मसूढ़ों पर मलने से दाँत बगैर कष्ट के सरलता से निकल आते हैं ।

● दाँतों के हिलने पर शुद्ध फिटकरी, शहद और सिरका को सम मात्रा में मिलाकर सुबह-शाम दाँतों पर मलने से दाँतों का हिलना बन्द हो जाता है ।

● सोने के वर्क मधु के साथ सेवन करने से नेत्रज्योति बढ़ती है ।

● प्याज का रस और शहद सममात्रा में लेकर प्रतिदिन 2-3 बार आँखों में डालने से मोतिया बिन्दु में आराम पहुँचता है ।

● 2-2 बूँद शहद दुखती आँखों में डालने से आँखें ठीक हो जाती हैं ।

● कलमी शोरा 1 भाग एवं शुद्ध मधु 3 भाग लेकर गरम जल में घोलकर कान में टपकाने से कर्णनाद (कान का बजना) दूर हो जाता है ।

● कान को साफ करके शहद डालने से कर्ण स्राव (मवाद बहना) और दर्द ठीक हो जाता है ।

● तुलसी के पत्तों का स्वरस और मधु सममात्रा में मिलाकर पीने से खांसी और प्रतिश्याय में लाभ होता है ।

● काली मिर्च, सौठ, पीपल के चूर्ण को मधु के साथ सेवन करने से कफ जनित मल निकलकर श्वास कष्ट (श्वास रोग) में लाभ होता है ।

● उरःक्षत—मधु का आरम्भ से ही प्रयोग करने से यह उर में होने वाले क्षत को भरता है तथा रोग के उपसर्ग, ज्वर और कास में भी लाभ होता है ।

● गिलोय के क्वाथ में सममात्रा में शहद सेवन करने से वमन रुक जाती है।

● मोरपंख के चन्दे की भस्म बनाकर शहद के साथ चाटने से हिचकियाँ रुक जाती है ।

● भोजनोपरान्त 1-2 तोला शहद चाट लेने से भोजन शीघ्र पचता है तथा पाचन शक्ति में वृद्धि भी होती है ।

● पिसी हुई पीपल 6 माशा 2 तोला शहद के साथ सेवन करने से पेट दर्द दूर हो जाता है ।

● मधु को जल के साथ दिन में 2-3 बार पीने से तृष्णा शान्त हो जाती है।

● मधु को आधा या सममात्रा एरन्ड तैल में मिलाकर बच्चों को पिलाने से अजीर्ण रोग व मरोड़ दूर होती है ।

● गरम दूध के साथ 2 चम्मच शहद को पीने से मलावरोध रोग दूर हो जाता है ।

● लम्बे समय तक निरन्तर जल और मधु का सेवन करते रहना जलोदर रोग में उपयोगी है ।

● गाय के दूध में मधु मिलाकर सेवन करने से यकृत की निर्बलता मिटती है।

● सुहागे को मधु के साथ मिलाकर दिन में 2-3 बार चाट लेने से मूत्र की रुकावट दूर हो जाती है और अश्मरी गलकर बाहर निकल आती है ।

● शीतलचीनी के साथ मधु का शर्बत पीने से पेशाब की रुकावट दूर होकर मूत्र खुलकर आता है अथवा रुई की बत्ती को मधु में भिगोकर मूत्रमार्ग में रखने से मूत्र की रुकावट दूर हो जाती है ।

● शिलाजीत के साथ मधु सेवन करना मधुमेह रोग में परम लाभकारी है।

● कुष्ठ रोग में बकरी के दूध के साथ 1 से 2 तोला तक मधु सेवन करें। नमक का सेवन बन्द करके क्रमशः दूध और मधु की मात्रा बढ़ाते जाएं । इस प्रकार के उपचार से रोग नष्ट होकर रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जाता है ।

● दाद और झाइयों में शहद लगाना अतीव गुणकारी है ।

● गेहूँ के आटे के साथ शहद गूंथकर सूजन पर लगाने से सूजन दूर हो जाती है तथा फोड़े पर लगाने से फोड़ा पक जाता है ।

● सिरका और नमक के साथ शहद मिलाकर लगाने से शरीर के दाग-धब्बे दूर हो जाते हैं ।

● मधु को गरम पानी के साथ (प्रारम्भ में 1 तोला) सेवन करने से तदुपरान्त शहद की मात्रा बढ़ाते जाने से मोटापा दूर हो जाता है ।

● तिलों को पीसकर मधु में मिलाकर मरहम बनाकर घावों पर लगाने से घाव अति शीघ्र भर जाते हैं ।

● विष सेवन किये रोगी को मधु पिलाकर वमन द्वारा विष से मुक्त कर लिया जाता है । जब तक आमाशय में विष का प्रभाव अवशेष रहेगा तब तक निरन्तर वमन होकर विष निकलता रहेगा ।

● सफेद प्याज का रस और मधु मिलाकर सेवन करने से वीर्य की अधिक उत्पत्ति होती है और बाजीकरण शक्ति बढ़ती है अथवा भैंस के दूध में दो बड़े चम्मच मधु भली प्रकार मिलाकर पीने से शारीरिक बल और शक्ति में वृद्धि होती है।

● मधु स्त्री के गुप्त रोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी औषधि है । इसके सेवन से गर्भाशय मूत्र और आर्त्तव सम्बन्धी रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● भैंस के मक्खन में शहद मिलाकर मसूढ़ों पर मलने से बच्चों के दाँत सरलता से निकलते हैं ।

● बच्चों को मधु चटाने से उनका गला साफ रहता है और अजीर्ण और ऐंठन दूर हो जाती है ।

नोट—भाव प्रकाश निघन्टु में शहद आठ प्रकार का बतलाया गया है। जिसका यहाँ उल्लेख हम विस्तारमय से नहीं कर रहे हैं फिर भी शुद्ध शहद की पहचान की जानकारी हम अपने प्रबुद्ध पाठकों को देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं—1. मक्खी को पकड़कर जोर से शहद में डालें तो वह डूब जाती है किन्तु फिर निकलकर वह साफ उड़ जाती है शहद में लिपटती नहीं है। 2. कुत्ता शुद्ध शहद को कभी चाटता नहीं है। 3. शहद आंखों में आंजने पर चिपकता नहीं है। 4. शहद जलाने पर जलने लगता है। 5. शुद्ध शहद ठण्डक में जमता नहीं है।

यदि गुड़ की चासनी शुद्ध शहद में मिली होगी (शहद में मिलावट होना) तो ऊपर शुद्ध शहर रहता है और नीचे चासनी रहती है । प्राय: बेईमान शहद व्यवसायी शहद में गुड़ की चासनी (बखखर) की मिलावट कर देते हैं । नीम और जामुन के पेड़ पर लगे हुए छत्ते का शहद औषधि में गुणवत्ता में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

मधु की सेवन मात्रा—पुरुषों में (व्यस्कों में) 1 से 2 तोला तक तथा बच्चों को और निर्बल स्त्री-पुरुषों को दिन भर में 4-6 माशा तक का विधान है। शुद्ध शहद रूई में भिगोकर आग लगाये जाने पर सम्पूर्ण जल जाता है जबकि कृत्रिम (मिलावट) मधु होने पर उसका कोयला शेष रह जाता है।

मयूरपंख

● मयूरपंख जलाकर इसकी राख 1 से 2 रत्ती तक मधु से चाटने से वमन रुक जाती है । यह प्रयोग हत पीड़ा, दमा और रक्तचाप में भी लाभकारी है ।

● 1 मयूरपंख का चूर्ण गुड़ में लपेटकर प्रति रात्रि (कुल तीन बार दिन रात में) खाने से नारू कृमि सूख कर नष्ट हो जाता है ।

● एक मयूरपंख का चूर्ण और थोड़ा सा तम्बाकू चूर्ण चिलम में भरकर पीने से वृश्चिकदंश की पीड़ा शान्त हो जाती है।

● मयूरपंख के नीलिमा युक्त भाग (चांद) को काटकर गुड़ में दबाकर यह 1 मात्रा है, तीन दिन लगातार (दो मास के अन्दर की गर्भवती स्त्री को) धारोष्ण गोदुग्ध के साथ निगलवाने से (जिनके लड़कियां ही लड़कियां पैदा होती हों) उनको अवश्य ही शर्तिया पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है ।

गोमूत्र

● गाय की बछिया का ताजा मूत्र ढाई से 4 तोला तक की मात्रा में नित्य खाली पेट पीने से जलोदर, उदरशूल, कामला, पान्डू, यकृत वृद्धि प्लीहा वृद्धि,

अन्डवृद्धि, खाज-खुजली, कब्जियत, मन्दाग्नि, अम्लपित्त इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—बच्चों को 1 से 2 तोला तक ही पिलायें।

मसूर की दाल—डेढ़ तोला कच्ची मसूर की दाल को 10 तोला ताजा तक्र (मट्ठा) में पीसकर सेवन करने से पतले दस्त गाढ़े होकर अतिसार मिट जाता है।

महुआ—महुआ को घी में तलकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 1 तोला की मात्रा में लेकर 10 तोला मट्ठा के साथ नित्य प्रति सेवन से बल बढ़ता है और बबासीर नष्ट हो जाती है ।

5 तोला महुआ नित्य दूध में उबालकर सेवन करने से और ऊपर से यही दूध पीने से बल बढ़ता है और सर्वांग वात मिट जाता है ।

मदिरा—हाथ से पश्रिुत की हुई महुए की तीव्र मदिरा (जो आग दिखलाते ही जल उठे) का फोहा वृश्चिकदंश पर रखते ही पीड़ा और दाह शान्त हो जाती है और फिर विष नहीं चढ़ता है ।

सर्दी, खाँसी, हृदयावसाद में 1 औंस मदिरापान से (बच्चों को आधी से 1 चाय की चम्मच भर ही दें) आराम मिलता है। यह प्रयोग हैजा में भी लाभकारी है। अनुपान जल है।

नवसादर

● नवसादर 4 तोला, काला नमक और सोना गेरू आधा-आधा तोला मिलाकर बारीक चूर्ण करके सुरक्षित रखलें। इसे 4 से 8 रत्ती तक की मात्रा में सेवन करने से यकृत, प्लीहा, उंदर रोग, शोंथ और ज्वर को दूर होते है ।

● नौसादर 1 तोला, सुहागा, हरड़, सज्जीखार, चित्रक, छोटी पीपल, कलमी शोरा, राई, सौंठ, एलुआ प्रत्येक 2-2 तोला और गुड़ 10 तोला लेकर सभी को कूटपीस कर गुड़ मिलाकर 1-1 माशा की गोलियां बनाकर रखलें। ये 3 से 6 गोलियाँ तक शरफोंका के 5 तोला अर्क से सुबह शाम सेवन करने से यकृत और प्लीहा के पुराने रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● डेढ़ माशा नौसादर को 1 तोला घृतकुमारी-रस के साथ पीने से यकृत प्लीहा का पीड़ा शान्त हो जाती है ।

● नौसादर 5 तोला, कालानमक 2 तोला, सफेद जीरा, (भुना हुआ) 1 तोला, हींग आधा तोला लेकर चूर्ण बनाकर रखलें। यह चूर्ण उदर शूल, अफारा और अपची में 3-3 माशा जल से सेवन करने से तत्काल लाभ दिखलाता है ।

● नौसादर और शुद्ध टंकण 4-4 रत्ती, सितोपलादि चूर्ण 2 माशा तुलसी पत्र स्वरस या अदरक के रस को सुखोष्ण करके 1 तोला लेकर मधु मिलाकर प्रत्येक 6-6 घंटे पर चाटने से सूखी खाँसी, श्वास का दौरा, जकड़े हुए कफ को निकालकर अत्यन्त लाभ पहुँचाता है । रोगी को सुखकारक निद्रा भी आती है ।

● नौसादर 4 रत्ती, प्रवालपिष्टी 2 रत्ती, स्वर्ण माक्षिक भस्म 2 रत्ती मक्खन मिश्री या पेठा अथवा शहद के साथ सुबह-शाम सेवन करने से हृदय सम्बन्धी जलन, दर्द, धड़कन तथा कमजोरी नष्ट हो जाती है ।

● 8 रत्ती नौसादर को मैनफल (माजूफल) के काढ़े के साथ सेवन करने से विष खाये व्यक्ति का विष वमन द्वारा निकल जाता है तथा विष के कारण बेहोश रोगी होश में आ जाता है ।

● 8 रत्ती नौसादर को त्रिफला क्वाथ के साथ सेवन करने से विरेचन होता है।

● नौसादर 3 रत्ती, शोथारि लौह 2 रत्ती, पुनर्नवा मान्डूर 2 रत्ती को एक साथ मिलाकर पुनर्नवा के साथ प्रयोग करने से फुफ्फुस संस्थानगत जकड़न, दर्द और शोथ (प्रदाह) तथा हृदयगंत अशान्ति में लाभ होता है ।

● नौसादर, कायफल का चूर्ण और पुराना गुड़ 1-1 माशा में पिपरमैन्ट 4 रत्ती मिलाकर रखलें । इसकी नस्य देने से अपतन्त्रक, मूर्च्छा आदि का रोगी शीघ्र ही सचेत होकर उठ बैठता है ।

● नौसादर और चूना समभाग पीसकर शीशी में सुरक्षित रखलें । सिरदर्द व आधाशीशी में इसे सूंघना लाभप्रद है ।

● नौसादर, चूना और रेह (समभाग) लेकर जल मिलाकर घोल करके इसमें से 1 सींक से लेकर पके हुए फोड़े पर उतनी जगह पर लेप लगादें, जितनी फोड़नी हो । मात्र 5 मिनट में यह फोड़े को फोड़ देती है ।

गाय का घृत

● घी, स्निग्ध, मधुर, पित्त तथा वात शूल, अफारा, विसर्प, रक्त विकार और आमवात नाशक है रसायन आयु तेज लावन्य, बुद्धिवर्धक और बुढ़ापा नाशक है।

● नेत्राभिष्यन्द में गाय का घी आँखों में डालना लाभकारी है ।

● व्रण में गाय का घी लगाते रहने से व्रण भरकर सूख जाते हैं । 5 से 10 बूंद तक गाय का घी नाक में डालने से नाक के समस्त प्रकार के रोग ठीक हो जाते है ।

● गाय का घी गरम करके सिर तथा कनपटी पर मालिश करने से सिरदर्द में लाभ होता है ।

● गाय का घी बासी पानी से 6 बार धोकर सिर पर मालिश करने से ज्वर (ताप) कम हो जाता है । यह योग मानसिक तनाव में भी उपयोगी है ।

● गाय के घी में मुर्गी के अण्डे की सफेदी मिलाकर सरशाम में मस्तक पर लगाना लाभप्रद है ।

● गाय का घी काली मिर्च के साथ खाने से स्वरभंग ठीक हो जाता है ।

● गाय का घी, तुलसी के पत्ते, काली मिर्च की चीनी मिलाकर चाय पीने से प्रतिश्याय में लाभ होता है ।

● गाय के घी में सैंधा नमक मिलाकर तथा गरम छाती पर मलने से जमा हुआ कफ पतला होकर निकल जाता है तथा खांसी (सूखी) नष्ट हो जाती है।

नोट—गाय का ताजा घी सेवन करना उत्तम है तथा पुराना घी बाहरी उपचार में व्यवहार किया जाता है । बाह्य उपचारार्थ गाय का घी जितना अधिक पुराना हो उतना ही उत्तम होता है ।

तुलसी

● 6 ग्राम तुलसी के बीज और तीन ग्राम बबूल के गोंद को पान पर कत्था चूना लगाकर संभोग काल में खायें । इस प्रयोग से हानिरहित स्तम्भन होता है।

● तुलसी के बीज आधा तोला पानी के साथ पीसकर मासिकधर्म के समय (तीन दिन) सेवन करने से बांझ स्त्री को भी गर्भ ठहर जाता है ।

● बिच्छू दंश में तुलसी के पत्तों का रस लगाना अत्यन्त ही लाभप्रद है ।

● किसी भी प्रकार का विष सेवन किये हुए रोगी को तुलसी का रस पेटभर कर पिला देने से मुरणोन्मुख व्यक्ति के भी प्राण बच जाते हैं ।

● तुलसी मूल की मिट्टी और पत्ते एकत्र मिलाकर बारीक पीसकर श्वेत कुष्ठ पर लगाना लाभकारी है ।

● पीनस में तुलसी रस या सूखे पत्तों को सुंघनी बनाकर सूंघना लाभप्रद है।

● तुलसी के सूखे पत्ते 1 तोला, जटामांसी 1 माशा, अकरकरा, सैंधा नमक और जली हुई सुपारी 6-6 माशा लें । सभी को बारीक पीसकर कपड़छन कर मंजन करने से दाँत निरोग रहते हैं ।

● तुलसी के जड़ के चूर्ण को रात्रि में पानी डालकर रखें । प्रातःकाल इसे छानकर 7 दिन पीने से प्रमेह रोग नष्ट हो जाता है ।

●तुलसी के पत्तों के रस में थोड़ा सा सैंधा नमक मिलाकर नाक में डालने से मूर्च्छा तुरन्त ही दूर हो जाती है ।

●तुलसी के पत्तों का रस और पुष्कर मूल का चूर्ण आधा-आधा तोला मिलाकर गरम गरम पसली पर लेप करने से सर्दी से उत्पन्न पसली का दर्द ठीक हो जाता है।

●तुलसी पत्रों का रस गरम करके कान में डालने से कर्णपीड़ा मिटती है।

●तुलसी के पत्तों का रस और अदरक का रस (समभाग) गरम करके बच्चों को पिलाने से उनकी प्रत्येक प्रकार की उदर पीड़ा अवश्य दूर हो जाती है ।

●तुलसी का स्वरस, गोघृत, काली मिर्च का चूर्ण पिलाना मरने के समय का कन्ठावरोध और वात सम्बन्धी 84 रोगों हटा देता है ।

●तुलसी का 1 तोला रस में 1 चुटकी काली मिर्च का चूर्ण डालकर शहद के साथ सेवन करना विषम ज्वर में उपयोगी है ।

●आगन्तुक ज्वर में तुलसी के पत्ते, सौंठ और मिश्री का काढ़ा बनाकर पीना लाभप्रद है ।

●करन्ज की मींग 1 माशा, पलाश पापड़ा 1 माशा, तुलसी के पत्ते डेढ़ माशा, काली मिर्च 8 या 9 नग पानी में पीसकर छानकर 3-3 घंटे के अन्तर से सेवन करने से मलेरिया ज्वर, शीत ज्वर, एकतरा और तिजारी मिटते हैं ।

●तुलसी पत्र का स्वरस 1 सेर और तिल का तैल 250 ग्राम दोनों को आग पर पकाकर छानकर सुरक्षित रखलें । इस तैल की बदन पर मालिश करने से दर्द दूर हो जाता है । सिर में मालिश करने से जूं (लीखें) और खुजली भी दूर हो जाती है तथा गले सड़े घाव और नासूर में भी यह तैल लगाना उपयोगी है ।

●तुलसी की पत्ती 3 माशा, दालचीनी 2 माशा, सौंठ डेढ़ माशा, केशर 1 ग्राम, जावित्री 2 माशा, लौंग डेढ़ माशा (कुल लगभग 1 तोला) की पोटली बनाकर आधा सेर पानी में पकायें (1 पाव शेष रहने पर) 1 पाव दूध मिलाकर जाड़ों की ऋतु में पीने से (अमृत समान कार्य करता है । इसके सेवन से सर्दी, खांसी, जुकाम, बदन का दर्द छूमन्तर हो जाते हैं ।

नोट–यदि प्रतिदिन चाय पीने की आदत हो तो मात्र तुलसी के पत्तों की ही चाय पियें । यह भी अत्यन्त ही लाभप्रद है ।

●तुलसीपत्र और काली मिर्च 1-1 तोला, करेला के पत्ते दो तोला, कुटकी 4 तोला लें । मिर्च और कुटकी को पीसकर खरल में डालें, तदुपरान्त तुलसी और करेला के ताजे पत्तों को डालकर खूब घोटें । इसके बाद मटर के आकार की गोलियाँ

बनालें । शीत ज्वर में 2-2 गोली ज्वर चढ़ने से पूर्व सुबह और शाम को ठण्डे पानी से सेवन करें । इस प्रयोग से मलेरिया ज्वर दूर हो जाता है तथा दस्त साफ होकर रोगी स्वस्थ हो जाता है ।

दुग्ध (दूध)

दुग्ध सर्वविदित बल्य, रसायन और पूर्ण भोजन है । दुग्ध में गर्मी और सुजाक को विष को नष्ट करने की पूर्ण क्षमता विद्यमान है । क्षीण रोगी को यह अमृत है। इसके लगातार सेवन से रोग का विष जल्द ही नष्ट हो जाता है तथा शीघ्र ही वजन बढ़ने लगता है । यह अपने स्वेदल और मूत्रल गुणों के कारण विष को नष्ट कर देता है । असाध्य रोग से ग्रसित रोगी भी इसके सेवन से पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ कर लेता है ।

●दुग्ध के सेवन से जननेन्द्रियों का पूर्णरूपेण पोषण होता है । दूध नाड़ियों का सर्वश्रेष्ठ पोषक है । नाड़ियों और जननेन्द्रियों का निकट सम्बन्ध होने के कारण जननेन्द्रियों के रोग पूर्णरूपेण नष्ट हो जाते हैं ।

●जलोदर रोग में कम से कम पानी पीना चाहिए, किन्तु इस रोग में दुग्ध सेवन करना बहुत लाभप्रद है । दुग्धाहार के शुरू के दिनों में रोगी को दुग्ध सेवन की मात्रा से दुगुना पेशाब आता है, फलस्वरूप जलोदर रोग नष्ट हो जाता है ।

नोट–जलोदर रोगी को प्रारम्भ में मक्खन विहीन दूध देना अधिक पुष्टिकारक है ।

गठिया—हालांकि यह रोग विभिन्न प्रकार का होता है किन्तु किसी भी प्रकार का गठिया ही उसमें दूध सेवन से शर्तिया लाभ होता है, दूध में रक्त संचालन की क्षमता तीव्र होने के कारण पहले तो गठिया रोग के लक्षण बढ़ जाते हैं किन्तु बाद में रक्त शुद्ध होते ही समस्त लक्षण एकाएक लुप्त हो जाते हैं । लक्षण बढ़ने पर भी दुग्ध सेवन करना कदापि बन्द न करें । स्वयं ही 12 से 24 घंटे के अन्दर दर्द दूर हो जाता है और 4-5 दिन बाद पुनः शुरू हो जाता है, किन्तु लक्षण कम रहते हैं, इस प्रकार 3-4 बार में क्रमशः लक्षण एकदम लुप्त हो जाते हैं फिर दुबारा कभी नहीं होते हैं अर्थात् रोग जड़ से नष्ट हो जाता है ।

●श्वास-कास रोग में इस रोग का सबसे प्रमुख लक्षण जुकाम होना है । जुकाम जब पुराना हो जाता है तब उसका प्रभाव नाक, गला, फेफड़े, आमाशय और आंतों की श्लैष्मिक झिल्लियों पर पड़ता है (तदुपरान्त सर्वाधिक प्रभावित अंगों के अनुसार रोग का नामांकन होता है ।) दुग्ध सेवन करने से शरीर में नया खून

बनने लगता है फलस्वरूप शरीर की इन्द्रियां स्वयं सबल और सशक्त होने लग जाती हैं, इसी के फलस्वरूप तमक श्वास, क्षीण श्वास आदि रोग 1 डेढ़ माह के दुग्ध सेवन से ठीक हो जाते हैं ।

● दुबलापन में लगातार 2-3 मास सेवन करें । इससे 15 से 20 किलोग्राम तक वजन बढ़ जाता है । दुग्ध एलौपैथिक की इस हेतु पेटेन्ट दवा (इन्जेक्शन) डेकाडूराबोलिन' का भी बाप है ।

● वर्तमान समय में दिमागी असन्तुलन (माइन्डिडर्टेशन) के कारण प्राय: लोगों को हाई अथवा लो ब्लड प्रेशर रोग घेरे रहता है और इससे जल्द पीछा नहीं छूटता है बल्कि लकवा होने का भय और बना रहता है तथा इस रोग से ग्रसित रोगी को हृदघात की भी आशंका बनी रहती है । अधिक (हाई) रक्तदाब में दुग्धोपचार से शत-प्रतिशत लाभ हो जाता है क्योंकि दूध रक्त को शुद्ध व साफ करके धमनियों और शिराओं को शुद्ध कर लचीला बना देता है इस क्रिया के फलस्वरूप रक्तदाब घटने लग जाता है और इसी प्रकार न्यून (लो) रक्तदाब में दुग्ध सेवन करने से रक्त की मात्रा बढ़ जाती है आवश्यक तत्वों की पूर्ति हो जाती है । इसके फलस्वरूप रक्तदाब बढ़कर बराबर हो जाता है ।

● नाड़ी-दौर्बल्य में अत्यधिक चिन्ता, तनाव, साहसहीनता, भय, दिमागी कमजोरी, शारीरिक कमजोरी, मर्दाना कमजोरी होकर नाड़ी संस्थान दुर्बल हो जाता है । ऐसी स्थिति में दुग्ध सेवन करना अमृत समान गुणकारी साबित होता है । दुग्धपोचार से कब्ज मिटकर स्थायी रूप से नाड़ी-दौर्बल्य दूर हो जाता है ।

● इसी प्रकार दुग्ध सेवन करते रहने से (लगातार नियमित रूप से दुग्धोपचार करते रहने से) सुस्ती,, कमजोरी, आलस्य, सिर का भारीपन, घबराहट, कार्य क्षमता अथवा नीरसता, भोजनोपरान्त की सुस्ती, जीभ सफेद बनी रहना, मूत्र, पसीना व मल इत्यादि में बदबू आना, पुरानी कब्ज फोड़े-फुन्सियों, कील-मुंहासे, पक्षाघात, श्वेत प्रदर, नपुंसकता, यकृत और मूत्राशय की पथरी, संग्रहणी, पुराना अतिसार मधुमेह तथा अफीम, भांग, गांजा, शराब इत्यादि मादक पदार्थ अथवा पेयों का चिरकाल दुग्ध सेवन करने से स्थायी रूप से नष्ट हो जाते हैं ।

गोबर

● भैंस के गोबर का रस दो तोला भैंस के 250 ग्राम दूध में मिलाकर प्रसव विलम्बित रोगिणी को पिलाने से (कष्ट प्रसव एवं मूढ़ गर्भ में) यह योग ब्रह्मास्त्र की भांति अचूक कार्य करता है ।

● गाय के गोबर के रस को गरम करके इसमें रुई या कोई साफ मुलायम कपड़ा भिगो करके बच्चों की कांच (गुदा से कांच निकलना) सेंकने से यह रोग मात्र दो सप्ताह के प्रयोग से जड़मूल से नष्ट हो जाता है ।

● किसी भी प्रकार कटे, फटे या छिले शारीरिक व्रणों या खुरसट पर गोबर लगाने से तुरन्त रक्तस्राव बन्द होकर शीघ्र ही व्रणरोपण होता है ।

● गोबर को जल में पकाकर मस्तक पर लेप करने से शिर:शूल शान्त हो जाता है ।

● अग्निदग्ध पर ताजा गोबर लगाने से तुरन्त ही जलन शान्त हो जाती है।

● भैंस का गोबर, शरीर पर मलकर स्नान करने से खाज या खुजली की बिल्कुल ठीक हो जाती है ।

● आन्त्रिक ज्वर में भैंस का गोबर पानी में घोलकर बगल से पांव तक मलकर धोने से ज्वर शान्त हो जाता है ।

● सर्पदंशित रोगी को गोबर का ताजा रस पिला देने से हृदय की कमजोरी दूर होकर हृदय शक्तिशाली हो जाता है, फलस्वरूप रोगी की घबराहट दूर हो जाती है ।

● गाय का ताजा गोबर सम्पूर्ण शरीर पर मलकर तदुपरान्त आधा घंटे बाद स्नान करके और सारे शरीर पर सरसों के तैल की मालिश करके पुन: स्नान करके खरेरे पलंग (बिना बिछावन या बिस्तर के बानों से बुनी हुइ चारपाई) पर सो जाने से मात्र दो घंटे में ही शीत-पित्त ठीक हो जाती है ।

● बच्चे को सूखा मसान हो जाने पर उसके मेरूदण्ड पर ताजा गोबर मल कर ध्यानपूर्वक देखें—उसकी मेरुदण्ड पीठ में से काले मुँह के धागा के समान कृमि निकलते दिखलायी देंगे, इन्हीं को चुनकर तथा ऊपर से ऋतुनुसार ठण्डा या गरम धार बाँधकर पानी गिराकर फेंक दें । इस क्रिया को प्रतिदिन अथवा प्रत्येक आठवें दिन करें । जब कृमि निकलना बन्द हो जायें तो निश्चित समझ लें कि बालक अब रोग रहित होकर स्वस्थ हो गया है ।

नवनीत (मक्खन)

नवनीत मधुर, कषाय, अम्ल रस युक्त, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, वात पित्त शामक तथा लघु स्निग्ध गुणयुक्त स्निग्ध (कोमल) है । गाय के दूध को जमाकर दही से प्राप्त हुआ नवनीत संग्राही, वात पित्त शामक अग्नि प्रदीप्त कारक, क्षय

कास, अर्दित इत्यादि रोग नाशक तथा बालकों और वृद्धों को विशेष हितकारक तथा शिशुओं के लिए अमृततुल्य है। नवनीत में 83 प्रतिशत स्नेह, (चिकनाई) 13 प्रतिशत पानी, 1 प्रतिशत दुग्ध शर्करा और 2 प्रतिशत कैलोरी विद्यमान रहती है। इसमें विटामिन ए सर्वाधिक मात्रा में तथा विटामिन डी और ई भी होता है।

●केशर, शर्करा, तिलों का नवनीत के साथ सेवन करने से रक्तार्श नष्ट होता है। नवनीत 5 भाग में 1 भाग सैंधा नमक मिलाकर कुछ दिनों तक निरन्तर अर्श पर लगाने से अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है।

●रसोन कल्क को नवनीत में मिश्रण कर सेवन करने से अर्दित रोग नष्ट हो जाता है।

●अनिद्रा रोग में थोड़ा सा केशर नवनीत में मिलाकर सिर में मालिश करना उपयोगी है।

●रक्तातिसार में नवनीत में मिश्री और मधु मिलाकर सेवन करना अतीव उपयोगी है।

●शुष्क कास (श्वास युक्त) में बबूल का गोंद 3-4 ग्राम (चूर्ण) नवनीत में मिश्रित कर चाटना अत्यन्त ही उपयोगी है।

●शीतला के ज्वर में नवनीत में सिता 5 ग्राम और जीरक चूर्ण मिलाकर सेवन करना अत्यन्त लाभप्रद है।

●कर्णशूल और दाह में नवनीत को थोड़ा गरम करके कान में डालना उपयोगी है।

●आँखों पर नवनीत चुपड़ने से आँखों की जलन मिट जाती है।

●मधु यष्टि, दूध, तिल को नवनीत के साथ लेप करने से भल्लातक से उत्पन्न शोथ शान्त हो जाता है।

●शंखभस्म या वराटिका भस्म को नवनीत में मिलाकर आँखों में काजल की भाँति लगाने से नेत्र का फूला नष्ट हो जाता है।

●नवनीत, गुड़, मधु, बेर की गुठली की मींगी को मिलाकर मुख पर रगड़ने से मुख पर पड़े हुए धब्बे नष्ट होकर मुख सुन्दर हो जाता है।

●स्वर्णभस्म 60 मि.ग्रा., अभ्रक भस्म 120 मि.ग्रा., कपर्द भस्म 240 मि.ग्रा. सितोपलादि चूर्ण 1 ग्राम, नवनीत 12 ग्राम एवं मधु 5 ग्राम मिलाकर अजादुग्ध से सेवन करने से क्षय रोग नष्ट हो जाता है।

●यक्ष्मा रोग में पन्चमुखी रुद्राक्ष कण्ठ और हस्त में धारण करें तथा तज

1 भाग, एला 2 भाग, पिप्पल 4 भाग, वन्श लोचन 8 भाग तथा इन समस्त औषधियों के वजन के बराबर मैथी का बारीक चूर्ण मधु और नवनीत के साथ निरन्तर तीन माह सेवन करने से रोग जड़मूल से नष्ट हो जाता है।

●पीले रंग की यशद भस्म (तीन रत्ती) नवनीत में मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से पूयंमेह रोग शान्त हो जाता है।

●संजीवनी वटी (2 गोली) नवनीत में मिलाकर सेवन करने से बहुमूत्र रोग नष्ट हो जाता है।

●सिन्दूर (उत्तम क्वालिटी का) 12 ग्राम, देशी कपूर 24 ग्राम, सफेद कत्था 48 ग्राम का कपड़छन चूर्ण कर नवनीत में मिलाकर लगाने से मकड़ी का विष व्रण, दाह, शोथ इत्यादि नष्ट हो जाता है।

●पान में खाया जाने वाला चूना नवनीत में मिलाकर विपादिका से उत्पन्न दरार में भरने से विपादिका मिट जाती है।

●शुद्धगुन्जा चूर्ण को नवनीत में मिलाकर कुष्ठ रोग में बाह्य प्रयोग करना लाभकारी है।

●नवनीत और मिश्री मिलाकर चाटने से उष्ण वात रोग नष्ट हो जाता है।

सिता (मिश्री)

●मिश्री शीतवीर्य, विपाक, मधुर, सारक, दाह, तृषाशामक, वमनरोधक, मूर्च्छानाशक, रुधिर विकार शामक, कृमि रोग नाशक, ज्वर नाशक, मदात्यय का हरण करने वाली, हृदय प्रसादक एवं तृप्तिकारक है। इसे क्षीण वीर्य, विषमाग्नि एवं कमजोर शरीर, दुर्बल क्षत वाले, वात रक्त और रक्तपित्त वाले रोगियों को तो नियमित सेवन करना चाहिए।

●मूर्च्छा ग्रस्त रोगी को मिश्री पानी में घोलकर मुख में थोड़ा-थोड़ा टपकाने से मूर्च्छा। मोह का नाश हो जाता है। तृषा (प्यास), बार-बार लगने पर ठण्डे पानी में मिश्री घोलकर बार-बार पिलाने से तृषा शान्त हो जाती है।

●केवल शीतल जल में मिश्री घोलकर पिलाने से ज्वर, दाह शान्त हो जाता है। इसमें नीबू रस मिलाया जा सकता है।

●श्वास रोग में कण्ठ में खुश्की महसूस होने पर मिश्री चूसना अत्यधिक लाभकारी है।

●वमन में शीतल (हिमयुक्त) जल में मिश्री मिलाकर पिलाना अतीव गुणकारी है। आवश्यकतानुसार इसमें नीबू भी मिलाया जा सकता है।

●मदात्यय में मिश्री के शर्बत का सेवन अतीव गुणकारी है।

●अधिक श्रम से क्लान्त व्यक्ति को नीबू रस युक्त सिताजल पीने से नव स्फूर्ति मिलती है।

●हृदय रोगी को दौरे की अवस्था में मिश्री चूसना लाभकारी है।

●नेत्राभिषयन्द (आँख दुखने पर) मिश्री चूर्ण घृत में मिलाकर प्रात:काल चाटना उपयोगी है। यह योग चाक्षुस्य भी है।

चूना

●इसके बिना पान, तम्बाकू का सेवन व्यर्थ है।

●चूने को चने के आकार की गोली बनाकर गुड़ में लपेटकर पेट दर्द (तीव्र उदर शूल) के रोगी को निगलवा देने से शीघ्र लाभ हो जाता है।

●चोट, मोच, सूजन पर हल्दी के साथ चूना (पिसा व पानी मिला हुआ) लेप करना अत्यधिक लाभप्रद है। इस लेप को कम से कम 24 घंटे तक लगाये रखना चाहिए। ग्रामीणांचलों का यह परीक्षित योग है।

●ताजे लगे घाव व रक्त स्राव में तम्बाकू चूना में मिलाकर घाव में भरकर जोर से (कसकर) बांधने से रक्त स्राव बन्द हो जाता है। घाव पकता नहीं है शीघ्र भर जाता है।

●सिरदर्द में रूपया के आकार में चूना दोनों कनपटियों पर लगावें।

माँ का दुग्ध

●माता का दुग्ध आँख में आघातजन्य व्रण सहित अथवा व्रण रहित पीड़ा में स्तन्य दुग्ध 2-4 बूँद डालने से तुरन्त लाभ व शान्ति मिलती है।

●नाक से रक्त स्राव होने की स्थिति में बादाम की मींगी को स्तन्य दुग्ध में घिसकर रुई के फोहे अथवा ऐसे ही लगाने से तुरन्त रक्त स्तम्भन होता है।

नोट—यह प्रयोग किसी भी कारण से होने वाले नासारक्त स्राव में लाभकारी है।

सुहागा

●सुहागा (टंकण) को तवे पर भूनकर फूला बनाकर बारीक पीस कर किसी साफ-स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रखलें। बच्चों की खांसी अतिसार इत्यादि में 1 से 2 रत्ती तक मधु से प्रयोग करायें। लाभकारी है।

●उक्त विधि से टंकण 1 ग्राम की मात्रा में प्रसव वेदना प्रारम्भ होने पर मधु

से खिलायें। डेढ़ या दो घंटे के अन्दर सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है। केवल 1-2 प्रतिशत प्रसविणी को ही दो घंटे के बाद दूसरी खुराक की आवश्यकता पड़ती है।

●आन्त्रिक ज्वर अथवा अन्य किसी रोग के ठीक हो जाने के उपरान्त कमजोरी के कारण सिर के बाल झड़ने लगने पर भुना पिसा सुहागा 1 चम्मच (आवश्यकतानुसार) नीबू के रस में घोलकर रात्रि को सोते समय (निरन्तर तीन दिन) लगाने से बाल झड़नारुरूक जाता है।

●मुखपाक में 1-2 रत्ती (भुना व पिसा) सुहागा मधु में मिलाकर छालों पर लगाना अतीव गुणकारी है।

मुलहठी

●मुलहठी का चूर्ण बनाकर शीशी में सुरक्षित रखलेना चाहिए। बच्चों के ज्वर कास, अतिसार, वमन आदि में यह परम उपयोगी है। स्वाद में मीठी होने के कारण बाल-गोपाल बड़े चाव से माता के दूध या मधु के अनुपान से खा लेते हैं। यदि खाँसी अधिक बढ़ी हुई हो तो 1-2 रत्ती की मात्रा में भुना सुहागा भी मिला देने से योग और भी अधिक लाभकारी हो जाता है।

नीम

●सुप्रसिद्ध सर्वविदित सर्वत्र पाया जाने वाला त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को दूर करने की अपार क्षमता से सुशोभित वृक्ष है। पुराणों में इसे अमृत तुल्य माना गया है। नीम वृक्ष का पान्चांग (फल, फूल, पत्ते, जड़ और छाल) का रेशा-रेशा अर्थात् जड़ से शिखर तक वृक्ष औषधीय गुणों से भरपूर है। यही इसके विशेष महत्त्व की बात है, ऐसा बहुत कम वृक्षों के साथ महत्व जुड़ा हुआ है। इसकी कोपलें नेत्र रोग, गर्मी, कोढ़ और कफ नाशक होते हैं। इसके पत्ते कृमि, विष, अरूचि और अजीर्ण नाशक होते हैं। इसके सूखे हुए पत्ते मनुष्य और कपड़ों (दोनों) की रक्षा करते हैं तथा अनाज में रखने से उसे भी घुनने (कृमियों) से बचाते हैं। इस वृक्ष के फल (निबौली) बबासीर, प्रमेह, कोढ़, कृमि और गुल्म को शान्त करते हैं। इसके पके फल (निबौली) रक्त, पित्त, कफ, नेत्र रोग, दमा नाशक है। इस वृक्ष का फूल (निबौली का फूल) कफ और कृमि नाशक है। इस वृक्ष का डन्ठल खाँसी, बबासीर, प्रमेह और कृमिजन्य विकार नाशक गुणों से भरपूर है। निबौली

की गिरी कोढ़ में विशेष रूप से आरोग्यता प्रदान करने वाली है। नीम (निबौली) का तैल कृमि, कोढ़ और त्वचा रोग नाशक और दांत, मस्तक, स्नायु और छाती के दर्द को मिटाने के गुणों से भरपूर है।

● नीम मूत्रल है यौनांगों को विकार मुक्त करके पुष्ट और सबल बनाता है। यह चेतना सर्जक है और दिमागी ताकत का असीम भंडार है। यह स्त्रियों के मासिक धर्म को नियमित भी करता है।

● नीम की निबौली खाने से अजीर्ण नष्ट हो जाता है। इसके सेवन से मल निष्कासित होकर रक्त स्वच्छ हो जाता है। रक्त संचार तीव्रता से होने के कारण जठराग्नि तीव्र हो जाती है। परिणामस्वरूप क्षुधा बढ़ जाती है।

● शरीर अथवा शरीर का कोई अंग विशेष यदि सुन्न हो गया हो तो नियमित 3-4 सप्ताह के नीम तैल की मालिश से सुन्न नसों में पूर्ण रूपेण चेतना आकर सुन्नपन नष्ट हो जाता है। नीम के बीजों का तैल निकलवाकर मालिश करें।

● नीम पत्तियों का रस 1-1 चम्मच प्रतिदिन सुबह-शाम पीने से अफीम खाने की लत में कमी आकर धीरे-धीरे छूट जाती है। यदि अफीम खाने की लत अधिक सताये तो भांग का अल्प मात्रा में सेवन कर लिया करें। अफीम के मुकाबले भांग कम हानिकारक है तथा इसका सेवन कभी भी छोड़ा जा सकता है।

● अरुचि खाने-पीने की हो अथवा काम धन्धे की, नीम के सूखे पत्तों का चूर्ण बनाकर 1-1 चुटकी प्रत्येक 2-2 घंटे पर दिन में 3-4 बार सेवन करने से नष्ट हो जाती है। इस हेतु नीम की कोपलें भूनकर भी खाई जा सकती है।

● अन्डवृद्धि (हार्निया) में नीम, हुर हुर की पत्तियाँ और अमरबेल सभी सममात्रा में लेकर गोमूत्र में घोट-पीसकर अन्डकोषों पर लेप करते रहना अत्यन्त उपयोगी है।

● आँखे दुखने पर—नीम की पत्तियों का रस 1-1 बूँद आँखों में डालें। नोट —बच्चों की दुखती आंखों में न डालकर कानों में डालें तथा यदि 1 आँख दुख रही हो तो विपरीत कान (बांयी आँख पर दुखने पर दांये कान में डालें।

● नीम की पत्तियों का रस और पठानी लोध (10-10 ग्राम पीसकर आँखों की पलकों पर लेप करने से आँखों की जलन और लालिमा नष्ट हो जाती है।

● आँखों में सूजन होने पर 10 ग्राम नीम की पत्तियाँ उबालकर 5 ग्राम फिटकरी में घोलकर दिन में तीन बार करना लाभप्रद है।

● आग से जल जाने पर नीम तैल लगाना उपयोगी है। नीम की 50 ग्राम क्रोंपलें तोड़कर 250 ग्राम खौलते तैल में इतना पकायें कि नीम की कोपलें जल

जायें (किन्तु जलकर राख न हों) तदुपरान्त 1-2 बार छानकर सुरक्षित रखलें और लगायें।

नीम का मरहम—250 ग्राम नीम के तैल में 125 ग्राम वैक्स (मोम), नीम की हरी पत्तियों का रस 1 किलो, नीम की जड़ की छाल का चूरा 50 ग्राम और नीम की पत्तियों की राख 25 ग्राम डालें। तैल और नीम का रस हल्की आग पर इतना पकायें कि तैल आधा या इससे भी कम रह जाए। फिर इसी में मोम डाल दें। जब तैल और मोम एकजान हो जाए तो छाल का चूरा और पत्तियों की राख भी मिला दें। यह प्रत्येक प्रकार का घाव भरने हेतु रामबाण मरहम तैयार हो गया।

● नीम की हरी पत्तियां, भीमसैनी कपूर, जस्ता भस्म, लाल चन्दन का बुरादा 10-10 ग्राम और शुद्ध रांगा 50 ग्राम को किसी लोहे के पात्र (कड़ाही) में खूब घोटकर सुरमा बनाकर आंखों में लगाने से पड़वाल जड़मूल से नष्ट हो जाता है।

● आतशक में नीम की पत्तियों का रस 10 ग्राम अथवा नीम का तैल 5 ग्राम नित्य पियें और यौनांगों पर नीम तैल की मालिश करें। अति उपयोगी योग है।

● नीम की पत्तियाँ, काली मिर्च और चावल 25-25 ग्राम घोट पीसकर नसवार बनालें। सूरज निकलने से पूर्व ही 1-1 चुटकी यह नसवार लेकर नथुनों से ऊपर खींचें। मात्र 1 सप्ताह के नित्य प्रयोग से पुराने से पुराना आधासीसी का रोग जड़ से भाग जाएगा।

● आँव आने पर नीम पत्तियों का आधा कप काढ़ा अथवा पत्ती का 2 या ढाई ग्राम चूर्ण या पत्ती का दस ग्राम रस या छाल का चूर्ण डेढ़ से दो ग्राम तक अथवा फल, फूल छाल, डन्ठल और पत्ती अर्थात् पंचांग का चूर्ण हो तो मात्र दो ग्राम सेवन करने से लाभ हो जाता है।

● 20 ग्राम नीम की पत्तियाँ पीसकर आधा कप पानी में घोलकर 5 दाने काली मिर्च के भी मिलालें। इसे पीने से किसी भी कारण से उल्टियां (वमन या कै) आ रही हो, शर्तिया शान्त हो जाती है।

● नीम की छाल, मजीठ, पीपल की छाल, नीम वृक्ष पर चढ़ी गिलोय प्रत्येक 10-10 ग्राम लेकर काढ़ा बनाकर आधा-आधा कप सुबह-शाम पीने से एक्जिमा नष्ट हो जाता है। दो किलो नीम पत्ती का रस, 500 मि.ली. सरसों का तैल, आक का दूध, लाल कनेर की जड़ और काली मिर्च 5-5 ग्राम लेकर हल्की आग पर पकाकर तैल मात्र शेष रहने पर छानकर सुरक्षित रखलें। इस तैल को

लगाने से एक्जिमा समूल नष्ट हो जाता है तथा त्वचा पर कोई दाग शेष नहीं रहता है ।

● प्रातः (सूर्योदय से पूर्व) कुल्ला करके नीम की 10 ग्राम पत्तियाँ घोटकर पानी में मिलाकर पीने से कब्ज मिटकर पेट स्वच्छ हो जाता है ।

● महानिम्ब (बकायन) के पत्तों और छाल का काढ़ा पीने से और छाल की पुल्टिस बनाकर गले पर बांधने से कण्ठमाला रोग जड़ मूल से मिट जाता है।

● कच्ची निबौली को चबाने से कर्णमूल (कनफोड़े) ठीक हो जाते हैं अथवा नीम के बीजों को नीम के ही तैल में पकाकर इसमें फुलाया हुआ नीला थोथा पीसकर मरहम बनाकर लगायें ।

नोट—नीला थोथा जहर है अतः प्रयोग के बाद हाथ अवश्य साबुन से खूब भली-भांति धोकर स्वच्छ करलें ।

कनखजूरे के विष में—नीम की पत्तियाँ घोटकर सैंधा नमक मिलाकर लेप करने से (जहाँ कनखजूरे ने काटा हो वहाँ लेप करें) विष नष्ट हो जाता है ।

● नीम पत्तियों का 25 ग्राम रस नमक मिलाकर गुनगुना करके कानों में टपकाने से कानों से समस्त कीड़े निकल जाते हैं । आवश्यकता पड़ने पर (कान में कीड़े होने पर) यह क्रिया दूसरे दिन भी की जा सकती है ।

● 50 ग्राम सरसों के तैल में 25-30 ग्राम नीम के पत्ते पकावें । (इसी में 5 ग्राम पिसी हल्दी डाल लें । तदुपरान्त इस तैल को छानकर 1 छोटा चम्मच शहद मिलाकर शीशी में सुरक्षित रखलें । इस तैल को 3-4 दिनों कान में टपकाने से कानों का बहना और दुर्गन्ध निकलना शर्तिया दूर हो जाता है । अथवा नीम के तैल में शहद मिलाकर रूई की बत्ती से कान में फेरने मात्र से ही पीव आना और दुर्गन्ध निकलना, दर्द होना मिट जाता है ।

● नीम पत्ती 1 का रस चम्मच पीने से तथा 2-2 बूँद कानों में डालने से कान सुन्न पड़ जाने का रोग दूर हो जाता है ।

● नीम की फूल-पत्ती और निबौली पीसकर 40 दिन निरन्तर शर्बत बनाकर पीने से सफेद कोढ़ से मुक्ति मिल जाती है ।

● नीम का गोंद नीम के ही रस में ही पीस कर पीने से गलित कोढ़ नष्ट हो जाता है । कोढ़ (लेप्रोसी) से ग्रसित रोगी को नीम वृक्ष के नीचे ही रहने, खाने, पीने और नीम की पत्तियां बिछावन की भांति बिछाकर सोना अत्यन्त ही लाभप्रद है घावों पर नीम का तैल लगाना अथवा शरीर पर मालिश करना, नीम की पत्तियों

का रस पीना अथवा नीम से झरने वाला मद (50 ग्राम) तक पीना हितकर है । नीम की पत्ती का रस पानी में मिलाकर स्नान करना तथा बिस्तर से हटायी गयी नीम पत्तियों को जलाकर (धूनी लगाने से) वातावरण स्वच्छ रहता है । जली हुई पत्तियों की राख नीम के तैल में मिलाकर घावों पर लगाना भी लाभकारी है ।

● नीम की सूखी पत्तियों के ढेर में गन्धक चूर्ण डालकर आग लगाने से खटमल और मच्छर भाग जाते हैं ।

● पेट की खराबी के कारण होने वाले गले की दाह में नीम के रस में निबौली घोटकर शर्बत की भांति पीना लाभप्रद है ।

● बलगमी खाँसी में नीम के पत्तों की भस्म शहद में मिलाकर चाटना अत्यन्त लाभकारी है । नीम भस्म को सौंठ, अजवायन, काली मिर्च, पुदीना एवं अदरक रस में घोटकर चाटने से तुरन्त लाभ होता है । इस प्रयोग से श्वास नली के समस्त अवरोध और दूषण शान्त हो जाते हैं ।

● 30 ग्राम नीम की कोपलों का रस तीन दिन पीने से खून की खराबी दूर हो जाती है ।

● खुजली में नीम और मेंहदी के पत्तों को एक साथ रगड़कर रस निकाल कर 25 ग्राम की मात्रा में पीना तथा शेष बचे रस को नारियल के तैल में भूनकर छानकर शरीर पर मलना लाभकारी है । अथवा नीम का पंचांग (बीज, फूल, फल और पत्ते तथा जड़) समान मात्रा में पीसकर 4 चम्मच सरसों के तैल में उक्त चूरा हल्की आग पर तपाकर (नीम ज़लने की गन्ध फैलते ही और धुँआ उठते हुए ही) उतारकर, छानकर साफ-स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रखलें । इस तैल की मालिश से मात्र खुजली ही नहीं, वरन् त्वचा सम्बन्धी समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● पतझड़ के मौसम में नीम छाल को पीसकर छानकर दो ग्राम की मात्रा में 3-3 घंटे पर ताजे पानी से सेवन करने से खूनी दस्त रुक जाते हैं ।

● नीम तैल की निरन्तर काफी दिनों तक मालिश करते रहने से गंजापन नष्ट हो जाता है ।

● 25 ग्राम सरसों के तैल को पकाकर (खूब खौलने तक पकायें) उसमें 10 ग्राम नीम की कोपलें डालकर काली पड़ने दें (जलने से पहले ही उतार लें) फिर इसवने छानकर तैल को पुनः गुनगुना करके गठिया से आक्रान्त अंगों पर मालिश करें तथा इसी तैल से शाक-भाजी बनाकर खायें । गठिया के लिए अक्सीर योग है । अथवा महानिम्ब (बकायन) के बीज को पीसकर दो ग्राम की मात्रा में

गुनगुने पानी के साथ सेवन करें । सुन्न पड़ गये अंगों को इस योग के सेवन करने से चैतन्यता मिलती है ।

● नीम पत्तियों के रस में मिश्री मिलाकर सुबह-शाम पीने से शरीर (देह) की गर्मी (शरीर में गर्मी का जोर) शान्त हो जाता है ।

गर्मी से बुखार होने पर—नीम की छाल, गिलोय, लाल चन्दन, धनिया और कुटकी सम मात्रा में लेकर जौकुट कर काढ़ा बनाकर 20 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन (तीन दिन में तीन खुराकें) लें इससे अधिक सेवन कदापि न करें । यह 'गडुच्यादि क्वाथ' कहलाता है । मात्र इतने सेवन से ही बुखार भाग जाता है और प्यास भी शान्त हो जाती है । यह उपचार रक्त को ठण्डा करता है ।

● नीम की पत्तियों का रस निकालकर हल्का गर्म करके (इसमें 5-7 बूँद शहद भी मिला सकते है) गरारें (कुल्ला) करने से गले की जलन शान्त हो जाती है तथा कफ को हटाने में तो यह योग लाभप्रद है ।

गिल्टियों और सूजन में—नीम की पत्तियों को दरड़ लें (बारीक न पीसें) और नमक डालकर कड़वे तैल में पकायें, इसमें एक चुटकी पिसी हल्दी मिलाकर पुल्टिस तैयार कर किसी कपड़े में पोटली बनाकर गिल्टियों और सूजन पर हल्की-हल्की टकोर (सेंक) करें । दो दिन में ही आराम मिलने लगेगा ।

नोट—टकोर करने पर पहले तो सूजन बढ़ती हुई लगेगी, ऐसा खून संचार की क्रिया के कारण होता है । मगर बाद में शर्तिया लाभ होगा । अत: घबरायें नहीं और प्रयोग जारी रखें ।

● महानीम (बकायन) के पत्तों का रस पानी में मिलाकर पीने और जड़ की छाल को पीसकर लेप करने से गृधसी रोग (कमर से निचले जोड़ों में दर्द और जकड़न) नष्ट हो जाता है ।

● नीमरस में जरा सा नमक (सम्भव हो तो पांचों पिसे हुए नमक) मिलाकर दिन में 4 बार पीते रहने से घमौरियाँ नष्ट हो जाती हैं तथा गर्मी, खुश्की नहीं होती है और पित्ती भी नहीं निकलती है ।

● नीम के तैल में कपूर की टिकिया घोलकर ठण्डी हवा और छांव में बैठकर (धूप के असर से होने वाली पित्ती निकलने पर) मालिश करना तथा आधा घंटे के पेश्चात् स्नान करना अत्यधिक लाभप्रद है ।

● नीम की पत्तियों का रस और सरसों का तैल 10-10 ग्राम लेकर आग पर इतना पकायें कि रस जल जाए, तेल मात्र शेष रहे । इस तैल को घाव पर लगाना इतना अधिक गुणकारी है कि ऐलोपैथी की कीमती से कीमती घाव भरने का आयन्टमैन्ट (मलहम) इसका मुकाबला नहीं कर सकता है ।

● 40 दिनों तक निरन्तर नीम क्वाथ पीने से और त्वचा पर नीम का तेल लगाते रहने से चम्बल रोग (सोरायसिस) जड़ से नष्ट हो जाता है ।

● बहार के मौसम में प्रतिदिन नीम की 5 कोपलें चबाते रहने से अथवा 1 हफ्ता तक बेसन की रोटी में नीम की कोपलें कुतरकर मिला दें तथा घी में खूब तर करके खाने से 1 साल तक त्वचा रोगों से बचाव हो जाता है ।

● नीम की 7 लाल पत्तियाँ और 7 काली मिर्च के दानें प्रतिदिन चबाने से अथवा नीम और बहेड़े के बीज तथा हल्दी 5-5 ग्राम पीसकर ताजा पानी में घोलकर 1 सप्ताह पीने से 1 साल तक चेचक रोग से बचाव हो जाता है ।

● हरड़, बहेड़ा, आँवला का छिलका, सौंठ, पीपल, अजवायन, सैंधा और काला नमक प्रत्येक 10-10 ग्राम, काली मिर्च 1 ग्राम नीम के पत्ते आधा किलो और जौ क्षार 20 ग्राम को कूट पीस छानकर सुरक्षित रखलें । 3 से 5 ग्राम की मात्रा में फँकी मारकर गुनगुने पानी या चाय के साथ पीने से चौथैया बुखार तो भाग ही जाता है इसका सेवन प्रत्येक प्रकार की ज्वरों में भी उपयोगी है ।

● सुबह-सुबह नीम की छाल का रस निकालकर 25 ग्राम की मात्रा में पीने के दो घंटे बाद घी की चूरी (परांठे की चूरी बनाकर घी में सानकर) 1 सप्ताह तक निरन्तर खाने (पानी न पियें अथवा कम से कम पियें) से जलोदर रोग नष्ट हो जाता है ।

● जवानी के कील मुँहासे मुरझाकर दाग छोड़ गए हों तो नीम के बीज सिरके में पीसकर 5-7 दिन दागों पर लेप करने से लाभ हो जाता है ।

● नीम का मद (गोंद) दो ग्राम प्रतिदिन खाने से जहरवाद नष्ट हो जाता है।

● नीम का तैल सिर में मालिश करने से जुऐं लीखें नष्ट हो जाती हैं ।

● नये जूते के काटे हुए जख्म में नीम तैल या नीम तैल में वैसलीन मिलाकर लगाना लाभप्रद है । नीम की पत्तियों की राख भी नीम तैल के साथ लगावें ।

● 25 ग्राम नीम के पत्ते 250 ग्राम पानी में उबालकर 25-25 ग्राम की मात्रा में प्रति दो-दो घंटे पर पीने से यकृत की कमजोरी (शराब इत्यादि सेवन करने से लीवर डीमेज होना) दूर हो जाती है । यह प्रयोग लीवर टानिक का कार्य करता है।

● नीम वृक्ष की अन्दर वाली छाल को खूब बारीक (चन्दन की भांति) घिसकर जोड़ों के दर्द से आक्रान्त अंग पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करें (लेप सूख जाने पर पुन: करें) अत्यधिक लाभप्रद योग है ।

● नीम की पत्तियाँ, अनार का बक्कल, हरड़ का बक्कल, पठानी लोध, आम

का छिलका (प्रत्येक 10-10 ग्राम) पानी में पीसकर मुखमण्डल की झाइयां पर लगाना अत्यन्त उपयोगी है। मुख के स्याह धब्बे दूर होकर त्वचा का प्राकृतिक रंग उभर आता है।

●टायफाइड बुखार में नीम के बीज पीसकर दो-दो घंटे पर पिलाने से ज्वर झरता है। मल निकलकर शरीर में ताजा खून बनकर नवस्फूर्ति और शक्ति का संचार होता है।

●निबौली, अजवायन एवं नौशादर सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। प्रतिदिन प्रातःकाल तीन ग्राम की मात्रा में ताजे पानी से खाने से तिल्ली बढ़ने का रोग ठीक हो जाता है।

●नीम के 5 नग बीजों की गिरी पीसकर दिन में तीन बार खाने से दस्त रुक जाते हैं।

●पान में नीम तैल की 10 बूंदें डालकर दिन में ऐसे 5-6 बार पान खायें अर्थात् नीम तैल की दिन भर में 50-60 बूंदें पेट में चली जाऐं) निरन्तर 2-3 माह के सेवन से पुराने से पुराना दमा जड़ मूल से पीछा छोड़ जाता है।

●नीम, बबूल, मौलश्री की छाल, सिरस के बीज, जली हुई सुपारी, जले हुए बादाम के छिलके प्रत्येक 50 ग्राम, खड़िया मिट्टी 100 ग्राम, बहेड़ा 20 ग्राम, काली मिर्च 3 ग्राम, लौंग 5 ग्राम, पिपरमेन्ट आधा ग्राम लेकर सभी को पीस छानकर सुरक्षित रखलें। इस मंजन को प्रयोग करने से दांतों की समस्त बीमारियां नष्ट हो जाती हैं।

●नीम के पत्ते दही में पीसकर लगाने से दाद जड़मूल से नष्ट हो जाता है। नीम की छाल का काढ़ा पीना तथा निबौली का तैल विशेषतः बकायन का तैल दाद में लगाना भी उपयोगी है।

●नीम के छाया शुष्क फूल और कलमी शोरा 10-10 ग्राम पीस छानकर (कपड़े से छानें) सुरक्षित रखें। इस सुरमा को सुबह-शाम 1-1 सलाई लगाते रहने से दिन प्रतिदिन आँखों की ज्योति (नजर) बढ़ती चली जाती है।

●नीम की पत्तियों के रस में पिसा हुआ जीरा, पोदीना और काला नमक मिलाकर पीने से दिल की जलन दूर हो जाती है। यह शर्बत दिल को ताकत देता है और हृदय को ठण्डक से भर देता है।

●नीम की पत्तियाँ दीमक की दुश्मन हैं। नीम की मींगी (निबौली) की खाद इस हेतु कृषि भूमि हेतु उपयोगी है। वहीं पुरानी पुस्तकों की रक्षार्थ बीच-बीच में सूखे पत्ते लगाना लाभप्रद है।

●दो मुट्ठी नीम के पत्ते, दो टिकिया कपूर, थोड़ा सा अगर और चन्दन की घर-आंगन या कमरे में धूनी देने से संक्रामक रोगों से बचाव हो जाता है क्योंकि इस धूनी के प्रभाव से वायुमण्डल साफ-स्वच्छ हो जाता है।

●नीम की छाल का अन्दर वाला हिस्सा बारीक पीसकर (पानी डालकर) सिर पर लेप करने से नकसीर बन्द हो जाती है। अथवा नीम की पत्तियां और अजवायन पानी में पीसकर कनपटियों पर लेप करना भी अत्यन्त लाभप्रद है। गर्मी के मौसम में नीम की पत्तियों का रस निकालकर नमकीन शरबत की भांति सेवन करने से शरीर की गर्मी का उबाल शान्त हो जाता है जिसके परिणामवरूप नकसीर फूटने की नौबत ही नहीं आती है।

●नीम का तैल 250 ग्राम, शुद्ध मोम और बिरोजा 50-50 ग्राम लें। पहले बिरोजा को दड़दड़ा करके पीसकर तैल में गरम कर पिघलाकर बाद में मोम डालदें जब तीनों मिलकर 1 जान हो जाऐं तो शीशी में रखलें। यह नासूर नाशक अति उत्तम मरहम बन जाएगा। प्रतिदिन नासूर को नीम रस में रुई भिगोकर साफ करके उक्त मरहम लगायें। यह नासूर हेतु शर्तिया व रामबाण प्रयोग है।

●नेहरूआ अथवा नहारू रोग में त्वचा के अन्दर 1 बाल की भांति कीड़ा होता है। इसे निकालने के लिए नीम की पत्तियां पीसकर गरम करके त्वचा पर लगाना अत्यन्त ही उपयोगी है। इस प्रयोग से नहारू अपने आप स्वयं ही फूट जायेगा, उसे वहीं धागे से बाँध दें। मात्र दो या तीन बार के उक्त प्रयोग से नहारू पूर्णरूपेण बाहर निकल आता है। अति सरल प्रयोग है।

●नीम की कोपलें एवं जस्ता 10-10 ग्राम, मिश्री 10 ग्राम, लौंग और छोटी इलायची 3-3 नग को खूब बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। इस सुरमें को प्रतिदिन रात्रि में लगाकर सो जाने से नेत्रों का दर्द, सूजन, लालिमा, धुन्ध और जाला इत्यादि नेत्र विकार नष्ट होकर मात्र 1 पखवाड़े के नित्य प्रयोग से नेत्रों की ज्योति दुगुनी हो जाती है।

●नीम के तैल का दीपक जलाने से दीपक पर पतंगे नहीं आते।

●छायाशुष्क नीम के पत्ते किसी बरतन में जलावें। जल जाने पर बरतन का मुँह ढक दें ताकि भाप न निकल सके। फिर 3-4 घन्टे के बाद इसे काम में लें)। यह नीम पत्ती की भस्म हुई। इसे 5-6 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन ताजा पानी से सेवन करने से गुर्दा और मूत्राशय की पथरी कट-कट कर निकल जाती है।

●नीम की पत्तियों के रस में मिश्री मिलाकर पीने से बदन की समस्त गर्मी शान्त हो जाती है तथा गर्मी के मौसम में अधिक प्यास भी नहीं लगती है।

●नीम की कोमल सीकें काली मिर्च के साथ मिश्री डालकर पीसकर पीने से प्यास की भड़की (अधिकता) मिट जाती है ।

●प्लेग रोग में गिल्टियों पर मिट्टी का तेल रुई की फुरैरी से लगायें तथा 11 नीम की सीकें और 5-7 नग काली मिर्च 50 ग्राम गुलाब अर्क में पीसकर प्रत्येक दो घन्टे पर देना सर्वोत्तम एवं लाभकारी है अथवा नीम के पत्ते और काली मिर्च पीसकर सेवन करायें । इससे भी प्लेग नष्ट हो जाता है ।

●नीम का तैल गोदुग्ध में मिलाकर पीने से श्वेत प्रदर रोग नष्ट हो जाता है । नीम की छाल के रस में सफेद जीरा मिलाकर पीना भी श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) नाशक है ।

●पुरुषों के प्रमेह रोग में नीम की छाल का काढ़ा प्रतिदिन प्रातःकाल में पीना लाभकारी है । नीम पत्ती के रस में मिश्री मिलाकर पीना भी प्रमेह नाशक है । अथवा महानिम्ब (बकायन) के बीजों को चावलों के साथ पीसकर घी में मिलाकर चाटें। यह योग सर्वोत्तम प्रमेह नाशक है ।

●नीम की पत्तियों को हल्की आंच में तपाकर रस निकालकर सीना और बगलों में हल्के हाथ से मालिश करने से पसली चलना (हब्बा-डब्बा) रोग मिटता है।

●नीम के पत्तों का रस गुनगुना करके प्रसव कष्ट के समय जच्चा को पिला देने से गर्भाशय में संकुचन होकर प्रसव जल्द और बिना कष्ट के हो जाता है । अथवा नीम की छोटी सी जड़ लेकर गर्भिणी की कमर के साथ बाँध दें, यह योग भी लाभकारी है ।

नोट–प्रसव हो जाने पर इस जड़ को खोलकर अवश्य फेंक दें ।

●नीम की छाल का उबाला हुआ पानी प्रसूता (जच्चा) को एक सप्ताह तक देते रहने से इसे प्यास नहीं सताती है तथा स्वास्थ्य उत्तम रहता है और स्तनों में शिशुपान हेतु दूध भी पौष्टिक बनता है ।

●पक्षाघात में नीम बीजों के तैल की निरन्तर मालिश करना अचूक एवं शर्तिया लाभकारी उपचार है । जितना अधिक तैल त्वचा में पहुँचेगा उतने ही शीघ्र रक्त संचार में प्रवाह उत्पन्न होकर चैतन्यता आ जाएगी ।

●नीम की पत्तियाँ पीसकर पानी और शक्कर मिलाकर एक छोटा गिलास भर कर गरम करके सेवन करने से पीलिया रोग नष्ट हो जाता है ।

पुराने बुखार में—नीम की पत्तियाँ और काली मिर्च (21-21) लेकर पोटली में बाँधकर आधा किलो पानी में डालकर खौलायें, जब खौलने लगे तब ढक्कन

से ढक दें । इसे ठण्डा होने पर सुबह-शाम 125-125 ग्राम पीने से पुराना बुखार हड्डियों से निकल जाता है । मात्र दो दिन में ही असर दिखलाता है ।

पुराने असाध्य घावों में—नीम के पत्ते और छाल के काढ़े से घाव को धोयें और टकोर (सेंक) करें तत्पश्चात् नीम की छाल के अन्दरूनी हिस्से को सिल पर रगड़ कर घाव पर लेप कर दें । इस प्रयोग के निरन्तर करते रहने से असाध्य घाव भी ठीक हो जाते हैं ।

●नीम की छाल का अन्दर वाला छिलका तवे पर भूनकर (राख बनाकर) 10 ग्राम की मात्रा में दही के साथ सेवन करने से पेचिश जल्द ही ठीक हो जाती है।

●नीम पत्ती के रस में शहद मिलाकर चाटने से पेट के कीड़े समाप्त हो जाते हैं । अथवा नीम का तैल 8-10 बूंद (बच्चों को 5 बूँद) चाय के कप में डालकर पीने से भी पेट के कीड़े मर जाते हैं । या नीम की पत्तियां 5 ग्राम लेकर जरा सी हींग के साथ पीस कर चाटें । इस प्रयोग से भी उदर कृमि नष्ट हो जाते हैं।

●नीम की पत्तियों वाली हरी सींकों को 50 ग्राम वजन में लेकर इनका रस निकालकर 100 ग्राम उन्नाव का शर्बत में मिलाकर पीने से पेशाब में जलन और रुकावट दूर हो जाती है ।

●नीम की छाल और खैरसार 10-10 ग्राम गाय के मूत्र में पीसकर 5 ग्राम शहद मिला कर निरन्तर सेवन करते रहने से फील पांव, (हाथी पांव) का रोग ठीक हो जाता है । इस प्रयोग के साथ में आक्रान्त पैर पर नीम तैल की खूब मालिश करें अथवा पोटली में हल्दी का चूरा बांधकर गरम नीम तैल में डुबोकर टकोर (सेंक) करें तथा आक्रान्त पैर को शरीर से ऊँचा रखकर रात्रि में सोने की आदत डालें ताकि रक्त आसानी से पलटने लगे ।

●साधारण फोड़े-फुन्सियों में नीम की छाल घिसकर लगाना उपयोगी है ।

●अधिक फुन्सियाँ निकलने पर नीम पत्तियों का रस पीना लाभकारी है । इस प्रयोग से रक्त शुद्ध हो जाता है ।

●नीम, सेम, भांगरा का रस 50-50 ग्राम, बबूल और मेंहदी के पत्तों का रस 75-75 ग्राम में सरसों का तैल 500 ग्राम और 1 किलो पानी को धीमी आग पर इतना पकायें कि पानी जल जाए । तदुपरान्त इसमें 25 ग्राम मोम डालकर मरहम बनाकर सुरक्षित रखलें । यह मरहम इतना अधिक प्रभावशाली (असरकारक) है कि साधारण फोड़े-फुन्सियाँ तो क्या जड़ों वाले फोड़ा को भी सुखा डालता है ।

●नीम की तोड़ी (मद) या गोंद प्रतिदिन थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पुरुष के सेवन करने से दो महीनों में उसकी बच्चा उत्पन्न करने की शक्ति कम होने लगती है

(नोट—इस प्रयोग से पुरुष नपुंसक कदापि नहीं होता है, कामेच्छा में कमी होती है) तथा नीम रस का अथवा गोंद (मद) ताड़ी का सेवन छोड़कर नीम तैल का सेवन प्रारम्भ कर देने से शरीर में शीतलता का स्थान उष्णता लेकर सैक्स पावर बढ़ा देती है।)

●10 ग्राम नीम रस, पिसी हींग और हल्दी 3-3 ग्राम लेकर 10 ग्राम पानी में काढ़ा बनायें। तत्पश्चात् इसमें सरसों का तैल 10 ग्राम डालकर इतना गरम करलें कि पानी जल जाए तदुपरान्त इसमें अफीम और कपूर 1-1 ग्राम डालकर सुरक्षित रखलें। बच्चों के कान बहने के रोग में यह तैल 2-2 बूंद कान साफ करके डालना अत्यधिक उपयोगी है। इस तैल के प्रयोग से कान के समस्त प्रकार के विकार नष्ट हो जाते हैं।

●हाई ब्लड प्रैशर में प्रारम्भ में नीम पत्ती का रस प्रतिदिन 25 ग्राम पीते रहें। एक सप्ताह के बाद दो दिन बीच में छोड़कर 1 सप्ताह तक पियें तथा लो ब्लड प्रैशर में नीम तैल को पियें तथा शरीर पर मलें। अति उपयोगी घरेलू योग है।

●बलगमी खांसी में नीम पत्ती, सूखी भांग, कच्चे चने सूखे चने रात को पानी में भिगोकर कच्चे चने बना लें) अडुसा और सांभर नमक प्रत्येक 50-50 ग्राम की मात्रा में लेकर पीसकर (आलू की टिक्की) की भांति मिट्टी के (दिये) दो ढक्कनों के बीच रखकर गीली मिट्टी से मुह बन्द कर (जोड़कर) 5 किलो उपलों के बीच में रखकर तपने दें। ठण्डा होने पर ढक्कन अलग कर इस औषधि (भस्म) को एक साफ स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रखलें। आधा ग्राम यह औषधि 1 चम्मच शहद में घोलकर चाटें।

(नोट—इस प्रयोग से यदि सीने में जलन हो तो इसकी दूसरी खुराकें आधा ग्राम से कम करलें।) बलगम छंटकर सीना साफ और स्वच्छ हो जाएगा।

बबासीर में—नीम की अन्दर वाली छाल तीन ग्राम और गुड़ 5 ग्राम को पीसकर प्रतिदिन (रोग के समूल नष्ट होने तक) सेवन करें। खूनी बबासीर में 3-4 निबौली प्रतिदिन पानी में मलकर खाना भी अत्यधिक लाभप्रद है। मूली के रस में निबौली का गूदा सेवन करना भी उपयोगी है। नीम तैल प्रतिदिन 5 बूंद पीना तथा मस्सों पर लगाना भी बबासीर का शर्तिया उपचार है।

●100 ग्राम नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर ठण्डा करके सिर धोने से (मात्र 1 सप्ताह के प्रयोग से) बाल झड़ना बन्द हो जाते हैं। नीम और बेर की पत्तियों को उबालकर सिर में लेप करने से बाल झड़ना बन्द होकर नये बाल

उग आते हैं। नीम पत्तियों को उबालकर सिर धोने से सफेद बाल काले हो जाते हैं। 1 माह के निरन्तर प्रयोग से लाभ स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगेगा।

●बिच्छू दंश में नीम के पत्ते मसलकर काटे हुए स्थान पर कुछ देर तक मलने से डंक गलकर बिच्छू का विष शान्त पड़ जाता है। नीम की छाल अथवा नीम की सूखी पत्तियां या निबौलियों को चिलम में भरकर कश खींचने से भी बिच्छू दंश का विष उतर जाता है। यह सभी अचूक उपचार में है।

भगन्दर में—आधा किलो नीम रस और 250 ग्राम बूरा की हल्की आग पर गाढ़ी (करछुली अथवा कलुछी चिपकने लगे ऐसी) चाशनी बनाकर चित्रक, हल्दी प्रत्येक 10-10 ग्राम, नागरमोथा, काला जीरा, अजवायन, निर्गुन्डी बीज, पीपल, सौंठ, काली मिर्च, दन्ती मूल, नीम और बाबची के बीज, अनन्त मूल और वायविंडग प्रत्येक 25-25 ग्राम पीस छानकर चाशनी में मिलाकर सुरक्षित रखलें। इसे 10-10 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन सुबह-शाम खाने से भगन्दर शर्तिया नष्ट हो जाता है।

●बर्र के काटने पर भी नीम की पत्तियां पीसकर रगड़ना अत्यधिक उपयोगी है, जहाँ इसके छत्ते लगे हों वहाँ नीम के सूखे पत्ते, सींकें, निबोलियां का ढेर लगाकर आग लगादें। इस धूनी के प्रभाव से भिड़ें (बर्र) ही भाग जायेंगी।

●नीम के 50 ग्राम पत्तों में 5-5 काली मिर्च पीसकर सौ ग्राम पानी में छानकर पीने से मलेरिया बुखार मिट जाता है।

●मन्दाग्नि में पकी हुई 10 निबोलियां प्रतिदिन खाने से भूख बढ़ जाती है तथा रक्त भी साफ और शुद्ध हो जाता है अथवा 10 ग्राम नीम रस में अदरक, पुदीना, अजवायन, जीरा 5-5 ग्राम घोट पीसकर पांचो नमक मिलाकर पीने से जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है और अजीर्ण दूर होकर रोगी स्वस्थ हो जाता है।

●मधुमक्खी के डंक मारने पर नीम की पत्तियां रगड़ें। यदि छत्ते में लगी मधुमक्खियों ने सामूहिक रूप से आक्रमण कर काटा हो तो नीम की पत्तियां, काली मिर्च और सैंधानमक साथ-साथ पीसकर गोघृत में मिलाकर चाटना अतीव गुणकारी है। यदि रोगी अधिक बेचैन हो तो यह नीम की पत्तियाँ मुँह बन्द करके चबायें। नीम की गन्ध और रस विष को शर्तिया ठण्डा कर देता है।

●मधुमेह में नीम की छाल का काढ़ा पीना और करेला की भुर्जी का नाश्ता करना उपयोगी है।

●नीम के फूल, निबौली, पत्ते, जड़ और डन्ठल का काढ़ा तैयार करके कुल्ला

और गरारे करने से मसूढ़ों की टीसें और दाँतों का दर्द शर्तिया मिट जाता है ।

● नीम के पत्ते गरम करके स्त्रियों के नाभि के नीचे बाँधने से मासिकधर्म में होने वाला दर्द और कमरदर्द इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● नीम की 5-7 पत्तियाँ अदरक के रस में पीसकर पीने से और नीम की पत्तियाँ गर्म करके नाभि के नीचे बाँधने से स्त्रियों का बन्द मासिकधर्म खुलकर आ जाता है । या 20 ग्राम नीम की छाल, सौंठ और गुड़ 5-5 ग्राम का काढ़ा बनाकर पीने से भी मासिकधर्म की रुकावट दूर होती है ।

● यदि किसी स्त्री के मासिकधर्म का स्राव न रुक रहा हो तो बकायन (महानीम) की कोपलों का रस पिलायें । अतीव गुणकारी एवं उपयोगी घरेलू उपचार है ।

● बकायन के पत्तों का काढ़ा पिलाने से मिर्गी की मूर्च्छा दूर हो जाती है।

● नीम की पत्तियाँ सरसों के तैल में गरम करके, चुटकी भर हल्दी डालकर इसे किसी कपड़े में बांधकर पुल्टिस की भांति मोच से आक्रान्त भाग पर टकोर (सेंक) करने से मोच व सूजन, दर्द तथा त्वचा की अन्य टूट-फूट मिट जाती है।

● निबौली को सुरमें की भांति पीसकर दो सलाई प्रतिदिन आँखों में लगाने से मोतियबिन्दु का जाला अपने आप (बिना आप्रेशन के) कटकर निकल जाता है।

● मीठे आम अथवा किसी भी एरन्ड के बीज और नीम की पत्तियाँ चबाने से मुख की बदबू दूर हो जाती है ।

● निबौली, एरन्ड के बीज और नीम की पत्तियाँ 50-50 ग्राम लें । एरन्ड के बीजों और निबौलियों का गूदा निकालकर पत्तियों के रस में मिलाकर योनि पर लेप करने से योनि के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं ।

● प्रसवोपरान्त योनि-द्वार के किनारे कट-फट जाते है, यह योनि विदीर्णता कहलाता है । इसमें नीम पत्तों का उबाला हुआ पानी (हल्का गरम रह जाने पर) (दिन में तीन बार) योनि को धोना उपयोगी है । इस प्रयोग से योनि में टांके लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी और नई त्वचा कटावों को स्वयं जोड़ देगी।

● रक्तपित्त में खून में उबाल आने (गर्मी होने से) विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग उत्पन्न हो जाते हैं । इस हेतु नीम पत्तियों का रस 1 डेढ़ चम्मच पीना अत्यन्त उपयोगी है । त्वचा को अन्दर की गर्मी से बचाने हेतु नीम पत्तियां डालकर पानी गरम करके फिर ठण्डे पानी से स्नान करना परम लाभकारी है ।

● रक्त विकारों में रक्त शुद्ध करने हेतु नीम की टक्कर किसी से नहीं है। यह सर्वोत्तम रक्त शोधक है । इस हेतु नीम छाल का काढ़ा सेवन करना अथवा

छाल को पीसकर चूर्ण बनाकर सेवन करना अथवा बहार की ऋतु में नाजुक कोमल कोपलें 20-25 तोड़कर 5-7 काली मिर्च सहित पीसकर इस पिट्ठी को बेसन की रोटी में पकाकर घी से खूब भली-भांति तर करके एक सप्ताह तक खावें ।

● रतौंधी में दूधिया (कच्ची) 3-4 निबौली फोड़कर उसमें सलाई घुमाकर आँखों में आँजने से पुतली के समस्त आवरण हट जाते हैं और दृष्टि गोलक ज्योति से भरने लगते हैं अथवा नीम तैल आँखों में आँजने से भी रात को सामान्य रूप से दिखलाई देने लगता है ।

● नीम वृक्ष की मोटे तने का टुकड़ा काटकर पानी में घिसकर मोटा-मोटा रसौली के ऊपर लेप (लगातार महीना दो महीना) चढ़ाते रहने से रसौली सिमट कर त्वचा का अस्वाभाविक फुलाव को समतल होता है ।

● लिंग में घाव होने पर नीम के पत्ते घिसकर टिकिया बनाकर तवे पर सेंक कर (आलू की टिक्की की भाँति) खा जायें । लिंग के घाव भरने में उपयोगी है।

● वातरोग में 5 निबौलियां प्रतिदिन खाने से वात रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● नीम की पत्तियाँ और काली मिर्च सैंधा नमक मिलाकर शहद और गोघृत में घोलकर चाटने से विषैलापन मिटता है । यह प्रयोग शरीर को आरोग्यता प्रदान करने वाला श्रेष्ठ उपचार है ।

● वीर्यपतन में 20 ग्राम नीम की पत्तियां 50 ग्राम घी में भूनकर जला दें। यह घी वीर्य की कमी की पूर्ति कर देता है तथा कामवासना को भी शान्त रखेगा।

● यदि दुर्भाग्य से किसी माँ को दुग्धपान करने वाला शिशु स्वर्ग सिधार जाए तो स्तनों से दूध निकलकर वस्त्रों को खराब करता है तथा मृत शिशु की याद नहीं भूलने देता है । इस हेतु निबौलियों की गिरी पीसकर स्तनों पर लेप करने से दूध अपने आप सूखने लगता है ।

● नीम की पत्तियाँ खिलाने से सर्प विष तो शान्त होता ही है, यह भी परीक्षण हो जाता है कि विष चढ़ा भी है अथवा नहीं ।

नोट—नीम की पत्तियां विष का प्रभावं होने अथवा रहने तक कड़वी नहीं लगती हैं । आयुर्वेद के अनुसार यदि कोई व्यक्ति 5-7 नीम की पत्तियां प्रतिदिन चबाता रहे तो वह ''नील कण्ठ'' हो जाता है । ऐसे व्यक्ति को यदि सांप काट ले तो उल्टा सांप ही अपनी जान से हाथ धो बैठेगा।

● नीम पत्तों का अधिक मात्रा में काढ़ा तैयार कर किसी खुले बड़े चौड़े बरतन में रोगी को नंगा बैठाने की क्रिया करने से सुजाक मिट जाता है ।

● नीम का पंचांग पीसकर मेंहदी की भाँति हाथों की हथेलियों और पैरों के तलुवों में लगाने से दाह (जलन अथवा आग निकलना) दूर हो जाता है ।

● महानीम (बकायन) की सीकें, लौंग, बड़ी इलायची 5-5 लेकर 50 ग्राम पानी में थोड़ा तपाकर (यह 1 मात्रा है) प्रत्येक 2-2 घंटे बाद सेवन कराने से हैजा भाग खड़ा होता है। रोगी की शारीरिक ऐंठन एवं अन्य कष्टों से निजात हेतु नीम तैल की मालिश कर दें। यदि रोगी का पेशाब बन्द हो तो नीम के फूल पानी में पीसकर पेड़ू पंर लेप कर दें। अवश्य लाभ होगा।

● हृदय रोगों में नीम बीजों का चूर्ण आधा-आधा ग्राम की मात्रा में सेवन करना लाभप्रद है। नोट—अधिक मात्रा में सेवन करने से नशा चढ़ जाता है।

● चेचक निकलने पर रोगी के बिस्तर पर नीम पत्तियाँ सुबह-शाम बिछायें तथा बदलते रहें और दरवाजों और खिड़कियों पर भी इसी प्रकार वन्दनवार की भांति नीम पत्ते बांधे और ताजे बदलते रहें। रोगी को मुनक्के का उबाला हुआ पानी पिलायें और यही (उबला) हुआ मुनक्का खिलायें।

● चेचक में असहनीय जलन होने पर नीम की पत्तियां घोंट छान कर मथनी से बिलोकर (जब झाग बनने लगें तो) यही झाग रोगी के बदन पर मलें। नीम को कोपलों को पीसकर चेचक के फफोलों पर पतला-पतला (गाढ़ा हर्गिज नहीं) लेप करना भी उपयोगी है। इस प्रयोग से चेचक के दानों (फफोलों में) आग कम हो जाती है।

● चेचक के रोगी को ठण्डा पानी कदापि न दें। नीम की छाल जलायें और जल भरी कटोरी छाल के अंगारे में बुझाकर यही पानी पिलायें। मुनक्के डालकर उबाला हुआ जल भी अन्दर की गर्मी निकालने में सहायक है। नीम की पत्तियां डालकर उबाला हुआ पानी भी उत्तम है क्योंकि इसके सेवन से प्यास भी बुझ जाती है और बुखार भी भागता है (चेचक के बुखार को उतारने की कोशिश न करें क्योंकि इसी के कारण चेचक के दानें बाहर फूटते हैं, यदि यह शरीर में अन्दर ही रह जाऐं तो जीवन में कभी भी इसका बुरा फल खसरा या चेचक के पूर्णरूपेण बाहर न निकलने पर) क्रानिक ब्रोकांइटिस के रूप में भागना पड़ सकता है। इसलिए चेचक जितनी अधिक और जल्दी बाहर निकल आये, उतना ही अच्छा होता है।

● नीम की पत्तियों का रस गुनगुना करके सुबह, दोपहर, शाम पिलाते रहने से चेचक के दाने खुलकर निकलने में मदद मिलती है।

● चेचक के दाने सूख जाने पर नीम पत्तियों को पानी में उबालकर, ठण्डा करके रोगी को स्नान करायें तथा नीम पत्तियों में तपाकर छाना हुआ सरसों आदि का तैल रोगी के बदन पर लगायें।

● चेचक का उबाल शान्त पड़ते ही नीम का तैल गढ़ो वाली त्वचा पर लगाना प्रारम्भ कर दें। इससे नयी-पुरानी त्वचा इकसार, इकरंग और समतल होने लगती है। रोगी के सिर पर भी नीम का तैल लगायें ताकि उसके बाल न झड़ें। यदि झड़ रहे हों तो रुक जायें।

खरबूजा

● पका खरबूजा शीतल, मूत्रल, वीर्यवर्धक, तृप्तिदायक, मूत्र व रक्त शोधक, पैत्तिक एवं दाहोन्माद नाशक होता है। पका खरबूजा सेवन करने से ग्रहणी ठीक रहती है तथा दूषित आहारों के परिणामों से रक्षा होती है और मल भी शुष्क नहीं होने पाता है। खरबूजा के सेवन करने से गुर्दों की शिथिलता, मितली और मूत्र की शुद्धि हो जाती है। यह पथरी नाशक, पौष्टिक और तरावट प्रदान करने वाला स्वादिष्ट फल है।

● खरबूजा के जलीय अंश में विटामिन ''सी' ग्लूकोज और लवण काफी मात्रा में होता है तथा प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट विभिन्न मात्रा में होता है। यह पाचक गुणों से भरपूर है। खरबूजा खाकर शर्बत पीने अथवा मीठा खाने से उसके समस्त दोष नष्ट हो जाते है। यह लू, गर्मी और ताप से अपने सेवन कर्ता को दूर रखकर मस्तिक को ताजगी और तरावट देता है। खरबूजे का हरा (कच्चा) फल तिक्त होता है जो पकने पर मधुर हो जाता है। इसे खाने से कई घन्टा पूर्व ठण्डे और ताजे पानी में भिगो देने से इसकी गर्मी निकल जाती है और यह अधिक गुणकारी होता है। कच्चे खरबूजे की सब्जी अत्यन्त स्वादिष्ट बनती है।

● खरबूजे के छिलकों को चने की दाल के साथ बनाकर (सब्जी के रूप) में खाया जाता है। इसके बीजों का विभिन्न मिठाइयों और नमकीनों में उपयोग होता है, ठण्डाई में भी पीसकर मिलाया जाता है। कच्चे और पके खरबूजों का उपयोग सब्जी के अतिरिक्त अचार के रूप में भी किया जाता है। इसके बीजों का तैल साबुन निर्माण में काम आता है तथा इसकी गिरी की खीर भी बनाई जाती है तथा इसे पीसकर दुग्ध निर्माण भी किया जाता है। खरबूजे का सेवन यकृत, बस्ति व वृक्क की सूजन में भी लाभप्रद है।

● खरबूजों के छिलकों को सुखाकर बारीक चूर्ण करके दाल व तरकारी में डालने से वह जल्दी गल जाती है।

● खरबूजे के बीजों को जल में पीसकर शरीर पर लेप करने से लू से रक्षा होती है।

●विशेष परिश्रम से थकान के कारण बेचैनी होने पर खरबूजा उन्माद में भी लाभ करता है तथा इसके सेवन से वीर्य की वृद्धि भी होती है।

●खरबूजा, ककड़ी, खीरा के बीज खाते रहने से पथरी निकल जाती है।

●खरबूजा, कद्दू और सफेद पेठे के बीज की गिरी 6-6 माशा पानी में घोटकर छान कर शर्बत नीलोफर (4 तोला) में मिलाकर पीने से गर्मी से उत्पन्न सिरदर्द दूर हो जाता है।

●खरबूजा के बीजों की गिरी और कद्दू के बीजों की गिरी 2-2 तोला, माजू एक तोला, गूलर के शुष्क फल 10 तोला, मिश्री तीन छटांक लेकर सभी को पीसकर 2-3 माशा की मात्रा में दिन में 2-3 बार सेवन करने से रक्त स्राव रुकता है।

●खरबूजा, कासनी, खीरा के बीजों की गिरी (प्रत्येक 4 माशे) कद्दू (कुष्मांड) के बीज की गिरी और निशास्ता गेहूं 1-1 तोला, कतीरा गोंद, गेरू 6-6 माशा, बबूल निर्यास 7 माशा, रेवन्द चीनी 6 माशा सभी को सूक्ष्म पीसकर 6 मात्राऐं बनाकर प्रत्येक मात्रा शर्बत बनफशा या दूध के साथ सेवन करने से मूत्रशुक्र (सुजाक) नष्ट हो जाता है। पथ्य में मूंग की दाल और घृत रोटी खायें।

भल्लातक (भिलावा)

●भिलावा एक उत्तम और उत्कृष्ट बनौषधि है। यह कषाय, उष्ण, शुक्रल, मधुर रसयुक्त, लघु, वात, कफ, उदर रोग, आनाह, कुष्ठ, अर्श, ग्रहणी, गुल्म, ज्वर, शिवत्रकुष्ठ, अग्निमांद्य, कृमिहर तथा व्रणहर है। यह रसायन मेध्य वाजीकरण, मूत्रजनक, वातनाड़ी और दौर्बल्य नाशक है। यह शरीर में विभिन्न प्रकार से उत्तेजना करके अनेक क्रियायें करता है जैसे—रस ग्रंथि में उत्तेजना से श्वेत कणों की वृद्धि होती है जिसके फलस्वरूप शोथ में लाभ होता है। यकृत में उत्तेजना से पित्त स्राव ठीक होता है जिससे भूख वृद्धि होती है और रक्ताभिसरण क्रिया ठीक होती है। वृक्कों में उत्तेजना से प्रारम्भ में मूत्र की मात्रा में वृद्धि तथा बाद में (कभी-कभी मूत्र में खून भी आ जाता है) कमी हो जाती है।

●इसका पका हुआ फल कसैला, रस-विपाक में चरपरा, उष्ण, उत्तेजक, पाचक, स्नायुबल बर्धक और शरीर पर फफोला पैदा करता है। मन्दाग्नि, त्वचा रोग, अर्श (बवासीर) और स्नायु जल की निर्बलता मिटाने हेतु अति उत्तम है। गन्डमाला, उपदंश (आतशक) और कोढ़ नाश हेतु तो अद्वितीय है। इसका तैल तिला के तौर पर इस्तेमाल होता है। खास विधि से निर्मित खिजाब भी काम देता है।

●औषधि प्रयोगार्थ इसके अच्छे सुपक्व फल काम में आते हैं। जो फल पानी में डालने पर डूब जायें, उन्हीं का प्रयोग-श्रेष्ठ है। इसके शोधन हेतु छोटे-छोटे टुकड़ कुतरकर ईट के चूर्ण के साथ टाट के बोरे में रगड़ते हैं और फिर धोकर काम में लेते हैं। कुछ वैद्यगण फलों को केवल उबालकर ठण्डे पानी से धोकर काम में लेते हैं। प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री यादव जी के मतानुसार इसे 1 दिन गोमूत्र में डालकर तीन दिन गो दुग्ध में डालना चाहिए (प्रतिदिन जल से धोकर नवीन दुग्ध ही लेना चाहिए) फिर कपड़छन ईट के चूर्ण में मसलकर, धो-सुखाकर औषध रूप में काम में लेना चाहिए।

●भल्लातक के सेवन के समय दुग्ध एवं चावल का पथ्य देना चाहिए तथा धूप में घूमना, स्त्री सहवास, माँस भक्षण, नमक सेवन, व्यायाम और शरीर में तैल मालिश करना आदि छोड़ देना चाहिए।

●भल्लातक सहन न होने पर (विष प्रभाव के कारण) गहरे रंग का मूत्र, दाह, खुजली, चकत्ते, अतिसार, ज्वर, उन्माद, फोड़ा फूटकर व्रण बनना तथा कभी-कभी रक्तमेह इत्यादि हो जाते हैं। प्रारम्भिक लक्षण प्रकट होते ही दवा सेवन बन्द कर नारियल का दूध या इमली पत्र स्वरस अथवा तिल और नारियल खाना चाहिए। पैत्तिक विकार, रक्तस्रावी प्रवृत्ति वालों को तथा गर्भिणी स्त्री को बालकों को, वृद्धों को तथा अतिसार और वृक्क शोथ के रोगियों को और उष्ण काल में इसका सेवन वर्जित है।

●औषधि रूप में इसकी मात्रा—तेल 1 से 2 बूँद, अवलेह आधा से चौथाई तोला, क्षीरपाक 1 से 2 तोला तक है। बहुत से लोग इसको विष मानते हैं किन्तु विषों में इसकी गिनती नहीं है। यह तीव्र (तेज) बहुत होता है। इसका तैल शहद की तरह होता है। (यदि यह कहीं शरीर में लग जाए तो घाव हो जाता है) यह औषधियों के काम में आता है। यह ताकतवर है तथा कफ रोगों को नेस्तनाबूद करने वाला है।

●भिलावा 1 भाग, काजू 6 भाग, शहद 1 भाग को खूब भली प्रकार घोटकर 2 माशा की मात्रा में दिन में 4 बार आमवात में सेवन करना अतीव गुणकारी है।

●भिलावा 2 भाग, अजवायन 2 भाग, पारद 1 भाग को घोटकर चने के आकार की गोली बनालें। इन्हें दही के साथ सेवन करने से गन्डमाला में लाभ होता है।

●भिलावा, हरड़ और तिल समभाग लेकर दुगने गुड़ के साथ गोली

बनाकर 6 माशा सेवन करने (भल्लातक का धुंआ भी दिया जाता है) से बवासीर मिटता है ।

● 1 भिलावा को-आधा तोला लहसुन के साथ पिलाना हैजा में लाभकारी है।

● भिलावे का दीपक पर गरम करने से जो तैल टपकता (निकलता) है, इसे दूध में टपका कर मिश्री मिलाकर रात्रि के समय देना फुफ्फुस विकारों में हितकर है । फुफ्फुस-प्रदाह में मुलहठी के साथ मिलाकर देना लाभकारी है ।

● इमली और शुद्ध भिलावा समभाग मिलाकर कूटकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें । यह भल्लातक वटी कहलाती है । इसकी मात्रा 1 से 2 गोली तक मट्ठा या जल के साथ दिन में 2-3 बार तक देने की है । यह वटी जकड़ी हुई सन्धियों को दूर करती है । उदर वात, आध्मान, उदरावर्त्त उदर शूल युक्त अतिसार, विशूचिका, संग्रहणी में भी लाभप्रद है । पक्षाघात में मांसपेशियों की शिथिलता, गर्दन की अकड़न और शिराओं की जकड़न, सामान्य शोथ, पेशियों का दर्द, वातज शिराशूल, अन्डवृद्धि, आन्त्रवृद्धि की प्रारम्भिक अवस्था के शोथ में भी लाभप्रद है । उदर के समस्त वातज रोग तथा समस्त वात विकारों में लाभकारी है । इसके प्रयोग से श्वेत कुष्ठ और रक्त विकारों में भी लाभ देखने को मिला है।

हरीतकी (हरड़ या हर्र)

इस महौषधि की उत्पत्ति अमृत से बतलाई जाती है । लवण को छोड़कर इसमें पांचों रस होते हैं । यह त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) हरने वाली है । सात प्रकार की हरड़ों का उल्लेख आयुर्वेद शास्त्र में मिलता है जिसमें विजया हर्र सर्वश्रेष्ठ बतलाई गई है । किन्तु वर्तमान में बाजार में दो प्रकार की (छोटी व बड़ी हर्र) जातियां मिलती हैं । त्रिफला में बड़ी हर्र का प्रयोग होता है तथा बच्चों की बीमारियों में व दोष शोधन में छोटी हरड़ का प्रयोग किया जाता है । हरीतकी मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कषाय (रस युक्त) प्रधान रस कषाय गुण में रूक्ष, उष्ण, वीर्य में उष्ण, विपाक में मधुर प्रभाव में त्रिदोष हर और रसायन गुणयुक्त है ।

हरीतकी में 45 प्रतिशत टैनिक एसिड, इसके अतिरिक्त गैलिक एसिड, कुछ भूरे रंग के पदार्थ और म्यूसीलेज आदि रहते हैं । इसको ''सर्वरोग प्रश्मनी'' कहा जाता है । विबन्ध संग या अवरोध का भेदन करके प्रत्येक रोग की सम्प्रति को तोड़ देने की क्षमता हरीतकी में विद्यमान है । दोषों का अनुलोमन करके दीपन पाचन करती है । अत: संसमन और संशोधन दोनों उपचारों की पूर्ति हरीतकी सेवन

से हो जाती है । त्रिदोष शामक प्रभाव इसकी गुणधर्म की विशेषताओं में और भी चार चाँद लगा देता है ।

हरीतकी रोगनाशक स्वास्थ्यवर्धक और उत्तम रसायन के गुणों से भरपूर है। प्रत्येक प्रकार के रोग में मात्रा व अनुपान और प्रयोग विधि रोगी तथा रोग के अनुरूप निर्धारण करके हरीतकी के गुणों से लाभ प्राप्त किया जा सकता है । नोट—किन्तु हरीतकी में इतने सारे गुणों के अतिरिक्त प्रयोग में थोड़ी सावधानी की आवश्यकता भी है । अजीर्ण रोगी, रूक्ष भोजन करने वाले अत्यधिक मैथुन प्रेमी, अधिक मद्यपान करने वाले अथवा विष के सेवन से क्षीण व कृश व्यक्ति भूख, प्यास व गर्मी से पीड़ित व्यक्तियों को हरीतकी सेवन निषिद्ध है ।

● हरीतकी कषाय उष्ण होने से दुर्बल क्षीण व गरम प्रकृति के लोगों को सावधानीपूर्वक व्यवहार में लेनी चाहिए । यह भेद का क्षय करती है, रूक्षता बढ़ाती है अत: इसके सेवन करने वाले को स्निग्ध तथा पौष्टिक आहार, घी, दूध इत्यादि का सेवन नियमित रूप से करते रहना चाहिए ।

● छोटी हरड़ 1 पाव गोमूत्र में 24 घंटे भिगोकर रखें, तत्पश्चात् गोमूत्र बदल दें । (यह क्रिया नित्य 7 दिन तक करें) फिर आठवें दिन धो सुखाकर तवे पर थोड़े शुद्ध घी में भूनकर सैंधा नमक मिलाकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें । इसके प्रयोग से पान्डु, कामला, यकृत, प्लीहा सम्बन्धी उदर रोग शर्तिया नष्ट हो जाते हैं । सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है । आधा से 1 तोला गुनगुने पानी से दिन में 2-3 बार लें, 2-3 सप्ताहों में रोग निर्मूल हो जाता है ।

● छोटी हरड़ एक पाव, तक्र (मट्ठा) आधा किलो में 7 दिन तक भिगोयें (प्रतिदिन नया तक्र) बदलकर डालें । फिर आठवें दिन धो-सुखाकर इसमें भुना जीरा 100 ग्राम, हींग 1 तोला, काला नमक 1 तोला, अजवायन 5 तोला सौंठ 2 तोला मिलाकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें । प्रवाहिका, अतिसार, संग्रहणी में 2-2 चम्मच मट्ठा से प्रतिदिन 2-3 बार दो माह तक (रोग समूल नष्ट होने तक) सेवन करने से रोग निर्मूल हो जाता है ।

● बच्चों को कफ से होने वाले दोष-श्वास, कास, प्रतिश्याय, वमन आदि में छोटी हरड़, सौठ, लौंग, पीपल थोड़ी-थोड़ी घिसकर दिन में दो बार शहद से चटाना उपयोगी है ।

● बच्चों के ज्वरातिसार में सौठ, जावित्री और हरड़ की घूंटी पिलावें ।

● छोटी हरड़ का क्वाथ 5 तोला, लाल फिटकरी चूर्ण 1 माशा, निर्मली

बीज का चूर्ण 5 तोला का गुलाबजल में घोल बनाकर नेत्रों में प्रयोग करने से अभिष्यन्द, खुजली, कीचड़ आना, लालिमा, सूजन दर्द, दृष्टिमांद्य इत्यादि सभी रोगों में लाभ होता है।

● रक्त विकार में शीत पित्त, कन्डू इत्यादि में गोमूत्र में भिगोई हुई हरड़ आधा तोला, नीम की कोपलें 1 तोला, एलुवा तीन रत्ती को दिन में दो बार पानी से सेवन करना अत्यधिक लाभप्रद है। नमक, तैल, खटाई, गुड़ का परहेज रखें।

● गोमूत्र में भिगोयी हुई हरड़ एक तोला, आमलकी रसायन 1 माशा, शुद्ध शिलाजीत दो रत्ती, हरिद्रा 1 माशा, मधु के साथ दिन में तीन बार देने से समस्त प्रकार के प्रमेह रोग तीन माह के निरन्तर सेवन से अवश्य ठीक हो जाते हैं।

● गोमूत्र हरीतकी के 1 वर्ष पर्यन्त के कल्प प्रयोग से भयानक से भयानक गलित कुष्ठ रोग भी ठीक हो जाता है।

● हर्र का मुरब्बा, पाक और अवलेह के रूप में बनाकर नियमित सेवन से विबन्ध और अजीर्ण का मूलतः निर्हरण होकर अर्श रोग दूर हो जाता है। झन्डू फार्मेसी की ''अभयादि मोदक'' 1 गोली नित्य शाम को खाने से विबन्ध की शिकायत न रहने के फलस्वरूप अर्श में शत-प्रतिशत पूर्णरूपेण लाभ हो जाता है।

● छोटी हरड़ और निबौली 1-1 तोला गुड़ दो तोला प्रातःकाल तक्र के साथ 21 दिन तक देने से अर्श में पूर्ण लाभ हो जाता है। अभयारिष्ट का सेवन भी लाभप्रद है।

● पुनर्नवाष्टक क्वाथ के अनुपान से गोमूत्र में भिगोई हुई हरड़ का सेवन करने से 1 या 2 मात्रा में देने से व कल्परूप में प्रयोग कराने से असाध्य जलोदर रोग भी नष्ट हो जाता है।

● मृग-श्रृंग भस्म दो माशा, गोघृत एक तोला, सितोपलादि चूर्ण दो माशा, मुक्तापिष्टि दो रत्ती, हरीतकी क्वाथ में 1 चम्मच मधु डालकर उसके अनुपान से दिन में दो बार देने से हृदय रोग, शोथ, हृदयनिपात, हृद् विघटन इत्यादि सभी अवस्थाओं में लाभ होता है।

● छोटी हर्र, बड़ी हर्र, काबुली हर्र का छिलका 1-1 तोला, धनियां और आंवला 1-1 तोला लेकर सभी को घी में तलकर 15 तोला शहद मिलाकर रखलें। 2 तोला की मात्रा में प्रतिदिन देने से सिरदर्द नष्ट हो जाता है। परीक्षित योग है।

● गोमूत्र में भिगोई हुई हर्र आधा तोला, दुग्धपाषाण दो माशा, नारियल जटा की राख दो माशा लें। इसे दिन में तीन बार दार्वादि क्वाथ के साथ सेवन करने से तीन सप्ताह में स्त्रियों का प्रदर रोग ठीक हो जाता है।

● हरीतकी आधा तोला, बिल्व (मज्जा) दो तोला, आमलकी दो तोला, अर्जुन दो तोला इनके क्वाथ से अविपित्तकर चूर्ण सुबह-शाम देने से अम्लपित्त नष्ट हो जाता है।

● गोमूत्र भृष्ट हरीतकी को दिन में तीन बार 1-1 हरीतकी को चबाने तथा पथ्यादि क्वाथ सुबह-शाम पीने से समस्त प्रकार के शिरोरोग दूर हो जाते हैं।

● छोटी हर्र 4 नग, निम्बादि चूर्ण दो माशा, पिप्पली 1 नग, गुड़ दो तोला सुबह-शाम दो मात्रा देने से सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

बालघुट्टी—छोटी हर 10 ग्राम, अतीस 5 ग्राम, छोटी पीपल 5 ग्राम, जावित्री तीन ग्राम, सौठ तीन ग्राम, जायफल तीन ग्राम, नागरमोथा दस ग्राम, शुद्ध टंकण 5 ग्राम, काकड़ा सिंगी 10 ग्राम, मिश्री 100 ग्राम का कपड़छन चूर्ण बनाकर मधु मिलाकर सुरक्षित रखलें। छोटे बच्चों (शिशुओं) को 3-3 रत्ती दिन में 3 बार चटाने से सभी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

हरीतकी का रसायन—रसायन के लाभ हेतु कल्प के रूप में हरीतकी का 60 दिन का प्रयोग किया जाता है। 1 हरीतकी रात्रि को पानी में भिगोकर प्रातःकाल 5 मुनक्कों के साथ घीसकर पिलाये जाने का विधान है। प्रतिदिन 1 हर्र और 1 मुनक्का प्रयोग में बढ़ाते जायें। 20 वें दिन 20 हर्र लेकर फिर अगले 20 दिनों तक 20 हर्र सेवन करें। इसके उपरान्त फिर 1 हर्र और 1 मुनक्का प्रतिदिन कम करके प्रयोग बन्द कर दें। इस प्रयोग काल में भोजन में दूध का विशेष रूप से सेवन करें साथ में पुराने शालि चावल व दूध (एक समय) लें। चावल में घी और बूरा मिलाना चाहिए। इस प्रकार हरीतकी का कल्प के रूप में प्रयोग करने से आयु कान्ति, मेधा, बल, सौन्दर्य और स्वास्थ की वृद्धि होकर शरीर दृढ़ होता है और आयु स्थिर होती है।

● डेढ़ या 2 हर्र 5 नग मुनक्का छोटे बच्चों को रोज घिसकर पिलाने से (बड़ी आयु की लोगों को) 2 या 3 हर्र तथा 15-20 मुनक्का) प्रतिदिन सेवन करने से स्वास्थ अच्छा रहता है और शक्ति बढ़ती है।

ऋतुन् के अनुसार हरीतकी प्रयोग—छहों ऋतुओं में भिन्न-भिन्न अनुपानों के साथ नियमित रूप से वर्ष भर पर्यन्त सेवन की गई हर्र का भी रसायन प्रयोग के भी भांति लाभ प्राप्त होता है।

वर्षा ऋतु में—सैंधा नमक के साथ, शरद ऋतु में शर्करा से, हेमन्त ऋतु में सौठ से, शिशिर ऋतु में पीपल से, बसन्त ऋतु में मधु से और ग्रीष्म ऋतु में

गुड़ के साथ हर्र का सेवन करना चाहिए । इस प्रकार 1 वर्ष तक हरीतकी सेवन से सभी प्रकार के रोग नष्ट होकर स्वास्थ्य स्थिर रहता है। आयु बढ़ती है तथा रसायन गुणों की प्राप्ति होती है ।

● लवण के साथ सेवन की गई हर्र कफ का नाश करती है । शर्करा के साथ सेवन करने से पित्त का तथा घृत के साथ सेवन वायु का नाश होता है । गुड़ के साथ हर्र का सेवन करने से सभी प्रकार के रोगों का नाश होता है ।

● हरीतकी स्वयं ही मल तथा दोषों का शेधन, शोषण व शमन करने वाली है अत: अन्य किसी प्रकार के शोधन की आवश्यकता नहीं रहती है ।

बाबची

यह एक क्षुप जाति की वनस्पति है । इसके क्षुप 1 से 3 मीटर तक ऊँचे होते हैं । यह वर्षा ऋतु में बहुतायत से उत्पन्न होती है । मूल-सूक्ष्म, सूत्रवत, तन-सीधा, शाखा—हरिताभ, गोल, कोमल, पत्र—ग्वार के समान, एकान्तर, पुष्प-फीके, जामुनी वर्णयुक्त, फल—अपक्व हरित तथा पक्व, कृष्ण बीज कृष्ण वर्ण युक्त सुगन्धित होते हैं । इसका उपयोगी अंग बीज एवं तैल है । प्रभाव—यह अग्निदीपक और बल्य है । कन्डू, स्वित्र कुष्ठ (सफेद दाग) और पामा दद्रु, विचर्चिका में अत्यन्त उपयोगी एवं लाभप्रद है ।

बीजों को जलाने से साढ़े सात प्रतिशत भस्म मिलती है । इसमें मैंग्नीज होता है । बीजों में पुष्कल तैल होता है । वाकुची या सोमराजी अथवा बाबची मृदु उत्तेजक, वात नाड़ियों को बलप्रद, कृमिजन्य त्वगदोष हर, व्रणशोधन और व्रण रोपण है । सफेद दागों पर इसका लेप किया जाता है तथा तैल लगाया जाता है।

(नोट—सफेद दाग का रोग यदि नया हो तो इससे लाभ होता है, रोग पुराना होने पर अधिक समय तक लगाना पड़ता है)

इसका एक प्रसिद्ध शास्त्रीय योग ''वृहत् सोमराज तैल'' श्वेत कुष्ठहर लेप अत्यन्त प्रशंसा प्राप्त है । इसके बीज के चूर्ण की मात्रा तीन ग्राम तक है । अनुपान जल है । इसके क्वाथ की मात्रा 15 ग्राम है ।

● खैर और आंवले का विधिपूर्वक क्वाथ बनाकर बाबची के बीजों के चूर्ण का प्रक्षेप देकर नित्यपान करने से श्वेत कुष्ठ दूर होता है ।

● बाबची, आँवला, रसौत, काले तिल, लौह चूर्ण सम मात्रा में लेकर हान्डी (मिट्टी का बरतन) में फूक लें । शीतल होने पर निकाल कर भांगरे के रस में घोटकर बार-बार लेप करने से श्वित्र कुष्ठ नष्ट हो जाता है ।

● अंजीर मूल त्वक 500 ग्राम, बाबची 5 ग्राम, पंवाड के बीज 50 ग्राम, लाखी गाय का दूध तीन लीटर लें । द्रव्य औषधियों को कूट कर दूध में मिलाकर उबालकर जामन लगाकर (जमाकर) प्रात:काल बिलोकर मक्खन निकाल लें । यह मक्खन श्वेत दागों पर लगायें और यह छाछ 60 मि.ली. की मात्रा में प्रतिदिन सुबह-शाम पीलें । यह योग भी श्वित्र नाशक है ।

● मोर की अस्थि भस्म, बाबची, हल्दी सममात्रा में लेकर करेला के रस में खरलकर श्वेत दागों पर लगाना अत्यन्त लाभप्रद है ।

● बाबची के बीजों को 24 दिन लाखी गोमूत्र में भिगोकर रखें । (प्रतिदिन जितना मूत्र सूख जाये उतना ही डाल दें । तदुपरान्त बीजों को मसलकर छिलका उतार दें । इस मज्जा का चूर्ण 5 ग्राम, शुद्ध गन्धक 4 ग्राम मिलाकर मधु के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है ।

● बाबची को कूट-पीसकर सूक्ष्म चूर्ण कर (21 दिन जामुन फल स्वरस में, 21 दिन गोमूत्र में 21 दिन आर्द्रक स्वरस में) घिसकर लेप करने से श्वित्र, विचर्चिका नष्ट हो जाती हैं ।

स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी)

● सत्यानाशी के क्षुद्रप वर्षा के अन्त में जंगलों तथा खेतों में (जहाँ पानी का बाहुल्य रहता है वहाँ पर मुख्यत: नीची भूमि में) अधिक होते हैं । आमतौर पर यह अपने देश हिन्दुस्तान के सभी प्रदेशों और ग्रामों में पाई जाती है । गुणों की दृष्टि से यह सोने (Gold) से भी अधिक मूल्यवान मूर्धन्य औषधि है । पेनिसासिलीन (ऐलोपैथिक एन्टी बोयोटिक मेडिसिन) की प्रबल प्रतिद्वन्द्वी निरापद सर्वसुलभ मानसिक और शारीरिक रोग नाशक तथा कुत्सित, पाप कर्मज व्याधि सुजाक कुष्ठ इत्यादि का यह नाश ही नहीं वरन् सत्यानाश करने वाली औषधि है।

● सत्यानाशी के क्षुप 2 से 4 फीट की ऊँचाई वाले होते हैं । इसके पत्ते ऊँट कटेरी के समान तीक्ष्ण कांटो वाले लम्बे आकार के और फल लम्बे, गोल और कांटेदार होते हैं । इसके किसी अंग को तोड़ने पर पीत (पीला) रंग का दूध निकलने से इसे ''स्वर्णक्षीरी'' कहा जाता है । इसके आसपास उत्पन्न होने वाला क्षुप पनप नहीं पाता है, इसीलिए आम भाषा में इसे सत्यानाशी कहा जाता है ।

● आयुर्वेद मतानुआर स्वर्णक्षीरी शीतल, तिक्त, रेचक है । कन्डू, वात रक्तरोग, कृमि रोग, कफ एवं पित्त रोग, मूत्र-कृच्छ, ज्वर, पथरी, शोथ दाह और कुष्ठ रोग नाशक भी है ।

स्वर्णक्षीरी रस—इसके वृक्ष को लाकर उसको कुचलकर वस्त्र में दबाकर निचोड़कर निकाले गये रस को '''रस अथवा स्वरस'' कहा जाता है ।

स्वर्णक्षीरी घन रस—जिन पर फूल न आये हों (ऐसे छोटे-छोटे क्षुपों को लेकर) ओखली में खूब भली प्रकार कूटकर गाढ़े (मोटे) कपड़े में रखकर उसका स्वरस निकालकर लोहे की कड़ाही में डालकर मन्द-मन्द आग से पकाकर खूब गाढ़ा करके, सुखाकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें ।

स्वर्णक्षीरी शरबत—सत्यानाशी का रस और खान्ड सममात्रा में लेकर गरम जल में मिश्रित करके धीरे-धीरे मन्दाग्नि पर पकालें । (जब चिपक होने लग जाए) तब उतारकर बोतलों में बन्द करके सुरक्षित रखलें । इसकी मात्रा 10 से 20 बूँद तक है ।

सत्यानाशी चूर्ण—इसकी जड़ की छाल को धूप में सुखाकर कपड़छन चूर्ण करके शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें । इसको डेढ़ से तीन रत्ती तक की मात्रा में सेवन किया जाता है ।

(नोट—इसी प्रकार इसके बीजों का भी चूर्ण तैयार किया जाता है)

नोट—सत्यानाशी में बसन्त ऋतु में पीले रंग के फूल आते हैं और फल डोडे में लगते हैं । इनके चारों तरफ कांटे होते हैं उनमें से काले रंग के बीज निकलते है । इन बीजों में से तैल निकाला जाता है । इसकी जड़ को ''चोक'' कहते हैं। इसकी जड़, छाल, पत्ररस, धनरस तथा बीजों का तैल औषधि में उपयोग किया जाता है । प्राय: ग्रामीणजन इसके बीजों को सेंककर खूब कूट करके अन्डी की भांति पानी में उबालकर उनका तैल निकालते हैं और इस तैल को दाद, खाज, खुजली, चकत्ते, चोट और फोड़ा इत्यादि में प्रयोग करते हैं ।

वर्तमान समय में उपदंश, कुष्ठ,, विविध प्रकार के त्वचा सम्बन्धी रोगों में रक्त को शुद्ध करने हेतु विभिन्न प्रकार के विभिन्न औषधि निर्माताओं ने पेटेन्ट सालसा, कषाय इत्यादि (पेय) निर्मित कर बाजार में विक्रय हेतु उपलब्ध कर रखें हैं, सत्यानाशी उन्र सभी से अधिक श्रेष्ठ और लाभकारी है ।

● सत्यानाशी का स्वरस, या घनरस सेवन करने से उपदंश, फिरंग, दाद, चकत्ते, दुष्ट, कुष्ठ नाड़ी व्रण शीघ्र नष्ट हो जाते हैं । इसको उचित मात्रा में सेवन कराना और व्रण आदि पर लेप करना चाहिए ।

● सत्यानाशी के रस को घी से चुपड़ी हुई थाली में भरकर (इस प्रकार धूप में सुखावें कि जिसमें उसमें धूल न पड़े) और जब वह सूख जाए तब उसकी पपड़ी

को चाकू से धीरे-धीरे निकाल लें और सुबह-शाम नेत्रों में आंजने से नेत्रों का दुखना, गरमी, दाह, पीड़ा, लाली, रतौंधी, जाला, फूला, मोतियाबिन्द और अश्रुस्राव इत्यादि समस्त प्रकार के नेत्र-रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● नेत्रों के दुखते ही इसको घिसकर या इसके स्वरस की दो बूंदें नेत्रों में डालने से नेत्रों का दुखना और पीड़ा में शीघ्र लाभ होता है ।

● सत्यानाशी के रस को घी के साथ घोटकर (उसका रगड़ा बनाकर) नेत्रों में लगाने से नेत्र रोग दूर होकर ज्योति उज्ज्वल हो जाती है ।

● त्वचा के रोगों में उसकी छाल के चूर्ण को अथवा बीजों के चूर्ण को दही में मिलाकर खाना लाभकारी है ।

● स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल को बारीक पीसकर पुराने गुड़ में मिलाकर सेवन करने से 1 या 2 दस्त होकर कोठा साफ हो जाता है और उपदंश के व्रण सूखने लगते हैं ।

● स्वर्णक्षीरी के शर्बत को जल में डालकर (अल्पमात्रा में) पीने से मूत्रकृच्छ की पीड़ा और प्रमेह आदि रोग नष्ट हो जाते हैं ।

● सत्यानाशी का रस बर्र, कनखजूरा इत्यादि के काटे हुए स्थान पर लगाने से अत्यधिक लाभ होता है ।

● सत्यानाशी मूल-त्वक 3 से 6 ग्राम तक 10 काली मिर्च के साथ जल में घोटकर वस्त्र में ठन्डाई की भांति छानकर 6 ग्राम शुद्ध घृत एवं 10 ग्राम मधु मिलाकर 40 दिन लगातार पीने से समस्त प्रकार के रक्त रोग निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं । सहस्त्रों बार का परीक्षित योग है ।

● चर्म रोगों के लिए सत्यानाशी में गुण स्पष्ट रूप से पाया जाता है । उपदंश के फोड़े-फुन्सी एवं छिलन पर इसका दूध बाह्य प्रयोग करने से लाभ मिलता है।

उपदंश रोग में—इसके ताजे पौधे 1 किलो कूटकर 10 किलो पानी में भिगोकर (भवका यन्त्र द्वारा) मन्दाग्नि से 10 बोतल अर्क निकाल लें । 1-1 असि जल में तीन बार पीन अथवा सम मात्रा में औटा हुआ गौदुग्ध मिलाकर सेवन करने से सभी प्रकार के चर्म रोग (नये व पुराने) दूर हो जाते हैं । इस योग के प्रयोग से बड़े से बड़े फिरंग रोगजनित विष भी नष्ट हो जाता है ।

सत्यानाशी का तैल—सत्यानाशी पंचांग 300 ग्राम को अच्छी तरह लुगदी बनाकर उसे खादी के 1 गज लम्बे और 1 बालिस्त चौड़े कपड़े पर लेप करने के उपरान्त इस कपड़े को 1 मजबूत और लम्बे लोहे की सरिया के आगे के आधे

भाग पर लपेट कर सरसों के तैल में तर करने के बाद उस सरिया को लोहे की सन्डासी से मजबूती से पकड़कर कपड़े में आग लगा दें और उसके नीचे चीनी की प्याली रखलें ताकि अग्नि के प्रभाव से उस कपड़े में से तैल टपक-टपक कर प्याली में एकत्रित हो सके । इस तैल को चीनी के पात्र में भरकर सुरक्षित रखलें। इस तैल का मर्दन करने से मांसपेशियों की शिथिलता, वायु एवं शोथ दूर होती है । यह तैल हर प्रकार की सन्धियों की जकड़न और शिर:शूल में उपयोगी है।

● सत्यानाशी के बीजों का तैल विरेचन के लिए बूरे के साथ मिलाकर गरम जल से सेवन करने पर अथवा दूध में मिलाकर पीने से अद्भुत गुणकारी लाभ होता है । समस्त प्रकार के चर्म रोग, उपदंश जनित एवं फिरंग रोग से उत्पन्न हुए अथवा अन्य रोगों से उत्पन्न होने वाले विषों में शर्तिया लाभ होता है । उदर शूल में—यह तैल 30 से 60 बूंद तक शक्कर में मिलाकर गरम जल से सेन करना अत्यधिक लाभकारी है ।

● उत्तम चमकदार नीलाथोथा (तूतिया) 30 ग्राम लेकर चीनीमिट्टी के प्याले में रखकर उसके ऊपर सत्यानाशी का पीला दूध इतनी मात्रा में डालें कि जिससे पूरा नीलाथोथा भली-भांति तर हो जाए, फिर उसको धूप में सुखाकर (यह क्रिया बार-बार करें) 60 ग्राम सत्यानाशी के दूध में घोटकर टिकिया बनाकर सुखालें। इसके पश्चात् सत्यानाशी के पीले फूलों की लुगदी बनाकर (इसकी दो बराबर टिकिया बनाकर, बीच में नीला थोथा रखकर) दो सकोरे (मिट्टी के बरतन में) सम्पुट कर दो किलो बालू रेत में दबाकर 5 किलो जंगली (अरने अथवा अरन्य) कन्डों (उपलों) में आग लगाकर फूक दें । सम्पुट शीतल हो जाने पर इसमें सफेद रंग की नीला थोथा की भस्म तैयार हो जाएगी । इस भस्म को आधी से 1 रत्ती तक गोघृत में सेवन करने से उपदंश जनित समस्त रोग और श्वास रोग में अमृत समान लाभ प्राप्त होता है ।

● स्वर्णक्षीरी का अर्क निकालने हेतु इसका पंचांग (छाया शुष्क) तीन किलो लेकर 30 लीटर पानी में सायंकाल को भिगोकर दूसरे दिन प्रात:काल भवका यन्त्र से अर्क खींच लें । यदि कोई चिकित्सक बन्धु (पाठकगण) इसे विक्रय हेतु औषधालय में रखना चाहें तो इसमें यथोचित मात्रा में पीला रंग और सैक्रीन मिलाकर सीलबन्द शीशी पर 'रक्तशोधक अर्क' का लेबिल लगाकर रख सकते हैं । यह अर्क 1-2 चम्मच तक गोदुग्ध व 1 कप पानी में मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करायें। प्रथम सप्ताह के सेवन से ही आश्चर्य जनक गुण दृष्टिगत होने लगते हैं । सुजाक,

(उपदंश) साध्य अवस्था से लेकर समस्त प्रकार के चर्म रोगों की समस्त अवस्थाओं में यह अर्क अव्यर्थ और परम उपयोगी है । 21 से 51 दिन तक अथवा इससे अधिक दिनों तक (आवश्यकतानुसार) सेवन करें (नोट—भवका यन्त्र के अभाव में यदि अर्क का निर्माण न कर सकें तो 10 ग्राम चूर्ण को 100 मि.ली. पानी में उबालकर 25 मि.ली. पानी शेष रहने पर) सेवन किया जा सकता है अथवा. तीन कि. पंचांग को 30 लीटर पानी में उबालकर (10 लीटर पानी शेष बचने पर) प्रवाही क्वाथ के रूप में भी बनाकर उपयोग में लाया जा सकता है ।

● उपरोक्त अर्क समस्त प्रकार के चर्म रोगों में अनुभूत योग है । आधुनिक चिकित्सा में जहाँ भी पेनसिलीन इत्यादि का आधुनिक एन्टीबायोटिक औषधियों की आवश्यकता पड़ती है, वहाँ-वहाँ इसका धड़ल्ले से सेवन कर लाभान्वित हुआ जा सकता है । उपदंश, सुजाक, गलित कुष्ठ व रक्त दोषज रोगों के अतिरिक्त श्वास रोग में भी सुबह-शाम 1-2 मास तक इसका निरन्तर सेवन से लाभ होता है । ग्रीष्म ऋतु में होने वाले मूत्रकृच्छ रोग में भी इसका सेवन लाभप्रद है । विषम ज्वर तथा जलोदर में यह अपने मूत्रल गुणों के कारण दोष निर्हरण करती है ।

● दिसम्बर-जनवरी (जैसे ही इसके क्षुप उगने लगें), सत्यानाशी का क्षुप (पौधा) कूटकर स्वरस 1-2 तोला मधु से प्रयोग करने से सुजाक व उपदंश के ऐसे रोगी जो इन रोगों के कारण अपने जीवन से ही निराश हो गए हों, वह इससे सफलता प्राप्त कर सकते हैं । अथवा स्वर्णक्षीरी के मूल को धो-सुखाकर कूट पीसकर कपड़छन रस तथा शहद से 1-2 माह तक धैर्यपूर्वक निरन्तर सेवन करें ।

नोट—इसके सेवन के प्रारम्भ में यदि रेचन या वमन हो तो मात्रा कम कर देनी चाहिए । जैसे-जैसे सहन होने लगे, वैसे-वैसे मात्रा बढ़ाकर पूर्ण कर लेना चाहिए । सदैव ध्यान रखें कि यह एक अत्यन्त तीक्ष्ण औषधि है । इसलिए इसको अल्पमात्रा में ही सेवन करें, अधिक मात्रा में इसका उपयोग करने से शरीर में दाह, तृषा, और चित्त में व्याकुलता उत्पन्न हो जाती है ।

● स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल 100 ग्राम, हल्दी और चूना 50-50 ग्राम लेकर ढाई किलो पानी में काढ़ा करें । जब चौथाई जल शेष बचे तब आग से उतार छानलें । फिर 1 शीशी में 1 बोतल स्प्रिट मिलाकर 4 दिन धूप में रखकर पुन: फिल्टर द्वारा छान लें । यह स्वर्णक्षीरी का टिंचर आयोडीन टिंचर का बाप है।

● किसी भी जगह चोट लगने पर रुई के फाहे से 2-3 बार लगाने मात्र से पूर्ण लाभ हो जाता है ।

● किसी कारण से सिर में सूजन आ जाने पर 2-3 बार यह दवा लगाने से सूजन दूर हो जाती है ।

● यदि शरीर में फोड़ा फूट गया हो और दवा लगाने से घाव में कुछ असर न होता हो तो इसको दिन में 1 बार लगाकर धो डालने से बराबर रोपण क्रिया होती है और ऐसा मात्र 5-7 बार करने से कैसा भी सड़ा हुआ जख्म क्यों न हो, बहुत जल्द ठीक हो जाता है।

● खाँसी रोग में इसे 3-4 बूँद तक बबूलारिष्ट में देने से 2-3 दिन में ही लाभ हो जाता है।

● गल गन्ड रोग में जिसमें गले का काग बढ़ जाता है और खांसी चैन नहीं लेने देती है, रोगी बेचैन रहता है, यह दवा गले में 4-5 बार मात्र लगाने से आराम हो जाता है।

● सिर के फोड़े में इसे 1 बार लगा देने से भी लाभप्रद प्रभाव देखने को मिलता है।

● जिन बच्चों को दूध न पचता हो उन्हें बताशे में 1 या 2 बार बूँद प्रतिदिन देने से पूर्ण रूपेण लाभ हो जाता है।

अपामार्ग (लटजीरा या ओंगा)

अपामार्ग का पत्र स्वरस प्रत्येक प्रकार के जहरीले जीव जन्तु, कीड़ा-मकोड़ा, चींटा-चींटी, मच्छर, खटमल इत्यादि के दंश पर मलना अत्यधिक लाभकारी है।

नोट—आवश्यकता पड़ने पर यह वनस्पति उपलब्ध हो अथवा इस हेतु इसका तैल बनाकर हर समय घर पर रखकर लाभ उठाना चाहिए।

तैल बनाने की विधि—किसी शनिवार को सायंकाल (आयुर्वेद की जड़ी-बूटी उखाड़ने की परिपाटी के अनुसार) अपामार्ग के पौधे को न्यौता देकर लाने के लिए एक लोटा जल, खुरपी, हल्दी और चावल के दाने लेकर अपामार्ग पौधे पर जल में हल्दी चावल मिलाकर पौधे पर छिड़ककर मन्त्रोच्चारण करें। (मन्त्र 'मैं आया तेरे पास, तू चल मेरे साथ। मेरा काम बना दें, दधीच बन दिखा दे') खुर्पी से जड़ के चारों ओर ढीली मिट्टी खोदकर जल भरकर (अगले दिन) प्रातःकाल चलने की प्रार्थना कर दूसरे दिन (रविवार को) पुनः खुरपी और एक लोटा जल लेकर प्रार्थना कर जल से पौधे की जड़ (जमीन) को चारों ओर से सिक्त कर (मिट्टी ढीली कर) पौधे को उखाड़ लें।

● घर पर पौधे को लाकर जल से खूब भली-भांति साफ और स्वच्छ कर अपामार्ग पंचांग को टुकड़े-टुकड़े करके 1 साफ कड़ाही में डालकर ऊपर से

इतना जल भर दें कि अपामार्ग पंचांग के समस्त टुकड़े भली-भांति डूब जाये। तदुपरान्त चूल्हे पर रखकर इतना औटायें कि चौथाई से 1 तिहाई जल भाप बनकर उड़ जाए, तब कड़ाही उतारकर जल छानकर शेष पौधे की छाल अलग कर पीस लें (इस क्रिया अर्थात् उबालने से अपामार्ग पौधा की छाल गलकर मुलायम हो जाती है।) पिस जाने पर महीन चटनी बनाकर, उसी जल में घोलकर पुनः छान लें। जब अपामार्ग का औषधि अंश पूर्णरूपेण जल में आ जाएं, तब इस हरे-भरे रंगीन औषधि तरल को आधे से चौथाई (1 भाग अर्थात् 1 किलो तरल में चौथाई से आधा किलो तक तिल तैल (अथवा जितना भी कम बनाना चाहें) मिलाकर पुनः चूल्हे पर चढ़ायें (इस प्रक्रिया से जलीय अंश भाप बनकर उड़ जाता है) जब इसमें बुदबुदे उठने आरम्भ हो जायें तो समझ लें कि जलीय अंश भाप बनकर उड़ गया (छनछनाहट जलीय अंश भाप बनकर उड़ते समय होती है जो बाद में बन्द हो जाती है) फिर पूर्णतयः सावधानी पूर्वक कड़ाही उतारलें (नोट—यदि कड़ाही उतारते समय पूर्णरूपेण सावधानी न बरती गई तो तैल उबलकर आग में गिर सकता है जिसके फलस्वरूप आग भड़क कर कड़ाही में लग सकती है अतः सावधानी रखें कि तैल इतना न उफन पाये कि वह नीचे (उफनकर) आग में गिर सके) तदुपरान्त कड़ाही ठण्डी हो जाने पर तैल को छानकर किसी साफ स्वच्छ बोतल में सुरक्षित रखलें। यह सिद्ध साधित अपामार्ग का तैल बन गया। यह तैल घाव पर जलन पर, आग से जल जाने पर, विषैले कीड़े-मकोड़े (विषाक्त जीवों के दंश विष को एवं उसकी जलन पर) बन्दर इत्यादि के काट जाने पर रामबाण की भाँति अचूक लाभकारी है। आवश्यकतानुसार मालिश करें अथवा कपड़े में तर करके लगायें।

● अपामार्ग के बीज 5 ग्राम को भैंस के दूध में पकाकर चीनी और घी मिलाकर (खीर बनाकर) प्रतिदिन खाने से भस्मक रोग (इस रोग में रोगी की भूख अत्यधिक बढ़ जाती है वह दिन भर खाता रहता है, और खाना हज्म भी होता चला जाता है किन्तु अकेले ही 10 व्यक्तियों का भोजन करना भी तो गम्भीर व्याधि है। ठीक हो जाता है लाभ प्रथम सप्ताह में ही देखने को मिलता है और रोगी 3-4 सप्ताह के निरन्तर सेवन से रोग मुक्त हो जाता है।

● अपामार्ग का क्षार श्वास रोग में कफ का निस्सारण कर दौरे को शान्त करता है।

अश्वगन्धा (असगन्ध)

● 3 ग्राम अश्वगन्धा चूर्ण में 3-3 ग्राम मिश्री और घी मिलाकर तथा ऊपर से दूध में मिश्री मिलाकर पीने से अनिद्रा रोग दूर होकर गहरी (निद्रा आती है)।

● अश्वगन्धा चूर्ण 3 ग्राम, मिश्री 3 ग्राम तथा घी 10 ग्राम मिलाकर नित्य लगातार सेवन करने असाध्य गर्भाशय का रक्तस्राव भी रुक जाता है।

● असगन्ध और मिश्री 3-3 ग्राम दूध के साथ नित्य प्रति (लगातार) सेवन करने से कमजोरी दूर होकर सेवनकर्ता हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

● उपर्युक्त योग को नित्य सेवन करने तथा भोजन में मात्र दूध लेने से ही मात्र 40 दिनों में धातुगत एवं शारीरिक दुर्बलता निःसन्देह ही दूर हो जाती है तथा सेवनकर्ता वीर्यवान और शक्तिशाली हो जाता है।

● असगन्ध, चोबचीनी और आँवला सममात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर 6-6 ग्राम की मात्रा में नित्य सुबह-शाम दूध या जल से सेवन करने से 7 से 14 दिनों में ही समस्त प्रकार की वात-व्याधियाँ (वायु, शरीर निर्बलता, रक्त विकार) इत्यादि दूर हो जाती है।

● बालकों को अश्वगन्धा का चूर्ण 4-6 रत्ती की मात्रा में दूध के साथ देने से वह 1 महीने में ही सुन्दर, सुडौल और हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

● अश्वगन्धा वातनाशक, पौष्टिक और बाजीकरण गुणों से भरपूर है। इसके नित्य चूर्ण के सेवन से शारीरिक दर्द, शिथिलता, निर्बलता, हाथ-पैरों में जलन इत्यादि निःसन्देह दूर हो जाती है।

शोभान्जन (सहंजना)

यह भारतवर्ष के प्रायः सभी स्थानों में पाया जाता है। इसका वृक्ष कहीं-कहीं बहुत ऊँचा (30-40 फीट तक) देखने में आता है। कार्तिक मास में (जब गेहूँ बोये जाते हैं) तब इसमें पुष्प आना प्रारम्भ होते हैं जो रक्त वर्ण के गुच्छों में नीचे की ओर लटके हुए अत्यन्त प्रिय गन्ध के होते हैं। तदुपरान्त माघ-फाल्गुन मास तक फलियाँ आनी प्रारम्भ हो जाती हैं जो आधी से चौथाई इंच तक मोटी और डेढ़ से दो फीट तक लम्बी (हरी-हरी) होती हैं। (इसका शाक बनाकर खाया जाता है तथा कहीं-कहीं अचार भी डाला जाता है) यह फलियां बैसाख-ज्येष्ठ मास तक पक जाती है (पकने पर) श्वेत वर्ण का 3-4 ओर को को सफेद कोने से

निकले हुए इसमें बीज निकलता है। (इसी को श्वेत मरिच कहा जाता है) शोभान्जन के पत्तों और स्वरस को प्रायः औषधियों में व्यवहार किया जाता है।

शोभान्जन तीन प्रकार का होता हैं। श्वेत, कृष्ण और रक्त। आचार्य चरक ने इसके मूल में आसव निर्माण शक्ति मानी है। इसके अतिरिक्त इसके फूल में गुण भी है। मूत्रकृच्छ हेतु इसकी त्वचा प्रयोग में लाई जाती है। चिकित्सा में इसके फल और बीज का भी प्रयोग होता है।

बीज का प्रयोग नेत्रगत विष में भी किया जाता है। इसके बीजों में 1 प्रकार का तैल होता है। बीजों का प्रलेप वात रक्त की पीड़ा मूर्च्छा तथा शिरो विरेचन के निमित्त किया जाता है।

सहजने का फल कृमिनाशक है। अन्य वृक्षों की अपेक्षा इसकी त्वचा अधिक मोटी और गूदेदार होती है। प्रायः देखने में आया है वृक्ष में प्रायः सत्व (Alkalaids) उसके तने में होता है। (जिन वृक्षों) की लताओं के पत्र मोटे दल के होते हैं, उनके पत्रों में (Alkalaids) अर्थात् उस वृक्ष के प्रभावकारी सत्व उसके पत्रों में ही होते है। जैसे—पत्थर बेर (पानपत्ता) घृतकुमारी, सुदर्शन आदि। इसी प्रकार कुछेक वृक्षों के मूल में ही अधिक गुणकारी द्रव्य होते हैं। जैसे—आलू, कलिहारी, मूली, गाजर, बिदारीकन्द, बराहीकन्द इत्यादि। कुछ के पुष्पों में जैसे—गुलाब में रेचक, धायपुष्प में आसव के सन्धान कारक गुण हैं।

यह औषधि आभ्यन्तरिक विद्रधि में अपना विशेष प्रभाव दिखलाती है। इसका प्रभाव 24 घंटे के अन्दर आरम्भ हो जाता है और एक सप्ताह में रोगी मृत्यु के मुख से निकलने में समर्थ हो जाता है। जहाँ-जहाँ ऐलोपैथी की एन्टीबायोटिक्स औषधियों—पेनिसिलीन, टेट्रासायक्लिन, सल्फा इत्यादि का प्रयोग और प्रभाव होता है, वहाँ-वहाँ उतने ही प्रभावकारी रूप से इस शोभान्जन का प्रयोग हितकर है। इस औषधि का विशेष प्रभाव उदर क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली अन्तर विद्रधियां, आन्त्र-पुच्छशोथ यकृत विद्रधि, प्लीहा, विद्रधि, हृदय शोथ, फुफ्फुस प्रदाह, निमोनिया, वृक्क शोथ, अश्मरी, मूत्रकृच्छ, गुदपाक, उदर कृमिजन्य उपद्रव, कृमि रोग, अर्शांकुर प्रदाह, आन्त्रिक शोथ, कर्णपाक, मुखपाक, गलशोथ, अदृश्य व्रण, मस्तिष्कावरण प्रदाह (मैनिन्जाइटिस) पीनस शोथ, जीर्ण, शिरोरोग, बाहय प्रयोगार्थ में संशोथ व्रण, संक्रमित व्रण, धनुषटंकार (टिटनैस) विसर्प, शोथ तथा व्रणशोथ में होता है।

शोभान्जन की ताजी त्वचा को खरल में या सिल पर कूटकर कपड़े में

निचोड़कर इसका स्वरस निकालें और प्रात:सायं बलाबल के अनुसार युवा को दो तोला के लगभग, बालकों को अवस्थानुसार 1 से 6 माशे तक अथवा 1 तोला तक मधु मिलाकर दें। इसे पीने से कम से कम 1 घन्टा पूर्व और पश्चात् भोजन नहीं करना चाहिए ताकि औषधि का समुचित प्रभाव हो सके। कभी-कभी न्यून मात्रा में औषधि सेवन से लाभ नहीं मिलते हैं, तब मात्रा बढ़ा दी जाती है, तब रोग नाशक प्रभाव कुछ घंटों में ही दिखलाई पड़ने लगते हैं।

इसकी शुष्क त्वचा ग्राह्य है। इसे गरम पानी में 4-6 भिगोकर कूटकर रस निकाल लेना चाहिए। (किन्तु इस प्रकार गुण न्युन हो जाते है। रोगी को गाढ़े काढ़े की आवश्यकता होती है।) स्वरस की रक्षक औषधि) जैसे—रैक्टीफाइड स्प्रिट डालकर या संजीवनी सुरा डालकर रखना चाहिए। 1 बोतल में 1 औंस स्प्रिट काफी है।

सहजने (शोभान्जन) के स्वरस में 1 भाग में 9 भाग (Alchohol Absolute) मिलाकर 4-5 दिन धूप में रखदें। फिर फिल्टर पेपर द्वारा छानकर (शुद्ध एल्कोहल द्वारा धुली किसी साफ-स्वच्छ शीशी में) रख लेना चाहिए। इस प्रकार यह इसका मदर टिंचर बन जाता है। इसकी मात्रा 5 से 15 बूंद अथवा आवश्यकतानुसार कुछ कम या अधिक प्रयोग करना चाहिए। (नोट—हांलाकि इसके अधिक मात्रा में सेवन करने से कोई विषैला लक्षण प्रकट नहीं होता है किन्तु रोगी को मल-मूत्र खुलकर आने लगता है जो पतला होकर अतिसार का रूप भी धारण कर सकता है। किन्तु मात्रा कम देने पर इसकी उग्र तथा अप्रिय गन्ध कष्टकर हो सकती है। इसके अतिरिक्त आमाशय में खराश करने के प्रभाव से भी वमन आ सकती है, किन्तु ऐसा बहुत ही कम होता है।

कुचला

कुचला वात व्याधियों की अमृत तुल्य अमोघ औषधि है। आमवात, गृध्रसी, पक्षाघात, अर्दित इत्यादि पर तो इस औषधि का अत्यन्त ही आश्चर्य जनक कार्य है। मदकारक और वातनाशक होने के कारण यह प्रत्येक प्रकार के शूल व दर्द में उपयोगी है। इसमें तिक्त रस प्रधान है। इसके फलस्वरूप यह ज्वर में भी उपयोगी है। मन्दाग्नि के लिए इस औषधि के समान संसार में कोई अन्य दूसरी औषधि नहीं है। क्योंकि कुचला अग्नि प्रदीपक है अत: पाचनकर्ता है अजीर्ण व कृमिनाशक भी है।

कुचला स्थावर विष होने के कारण जंगम विषों को नष्ट करता है। यह समस्त प्रकार के जहरीले-जानवरों व जन्तुओं के दंशों पर बाह्य प्रयोग के रूप में सफलता पूर्वक चिकित्सकों द्वारा प्रयोग की जाती है। सर्पविष और अलर्क विष पर कुचला खिलाना परम लाभप्रद है। कुचले में पुष्टिकारक गुण भी मौजूद हैं, इसलिए इसका पौष्टिक योगों में प्रयोग किया जाता है। यकृत विकार की कुचला सर्वश्रेष्ठ औषधि मानी जाती है। इसके कुछ दिन निरन्तर सेवन करने से यकृत के सभी विकार जैसे—दर्द, सूजन व वृद्धि इत्यादि में लाभ हो जाता है। आन्त्रपुच्छ-प्रदाह में यह रामबाण की भांति परम लाभप्रद है। कुचला स्नायुमण्डल को भी उत्तेजना प्रदान करता है। अत: स्नायविक शिथिलता से होने वाली व्याधियाँ इसके सेवन से ठीक हो जाती है। कुचला रक्त शुद्धि हेतु भी सेवनीय और लाभप्रद है। अफीम खाने वाले मनुष्यों को अफीम की लत छुड़ाने वाली अक्सीर दवा है।

● कुचला श्वास रोग में भी लाभप्रद है। (किन्तु लगातार अधिक समय तक सेवन करना पड़ता है।) प्रमेह रोग नाशक है। पुराने प्रमेह को तो अमृततुल्य है। मसाने की कमजोरी (इसमें रोगी को बार-बार पेशाब होता है और रोगी मूत्र के वेग को रोक नहीं पाता है, परिणामस्वरूप वस्त्र खराब हो जाते हैं।) में भी कुचला का कार्य अद्वितीय है। यह हृदय की रक्त वाहिनियों नाड़ियों पर पूर्णरूपेण प्रभावकारी है। यह हृदय की गति (संकोच विकास क्रिया का तथा हृदय की अन्य क्रियाओं को भी उचित मात्रा में सेवन करने से ठीक करता है।

● कुचला को गोमूत्र में घिसकर लेप करने से कर्णशूल शोथ व विद्रधि में शीघ्र आराम हो जाता है।

● कुचला गोघृत में घिसकर व्रणों पर लगाने से उनमें होने वाली पीड़ा और मवाद बन्द होकर व्रण जल्दी ठीक हो जाते हैं।

● कान के दर्द और बहिरापन में कुचला को तिल के तैल में पकाकर कान में डालने से लाभ हो जाता है।

● कुचला का विशेष पीड़ानाशक योग—कुचला और देशी कपूर 80-80 ग्राम, श्रृंगिक चूर्ण 50 ग्राम, अफीम (उत्तम किस्म की) 25 ग्राम, एसिड कार्बोलिक लिक्विड 20 ग्राम, मैथिलेटिड स्प्रिट और तिल का तैल 1-1 बोतल लें। सर्वप्रथम कुचला चूर्ण और श्रृंगिक चूर्ण को 2-2 औंस स्प्रिट में घोलकर बोतल बन्द कर 15 दिन के लिए रख दें (बोतल प्रतिदिन हिला दिया करें)। तदुपरान्त स्प्रिट को छान कर रखें। फिर अफीम को 2 औंस स्प्रिट में घोलकर इसे उक्त कुचले व

श्रंगिक वाली छनी हुई स्प्रिट में मिलाकर रख दें। जब दोनों वस्तुऐं खूब भली प्रकार मिल जायें तो सभी औषधियाँ डालकर भली प्रकार से मिलाकर सुरक्षित रखलें। यह विशेष पीड़ाशामक योग तैयार हो गया। इसकी मालिश करने चाहे किसी भी प्रकार का दर्द क्यों न हों तुरन्त ही छूमन्तर हो जाता है। वायु और निमोनिया के दर्द की यह अचूक दवा है। जहरीले जन्तुओं के दंश पर भी इसको लगाकर मलना लाभप्रद है।

नोट—यह योग जहरीले पदार्थों के मिश्रण से बना है अत: प्रयोग करने के उपरान्त हाथों को खूब भली प्रकार साबुन से साफ करना कदापि न भूलें।

● शुद्ध कुचले के 50 ग्राम चूर्ण को 1 पौण्ड रैक्टीफाइड स्प्रिट में घोलकर 10 दिनों तक रख दें, तत्पश्चात् छानकर सुरक्षित रखलें। यह कुचला सुरासार बन गया। इसके सेवन से जठराग्नि प्रदीप्ति होती है। यकृत वृद्धि दूर होकर वह कार्यक्षम बन जाती है। कब्ज का रोग नष्ट हो जाता है तथा शरीर में नवस्फूर्ति, नव उत्साह का संचार होता है। यह पुष्टिबर्धक, बल-वीर्य बर्धक और कामोद्दीपक भी है। मात्रा (वयस्कों के लिए) 5 से 10 बूंद तक पानी मिलाकर दिन में दो बार भोजनोपरान्त है।

● शुद्ध कुचला 20 ग्राम, लौह भस्म 10 ग्राम और स्वर्ण मकरध्वज 6 ग्राम लेकर सभी औषधियों को दशमूल के क्वाथ में खरल करके मूँग के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। यह स्वप्नदोष घनवटी तैयार हो गई। इसके सेवन से स्वप्नदोष का रोग शर्तिया दूर हो जाता है। कमर दर्द, सिरदर्द, पिन्डलियों का दर्द इत्यादि और कमजोरी के कारण होने वाले अन्य उपद्रवों में परम लाभकारी योग है। मात्रा 1 से 2 गोली तक सुबह-शाम दूध से सेवन करें।

● शुद्ध कुचला 20 ग्राम, भीमसैनी कपूर और हीरा हींग 10-10 ग्राम लेकर खरल में डालकर ब्राह्मी के क्वाथ में मर्दन करके चने के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। यह हिस्टीरिया नाशक वटी तैयार हो गई। ये 1-2 गोली नित्य प्रति सुबह-शाम ताजा पानी से कुछ दिनों लगातार सेवन करने से हिस्टीरिया रोग दूर हो जाता है।

● शुद्ध कुचला, शुद्ध अफीम और काली मिर्च (सभी सममात्रा में) लेकर अदरक के रस में खरल करके मूँग के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे समीरगज केसरी के नाम से जाना जाता है। इसकी मात्रा 2 से 4 गोली तक है। इसे जल से सेवन करने का विधान है। इसमें नि:सन्देह लाभ होता है। हैजा में भी उपयोगी है।

● शुद्ध कुचला, शुद्ध शिलाजीत, बंगभस्म, लौह भस्म (प्रत्येक 10-10 ग्राम) को लेकर गुड़मार बूटी के क्वाथ में मूंगे के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। यह 'मेहान्तक वटी' के नाम से जानी जाती है। इसकी मात्रा 1 से 4 गोलियाँ तक दुग्ध के साथ दिन में दो बार (सुबह-शाम) है। इसके सेवन से बहुमूत्र रोग, मसाने की कमजोरी व प्रमेह आदि में शर्तिया लाभ होता है।

ईसबगोल

● ईसबगोल की भूसी सर्वविदित है। यह श्वेत रंग की बुरादे जैसी ठीक खोपरा (नारियल या गोला) की गिरी की बुरादे जैसी होती है। इसका कोई स्वाद नहीं होता है किन्तु मुख में रखते ही लुआब उत्पन्न कर देती है।

● यह दो प्रकार के गुणों से भरपूर है नं. 1. जब पेट में कब्ज हो जाए, समय पर शौच न होता हो ऐसी स्थिति में रात को चुटकी भर ईसबगोल की भूसी खाकर ऊपर से गरम जल पी लेने से प्रात:काल मल विसर्जन अच्छी तरह होता है। ऐसा नित्य करने से पेट में किसी भी प्रकार का रोग नहीं होता है। स्फूर्ति एवं बल प्राप्त होता है। कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से कब्ज दोष जड़ से नष्ट हो जाता है। 2. जब बार-बार शौच की शिकायत हो, दस्त या पेचिश की शिकायत रहने लगी हो, उदर में पीड़ा या मरोड़ का दोष हो तो ईसबगोल की भूसी और शक्कर 1-1 चुटकी लेकर खायें तथा ऊपर से शीतल जल पियें। समस्त शिकायतें शीघ्र दूर हो जाती हैं।

नोट—यदि ईसबगोल भूसी के साथ सौंफ का अर्क लिया जाए तो दिन में मात्र 2-3 बार सेवन करते रहने से दस्त शीघ्र ही बन्द हो जाते हैं।

बच

यह अपने प्राणप्रिय भारतदेश में सर्वत्र पाई जाती है। एशिया खण्ड का मध्य भाग ही इसकी उत्पत्ति का मुख्य स्थान माना जाता है। श्वेत रंग (वर्ण) की बच ईरान में उत्पन्न होती है जो खुरासानी बच के नाम से मशहूर है। इसके गुण तो हिन्दुस्तानी बच के अनुसार ही है किन्तु मुख्यत: वातरोगों में खुरासानी बच अधिक लाभप्रद है। इसमें गन्ध भी अधिक उग्र रहती है। वैसे आयुर्वेद मतानुसार बच की अनेक जातियां हैं जैसे—खुरासानी बच, घुड़बच, श्वेत बच, महाभरी बच, कुलीजन और अकरकरा इत्यादि (किन्तु औषधियों योगों में मुख्यत: श्वेत बच का ही उपयोग किया जाता है।

ईरानी (खुरासानी) बच रेतीली भूमि में उत्पन्न होती है, जबकि हिन्दुस्तानी बच कीचड़ या पानी की जगह (भूमि) पर उत्पन्न होता है। इसकी लम्बाई सामान्यत: 1 पुरुष की लम्बाई के बराबर होती है। इसके पत्ते बाजरा अथवा ईख के पत्तों के समान होते हैं। इसके मल में बहुत सी जटाओं के समान शाखायें और प्रशाखायें चारों ओर फैली होती हैं। इस पौधे की जड़ को ही बच कहा जाता है वैसे तो इसके सम्पूर्ण पौधे में गन्ध समाहित रहती है किन्तु इसकी जड़ में अधिक गन्ध होती है। इस पर फूल नहीं आते हैं। पौधे के पिन्ड में रोम अधिक रहते हैं।

बच चरपरी, गरम, कड़वी और वमन तथा अग्नि को बढ़ाने वाली है। यह मल-मूत्र को क्षुद्र करती है और मल आदि की रूकावट को दूर करके अफारा (पेट फूलना) शूल, अपस्मार (मृगी) तथा कफ को नष्ट करती है। उन्माद, भूत, कृमि और वातहारक है। यह क्षुधाबोधक, स्नायुवेग शामक, चेतनाकर, कामोद्दीपक, जननेन्द्रियोंत्तेजक है। यह श्वास नलिका और कंठ के विकारों का शमन करती है। जिह्वा के जड़त्व का हरण करती है और स्मरण शक्ति बढ़ाती है। यह शोथ और वात ज्वरं नाशक भी है। आयु सम्बर्द्धन का गुण भी इसमें मौजूद है। यह शुक्रजनक भी है। एक साधारण सी जड़ी में कुदरत ने इतने अधिक गुण भर दिए हैं कि भगवान धन्वन्तरि के प्रति मस्तक स्वत: ही श्रद्धा से नत हो जाता है। यह शरीर तथा भूमि के दृश्य और अदृश्य सभी प्रकार के कीट-कीटाणुओं को विध्वंस करने की अपूर्व क्षमता रखती है।

● यदि भूख बराबर न लगती हो तो बच का महीन चूर्ण गुंजाकर शहद के साथ सुबह-शाम चाटें।

● यदि पेट में किसी अशुद्ध पदार्थ चले जाने अथवा विष सेवन कर लेने पर जी मिचलाता हो तो तुरन्त बच का चूर्ण दो माशा की मात्रा में नमक गरम जल के साथ पिलायें। तुरन्त कै होकर शान्ति मिलेगी।

● यदि पेट वायु (गैस) के कारण फूल गया हो (दस्त न होते हों) तो वच का चूर्ण 1 माशा, बड़ी सौंफ 1 माशा घी-शक्कर के साथ सेवन करायें तुरन्त दस्त होकर पेट हल्का हो जाएगा।

(नोट—इसका सेवन घी-शक्कर के साथ ही करने का विधान है अथवा कै हो जाएगी)

● यदि अग्निमांद्य की शिकायत हो, रोज दस्त साफ न आता हो, पेट फूलता हो, भूख न लगती हो, ग्लानि रहती हो तो वच, गजपीपर, काली मिर्च, सौंठ, हर्र, संचलखार, भतीस, (सभी सममात्रा में) लेकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 1 से 2 माशा तक की मात्रा में सेवन करें।

पेट में दर्द हो तो—वच का महीन चूर्ण 4 रत्ती 1 छटांक छाछ (तक्र) के साथ थोड़ा सा नमक डालकर सेवन करें। अत्यधिक लाभप्रद योग है।

● छोटे बच्चों के उदर में कृमि होने पर 2 रत्ती बच का चूर्ण दूध के साथ दिन में 3-4 बार सेवन कराने से कृमि नष्ट हो जाते हैं।

● अपस्मार (मृगी) में बच चूर्ण 1 से 2 माशा तक शहद के साथ चटायें। रोगी को मात्र दूध और भात ही खाने को दें। अथवा बच का खूब महीन चूर्ण 1 मलमल के कपड़े में बांधकर (पोटली बनाकर) बार-बार जोर से रोगी को सुंघाते रहने से मस्तिष्क का विकृत कफ नष्ट होकर मृगी शान्त हो जाती है।

नोट—यदि किसी भी कारण से मूर्च्छा आ गई हो तो केवल वच का महीन चूर्ण उसके (रोगी के) नथुनों में लगावें, छींक आने से वह तुरन्त ही सचेत हो जाएगा। इस पोटली को सुंघाने से मस्तक शूल में भी लाभ होता है।)

● छोटे बालकों को 1 प्रकार का अपस्मार हो जाता है जिसको बालकापस्मार के नाम से जाना जाता है। इस रोग में बालक को दिन भर में कई बार दौरा आता है, वह अकस्मात मूर्च्छित हो जाता है, मुख से फेन आने लगता है तथा उसके अंगों में ऐंठन शुरू हो जाती है। इस रोग में बच अत्यधिक लाभप्रद है। 1 या 2 वर्ष आयु के बालक को केवल 2 रत्ती बच का चूर्ण माता या गाय के दूध के साथ (दूध के अभाव में शहद के साथ) दें तथा इसके चूर्ण की धूनी (चूर्ण आग पर डालकर उठते हुए धुऐं को नाक में सुंघवाना) दें।

● उन्माद रोग के होने पर बच और कुलिंजन का चूर्ण 1 से 2 माशा तक शहद के साथ चटायें तथा इसके चूर्ण की धूनी दें।

● सूर्यावर्त्त (अर्द्ध मस्तक शूल) में केवल बच चूर्ण का नस्य देने से अथवा बच और पीपल का (समभाग) चूर्ण लेकर महीन कपड़े में पोटली बाँधकर बार-बार सूंघने से यह रोग नष्ट हो जाता है।

● वच चूर्ण 3 माशा, ब्राह्मीपत्र चूर्ण 1 माशा (दोनों को मिलाकर) मिश्री, मवखन के साथ प्रात:काल सेवन करने से सिरदर्द तो नष्ट होता ही है, साथ ही वीर्य पुष्ट होता है और स्मरण शवित तीव्र होती है।

● शीत अथवा ठण्ड के कारण गला बैठ जाना, गले में खुजली या शुष्क खांसी होना, कण्ठ के विकार उत्पन्न होना जैसा कि धार्मिक प्रवचन करने वालों सन्तों को अथवा भाषण करने वाले नेताओं को अथवा गायकों और अभिनेताओं के गले में हो जाता है। उनका गला रुंध जाता है आवाज बैठ जाती है। नित्य

शुष्क खाँसी आती है—इन समस्त विकारों में मात्र वच का टुकड़ा मुख में रखकर चूसने से जो लार निकले उसे धीरे-धीरे गले के नीचे उतारने से गले की खुजलाहट मिटकर आवाज साफ हो जाती है। खांसी नष्ट हो जाती है। यह गले को साफ करके कण्ठ को मधुर बनाती है आजकल फिल्मों के प्लेबैक सिंगर अथवा बड़े नेतागण अथवा वक्तागण गला साफ करने के लिए विदेशी गोलियाँ ''जीनतान' इत्यादि खाते हैं उनसे अनुरोध है कि वह जरा वच के टुकड़ों का व्यवहार करके तो देखें—स्वत: ही भगवान धन्वन्तरि को स्मरण कर नत-मस्तक होने को मजबूर हो जायेंगे और विदेशी दवाओं को सदैव के लिए भूल जायेंगे।

● वच, नौशादर, बहेड़ा, मुलहठी, खैर (कत्था) और कचनार (कांचनार) की छाल सभी सममात्रा में लेकर महीन चूर्ण कर (शवकर या शहद की चाशनी में इसकी गोलियाँ बाँधकर) 1-1 मुख में रखकर चूसने से अत्यधिक लाभ होता है तथा खाँसी भी मिटती है।

● मस्तक या श्वास नलिका में सर्दी हो गई हो तथा कफ के कारण छाती जकड़ गई हो, पसलियों तथा छाती में दर्द हो (यह शिकायतें प्राय: इन्फ्लूऐंजा ज्वर में होती है। तो वच का चूर्ण गरम पानी में मिलाकर नाक, छाती तथा मस्तक पर गरम-गरम लेप करने तथा कुछ (सूखे) वच चूर्ण का नस्य लेने और थोड़ी मात्रा में चूर्ण शहद के साथ चाटने से तुरन्त लाभ प्राप्त होता है।

● श्वास रोग (दमा, अस्थमा) में भी वच चूर्ण का उपयोग अत्यधिक लाभकारी है। किन्तु ठीक-ठीक लाभ हेतु इसवने अधिक मात्रा में सेवन करें ताकि रोगी का जी मिचलाने लगे और वमन होने की भ्रान्ति हो तत्पश्चात् कम मात्रा में लगातार सेवन करते रहना चाहिए।

● वच चूर्ण 3 माशा, ब्राह्मी पत्र चूर्ण 1 माशा दोनों को मवखन मिश्री के साथ प्रात:काल सेवन करने से वीर्य पुष्ट होता है स्मरणशक्ति तीव्र होती है।

● वच और वंशलोचन आधा-आधा माशा चूर्ण सुबह-शाम चाटने से (शहद से) गले के रोग दूर होकर शरीर पुष्ट होता है।

● वच चूर्ण, वंशलोचन चूर्ण, रूममस्तंगी, छोटी इलायची के दाने (1-1 तोला) प्रवाल पिष्टी 3 माशा, कूजा मिश्री ढाई तोला लें। समस्त औषधियों को कूट-पीस छानकर सुरक्षित रखें। इसे प्रात:काल 3 माशा की मात्रा में शहद से चाटकर ऊपर से 250 ग्राम गोदुग्ध (गरम) पीने से बल-वीर्य की वृद्धि होकर शरीर की पुष्टि होती है तथा शीघ्रपतन हेतु यह योग रामबाण है।

(नोट—प्रयोगकाल में पूर्ण ब्रह्मचर्य पूर्वक रहें तथा शारीरिक श्रम द्वारा कब्ज को दूर रखें।)

● बच चूर्ण 1 माशा, सौफ चूर्ण 3 माशा को सायंकाल में गरम दूध के साथ सेवन करने से कब्ज दूर हो जाती है।

● गर्भवती स्त्री को जब वायु के प्रकोप से आनाह रोग (इस रोग में दस्त और पेशाब बन्द हो जाता है) हो जाए तो वच चूर्ण 4 रत्ती और लहसुन 1 रत्ती 250 ग्राम दूध में डालकर, पकाकर इसमें आधी रत्ती भुनी हींग और किंचित काला नमक डालकर पिलाना अत्यन्त ही लाभपद है।

● वच को जल के साथ पीसकर इसमें थोड़ा-सा एरन्ड का तैल मिलाकर नाभि पर लेप करने बगैर किसी तकलीफ के सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

● प्रसुति के समय यदि गर्भ आड़ा (तिरछा) हो गया हो तो—वच 6 माशा और केशर 1 माशा को गधी के दूध (गधी के दूध के अभाव में बकरी के दूध में) खरलकर लम्बी सी गोली बनाकर लेप करने से सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

● जख्म या व्रण होने पर वच में बड़े से बड़े जख्मों को भर देने की अपार शक्ति है। जख्म पुराना हो गया हो, कीड़े पड़ गए हों या दुर्गन्ध आती हो तो वच का महीन किया हुआ चूर्ण और कर्पूर चूर्ण (समभाग) लेकर जख्म में भरें।

● शरीर के किसी भी भाग में सूजन होने पर वच चूर्ण अथवा वच को जलाकर इसकी राख को रैडी के तैल में खरल करके सूजन युक्त भाग पर मालिश करने से अवश्य लाभ होता है। यहाँ तक कि इस प्रयोग से सन्धिवात की सूजन (शोथ) भी नष्ट हो जाती है।

● कान में राध बहती हो, दर्द करता हो तो वच और कपूर समभाग लेकर तिल के तैल में सिद्ध करके (पकाकर तथा छानकर) थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कान में डालने से लाभ होता है।

● यदि किसी कारण से मूत्र साफ न होता हो तो दो रत्ती भर वच चूर्ण दूध तथा शक्कर के साथ पीने से मूत्र की रुकावट दूर हो जाती है।

● कृमिनाश हेतु ऊनी या गरम कपड़ों को कीटों से बचाव (सुरक्षा) हेतु वच का चूर्ण उन पर बुरक कर रखने से कीट नष्ट हो जाते हैं। सभी प्रकार सूक्ष्म जन्तु अथवा कीट इसके प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं।

● यदि सिर के बालों में जुएं हो गए हों अथवा पालतू पशुओं के शरीर में किलौनियां पड़ गई हों तो वच का चूर्ण अथवा उसका काढ़ा बनाकर प्रभावित अंग में लगाने अथवा धोने से उनका नाश हो जाता है। साधु-सन्यासी लोग इसकी गाँठों को अपने जटाजूट में धारण कर सिर के कृमि आदि से बचे रहते हैं।

● छोटे बच्चों को बच की गंडेरिया रेशम के धागे में गूंथकर माला के रूप में पहनाना अत्यन्त उपयोगी है । इस प्रयोग से बच्चे के शरीर पर कीटाणुओं का आक्रमण नहीं होता है । (यदि बच्चा अपने स्वाभावानुसार इन गन्डेरियों को अपने मुख में डालता रहेगा तो कफज रोग पास नहीं आयेंगे और दांत सहजता से निकल आयेंगे तथा बच्चा जल्द ही बोलने लगेगा ।

● जिस शीत ज्वर अथवा विषम ज्वर पर सिनकोना तथा कुनैन से कुछ भी लाभ नहीं होता है वहाँ पर ऐलोपैथिक डाक्टर बच को सिनकोना के साथ अथवा केवल वच के चूर्ण को ही जल में घोलकर देने की सिफारिश करते हैं और इससे शर्तिया लाभ होता है ।

● बच और चिरायता का चूर्ण सममात्रा में (1 से 2 माशे तक) शहद के साथ दिन में तीन बार चटाने से तथा बच और हरड़ का चूर्ण घी में मिलाकर धूप देने से विषम-ज्वर में विशेषकर बच्चा रोगी को शर्तिया लाभ होता है ।

● बच का चूर्ण 1 औंस को 10 औंस खौलते पानी में डालकर 6 घंटे तक रखने के पश्चात् उसमें 1 औंस छानकर प्रतिदिन सेवन करना परम उपयोगी है। यह शक्तिबर्धक पेय है । अथवा वच औंस डन्ठल चिरायता 1 औंस और पानो 1 पिन्ट लें । औषधियों को 6 घंटे तक पानी में भिगोकर दिन में 3 बार व्यवहार करें ।

● बच चूर्ण 2 औंस धनिया 1 ड्राम, काली मिर्च आधा ड्राम, पानी 1 पाइन्ट लें । औषधियों को पानी में डालकर उबालें जब पानी 18 औंस शेष रह जाए तो छानकर सुरक्षित रखलें । बच्चों को दो चम्मच पिलायें । यह योग आँव की बीमारी में परम लाभप्रद है ।

● बच और आँवला को अष्टमांश क्वाथ बनाकर बोतल में रखलें । इससे कुल्ला करने से दाँत और मसूढ़े मजबूत रहते हैं और सिर पर मालिश करने से बाल निरोग रहते हैं ।

नोट—ऐलोपैथिक डाक्टरी ग्रन्थ मेटेरिया मेडिका Indian Plants and drugs जिसके लेखक डा. के. एम. नालकरनी है, के अनुसार बच कडुवा, टानिक और अग्निबर्धक है । "It is eaten foreely during The prevalence of any epidemic, as it is supposed to be an antidote for several posisons." अर्थात् बच में कई विषों के निवारण करने की शक्ति है । ऐसा माना गया है । अतएव (विषजन्य) किसी भी सांघातिक बीमारी प्लेग महमारी आदि के जारी होने पर इसका सेवन साधारण तौर पर सहूलियत पूर्वक चिकित्सकों द्वारा किया जाता है ।

कमल

● यह सर्वत्र पाया जाता है । यह शीतल और वर्ण को उत्तम करने वाली, मधुर और कफ पित्त, तृषा, दाह, रुधिर विकार विस्फोटक, फोड़ा, विष तथा विसर्प नाशक है । पित्त प्रकोप तथा काम ज्वर में शैय्या पर बिछाकर और व्यंजन उपचार करने से दाह और व्यथित हृदय को शान्ति देकर चित्त को आनन्दित कर देता है।

● कमल बहुधा गम्भीर और निर्मल नीर वाले स्वच्छ सरोवरों में उत्पन्न होता है । इसके पत्ते बड़े-बड़े गोल और चिकने (जिन पर जल के बिन्दु भी न ठहरें) अद्भुत और शोभायमान होते हैं । इन पत्तों को ग्रामीण कृषक जन पुरैन के पत्तों के नाम से सम्बोधित करते हैं । कमल (पुष्प) तीन प्रकार का होता है—1. लाल कमल इसे कोकोनद कहा जाता है । 2. सफेद कमल इसे पुन्डरीक कहा जाता है । 3. नीले रंग का कमल इसे नील कमल या इन्दीवर कहा जाता है ।

● कमल पुष्प के नीचे डन्डी होती है उसको कमल नाल (मृणाल) कहते है। इस पुष्प में जो पीले रंग का जीरा होता है, इसे कमल केशर कहा जाता है। कमल पुष्प की रज को मकरन्द तथा कमल के पुष्प के पश्चात् जो फल लगते हैं इसे 'पद्म कोष' कहा जाता है । कमल के पद्म कोष में जो बीज निकलते हैं इनको कमल गट्टा और जड़ को भसीन्डा (इसकी साक सब्जी बनती है) कहा जाता है । प्रफुल्लित कमलपुष्प मुक्त पंचांग को पद्मिनी, नवपल्लवों को संवर्तिका और बीजकोष को कर्णिका के नाम से जाना जाता है ।

पद्मिनी गुण—शीतल, भारी, मधुर, खारी, रुक्ष, वात और मलबन्ध कारक तथा पित्त, रुधिर विकार और कफ नाशक है ।

संवर्त्तिका गुण—शीतल, कड़वी, कसैली है । दाह, तृष्णा, मूत्रकृच्छ और गुदा के रोग तथा रक्तपित्त नाशक है ।

कर्णिका गुण—कड़वी, कसैली, मधुर शीतल, मुख को स्वच्छ करने वाली, हल्की, तृषा, रक्त विकार, कफ तथा पित्त नाशक है ।

कमल केसर के गुण—शीतल, कसैली, ग्राही है और कफ, पित्त तथा दाह, तृषा, रक्त विकार, बबासीर, विष सूजन को नष्ट करती है ।

मृणाल के गुण—शीतल, वृषय, भारी, पाक में मधुर, दुग्धवर्धक वात, कफ कारक, ग्राही, रुक्ष, पित्त दाह तथा रक्त विकार नाशक है ।

● 6 माशा की मात्रा में कमल केसर लेकर मक्खन और शहद में मिलाकर प्रतिदिन सेवन करने से रक्तार्श नष्ट हो जाता है ।

●नीलकमल केसर, सौंचल नमक, जीरा, मुलहठी (सभी सममात्रा में) लेकर चूर्ण बनाकर 6 माशा की मात्रा में शहद के साथ खाने से नवीन श्वेतप्रदर नष्ट हो जाता है।

●कमल केसर, मुल्तानी मिट्टी और मिश्री (समस्त सममात्रा में) लेकर चूर्ण बनाकर 1 तोला की मात्रा में ताजा जल से सेवन कराने नवीन रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

●नीलकमल, लसोड़ा, चन्दन, कमलकेसर सभी को ठण्डे पानी में पीसकर मस्तक पर पतला-पतला लेप करने से ऊर्ध्व रक्तपित्त, नकसीर मिट जाती है। कमल केसर और आँवला (समभाग) लेकर ठण्डे जल में पीसकर भी मस्तष्क पर लेप करना उपयोगी है।

●कमल गट्टे को भूनकर उसकी मींग (शेष भाग फेंक दें) को पीसकर शहद में मिलाकर चाटने से प्रत्येक प्रकार की छर्दि (वमन होना) रुक जाती है।

●कमल और केले के पत्तों को शैय्या पर बिछावन बनाकर शयन करने और समस्त शरीर पर चन्दन का जल छिड़कने तथा कदलीपत्र (केले) के पत्ते से वायु (हवा) करने से दाह तथा पित्त ज्वर नष्ट हो जाता है।

पिप्पली (पीपल)

आयुर्वेद का प्रभावशाली और मानव हितकारी द्रव्य है। इसकी एक प्रकार सी गुल्म जाति की लता होती है इसमें ही फल लगा करते हैं जिसको पिप्पली के नाम से जाना जाता है। इसकी लताऐं (बेलें) बहुत बड़ी होती हैं जो जमीन (भूमि) पर फैली रहती हैं या दूसरे वृक्षों के सहारे उठ जाती हैं। इसके पत्ते 2-3 इंच लम्बे (पान के पत्ते के समान) कुछ नुकीले छोटे, कोमल और चिकने होते हैं। इन पर 5 शिराऐं होती हैं। प्रत्येक ग्रन्थि के पास से निकले हुए प्रकोष्ठों के जोड़े फल लगते हैं किन्तु 1-1 फल अधिक लगते हैं। पकने पर यह रक्त वर्ण के होते हैं किन्तु सूखने पर यह कृष्णाभ धूसर वर्ण हो जाते हैं। औषधि रूप में इसके फल और मूल दोनों का ही सफलतापूर्वक प्रयोग किया जाता है।

●आयुर्वेदशास्त्रानुसार पिप्पली 4 प्रकार की होती है—1. पिप्पली, 2. गज पिप्पली, 3. सैंहली पिप्पली, 4. वनपिप्पली। किन्तु मुख्य रूप से व्यवहार में दो ही प्रकार की पिप्पली लाई जाती है। 1. बड़ी अर्थात् सैंहल पिप्पली और छोटी अर्थात् वन पिप्पली। इसके गुण धर्म निम्न प्रकार है—यह गुण में लघु, स्निग्ध,

तीक्ष्ण, और कर्म में वातशामक, तृप्तिहन, शूल प्रशमन, यकुदुत्तेजक, प्लीहा, वृद्धिहर, रक्तबर्धक, कासहर, श्वासहर, हिक्का, प्लीहा वृद्धि हर, रक्तबर्धक, रक्त शोधक, शिरो विरेचन, गर्भाशय संकोचक ज्वरहन और बल्य है।

●पिप्पली के रसायनिक संगठन (Constittuent) निम्न प्रकार हैं—इसमें राल (Risin) उड़नशील तेल, (Valatile Oil) स्टार्च (Starch), गोंद (Gum), वसा (Fatty Oil) निरीन्द्रिय द्रव्य (Inorganic Matter) और पाइपरीन (Piperine) नामक (एक) क्षीर तत्व होता है।

●पिप्पली और पाषाण भेद का प्रलेप स्तनों पर लगाने से दुग्ध अत्यधिक मात्रा में पैदा होता है।

●पीपल तथा गुड़ का कल्क, कल्क से 4 गुणा अधिक घृत, घृत से 4 गुना अधिक बकरी का दूध तथा इतना ही जल मिला घृत सिद्ध करलें। इसके सेवन से क्षय, कास दूर होकर अग्नि बढ़ जाती है।

●5, 7 या 8, 10 (अपनी-अपनी क्षमता एवं प्रकृति के अनुसार) पिप्पली का चूर्ण कर मधु तथा घृत (असमान मात्रा में) मिलाकर 1 वर्ष पर्यन्त सेवन करने से रसायन फल प्राप्त होता है।

●पीपल और हरड़ का सम मात्रा का कपड़छन चूर्ण 2 माशा की मात्रा में लेकर मधु के साथ चाटने और तीक्ष्ण मद्य का सेवन करने से कफज—स्वरभेद नष्ट हो जाता है।

●श्वास रोग में यदि कफ और पित्त (दोनों) का अनुबन्ध हो तो सप्तवर्ण की पत्ती के स्वरस में पिप्पली चूर्ण और मधु मिलाकर पीने से श्वास रोग नष्ट हो जाता है।

●आँवले के स्वरस में पिप्पली चूर्ण मधु मिलाकर सेवन करने से हिक्का रोग नष्ट हो जाता है।

●पीपल और सैंधानमक को चतुर्गुण पानी में पीसकर गरम कर छानकर प्रात:सायं नाक में छोड़ने से कर्ण मूल शोथ में लाभ होता है।

●छोटी पीपल, आँवला, मुनक्का, बेर के फल की शुद्ध मज्जा, शहद व चीनी, बिंडा और पोहकरमूल (प्रत्येक का चूर्ण 1-1 तोला) और सभी औषधियों के बराबर (8 तोला) लौह भस्म लेकर सभी को खरल में महीन पीसकर चूर्ण करके अथवा जल में घोटकर 3-3 रत्ती की वटिकाऐं (गोलियाँ) बना-सुखाकर शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें। इसके सेवन से महा श्वासरोग तीन दिन में नष्ट हो जाता है।

● पीपल नागरमोथा, निशोथ और इन्द्र वारूणी का मूल 1-1 माशा को पीसकर (कल्क) बनाकर मधु मिलाकर कफज कास में चाटने से खांसी नष्ट हो जाती है ।

● पीपल, पीपरामूल, गजपीपर और चीता की छाल (सममात्रा में) लेकर चूर्ण बनाकर गरम जल से सेवन करने से आमातिसार में लाभ होता है ।

● 4 माशे भर पिप्पली कल्क को आठ गुने (32 माशे) बकरी के दूध से चतुर्गुण (128 माशे) जल डालकर दुग्ध शेष रहने तक पाक करके शीतल होने पर छानकर मिश्री मिलाकर तीन दिन तक पीने से चिरकालीन प्रवाहिका नष्ट हो जाती है ।

● पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सौंठ, मरिच, यवक्षार, सज्जीखार, पांचों नमक (सैंधा, सौंचर, समुद्री, विड और औंदिद) घी में भुनी हींग, अजमोद इन 15 द्रव्यों को अलग-अलग में कपड़छन चूर्ण बनाकर (सममात्रा में) मिलाकर बिजौरा नीबू और खट्टे अनार के रस से भावित कर 6 रत्ती वजन की गोलियां बनाकर सुरक्षित रखलें । इसके सेवन से आमदोष का पाचन होता है, जठराग्नि शीघ्र ही प्रदीप्त होती है । इसका सेवन भोजनोपरान्त गरम जल या मट्ठा से करें ।

● पिप्पली, सौंठ, दन्ती की जड़ (1-1 तोला), बड़ी हरड़ का छिलका दो तोला, विड लवण आधा भाग लेकर सभी को कूट पीसकर छानकर चूर्ण तैयार कर सुरक्षित रखलें । इसे दो माशा की मात्रा में गरम जलानुपान से सेवन करने से प्लीहा वृद्धि रोग अवश्य नष्ट हो जाता है ।

पिप्पली वर्द्धमान—1 सेर पिप्पली लेकर सात दिनों तक मट्ठे में भिगोकर रखें (पात्र मिट्टी का हो तथा प्रतिदिन का पीपल भीगा हुआ मट्ठा फेंककर नया (ताजा) मट्ठा पात्र में भर दिया करें ।) तदुपरान्त प्रयोग प्रारम्भ करें । प्रयोग निम्न प्रकार है । प्रथम दिन 10 पीपल, दूसरे दिन 20 तीसरे दिन 30 इसी प्रकार प्रतिदिन 10 पीपल बढ़ाते हुए 10 वें दिन 100 पीपलें लें फिर 11 वें दिन से क्रमशः 10 पीपलें प्रतिदिन घटाते हुए (100-90-80) खायें । इस विधि से 19 वें दिन 10 पीपली सेवन की मात्रा आती है और इन्हीं 90 दिनों में यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है ।

इस प्रयोग के साथ दुग्ध सेवन की भी मात्रा पहले बढ़ायी और बाद में घटायी जाती है जो निम्न प्रकार है—दूध की मात्रा प्रथम दिन अपनी स्वेच्छानुसार (1 पाव से 1 सेर तक रख सकते हैं किन्तु याद रखें कि जितना दूध प्रथम दिन रखें उतना

दूध प्रतिदिन बढ़ाकर 10 दिन तक इसके उपरान्त उतनी ही मात्रा में दूध को घटा कर पीने का विधान है । दूध शत शीत पीना चाहिए तथा अल्प मात्रा में शक्कर या मुनक्का की पिसी हुई चटनी मिलाकर मधुर कर सकते हैं तथा दूध (अधिक मात्रा होने पर) दिन भर में कई बार अलग-अलग मात्राओं में पी सकते हैं फिर भी पिप्पली और दूध के पच जाने पर भूख की इच्छा हो तो साठी के चावलों का भात बनाकर उसमें दूध तथा घृत मिलाकर सेवन करना चाहिए । किन्तु जहाँ तक भी सम्भव हो वहाँ तक दुग्ध सेवन पर ही रहा जाए तो अत्युत्तम है । यह सहस्त्र पिप्पली प्रयोग रसायन है । प्रतिदिन 10 पिप्पल प्रयोग करने का प्रयोग उत्तम, प्रतिदिन 6 पिप्पली का मध्यम तथा प्रतिदिन 3 पिप्पली (बढ़ा-बढ़ाकर 100 पिप्पली तक) प्रयोग करना अधम (अल्प गुण वाला) है । यह प्रयोग रसायन, बृंहण, वृष्य, आयु के हितकर, मेधावर्धक, वयःस्थापक, प्लीहा वृद्धि तथा उदर रोग नाशक है।

नोट—बलवान पुरुषों के लिए उक्त प्रयोगों के अनुसार पिप्पली का चूर्ण करके दुग्ध के साथ प्रयोग करना चाहिए । मध्य बल वाले पुरुषों के लिए प्रयोगानुसार पिप्पलियां लेकर उनका क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए तथा निर्बल पुरुष के लिए प्रयोगानुसार संख्या में पिप्पलियाँ लेकर उन्हें पानी में भिगोकर प्रातःकाल पानी को छानकर पिलाना चाहिए ।

पुनर्नवा

प्रायः पुनर्नवा (विषखपरा) को सभा लोग जानते हैं । यह क्षुप जाति की बेल वर्षा ऋतु में ही फैलती है । आयुर्वेद मतानुसार पुष्प के वर्ण भेद से यह तीन प्रकार की होती है—1. श्वेत, 2. लाल और, 3. नीली पुनर्नवा । इनमें श्वेत और रक्त पुनर्नवा बहुतायत से देखने में आती है । औषधि रूप में श्वेत पुनर्नवा विशेष गुणकारी सिद्ध हो चुकी है । इसकी उत्पत्ति कंकरीली और मिट्टी मिली हुई ताकतवर जमीन में होती है । खोदने पर मिट्टी की ताकत के हिसाब से (शकरबन्द के समान) मोटी या पतली (1-2 फुट तक लम्बी) जड़ पाई जाती है । जिस जगह से इसकी जड़ काट दी जाती है, वहाँ एक प्रकार का पीलापन लिए हुए चेंप निकलता है । (यह चेंप वस्त्रों में धब्बा डाल देता है) इस कन्द का स्वाद मीठा न होकर कड़वा रहता है । मुख में डालने पर थूक पैदा कर देता है तथा इसको मुख से निकाल देने पर 15-20 मिनट तक ज़ीभ कड़ी और रूखी हो जाती है ।

पुनर्नवा के पत्तों का रस गरम होता है । इसकी लुगदी में ताम्र होता है । इसका अर्क समस्त प्रकार के नेत्रों के रोगों को नष्ट करने वाला हो जाता है । यदि

इसका अधिक मात्रा में सेवन किया जाए तो वमन हो जाता है इसकी पत्ता की भाजी (शाक) बनाकर खाने से शोथ (सूजन) में बहुत फायदा होता है

(नोट—श्वेत पुनर्नवा की ही भाजी बनाकर खाना उत्तम है क्योंकि लाल पुनर्नवा की भाजी अत्यधिक तीक्ष्ण होती है, अतः खाई नहीं जाती है)

पुनर्नवा की जड़ सौम्य, रेचक, मूत्रल और आंतों के कृमिजन्य रोगों को दूर करने की क्षमता से युक्त है। पुनर्नवा गरम, कड़वी, चरपरी, कसैली, अग्नि प्रदीपक, दस्तावर, रूखी, हृदय को हितकारी, मधुर, खारी तथा कफ, विष, खाँसी, हृदय रोग, शूल, रुधिर विकार, पान्डु रोग, सूजन, वात, उदर रोग, बबासीर, घाव और उरःक्षत नाशक गुण-धर्मों से भरपूर है।

इस औषधि का प्रभाव शरीर के स्नायु समूह पर विशेष रूप से पड़ता है। यह शरीर की शोथ में रामबाण की भांति लाभप्रद है। इससे कब्ज की उत्पत्ति होती है। ज्वर के समय बकवाद करना, सिर चकराना, इन्टरमिटेन्ट, न्यूरैल्जिया, सिरदर्द स्नायुशूल, नाक से रक्तस्त्राव, धुंधली दृष्टि, कान में भन-भन की आवाज, चेहरा फीका, प्लीहा व यकृत की वृद्धि तथा उसमें वेदना, गर्दन, पीठ, रीढ़ में स्पर्श, सहिष्णुता, दुर्बलता, सामान्य मेहनत से दिल घबराना, कामला, पादरी, गायक व भाषण अथवा प्रवचन करने वालों को गले (कण्ठ) का रोग सौर थ्रोट (Sore Throat) वायु रोग, कफ रोग को नष्ट करता है। साधारण मात्रा में पुनर्नवा मूल की जड़ का चूर्ण या काढ़ा बनाकर सेवन करने से यह छाती के कफ को ढीला करके बाहर निकालता है। यदि शरीर में वात के कारण कम्प या खिंचाव होता हो तो उसका भी शमन हो जाता है। श्वास ग्रस्त रोगी को भी इसका सेवन अत्यन्त ही लाभप्रद है।

- नेत्र में यदि फूली या टीका पड़ गया हो तो श्वेत पुनर्नवा की जड़ गोघृत में घिसकर अन्दर लगाने से लाभ होता है।
- नेत्रों से यदि केवल जल बहता हो तो इसकी जड़ को शहद के साथ घिसकर नेत्रों में लगाना लाभप्रद है।
- नेत्रों में यदि खुजलाहट हो तो इसकी जड़ को दूध में घिसकर लगावें।
- नेत्रों में यदि पर्दा या पटल हो आया हो तो पुनर्नवा की जड़ को केवल जल में घिसकर लगाना अत्यन्त हितकर है।
- पुनर्नवा की जड़ को कांजी में घिसकर अथवा इसकी जड़ और पीपल की जड़ को गाय के गोबर के रस में घिसकर अन्जन करने से रतौंधी दूर हो जाती है।

- मोतियाबिन्दु में इसकी पुरानी जड़ को भांगरे के रस में घिसकर लगावें।
- पुनर्नवा की जड़ या छाल को नीबू के रस में घिसकर लगाने से आंखों की फूली नष्ट हो जाती है।
- श्वास रोग में इसकी जड़ का चूर्ण पानी के साथ सेवन करना लाभप्रद है।
- पुनर्नवा शोथ का प्रबल शत्रु है। इस हेतु श्वेत पुनर्नवा की जड़ का चूर्ण (अधकचरा या यवकुट किया हुआ, दो से तीन तोला को 250 ग्राम जल में खूब पकाकर जब क्वाथ 5 तोला शेष बचे तभा उसमें चिरायता और सौंठ का महीन चूर्ण 2-2 माशा तथा कलमी शोरा 6 से 8 रत्ती तक मिलाकर पीवें। शोथ में पेशाब बहुत कम होता है, पुनर्नवा इस हेतु भी अधिक गुणकारी है।

नोट—बाहर की सूजन पर इसकी जड़ घिसकर या कुचलकर लगाना उपयोगी है। इसको लगाने या बाँधने से पहले इसे थोड़ा गरम कर लेना आवश्यक है। जलोदर की अवस्था में पेट फूलकर सर्वांग में जब शोथ चढ़ जाती है तब उपर्युक्त क्वाथ अत्यन्त ही लाभप्रद है। शोथ का जोर एकदम घट जाता है। आंव-दस्त साफ होता है, किन्तु यह ध्यान रहे कि उदर रोगी जब इस क्वाथ का सेवन करे तो केवल दूध पर ही निर्भर रहे कोई अन्य भोज्य पदार्थ न खाये।

- यदि जलोदर के साथ पान्डु, स्थूलता, कफ और सर्वांग-शोथ हो तो—पुनर्नवा 1 तोला, कटुनीय, पटोल, सौंठ, कुटकी, दारू हल्दी, गुरच और बाल हर्र ये सातों द्रव्य आधा-आधा तोला लेकर सबको एकत्र कर तथा यवकुटकर 32 तोला पानी डालकर अष्टमांश क्वाथ तैयार कर रोगी को पिलाना अत्यन्त लाभकारी है।
- मासिकधर्म की रुकावट में भी पुनर्नवा का काढ़ा सेवन करना हितकारी है।
- पुनर्नवा की जड़ का सेवन करना कमलवाय रोग में भी हितकारी है।
- स्त्रियों के स्तनों की गिल्टियों का रोग (ट्यूमर) जो कठोर और वेदनायुक्त होती है। स्तनों में यदि प्रदाह कम न होकर पक जावें और उसमें वृहत लालवर्ण जख्म अथवा घेघा में इसका लेप करना लाभप्रद है।
- उपदंश के चट्टों पर इसकी जड़ को नीम के पत्तों के रस से घिसकर लगाना अतीव उपयोगी है।
- शोथ होने पर इसका पंचांग उबालकर इससे धोना तथा वाष्प देना और खाने में देना अति उत्कृष्ट है।
- यदि किसी जगह पर चोट लगने से शोथ होकर दर्द होने लगे तो ठण्डे पानी में पुनर्नवा घिसकर मोटा लेप करना हितकर है।
- कर्णशूल होने पर इसके पत्तों का रस गरम करके डालना ही लाभप्रद है।

●इसके पत्तों का शाक बनाकर खाने से दस्त साफ आता है और वायु विकार नष्ट होते हैं।

●शीतपित्त में इसकी डाली जलाकर धूम्र देना हितकारी है।

●इसकी डलियाँ जलाकर क्षार बनालें, आँत के रोगों में लाभकारी है।

●वातार्श में इसकी जड़ को काली मिर्च के साथ पीसकर सेवन करने से लाभ होता है।

●बद (गिल्टी) के रोगी को पुनर्नवा की गोली बनाकर धूम्रपान कराना तथा लेप लगाने से बद तुरन्त ठीक हो जाती है।

●हल्दी को हुक्का के पानी में पीसलें। फिर उसमें पुनर्नवा की जड़ को खूब महीन पीसकर दिन में कई बार लेप करने से तथा नित्य प्रातःकाल में इसकी जड़ तीन माशा पानी में पीसकर पिलाने से कठिन भगन्दर भी नष्ट हो जाता है।

●फीलपांव वाले रोगी को इसका नित्य लेप करने से और इसे तेल में डालकर (जलाकर) मालिश करने से लाभ हो जाता है।

●पुनर्नवा के फूलों को सुखाकर बनाकर सुरक्षित रखलें। इसे 1 माशा की मात्रा में 3 माशा मिश्री मिलाकर खाकर ऊपर से दुग्धपान करने से प्रमेह रोग नष्ट हो जाता है तथा अपार शक्ति की प्राप्ति होती है।

●(रात को बिस्तर पर अथवा सुबह उठते समय कमर के दर्द होता हो) तो—रात को सोते समय पुनर्नवाचूर्ण गरम जल से सेवन करने से लाभ होता है।

●पुनर्नवा हृदय रोग के लिए महौषधि मानी गई है। मुख्यतः हतपिण्ड की पुरानी बीमारी में यह अत्यन्त ही उपयोगी है। हत्पण्ड के वल्व की पीड़ा चिकित्सकों द्वारा स्टेथिस्कोप (आल) लगाकर सुनने पर धुकधुकी के साथ हुस-हुस शब्द सुनाई पड़ता है। हत्पण्ड की धड़कन इतने अधिक जोर से होता है कि छाती की कम्पन आँख से देखी जा सकती है और शब्द भी कई इंच की दूरी से सुना जा सकता है। रोगी को बांये पार्श्व से लेटना दुष्कर हो जाता है और लेटता है तो वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार की पीड़ा में पुनर्नवा की तीन माशा जड़ 125 ग्राम पानी में पीसकर, छानकर थोड़ा सा गरम करके पिलाना अत्यन्त लाभकारी है।

●शरीर के अन्दरूनी (फेफड़े या अन्य किसी यन्त्र में) कफ या वायु की खराबे से जब छाती में दर्द होना शुरू होता है तो उस समय पुनर्नवा को पानी में पीसकर पिलाने से और घिस-घिस कर गरम लेप चढ़ाने से लाभ होता है।

●सर्पविष (दंश) में पुनर्नवा 1-1 तोला पानी में पीसकर कई बार पिलाने

से जहर नष्ट हो जाता है। (नोट—जब जहर का नाश हो जाये तो तब तुरन्त ही थोड़ा घी पिला देना चाहिए।)

●श्वेत पुनर्नवा की जड़ और काली मिर्च दोनों को चार माशे लेकर शीतल जल के साथ पीसकर मसूरिका के दिनों में पान करने से खसरा या चेचक होने का भय नहीं रहता है।

●पुनर्नवा के पत्तों का रस 10 तोला मिश्री 250 ग्राम मिलाकर (शर्बत बनाकर) पकाते ववत आधा तोला छोटी पीपल पीसकर मिलाकर उतारकर तीन माशा से 1 तोला तक की मात्रा में पिलाने से छोटे बच्चों की खांसी, श्वास, फेफड़ों की सूजन, सर्दी, जुकाम, लार बहना, हरे-पीले दस्त होने में तुरन्त लाभप्रद है।

(नोट—फेफड़े में सूजन, जब दाहिने फेफड़े से प्रारम्भ होकर बांये फेफड़े में प्रसारित होती है और फेफड़े के अन्दर जमा हुआ कफ तरल होना शुरू हो जाता है जिसके कारण खांसने से दर्द और छाती तरल से भरी हुई लगती है भयानक श्वास कष्ट होता है और बार-बार खांसी के साथ मुंह भर-भरकर कफ निकलता है और आराम मालूम नहीं होता है। प्रत्येक श्वास-प्रश्वास के साथ नाक के नथुना बार (उठा-बैठा) फूलना, पिचकना करते हैं तब ऐसी स्थिति में उपर्युक्त शर्बत के सेवन करने से बहुत जल्दी आराम होता है।

●पुनर्नवा की जड़ 40 तोला, सौंठ, खश, तगर, देवदारू, लौंग, प्रियंगु, कचूर, नागरमोथा (प्रत्येक 10-10 तोला) अगर 12 तोला, केसर दो तोला, तालीस पत्र 5 तोला लेकर सभी द्रव्यों का कल्क बनाकर तिल के तैल में सिद्ध कर लेने से अत्यन्त गुणकारी तैल निर्मित हो जाता है जो शोथ को फौरन (तुरन्त) दूर करता है। वात-पित्त की बीमारियों को नष्ट करता है। इसके योग से अनेक प्रकार की औषधियां तैयार की जाती हैं जैसे—पुनर्नवा घृत तथा पुनर्नवासव इत्यादि।

अतिविष

अतिविष को आयुर्वेद के आचार्यों ने पर्याय नाम शिशु भैषज दिया है क्योंकि बच्चों के किसी भी रोग में इसका चूर्ण शहद में दिया जा सकता है। यह बच्चों के ज्वर अजीर्ण, उल्टी, दस्त, कृमि विकार तथा दांत निकलने के समय के विकारों में अत्यन्त उपयोगी वनस्पति है। बच्चों को अधिक से अधिक आधा ग्राम तक ही अतिविष का चूर्ण दिया जा सकता है। इसके अधिक मात्रा में देना उचित नहीं है।

अतिविष का क्षुप 2 से 4 फीट तक ऊँचा होता है। कांड जड़ में से निकल कर सीधा और चिपटा, कभी-कभी विभिन्न आकार वाला पान के आवर्त्त का भी होता है। इसका पत्र नागदौना सदृश टूटी हुई किनारों वाला (किन्तु लम्बाई में 2 से 4 इंच अण्डाकार या हृदयाकार होता है) नीचे का पत्र बड़ा और 5 भागों में

विभक्त होता है तथा ऊपर का पत्र छोटा और दन्तुर धार वाला होता है। बड़ा पत्र चमकीला ऊपर से हरा और नीचे से पीला होता है। शाखायें चपटी और जड़ में से निकलती हैं। पत्रवृत्त की जड़ में से पुष्पदन्ड निकलता है। पुष्पदन्ड पर काफी संख्या में फूल लगते हैं, इन फूलों का रंग नीला अथवा किन्वित बैंगनी रंग का होता है। जिसमें अन्दर की 1 पंखुड़ी सबसे बड़ी और फणाकार होती है। पुष्प 1 से डेढ़ इंच लम्बा, चमकदार, जामुनी किनारेवाला मनमोहक लुभावना होता है। इसका फल पन्च कोणीय होता है। इसकी जड़ क्षुप के नीचे जमीन की ऊपरी सप्तह से काफी गहराई में कन्द के रूप में होती है। इसका रंग चमकदार होता है। द्विवर्षायु होने के कारण इसमें दो कन्द होते हैं। 1 कन्द बड़ा और दूसरा छोटा होता है। छोटे कन्द की संख्या कभी-कभी एक से अधिक होती है। कन्द लम्बा, गोल, ऊपर से भूरा, धूसर वर्ण का (तोड़ने से उसमें काला धब्बायुक्त 1 से 2 इंच लम्बा चौथाई से आधा इंच चौड़ा हाथी की सूंड़ की तरह होता है। चिकित्सीय दृष्टि से अतिविष का कन्द ही उपयोगी है तथा बड़े कन्द की अपेक्षा छोटा कन्द विशेष उपयोगी है।

● इसमें मिट्टी आदि अशुद्धियाँ होती हैं अत: इसके विष लक्षणों को दूर करने के लिए शुद्धि करना अति आवश्यक होता है। इस हेतु इसे सर्वप्रथम दूध में उबालकर तदुपरान्त शुद्ध जल से भली-भाँति धोने से यह पूर्णरूपेण शुद्ध हो जाता है।

● अतिविष चूर्ण दो ग्राम और बिडंग चूर्ण 5 ग्राम सुबह-शाम ताजा पानी से मात्र 1 सप्ताह खिलोने से बिस्तर पर पेशाब करने का रोग मिट जाता है। छोटे बच्चों का मात्रा कम करके प्रयोग करायें।

● अतिविष से निर्मित विभिन्न पेटेन्ट शास्त्रीय औषधियाँ बाजार में उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख शास्त्रीय योग निम्न हैं—

1. बाल चातुर्भद चूर्ण, 2. कुटजाष्टव अवलेह, 3. लोध्रासव, 4. वत्सकादि क्वाथ, 5. पुष्यानुग चूर्ण, 6. वृहद वृद्ध गंगाधर चूर्ण आदि।

कुटजाष्टव अवलेह—विभिन्न प्रकार के अतिसार जीर्ण सन्निपातिक अतिसार, प्रदर, अर्श और प्रवाहिका आदि रोगों में इस अवलेह का सेवन लाभप्रद है। इसे 10 से 20 ग्राम की मात्रा में स्वच्छ जल अथवा चावल के मांड के साथ देना चाहिए।

लोध्रासव—कफ और पित्त जन्य प्रमेह, पान्डु, अर्श, अरुचि, गृहणी, श्वेत कुष्ठ तथा अन्य कुष्ठ रोगों में इसका सेवन लाभप्रद है। इसे 20 से 40 मि.ली. उतने ही पानी अथवा पानी सममात्रा में मिलाकर सेवन करना चाहिए।

वत्सकादि क्वाथ—यह आमातिसार और शूल सहित रक्तातिसार, जीर्ण अतिसार में उपयोगी है। प्रवाहिका में यह अभीवा का प्रमाण घोटकर पेचिश नष्ट करता है। इसे 20 से 40 मि.ली. उतने ही पानी के साथ दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए।

पुष्यानुग चूर्ण—यह चूर्ण अर्श, रक्तातिसार, बाल रोग, योनि रोग, रजोदोष, श्वेत प्रदर इत्यादि रोगों में उपयोगी है। इसे 1 से 2 ग्राम तक चावल के मांड के साथ दिन में तीन बार देना चाहिए।

बाल चातुर्भद चूर्ण—छोटे बच्चों के श्वास, कास, ज्वरातिसार और उल्टी में लाभप्रद है। इसे छोटे बच्चों को आधा से 1 ग्राम तक तथा बड़ी आयु के रोगियों को 2 से 3 ग्राम तक शहद, आर्द्रक स्वरस तथा तुलसी स्वरस के साथ देना चाहिए।

वृहद वृद्ध गंगाधर चूर्ण—प्रवाहिका, अतिसार ग्रहणी इत्यादि रोगों में पतले दस्त होते हों तो इस चूर्ण के सेवन से तुरन्त आराम मिलता है। इसी प्रकार उल्टी व विशूचिका में भी यह चूर्ण लाभप्रद है। इस चूर्ण को 2 से 4 ग्राम तक शहद अथवा चावल के मांड के साथ दिन में तीन बार सेवन करें।

संग्रहणी, ज्वर, अरुचि और अग्निमांद्य में अतिविष और नागरमोथा को सममात्रा में लेकर सीरप बनाकर 5 वर्ष तक आयु के बच्चों को 5 से 10 मि.ली. की मात्रा में दिन में तीन बार पिलाना अति उपयोगी है। यह सीरप दो सप्ताह सेवन कराने से रोग नष्ट होकर तन्दुरुस्ती अच्छी बनती है।

अतिसार में—सभी प्रकार के अतिसारों में सौंठ, अतिविष और नागरमोथा का क्वाथ 10 ग्राम को लेकर पानी में मन्दाग्नि में उबालकर 20 ग्राम पानी शेष रहने पर गरम-गरम पीने से अवश्य लाभ होता है। यदि अतिसार का रोग पुराना हो तो उपरोक्त क्वाथ दो सप्ताह तक निरन्तर सेवन करने तथा लघु सुपाच्य आहार खाने से लाभ हो जाता है।

अतिविष के गुण-धर्म—अतिविष त्रिदोषहर कफ-पित्त शामक है। यह उष्णता से वात की शान्ति करता है। ओज की वृद्धि करता है और अतिसार को रोकता है। यह कफघ्न, वातघ्न, अशोहन है। यह जलोदर में उपयोगी है तथा लेखनीय स्तन्य शोध पाचक, दीपन, विषहन, कास छर्दि और कृमि रोगों में विशेष उपयोगी है। यह आम और आमातिसार, जीर्णज्वर, विषम ज्वर, तृषा, शोथ, आमवात, यकृत विकार इत्यादि रोगों में परम लाभप्रद है। यह कोमल प्रवृत्ति वाले बच्चों पर तथा गर्भिणी के ज्वरातिसार में विशेष उपयोगी महौषधि है।

गुन्जा (चिरमिटी या घुंघची)

गुन्जा की लता (बेल) होती है। इसके पत्ते बारीक और कुछ लम्बे-लम्बे (इमली के पत्ते के समान) होते हैं। सैम की फलियों की भांति इसमें गुच्छे लगते हैं। प्रत्येक फली के अन्दर 3 से 6 तक घुँघचियाँ (गुंजा) रहती हैं। इसके फूल छोटे और सफेद रंग के होते हैं। वैसे इसके दो भेद होते हैं—1. लाल, 2. सफेद। दोनों की बेल एक समान होती है। लाल रंग के गुंजा पर काला दाग होता है और सफेद की गुंजा सम्पूर्ण सफेद होती है। आमतौर पर (दैनिक जीवन में) इनका उपयोगनुसार (स्वर्णकार) सोना तौलने में करते हैं। 1 गुंजा बराबर 1 रत्ती (2 या गेहूँ के दाना) के बराबर होता है। 1 तोला = 96 गुंजा बैठती है।

आक का दूध, थूहर का दूध, कलिहारी, कनेर, गुन्जा, अफीम और धतूरा ये सात आयुर्वेदमतानुसार उपविष की जातियाँ हैं। श्वेत और लाल (दोनों प्रकार की) गुंजा केशों को हितकारी, वात-पित्त ज्वर के नाशक, मुख शोथ, भ्रम, श्वास, तृष्णा, मद, नेत्ररोग, खुजली व्रण, कृमि, इन्द्रलुप्त नामक रोग तथा कोढ़ नाशक तथा वीर्यवर्धक है। इसके बीज कड़वे उष्ण, वातकारक तथा मस्तक शूल नाशक होते हैं। इसकी कच्ची फलियाँ और पत्ते शूल निवारक तथा विषनाशक होते हैं। सफेद घुँघची को तन्त्र विशेषज्ञ वशीकरण के उपयोग में लेते हैं। इसके पत्ते, जड़ और बीज तीनों ही औषधि के काम में उपयोग किये जाते हैं। इसकी मात्रा 1 से 2 रत्ती तक सेवन करने का विधान है।

गुंजा एक प्रकार का विष है अत: इसे शुद्ध (विष रहित) करके ही उपयोग में लाना चाहिए। कांजी में डालकर तीन घंटे तक पकाने से यह शुद्ध हो जाता है। विद्वान आचार्यों के मतानुसार गुंजा में जो विषकारक सत्व है वह स्ट्रिकनीन (कुचलासत्व) की अपेक्षा सौ गुणा अधिक तेज है। एरन्ड के बीजों से जो जहरीला सत्व निकाला जाता है। इसके गुण-धर्म तथा गुंजा के जहरीले द्रव्य का गुण-धर्म एक समान होता है। इस प्रकार के विषों में एक विशेषता यह होती है कि इनके बीजों को उबालने से विष एकदम नष्ट हो जाता है फिर इनके व्यवहार से किसी प्रकार का अहित नहीं होता है।

● यदि पकाकर शुद्ध न करके इन्हें ऐसे ही उपयोग किया जाए तो दस्त और कै तीव्र रूप से आरम्भ हो जाते हैं। यदि इनको अधिक मात्रा में सेवन किया जाए तो यह अत्यन्त तीव्र विष के रूप में अपना बुरा प्रभाव उत्पन्न कर देते हैं

(हैजे के रोग के समान यह लक्षण उत्पन्न कर देते है) इसके सत्व को 'अबिम' कहा जाता है।

● इसकी जड़ मूल, जल का साथ घिसकर नस्य देने से मस्तक शूल, अर्ध मस्तक शूल, आँखों के सामने अन्धेरा आ जाना, रतौंधी इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं।

● स्वर भंग (Horse Ness) गले से आवाज साफ न निकलती हो तो सफेद गुंजा की पत्तियों को चबाने और धीरे-धीरे निगलते जाने से लाभ होता है।

● अपबाहुक, विश्वाची (Arm palsy) गृधसी इत्यादि वात रोगों में घुंघची अत्यन्त लाभकारी है। शरीर के जिस अंग में वात का प्रकोप हुआ हो तो वहाँ के बालों को उस्तरे से साफ करके घुंघची को जल में पीसकर लेप करें।

● गंज या ढाक रोग—जिसमें सिर के बाल अकाल या असमय में ही सब गिर पड़ते है या पीले अथवा सफेद हो जाते है और इन्द्रलुप्त रोग—जिसका प्रभाव विशेष पर मूंछों पर होता है। मूंछों के बाल गिर जाते हैं या पक जाते हैं—में भी इसका प्रयोग लाभप्रद है-

1. घुंघची की जड़ या फलों को भिलावे के रस में घिसकर लेप करना लाभकारी है। अथवा इसके फलों और जड़ों को भिलावे और कटेरी के साथ (सममात्रा में लेकर) महीन पीसकर शहद मिलाकर लेप करने से दुसाध्य खालित्य (गंज-रोग) भी नष्ट हो जाता है। अथवा गुंजा की जड़ और फल दोनों का चूर्ण करके कटेरी के पत्तों में के रस में खरल करें। तदुपरान्त इसके लेप करने से अत्यन्त दुसाध्य इन्द्रलुप्त रोग भी नष्ट हो जाता है।

● वीर्य पतला हो गया हो, संभोग काल में शीघ्र (एकदम) स्खलित हो जाता हो तो इसकी जड़ नित्य प्रति दो मास तक सायंकाल को भोजन से प्रथम दूध में पकाकर, मिश्री डालकर सेवन करना परम लाभकारी है।

● लाल घुंघची के पत्तों का रस आधा माशा, जीरे का महीन चूर्ण दो माशा, मिश्री 1 तोला सभी का मिश्रण एकत्र कर नित्य सुबह-शाम (मात्र सात दिन सेवन करने से) कैसा भी उपदंश हो, अवश्य ठीक हो जाता है।

● गलगन्ड, गलग्रन्थि आदि रोगों में—गुंज तैल का उपयोग अत्यधिक लाभप्रद है। घुंघची (यदि श्वेत वाली मिल जाए तो सर्वोत्तम है) की जड़ तथा फलों को जल के साथ पीसकर लुगदी बनाकर, लुगदी से चौगुना (सरसों) का तैल और तैल से चौगुना जल डालकर कड़ाही में मन्दाग्नि से पकावे। जब तैल

मात्र शेष बचा रह जाए तो इस तैल की मालिश और नस्य लेने से महादारुण और कष्टकारक रोग ''गन्डमाला'' नष्ट हो जाती है। (नोट—इसी तैल को यदि इस प्रकार सिद्ध करलें आदि चर्म रोगों का अमृत तैयार हो जाएगा, घुंघची 1 सेर जल के साथ पीसकर कल्क बनालें। इसमें भांगरा (भृंगराज) के पत्तों का रस 16 सेर और तिल का तैल 4 सेर डालकर उपरोक्त विधिनुसार तैल सिद्ध कर लें। यह तैल दाद, खाज खुजली तथा कुष्ठ रोग में भी अत्यन्त ही लाभप्रद है।

नोट—गुंजा को अधिक मात्रा में सेवन करने से यदि शरीर में कोई बेचैनी मालूम हो तो—चौलाई के रस में मिश्री मिलाकर पियें और ऊपर से दुग्धपान करें। इस प्रयोग से इसका विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

मौलसिरी

मौलसिरी हिन्दुस्तान के प्रायः सभी प्रान्तों में उत्पन्न होती है। मौलसिरी का वृक्ष दो जाति का होता है —1. पुरुष जाति, 2. स्त्री जाति। जिस मौलसिरी के वृक्ष पर मात्र फूल आते हैं, वह पुरुष जाति का होता है तथा जिस मौलसिरी के वृक्ष पर फल और फूल दोनों आते हैं, वह स्त्री जाति की मौलसिरी कहलाती है। स्त्री जाति की अपेक्षा पुरुष जाति के फूल कुछ बड़े और अधिक श्वेत होते हैं जबकि स्त्री जाति के फूल कुछ लालिमायुक्त होते हैं। यह वृक्ष अषाढ़-श्रावण मास में फलता फूलता है। इनमें लुआवदार गूदी से लिपटे हुए बीज होते हैं। इसका वृक्ष 40-40 फीट तक ऊँचा, सघन, चिकने पत्तों वाला झोपड़ाकार और सुहावना होता है। इसकी छाल, कालिमायुक्त भूरे रंग की होती है। यह वृक्ष बारहों मास हरा-भरा रहता है। इसकी लकड़ी लालिमायुक्त बादामी रंग की खूब दृढ़ होती है तथा सारा अग्रभाग कालापन युक्त लाल होता है। पत्ते जामुन के पत्ते के समान सादे तीन इंच लम्बे तथा सवा इंच के लगभग चौड़े अनीदार होते हैं। पत्र-दन्ड पौने दो इंच लम्बा होता है। मूल सफेद गोल चक्राकार होता है, इसमें अत्यन्त सुगन्ध आती है।

मौलसिरी का वृक्ष अनेक शाखाओं, प्रशाखाओं और पल्लवों से सघन होकर अत्यन्त सघन और मनोहर होता है। इसके छोटे-छोटे फूल देखने में अत्यन्त सुन्दर और इनकी सुगन्ध दूर-दूर तक व्याप्त रहती है। सूखने पर भी इनकी सुगन्ध बनी रहती है)। नोट—जंगुली आदिवासी जाति के लोगों का विश्वास है कि घर के पास मौलसिरी का वृक्ष रहना अमंगलकारी होता है। उनके मतानुसार जिस घर के अहाते में इसकी शोरियां (जड़ें) मिट्टी के भीतर घुस जाती हैं उस घर का प्रायः

नाश हो जाता है।) मौलसिरी के सुखे फूलों की मालाऐं आदिवासी जातियों का प्रमुख श्रृंगार है।

मौलसिरी शीतल, मधुर, कसैली, अनुष्ण, भारी, पाक और रस में चरपरी, हृदय को हितकारी तथा विष विकार, कफ, पित्त, कृमि, दन्त रोग और श्वेत कुष्ठ नाशक गुणों से भरपूर होती है। इसके फूल, स्निग्ध, मधुर, शीतल, कसैले, सुगन्धित मल को संग्रह करने वाले तथा कफ और रुधिर विकार नाशक होते हैं।

भवका द्वारा मौलसिरी के फूलों का निकाला हुआ अर्क अत्यन्त सुगन्धित और उत्तेजक होता है।

ज्वर में मौलसिरी की छाल का काढ़ा लाभकारी है। इसकी छाल, ग्राही और बलकारी होती है। यह ज्वर और निर्बलता नाशक है।

गर्भाशय से जल गिरने पर इसकी छाल के चूर्ण का उपयोम करते हैं।

मौलसिरी-छाल को गौमूत्र में पीस कर लेप करने से श्वेत कुष्ठ नामक रोग नष्ट हो जाता है।

मौलसिरी-छाल की भस्म का मंजन करने से दांत मजबूत होते हैं।

स्त्रियों के गर्भाधान हेतु इसकी छाल का प्रयोग अत्यन्त हितकारी है।

मौलसिरी के पत्तों को वासी पानी के साथ चबाकर खाने से कृमियों का नाश हो जाता है।

चावल के पानी से इसके पत्तों को पीसकर पीने से विष शान्त हो जाता है।

इसके छाल के काढ़े से कुल्ला करने से दाँत और मसूढ़ों के रोग नष्ट हो जाते हैं। मसूढ़ों का दर्द नष्ट होकर दाँत दृढ़ हो जाते हैं।

मौलसिरी के फलों को दांत की जड़ में रखने से उसका हिलना रुकता है।

सिर की पीड़ा में इसके फूलों के चूर्ण की नस्य देने से नाक के द्वारा बहुत सा मवाद निकलकर पीड़ा शान्त हो जाती है।

इसके पके हुए फूलों की गिरी कुछ मीठी और ग्राही होती है। इसलिए आमातिसार में इसका प्रयोग उत्तम फलदायी है।

बालकों की कोष्ठबद्धता पर इसके बीजों की मींगी की बत्ती बनाकर गुदा में घुसा देने दस्त आकर आराम हो जाता है। यदि आवश्यकता हो तो प्रयोग के समय बत्ती में थोड़ा सा घी लगाकर चिकना कर लेना चाहिए।

इसके फलों को पीसकर लेप करने से सिर की पीड़ा नष्ट हो जाती है।

एलुआ (मुसब्बर)

एलुआ (मुसब्बर) सर्वविदित आयुर्वेदीय औषधि है। इसे अंग्रेजी में (Aloes) कहा जाता है। यह घृत कुमारी (ग्वारपाठा) के रस को शुष्क करके तैयार किया जाता है। निर्माणभेद से यह दो प्रकार का होता है—1. जब घृतकुमारी के रस को धूप में अथवा मन्द (हल्की) अग्नि पर गर्म किया जाता है तो उससे अपारदर्शक मोम जैसा सत्व प्राप्त होता है जिसे यकृतवद् कुमारी सार (Hepatic Aloes) कहा जाता है। 2. जब रस तीव्र आंच पर (अग्नि) पर जल्दी सुखा लिया जाता है तो, उसे कांचवत् कुमारी सार (Glaassy aloes) कहा जाता है।

एलुआ के गाढ़े भूरे से लेकर काले रंग के अनियमित स्वरूप के टुकड़े होते हैं जिनका बाहय तल मटमैला, अपारदर्शक तथा कुछ चमकीला होता है। इसमें 1 विशेष प्रकार की गन्ध पाई जाती है। यह स्वाद में तिक्त, अरुचिकर होता है। घृतकुमारी की जातिभेद एवं रस क्रिया में वाष्पी भवन की प्रक्रिया के भेद से मुसब्बर के रंग रूप में किन्चित अन्तर हो जाता है।

स्कोत्रा का एलुआ—पीताभ या कालिमा लिए हुए भूरे रंग का होता है।

वार बेडोल का एलुआ—चाकलेटी भूरे रंग का होता है।

अदनी सिब्र का एलुआ—बड़े टुकड़ों में काले रंग का होता है किन्तु इसके कण प्राय: पारभासी और पीताभ भूरे रंग के होते हैं।

नाइट्रिक एसिड डालने पर विलयन गाढ़े लाल रंग का हो जाता है। इसमें विशेष प्रकार की गन्ध आती है तथा स्वाद तिक्त, उत्क्लेशकर होता है। इसका प्रधान सक्रिय तत्व एलायन (Alain) तथा इमोडीन (Emodin) है। इसके अतिरिक्त रालीय पदार्थ, गैलिक एसिड तथा उत्पल तैल के भी सूक्ष्म अंश इसमें पाए जाते हैं।

एलुआ का स्त्री रोगों में विशेष प्रभाव पड़ता है। यह गर्भाशय के विभिन्न विकारों के लिए अत्यन्त (विशेष) उपयोगी है। यह उष्ण होने से गर्भाशयगत रक्त संवहन को बढ़ा देती है तथा गर्भाशय की पेशियों को उत्तेजित कर उनका संकोच बढ़ा देती है। यह गर्भाशय के विभिन्न विकारों के लिए रामबाण की भाँति उपयोगी है। नष्टार्त्तव, अनार्त्तव, मासिक धर्म की अनियमितता, हिस्टीरिया में इसका प्रभाव अति उत्तम होता है। गर्भाशय में शूल, अनियमित मासिक-स्राव, कष्ट के साथ थोड़ा-थोड़ा स्राव या अति स्राव इत्यादि विकारों में इसका सेवन और स्थानिक लेप अच्छा लाभ पहुँचाता है।

नोट—एलुआ गरम और भेदक होने के कारण गर्भवती स्त्री को सेवन नहीं कराना चाहिए क्योंकि इससे गर्भपात होने की सम्भावना रहती है। गर्भाशय बीज कोष और बीजबाहक नलियों पर इसका दाह जनक प्रभाव होकर आर्त्तव प्रारम्भ हो जाता है। गर्भावस्था के अतिरिक्त अत्यार्त्तव (Menorhagia) अर्श इत्यादि की अवस्था में भी इसका प्रयोग वर्जित है। इसके अतिरिक्त शिशुओं को दुग्धपान कराने वाली स्त्रियों को भी इसका सेवन निषिद्ध है। इसके सेवन काल में द्विदल, धान्य, मिठाई एवं गरिष्ठ पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए अथवा कम करना चाहिए।

लोहादि वटी—एलुआ 10 तोला, कसीस साढ़े सात तोला, दालचीनी, इलायची के बीज, सौठ (प्रत्येक 5-5 तोला) तथा गुलकन्द 20 तोला—इन सबको मिलाकर खूब खरल करके 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर रखलें। यह 1 से 3 गोली तक जल से दिन में दो बार दें। यह प्रयोग अति सौम्य है। स्त्रियों के अतिरज: रजावरोध, कष्टार्त्तव, नष्टार्त्तव, अनियमित रज:स्राव आदि विकारों को यह योग नष्ट कर देता है। मासिकधर्म आने के प्रारम्भ काल में 10 दिन औषधि बन्द रखकर पुन: प्रारम्भ करें। कई स्त्रियों को मासिकधर्म आने के प्रारम्भ काल से ही उदर पीड़ा होनी है। रज: स्राव शुद्ध नहीं होता है। सिर पीड़ा, व्याकुलता, अरुचि, अग्निमांद्य, मलावरोध आदि लक्षण होते हैं। ऐसी स्थिति में 5-6 मास तक निरन्तर इसका सेवन कराने से रज:स्राव नियमित होने लगता है। छोटी या बड़ी आयु वाली सभी रोगिणी (स्त्रियों) को इसका सेवन कराया जा सकता है।

नोट—यदि रुग्णा को पाण्डुता आ गई हो तो (रक्त की न्यूनता हो गई हो) तो सर्वप्रथम रक्तवर्धक औषधि (योग का) सेवन करायें। फिर मासिक शुद्धि न होती हो तो लोहादि वटी का प्रयोग करायें।

इसके प्रयोग से दृढ़ हुआ रोग भी निवृत्त हो जाता है। मासिक धर्म विकृति से सिरदर्द, दृष्टिमांद्य, पान्डुता, कमर पीड़ा, अरुचि, बेचैनी, निर्बलता इत्यादि लक्षण हो तो भी दूर हो जाती है एवं मलावरोध के कारण मासिकधर्म में अति कष्ट हो तो उसमें लाभ होता है। इसके अतिरिक्त युवा स्त्रियों को हलीमक रोग (इस रोग में पान्डु विशेष जिंसमें देह का रंग हरा सा हो जाता है) सहित कष्टार्त्तव में भी एलुआ और कसीस प्रधान लौहादिवटी का उपयोग होता है। एलुआ, हीरा बोल, कसीस, खुरासानी अजवायन का सत्व मिश्रित गोलियाँ भी दी जाती हैं।

रज: प्रवर्त्तनी वटी—एलुआ, चौकिया सुहागा, भुनी शहद, हींग, शुद्ध हीरा कसीस सभी सम मात्रा में लेकर घी ग्वार के रस में घोटकर चूना के आकार की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखलें। नष्टार्त्तव, कष्टार्त्तव, योनि शूल के कष्टों को दूर करती है। इसके सेवन से मासिकधर्म खुलकर होने लगता है।

मूंगफली

सर्वविदित एवं प्रसिद्ध एक उत्तम खाद्य पदार्थ है। इसकी बेल होती है, जो जमीन पर फैलती है, इसमें पीले रंग के फूल आते हैं तथा इसके पत्ते चकबड़ या पंवाड़ के पत्तों के सदृश होते हैं। इसकी फलियां जमीन के अन्दर (कन्द जैसे) गुच्छों में लगती हैं। जब ऊपर की बेल सूखने लगती है तब समझा जाता है कि अन्दर की फलियाँ पक गई हैं, और प्रत्येक बेल के आस-पास मिट्टी खोदकर फलियां निकाल ली जाती हैं। इसका कोई भी भाग व्यर्थ नहीं जाता है। बेल तथा बेल की पत्तियां एवं फलियों का छिलका भी जानवरों के लिए एक पौष्टिक खाद्य है। मूंगफली की कच्ची फली भी भूनकर खाई जाती है जो अत्यन्त स्वादिष्ट होती है।

मूंगफली मधुर, स्निग्ध, वादी, कफकारक, पित्तकारक, मलावरोध (मल को बांधने वाली) है। इसके तैल के गुण भी इसी प्रकार है। इसमें बहुत सा भाग स्टार्च (Starch) तैल और एल्ब्यूमिन से परिपूर्ण होता है।

मूंगफली का तैल 1 पाव और ब्राह्मी रस 1 सेर लेकर मन्दाग्नि पर पकाकर तैल मात्र शेष रहने पर उतारकर, छानकर किसी साफ स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रखलें। इस तैल को प्रतिदिन मस्तक पर मर्दन करने से सिरदर्द इत्यादि नष्ट होकर मस्तिष्क बलवान होता है तथा इससे अपस्मार रोग में भी फायदा होता है।

मूंगफली का तैल 1 चम्मच और शहद दो चम्मच मिलाकर दिन में दो बार सेवन करने से दस्त साफ होकर कोष्ठाश्रित वात-नष्ट हो जाता है।

इस ढंग से एक ही बार सेवन करने से कोठा साफ हो जाता है (जैसे कि एरन्ड तैल से होता है) मूंगफली का तैल 5 तोला और शहद ढाई तोला एकत्र कर एक ही बार सेवन करायें।

नित्य तालु तथा मस्तक पर केवल मूंगफली का तैल मर्दन करने से नेत्रों की उष्णता कम होकर मस्तक ठण्डा बना रहता है।

मूंगफली का तैल आधा सेर, हल्दी 1 पाव, खश (उशीर) 1 तोला लेकर कल्क बनाकर तैल विधि से सिद्ध कर सुरक्षित रखें। इस तैल की शरीर में मालिश करने से जीर्ण ज्वर में लाभ होता है, शरीर की खुजली रक्त शुद्ध होता है।

क्षय रोग से ग्रसित रोगी के शरीर में उपर्युक्त योग (तैल) की नित्य मालिश करने से क्षय रोग का जोर कम हो जाता है।

मूंगफली का तैल, बच, बच्छनाग और अपामार्ग क्षार 1-1 तोला और मदार

का दूध या रस आधा सेर लेकर मन्दाग्नि पर तेल सिद्ध कर सुरक्षित रखलें। इस तैल को कान में डालने से बहरापन कर्णनाद, कर्णस्राव आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

● मूंगफली के तैल की छाती, सिर, तालु सहित समस्त बदन पर करने के उपरान्त उष्ण जल से स्नान कराने से बालकों को अपस्मार रोग नहीं होता है।

● शरीर पर कहीं पर भी जख्म होने के कारण रक्तस्राव होने पर मूंगफली के तैल को कपास के फाहे में तर करके लगा देने से तुरन्त ही रक्त स्राव बन्द हो जाता है।

● 250 ग्राम मूंगफली का तैल गरम करके उसमें दो तोला कपूर मिलाकर शीशी में सुरक्षित रखलें। सन्धिवात वेदना इसकी मालिश से दूर हो जाती है। यदि छाती में दर्द हो तो इस तैल की अथवा मात्र मूंगफली के तैल की ही मालिश करें। अत्यन्त लाभकारी है। शरीर में लाठी आदि की गुम चोट की पीड़ा व सूजन में भी उक्त तैल लाभकारी है।

● मूंगफली का तैल 5 तोला की मात्रा में गरम कर इसमें पिपरमेन्ट का फूल (सत) ढाई तोला मिलाकर शीशी में मुख बन्द करके सुरक्षित रख लें। पेटदर्द की शिकायत होने पर इस तैल की 2-3 बूंदें शक्कर के साथ खाने से पेट का दर्द बन्द हो जाता है।

● उपरोक्त तैल की 2-3 बूंदें रुई के फाहे में डालकर दाढ़-दांत में पीड़ा होने पर दबाने से लाभ होता है।

● मूंगफली का तैल 4 तोला, भांगरा (भृंगराज) का रस दो तोला, बायविंडग तीन माशे, अपामार्ग क्षार दो माशा, कपूर दो माशा और कबीला आधा तोला लें। सर्वप्रथम बायविंडग क्षार तथा कबीला एकत्र कर खूब महीन चूर्ण कर लें तदुपरान्त उक्त तैल और रस में मिलाकर सब एकजान करलें। उसके बाद आग पर चढ़ा दें। जल रस जब जाए तो तब इसमें 1 तोला शहद डालकर गाढ़ा हो जाने तक पकालें। नित्य प्रति इसकी 2-3 बूंदें नाक में छोड़ने और तालु पर मालिश करने से 7 दिन में पीनस रोग में लाभ हो जाता है।

● मूंगफली का तैल 1 पाव, कपूर और मोम 1-1 तोला लें। तैल और मोम आग पर गरम करके तदुपरान्त नीचे उतारकर इसमें कपूर डालकर खूब घोटकर मलहम बनालें। इस मलहम के लगाने से दाद, खाज, खुजली आदि चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं।

● मूंगफली का तैल 6 तोला, मुर्दासंग, राल और मोम 1-1 तोला लें।

सर्वप्रथम मोम और तैल को एकत्र कर पकावें फिर इसमें राल और मुर्दासंग का महीन चूर्ण डाल दें तथा खूब घोटकर मलहम तैयार कर लें। यह मरहम अस्थिव्रण, नासूर तथा भगन्दर को नष्ट कर देता है। इसके लगाने से कोई भी व्रण हो शीघ्र ही, रोपण हो जाता है। दिन में 2-3 बार लगाया करें।

मस्तक रोपन पाक—मूंगफली के दाने 1 पाव, बादाम की गिरी, छोटी इलायची, पिस्ता, चिरौंजी, किशमिश, खशखश (प्रत्येक 9-9 टंक) और शुद्ध केसर 1 तोला लेकर सभी को एकत्र कर गाय के दूध में कूटकर 1 गोला सा बनाकर रखलें। फिर इसमें गाय के दूध का खोवा (मावा) 1 सेर मिलाकर कड़ाही में आधा सेर घी के साथ अच्छी तरह पका लें। तदुपरान्त मिश्री 1 सेर लेकर इसकी चाशनी बनाकर उपरोक्त गोला इसी में छोड़कर झटसे कड़ाई को नीचे उतारकर (करछुली से पाक और चाशनी को ठीक प्रकार से चला-फिराकर) एकत्रकर 9 टंक के लड्डू बनाकर अथवा थाली में डालकर चाकू से बर्फी के समान पीस काटकर सुरक्षित रखलें। इसे सुबह-शाम (भोजनोपरान्त) 9 टंक की मात्रा में खाने से मस्तक दर्द, शूल, आँखों की लाली, धुंधलापन, निद्रानाश इत्यादि विकार नष्ट होकर मस्तिष्क शान्त रहता है। इस योग की 14 या 1 दिन सेवन करें। प्रयोग काल में दही, तैल, अम्ल पदार्थ और लाल मिर्च न खायें।

● मूंगफली के दाने 1 पाव, और बादाम की मींगी 1 पाव, कंकोल (कबाबचीनी), शहद और छोटी इलायची के दाने सभी आधा-आधा तोला गाय का घी तीन तोला, ताजा खोवा (मावा) दो तोला और मिश्री 250 ग्राम लेकर एकत्र सिल पर पीसकर मिलालें। इसे नित्य सुबह-शाम 2-3 तोला सेवन करें तथा उपयुर्क्त योग में वर्णित परहेज करें। इसके सेवन से नेत्रों तथा हाथ की हथेलियों और पैरों के तलुवों में होने वाली जलन, आंखों का धुंधलापन, तन्द्रा, दृष्टिक्षीणता, मस्तिष्क की गर्मी और वात पित्त जन्य व्याधियां नष्ट हो जाती हैं।

● मूंगफली के दाने आधा सेर जल में भिगोकर दूसरे दिन छीलकर दूध के साथ सिल पर पीसलें। तदुपरान्त खोवा आधा सेर घृत में भूनकर कल्क को भी घी में भूनलें। दोनों को मिलाकर इसमें बादाम की गिरी, किसमिस 1-1 टंक और जायफल, जावित्री, लवंग, काली मिर्च, कलमी तज, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, वंशलोचन सभी 2-2 तोला लेकर महीन चूर्ण करके पाक में मिलादें। तदुपरान्त 3 सेर मिश्री की चाशनी बनाकर उक्त सभी द्रव्य इसमें डालकर कतली काट लें। इस पाक के सेवन से जीर्ण ज्वर और क्षय रोग नष्ट हो जाते हैं। यह

अत्यन्त शक्तिबर्धक पाक है। इसे नित्य सुबह-शाम (आयु अवस्था अर्थात् बलाबलानुसार) सेवन करें, तथा ऊपर से दुग्धपान करें। दूध, घृत और गेहूँ की रोटी खायें। दही, तेल, अचार व खट्टा तैल और वातकारक पदार्थों से परहेज करें। इस योग के सेवन से पीनस रोग भी नष्ट हो जाता है।

● 10-10 ग्राम भुनी मूंगफली के दानों का चूर्ण और मिश्री चूर्ण मिलाकर भोजनोपरान्त सूखा रोग (रिकेट्स) से ग्रसित बच्चे को खिलाने से लाभ हो जाता है।

नोट—औषधि की खुराक धीरे-धीरे बढ़ाते जायें।

अजमोदा

सुप्रसिद्ध जड़ी-बूटियों में इसकी गणना की जाती है। इसके पौधे अजवायन की तरह (लेकिन उससे थोड़े-बड़े) लगभग तीन फुट ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते बड़े कटावदार और कंगूरेदार होते हैं। वर्षाकाल से बसन्त ऋतु तक इसमें फूल आते हैं और अप्रैल मास में फल लगते हैं जो आकार में अजवायन से जरा बड़े होते हैं। यह बोए भी जाते हैं और काली मिट्टी युक्त जमीन पर स्वतः भी उग आते हैं। यह समस्त हिन्दुतान में उत्पन्न होता है किन्तु पंजाब में इसकी विशेष पैदावार की जाती है।

अजमोद चरपरा, तीक्ष्ण, जठराग्नि बढ़ाने वाला, कफ और वात नाशक, गरम, जलन उत्पन्न करने वाला, हृदय को प्रिय, वीयबर्धक, बलकारक तथा हल्का होता है। यह नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी तथा बस्तिगत रोग नाशक गुणों से भरपूर है। गरम और रूखा होने के कारण गर्भवती स्त्रियों और दुग्धपान कराने वाली महिलाओं तथा मृगी के रोगियों के लिए हानिकारक है। वैसे यह भूख बढ़ानेवाला, अफारा मिटाने वाला, मल निकालने वाला, कृमिनाशक और कामोद्दीपक द्रव्य है। यह आमाशय में गर्मी उत्पन्न करके एक प्रकार की भाप पैदा करता है और यह भाप मस्तिष्क में पहुँचकर वात को कुपित करता है जिसके फलस्वरूप उत्तेजना उत्पन्न होती है जो मिर्गी, गर्भवती स्त्रियों और शिशु को दुग्धपान कराने वाली स्त्रियों को हानि पहुँचाती है।

अपच, उदर विकार, मूत्र विकार, पथरी, उदरशूल, वात रोग और कृमिनाशक योगों में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। अजमोदादि चूर्ण और अजमोदि वटक नाम से बाजार में इसके संयोग से बनी औषधियाँ उपलब्ध है। इसका तैल भी बाजार में उपलब्ध है। इसके तैल को लगाने से वातजन्य और वादी या धूनी देने से बच्चों

की गुदा के कृमि मर जाते हैं। इसको जलाकर इसके धुएं के ऊपर बच्चे की गुदा करने से गुदा में धुंआ लगता है यही क्रिया धूनी देना कहलाती है। इसी प्रकार धूनी देने से दाँत दर्द में लाभ होता है।

● अजमोदा और लौंग के ऊपरी भाग (टोपी) को पीसकर शहद के साथ चटाने से उल्टी (कै) आना बन्द हो जाती है।

● अजमोद का चूर्ण तीन ग्राम और मूली का रस 1 चम्मच मिलाकर कुछ दिन तक प्रतिदिन 1-2 बार चटाने से पथरी गलकर मूत्रमार्ग से निकल जाती है।

● अजमोदा को (पीसकर पानी में) लेप करने से शारीरिक अंग की वेदना नष्ट हो जाती है।

● अजमोदा को कुछ दिन तक पान में रखकर चूसने से सूखी खाँसी ठीक हो जाती है।

● इसे गर्म करके बिस्तर पर बिछाकर लेटने से पसली-दर्द में लाभ होता है।

● अजमोद चूर्ण और पिसा हुआ काला नमक 3-3 ग्राम फांकने से पेट का दर्द मिट जाता है।

● अजमोदा के चूर्ण को गुड़ में मिलाकर (काबुली चने के बराबर मात्रा में) गोली बनाकर खाने से पेट का अफारा और रतनाव मिट जाता है।

● महिलाओं के लिए कष्टार्त्तव व मासिकस्राव की रुकावट दूर करने हेतु यह श्रेष्ठ औषधि मानी जाती है।

● बाजार में इसके मोदक भी आयुर्वेदिक स्टोरों पर बिकते हैं।

● इसके अन्य अनेकों योग विभिन्न अनुपानों से सेवन कर विभिन्न प्रकार के रोगों का समूल नाश किया जाता है।

सैंधा नमक

सैंधा नमक सफेद और थोड़ी लालिमा लिए हुए दो प्रकार का होता है। यह खदानों से खोदकर निकाला जाता है। भारतवर्ष में हिमाचल प्रदेश इसकी उत्पत्ति का प्रमुख स्थान है। यह चमकदार पत्थर की तरह होता है और कंकड़ मिट्टी निकालकर प्रयोग में लाया जाता है। इस नमक को रासायनिक भाषा में "सोडियम क्लोराइड" के नाम से जाना जाता है।

यह नमक स्वादिष्ट, अग्निबर्धक, पाचक, हल्का, रुचिकारक, शीतल, वृष्य, नेत्रों को हितकारी और तीनों दोषों का शमन करने वाला है।

चिकित्सा के रूप में सैंधा नमक का उपयोग अरुचि, अजीर्ण, उदर शूल और कब्ज विकार दूर करने के लिए अन्य द्रव्यों के साथ किया जाता है। जिन्हें सफेद नमक (जो प्रायः साग-सब्जियों में इस्तेमाल होता है) हानि पहुँचाता हो, वे लोग उसके स्थान पर इस नमक का प्रयोग करते हैं। उपवास करने वाले नमकीन व्यंजनों में सफेद नमक के स्थान पर इसी का प्रयोग किये जाने का विधान है। सैंधवादि तैल, सैन्धवादि चूर्ण आदि पेटेन्ट शास्त्रीय योगों में इसका उपयोग होता है। ये औषधियाँ बाजार में उपलब्ध है।

काला नमक (संचर या सोवर्चल लवण)

यह नमक गहरे नीले या काले रंग का होता है। यह नमक भी दो प्रकार का होता है—1. गन्ध युक्त (सोवर्चल लवण कहलाता है) 2. गन्ध रहित (काला नमक कहलाता है) इसमें लोहा और गन्धक की मात्रा पाई जाती है।

काला नमक रुचिकारक, मलभेदक, दीपक, पेट की वायु निकालने वाला और अनुलोम करने तथा साधारण पित्त करने वाला है।

चिकित्सा के रूप में इस नमक का उपयोग अरुचि, अपच, पेट फूलना, गैस ट्रबल, उदर शूल इत्यादि रोग नाश हेतु अन्य द्रव्यों के साथ किया जाता है। इसका जरा सा टुकड़ा मुख में रखकर चूसने से खाँसी का ठसका रुक जाता है और गले का कफ निकल जाता है।

● 2-3 ग्राम की मात्रा में इसे पीसकर जल के साथ फाँकने से पेट में रुकी हुई वायु निकल जाती है और पेट हल्का हो जाता है। सैंधा नमक और काला नमक व्यंजनों में स्वाद और पाचन हेतु देश की गृहणियाँ खूब प्रयोग करती हैं।

शहतूत

इसकी गणना फलों में की जाती है। यह बाग-बगीचों में लगाया जाता है। शहतूत समस्त हिन्दुस्तान में उत्पन्न होता है। पका हुआ शहतूत भारी, स्वादिष्ट, शीतल, मीठा, पित्त व वातनाशक, संकोचक, रक्त विकार और रक्तपित्त नाशक है। गले की खराश नाशक, शान्ति व तृप्ति प्रदायक, प्यास और बढ़ी हुई शारीरिक उष्णता नाशक, कृमि नाशक और पौषक गुणों से भरपूर है। कच्चा शहतूत भारी, दस्तावर, खट्टा, कसैला, गरम और रक्तपित्त कारक होता है। अतः हरा तथा कच्चा शहतूत नहीं खाना चाहिए। शहतूत पक जाने पर लाल तथा कत्थई रंग का हो जाता है। यही पका हुआ शहतूत होता है।

●शहतूत का रस सेवन करने से गले की खराश व खराबी, दाह, उष्णता, प्यास और पित्त का शमन होता है। कफ, गले की खराश, सूजन, दाह और जलन में इसका सेवन अत्यधिक लाभप्रद रहता है।

●शहतूत का रस 1 चम्मच 1 गिलास पानी में घोलकर गरारे करने से गले की खराबी और टान्सिल की सूजन में आराम हो जाता है।

●गरारे करने के साथ ही साथ शहतूत का शर्बत (रस) 1-1 चम्मच दिन में 3-4 बार पीने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं

●शहतूत खाने से कुपित पित्त शान्त हो जाता है और इसके निरन्तर सेवन से रक्त विकार नष्ट हो जाते हैं।

●शहतूत के रस में थोड़ी शक्कर मिलाकर पीने से शरीर में बढ़ी हुई गर्मी पेट, पेडू, मूत्राशय पर चढ़ी हुई गर्मी और जलन दूर हो जाती है।

●शहतूत के पत्ते चारपाई पर चारों ओर (चारों तरफ) बिस्तर पर बिछाकर शयन करने से खटमल भाग जाते हैं।

भटकटैय्या, कटेरी कन्टकारी

यह वनस्पति समस्त भारतवर्ष में (विशेषकर कस्बों और गाँवों में सड़कों के किनारे, नदी, नालों व खेतों के आस-पास) बहुतायत से उत्पन्न होती है। यह दो प्रकार की होती है। छोटी-छोटी भटकटैय्या और बड़ी भटकटैय्या। किन्तु गुण दोनों के एक समान हैं। इसकी दो जातियाँ हैं नील-पुष्पी और श्वेत-पुष्पी अर्थात् नीले फूल वाली और सफेद फूल वाली। सफेद फूल वाली कम और नीले फूल वाली कटेरी बहुतायत से पाई जाती है। बड़ी कटेरी का पौधा 3-4 हाथ ऊँचा होता है इसके पत्ते बैंगन के पत्तों के समान, फल पकने पर पीले हो जाते हैं। इसमें फूल नीले और बैंगनी रंग के होते हैं और फूल के अन्दर पीले रंग की केसर होती है। बसन्त व ग्रीष्म ऋतु में इसमें फूल आते हैं। वर्षा ऋतु में गोलाकार और सफेद धारी वाले फल लगते हैं जो शरद ऋतु में पककर पीले हो जाते हैं।

छोटी कटेरी का पौधा ऊँचा नहीं, बल्कि जमीन पर फैला हुआ होता है। इसकी शाखायें आड़ी, टेड़ी होती हैं। पत्तों में कांटे होते है। छोटी कटेरी के फल आकार में छोटे और रूप में बड़ी कटेरी जैसे ही होते हैं। भटकटैय्या दस्तावर, कड़वी, चरपरी, अग्निदीपक, हल्की, रूखी, गरम, पाचक और खाँसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पसली की पीड़ा, कृमि व हृदय रोग नाशक गुणों से भरपूर है। कफ, दमा और खाँसी को नष्ट करने के लिए यह विशेष प्रसिद्ध है।

●भटकटैय्या के फूल, फल, बीज, पत्ते और जड़ अर्थात् पंचांग (पांचों अंग) औषधि रूप में उपयोग किये जाते हैं।

●भटकटैय्या के फूलों के बीच में जीरे के समान पीली केसर लगी होती है। इस केशर को फूलों से निकालकर पीसकर महीन चूर्ण कर सुरक्षित रख लें। इस चूर्ण को दो चावल भर की मात्रा में बच्चों को शहद से चटाने से उनकी खांसी ठीक हो जाती है।

●भटकटैय्या की जड़, छाल, पत्ते और फल दो गिलास पानी में डालकर उबालें जब पानी डेढ़ गिलास शेष रह जाए तब उतार छानकर इस पानी (क्वाथ) से कुल्ला करने से दांत का दर्द मिट जाता है।

●भटकटैय्या के फलों का काढ़ा करके इसमें दो ग्राम सिंकी हुई हींग और दो ग्राम सैंधा नमक डालकर सेवन करने से दमा रोग ठीक हो जाता है।

●भटकटैय्या के बीज निकालकर छाछ में डाल दें। थोड़ा सैंधा नमक डालकर छाछ को आग पर रखकर औटायें। बाद में बीजों को धूप में रखकर सुखा लें। यह क्रिया सात दिनों तक निरन्तर करें (प्रत्येक रात्रि को ताजी छाछ में डालकर भिगोयें और सुबह धूप में सूखने के लिए छाछ से निकालकर रख दें) सात दिन के बाद इन बीजों को शुद्ध (देशी) घी में तल लें। इन बीजों को दो तोला की मात्रा में प्रतिदिन खाने से मन्दाग्नि, पित्त विकार और उदरशूल नष्ट हो जाता है।

●कटेरी का दूध नाक में टपकाने से मिरगी रोग में लाभ होता है।

●कटेरी के पत्तों या जड़ को पानी में पीसकर माथे पर लेप करने या पत्तों के रस को नाक में टपकाने से नकसीर बन्द हो जाती है।

●भटकटैय्या के फलों का रस निकालकर माथे पर लेप करने से सिरदर्द में आराम हो जाता है।

पानी (जल)

आयुर्वेद शास्त्र में पानी (जल) के विषय में विस्तार से वृंहद वर्णन मिलता है। जल के दो भेद हैं—1. दिव्य जल (आकाश का जल), 2. भौम जल (पृथ्वी का जल)। दिव्य जल चार प्रकार के (धाराज, करकाभव, तौषार और हेम) और धौराज जल दो प्रकार का (गंगाजल और समुद्र जल) भौम जल तीन प्रकार का (जांगल जल, अनूप जल और साधारण जल) यथा—अनार्तव नादेय, औदभिद, नैर्झर, सारस, तड़ाग, वाप्य, कौप, चौंज्य, पाल्वेल विकिर आदि।

दूषित जल का सेवन न करके सदैव ताजा जल का सेवन करना चाहिए ।

● ज्वर, उदर रोग, अपच, उल्टी, उदर शूल, कमरदर्द, जुकाम, गले में शोथ, खराश होने की स्थिति में उबालकर ठण्डा किया हुआ जल का सेवन करना चाहिए ।

● एक बार गरम किए हुए जल को दुबारा नहीं उबालना चाहिए ।

● भोजन के मध्य में थोड़ा-थोड़ा पानी पीना चाहिए, किन्तु भोजन से आधा घंटा पूर्व तथा भोजनोपरान्त 1-1 घंटे बाद तक पानी नहीं पीना चाहिए ।

● एक वक्त में 1 गिलास से अधिक पानी नहीं पीना चाहिए ।

● गरम पदार्थ खाने अथवा पीने के तत्काल बाद ठण्डा पानी नहीं पीना चाहिए।

● भूख लगी हो तो तब पानी नहीं पीना चाहिए ।

● पेट दर्द और उल्टी होने की स्थिति में पानी नहीं पीना चाहिए ।

● मधुमेह, अम्लपित्त, बहुमूत्र, वायु प्रकोप के रोगी को पानी की अपेक्षा दूध पीना अधिक लाभप्रद है ।

● पानी थोड़ी-थोड़ी देर और थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पीना उचित होता है ।

● अरुचि, जुकाम, बुखार, मन्दाग्नि, सूजन आदि होने पर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में (बार-बार नया ताजा जल उबालकर ठण्डा किया हुआ) पानी पीना चाहिए ।

● सर्दी, जुकाम और श्वास रोग में गरम पानी ही पीना चाहिए ।

● ठण्डा पानी बेहोशी होने, पित्त बढ़ने, गरमी व दाह होने, रक्त विकार अधिक नशा, अधिक श्रम, तमक श्वास, रक्तपित्त इत्यादि रोगों में ठण्डा पानी पीना लाभप्रद है और गरम पानी पीना हानिकारक है ।

● सर्दी, जुकाम, मन्दाग्नि, उदर विकार, नया ज्वर, अरूचि, मधुमेह, सूजन, नेत्ररोग होने पर आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा जल पीना चाहिए ।

● हैजा रोग से ग्रसित हो जाने पर सौंफ डालकर उबाला हुआ पानी ठण्डा करके (1-1 चम्मच करके) पीना चाहिए । (अधिक पानी पीने से उल्टियां बन्द नहीं होती हैं)

● एक ही समय में अधिक मात्रा में पानी पीने से पेट डुबरा जाता है, कब्ज होता है और आम की वृद्धि होने से पाचन में बिलम्ब होता है । अत: बार-बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पानी पीना ही लाभकारी है ।

● शौच क्रिया और भोजन करने के तत्काल बाद, सूर्य की धूप व अधिक श्रम के कारण शरीर गरम होने पर (बिना विश्राम किये) और भोजन के पहले पानी नहीं पीना चाहिए ।

● चिकनाई युक्त तैल व घी के पदार्थ खाने के तुरन्त बाद ठण्डा पानी नहीं पीना चाहिए ।

● ज्वर व सन्निपात के रोगी को ठण्डा पानी पीना अत्यन्त हानिकारक है ।

● ऊषापान (सबेरे उठकर पानी पीना) शौच जाने से पहले ही (मात्र 1 सांस में पूर्णरूपेण सुगमता के साथ जितनी मात्रा में पीलें) पीना चाहिए । लेकिन कफ प्रकोप, मन्दाग्नि और नूतन ज्वर के रोगी को ऊषापान नहीं करना चाहिए ।

● शक्कर मिला पानी पीने से कफ की वृद्धि, और पित्त का शमन होता है तथा वायु घटती है । मिश्री मिला पानी पीना दोष नाशक और पोषक होता है । गुड़ मिला पानी पीना मूत्र की रुकावट दूर करने वाला, पित्त कारक और कफबर्धक होता है । पुराना गुड़ युक्त पानी पित्त नाशक और हितकारी होता है ।

● पेटदर्द नवीन ज्वर, पीलिया, सर्दी, जुकाम, गले में शोथ, प्रमेह, अरूचि, मन्दाग्नि, नेत्ररोग, वातरोग, कफ प्रधान श्वास रोग, खांसी और हिचकी इत्यादि रोग होने पर गरम या गरम करके ठण्डा किया हुआ पानी पीना उत्तम व लाभप्रद है।

● सुबह का उबाला हुआ पानी शाम तक और शाम का उबाला हुआ पानी रात में ही पी लेना चाहिए शेष बचने पर फेंक देना चाहिए ।

सर्पगन्धा

आयुर्वेद की यह दिव्य महौषधि उच्च रक्त चाप शमनार्थं सम्पूर्ण विश्व भर में अपने चमत्कारों से चमत्कृत कर रही है । यह औषधि आसाम, (पर्वतीय अंचल) बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब में बहुतायत से उत्पन्न होता है ।

सावधानी—दुर्बल, निस्तेज, रोगियों पर इसका प्रयोग सुयोग्य चिकित्सक की देखरेख एवं परामर्शानुसार ही किया जाना चाहिए । जिन रोगियों का रक्तचाप कम हो, उन पर इसका प्रयोग हानिकारक, सिद्ध हो सकता है । रक्तचाप अधिक होने पर इसका प्रयोग लाभकारी है । इसके प्रयोग के समय चिकित्सक अपनी सूझ-बूझ से देश, काल, प्रकृतिवय आदि का पूर्ण ध्यान रखें ।)

सर्पगन्धा स्वरस की 1-2 चम्मच देने से पहली ही मात्रा में उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure) नियंत्रित हो जाता है । स्वरस के अभाव में इसका पिसा हुआ चूर्ण आधा से 1 ग्राम तक दूध या जल या गुलाब जल से सेवन कराना चाहिए । इसके प्रयोग से गहरी निद्रा आती है, नशा तथारवत चाप नियंत्रित हो जाता है । उन्माद के खूब उत्तेजित बलवान रोगियों पर भी इसका प्रयोग लाभकारी

है। (किन्तु कमजोर रोगियों पर इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक कम मात्रा में करना चाहिए। शिर:शूल व अन्य शूलों में यह ऐलोपैथिक औषधि एस्प्रीन की प्रतिद्वन्द्वी है—जो वेदना के शमन पर गहरी नींद लाती है। पागलखानों (Mental Hospital) में निराश रोगियों पर योग्य चिकित्सक इसका विविध प्रकार से प्रयोग कर स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर यश व प्रतिष्ठा कमा रहे हैं। सर्पगन्धा निद्रानाश, वमन, शूल और हिक्का आदि में परम लाभकारी हैं।

मदार अर्क आक या अकौआ

●आधासीसी रोग में सूर्योदय से पूर्व ही आक की 1 फुनगी (टहनी के अग्रभाग में दो पत्रों के मध्य में जो बहुत सूक्ष्म अंकुर होता है, इसे ही फुनगी या कोपलें कहा जाता है) कैपसूल में बन्द करके निगलवा दें। पहले दिन से ही आराम हो जाएगा। इसी प्रकार प्रयोग दूसरे व तीसरे दिन से ही आराम हो जायेगा। परीक्षित व सफल प्रयोग है।

●अकौआ के पके पत्तों को साफ करके जरा सा शुद्ध घी लगा करके आग पर सेंक कर व रस निचोड़कर 2-2 बूंद कान में टपकाने से कान बहना बन्द हो जाता है तथा बहरापन (यदि जन्मजात न हो तो) अवश्य ही ठीक हो जाता है। यह योग भी परीक्षित योग है।

●आक के पत्तों पर सरसों का तैल लगाकर (चोट, मोच, गुम चोटों पर पुल्टिस बांधकर अथवा तैल में पिसी हल्दी, पान में खाने वाला थोड़ा सा चूना और जरा सा पिसा हुआ नमक आग पर गुनगुना कर ग्रामीण जन बांधकर) ऊपर से आक का पत्ता अथवा बेशर्म (नारी जो जलाशयों के निकट उत्पन्न होती है अथवा एरन्ड पत्रों) को बांधकर अक्सर लाभान्वित होते रहते हैं।

●आक के अन्य बहुत से घरेलू योग आपको इसी ग्रन्थ में पढ़ने को मिलेंगे। अत: अनावश्यक विस्तार नहीं किया जा रहा है।

●आक के पत्तों को गरम कर हाथों से मसलकर तीन माशा रस निचोड़ लें इसमें 1 रत्ती हींग मिला दें। जिस तरफ को दाढ़ में दर्द हो, उसी तरफ के कान में डालें, दवा डालते ही दाड़ दर्द बन्द हो जाएगा।

वासा (अडूसा)—रक्तपित्त, क्षय और खांसी की यह अव्यर्थ औषधि है। रक्तवमन व खाँसी में खून आने पर इसका 1-2 चम्मच रस पिलाना आशुफलप्रद है। (नोट—खाँसी में रक्त आने पर इसका प्रयोग 1 से 3 सप्ताह तक सेवन करना चाहिए)।

काला धतूरा—काले धतूरे की जड़ को लाकर छाया में सुखा लें और महीन पीसकर चूर्ण तैयार करलें। इस चूर्ण को प्रतिदिन डेढ़ तोला (18 ग्राम) की मात्रा में चावल के धोवन (पानी) से खाने से सफेद बाल गिरकर अन्दर से काले बाल निकल आते हैं।

बथुआ (शाक)—बथुआ का स्वरस तीन तोला, नमक (सांभर) तीन माशा मिलाकर प्रतिदिन प्रात:काल निहारमुँह 15 दिन लगातार पीने से ताप गलकर पानी हो जाती है। प्रयोग से पूर्व 10-12 दानें भुने चने के लेकर होठों को बन्द करके चबायें ताकि चनों की सौंधी खुराक उदर में पहुँचे और खुशबू लगने से तिल्ली अपना मुँह खोल दे तदुपरान्त तुरन्त ही मुख के अन्दर के सभी चने थूककर बड़ी फुर्ती के साथ बथुआ का उक्त स्वरस पी जाऐं। चमत्कारिक योग है।

मोंगरा (बेला)—मोंगरा की पत्तियाँ 5 नग, काली मिर्च 3 लेकर दो तोला पानी में पीसकर छानकर तीन माशा मिश्री मिलाकर सुबह-शाम पीने से (तीसरी मात्रा की आवश्यकता नहीं पड़ती है।) वर्षों पुरानी आंव, मरोड़, पेचिश (मात्र 2 या 3 मात्राओं में ही) नष्ट हो जाती है।

छोटी दूधी—छोटी दूधी 6 माशा को 1 छटांक (60 ग्राम) पानी में पीसकर 1 तोला शक्कर मिलाकर रखें। प्रथम मरोड़ फली तीन पीसकर तीन माशा शक्कर मिलाकर खिलादें तदुपरान्त उपयुर्वक्त दूधी को पिला दें। इस प्रयोग से मात्र तीन दिन में ही आंव, दर्द, मरोड़ की तकलीफें दूर होकर रोगी चंगा हो जाता है।

दरियाई नारियल—यदि 1 वर्ष तक की आयु के बच्चे को श्वास रोग हो तो इसे गुलाबजल में घिसकर 1 या दो रत्ती तथा 1 छोटी इलायची के दानें को बारीक पीसकर (मिलाकर) चटायें। यदि बच्चे को सूखा रोग हो तो इसे गुलाबजल में दो रत्ती घिसकर 1 लौंग मिलाकर सुबह-शाम चटायें।

●यदि हैजा की शिकायत उत्पन्न हो जाए तो दरियाई नारियल को गुलाबजल में घिसकर (2 रत्ती घिसे) और दो रत्ती पोदीना की पत्ती तथा 1 इलायची दाना पीसकर मिलाकर 1 घंटे में 4-6 बार दें। यदि बच्चे को अच्छी हालत (स्वस्थ अवस्था में) इस योग को घुट्टी के रूप में दिया जाए तो बच्चा मोटा-ताजा स्वस्थ व सुन्दर रहता है तथा किसी भी प्रकार का बच्चे को रोग नहीं होने पाता है।

●यदि गुलाब जल में दरियाई नारियल को घिसकर बच्चे को चटाया जाए तो तिजारी, चौथैय्या, ज्वर, लकवा, कम्पवात, आदि वात रोग नष्ट हो जाते हैं।

●कभी-कभी माताऐं अपने दुग्धपेयी शिशुओं को अफीम खिला देती हैं

जिसके फलस्वरूप बच्चे का जीवन खतरे में पड़ जाता है । ऐसी स्थिति में यदि 5 रत्ती (गुलाबजल या पानी से ही) दरियाई नारियल घिसकर चटाया जाए तो वमन द्वारा विष निकल जाता है । इस योग का सेवन बच्चे को 1-1 घंटे के अन्तर से कराना चाहिए । जब तक शरीर में जहर की उपस्थिति रहती है, वमन होती रहती है और जब जहर निकल जाता है तब वमन नहीं होती है । निमोनिया की हालत में भी दो रत्ती दरियाई नारियल चटाकर वमन कराने से भी लाभ होता है।

● बिच्छू, बर्र के काट लेने पर दंश स्थान में इसे घिसकर लगाने से तत्काल वेदना शान्त हो जाती है ।

● दरियाई के कमन्डल में पानी भरकर रखें । इस पानी को पीने से स्थावर एवं जंगम (दोनों प्रकार के विष) नष्ट हो जाते हैं । अथवा किसी भी प्रकार के विषों का कोई असर नहीं होता है । इसका पानी दस्तों को बन्द कर देता है । कफ सम्बन्धी समस्त रोग हर लेता है तथा हृदय रोगों में भी लाभकारी है ।

द्रोणपुष्पी (दड़गल)—इसका पंचांग जलाकर उस राख को पानी में भिगोकर पानी निथारकर, शीशी में रखलें । श्वास, हिचकी, गले का कैन्सर (जिसमें पीने में कष्ट होता है, स्वरभेद में उक्त पानी दिन-रात में 3-4 बार पिलाते रहना विशेष उपयोगी है । द्रोणपुष्पी का रस निकालकर आँखों में आंजने से पान्डुता और आँखों की शोथ नष्ट हो जाती है ।

● द्रोणपुष्पी के पंचांग का क्वाथ 5-7 दानें काली मरिच मिलाकर पीने से विषम ज्वर में लाभ होता है ।

● द्रोणपुष्पी की भस्म नाड़ी व्रण पर तिल तैल में मिलाकर लगाने से फायदा करती है ।

● द्रोणपुष्पी की भस्म को दूध में मिलाकर लेप करने से सभी प्रकार के व्रणों में लाभ होता है ।

● जोड़ों में दर्द होने पर द्रोणपुष्पी के पत्तों को पीसकर लेप करने से विशेष लाभ होता है ।

● इसके पंचांग के चूर्ण को स्त्री गुप्त रोगों में दूध के साथ प्रयोग करने से लाभ होता है ।

काली मिर्च के साथ इसके पंचांग को पीसकर गोली बनाकर सेवन करने से पैत्तिक ज्वर, विषम ज्वर, छर्दि (वमन) में लाभ होता है ।

शरफुंका—इसकी जड़ में पंचांग जलाकर नौसादर, काला नमक, अजवायन के साथ प्रयोग करने से यकृत-प्लीहा से छुटकारा मिल जाता है ।

● सरफुंका जड़ 1 भाग, गदहपूरना जड़ 1 भाग के क्वाथ में चीनी मिलाकर 1 सप्ताह तक धूप में रखदें । तदुपरान्त इसका सेवन करने से यकृत, प्लीहा तथा भीतरी किसी भी अवयव की शोथ में अवश्य लाभ होता है ।

जलजमनी (पाताल गरूड़ी)—इसके पत्तों को पानी में पीसकर, मथकर रखें तो पानी दही की भांति जम जाएगा । धातु विकृति, मूत्र विकृति में चीनी के साथ मिलाकर इसका सेवन उपयोगी है । सुयोग्य वैद्यगण लौह भस्म तैयार करने में इसका उपयोग करते हैं ।

पत्थरचूर (पाषाणभेद)—मूत्रावरोध (पथरी) में उपयोगी है । 10 ग्राम पाषाणभेद खाकर ऊपर से कुलथी पीसकर पानी के साथ पीना लाभप्रद है ।

गुड़मार—गुड़मार की पत्ती, जामुन की गुठली, कैथ का गूदा, बेलपत्र और करेला के पत्तों को पीसकर गोली बनाकर प्रतिदिन गरम जल से सेवन करने से मधुमेह (डायबिटीज) रोग से छुटकारा मिल जाता है ।

नोट—गुड़मार को खाकर चीनी या गुड़ खाने पर इसका स्वाद गायब हो जाता है अर्थात् मीठा नहीं लगता है ।

कुकुर भांगरा (कुकरौंधा)—किसी भी अंग से रक्त प्रवाह होने में यह उपयोगी है । विशेषत: रक्तार्श में कुकुर भांगरा और मधु का अवलेह या क्वाथ सेवन करायें । बाहरी क्षत से रक्त प्रवाह होने पर इसकी पुल्टिस बांधे अथवा फिटकरी चूर्ण के साथ इसकी पट्टी बांधें अथवा इसी भांति रक्त प्रवाह (बाह्य रक्तस्राव) रोकने हेतु गेंदा के फूल की पत्ती की पट्टी भी लाभप्रद है ।

करजनी (लाल)—इसकी पत्ती चबाने से प्यास बन्द होती है ।

नोट—इसी की पुरानी जड़ को कोई-कोई लोग जेठी मधु कहकर सम्बोधित करते हैं ।

कहुआ (अर्जुन)—अर्जुन वृक्ष की छाल का क्वाथ मधु के साथ पीने से हृदय शूल में लाभ होता है ।

चकौड़ के बीज—इसको तक्र (छाछ या मट्ठा) के साथ पीसकर उबटन लगाने से दाद (दिनाई), कन्डू आदि चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं ।

गूलर (उदुम्बर)—इसकी छाल का विस्फुटित व्रण पर लेप करने से व्रण सूख जाते हैं और भर जाते हैं । गूलर के पके फलों का सूखा चूर्ण कर मिश्री के साथ मिलाकर लेप करने से स्त्रियों का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है । इसके कच्चे फलों का भुर्त्ता बनाकर खाने से अतिसार, प्रवाहिका आदि में लाभ होता है ।

पुष्कर मूल—पुष्कर मूल का चूर्ण बनाकर (कपड़छन कर) सुरक्षित रखलें।

इसे 5 ग्राम की मात्रा में गरम दुग्ध से सेवन करने से साधारण शिर:शूल तो ठीक होता ही है, साथ ही यह प्रयोग अनन्तवात में भी लाभ करता है ।

नोट—कभी-कभी अत्तार (पन्सारी) पुष्कर मूल के स्थान पर मीठी कूट दे दिया करते हैं अतः इस बनौषधि को पहचान कर ही खरीदें ।

कायफल—नाम से आभास होता है कि यह कोई फल होगा । किन्तु यह फल नहीं है बल्कि पेड़ (वृक्ष) की छाल है । इसको कूट पीसकर कपड़छन कर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रखलें । इसे 10 ग्राम की मात्रा में गुड़ के हलुवे के साथ सेवन करने से (नोट—गुड़ का हलुआ शुद्ध गोघृत में बनाकर उसमें से 1 भाग लेकर उसमें उक्त चूर्ण मिलाकर खा जाऐं। पूर्ण औषधि चुक जाने के बाद सम्पूर्ण हलुवा पेट भरकर खालें) शिरो विरेचन हो जाता है और मस्तिष्क शुद्ध हो जाता है । यह प्रयोग 3 से 7 दिन तक ही मात्र करें ।

दूर्वा—यह भी एक सर्वविदित (सुपरिचित) औषधि है । इसे प्रायः बंगलों और वाटिकाओं में शोभा हेतु लगाया जाता है किन्तु आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण औषधि है ।

- यह रक्तस्राव की परम महौषधि है । रक्तार्श, रक्तप्रदर और रक्तपित्त में यह अत्यन्त ही लाभकारी है ।
- नासा रक्तस्राव में इसके रस की बूंदें नाक में टपकाने से लाभ होता है। इसका रस मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्तार्श तथा रक्तपित्त मिट जाता है । रक्तप्रदर रोग में इसके रस में मिश्री तथा अर्क चन्दन मिलाकर पिलाना उपयोगी है । मूत्र के साथ रक्त स्राव होने पर इसका फान्ट मिश्री मिलाकर पीना लाभप्रद है।
- घाव का रुधिर बन्द करने के लिए इसकी लुगदी पीसकर बाँधें ।
- दूर्वा तथा काली मिर्च पीसकर पीने से मूत्रवृद्धि होकर जलोदर और शोथ आदि रोग मिट जाते हैं ।
- पित्तज नेत्राभिष्यन्द में इसका रस निकालकर कुछ बूंद आंख में टपकाने से लालिमा नष्ट हो जाती है ।
- इसके क्वाथ से कुल्ला करने से मुख के छाले और मुखपाक ठीक हो जाता है ।
- रक्त विकृति में इसके फान्ट में मधु मिलाकर पीने से शरीर पर होने वाले काले दाग मिट जाते हैं ।
- इसका रस पिलाने से सम्पूर्ण शरीर का दाह, मूत्रदाह तथा सभी प्रकार के दाह शान्त हो जाते हैं । (क्योंकि दूर्वा की तासीर अत्यधिक ठण्डी होती है ।)

- श्मशान में उत्पन्न हुई दूर्वा को रविवार को उखाड़कर ले आवें । इसकी जड़ को कच्चे सूत से बांधकर भुजा में बाँधने से ज्वर आना नष्ट हो जाता है ।
- दूर्वा और चूका की भाजी समान मात्रा में पीसकर मस्तक पर लेप करने से दारुण शिर:शूल नष्ट हो जाता है ।
- दूब का रस डालकर कच्ची मिट्टी को पीसकर लगाने से पामा, खुंजली, फुन्सी और एलर्जिक पित्त शोथ शान्त हो जाता है ।
- दूर्वा रस तथा हल्दी को पीसकर दद्रु (दाद) पर लगाने से दाद मिट जाता है । इसके प्रयोग से खुजली तथा शीत पित्त भी शान्त हो जाती है ।
- प्रातःसमय (ऊषा काल) में सोकर उठकर वाटिका (लान) में दूर्वा (दूब, घास) पर पैदल नंग पैर घूमने से पित्तज दृष्टिहीनता समाप्त होकर निश्चय ही दृष्टि सम्बर्धन होता है ।

पन्चकोल—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सौंठ इन्हें ही पन्चकोल कहा जाता है । इनको समान मात्रा में लेकर अलग-अलग मोटा-मोटा (जौकूट) करलें । (यदि बारीक चूर्ण करलें तो और भी अच्छा है) तदुपरान्त छिलके वाली मूंग की दाल बनाने के लिए पानी चढ़ाते समय ही इस पन्चकोल को 10 से 20 ग्राम वजन में चूर्ण कपड़े की पोटली में बांधकर इसी पानी में (पतीली अथवा भगौनें में जिसमें दाल बन रही हो) डाल दें । जब दाल पक जाए तब इस पोटली को निकालकर फेंक दें । तदुपरान्त इस दाल का सेवन करें । पन्चकोल के प्रभाव से दाल और भी अधिक स्वादिष्ट हो जाएगी तथा सुगन्धित होने के साथ ही साथ पाचन शवित ठीक खाने वाले गुणों से भी परिपूर्ण हो जाएगी । अर्थात् यह योग अग्निमान्द्य नाशक है । यदि प्रतिदिन इस विधि से बनी दाल खाना सम्भव न हो तो सप्ताह में 2-3 बार तो खा ही लेना चाहिए ताकि अपच, कब्ज, भूख में कमी और वात-व्याधियाँ नष्ट हो सकें ।

आयुर्वेद सम्बन्धी ग्रामीणांचलों की मशहूर कहावतें

खाके मूते, सूते बाम । काहे को वैद्य बसावें ग्राम ।। ***(सारण व पटना)***

अर्थात् भोजनोपरान्त मूत्र त्याग करे और बांयी ओर करवट लेकर पलंग अथवा तख्त पर सोवे तो वैद्य को गांव में बसाने की आवश्यकता नहीं है । ऐसा करने से स्वास्थ्य स्वतः ठीक रहता है ।

खाके सोवे चित्त। वो वैद्य बुलावे नित ॥ *(पटना)*

अर्थात् खाना खाकर चित्त (उत्तान) रूप से सोने से शरीर रोगग्रस्त हो जाता है और ऐसा व्यवित नित्य वैद्य की शरण में रहता है।

भोजन करके सौ डग चले। बाम करवट सोये ॥ *(पटना)*

अच्छे स्वास्थ्य हेतु भोजनोपरान्त सौ कदम चलकर (हल्के-हल्के टहलें) तदुपरान्त बाम करवट लेकर शयन करे। ऐसा करने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है और रोग निकट नहीं आता है।

खाके चले कोस। मरें खुद देव को दोष ॥ *(पटना)*

अर्थात् भोजनोपरान्त तुरन्त कम से कम 1 कोस अथवा इससे अधिक मार्ग पैदल चलने वाला स्वयं की (इसी) भूल के कारण मरता है और ईश्वर को दोष देता है।

खाके पर जाइ। मार के टर जाइ ॥ *(आरा, चम्पारण)*

भोजनोपरान्त विश्राम करना और मारने (झगड़ा-फसाद) के बाद टल जाना (इधर-उधर चले जाना) आवश्यक है।

खाके सूते दहिने। वैद्य बुलावे तहिने *(पटना)*

खाना खाकर तुरन्त दांई करवट सोने से तत्काल वैद्य को बुलाना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप शरीर में उदर रोग घर कर जाते हैं।

खाके सूते पट्ट। वैद्य बुलावे झट्ट ॥ *(पटना)*

भोजनोपरान्त पेट केवल सोने से शरीर रोगी हो जाता है फलस्वरूप शीघ्र ही वैद्य को चिकित्सा हेतु घर पर बुलाना पड़ता है।

मूते खाय के पीछे। नहाय के पहले ॥ *(आरा)*

मूत्र त्याग भोजन के पश्चात् और स्नान से पूर्व करना अच्छा रहता है।

जो खाये चना। वो रहे बना।

चना अच्छे स्वास्थ्य हेतु अत्यन्त उपयोगी है। (बिहार)

चना, बाजरा, गाजरा, इसको समझो पुस्टाई।

जो इसको नेम से खावे, मोटा देह फैलाई ॥

खिचड़ी के है चार यार। दही, पापड़, घी, अचार (आरा)

मोटी दतुवन जो करे, नित उठ हर्रे खाय।

बासी पानी जो पिये, ता घर वैद्य न जाय ॥ (आरा)

चैते गुड़, बैसाखे तैल, जेठे पन्थ असाढ़े बेल।

सावन दूध व भादौं दही, ववार करेला, कार्तिक मही ॥

अगहन जीरा पूस धना, माघं में गाजर फागुन चना ॥

(उक्त मासों में उक्त पदार्थों को खाना वर्जित है)

(निम्न मासों में निम्न पदार्थों को अवश्य खाना चाहिए।)

कार्तिक दूध, अगहन में आलू, पूस में पान और माघ रतालू।

फागुन शवकर घी जो पाय, चैत आंवला कच्चा खाय ॥

बैसाखे जो खाय करेला, जैठे दाख, अषाढ़े केला।

ववार कामना दे नसाय, उसकी सत वर्ष आयु हुई जाय ॥

गरम भोजन करना हानिप्रद होने के कारण वर्जित है।

अधिक गरम जो पय पिये अथवा भोजन खाय।

वृद्धावस्था के प्रथम ही, बत्तीसी सब झर जाए ॥

निम्न गरम भोजनोपरान्त भी दांत नहीं गिरते हैं—

गरम दूध भोजन करो, राखन चाहो जो दन्त।

तो शीतल जल पीजिए, एक घड़ी के अन्त ॥

भोजन के साधारण (स्वास्थ्य हेतु) नियम

दूध दही और साग फल, दरिया खिचड़ी खीर।

गाजर, हलुआ, शहद, घृत, राखे शान्त शरीर ॥

दिवस अन्न निशि खाय फल, शयन समय पय पान।

कबहूं रोग न होय, शवित होय खूब बलवान ॥

जो ताजा भोजन करे, ताजा पानी छान।

स्वच्छ वायु सेवन करे, हो जाये शरीर बलवान ॥

सोवत नियमित समय जो, निश्चित समय आहार।

प्रातःकाल स्नान से, शक्ति बढ़े अपार ॥

जो अधिक बातें न करे, अधिक अन्न नहि खाय।

बिन निद्रा सोवे नहीं, अवश्य आयु बढ़ जाये ॥

जो भोजन के ग्रास को चाबै चालीस बार।

मध्यपिमध्य जल न पिये, बाढ़े शक्ति अपार ॥

स्नान के नियम

भोजन, यात्रा शयन के मैथुन और व्यायाम ।
घन्टा बाद नहाइये, पहुँचावेगा आराम ॥
गरमी शीतल वारि सो, वर्षा ताजा तोय ।
सदा नहावे शीत में, गरम गरम जल होय ॥
स्वच्छ वस्त्र या तौलिया, लीजे धोये निचोर ।
ऐसे भीगे वस्त्र सों, तन रगड़े चहुं ओर ॥
यही प्रकार नित रगड़ के जो नर सदा नहाये ।
कान्ति बढ़े, खुजली मिटे, त्वचा रोग मिट जाये ॥
साबुन, शोरा गरम जल, सिर में कबहूं न डाल ।
वृद्धावस्था से प्रथम ही श्वेत होय सब बाल ॥
मल आलस्य विनाशकर, करे पसीना बन्द ।
निश्चित समय नहाइये, सदा रहे आनन्द ॥
बरस भर कबहूं न कीजिए, साबुन को व्यवहार ।
सभी चिकनाई बदन की क्षण में देत निकार ॥
सूर्योदय के प्रथम ही जो नर सदा नहाय ।
रक्त शुद्ध दीर्घायु हो, ओज शक्ति बढ़ जाये ॥
कफ नजला अतिसार शिशु वृद्ध जुकाम बुखार ।
शीत प्रकृति नर को करे, शीत व वायु विकार ॥
अधिक सर्द और गरम जल, कबहूँ न भूल के नहाय ।
जोड़ों को ढीला करे, देवे वात बढ़ाय ॥

शौच के समय का नियम

लघु शंका और शौच में, कबहूं न मुख सों बोल ।
शौच समय सिर बांधिये, भोजन में सिर खोल ॥

दन्त मंजन का नियम

पूगीफल (सुपारी) बादाम का छिलका दे जलाय ।
पीसे अधिक महीन कर, मन्जन लेय बनाय ॥
गीली छाल बबूल की, लीजै छांव में सुखाय ।
9 इलायची डाल के काला नमक मिलाय ।

आध पाव जब छाल हो, नमक आठवां भाग ।
कूट कपड़छन कीजिए, मिटै दन्त के रोग ॥
त्रिफला, त्रिकुटा, तूतिया, पांचों नमक पतंग ।
दांत वज्र सम होत हैं, माजूफल के संग ॥
पुनि छिलका बादाम का, दीजे मित्र मिला ।
पिपरमैन्ट को डाल के, मन्जन लियो बनाय ॥

भोजन समय मुंख में लार की उपयोगिता

भोजन के प्रति ग्रास में, मिश्रित होवे लार ।
चुन चुन कर कीटाणु सब करते रस तैयार ॥
पुनः उसी रस से बने, रक्त धातु और कान्त ।
सदा निरोगी तन रहे, होय कब्जियत शान्त ॥

भोजन के साथ जल पीने का नियम

भोजानान्त या मध्य में पिये जो पुरुष तोय ।
भोजन सों बिलगाय के, लार वरि पर होय ॥
तेहि कारण बाढ़े अपंच, क्षुधा शान्त हुई जाय ।
बूढ़ें कब्जियत वात और मुख छवि देय मिटाय ॥

भोजन की मात्रा निर्धारण का नियम

भोजन के उपरान्त नित आती है अवश्य डकार ।
प्रकृति सूचना दे देती, कि अब पूर्ण हो गया आहार ॥
पुनः दांत मुख धोय के, नेत्रन छींटा मार ।
हाथ धोय मुख पे फेरिये, बाढ़े दृष्टि अपार ॥

– भोजन की विधि

भोजनान्त, लघुशंका जावे, मूत्ररोग सों मुवित पावे ।
दो घंटे में तक्र जो पाय, अन्न पचे कब्जियत न साय ॥

ऊषापान (सवेरे पानी पीने का नियम)

सूर्योदय के प्रथम ही, नभ में लालामी होय ।
आठ घूंट इक श्वास में, बासी जल पिये जोय ॥
कहते उषा पान यह, नाशे उदर विकार ।
नेत्रज ज्योति बुद्धि बढ़े, देवे कब्ज निकार ॥

तक्र (मट्ठा) के गुण

दोपहरी भोजन करे, तक्र पाव अनुमान ।
सौंठ नमक नित डार के, जो नर करता पान ॥
जो करे भोजन सभी, सारे उदर विकार ।
अन्य रोग नासै सभी, अति उत्तम उपचार ॥

रात्रि समय दुग्धपान के गुण

जो निशि भोजन के अन्त में, दो घंटा के बाद ।
एक पाव या अधिक पेय पिये नित्य कर याद ॥
आवे निद्रा चैन से, सब भोजन पच जाए ।
मिटै थकावट दिवस की, देवे शक्ति बढ़ाय ॥
जो भोजन के अन्त में, तोला भर गुड़ खाय ।
अपच मिटे, भोजन पचे, अरू कब्जियत नसाय ॥

शारीरिक वेगों को रोकने से होने वाली हानियाँ

लकवा गैस सिरदर्द और वायु शूल और मन्दाग्नि ।
तन भीतर फोड़ा करे, नष्ट होय जठराग्नि ॥

(अपान वायु को रोकने से उक्त हानियाँ होती हैं ।)

प्यास को रोकने से

गर्मी बढ़े दिमाग में हृदय बढ़ जाये ।
चर्म रोग खुजली, अपच, जो नहि प्यास बुझाए ॥

मूत्र वेग रोकने से

जलन, चिनग, पथरी तथा स्वप्नदोष हो रात ।
चूना सम पेशाब हो, ढरका गठिया वात ॥
लिखा पढ़ी या शीत में, नैनन बहावे नीर ।
लाल-लाल डोरे पड़े, दिन दिन बाढ़े पीर ॥

पुरीष वेग के रोकने से

बबासीर, मन्दाग्नि अरु चित्त उद्विग्न बनाय ।
आधाशीशी रोग हो, देता है क्षुधा मिटाय ॥
वायुशूल सिरदर्द अरु मिरगी कब्जियत होय ।
स्मरण शक्ति विनाश हो, शौच न जावे जोय ॥

शौच रोकने के समय, तालु गरमी छाय ।
केश शीघ्र श्वेत होय हैं या सब झर जाय ॥

निश्चित समय पर भोजन न करने से

कान्ति हीनता तिमिर अरु चित्त बेचैन बनाए ।
रक्त शक्ति का हास हो, सिर में चक्कर आये ॥
झुंझलाहट पैदा करे, देवे रक्त जलाय ॥
नाशे चित्त एकाग्रता, जो भूख समय नहि खाय ॥

छींक रोकने पर

पागलपन नजला तथा आलस पीनस रोग ।
अरु दिमाग रोगी बने, छींक रोकें जो लोग ॥

अंगड़ाई रोकने पर

गिल्टी बाढ़े बदन में, तन में आलस छाय ।
अंगड़ाई ले लीजिए हाथ-पांव फैलाय ॥

नींद रोकने पर

स्मरण शक्ति विनाश कर, सदा शीश भन्नाय ।
स्वास्थ्य क्षीण आलस बढ़े, अरु जमुंहाई आय ॥
अरु अजीर्णता कब्जियत हो, चित्त रहे बेचैन ।
कुछ न सुहावे हृदय में होय रोगी बेचैन ॥

जँभाई रोकने पर

पाचन शक्ति विनाशकर खांसी श्वास बढ़ाय ।
नेत्र मोतियाबिन्दु हो, तन में सुस्ती आय ॥
अंग शिथिल चकत्ते पड़े, होय अकौता दाद ।
सदा जभाई नाक सौं, लीन्हों रखिये याद ॥

जुकाम रोकने पर

रोके कबहूं जुकाम जो सिर में भारीपन होय ।
सबल वायु का रोग हो, सिर कबहूं न धोय ॥
मूंगफली घृत तेलमय जो जुकाम में खाय ।
खीर आदि नजला करे, खाँसी देय बढ़ाय ॥

नीबू के कुछ विशेष गुणों की कहावतें

अजीर्णता में

नीबू आधा काटिए, सैंधानमक मिलाय ।
भोजन से प्रथम ही चूसिये, तो अजीर्णता नसाय ॥

मलावरोध में

शयन प्रथम या बाद में, नीबू रस जल में डाल ।
जो प्रतिदिन सेवन करे, कब्ज मिटे तत्काल ॥

विशूचिका में

नीबू रस में प्याज को, दीजिए खूब मिलाय ।
प्रति घंटे पर सेवन करियो, हैजा जड़ से मिट जाये ॥

बच्चों के दूध डालने में

शुद्ध शहद में दीजिए, नीबू रस को डाल ।
बच्चों को चटाइये, उल्टी करें न बाल ॥

मसूढ़ों के दर्द में

नीबू रस से कीजिए, मन्जन बारम्बार ।
दर्द मसूढ़ों का मिटे, नष्ट होय रक्त विकार ॥

तिल्ली की वृद्धि में

नीबू रस पानी संग में, काला नमक मिलाय ।
जो प्रतिदिन सेवन करे तिल्ली रोग जड़ से मिट जाये ॥

शुष्क फलों के कुछ विशेष गुण

जो फल जेहि रंग रूप, तैसेई होय सहाय ।
आम, टमाटर रक्त जिमि, गाजर शवित बढ़ाय ॥
बढ़ै काली मिर्च से, नेत्रन दृष्टि अपार ।
गन्ना हड्डी हेतु जिमि, दांतन हेतु अनार ॥
हृदय शवित अखरोट से, तैल नारियल केश ।
अरू पुतली बादाम से, स्वयं सोचिए शेष ॥

शहद के गुण

चौथैय्या ज्वर में

प्रातः कलौन्जी लीजिए दो माशा पिसवाए ।
शहद संग इसे चटावाइये, तुरन्त चौथैय्या जाय ॥

रतौंधी में

शयन समय नित डालिए, शुद्ध शहद निज नैन ।
रोग रतौंधी दूर हो, अरू पावे नर खूब चैन ॥
केसर शहद मिलाय के, नेत्र माहि लगाय ।
लालामी गर्मी मिटे, रोग रतौंधी जाए ॥

नेत्रों की फूली में

शुद्ध शहद में दीजिए सैंधा नमक मिलाय ।
कछुक दिवस उपरान्त ही, फूली दे यह मिटाय ॥

तिल्ली रोग में

दस तोला मधु शुद्ध मंगावे, मिश्री दो तोला पिसवावे ।
पीपर पत्ती 1 पिसावे, सात काली मिर्च पिसवावे ॥
गोपम तक्र पाव औटावे, सभी मिला खावे, तिल्ली जड़ से जावे ॥

शरीर मोटा करने हेतु

आधा सेर पय भैंस का, खूब लीजिए औटाय ।
तौला शहद मिलाइए, बदान जाए खूब मुटाय ॥

मोटापा कम करने हेतु

गरम-गरम जल में पिये, तौला शहद मिलाय ।
तीन माह उपरान्त ही, तन दुबला हुइ जाय ॥

अतिसार में

कच्चा बेल कुचल पानी में, ले हन्डिया में इसे पकावे ।
स्वच्छ वस्त्र से छान गुनगुना, पिये दस्त को शीघ्र मिटावे ॥

बबासीर (वादी) में

गाय मूत्र में हर्र लघु दो तोला पिसवाय ।
गुड़ संग प्रातःकाल खाइये, बबासीर मिट जाए ॥

खूनी बबासीर में

धूनी दीजिए गुदा में भांग की, बबासीर नहीं होय ।
जल में घोल फिटकरी, शौच समय नित खूब धोय ॥

सभी प्रकार (खूनी या वादी) बबासीर में

ववकल जंगी हर्र का, सम मात्रा एलुआ पिसवाये ।
सुबह-शाम नित खाइये, गोली लीजिए बनाय ॥

हैजा में

तोला एक मदार जड़, लेओ महीन पिसवाये ।
अदरक रस में सान के, गोली लेओ बनाए ॥
ताहि गरम जल संग में, घन्टा-घन्टा में खाय ।
ऐहि भांति सेवन करे, हैजा जड़ से मिट जाए ॥

अकौता (छाजन, अपरस) में

नित्य नीम की पत्ती खावे, निश्चय रोग अकौता जावे ।
ऊँट मेंगना ताजा लावे, थालों में रख गरम करवावे ॥
जो पसीज थाली में आवे, ताहि लगावे अकौता जावे ।
शशक रक्त की चुपड़िये, जहाँ अकौता होय ।
सूख जाए जब रवत सब, पुनि जल से ले धोय ॥
ऐहि प्रकार कुछ दिन करे, पहुँचे अवश्य आराम
कुछ दिवस उपरान्त ही, शेष रहे न अकौता नाम ॥

फोड़े पर

अपामार्ग के पात की टिकिया लेओ बनाय ।
कड़वे तैल में भूनकर, बांधे सै फोड़ा नसाय ॥

खाज-खुजली में

अरहर दाल जलाय के, दधि में लेओ मिलाय ।
पकी खाज पर लेपिए, देवे रोग जड़ से मिटाय ॥

खाँसी में

पीस वंशलोचन सुबह रत्ती 1 मंगाय ।
शहद संग चटवाइये, खांसी जड़ से दे मिटाए ॥
छोटी पीवर शहद में, नित्य नियम से जो खाय ।
प्रातःकाल बासी मुख जो खावे, दमा श्वास रोग मिट जावे ॥
हर्र-बहेड़ा-आंवला, चित्रक राल गिलोय ।
सौंठ मिर्च पीपर सहित, बायविंडग भी होय ॥

तोला-तोला पीसके, लीजिए सभी को छनाय ।
एक छटांक मिश्री सहित, गोली लेओ फिर बनाय ॥
इमली की पत्ती हरी और रत्ती हींग मिलाय ।
सैंधा नमक मिलाय के, कांढ़ा लेओ बनाय ॥
चौथाई जल जब शेष रहे, तब गरम-गरम पिया जाय ।
यहि भाँति वुन्छ दिन पिये, सूखी खांसी जाय ॥
अलसी आधा पाव ले, और ले भुनाय पिसवाय ।
मधु संग दोऊ मिलायके आधा तोला खाय ।
तीन बार नित खाइये आलू सेवन देओ बचाय ॥

दमा में

पत्ती घुंघची श्वेत की, बंगला पान मंगाय ।
भोजन के बाद नित खाइये, दमा मूल से जाय ॥
पीपल छाल सुखाय के लीजिए चूर्ण बनाए ।
शुद्ध शहद में सान के दो आना भर खाय ॥
सूखी लकड़ी खैर की, लीजिए खूब पिसवाय ।
दो आना भर खाइये, शुद्ध शहद मिलवाय ॥
मोर पंख को लाकर लेय महीन पिसवाय ।
एक आना भर शहद में खाये तो दमा जड़ से नसाय ॥
जटा सहित ले नारियल, वर्मी से छिद्र कराये ।
आर-पार नहीं कीजिए, गोला गिरी छिदाय ॥
भरिए दूध मदार का, छिद्र बन्द कर देओ ।
खाक अग्नि में कीजिए, गिरी का चूर्ण कर लेओ ॥
रत्ती भर इसे नित पान में, प्रातः दुपहरी, शाम ।
दमा रोग में खाइये, होगा अवश्य ही आराम ॥

मधुमेह में

त्रिफला चूर्ण बनाय के, निशि में प्रतिदिन खाय ।
पुनि पाव भर पय पिये, मधुमेह रोग मिट जाय ॥

मलेरिया में

ग्यारह तुलसी पत्र जो स्याह मिर्च संग खाय ।
तो मलेरिया इकतारा आदि सभी जड़ मूल से जाय ॥

ग्यारह काली मिर्च और ग्यारह ही तुलसी के पात ।
दोनों का काढ़ा पिये, मलेरिया अवश्य नसात ॥
अगस्त पत्र रस सूंघ, मुक्ति पाली सुखदाई ।
चौथैय्या जड़ से मिट जाए, संजीवनी है यह दवाई ॥

बाजरा के गुण (पौष्टिकता)

उठि के बाजरा मुँह से बोला, बूढ़ा खाय मुझे वह जवान हुई जाय ॥

(घाघ कवि)

ऋतुनुसार पथ्य सेवन नियम

सावन हर्र, भादों चीत, क्वार मास में गुड़ खाओ मीत ।
कार्तिक मूली, अगहन तैल, पूस में करे दूध से मेल ॥
माघ मास घी-खिचड़ी खाओ, फागुन में उठि के प्रातः ही नहाओ ।
चैत मास में नीम बसहती, बैसाख में खाऔ भैय्या जड़हथी ॥
जेठ मास में दिन में सोवे, खोकर जर अषाढ़ में रोवे ॥

(श्रावण में हरड़, भादों में चीता, क्वार में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पौष में दुग्ध, माघ में घृत-खिचड़ी, फाल्गुन में प्रातःकाल स्नान, चैत्र में नीम, वैसाख में जड़हन का भात, (कवि के कथनानुसार) जो इन पदार्थों का उक्त नियम से खाता है और जो ज्येष्ठ मास में दिन में शयन करता है उसका अषाढ़ में होने वाला ज्वर रोता है अर्थात् ज्वर उसके पास ही नहीं आता है।

बासी रोटी (सेवन) की हानियां

सधुवे दासी, चौरे खांसी, प्रेम विनाशे हांसी
घघ्घा उनकी बुद्धि विनाशे, जो नर खाते हैं रोटी बासी ॥ *(घाघ कवि)*

व्यायाम और स्वास्य

अन्तरे-खोतरे डन्ड करे, ताल में नहाय, ओस में परै ।
ऐसन को दैव न मारे, वे तो अपने आप ही मरै ॥ *(घाघ)*

(जो नर कभी-कभी या नागा करके व्यायाम करता है और तालाब में स्नान करता है तथा ओस में सोता है ऐसे नर को ईश्वर नहीं मारते, वह तो स्वयं ही मरता है) भावार्थ ऐसा नहीं करना चाहिए ।

सत्तू खाने का निषेध (सत्तू रात्रि में नहीं खाना चाहिए—)

घर में नारी आंगन में सोवे, रन में चढ़के क्षत्री रोवे ।
रात को सतुआ करे बिआरी, घाघ मरे तेहिकर महतारी ॥ *(घाघ कवि)*

ऊषापान से लाभ

प्रातःकाल खटिया से उठिके पिये जो नर तुरन्त ही पानी ।
सुखी स्वस्थ काया रहे, न जरूरत पड़े वैद्य की बात घाघ ने जानी ॥

अधिक भोजन करने की हानियाँ

आठ कठौती मट्ठा पीवे (जो नर) सोलह मकुनी खाए ।
ऐसे नर के मरने पर मत रोइये, घरका दल्लुद्दर जाए ॥ *(घाघ कवि)*

माघ मास के अतिरिक्त घी-खिचड़ी खाना हानिकारक—
बिना माघ मास घी-खिचड़ी खाय, बिन गौने ससुरारी जाय ।
बिन ऋतु के पहिने जौ पौआ, घाघ कहे यह तीनों कौआ ॥

घुइया (अरबी) व पूड़ी भक्षण हानिकारक

जाको मारनो चाहत हो, बिन मारे बिन घाव ।
वाको यही समझाइये कि घुइया पूड़ी खाव ॥ (घाघ)
खाने वाला पछताता है, नहाने वाला मुस्काता है ।

खीर खाने का नियम

सावन मास में खीर जो खाये सकारे, मृगदाल कुलचारें मारे ॥

(भावार्थ—जो व्यवित श्रावण मास में नित्य प्रति खीर सुबह के समय खाता है, वह हिरन की भांति उछलता कूदता रहता है अर्थात् स्वस्थ रहता है ।)

सावन सोवे सांथरे माह खुरैरी खाट ।
आपहिं वह मर जायेंगे, जो जेठ चलेंगे बाट ॥

(हिन्दुस्तानी कहावत कोष से)

(भावार्थ—सावन मास में सीलन होने के कारण नीचे धरती पर (चटाई) पर नहीं सोवें तथा माघ मास में सर्दी के कारण बिना (बिछावन) बिस्तर की चारपाई पर न सोवें और जेठ के महीने में ''लू'' के कारण रास्ता न चलें । यह सभी हानि कारक (मृत्यु की ओर धकेलने वाले) कृत्य हैं ।

मट्ठा कब सेवन करें

कातक में जो सीत का पिये सो लाभ पाय ।
भादों में जो कोई पिये, देवे तुरन्त ताप चढ़ाय ॥

माप-तौल परिवर्त्तन-तालिका

पुरानी तौल		नयी तौल	
6 रत्ती	= 1 आना भर	10 मिलि ग्राम	= 1 सेंटीग्राम
12 रत्ती	= 2 आना भर	10 सेंटीग्राम	= 1 डेसीग्राम
24 रत्ती	= 4 आना भर	10 डेसीग्राम	= 1 ग्राम
96 रत्ती	= 1 तोला	10 ग्राम	= 1 डेका ग्राम
8 रत्ती	= 1 माशा	10 डेकाग्राम	= 1 हेक्टोग्राम
3 माशा	= 4 आना भर	10 हेक्टोग्राम	= 1 किलोग्राम
12 माशा	= 1 तोला	1000 किलोग्राम	= 1 मैट्रिक टन
5 तोला	= 1 छटाँक		
10 तोला	= 2 छटाँक		
16 छटाँक	= 1 सेर		
40 सेर	= 1 मन		

नयी एवं पुरानी तौल का परस्पर सम्बन्ध

1 माशा	= लगभग 1 ग्राम
1 तोला	= लगभग 11.66 ग्राम
2 तोला	= लगभग 23.33 ग्राम
3 तोला	= लगभग 34.99 ग्राम
4 तोला	= लगभग 46.66 ग्राम
5 तोला (यानी 1 छटांक)	= लगभग 58.32 ग्राम
10 तोला	= लगभग 116.64 ग्राम
1 सेर	= लगभग 0.93 कि. ग्राम
2 सेर	= लगभग 1.87 कि. ग्रा
5 सेर	= लगभग 4.67 कि. ग्रा
1 मन (40 सेर)	= लगभग 37.32 कि. ग्रा.

नयी माप

10 मि. लि.	= 1 सेण्टीलीटर
10 सेण्टीलीटर	= 1 डेसीलीटर
10 डेसीलीटर	= 1 लीटर
10 लीटर	= 1 डेकालीटर
10 डेकालीटर	= 1 हेक्टालीटर
10 हेक्टालीटर (1000 लीटर)	= 1 किलोलीटर

नाप का परस्पर सम्बन्ध

पानी एवं दूध का घनत्व सम होने के कारण

1 लीटर = 1 किलो.

भाषा भवन एवं हिन्दी सेवा सदन, मथुरा द्वारा प्रकाशित

आयुर्वेद चिकित्सा पर बेजोड़ ग्रन्थ

1. आयुर्वेद नवनीत :

लेखक : कविराज दाऊदयाल गुप्त — मूल्य : 65/-

प्रस्तुत ग्रंथ मे आयुर्वेद के समस्त प्राचीन ग्रंथ, यथा—चरक संहिता, भैषज्य रत्नावली, सुश्रुत संहिता, शारङ्गधर संहिता आदि का प्रामाणिक निचोड़ तो है ही विद्वान, लेखक ने अपने चिकित्सकीय अनुभव का सार भी दिया है। इस अकेली पुस्तक के गहन अध्ययन कर लेने पर केवल इसी के बल पर सम्पूर्ण परिवारी जनो (स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध) की समुचित चिकित्सा की जा सकती है। बड़े आकार के 384 पृष्ठो मे सम्पूर्ण अद्‌भुत चिकित्सा ग्रंथ।

2. पेटेण्ट औषधियों द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा :

लेखक : कविराज दाऊदयाल गुप्त — मूल्य : 50/

यह ग्रन्थ चिकित्सा साहित्य के क्षेत्र मे वैद्यराज जी के सर्वथा अभिनव प्रयोग का फल है। इस पुस्तक में मानव शरीर के समस्त रोगों की चिकित्सा, शास्त्रीय एवं पेटेण्ट औषधियां द्वारा रोग-निवारण की सुगम रीति बताई गई है। इसमें वर्णित सभी औषधियों को आयुर्वेदिक दवा बनाने वाली विभिन्न कम्पनियाँ तैयार करती हैं और सभी औषध विक्रेता इनकी बिक्री करते हैं। पुस्तक मे वांछित रोग का विवरण पढ़ें और बाजार से तुरन्त तैयार दवा मँगालें। घोटने-पीसने-दवा तैयार करने के झंझट से मुक्ति। कोई झमेला-बखेड़ा या झंझट नहीं। अवश्य पढ़ें और लाभ लें।

3. आयुर्वेदिक चिकित्सा सार :

लेखक : पं० राजेश दीक्षित/छेदालाल शर्मा — मूल्य : 30/

जैसा कि पुस्तक के नाम से प्रकट है इसमें समस्त आयुर्वेद शास्त्र का दोहन है। बड़े आकार में पुस्तक तैयार की गई है। इसमें समस्त मानव रोगों के लक्षण उनके भेद और चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है। कलेवर छोटा होने पर भी गुणों का सागर है।

4. आयुर्वेद मंथन :

लेखक : आचार्य पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल — मूल्य : 20/-

यह पुस्तक 'गागर में सागर' की उक्ति को चरितार्थ करती है। इसकी प्रस्तुति का ढंग भी अत्यन्त रोचक और मनोहर है। पुस्तक के पूर्वार्द्ध में तो सभी मानव-रोगों के लक्षण विस्तृत रूप में वर्णित हैं तथा उत्तरार्द्ध में एक-एक रोग पर अनेक लाभकारी नुस्खे वर्णित हैं। नुस्खे भी ऐसे जो बनाने में अत्यन्त सुगम और सरल हैं।

5. भोजन द्वारा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा :

लेखक : डॉ० ओ. पी. गोयल — मूल्य : 20/-

इस पुस्तक की जितनी प्रशंसा की जावे, कम है। केवल स्वास्थ्य-प्रद भोजन के सेवन मात्र से कठिन से कठिन रोगों की चिकित्सा। भोजन कब करें, भोजन कितना करें, भोजन कैसा हो, भोजन किस ढंग से किया जावे, साग-सब्जी में किन आयुर्वेदिक मसालों का मिश्रण किया जाये कि उनके सेवन से रोग भाग जावे और शरीर नीरोग हो जाये। ये सब बातें विस्तार से वर्णित हैं।

6. सरल परिवार चिकित्सा :

लेखक : पं० राजेश दीक्षित/डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रवाल मूल्य : 25/

विद्वान लेखको ने इस अनुपम पुस्तक में अनेक चिकित्सा प्रणालियों की विधि का वर्णन किया है। यथा—आयुर्वेद, एलोपैथी, यूनानी, होम्योपैथिक, प्राकृतिक आदि। जिसकी जिस पद्धति मे आस्था, श्रद्धा और विश्वास हो, वह उसी पद्धति के नुस्खो का प्रयोग करके रोग-मुक्त हो सकता है। इस पुस्तक की प्रशंसा मे पाठको के हजारों पत्र हमे व विद्वान लेखकों को मिले है। ग्रन्थ को जिसने भी पढ़ा, उसी ने सराहा।

7. ताकत का खजाना :

लेखक : वैद्यराज आर. एस. गोयल/दिनेश गोयल मूल्य : 15/-

कमजोर, निर्बल, अपुष्ट शरीर को बलवान और पुष्ट बनाने वाले आयुर्वेदिक नुस्खों का एकत्र संकलन करके विद्वान लेखकों ने चिकित्सा जगत का भारी उपकार किया है। इसमें जहाँ धनिक वर्ग के निर्बल रोगियों के मूल्यवान रस-भस्मों से तैयार होने वाले योग दिये है, वहीं निर्धन वर्ग के लिए सामान्य-सी लागत से तैयार हो सकने वाले सफल और प्रभावशाली अनेक योग वर्णित हैं। पुस्तक यथा नाम तथा गुण है।

8. आजीवन निरोग कैसे रहें :

लेखक : डॉ० प्रकाश ब्रह्मचारी मूल्य : 20/-

यह ग्रन्थ आयुर्वेद और प्राकृत चिकित्सा पर आधारित है। वैज्ञानिक मालिश (तैलमर्दन), लेटकर व बैठकर करने योग्य अनेक सरल व्यायामों का वर्णन है। यह पुस्तक विशेष रूप से वृद्ध लोगों को स्वस्थ जीवन बिताने की शिक्षा देने वाली है।

9. आयुर्वेद के चमत्कार :

लेखक : आचार्य पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल मूल्य : 50/-

यह ग्रन्थ अवश्यमेव पठनीय, संग्रहणीय, प्रत्येक परिवार में रहने योग्य है। प्राचीन आयुर्वेद वाङ्मय के उपयोगी चिकित्सा योग तो इस पुस्तक में हैं ही, इसके साथ ही सबसे महत्वपूर्ण है—उन नुस्खों का समावेश—जो विद्वान लेखक ने अपने तीर्थाटन-प्रवास के दौरान अनेक साधु सन्तों की सेवा व सत्संग द्वारा प्राप्त किए हैं। अन्य आयुर्वेद ग्रन्थों में वे अनुभूत नुस्खे ढूँढे न मिल पायेंगे।

10. सुलभ घरेलू नुस्खे :

लेखक : डॉ० ओ. पी. गोयल मूल्य : 10/-

यह छोटी पुस्तक भी बड़े-बड़े गुणों से भरी पड़ी है। अत्यन्त सामान्य लागत से तैयार होने वाले ऐसे अनेकानेक प्रभावशाली नुस्खों का संग्रह है—जो समस्त मानव-रोगों को दूर करने में सफल हैं।

10. शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान (Anatomy & Physiology) :

लेखक : राजेश दीक्षित मूल्य : 40/-

शरीर के आभ्यान्तरिक अंग-प्रत्यंग की विशद जानकारी के बिना चिकित्सा-कार्य में समुचित चिकित्सा सम्भव नहीं है।

इस ग्रंथ में सभी अंगों की जानकारी अनेक चित्रों के माध्यम से देते हुए सभी अंगों की विस्तृत कार्य-प्रणाली का बोध कराया गया है।